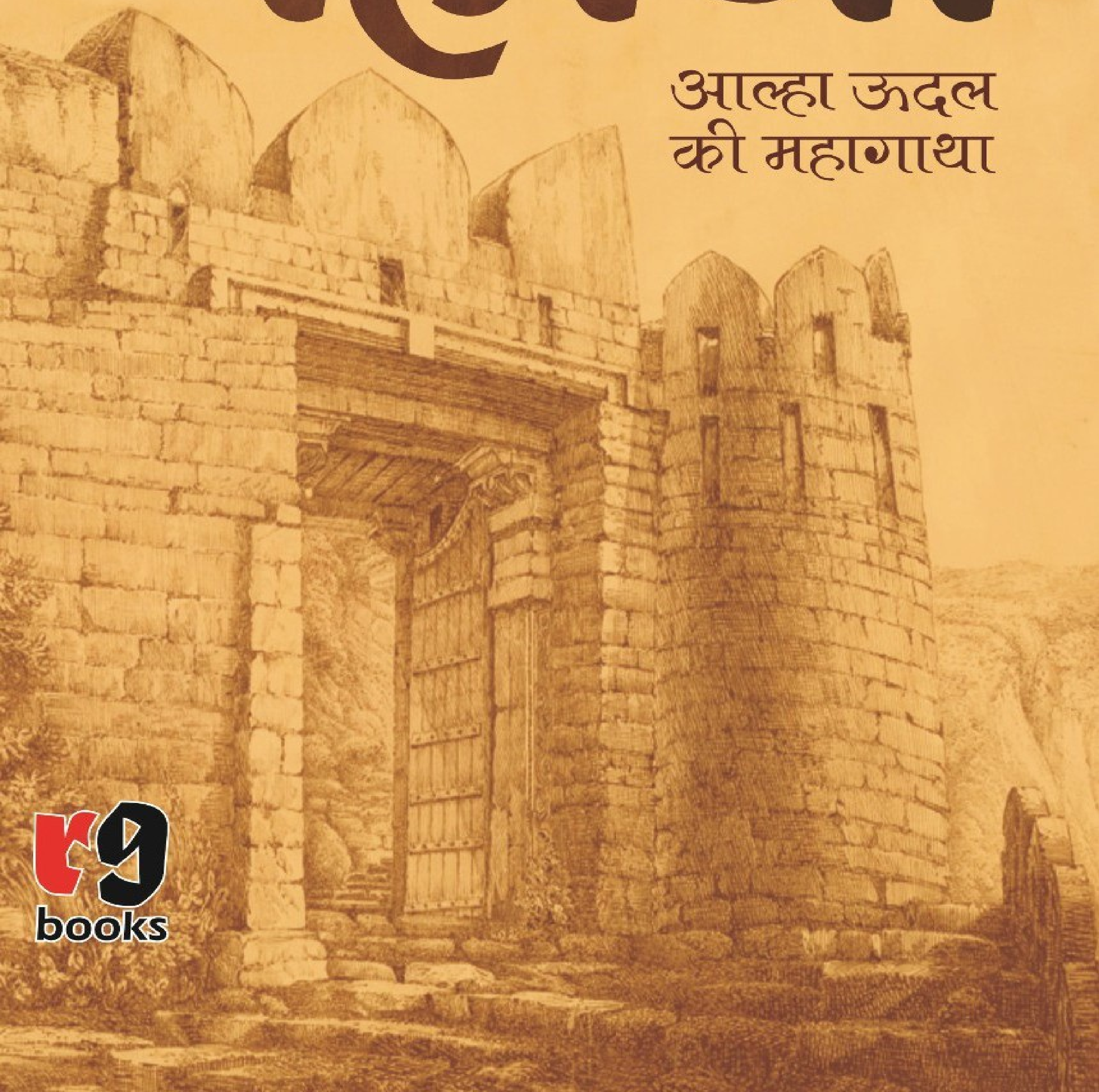
डॉ. सुधा चौहान 'राज'

महोबा

आल्हा ऊदल की महागाथा



महोबा
आल्हा ऊदल की महागाथा

उपन्यास

डॉ. सुधा चौहान 'राज'

रेडग्रैब बुक्स
इलाहाबाद

महोबा (उपन्यास)
डॉ. सुधा चौहान

प्रकाशक:
रेडग्रैब बुक्स
942, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3 उत्तर प्रदेश, भारत
वेबसाइट - www.redgrabbooks.com
ईमेल - contact@redgrabbooks.com
आवरण : श्री कम्प्यूटर्स, इलाहाबाद
टाइप सेटिंग : श्री कम्प्यूटर्स, इलाहाबाद

अपनी बात

उपन्यास लेखन स्वतंत्र होता है, पर इतिहास पर लिखना तलवार की धार पर चलना है। आशा है आप मेरे इस प्रयास को स्वीकारेंगे। मैं उस पावन वीरभूमि महोबा की ही रहने वाली हूं जहां का यह इतिहास है। मेरा बचपन इन्हीं वीरों की गाथा सुन-सुन कर ही बड़ा हुआ है। इसीलिये वह मेरे मन मस्तिस्क में रच बस गये हैं। हम हमेशा ही इनके बारे में क्रमबद्ध सब कुछ जानना चाहते थे, पर वह नहीं मिल पाता था। हमने बड़े हो कर इतिहास से एम. ए. भी किया पर मेरी जिज्ञासा रूपी भूख शांत ना हो सकी। तभी हमने ये निश्चय किया कि हम इस पर खोज करके किताब जरूर लिखेंगे। महोबा, हमीरपुर, बांदा, उरई, कन्नौज, बिंदकी, बरेली, बाराबंकी और कानपुर सभी जगह के आल्हा गायकों को मैंने कई बार सुना है। इसके अलावा महोबा के कई क्षेत्रीय आल्हा गायक खरेला, तमौरा, मवई, बिदोखर, गंज आदि को भी मैंने अनेकों बार सुना है। उनसे मेरी गहरी बात भी हुई है। महोबा महोत्सव के दौरान मैंने उनके तर्क वितर्क को भी सुना है और किया भी है। महोबा और आल्हा ऊदल के ऊपर अमरीका की शैली और कैली नामक दो छात्राएं रिसर्च कर रहीं थीं, मेरी उनसे भी लंबी वार्ता हुई है। उनका भी यही कहना था कि आल्हा उदल और उनकी लड़ाइयों का क्रमवार ब्यौरा नहीं मिलता है इस लिए पूरा करने में परेशानी आ रही है।
इसीलिये मैंने इस किताब को लिखना जरूरी समझा। जिसमें सात साल तक जानकारी इकट्ठी की, बहुत सी पुस्तकों को पढ़ा और उसी का परिणाम आपके सामने है। मैंने जो लिखा है, उसके लिए आल्हा ऊदल के समकालीन पृथ्वीराज के दरबारी कवि चंद्रबरदायी का पृथ्वीराजरासो, महोबा के दरबारी जनकवि जगनिक का परमालरासो, इसके अलावा बलभद्र पुराण, भविष्य पुराण, विलास पुराण, बलभद्र विलास, बीर विलास, बुंदेलखंड का इतिहास और कुछ अन्य इतिहास की किताबों से संकलन किया है। आल्हा गायकों के द्वारा सुनाई गई कहानियाँ, किवदन्तियाँ, गायन से जो समझा उसका भी निचोड़ है। मेरी नजर में यह किताब शोधपूर्ण ग्रंथ है। हमारे देश में रोचक कथाओं, वीरों की गाथाओं और दृष्टांतों के माध्यम से इतिहास पढ़ाया-सुनाया जाता रहा है। यह हमारे देश की धरोहर है।
वैसे आल्हा गायन जनमानस में मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता रहा है। यह एक लोक महाकाव्य है। इसमें उस काल की राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा अर्थव्यवस्था का संपूर्ण वर्णन मिलता है। यह एक ऐसी धरोहर है, जो हर आल्हा गायक अपने बेटे या चेले को दे कर जाता है। बुंदेलखंड में कई लोगों के पास हस्तलिखित आल्हा की प्रतियां आज भी हैं। उसमें से कुछ देवनागरी शैली में भी हैं, पर गाने वाले उसे बुंदेली शैली में ही गाते हैं। आज भी भारत के कई हिस्सों में यह अपने अपने तरीके से गाया और सुना जाता है। अभी तक यह जहाँ भी उपलब्ध हुआ काव्य-शैली में ही है। इसे पहली बार गद्य-शैली में क्रमबद्ध किया जा रहा है।
सत्य को प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं होती, फिर भी हम आप सभी की जानकारी के लिए कुछ बातों का उल्लेख यहां पर कर रहे हैं-
आल्हा की प्रामाणिकता- आल्हा उदल का विस्तृत वर्णन भविष्य पुराण और स्कंद पुराण में मिलता है। आल्हा ऊदल की प्रमाणिकता इस बात से सिद्ध होती है कि पृथ्वीराज

चौहान का इनसे अलग-अलग स्थानों पर पाँच बार युद्ध हुआ है। उस समय तीन महाशक्तियां भारत में राज्य कर रही थीं। दिल्ली में चैहान वंशी राजा पृथ्वीराज, कनवज में राठौर वंशी राजा जयचंद और महोबा में चंदेलवंशी राजा परमार्दिदेव जिनके धर्म भाई दच्छराज और बच्छराज के पुत्र आल्हा ऊदल और मलखान थे। पृथ्वीराज की पुत्री बेला का विवाह चंदेल राजकुमार ब्रह्मदेव के साथ हुआ था। जिसकी अगुवाई आल्हा और ऊदल ने की थी। सन 1191 में सबसे अंतिम युद्ध पृथ्वीराज का आल्हा ऊदल से महोबा के मैदान में हुआ था। उसके बाद अपनी सारी सेना को गंवा कर पृथ्वीराज ने युद्ध जीता था जिसका वर्णन चंदेलकालीन बुंदेलखंड के इतिहास में मिलता है। बेटी के गौने के बाद पृथ्वीराज ने गौरी से आखिरी युद्ध लड़ा था।

इसके लिए सबसे बड़ा प्रमाण पृथ्वीराज के दरबारी कवि चंदबरदायी का लिखा पृथ्वीराज रासो है, जिसमें इनकी सभी लड़ाइयों का क्रमवार ब्योरा दिया गया है।

इब्नबतूता ने भी अपनी भारत यात्रा के दौरान चंदेलवंश और आल्हा-उदल की वीरता का वर्णन करते हुए कहा है कि आल्हा ऊदल के रहते हुए महोबा का किला अजेय है। छतरपुर के गजेटियर में इस बात का उल्लेख है महमूद गजनवी के साथ प्रसिद्ध इतिहासकार अबू रहमान उल बरौनी खजुराहो आया था। उसने चंदेरी, महोबा, कालिंजर, खजुराहो, टीमगढ़, छतरपुर सहित आसपास का दौरा किया था। उसने लिखा है कि मध्य भारत में चंदेल वंश का गौरव शिखर पर है। दस्सराज और बच्छराज नामक दो भाइयों की वीरता के कारण महोबा अजेय है।

चंदबरदायी ने भी लिखा है कि गौरी ने अपनी सेना और सेना नायक -को साफ मना कर रखा था कि वह बुंदेलखंड की किसी भी गतिविधि में शिरकत ना करे। जब तक वहां पर आल्हा-ऊदल नाम के दो भाई हैं वह दिल्ली पर भी कब्जा नहीं कर सकता है क्योंकि वह दोनों पृथ्वीराज के संबंधी हैं, वह उसका गजनी तक पीछा नहीं छोड़ेंगे। इसलिए हमें समय का इंतजार करना चाहिए। उनके न रहने पर मैं इतिहास से इन सबका नाम ही मिटा दूंगा। कहा जाता है उसने अपने कहे अनुसार उनकी वीरता का इतिहास बुंदेलखंड से मिटा डाला था।

नेपाली वंशावली के अनुसार भी अल्हा ऊदल के नेपाल के मिथिला नगरी में आने के उल्लेख है और वहां की राजकुमारी मछला से विवाह के प्रमाण मिलते हैं। उस समय मिथिला नेपाल एक छोटा सा स्वतंत्र राज्य था, जहां राजा राघोमच्छ का राज्य था। इसके अलावा अरब साहित्य और अफगानी साहित्य में भी इनके युद्धों का उल्लेख मिलता है।

आल्हा की प्रमाणिकता इसी बात से सिद्ध होती है कि वह बारहवीं सदी के आरंभ से ही लोगों के मनमानस पर अंकित हैं। आल्हा ऊदल के ना रहने पर भी जगनिक का आल्हा रायसो परमाल रासो सहित अनेक कवियों चारणों के लिखे हुए वीर रस के गीत उनकी वीरता का बखान करने लगे। 12 वीं सदी में सबसे पहले चंद्रावली का डोला और भुजरियों की लड़ाई यानी कि कजली विसर्जन की लड़ाई का गान उनकी याद में किया गया, यही आखिरी लड़ाई थी, इसलिए जो भी राजा महाराजाथे वे इनकी वीरता को नहीं भुला पा रहे थे। परमाल के छोटे बेटे त्रिलोक वर्मन ने इसे संरक्षण दिया परमाल रासो को हर दरबार में गाया जाने लगा चंदवरदायी कृत पृथ्वीराज रासो को भी लोग सरल शब्दों में अनुवाद करके लिखने लगे थे और देखते ही देखते वह राजदरबारों में प्रचलित हो गया।

इसके अलावा कन्नौज क्षेत्र के आस-पास बनाफर वंश का आखिरी राजा अभयंकर देव जो आल्हा का छोटा बेटा था उसने अपने पूर्वजों की इस गाथा को समेटा और सहेज कर रखा। वह अपने दरबार में बार-बार चारणों और भाटों से आल्हा सुना करता था। इसी कारण कन्नौज, बिंदकी, जमुना पार, कानपुर और उसके आस-पास के क्षेत्र में आल्हा गायन आज भी प्रचलित है। केदार मिश्र द्वारा रचित प्रबोधचंद्रोदय कीर्तिवर्मन द्वितीय के दरबार में सन 1265 में खेला गया था। कवि जयदेव ने गीत गोविन्द की रचना 1200वीं सदी में की थी। उसी के साथ उन्होंने आल्हा रासो और प्रसन्नाराव राघव भी लिखा था जो उस काल के राजाओं द्वारा बहुत सुना जाता था। इतिहासकार कीथ ने आल्हा-ऊदल की वीरता की बहुत प्रंशसा की थी। उनका कहना था कि अगर इनका आपसी लड़ाई में विनाश न होता तो भारत का भविष्य ही कुछ और होता। 13वीं सदी में जयसिंह सूरी के हम्मीर-मद-मर्दन की रचना में भी आल्हा ऊदल के उल्लेख मिलते हैं। 1266 में कवि वर्मन ने प्रद्युम्न-अभ्युदय की रचना की उसमें भी इनकी वीरता का भरपूर उल्लेख मिलता है। कवि विद्यानाथ ने 1310 ई0 में प्रताप-रूद्र कल्याण 1320 ई में वामन भट्ट ने पार्वती -परिणय में इनका भरपूर यशोगान किया है।
गंगाधर कृत गंगादत्त-प्रताप विलास आदि नाटकों की रचना की थी, जिसमें बीच बीच में आल्हा-उदल की वीरता का भरपूर उल्लेख किया गया है। इसके अलावा बीसलदेव रासो हम्मीर रासो हम्मीर काव्य सहित अनेक काव्य ग्रंथों की रचना उस काल में अनवरत होती रही, जिसमें ये दोनों नायक अपनी उपस्थिति दर्ज कराते रहे हैं। इसके अलावा तमिल, कन्नड़ और तेलगू में लिखे उस काल के साहित्य में भी आल्हा-ऊदल की उपस्थिति मिलती है। विजयनगर के महान राजा कृष्णदेव राय स्वयं एक महान कवि थे, उन्होंने अमुक्तमलयद नामक ग्रंथ की रचना की थी, जिसमें उस काल के महानायक आल्हा, ऊदल, पृथ्वीराज, जयचंद, विजयराज और ब्रहमजित का वर्णन आता है। उनके दरबार के प्रसिद्ध कवि अलस्सनी पैदना ने स्वरोचिसा-मनुचरित्र की रचना की थी, जिसमें उस काल की लड़ाई के नायक आल्हा-ऊदल, मलखान, जयचंद, पृथ्वीराज, रतिभान, चामुण्डाराय, संयमराय और धांधूजित आदि के नामों का उल्लेख मिलता है इन बातों से सिद्ध होता है कि कर्नाटक और सूरत की लड़ाइयों का हवाला सही है। उनका युद्ध दक्षिण में कलचुरी वंश के गांगेयदेव और गुजरात में चालुक्यवंश के मूलराज प्रथम के वंशजों के साथ हुआ था।
इसके अलावा मदनपुर जैन मंदिर शिलालेख 1182 ई. का है जिसमें पृथ्वीराज चौहान का मलखान से युद्ध में मलखान का मरना और सिरसा को अपने अधीन करना। सैमरा शिलालेख-1166ई., महोबा मूर्ति लेख 1167 ई., इच्छावर लेख 1171 ई., महोबा शिलालेख 1173 ई., चरखारी ताम्रलेख 1178ई, मदनपुर जैन मंदिर शिलालेख 1182 ई. के द्वारा आल्हा ऊदल और चंदेल काल का प्रामाणित इतिहास मिलता है, इन सभी बातों का समावेश डॉ. काशी प्रसाद जी ने अपनी पुस्तक बुंदेलखंड का वृहद् इतिहास में किया भी किया है।
प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया था। वह खजुराहो दर्शन को गया था। छतरपुर गजेटियर में इस बात का उल्लेख है कि सन् 1021 ई. में महमूद गजनवी के साथ प्रसिद्ध इतिहासकार अबूरहमान उलबरौनी खजुराहो आया था। उसने चंदेरी, महोबा, कालिंजर, खजुराहो, टीमगढ़, छतरपुर का दौरा किया था। उसने लिखा है कि मध्यभारत में चंदेलवंश का गौरव शिखर पर है। दस्सराज और बच्छराज दो भाइयों की

वीरता के कारण महोबा अजेय है।
उसने लिखा है कि खुजुराहो और कालिंजर में बड़े-बड़े जटाधारी साधू-योगी रहते हैं। उनका बड़ा सम्मान है। राजनीति में भी उनका हस्तक्ष्ोप है। उनके पास चमत्कारिक जादुई शक्तियां हैं, जिनका लाभ लेने सभी राजा महाराज और मुसलिम शासक भी आते रहते हैं। यहां पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि यह वही साधू हैं, जिन्होंने माहिल से मिलकर चंदेल वंश की जड़ें खोदनी चालू की थी। राजा महाराजा इनके हाथों की कठपुतली बन कर रह गए थे।
इसी के समकक्ष पन्ना, दतिया, समथर, कालिंजर, कन्नौज, कुंडा, अजय गढ़, ओरछा, गढ़ा नरेश के अलावा और भी बहुत से राजदरबारों, रियासतों में भी आल्हा गायन होने के प्रमाण मिलते हैं। यह प्रथा मौखिक रूप से ज्यादा विकसित हुई क्योंकि हर कवि एक दूसरे से सुनकर याद करके गाया करते थे, पर इसका आधार आल्हा रायसो था। सौ साल के अंतराल में ही यानी कि सन् 1320 तक यह गायन सारे भारत में गाया जाने लगा। इसका एक बड़ा कारण यह भी था कि युद्ध पर जाने के पहले सेना इसे सुनकर वीर रस मे डूब जाती थी और अपनी जन्मभूमि की आन बान और शान के लिए सब कुछ न्योछावर करने को तत्पर हो जाती थी। इस प्रकार आल्हा-ऊदल सारे देश के वीरों के आदर्श बन गए थे। यह वीरों की वो गाथा है जो सदियों से चली आ रही है और आज 900 सौ सालों बाद भी उसी जोश खरोश और उत्साह के साथ गाया जाता है।
16वीं सदी में रानी दुर्गावती, जो महोबा राजवंश के राजा कीर्तिपाल चंदेल की बेटी थीं, उन्हें आल्हा सुनना बहुत पसंद था इसीलिए उन्होंने अपने कालिंजर के दरबार में बहुत से चारण-भाट आल्हा गायन के लिए रखे था। उन्होंने बहुत सी पुरानी पांडुलिपियों को सहेजकर बुंदेली बोली में लिपि बद्ध कराया था। उन पर इनकी वीरता का बहुत प्रभाव था, इसी कारण उन्होने दलपतशाह की बीरता से प्रभावित होकर उनका वरण किया था और उनसे प्रेम विवाह किया था; उसी का प्रभाव था कि उन्होने अपनी वीरता दिखाते हुए मुगलों से लोहा लिया था। मुगल दिल्ली के आस-पास तो आते जाते थे, पर कभी वह बुंदेलखंड में अपनी जड़ें नहीं जमा पाये। इसीलिए जब आल्हा ऊदल के बाद उनका आक्रमण बुंदेलखंड पर हुआ तो उन्होंने यहां के भवन, इमारत, मंदिर, मठ आदि तुड़वा दिये। दरबारों से कवियों से सारा इतिहास लूटकर सागर में बहा दिया था। उनका कहना था कि इसे पढ़कर भारतीय सैनिकों में अद्‌भुत जोश आ जाता है।
इसी प्रकार 16 वीं सदी में जब अकबर को यह बात पता चली कि महाराणा प्रताप ने इलाहाबाद के कुंभ में जाकर आल्हा का गायन सुना और फिर वह उस गायक को ससम्मान मेवाड़ ले गए थे, जहां पर उससे हर दिन जन्मभूमि के प्रति प्रेम को और आल्हा की वीरता का गान सुना करते थे। इस बात को सुनकर सम्राट अकबर ने भी बुंदेलखंड से आल्हा गायक को बुलाकर अपने दरबार में अनेकों बार आल्हा का गान सुना था।
16वीं सदी से अंग्रेज अफसर भी इस गायन से अछूते नहीं रहे। वह भी समय-समय पर इस प्रकार के आयोजनों में राजाओं के दरबार में शामिल होते थे और बहुत ही ध्यानपूर्वक आल्हा-ऊदल का बखान सुनते थे। 17 वीं सदी के आते-आते आल्हा गायन अंग्रजों के सर चढ़कर भी बोलने लगा। वह अपनी छावनी में आल्हा गायकों को बुला कर आल्हा गायन बार बार सुना करते थे; और उसे लिपि बद्ध भी कराते थे; अपनी भाषा में लिखवाते थे।

प्रो. नर्मदा प्रसाद के अनुसार 1722 में कविवर हरिकेश द्वारा रचितप्रबंध काव्य जगतराज की दिग्विजय में महाराज परमाल की वंशावली और उनके राज्य काज व सुशासन का वर्णन किया गया है। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई भी आल्हा गायन सुनने की शौकीन थीं इसीलिए उनके अंदर भी वीर रस कूट-कूट कर भरा था। इस प्रकार यह दोनों ही वीरांगना आल्हा ऊदल को अपना आदर्श मानती थीं।

फर्रूखाबाद के बंदोबस्त कलेक्टर सी. ई. इलियट साहब ने जब इसे सुना तो वह इतने प्रभावित हुए कि 14 लड़ाइयों को 1865 में हिन्दी में लिपिबद्ध कराया और दिलकुशा प्रेस फतेहगढ़ से 1872 में प्रकाशित कराया, यह कन्नौजी तर्ज पर आधारित था। इसके बाद जार्ज ग्रियसन ने भोजपुरी में इसका अनुवाद कराया उसके बाद जार्ज विन्सेन्ट स्मिथ ने बुंदेली में इसका अनुवाद कराया। इंडियन एन्टिकवेरी एवं लिंगविस्टिक सर्वे आफ इंडिया में प्रकाशित भी हुए थे। बाद में मि. ईसी इलियट साहब ने इंगलिश में अनुवाद कराकर सन् 1920 में इसे इंग्लैण्ड भेजा था। कहा जाता है कि प्रथम विश्व युद्ध के समय अंग्रेजों ने इसका भरपूर लाभ लिया। आल्हा गायन अंगे्रज सेना को सुनाया जाता था और वह जोश में भर कर दुश्मनों पर टूट पड़ती थी।

दूसरी सत्य घटना 1930 ई. की है। महोबा जिला ग्राम खरेला के आल्हा गायक श्री शिवराम सिंह को कत्ल के अपराध में फांसी की सजा सुनाई थी। अंग्रेज अफसर ने फांसी के पहले उनसे अंतिम इच्छा पूछी तो उन्होने कहा .. मैं आल्हा गायक हूं और आपको आल्हा-गायन सुनाना चाहता हूं। अफसर की अनुमति मिलने पर उन्होंने आल्हा सुनाकर ऐसा शमां बांधा कि अंगे्रज अफसर उनके गायन में खोकर उसे कई घंटों तक सुनते रहे और इस प्रकार फांसी की सजा का समय ही निकल गया था। उसके बाद अफसरों ने खुश होकर फांसी की सजा माफ कर उन्हें रिहा कर दिया और उन्हें अपनी छावनी में बुलाकर बार-बार सुना करते थे। आज भी उनके बेटे इस घटना को बहुत ही गर्व के साथ सुनाते हैं। ये सभी ग्रंथावली, काव्यग्रंथ एवं सारी घटनायें स्वयं ही आल्हा-उदल की प्रमाणिकता को सिद्ध करती हैं। सत्य को प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं होती, वह तो अपने आप में स्वयं ही बड़ा प्रमाण होता है। इसीलिए आज 900सौ सालों बाद भी वह लोंगों के दिलो-दिमाग में हैं। यह तो हमारे देश का दुर्भाग्य ही है कि ऐसे वीरों का इतिहास सुरक्षित तरीके से संजोकर नहीं रखा गया और मुगलों द्वारा इसे विलुप्त कर दिया गया।

आल्हा गायन एक इतिहास है, वीरों की संस्कृति है, एक राग है, एक आग है, एक जोश है, जो रग-रग में वीरता का जोश जगा देता है। आल्हा उदल आज भी लोगों के दिलों में वास करते हैं। वो आज भी अमर हैं और सदियों तक अमर रहेंगे।

हम इसमें लिखी किसी बात, पात्र या घटना की सत्यता का दावा नहीं करते, पर हमने हर घटना को सभी तथ्यों से तालमेल करके ही लिखने का प्रयास किया है। आशा है आप सभी इसको पढ़कर लाभान्वित होंगे। किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायालयीन कार्यक्षेत्र इंदौर ही रहेगा। दूसरी बात यह इतिहास पुराना है, पर आज के दौर में लिखे जाने के कारण इसमें बुंदेली, अवधी के साथ साथ बोलचाल के कुछ उर्दू के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। मेरी इस किताब को लिखने में जिन्होंने सहयोग दिया मैं उनके प्रति बहुत-बहुत आभारी हूँ। हम सर्वप्रथम चरण वंदन करती हूँ महोबा की माँ चंडिका जी, मैहर की शारदा माँ और मनियां देव जी के जिनकी प्रेरणा और परम कृपा के कारण यह महाग्रंथ लिखने में सक्षम हो सकी।

उसके बाद आभारी हूँ उनके चरण सेवक श्री चंडिका प्रसाद जी, श्री जाहिर सिंह, श्री रमेश जैदका, श्री वासुदेव चैरसिया, श्री ज्ञान सिंह, श्री दाउ तिवारी जी, श्री उत्तम सिंह गौतम खरेला, भूतपूर्व उद्योगमंत्री श्री बादशाह सिंह, श्री राजूसिंह खरेला, सांसद महोबा श्री पुष्पेन्द्र सिंह चंदेल, श्री पदमसिंह गौतम बाम्बे, ठा. चरन सिंह तमोरा, ठाकुर बच्चा सिंह मवई, श्री बल्लूराम बुकसेलर महोबा, इंजी. श्री अमर सिंह राजपूत दमोह, सांसद महोदय श्रीरामकृष्ण कुसमरियाजी, इसके अलावा इंदौर के हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री हरेराम बाजपेयी, देवी अहिल्या लाइबे्ररी इंदौर के इंचार्ज श्री जी. डी. अग्रवाल, एस्क्लेशन इंजीनियर श्री अवकाश चौहान संयुक्त राज्य अमेरिका, क्रियेटिव विजन के डायरेक्टर श्री अमिताभ चौहान, अखिल चौहान इंदौर, श्रीमति स्वाति तिवारी भोपाल।
अंत में बहुत-बहुत अभार अपने सहचर श्री राजेन्द्र सिंह चौहान जी को जिन्होंने हमें पग-पग पर प्रोत्साहित किया और लेखन में बाधा आने पर हर तरह का सहयोग किया उनके सतत सहयोग से ही यह कार्य पूरा हो सका।
इसके अलावा हमारा सहयोगी हमारा परिवार अवकाश-यूका चौहान, अमिताभ-अस्मिता चौहान, अखिल-स्वाति चौहान और हमारी नन्हीं नवल प्रेरणा अन्वेशा, आनवी, आइलेश और आशिल। मैं हृदय से इन सभी की आभारी हूँ।

सुधा चौहान राज
आर-44 महालक्ष्मी नगर इंदौर
फोन - 0731-4068242
मोबा- 98260-30993

भूमिका - भविष्य पुराण से....

भविष्य पुराण के तृतीय सर्ग में लिखा है कि द्वापरयुग के अंत में कुरुक्षेत्र का प्रसिद्ध महायुद्ध हुआ। हम इसे महाभारत के नाम से जानते हैं। इस युद्ध में सभी कौरवों का अंत हो गया और पांडव विजयी हुए। अठारहवें दिन जब दुर्योधन मारा गया तो युद्ध समाप्त हो गया। तभी भीम ने कहा .... हे केशव, हमारी और युद्ध करने इच्छा है, अभी हमारा मन नहीं भरा।

भीम की बात सुनकर सभी पांडव एक साथ बोले.....हां-हां, हम भी युद्ध करना चाहते हैं। केवल युधिष्ठिर चुप रहे।

तब भगवान श्री कृष्ण को बहुत दुख हुआ कि इतना बड़ा नरसंहार होने के बाद भी इनका मन नहीं भरा है। अब कौरवों के द्वारा हराकर मैं इन सभी का घण्मड मिटाऊंगा। यही सोच कर वह बोले.... कलियुग में तुम्हारी यह इच्छा पूर्ण होगी। तुम्हारा सारा जीवन युद्ध करते हुए ही बीतेगा। युद्ध के समय सभी पांडव सरस्वती नदी के किनारे शिविर में रह रहे थे। युद्ध के अंतिम दिन श्रीकृष्ण को कुन्ती और धृतराष्ट्र से मिलने हस्तिनापुर जाना था, पर वह पांडवों की सुरक्षा को लेकर चिंतित थे। भगवान शिव से प्रार्थना कर कहा....भगवन आप मेरे भक्त पांडवों की रक्षा कीजिए। भगवान शिव शिविर की रक्षा करने लगे। मध्य रात्रि के समय अश्वत्थामा, कृतवर्मा और कृपाचार्य छुपकर पांडवों के शिविर के पास आये। शिविर की रक्षा में शिवजी को खड़ा देख तीनों उनकी स्तुति करने लगे। अश्वत्थामा तो शिव भक्त था, भगवान शंकर ने उनकी प्रार्थना पर प्रसन्न होकर शिविर में जाने की अनुमति दे दी। बलवान अश्वत्थामा ने प्रथम कक्ष में देखा कि पांच लोग सोये हुए हैं। उसने उन्हें पांडव समझा और शिवजी की दी हुई तलवार से पांचों की हत्या कर दी। कृपाचार्य ने धृष्टद्युम्न को मार डाला। इस नरसंहार की सूचना मिलने पर पांडव अपने कक्ष से बाहर आये और अपने पांचों पुत्रों को मरा हुआ देखकर, मोहवश उन्होंने सोचा कि यह सब शिव ने ही किया है। वह अपना आपा खोकर शिवजी से युद्ध करने लगे। पांडवों के द्वारा चलाये गये सभी अस्त्र शस्त्र शिवजी के शरीर में समा गए, जो शिवजी ने ही उन्हें प्रदान किए थे। इससे कुपित होकर शिवजी ने उन्हें शाप दे दिया। तभी श्रीकृष्ण ने बीच बचाव कर शिवजी का क्रोध शांत किया। असली अपराधी का नाम जानकर पांडव शिवजी के चरणों में गिरकर अपने अपराध की क्षमा मांगने लगे।

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा हे महादेव, पांडवों के जो अस्त्र शस्त्र आपके शरीर में समा गए हैं। उन्हें पांडवों को वापस कर दीजिए और अपने शाप से मुक्ति भी दीजिए।

भगवान शिव ने कहा-हे केशव, मेरा वचन मिथ्या नहीं होगा। ये सभी पांडव तथा कौरव कलियुग में पुन: जन्म लेकर अपने-अपने पापों का फल भोगकर पाप मुक्त हो जायेंगे। इन सभी अस्त्रों शस्त्रों की शक्ति उनको कलियुग में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त रहेगी। इसके अलावा इनके पास जादू की शक्ति भी होगी। हालांकि इन सभी का सौ साल के भीतर ही जीवन समाप्त हो जायेगा। उनके जन्म इस प्रकार होंगे। धृतराष्ट्र और पांडु अपने श्राप को भोगने के लिए कलियुग में दस्सराज और बच्छराज के नाम से जन्म लेंगे। इनकी भी लड़ने की इच्छा कलयुग में पूरी होगी। यह बहुत ही बलशाली और महावीर होंगे।

युधिष्ठिर, वत्सराज का पुत्र आल्हा नाम से होगा, वह परमवीर, राजनीतिज्ञ, धर्मज्ञ, नीतिवान, सत्यव्रती, कर्तव्य परायण होगा। उसकी शस्त्र विद्या उच्च कोटि की होगी। वह पराअम्बा मां का परम भक्त होगा।
भीम का नाम ऊदल होगा। वह आल्हा का छोटा भ्राता होगा। वह भी वीर पराक्रमी और तेजस्वी होगा। वह अपने भाई आल्हा के नेतृत्व में अनेकों युद्ध लड़ेगा और सदा सर्वदा विजयी होगा। ऊदल का स्वभाव कुछ नटखटी और चंचल होगा।
श्रीकृष्ण बोले-एक बार भीम ने मुझसे कहा था, हे केशव, मुझमें अपार बल है, पर मेरे शरीर की बनावट इतनी विशाल है कि कोई सुन्दरी मेरी ओर देखती नहीं है। मुझे इस बात का सदैव दुख रहता है। श्रीकृष्ण ने मुस्करा कर कहा था.... बड़े भैया आपकी यह इच्छा अगले जन्म में अवश्य पूरी होगी। इसी कारण ऊदल अति रूपवान और बहुत सी राजकुमारियों का प्रिय होगा।
अर्जुन के अंश से जन्म लेने वाला परिमार्दिदेव का पुत्र बुद्धिमान और मेरा परमभक्त होगा। उसका नाम ब्रह्मानंद होगा। वह वीरों का वीर, ब्रह्मणों का पालक होगा। नकुल का जन्म बच्छराज के यहां होगा जिसका नाम मलखान होगा, यह बहुत ही वीर और बलशाली होगा। बच्छराज के दूसरे पुत्र के रूप में सहदेव का जन्म होगा। जिसका नाम सुलखान होगा। महादानी कर्ण धांधू के नाम से जन्म लेगा, जो दस्सराज के घर जन्म ले कर दिल्ली के पृथ्वी राज चौहान के यहां पलेगा और उनका ही वफादार होगा।
दुर्योधन अजमेर में राजा नहु के वंश में राजा सोमेश्वर के यहां पृथ्वीराज के नाम से जन्म लेगा। उसकी वीरता और बल का लोहा सारा संसार मानेगा। समस्त कौरव दिल्ली के आस-पास ब्रह्मा के द्वारा उत्पन्न किये गये अग्निवंश में जन्म लेंगे।
कलियुग में भी कौरव छल कपट और माया युद्ध में निपुण होंगे तथा पांडव पक्ष के योद्धा धार्मिक और बलशाली होंगे।
द्रोणाचार्य चौड़ा ब्राह्मण के नाम से जन्म लेंगे। यह बाण विद्या और शस्त्र विद्या के धनी होंगे। यह राजा पृथ्वी के बहुत ही वफादार रहेंगे। अर्जुन और भीम को मारने की इनकी इच्छा कलियुग में पूरी होगी। दुशासन का जन्म पृथ्वीराज के बेटे ताहर के रूप में होगा। उसी प्रकार द्रोपदी का जन्म भी पृथ्वीराज की पुत्री बेला के रूप में होगा।
भगवान शिव से यह सब वृत्तांत सुनकर श्रीकृष्ण जी मुस्करा कर बोले- मैं भी अपने अतिसूक्ष्म अंश से कलयुग के 1100 साल बीतने पर यानी कि ईसा पूर्व अवतरित होकर कर, गुरु गोरखनाथ बनकर, भारत भूमि पर 100 साल तक तप करुंगा। उसके बाद बहुत से राजवंशों की सहायता करुंगा। राजा भतृहरि को वैराग्य का मार्ग बताऊंगा, चोल वंश के राजा जयदेव को ज्ञान का मार्ग दिखा कर उनको मुक्त करुंगा फिर बनाफरों का गुरु बनकर उनकी हर संभव सहायता करूंगा। मेरा नाम गुरू गोरखनाथ होगा। महाभारत में सहयोगी बनकर वहन किये कर्मों के फल का क्षरण करने के लिए मैं भगवती माँ की उपासना कजली वन में रह कर करुंगा। दूसरी बात मुझे कण्व ऋषि का श्राप भी पूरा करना है कि मैं मुनि के वेश में वन वन फिरूं। इस कारण भी मुझे फिर से पृथ्वी लोक में आना ही पड़ेगा। मैंने कलयुग को वरदान दिया है कि मैं समस्त क्षत्रिय धर्मात्मा राजाओं का नाश करके म्लेच्छ राजवंशों को सत्ता पाने में सहयोग करुंगा ताकि कलयुग को इस पृथ्वी पर पूर्ण निवास मिल सके। यह सब सुनकर शिव जी तथास्तु कह कर अन्तध्यान हो गए।
भगवान श्रीकृष्ण जी ने सोचा कि मैंने पांडवों को वरदान दिया है कि इस धरा पर राज्य

करने वाले समस्त क्षत्रिय राजवंश पर हमेशा विजय प्राप्त करोगे; तो अब इनको कलयुग में हराने के लिये एक नए क्षत्रिय वंश की उत्पत्ति करना होगी। यह सृजन का कार्य तो ब्रह्मा जी ही कर सकते हैं। श्री कृष्णजी ने एक धर्मज्ञ क्षत्रिय राजा से कहा कि वह आबू पर्वत पर जाकर ब्रह्मा जी की तपस्या कर एक बड़ा यज्ञ करें और ब्रह्मा जी के प्रसन्न होने पर उनसे नवीन क्षत्रियवंश उत्पन्न करने का वरदान मांगे।

द्वापर में चंद्रवंशी, सूर्यवंशी और ऋषिवंशी तीन क्षत्रियवंश थे। चंद्रवंश की दस शाखायें, सूर्यवंश की दस शाखायें और ऋषिवंश की बारह शाखायें थी। इस प्रकार कुल मिला क्षत्रियों के बत्तीस वंश थे। राजा की तपस्या से ब्रह्मा जी प्रसन्न होकर प्रकट हुए और उससे बोले .... वत्स मैं तुम्हारी आराधना से प्रसन्न हूं, वर मांगो।

उसने कहा ... प्रभु, वेद व्यास जी के कहे अनुसार कलयुग में म्लेच्छों का राज्य आने वाला है और अग्निवंशी राजाओं का उनसे युद्ध होगा वही राजा म्लेच्छों से हमारे धर्म की रक्षा करेंगे। पांडव रूपी बनाफरों की हार भी अग्नि वंशीय राजाओं से होगी; तो प्रभु जगत के कल्याण के लिये आप उस वंश की उत्पत्ति कीजिये। तब ब्रह्मा जी ने यज्ञ वेदी की जलती हुई अग्नि की परिक्रमा कर हाथ में जल लेकर से चार वीर पुरुष उत्पन्न कर कहा .... प्रथम ....ये प्रमर हैं, यजुर्वेदी हैं, इनसे उत्पन्न होने वाला वंश परमार वंशी होगा। द्वितीय..... ये चपहानि हैं, यजुर्वेदी हैं। इनसे उत्पन्न होने वाला वंश चौहान के नाम से विश्व विख्यात होगा। कलियुग में इसी चौहान वंश में कौरवों का जन्म होगा। तृतीय......ये ग्रहवारिक हैं, अथर्वेदी हैं; इनसे उत्पन्न होने वाला वंश गहरवार कहलायेगा। चतुर्थ...ये परिहारिक, अथर्वेदी हैं। इनसे उत्पन्न वंश परिहार कहलायेगा। ये चारों अग्निवंशीय क्षत्रिय कहलायेंगे। इन अग्नि वंशियों के द्वारा ही चंद्र वंशीय पांडवों का विनाश होगा। इस प्रकार क्षत्रिय वंश की 36 शाखायें हो गई थीं।

भूमिका - इतिहास के पन्नों से

यहां पर यह बात ध्यान देने की है कि भारत में तोप और बंदूकों का चलन बारहवीं शताब्दी के अंत में यानी कि 1172 के आसपास हुआ था। सबसे पहले गौरी ही ये हथियार लेकर आया था और पृथ्वीराज के खिलाफ इनका इस्तेमाल किया था। इसके पहले भारत में लड़ाई पारंपरिक हथियार तीर, तलवार, चाकू, बर्छी, भाला, सांग शिरोही आदि से ही होती रही है। भारतीय सेना में तोप बंदूकों का चलन तेरहवीं सदी में छुट पुट शुरू हुआ था। यह वीरगाथा काल का समय था। इतिहास में इसका समय सन् 1050 से 1375 तक का बताया गया है। इस समय सम्पूर्ण भारत में क्षत्रियों के छोटे-छोटे राज्य थे, जहां पर अनेक राजवंशों का अलग-अलग शासन था। ये सभी क्षत्रिय राजवंश शूरवीर और बलशाली थे। ये जन्मजात ही कुशल शासक और कुशल योद्धा होते हैं। क्षत्रिय अपने वचन के पक्के, सत्यनिष्ठ और न्याय प्रिय थे। इन्हें युद्ध से डर नहीं लगता था। ये अपने वचन, शरणागत और स्त्री की रक्षा के लिए अपनी जान भी न्योछावर करने को तैयार रहते थे। ये अपनी आन बान और शान के लिए ही जीते हैं। - प्राण जाये पर वचन न जाई। ये स्वभाव से क्रोधी, हठी होते हैं। वैसे भी बाल हठ, और राज हठ प्रसिद्ध हैं। एक नजारा देखिए....

पहली गाली पर न बोलूं न दूजी पर देउं जवाब। तीजी गल्ती पर न छोड़ूं मुंह में ठूंस देउं तलवार। ।

बरस अठारह क्षत्रिय जिये बारह बरस तक जिये सियार, जाको बैरी सुख में सोवे, बाके जीवन को धिक्कार।

वैसे तो इस समय छोटे-छोटे कई राज्य थे, पर 52 राज्य और राजवंश प्रमुख थे। जिन्हें बावनगढ़ कहा जाता था। इस समय अखंड भारत में ईरान, अफगान से लेकर कन्याकुमारी तक संपूर्ण भारत देश आ जाता था। इसके अलावा 1000 सूबे थे। बाकी सभी छोटे-छोटे राजा किसी न किसी राजा की अधीनता या मित्रता के बंधन में रहते थे। ये बड़े राजा उनकी रक्षा करते थे और छोटे राजा बदले में उनको कर दिया करते थे। उस समय आस-पास और दूर दराज के सभी राजाओं के आपस में मैत्री संबंध थे; पर कभी किसी कारणवश किसी राजा से शत्रुता हो जाने पर, ये एक दूसरे पर आक्रमण भी कर देते थे। जो राजा शक्तिशाली होता था वह हारने वाले राजा को अपने अधीन करके, उससे सालाना एक निश्चित रकम वसूलता था जिसे कर कहा जाता था।

यहां पर ध्यान देने वाली बात यह है कि 10वीं सदी का यह समय ऐसा समय था जहां पर जादू की विद्या, सम्मोहन और तंत्र मंत्र की विद्या का बोल बाला था। ध्यान देने वाली बात है कि उस काल में जादू का होना कोई बड़ी बात नहीं थी। अभी भी छत्तीसगढ़ और कामाख्या में जादू और तंत्र मंत्र का जोर चलता है। ये तिलस्मी युग था। इस समय के राजा बड़े-बड़े तिलस्म बनवाया करते थे। तिलस्म यानी कि भूल भुलैया वाला जादुई महल जो जादू की शक्ति से अभिमंत्रित रहते थे। इसके अंदर कई कैद खाने और गुप्त खजाने भी रखे जाते थे। इसकी रक्षा और चौकसी के लिए कई स्त्री पुरुष और सैनिक रखे जाते थे, जो तिलस्म के दरोगा कहे जाते थे। उस समय अइयारी प्रथा उच्च कोटि की थी। अइयार माने सर्व गुण सम्पन्न जासूस या गुप्तचर, जो युद्ध कौशल के साथ-साथ जादू की विद्या और सम्मोहन विद्या में भी निपुण होते थे। ये समय-समय पर

अपना रूप बदलने की कला में भी पारंगत होते थे। इनकी वाकपटुता के जाल में चतुर से चतुर व्यक्ति भी फंस जाता था। इसी बात से अंदाजा लगा सकते हैं कि जिस राज्य के गुप्तचरों का ये हाल है तो उस समय राजाओं की क्षमताओं का क्या हाल होगा? ध्यान देने वाली बात है कि इस शताब्दी के लोग देवि की आराधना करके उन्हें प्रकट कर लेते थे। इस बात के अनेकों उदाहरण मिलते हैं। स्वामी विवेकानन्द जी और उनके गुरु रामकृष्णजी भी देवि काली जी से बात किया करते थे। इसलिये यह बात सत्य प्रतीत होती है।

इसके अलावा एक महत्त्वपूर्ण बात ये भी थी कि उस काल में लोग अपमानित हो कर जीने से मर जाना पसंद करते थे। किसी भी राजा के लिए उसकी बहन-बेटी उसके राज्य से ज्यादा कीमती होती थी। वह उसका मान सम्मान और इज्जत हुआ करती थी। किसी भी राजा को हरा कर उसकी बहन बेटी का डोला मांगना यानी कि उससे ब्याह करना ऐसे ही था मानों उसे भरी सभा में बुरी तरह अपमानित करना। यह उसके आत्म सम्मान पर सबसे बड़ी चोट होती थी, जिसे वह कभी नहीं भुला पाता था। इसी कारण उस काल में साले-बहनोई और ससुर-दमाद के रिश्ते मधुर न हो कर कटुता पूर्ण हुआ करते थे और समय मिलने पर वह अपने अपमान का बदला लेने से नहीं चूकते थे। इसी के तहत कई राजनैतिक, कूटनैतिक संधि और संबंध आपस में हुआ करते थे। एक दूसरे के खिलाफ अनेकों कुचक्र और चक्रव्यूह रचे जाते थे, जिसके लिए ये सभी राजा सारा जीवन एक दूसरे से लड़ने में बिता देते थे। जो राजा जितना बलशाली होता था, उसके उतने ही अधिक शत्रु होते थे।

दूसरा कारण.....इस समय किसी भी राजकुमारी के विवाह के लिये कुछ शर्तें रखे जाने का चलन था। यह स्वयंवर प्रथा का ही दूसरा रूप था। हर शक्तिशाली राजा अपनी बेटी के ब्याह के लिए द्वारचार के समय एक दूसरे से बढ़ चढ़कर कठिन से कठिन शर्तें रखा करते थे। जब सामने वाला राजा वो सारी शर्तें पूरी कर देता था, तो अब लड़की वाला उसके साहस की प्रशंसा न कर, अपने को अपमानित समझता था और मन ही मन उससे जलन रखता था। इस प्रकार उनके वह संबंध मधुर नहीं हो पाते थे। वह एक दूसरे को नीचा दिखाने का मौका नहीं चूकते थे। इस प्रकार यह प्रथा एक अभिशाप बन गई थी।

उस समय की प्रथा के अनुसार क्षत्रियों में भांवर के समय रस्म होती थी कि लड़की का भाई हर भांवर पर तलवार का वार करके रोकता था और दूल्हे का भाई उस वार को अपनी तलवार से वार बचाकर भांवर पूरी कराता था। यह मात्र रस्में थी। पर कभी-कभी आपस में कुछ कहा सुनी हो जाने पर यही रस्में लड़ाई में बदल जाती थीं और युद्ध होने लगता था। फिर धीरे-धीरे यह चलन बन गया। चूंकि यह समय 1050 से लेकर 1375 तक वीर गाथा काल का समय था, इस काल में बहुत से वीरों का जन्म हुआ था। एक बल का उन्माद ऊपर से सत्ता का मद; इसलिये युद्ध होना स्वाभाविक था।

ये ऐसा समय था जब बाज, कबूतर, हंस और तोते के माध्यम से पत्र पहुंचाये जाते थे। ये पक्षी दूत कहलाते थे। इन पक्षियों को बाकायदा प्रशिक्षित किया जाता था। बाज और चीलों को भी प्रशिक्षित किया जाता था। जिनके पास ये बाज और चीलें रहती थीं वह राजकुमार या राजकुमारी इनकी बोली समझते थे। ज्ञात हो कि चील और बाज बहुत ही समझदार पक्षी हैं। उस काल में इनका आवाहन करके युद्ध क्षेत्र में इनका उपयोग किया जाता था। इसके अलावा हाथी, घोड़ा, उंट, कुत्ते और साड़ों को भी युद्ध के लिए प्रशिक्षित किया जाता था। युद्ध के मैदान के बाहर से सां़ड पर बैठ कर दूत सैनिक युद्ध

का सारा समाचार तंबू में बैठे प्रमुख राजाओं तक पहुंचाने का कार्य करते थे। ये संदेश वाहक सांडिया कहलाते थे। इनकी पोशाक नीले रंग की होती थी।
इसके अलावा हर राजा के राज्य में अपने कवि, भाट, चारण हुआ करते थे, जो अपने अपने राजा की वीरता और सुशासन पर कविता बनाकर गाया करते थे। ये कवि युद्ध के मैदान में जाकर, आंखों देखा हाल कवित्त, छंद, दोहा, सवैया, सोरठा के रूप में लिखा करते थे। यही उस राजा का इतिहास हुआ करता था। ये सभी कवि बहादुर और युद्ध कला में निपुण होते थे। जरूरत पड़ने पर राजा के साथ लड़ा भी करते थे। इनका सबसे बड़ा गुण अपने राजा के प्रति समर्पण और वफादारी था। आल्हा ऊदल के समकालीन बारहवीं सदी के कवियों में कवि जगनिक और चंदबरदायी का नाम प्रमुख है।
कवि जगनिक आल्हादेव के दरबार में रहते थे। और उनके विश्वास पात्र मित्र भी थे। इन्होंने परमाल रासो और आल्हा खंड नामक वीरकाव्य की रचना की है। इसमें आल्हा-ऊदल के द्वारा लड़ी गईं 52 लड़ाइयों का वर्णन और 68 अध्याय हैं।
इसी तरह चंदवरदायी पृथ्वीराज चौहान के दरबार में रहते थे। वे गुरुकुल में बचपन में सात साल की उम्र से ही उनके मित्र थे और उनके वफादार भी। इन्होंने पृथ्वीराज रासो नामक काव्य की रचना की है। इसमें 2500 पेज हैं और 69 अध्याय हैं।
इस समय भारत में तीन महाशक्यियों का राज्य था। दिल्ली में पृथ्वीराज चौहान, महोबा में राजा परमारदेव व आल्हा ऊदल और तीसरे कन्नौज में राजा जयचंद। 11वीं 12वीं सदी का इतिहास इन्हीं महाशाक्तियों की वीरगाथा का काल है, इसलिए हमें इन तीनों के बारे में ही जानना होगा तभी हम इतिहास की सारी हकीकत जान पायेंगे। उस काल के राज्यों के नाम का सही वर्णन नहीं मिल पाने के कारण, या शब्दों का अपभ्रंश होने के कारण हम इन स्थानों के नाम का दावा तो नहीं करते, पर अपनी समझ और उस काल की परिस्थिति, भौगोलिक स्थिति को समझ कर जगहों के नाम लिख रहे हैं।

ऊ जय मां शारदे
सदा भवानी दाहिनी सम्मुख रहें गणेश।
पंच देव रक्षा करें ब्रह्मा विष्णु महेश।
पहले सुमरूं गणपति देवा और मैहर की शारदा माय।
दूजे सुमरूं देवि चण्डिका मनियां देव महोबे क्यार।।
लिखूं कथा आल्हा ऊदल की मां सरस्वती होउ सहाय।
सब देवन का सुमरन करके अब आगे का लिखूं हवाल।।

... जिनकी परम कृपा ये यह पुस्तक पूरी हुई उनको शत्-शत् नम। यह पुस्तक महोबा की देवि चंडिका मां के श्री चरणों में सादर समर्पित है; समर्पित है मैहर की मां शारदा देवि और मनिया देवता को जिन्होंने मुझे शक्ति-भक्ति और बुद्धि देकर इस एतिहासिक पुस्तक को पूरा कराया है।

1 - चंदेरी और चंदकेल वंश

वर्तमान के चंदेरी कहे जाने वाले क्षेत्र का पौराणिक नाम चेदिराज था। वर्तमान का बुंदेलखंड क्षेत्र चेदिराज्य का हिस्सा था। द्वापर में यहां शिशुपाल का राज्य था। वही शिशुपाल जिसकी सौ गलती श्रीकृष्ण ने माफ कर रखी थी। यह चंदेरी नगरी वेत्रवती एवं उर्वशी नदी के बीच में स्थित विंध्याचल की चंद्रकार पहाड़ियों के बीच स्थित है। इसका व्यास 30 मील है, जिसकी सीमा पंचमपुर तक फैली हुयी थी। वर्तमान का दमोह, छतरपुर, झांसी, दतिया, महोबा, खजुराहो, सागर और टीकमगढ़ जिला उस समय चेदिगण राज्य का हिस्सा था। ‘‘इत यमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टौंस" ये बुंदेलखंड राज्य की सीमायें थीं।

भविष्य पुराण का हवाला देकर चंदबरदायी ने लिखा है कि कलियुग के कुछ हजार साल बीत जाने पर चंदेरी में चंद्रवंशीय महाराज चंद्रब्रह्म हुए, जो पुरूष थे, उनके कुल देवता चंद्रदेव और कुल देवि मां चंडिका थीं। महाराज चंद्रब्रह्म ने एक बहुत बड़ी धर्म सभा का आयोजन किया था, उसमें एक बड़ा महायज्ञ किया था, जिससे प्रसन्न होकर चंद्रदेव ने उनको पारसमणि दी थी। यह महोत्सव एक साल तक चला था कहा जाता है कि उसी महोत्सव के कारण उस स्थान का नाम महोत्सव नगर और बहुत बाद में 'महोबा' हुआ। इस बात का उल्लेख खजुराहो शिलालेख 16-में भी मिलता है। चंद्रब्रह्म ने अनेकों इमारतों, किलों और मंदिरों का निर्माण कराया। अनुमान है कि खजुराहों के मंदिरों के निर्माण की नींव उसी समय रखी जा चुकी थी जिसे बाद के शासकों ने कई सालों में पूरा कराया। पारसमणि के प्रभाव से महाराज ने अनेक यज्ञ किये और बहुत सा स्वर्ण बनाकर खजाना एकत्रित किया, जिसे कई तिलस्म बनाकर सुरक्षित रखवाया। उन्होंने बहुत सी सेना रखकर भारत के सभी राजाओं को जीत लिया। कहा जाता है उनका राज्य....काबुल से लेकर कन्या कुमारी तक था। बंदन ब्रह्म के पुत्र नन्नुक ब्रह्म से इतिहास बराबर मिलता है।

नान्नुक- नान्नुक का शासन काल-800 से 825ई. तक रहा। यह बहुत ही बुद्धिमान और पराक्रमी राजा था। परिहारों से युद्ध कर, उन्हें खदेड़कर महोबा को अपनी राजधानी बनाया था। महोबा तभी से चंदेलों की राजधानी थी। खजुराहो की शिल्पकला को पूरा कराने का श्रेय खजुराहो के प्रथम शासक नानुक को ही जाता है। नन्नुक की मृत्यु के बाद उसका पुत्र वाकपति गद्दी पर बैठा।

वाकपति (825 से 850ई.) वह अपनी सीमा विस्तार हेतु दक्षिण को गया, तभी कन्नौज के भोजदेव ने उस पर आक्रमण करके चंदेरी पर कब्जा कर लिया, परन्तु वाकपति ने पुनः चंदेरी को अपने कब्जे में ले लिया। वाक्पति के दो पुत्र थे, जयशक्ति और विजयशक्ति।

जयशक्ति-विजयशक्ति (850 से 857ई.) तक जयशक्ति को जेजाकभुक्ति भी कहते हैं, जेजाकभुक्ति चंदेल खजुराहो के प्रथम शासक हुए थे। उसकी मृत्यु हो गई, उसकी केवल एक पुत्री थी, इस कारण उसका छोटा भाई विजयशक्ति 1854 में गद्दी पर बैठा।

राहिल (857 से 900 ई.) विजयशक्ति के बाद उसका पुत्र राहिल गद्दी पर बैठा, उसने अपने नाम पर राहिल तालाब बनाया और राहिल गांव बसाया, सूर्य मंदिर का निर्माण कराया, महोबा में पुन: महोत्सव कराया जो चंदेल साम्राज्य की शताब्दी साल गिरह

थी।
हर्श-900से 925ई. तक राहिल का पुत्र हर्श भी उसके समान पराक्रमी था। उसने अपने साम्राज्य का विस्तार किया था।
यशोवर्मन- 925 से 40ई. तक-हर्श का पुत्र यशोवर्मन था। खजुराहो शिलालेख 1011 ई. में इसका उल्लेख मिलता है।
धंगदेव-950 से 1000ई. तक राज्य किया था। उनके पुत्र धंग ने मंदिरों का निर्माण और सीमा का विस्तार किया।
गंडदेव (999से 1025 ई.) यह धंगदेव से अधिक शक्तिशाली, बुद्धिमान और दूरदर्शी था।
विद्याधर- 1025 से 1040 ई. तक-महमूद गजनवी ने 1023 में कालिंजर पर आक्रमण किया, जिसमें चंदेलों की हार हुई और गंड को कालिंजर का किला महमूद को देना पड़ा था। महमूद के जाते ही पुत्र विद्याधर ने आक्रमण करके वापस ले लिया था।
विजयपाल- (1040 से 1050ई.) यह शांतिप्रिय राजा था, इसके राज्य में विद्रोह होने लगे थे। देववर्मन कीर्तिवर्मन दो बेटे थे।
देववर्मन-1050 से 1052ई. देववर्मन बीमारी से ग्रस्त था अतः उसकी मृत्यु के उपरांत उसका छोटा भाई कीर्तिवर्मन राजा बना।
कीर्तिवर्मन- (1053 से 1100 ई.) कीर्तिवर्मन बहुत प्रतापी राजा था, महोबा में कीरत सागर और महलों का निर्माण कराया, चंदेरी में 1110 ई. में सात परकोटे के बीच किला बनवाया, पांच मील लंबी चंदेरी की प्रसिद्ध दीवार, हवामहल, नौखंडा महल, बादल महल और मंदिरों का भी निर्माण कराया गया। चंदेरी में पुरातत्व की ये धरोहरें आज भी देखने को मिलती है।
सलक्षण वर्मन- 1100 से 1110 ई. इसने दस साल तक राज्य किया, उसके बाद उसका पुत्र जयवर्मन राजा बना।
जयवर्मन-1110 से 1120ई. जयवर्मन के निःसंतान होने के कारण उसका भाई मदनवर्मन राजा बना।
मदनवर्मन- (1120 से 1165 ई.) मदनवर्मन का पुत्र यशोवर्मन का बीमारी से तीस साल की उमर मे ही निधन हो गया था। उसका पुत्र परिमार्दिदेव दस साल और प्रद्युमनदेव सात साल का था। अपने दादा की मृत्यु के उपरांत परिमार्दिदेव राजा बना। परिमार्दिदेव ने 1165 से 1202 तक राज्य किया। दस्सराज, बच्छराज, आल्हा ऊदल इनके ही शासन काल में थे। बच्छराज ने 1167 में बछराउनी बसाय था जिसका नाम बाद में अजयगढ़ हो गया। यह बात अजयगढ़ शिलालेख 1168 में मिलती है।
जानकारी हेतु-परिमार्दिदेव के पुत्र त्रिलोकवर्मा हुए, इन्होंने महोबा पर 1203 ई.से 1245 ई. तक राज्य किया था। यह जानकारी अजयगढ़ शिलालेख 1212 ई. और गुढ़ा ग्राम के ताम्रलेख 1204ई. से मिलती है। 1233 ई. में मलिक नसरतउद्दीन तहसी ने कालिंजर पर आक्रमण करके बुंदेलखंड को लूटा था। यह बात ककरेड़ी शिलालेख 1239 से मिलती है। इसके बाद त्रिलोक वर्मा ने कलचुरी राजा विजय देव को परास्त करके कटनी जबलपुर पर अधिकार कर लिया, 1246 ई.से 1286 ई. तक त्रिलोकवर्मा के पुत्र वीरवर्मा ने 1246से 1285 तक महोबा पर राज्य किया। इसकी जानकारी चरखारी ताम्रलेख 1254 ई., अजयगढ़ शिलालेख 1268ई. व 1280 ई., दुदाही ताम्रलेख 1280ई. से मिलती है। वीरवर्मा का पुत्र भोजवर्मा 1285 से 1289ई. तक, अजय गढ़शिलालेख 1288ई. वीरवर्मा का पुत्र हम्मीर देववर्मा 1289 से 1308ई. तक हमीरपुर हमीरदेव का

बसाया है। यह जानकारी चरखरी ताम्रलेख 1288ई., दमोह के ब्रह्मनी शिलालेख 1308 ई. एवं सलैया सती शिलालेख 1309 ई. से उपलब्ध है। हम्मीरदेव के पुत्र वीरवर्मा द्वितीय ने 1309 से 1329 ई. तक, शशांकदेव, भूप भिलावादेव और परिमार्दिदेव द्वितीय ने 1329 से 1390 तक राज्य किया। इसका उल्लेख 1390 ई. के उरई अभिलेख में है। इसके बाद जनरल आफ एशियाटिक सोसायटी बंगाल भाग-1 के पेज क्रमांक 42 पर चंदेलवंश के अंति शासक का नाम कीर्तिवर्मा द्वितीय था। यह लेख 1409 का है। इनकी इकलौती संतान दुर्गावती थीं इसके बाद का इतिहास ओरछा गजेटियर पेज क्रमांक 18-19 पर है।

2 - परमार्दिदेव और कनवज

इस कहानी का आरंभ 1130 से होता है, महोबा का प्राचीन नाम महावतपुरी है। राजा चंदेल के समय इसका नाम महोत्सव नगर हुआ उसके बाद महोबा, जहां साक्षात् महामाया का निवास है, इन्हें मां चडिका के नाम से जानते है।
राजकुमार परिमारदेव की उमर सोलह साल की थी। ऊंचा पूरा कद गोरा रंग, कंधे पर झूलते घुंघराले बाल और कामदेव जैसी सुन्दरता। जो भी देखे देखता रह जाये। उनके सिर से पिता का साया तो बचपन में ही उठ गया था, पर उनके दादा मदनवर्मन ने उनको हर तरह की शिक्षा से परिपूर्ण बनाया। महोबा के महाराज मदनवर्मन अपना राज्य कुशतापूर्वक चला रहे थे। उनका एक मात्र पुत्र यशोवर्मन बीमारी के चलते तीस साल की उम्र में ही स्वर्ग सिधार गया था। उस समय उसके बेटों की उम्र दस साल और सात साल थी। बड़ा परिमार्दिदेव और छोटा प्रद्युमनदेव। ये बचपन से ही वीर पराक्रमी और बुद्धिमान थे। यह अपने दादा महाराज की हर आज्ञा का पालन करते थे। राजकुमार परिमार्दिदेव ने सोलह साल की उमर में ही अपने दादा महाराज मदनवर्मा के साथ मालवा के परमारों के खिलाफ युद्ध में भाग लिया था। उसने इतनी कुशलता पूर्वक युद्ध किया कि सभी ने उसकी वीरता का लोहा माना था। उसके बाद राजकुमार परमालदेव को विधिवत् युवराज का पद दिया गया। उसके दो साल बाद 18 साल की उमर में राजकुमार परमाल ने गुजरात के चालुक्यों के खिलाफ स्वयं सेना की कमान संभाली और उनको हराकर चंदेलवंश का गौरव बढ़ाया। अब सभी राज्यों में चंदेल राजकुमार के चर्चे होने लगे थे। उस समय महाराज मदनवर्मा के मंत्री गदाधर और विद्याधर बहुत ही राजनीति कुशल व्यक्ति थे। वह परमार्दिदेव को बहुत स्नेह करते थे। राजकुमार परमालदेव भी उन्हें अपने पिता के तुल्य मानता था और उनकी सलाह लेकर कार्य करता था। राजकुमार अब हर दिन दरबार के कामकाज देखते थे। अपनी तलवार का जौहर दिखाते हुए राजकुमार ने तीन दो साल के अल्प समय में कालिंजर, अजय गढ़, मनियागढ़मड़फा, बारीगढ़, कुंड़ार और कालपी के प्रसिद्ध दुर्गों पर अपना अधिकार कर लिया था। दूसरी बात जहां पारस पथरी हो उस राज्य में सुख शांति समृद्धि तो होती ही है। राजकुमार का वर्चस्व और अधिकार बढ़ गए थे। इसी समय परमाल ने हीरागढ़ के राजा हीरनदेव को हराकर उसकी बेटी से अपने भाई प्रद्युमनदेव का विवाह किया। अब तक परमाले की कीर्ति बावनगढ़ में फैल गई थी। स्थिति ऐसी बनी कि परमारदेव को कन्नौज जाना पड़ा क्योंकि.....

कनवज गढ़ यानी कि वर्तमान का कन्नौज। कन्नौज पर राठौर वंश का राज था। यहां के राजा अजयपाल के दो बेटे थे। जयचंद और रतिभान। जयचंद का ब्याह दिल्ली के तोमरवंशी राजा, पृथ्वीराज के नाना अनंगपाल की बड़ी बेटी सुन्दरी के साथ हुआ था। रतिभान का ब्याह परिमार्दिदेव चंदेल के वंश की बेटी चंपावती के साथ हुआ था, जो दूर के रिश्ते में परमाल की बहन लगती थी। इस नाते परमाल रतिभान का साला था। कन्नौज के राजा इस समय जयचंद थे, जो बहुत ही दूरदर्शी और कुशल राजनीतिज्ञ थे। कन्नौज एक बड़ा राज्य था। पूरे अवध प्रांत तक के सभी सूबे इस राज्य के आधीन थे। जयचंद अपने भाई रतिभान के साथ राज-काज सँभाल रहा था। दुखद बात यह थी कि दोनों भाइयों के कोई संतान अभी तक नहीं थी। इस समय जयचंद गंभीर बीमारी के कारण तीन साल से परेशान थे। उसे छोड़कर रतिभान किसी भी युद्ध पर नहीं जा सकता था। राज्य को खाली नहीं छोड़ा जा सकता था। उसकी बीमारी का समाचार पाकर दूर-दूर तक फैले नेपाल और अफगान के किनारे पर बसे आधीन राज्य कर न देकर स्वतंत्र होने का मन बना रहे थे। उनका पड़ोसी उरई का राजा माहिल सबको भड़काकर उनका साथ दे रहा था। इस बात से रतिभान परेशान हो इस समस्या का हल खोज रहा था। परमालदेव की वीरता के चर्चे सुनकर रतिभान ने विचार किया।
एक दिन रतिभान बोला- ‘‘भइया, पता चला है कि चंदेरी का राजकुमार बढ़ा ही सुन्दर है। उसकी वीरता के आगे बड़े-बड़े सौ-सौ सूरमा भी नहीं टिक पाते हैं। सभी क्षत्रिय उससे सनके हुए हैं। सबसे बड़ी बात हमारा साला है, तो इस मौके पर रिश्तेदारी का लाभ उठाया जाये। इस समय आप बहुत अस्वस्थ चल रहे हो, आपको अकेला छोड़ कर मैं राज्य से बाहर नहीं जा सकता। ऐसे में अगर वह कुछ दिनों के लिए हमारे राजदरबार में रिश्तेदार बनकर रहे, तो हमारे राज्य का भी मान बढ़ जायेगा और सारे भारत देश में हमारी शान बढ़ जायेगी। जो दूरदराज के लोग बगावत का मन बनाकर हमें कर नहीं दे रहे हैं, वह शांत हो जायेगे।
‘‘जब वह इतना वीर है तो हमारे यहां क्यों आयेगा?" जयचंद ने पूछा
‘‘भइया, पहली बात तो वह हमारा साला है, बुलाने पर न नहीं कर पायेगा। उसे रिश्तेदारी का वास्ता देकर मेहमानी को बुलायेंगे। दूसरी बात सच्चे वीर की यही तो कमजोरी होती है कि वह मदद मांगने वाले को कभी मना नहीं करता है।" रतिभान ने कहा
तुम कहना क्या चाहते हो? यह सुनकर रतिभान ने कहा- ‘‘भैया देखो हमने ये खत लिखा है- हे चंदेल वंशी वीर राजकुमार, राम जुहार-हमने आपकी वीरता के बहुत किस्से सुने हैं। आपने मालवा, गुजरात के साथ दक्षिण को भी फतह कर लिया, यह सुनकर हमारी छाती चौड़ी हो गई। आखिरकार आप हो तो हमारे रिश्तेदार ही। हमारे भाई राजा जयचंद इस समय एक लंबी बीमारी से पीड़ित होकर रोगशैया पर हैं। इसलिए हम बधाई देने नहीं आ सके; हो सके तो आप ही हमारा आमंत्रण स्वीकार करके मिलने आने का प्रयास करें। हमे आपसे मिलकर बहुत प्रसन्नता होगी। आप हमारी मेहमानी स्वीकार कर, हमारे दरबार की शोभा बढ़ाकर हमें भी मेहमान नवाजी का मौका दें। आशा है आप हमारी मित्रता और न्योता दोनों ही स्वीकार करेंगे। आपकी बहिन की राखी भी आपका इंतजार कर रही है। पाती सुनकर जयचंद ने दस्तखत कर दिए और मुहर लगा दी।
रतिभान ने पाती रेशमी कपड़े में लपेटकर, एक राखी साथ में रखकर दूत से कहा....यह

पाती जल्दी ही चंदेलाराय को देना।
कुछ दिनों बाद दूत चंदेल के दरबार में पहुंचा। देखा चंदेल का दरबार सजा हुआ है। एक से एक वीर योद्धा बैठे हुए हैं। इंद्र का सा वैभव चारों ओर बिखरा पड़ा है। सामने ही राजा मदनवर्मन सिंहासन पर विराजमान हैं। पास ही राजकुमार परमालदेव का आसन है। उसने दस कदम पहिले से बंदगी करी और अपना परिचय दिया। उसके बाद सम्मान सहित पत्रिका पेश की। पत्रिका लेकर प्रद्युमन ने जयचंद के दस्तखत देखे और बोला.....यह पाती तो कनवज गढ़ से आई है।
महाराज ने हुकुम दिया- ‘‘पढ़ो, प्रद्युमन ने पाती पढ़कर सुनाई। मजमून सुनकर सारे दरबार में सन्नाटा छा गया।
प्रद्युमन बोला-बावनगढ़ में बहुत सूरमा हैं, किसी को भी बुलाकर सम्मान कर सकता था। हमें ही क्यों बुलाया है? हम नहीं जायेंगे। इसमें कनौजीराय की कुछ चाल भी हो सकती है। आज रिश्तेदारी याद आ रही है, अभी तक कहां थे?
परमालदेव ने कहा ‘‘आखिर हम उनके संबंधी हैं। उन्होंने हमें आमंत्रण भेजा है, एक सच्चे क्षत्रिय योद्धा को किसी का भी आमंत्रण अस्वीकार नहीं करना चाहिए। अगर आज हम राजा जयचंद के बुलावे पर नहीं जाते, तो हमारा क्षत्रिय धर्म घटेगा। हमारी सात पीढ़ी को कलंक लगेगा। उसने मित्रता का हाथ बढ़ाया है, हमें हाथ पीछे नहीं हटाना चाहिए। दूसरी बात हमारी बहिन की राखी भी आई है, हमें राखी का मान रखना चाहिए। अगले पखवारे में राखी का त्योहार है, इस बार हम उस बहिन से राखी बंधवायेंगे।
प्रद्युमन ने कहा- ‘‘दादा महाराज, अगर जाना जरूरी है, तो भैया की जगह मैं चला जाता हूं।"
महाराज ने कहा-कुंवर परमाल को बुलाया है इसलिए उसे जाने दो, उनसे हमारी कोई शत्रुता नहीं है, पर सावधानी रखना।
राजकुमार ने कहा- ‘‘जी दादा महाराज, मैं अपना ध्यान रखूंगा। प्रद्युमन तब तक तुम दादा महाराज के पास रहकर यहां के राज्य की व्यवस्था सँभालो। कुंवर परमाल महलों में जाकर, अपने सभी हथियारों से सुसज्जित होकर अपनी गजगाहन घोड़ी पर चढ़कर चल दिया। घोड़ी तो हवा से बातें करती ही थी, सो वह जल्दी ही कन्नौज पहुंच गयी, अपनी घोड़ी को दरबान के हवाले कर वह जयचंद के दरबार में बढ़ा। तब तक एक सैनिक ने जयचंद को सूचना दी कि राजकुमार परमाल आये हैं।
जयचंद ने कहा- ‘‘उन्हें आदर सहित दरबार में ले आइये। परमालदेव सोच रहे हैं कि जयचंद का बड़ा नाम सुना था चलो आज सामना हो जायेगा। वह दरबार में पहुंचा तो कोई भी उसके स्वागत में खड़ा नहीं हुआ। अपने क्रोध को दबाकर सीना तानकर सिर ऊंचा करके सिंहासन पर बैठे जयचंद से एक हाथ उठाकर रामजुहार करी और बीचों बीच दरबार में खड़ा हो गया। जयचंद ने बैठे-बैठे ही कहा- ‘‘राम-राम, आइए चंदेल राजकुमार, विराजिए और उसे आसन पर बैठने का इशारा किया। चंदेलाराय मन ही मन आक्रोशित होता हुआ उस आसन की ओर बढ़ा ही था कि उसका पैर लोहे के कटघरे में फंस गया, जो बड़ी ही कुशलता पूर्वक वहां छुपाकर लगाया गया था। कारण यह था कि पैर कटघरे में फंसने के कारण झुककर उसे निकालना ही पड़ेगा, वह भरे दरबार में झुक जायेगा। जबकि वीर योद्धा किसी के सामने सिर नहीं झुकाता, चंदेलाराय समझ गये कि उनके बलबुद्धि की परीक्षा ली जा रही है।
उन्होंने चारों ओर नजर घुमाकर अपनी सांग उठाई और घुमाकर पृथ्वी पर इतनी जोर

से मारा कि घड़ाम की आवाज के साथ ही वह जमीन में सात हाथ तक घुस गई। बीच दरबार में गड्ढा हो गया था। सभी दरबारी और राजा जयचंद घबराकर खड़े हो गए। उसके बाद परमाल ने बिना झुके अपने पैर को ऊपर उठाया और बीस किलो लोहे के कटघरे को हाथ से पकड़ कर ऐसे तोड़ दिया जैसे वह कच्चा धागा हो। उसके बाद उसे जयचंद के सामने फेंक दिया। सारे दरबारी सहम गए।
तभी दांव-पेंच में चतुर जयचंद ने कहा- राजकुमार की जय। राजदरबार जयकार से गूंज उठा। जयचंद सिंहासन से उठ हाथ जोड़कर बोला-आइए राजकुमार! हमें तो आपकी ताकत पर भरोसा था, पर हम दरबारियों को आपकी ताकत दिखाना चाहते थे। विराजिए!" वह पास वाली आसन पर बिठाकर स्वयं बैठता है। दासियां उसके चारों ओर से पंखा झलकर सेवा में लग जाती हैं।
जयचंद ने कहा.....राजकुमार, आज से आप ही कनवज के मालिक हो। हमने आपके बल बुद्धि और कौशल को परख लिया है। हमें विश्वास हो गया है कि आप जैसा कोई दूसरा नहीं हैं, आप तो पारस पथरी के मालिक हो।
परमाल ने कहा- ‘‘नहीं महाराज! यह गद्दी आपकी है, आपकी ही रहेगी। हम तो आपकी मित्रता का निमंत्रण स्वीकार कर, पुरानी रिश्तेदारी को आगे बढ़ाने आये हैं। राजा जयचंद ने हर तरीके से उनका मान रखते हुए महलों में राजसी तरीके से रहने की व्यवस्था करी। उनके सम्मान में राजसी भोज का आयोजन किया गया। इस प्रकार एक पखवाड़ा बीत गया और राखी का त्यौहार आ गया। परमाले की बहिन ने बड़ा उत्सव मनाते हुए अपने भाई को राखी बांधी, परमाल ने रत्नहार भेंटकर, उसकी रक्षा का वचन दिया।
जयचंद की बीमारी की खबर पाकर उरई के माहिल राय ने सीमा पर दो बार चढ़ाई भी की थी, पर कनवज की सेना ने उसे खदेड़ दिया था, अब वह पड़ोसी राजाओं को भड़का रहा है, उनका लगान भी बंद करा दिया है। जयचंद जानता है कि समय रहते उसका इंतजाम नहीं किया गया तो वह घातक हो जायेगा। इसीलिए एक दिन दरबार में जयचंद ने पांसा फेंकते हुए कहा- ‘‘महाराज, उरई के राजा माहिलराय ने आसपास अच्छी पैठ बना ली है। कई संधियां भी कर ली हैं। आजकल माहिलराय वहां आस-पास के लोगों को आपके खिलाफ भड़काने की कोशिश कर रहा है। उसने तो आपके पश्चिमी राज्यों से लगान भी वसूला है, वह कालिंजर का किला हड़पने की जुगत में है। आप चाहें तो स्वयं पताकर लीजिए। वह दिन दूर नहीं जब वह आपको ही आंख दिखाने लगे।
चंदेल कुमार ने कहा- हां महाराज, आपकी बातों में दम है। कुछ उड़ती हुई सूचनायें हमने भी सुनी हैं। हमारे सेनापति ने भी हमें उसके बारे में आगाह किया था। हम जाकर शीघ्र ही इस बारे में निर्णय लेंगे।
जयचंद बोला-अभी एक साल पहले हम गंगा नहाने गए थे। उस समय स्वास्थ्य ज्यादा खराब था उसी समय तट पर हमें माहिलराय मिल गए, वह बोले - का हो गया महाराज? हमने बताया कि बीमारी ने जकड़ रखा है।
वह हंसकर हाथ नचाकर बोले- ‘‘महाराज, अब तो कनवज का सूरज अस्त हुआ समझो, क्योंकि दोनों ही निरवंशी हो।"
यह सुनकर रतिभान ने उसे ललकार कहा- ‘‘ए परिहार, जवान सँभाल कर बात कर नहीं तो तेरे घर का दिया बुझा दूंगा।"
वह उसी ढीठई के साथ बोला - अपनी चिंता करो, भगवान ने स्वयं आपके वंश का दिया

बुझा दिया है। उसी समय मुझे चक्कर आ गया और पालकी में लिटाकर तंबू में लाये, तब तक माहिल भाग गया था। महाराज वह बात आज तक मुझे साल रही है। तीन साल हो गए, सोते जगते मैं उसकी बात को दिल में चुभता महसूस करता हूं। मैं उसे बताना चाहता हूं कि मैं कितना सक्षम हूं। मेरा राज उसके राज से दस गुना बड़ा है फिर भी वह धेला भर का होकर मुझे आंखें दिखा गया। वह मेरे ही संबंधियों का राजस्व खाकर मुझे ही धौंस दे गया और जयचंद खांसने लगा।

चंदेलराय ने कहा- ‘‘महाराज, आप गुस्सा न करें। अभी आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। समय आने पर माहिल को उसकी गुस्ताखी की सजा दी जायेगी; आखिर उसने मेरे मित्र का अपमान किया है। जयचंद ने खांसते हुए हाथ पकड़ कर कहा- महाराज, अब वह समय आ गया है। आप हमें वचन दीजिए कि आप मेरे इस अपमान का बदला उससे लेंगे, तभी हमारी आत्मा को चैन मिलेगा।

चंदेलराय ने कहा- ठीक है महाराज हम आपको वचन देते हैं कि माहिलराय को हम आपके सामने बांध कर हाजिर करेंगे।

जयचंद ने कहा - ‘‘महाराज आप धन्य हैं, आप हमारे यहां पधारे, यह हमारा सौभाग्य है। बस हमारी बीमारी ही हमारी सबसे बड़ी दुश्मन बनी हुई है। इसकी खबर सुनकर कुछ सूबेदार लगान नहीं दे रहे हैं। उनको यही माहिलराय जाकर भड़काता रहता है।

परमाल- ‘‘महाराज आप चिंता न कीजिए, आपने हमको मित्र बनाया है तो किसी तरह की कोई भी परेशानी हो हमसे कह सकते हो। हम हर संभव उसे दूर करेंगे, पहले आपको अपना स्वास्थ्य ठीक करना चाहिए, तो मौका देखकर जयचंद ने कहा- कहते हुए संकोच हो रहा, पर आपसे क्या छुपाना! मेरी लंबी बीमारी के कारण भाई दरबार छोड़कर नहीं जा सकते। यह खबर सुनकर कुछ राजा लगान नहीं भेज रहे, खजाने पर भी असर पड़ा है, तो परमाल ने कहा - ‘‘आप हमें निसंकोच उन राजाओं की सूची दीजिए।"

जयचंद ने खजांनची को बुलाकर सारा हिसाब समझाया। परमालदेव ने मन में सोचा कि नीति कहती है कि पहिले बाहरी और कमजोर लोगों पर शिकंजा कसना चाहिए, उसके बाद मगरमच्छ को दबोचना चाहिए। राजा परमाल ने मुंशी को बुलाकर अपनी ओर से वसूली पत्रक तैयार कराकर सभी बकायदारों को भेजा। साथ में कुछ सेना भी भेजी न मिलने की शर्त में लिखा कि उसे चंदेलाराय से सामना करना पड़ेगा। चंदेलराय कनवज में मेहमानी कर रहे हैं यह बात सभी को पता लग चुकी थी। इसलिए इस बात का इतना असर पड़ा कि मुंशी जिस भी सूबे में पत्रक लेकर जाता, सूबेदार चुपचाप सारा लगान चुका देता था। एक ही पखवारे में परमाले ने सभी सूबों का बकाया वसूल करके जयचंद का खजाना भर दिया। अब केवल माहिलराय से निपटना बाकी था। जयचंद की चारों ओर प्रशंसा होने लगी। एक रोज जयचंद ने पूछा- ‘‘चंदेल कुमार अब आगे क्या करने का विचार है?

अब मैं कुछ दिन गंगा किनारे वन-बिहार करूंगा, उसके बाद माहिल से दो-दो हाथ करूंगा और अपने नगर महोबा चला जाऊंगा, दादा महाराज को चिंता हो रही होगी, हालांकि मैंने समाचार भिजवा दिया है।

जयचंद ने कहा..."राज कुमार, कोई पचास कोस दूर गंगा किनारे जंगल के बीच एक बहुत ही सुंदर अलौकिक बाग है जहां पर हर तरह के फल-फूल हैं। बाग हर मौसम में हरा-भरा रहता है। घने जंगल में होने के कारण वहां कोई नहीं जाता, वहीं एक प्राचीन शिवमंदिर है, जो शिल्पकला का बेजोड़ नमूना है। उसे देखकर आपको निश्चय ही

प्रसन्नता होगी। वहां कुछ दिन विश्राम करिये।
''ठीक है हम कल ही रवाना होंगे।" परमाल ने कहा, तो जयचंद बोला-ठीक है हम सौ सैनिक आपके साथ भेज देते हैं।
नहीं महाराज, इसकी कोई जरूरत नहीं। हम अकेले ही जायेंगे। इस प्रकार वह घोड़ी पर सवार हो उत्तर दिशा में बढ़ता गया। नगर की सीमा समाप्त होने पर, जंगल मिला, फिर जंगल घना हो गया, पर उस बाग का कहीं नामो निशान नजर नहीं आया। सारा दिन रास्ता तय करने के बाद शाम को उसे मंदिर के गुम्बद नजर आये। वह प्रसन्न होकर उसी दिशा में गया। आगे उसे एक बहुत ही सुन्दर बाग नजर आया, जहां पर बहुत से फूलों और फलों के पेड़ थे। जिसकी खुशबू चारों ओर फैली थी। यह देख मन खिंचा चला गया। शाम के धुंधलके में भी पेड़ों पर फल नजर आ रहे थे, राजकुमार ने चारों ओर देखा और एक घने लता मंडप के बीच डेरा डाला, यहां उसे कोई नहीं देख सकता था। घोड़ी को छोड़ दिया, कुछ फल खाकर सो गया।
सुबह हंसी की खिलखिलाती आवाज सुनकर राजकुमार की नींद खुली। वह चौंक गया कि इस निर्जन वन में कोई स्त्री कैसे आ सकती है? वह चुपचाप उठकर पेड़ों के पीछे छुपता हुआ आवाज की दिशा में बढ़ा चला गया। इस समय सूर्य की सुरमई किरणें धरती पर फैली ही थीं। सरोवर का जल भी सुरमई दिख रहा था, हवा मंद मद चल रही थी। तभी उसने देखा कि पांच सुंदर स्त्रियां बाग के सरोवर में स्नान कर रही हैं और आपस में जलक्रीडा कर रही हैं। वह सोचने लगा कि इस निर्जन वन में ये अकेली स्त्रियां कैसे? तभी उसकी नजर उन पंखों पर पड़ी, जो पेड़ की डाली पर टंगे हुए थे। वह समझ गया कि वे सब परियां हैं। अब वह आश्चर्य चकित और खुश भी हुआ कि उसे परियों को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अभी तक तो वह इनकी कहानियां ही सुना करता था। कुछ देर तक देखने के बाद वह सचेत हुआ और कुछ सोचकर परियों के पंख उठा कर रख लिए।

3-महोबा का राजकुमार

कुछ देर बाद परियां पास ही शिव जी के मंदिर में पूजन करने चली गईं। अब राजकुमार भी मंदिर के पास पेड़ के नीचे बैठ गया और मधुर स्वर से राग भैरवी में भगवान शिव की स्तुति गाने लगा। चारों ओर उसके गाने की स्वर लहरी फैलने लगी। आवाज इतनी मधुर थी कि सुनने वाला बरबस ही उस ओर खिंचा चला आये। आवाज सुनकर वह सभी परियां चौंक गईं।

एक परी बोली..."इस निर्जन में ये कौन मुसाफिर आ गया? आज तक तो केवल हम ही यहां आते थे। यह तो हमारी जगह है।"

दूसरी बोली..चलो देखें, तीसरी ने कहा...इस गुस्ताख को ऐसी सजा देना कि फिर कभी यहां आने की हिम्मत न कर सके।

इस प्रकार बातें करती हुई वह मंदिर से बाहर आईं और मंत्रमुग्ध होकर आवाज की दिशा में ख्िंची चली गईं और राजकुमार के पास ही जाकर गाना सुनने लगीं। गाना समाप्त होने पर परियों ने देखा कि वह एक बहुत ही सुन्दर सजीला युवक है।

एक परी ने कहा....आपकी राग भैरवी तो अद्‌भुत है, ऐसी रागिनी पहले कभी नहीं सुनी। आप कौन हैं, कहां से आये हैं?

परमाल ने कहा..."मैं महोबा का राजकुमार परमार्दिदेव हूं, इस वन में घूमने आया हूं।"

तभी दूसरी परी की नजर उसके हाथ में पकड़े पंखों पर पड़ी, वह बोली...ऐ मुसाफिर, हमारे पंख दीजिए, हमें देर हो रही है। हम ज्यादा देर पृथ्वी पर नहीं रुक सकती हैं।

तीसरी परी.... "अगर आपकी कोई इच्छा हो तो बताइए हम उसे पूरा कर सकती हैं।"

चौथी परी...हां-हां, परियों से मुलाकात व्यर्थ नहीं जायेगी। पांचवीं परी जो सबसे सुन्दर थी वह चुपचाप दूर खड़ी राजकुमार को देख रही थी। राजकुमार भी उसे देख अपने अंदर सम्मोहन सा महसूस कर रहा था। राजकुमार ने पांचवीं परी के पास जा उसका हाथ पकड़कर कहा.... आप कुछ देना ही चाहती हैं तो बस इस परी को दे दीजिए। हम इसे अपनी रानी बनाना चाहते हैं।

परियों ने कहा... नहीं, यह सम्भव नहीं है। हम परियां किसी पृथ्वी वासी की रानी नहीं बन सकती। हम ऐसा नहीं कर सकते है।

राजकुमार... "तब तो यह पंख नहीं मिलेंगे।" अब तो सब परियां सोच में पड़ गईं, तभी एक परी बोली....राजकुमार जी, परीलोक राजा इन्द्र के अधिकार में है। इसके गले में मानो साक्षात् सरस्वती का निवास है, ये बहुत ही अच्छा गाती है, इसी कारण उसका नाम रागनी है। इन्द्र के दरबार में इसे खास स्थान प्राप्त है। इसे चौपर खेलने में महारथ हासिल है स्वयं इन्द्रदेव उसके साथ चौपर खेलते हैं। अब ऐसी परी को कौन आपको देगा? फिर भी आप स्वयं उनसे इसे मांग सकते हो, हम ये निर्णय नहीं ले सकती हैं।

राजा ने पूछा ...."मैं इन्द्र से कैसे मिल सकता हूं?"

परी ने कहा... "हम आपकी ये मदद कर सकते हैं!", हर पूरनमासी की चांदनी रात में इन्द्रदेव इसी बाग में राग रागनी की महफिल सजाते हैं। देवताओं के साथ हम परियां भी आती हैं। परसों पूरनमासी है, आप यहीं रहना और इन्द्रदेव का दरबार लगने पर जो राग आपने अभी गाया था, वही राग इन्द्रराज को सुनाना, फिर उनके प्रसन्न होने पर आप उनसे रागनी परी को मांग सकते हैं।"

‘‘मैं सचमुच इन्द्रदेव से मिल सकता हूं!" तो परी ने कहा- ‘‘हां, आप पंख वापस दें, तो हम आपको इन्द्र से मिला सकते हैं।"
‘‘क्या मैं आपकी बात पर भरोसा करुं? परी ने कहा-हम परी हैं, हमारा वचन सत्य होता है, जो कह दिया मानो कर दिया।"
राजकुमार ने सभी को धन्यवाद कह पंख वापस किए, सभी परियां भी राजकुमार का भी धन्यवाद कर आसमान में उड़ गईं।
आज पूरन मासी की चांदनी रात में खास देवता एक एक कर आने लगे और वहां पर स्वर्ग की तरह दरबार सज गया। कुछ ही देर बाद इन्द्र का आगमन हुआ। उनके साथ वह परियां भी थीं, परियों के आते ही राजकुमार कुछ छिपकर पीछे आ गये, परियों ने उसे बैठने का इशारे किया। जैसे ही वहां की नर्ताकियों ने नाच शुरू किया, वैसे ही परी के इशारा पर राजकुमार ने राग अलापा। कुछ ही देर में ऐसा समां बंधा कि सारा दरबार उसकी स्वर लहरी में खो गया। गाना बंद होने पर भी सभी ठगे से बैठे रहे। इन्द्र ने कहा ...राग भैरवी गाने वाला कौन है? इसे पहिले कभी नहीं सुना। राजकुमार ने खड़े होकर विनम्रता से कहा.. महाराज, हमारे अहोभाग्य! आपके दर्शन हुए; मैं मुसाफिर हूं, इसी बाग में रुका था, आपकी महफिल देखकर अपने को न रोक सका।
देवराज ने कहा..."हम आपकी रागनी सुनकर बहुत खुश हुए। मांगिए आपकी जो इच्छा हो।
राजकुमार ने हाथ जोड़कर विनय पूर्वक कहा..."देवराज, आप मुझ गरीब को कुछ देना ही चाहते हैं, तो बस रागनी परी मुझे दे दीजिए, जिसके लिए में यहां पर रुका हूं। यह कह कर उसने सारी बात सच-सच बता दी।
देवराज ने कहा ..."राजकुमार, परियां पृथ्वी पर नहीं, परी लोक में ही रहती हैं, पर मैं आपकी सच्ची बात से बहुत खुश हूं, इसलिए रागनी परी आपको देता हूं। आपके पूर्वज चंद्रब्रह्म हमारे अच्छे मित्र थे। हमने खुश होकर उन्हें पारस मणि भेंट की थी। आज मैं अपनी उसी मित्रता के कारण तीन उपहार और देता हूं। पहला ये खांडा बिजुरिया नाम का हथियार है, इसका वार कभी खाली नहीं जाता है, पर कठिन परिस्थिति में ही इसका नीतिगत उपयोग करना। यह खड्ग बिजली की गति से चलता है इसा लिए इसका नाम खांडा बिजुरिया है दूसरी चीज ...ये जादुई चादर है, इसे ओढ़ने वाला किसी को नजर नहीं आता है। और हवा में उड़कर एक स्थान से दूसरे स्थान को जा सकता है। यह हमेशा रागनी परी के पास ही रहेगा। बहुत जरूरत पड़ने पर आप इसका उपयोग कर सकते हो। तीसरी भेंट में एक देव मूर्ति देकर कहा- ‘‘हम आपके साथ मनियांदेव को भेज रहे हैं। अब समय आ गया कि मनियां देव पृथ्वीलोक में लौट जायें। आप इनकी स्थापना मां चंडिका की नगरी महोबा में करायेंगे। ये संकट के समय आपसे प्रत्यक्ष होकर बात करेंगे। ये चंदेल वंश के आज से प्रमुख देवता होंगे। इसके अलावा जो क्षत्रिय राजवंश इनकी पूजा करेंगे, ये उन सभी क्षत्रिय राजाओं के सहायक होंगे। उन्हें धन-धन्य ओर समृद्धि प्रदान करेंगे। जिस दिन चंदेल वंशी राजा अनाचार में लिप्त होकर अपनी मर्यादा को भूलकर, इनके सिद्धांतों का अनादर करेंगे, यह मनियां देव अपना मुंह फेर कर उल्टे हो जायेंगे। बस समझना उस दिन से समस्त क्षत्रिय राजवंशों का राज्य छिन जायेगा और वह आम इंसान की तरह अपनी रोजी-रोटी की चिंता में घूमते नजर आयेंगे। उसके बाद भारत देश पर म्लेच्छों का वर्चस्व बढ़ना शुरू हो जायेगा।
परमाल ने कहा- ‘‘देवराज, आपकी इतनी कृपा पाकर मैं धन्य हुआ।"

देवराज ने कहा....."नहीं राजकुमार, यह सब तो विधि का विधान है। ये चीजें तो आपके पास पहुंचना ही थीं। ये आपकी आने वाली पीढ़ी को धर्मयुद्ध में काम आयेंगी। ये उनकी अमानत है जो मैं आपके द्वारा पहुंचा रहा हूं। मेरा आपका मिलना पूर्व निर्धारित था। अब एक शर्त भी है उसे सुनो!.....हर पूर्णिमा की रात को मैं परी के साथ चौपर खेलने आया करूंगा, जिस दिन भी आपने हस्तक्षेप किया या किसी ने भी पूछताछ की उसी दिन परी आपसे बिना कुछ बोले अपने लोक वापस आ जायेगी। उसके साथ जादुई चादर भी वापस आ जायेगी, बोलो मंजूर है? राजकुमार बोले- "जी हां, देवराज मुझे मंजूर है।"

ठीक है, अब आप इन सब चीजों को लेकर, परी के साथ मेरे उच्चैश्रवा घोड़े पर सवार हो जाइए, यह आपको छोड़कर वापस आ जायेगा। ध्यान दीजिए, इंद्र के पास वही उड़ने वाला घोड़ा है, जो समुद्र मंथन के समय निकला था।

जी धन्यवाद, महाराज मेरा घोड़ा मेरे साथ है। हम उसी से जायेंगे। इंद्रदेव ने अपना दरबार समाप्त किया और चले गये।

परमाल इन सौगातों के साथ बाग में रुक गए और परी रानी के साथ गंधर्व विवाह करने की इच्छा जाहिर की। सभी परियों ने रागनी परी का फूलों से शृंगार किया और दोनों का गंधर्व विवाह कराया, उसके बाद अपनी घोड़ी पर सवार हो कन्नौज आ गए। अब परमाल के पास दो काम जरूरी थे। पहला माहिल को जयचंद दरबार में लाना और दूसरा मनियांदेव की स्थापना महोबा में करना।

कन्नौज दरबार में परमाल राजकुमार ने कहा... अब वक्त आ गया है कि उरई जाया जाय, इसलिए महाराज आप मुझे आज्ञा दीजिए। सबसे पहले मैं माहिल से मुलाकात करके उसे समझाऊंगा, अगर नहीं माना तो दो-दो हाथ तलवार के आजमाऊंगा।

राजा जयचंद ने अपने पांच हजार सैनिक साथ में भेज कर लाव लश्कर के साथ राजा परमाल को विदा किया।

4-परमाल का उरई आगमन

परिहारों का इतिहास-इतिहास और शिलालेखों से पता चलता है कि - नागभट्ट ने गंगा के किनारे उत्तर भारत में रह रहे गुर्जरों को हरा कर 730ई. में प्रतिहार यानि कि परिहार वंश की स्थापना की थी। उसने जालौन को अपनी राजधानी बनाया और कन्नौज को उपराजधानी। इसी समय अरब लुटेरों ने सिंध प्रांत जीत लिया और फिर मालवा और गुजरात पर आक्रमण कर दिया था। नागभट्ट ने इन अरब लुटेरों को अपनी सेना सहित वीरता के साथ रोका और लौटने को मजबूर कर दिया था। उसके बाद अरब लुटेरों ने 950ई. में पुनः पश्चिमी सीमा पर आक्रमण किया, पर नागभट्ट की सेना ने बाकी लोगों के साथ मिल कर करीब पांच हजार लुटेरों को मौत के घाट उतार कर भारत में शांति की स्थापना की थी। उसके बाद उसके पुत्र वत्सराज ने अनेकों युद्ध लड़ते हुए 800ई. तक कन्नौज पर राज्य किया। इसने अपने राज्य का विस्तार उज्जैन मालवा तक कर लिया था।

उसके बाद वत्सराज ने बंगाल के राजा धर्मपाल पर 800ई. में आक्रमण कर उसे हरा दिया था, परन्तु कुछ समय बाद धर्मपाल ने संगठित होकर वत्सराज परिहार को हराकर कन्नौज छीन लिया, अब पालों की राजधानी कनवज में थी। उसके बाद वत्सराज के पुत्र नागभट्ट द्वितीय का पुत्र मिहिरभोज सम्राट बना इसने 885ई. तक शासन किया। विशाल राज्य ना सँभाल पाने के कारण उसने राज्य को चार भागों में बांट दिया। कन्नौज मुख्य राजधानी और ग्वालियर, उज्जैन, बुंदेलखंड को उप राजधानी बनाया।

पर इतना बड़ा राज्य सँभालना आसान नहीं था अत: बुंदेलखंड पर चंदेरी के चंदेलों ने 920ई. में आक्रमण करके खजुराहो, कालिंजर और महोबा पर अधिकार कर लिया था। उधर 930ई. में कन्नौज को राठौरों ने जीत कर अपनी राजधानी बनाया था। मिहिरभोज के बाद 961ई. में उसके पुत्र महेन्द्रपाल और उसके पुत्र महीपाल राज्य को न बचा सके 1030ई. तक परिहार वंश का प्रभुत्व समाप्त हो गया था। उसके बाद उनका पुत्र माहिलराय और भूपत राय 1100ई. तक केवल उरई जालौन तक ही सिमटकर रह गया था। इतिहास और शिलालेखों से ज्ञात होता है कि परिहारों से महोबा परमाल ने नहीं बल्कि सत्तर साल पहले ही चंदेरी के चंदेलों ने जीता था।

माहिल का भाई भूपतराय को माहिल का खुराफाती स्वभाव पसंद नहीं था इसलिए उसने अपने बेटे जागन के साथ मिलकर उरई से दूर बेतवा के किनारे के बीहड़ को बसाया और उसका नाम जगनेरी रखा वहां वह शांति से रह रहा था।

महोबा के उत्तर में उरई जालौन बेतवा नदी के किनारे पर बसा था। उरई की सीमा एक ओर कालिंजर से लगी थी तो दूसरी ओर कन्नौज से, माहिल के दिल में यह खटका था कि उसके पूर्वजों से कनवज राठौरों ने छीना है और महोबा चंदेलों ने इसलिए वह पड़ोसी राज्यों से मिलकर सीमा पर खुराफात करता रहता था, दूसरी ओर उसकी नजर कालिंजर के किले पर थी, माहिल की पांच बहिनें थीं। अगमा, कमला, मल्हना, दिवला और तिलका। महिल की बड़ी बहिन अगमा का विवाह दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान से और दूसरी बहिन कमला का बौरी नरेश वीरशाह से हुआ था, इसी कारण वह पृथ्वीराज की धौंस देकर सभी सूबेदारों से कर वसूल लेता था और अपने राज्य के

विस्तार का सपना देखता रहता। इसी कारण चंदेल और जयचंद उससे खफा रहते थे। माहिल में कौवे और लोमड़ी की सी चालाकी थी। वह छल, बल और कल की सभी कलाओं में पारंगत था। वह कुशल नटनी की तरह एक आंख से हंसता था, तो दूसरी आंख से रोता था। जहां रौब ना चले, वहां झट से चरण पकड़ शरणागत बन जाता था।
परमालदेव ने बेतवा तट पर अपने तंबू गाड़े, फिर दोस्ताना पाती लिखी कि हम आपसे मिलकर जरूरी मसलों पर बातचीत करना चाहते हैं। हमें बाइज्जत दरबार में आने की इजाजत दी जाय। हरकारे ने माहिल के दरबार में पहुंच कर पत्र दिया।
जब से चंदेल कुमार जयचंद के मेहमान बनकर आये हैं, तभी से वह दोनों से चिढ़ा बैठा था, उस पर ये पत्र आ गया, पत्र पढ़कर आग बबूला हो गया और अपने सभी सरदारों से बोला....माहिल स्वयं राजा है, ये कौन शूर है, जो माहिल से सवाल करे।
जवानो तैयार हो जाओ। अब अपना जौहर दिखाने का समय आ गया है। माहिल ने आगे बढ़कर चंदेल पर आक्रमण कर दिया। दोनों ओर से घमासान युद्ध होने लगा। दोनों ओर के सैनिक रणभूमि में जूझने लगे।
‘‘उस समय का युद्ध नैतिक मूल्यों पर आधारित होता था। घायल को छोड़ दिया जाता था, निहत्थों और स्त्रियों पर वार नहीं करते थे। किसी पर धोखे से पीठ पर वार नहीं करते थे। सामने से ललकार कर वार किया जाता था। ध्यान देने वाली बात है कि बुन्देलखंड आज भी वीर भूमि कहलाता है। यहां के लोग वीर और लड़ाकू स्वभाव के हैं इसलिये यहां आपसी लड़ाइयां बहुत होती हैं। ये नियम महोबा, बांदा, हमीरपुर, उरई, जालौन, कनवज के क्षेत्र में आपसी लड़ाइयों में 2000ई.तक देखे गये थे। ‘‘
माहिल और चंदेल का युद्ध हो रहा है। दोनों एक दूसरे पर बढ़-चढ़कर वार कर रहे हैं। अभी तक चंदेल राजकुमार उसके वार बचा रहा था। अब उसने भरपूर वार कर कहा- ‘‘माहिल राय अब मेरा वार सँभालो!" माहिल उसका वार नहीं बचा पाया और वह घोड़े पर से गिर गया, माहिल उठ भी नहीं पाया कि परमाल ने उसकी गर्दन पर तलवार अड़ा दी। माहिल समझ गया कि उसने गलत जगह हाथ डाल दिया है, इसीलिए हाथ जोड़कर बोला..."मैं गंगा मइया की कसम खाकर कहता हूं कि आप की सारी शर्तें मानूंगा, बस जान छोड़ दीजिए।" पर परमाल राजकुमार उसकी गर्दन पर तलवार रखे उसे देखे जा रहा है।
माहिल फिर बोला-आप मुझे बंदी न बनाकर अपना संबंधी बना लीजिए। मैं अपनी बहिन का डोला भी आपको दे दूंगा।
चंदेल कुमार ने माहिल को नजर बंद किया और महलों में जाकर उसकी तीसरी बहिन मल्हना से विधिवत् विवाह किया। राजकुमारी मल्हना बहुत सुन्दर, समझदार, बुद्धिमान और वीरांगना थी। उसके बाद बोला....हे महाराज, अब मेरे लिए क्या आज्ञा है?
परमाल ने कहा.... आज से तुम मेरे संबंधी हो, इसलिए तुम्हारा ख्याल रखना मेरा धर्म है। आप निश्चिंत होकर अपनी प्रजा का धर्म पूर्वक पालन करो। महोबा में आपका हर समय स्वागत है, बस एक बात है कि मैंने राजा जयचंद को वचन दिया था कि आपको उनके दरबार में हाजिर करूंगा, आपको मेरे साथ चलना पड़ेगा। मैं आपको बाइज्जत ले जाऊंगा और अपने साथ ही वापस लाऊंगा, फिर यहीं से आकर तुम्हारी बहन की विदाई कराता हुआ महोबा को जाऊंगा।
यह सब सुनकर माहिल मन ही मन सोचने लगा कि मैं अपनी बेइज्जती का बदला, तो

चंदेला से जरूर लूंगा। उसने उरई की धरती को छूकर मन ही मन कसम ली कि मैं चंदेल वंश का नाश करके अपने अपमान का बदला अवश्य लूंगा। उसके लिए मुझे कूटनीति का सहारा लेना पड़ेगा। इसीलिए वह चंदेल के पैर पकड़कर बोला.... महाराज एक खता की माफी चाहूं, मैं तो आपका साला हूं, रिश्तेदारी में कहा सुनी तो होती रहती है। मेरी आदत बात यहां की वहां करने की है, ऐसा न करुं तो मेरा खाया पिया नहीं पचता है। महाराज एक कागज पर लिख दीजिए कि माहिल की हर चुगली माफ हैं। परमालदेव ने बिना सोचे समझे एक फरमान लिख दिया कि माहिल की हर चुगली माफ है। वह फरमान लेकर माहिल सभी राज्यों में गया और सभी राजाओं से परमाल का हवाला दे कर दस्तखत करा कर अपनी चुगली सभी से माफ करा लाया। सभी ने यही सोचा कि चुगली करके यह क्या कर लेगा? सो सभी ने दस्तखत कर दिए। आगे चलकर यही फरमान माहिल का सबसे बड़ा हथियार बन गया।

उसके बाद जयचंद को दिये वचन के अनुसार महिल को साथ लेकर चंदेल राजकुमार कन्नैज में आ गए। माहिल ने अपनी गलती की माफी मांगी और परमाल की सिफारिश पर उसे माफ कर दिया क्योंकि अब वह उनका रिश्तेदार था।

उसके बाद परमाल ने कहा ... अब मैं अपनी रानी रागनी को साथ लेकर महोबा जाना चाहता हूं, हमारी आपकी दोस्ती सदा रहेगी आपको जब भी हमारी जरूरत हो याद करना हम आ जायेंगे। जयचंद ने उसे खुश होकर बहुत सा उपहार देकर विदा किया।

चंदेल राजकुमार ने रास्ते से मल्हना का डोला भी लिया और महोबा को चल दिये। माहिल भी उनके साथ आया था।

महोबा में दूत के द्वारा दादा महाराज को खबर मिल गई थी कि उनका पोता दो दो बहुंए लेकर आ रहा है, इसलिए उन्होंने नगर को सजा कर उनके स्वागत की तैयारी कर रखी थी और नगर में प्रवेश पर उनका भारी स्वागत हुआ। सभी को दान और ईनाम दिए गए। एक माह तक नगर में उत्सव मनाया जाता रहा। उसी बीच परमाल ने महोबा में मनिया देव की स्थापना बहुत ही धूम-धाम से कराई। यज्ञ कराये, नगर कोट की दीवार बनवाई और किले निर्माण भी कराया। कीरतसागर के किनारे एक ड्योढ़ी और बैठक का भी निर्माण कराया। दूसरे तालाब के अंदर जलमहल बनवाया जिसके खंडहर आज भी बाकी हैं।

राजकुमार परमाल वीरों का कद्रदान था इसी कारण उसके राज्य में कई वीर सामंत दरबारी थे। उस समय तोमरवंश में एक शूरवीर की बहुत चर्चा थी जिसका नाम चिंतामणि था। इसलिए उन्होंने उसे महोबा दरबार में उच्चपद दिया। वह महाराज का बहुत ही वफादार था। राजा परमाल अपनी रानियों के साथ आराम से रहकर प्रजा का पालन कर रहे थे। हर पूनम की अर्धरात्रि को इन्द्रदेव अपने उड़ने वाले घोड़े पर सवार होकर आते और महल के घुड़साल में घोड़ा बांधकर, रागनी परी के साथ चौपड़ खेलकर सुबह चार बजे चले जाते। इस बात को राजा के अलावा कोई नहीं जानता था। एक रात जैसे ही इन्द्र अपना घोड़ा बांध कर गए वैसे ही राजा ने कुछ सोचकर अपनी गजगाहन घोड़ी को इन्द्र के घोड़े के पास बांध दिया। इस प्रकार वह घोड़ी गर्भवती हो गई। इस तरह करके चंदेल ने उस घोड़े से पांच बच्चे पैदा किए जिनमें चार घोड़े और एक घोड़ी थी। ये सभी घोड़े बड़े ही विलक्षण और युद्ध कौशल में प्रवीण थे। कुछ साल की बात है कि अर्धरात्रि को जैसे ही महाराज इन्द्र अपना घोड़ा बांधकर जाने लगे वैसे ही महल की दासी ने उनको देख लिया, वह ललकार कर बोली...कौन है तू, जो जान गंवाने इधर आ

गया? अब तू जीवित नहीं जा सकता।
यह सुन इन्द्र ने कहा....."ऐ दासी, अपने राजा से कहना कि आपका किया वादा आज टूट गया, मैं रागनी परी को लेकर वापस जा रहा हूं और रागनी का हाथ पकड़ कर घोड़े पर सवार होकर चले गए। इस प्रकार रागनी परी बिना कुछ कहे सुने परी लोक वापस चली गई। परी के जाने से राजा उदास हुए, पर होनी की अटलता को जानकर, वचनबद्ध होने के कारण चुप ही रहे।"
परमाल ने बहुत बड़ी सेना खड़ी करके, सभी राजाओं पर विजय प्राप्त करके, उनका राज्य वापस करके सभी से मित्रता कायम कर ली थी। अब वह एक प्रतापी राजा बन गए। परमाल ने दिल्ली के राजा अनंगपाल यानी कि पृथ्वीराज के नाना को भी जीतकर राज्य वापस देकर उससे मित्रता कर ली थी। इस प्रकार चौदह सालों में ही सारे देश में उनका यश सर्वत्र फैल रहा था।
इस समय तक परमाल के नौ अन्य राजकुमारियों से ब्याह हो चुके थे, पर सबसे बड़े आश्चर्य की बात ये थी कि अभी तक संतान पैदा नहीं हुई थी। ब्याह के सोलह साल बाद रानी मल्हना ने एक पुत्री को जन्म दिया। उसका नाम चन्द्रावली रखा गया। परमाले की कीर्ति और तेजी से फैलता यश माहिल को नहीं सुहाता था। वह कुछ विरोधी राजाओं के साथ मिलकर परमाले के विरुद्ध षडयंत्र रचने में लगा था। माहिल जानता था कि परमाल गोरखनाथ के शिष्य हैं। कहा जाता था कि गुरु गोरखनाथ को त्रिकाल विद्या का ज्ञान था। ये श्रीकृष्ण के अति सूक्ष्म अंशावतार थे। उन्हें युद्ध विद्या के साथ-साथ जादू की विद्या का भी ज्ञान था।
एक दिन दादा महाराज मदनवर्मन् ने दोनों राजकुमारों को बुलाकर कहा- ‘‘वत्स, बार बार सूचना मिल रही है कि मालवा सीमा पर परमार एकत्रित हो रहे हैं इसलिए मैं चाहता हूं कि चंदेरी का दुर्ग राजकुमार प्रद्युमनदेव जाकर सँभालें और वहीं रहें ताकि मालवा सीमा से होने वाले आक्रमण का जवाब दिया जा सके, वैसे भी उस सीमा की रक्षा का भार उन पर ही है। दूसरी बात अब मैं बहुत कमजोर हो गया हूं अत: महोबा की गद्दी पर राजा परमालदेव बैठें और अपनी प्रजा की देखभाल करें।
परमालदेव बोले- ‘‘दादा महाराज, आपकी दी सारी जिम्मेदारी मुझे स्वीकार है, पर सिंहासन पर आप ही बैठेंगे। इस प्रकार दादा महाराज ने विधिवत् महोबा की जिम्मेदारी परमालदेव को सौंप दी थी। सारा राजकाज परमाल देखते थे, पर नाम महाराज का ही चलता था। उसी समय 1144 ई. में प्रद्युमन को चंदेरी का किला दे दिया गया और वह चंदेरी चले गए।

5-दस्सराज-बच्छराज और मांड़ो का कीरतराय

बक्सर एक छोटा सा राज्य था, वहां बनाफर वंश के राजाओं का राज था। यह राज्य दो भाई आपस में मिलकर देखते थे। उनके दो-दो बेटे हुए। एक भाई के टोडरमल, रहिमल और दूसरे भाई के जस्सराज, बच्छराज। इन चारों भाइयों के बीच आपस में बहुत प्यार था। ये सभी बहुत ही बलशाली और युद्ध कला में निपुण थे। इनकी शक्ति और बल का कोई जोड़ नहीं था।
कुछ समय बाद हुआ यूं कि दस्सराज और बच्छराज ने महाकाल भगवान के दर्शन, क्षिप्रा और नर्मदा के स्नान हेतु उज्जैनी जाने का विचार किया और अपने प्रिय मित्र तल्हनराय को साथ लेकर घोड़े पर सवार होकर चल दिए। यह विधि का विधान ही था कि एक तूफान में वह भटक गए और कई दिन की मंजिल तय करके, आगे बढ़ते-बढ़ते वह महोबा राज्य की सीमा में आ पहुंचे। बाग के रख वाले ने बताया कि यह महोबा नगरी है। यहां के राजा परमाल बहुत ही धार्मिक और न्यायप्रिय राजा हैं।
अब रात हो रही थी उन्होंने सोचा चलो महोबा नगरी का बहुत नाम सुना है, इसे भी देखते जायें, यही सोच कर वह नगर की ओर चल दिए। पर किस्मत ही खराब थी, किले के दरवाजे पर पहुंचने के पहले ही किले के फाटक बंद हो गए क्योंकि रात का अंधेरा घिर आया था, वह वहीं पास ही किले की दीवार में बनी यात्री निवास की कोठरी में रात विश्राम के लिए रुक गए। वहीं पास ही एक मसक में पानी टंगा था जिसे पीकर सभी ने अपनी प्यास बुझाई और घोड़े की जीन बिछाकर लेट गए।
मध्य भारत में मांड़ोगढ़ नाम का राज्य नर्मदा नदी के तट पर था। इसे वर्तमान में मांडू कहा जाता है। यह मालवा का बहुत बड़ा दर्शनीय स्थल है। मालवा में परमार वंशी क्षत्रियों का राज्य था। राजा विक्रमादित्य के समय उज्जैनी राजधानी थी उसके बाद राजा भोज ने धार को राजधानी बनाया। छठवीं सदी में बीसा जाति के राजा आनंददेव ने धार के पास वाले में बीहड़ में एक बहुत भव्य किला बनवाया था जिसका नाम मंडपदुर्ग रखा था। कालांतर में उसी का अपभ्रंश होकर मांडोगढ़ हो गया और वर्तमान में मांडू बन हो गया। भोजराज 1010-1055ई. तक, जयदेव 1055-1060 तक, उहादित्य 1060-1087 तक, भोज के पुपौत्र लक्ष्मणदेव ने 1087-97तक में मांडू को अपनी राजधानी बनाया। नरवर्मन 1197-1134तक, यशोवर्मन 1134 से 1142ई. तक और जयवर्मन 1142 से 1160 ई. तक, जिसे आल्हा गायकों ने जंबेराय कहा है उसका पुत्र कीरतवर्मन् था, जिसे आल्हा में करिंगाराय कहा गया है। उसका रंग बहुत सांवला होने के कारण उसे कहीं कहीं करिया नाम से भी संबोधित किया गया है। उसका पुत्र विंध्यवर्मन् था।
इस समय मालवा में जयवर्मन् यानी कि जंबेराज का राज्य था। उसकी राजधानी मांडू थी। उसके तीन पुत्र थे। कीरतवर्मन, सुरजवर्मन और अलोपवर्मन। कीरतवर्मन् निरंकुश राजकुमार था। जो बिना सोचे समझे राजनैतिक फैसले पिता की अनुमति के बिना भी लेता रहता था। वह बहुत वीर था, परन्तु भेजे में अकल की कमी थी। वह किसी के बहकावे में जल्दी ही आ जाता था, इसी कारण वह किसी ना किसी से झगड़ा मोल लेता ही रहता था। उसकी इस आदत से महाराज जयवर्मन परेशान रहते थे।
इस समय गंगा दशहरा पर प्रयागराज में बहुत बड़ा मेला लगा था। सात समुन्दर पार,

काबुल, कंधार, ईरान, अफगान के बड़े-बड़े व्यापारी हीरे जवाहरात, कीमती गहने, जरी गोटा की रंगबिरंगी पोशाकें, कीमती कालीन और अस्त्र-शस्त्र लेकर आते थे। यह मेला तीन महीने तक चलता था। जिसमें दूर देश के राजा महाराजा अपने ठाठ-बाट और सेना को लेकर अपनी-अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने, मेला घूमने आते थे। बात-बात पर लड़ाई भी करते थे। इस कारण मेले में घमासान भी होता रहता था। कीरतवर्मन दरबार में जाकर बोला..."पिता जी सारी दुनिया गंगा दशहरा का मेला देखने जा रही है, मैं भी मेला देखने प्रयागराज जाना चाहता हूं।
जम्बेराज ने कहा...."बेटा वह जयचंद का इलाका है। उसकी हमारी पुरानी रंजिश है, इसलिए तुम पहचान छिपाकर जाना और बिना किसी से लड़े मेला घूमकर लौट आना।"
करिंगा की लाड़ली बहिन थी बिजमा, वह बोली..."भैया, मैं भी मेला देखने चलूंगी।"
करिंगा बोला...बहना वहां पर बहुत से दुश्मन भी आयेंगे। अगर किसी ने डोला रोक लिया तो लड़ाई बढ़ जायेगी इसलिए मैं तुम्हें मेला मे नहीं ले जा सकता। हां तुमको कुछ चाहिए हो तो बोलो मैं लाकर दूंगा। यह मेरा वचन है।
बिजमा कुछ सोच कर बोली..."भैया मेले से मेरे लिए नौलखा हार ले आना।" उस समय नौलखा हार बेशकीमती था।
हां-हां ‘‘मैं नौलखा हार लेकर ही आऊंगा।" यह कहकर करिंगा अपने पांच हजार सैनिकों को लेकर मेला घूमने चला गया। हफ्ता भर वह मेले में रहा और खूब गंगा स्नान किया, दान धर्म भी किया। उसके बाद रोज ही वह मेले में नौलखा हार ढूंढता पर उसे वह हार नहीं मिला। अब तो मेला भी उखड़ने लगा था। करिंगा की परेशानी बढ़ती जा रही थी। उसने अपनी बहिन को वचन दिया था कि वह हार ले कर आयेगा। वह पागलों की तरह मेले में नौलखा हार खोजता रहा। एक व्यापारी ने बताया कि एक हार था, जिसे कोई राजा ले गया है। करिंगा गुस्साया सा घूम रहा था, तभी माहिल जो बहुत समय से उसका पीछा कर रहा था, उसकी हर गतिविधि का निरीक्षण कर रहा था बोला..."अरे मांड़ो के राजकुमार कैसे पगलाये से फिर रहे हो? अपना ये क्या हाल बना रखा है?"
करिंगा बोला... महीना भर से नौलखा हार ढूंढ रहा हूं, पर नहीं मिला; मैं बहन को वचन देकर आया हूं सो हार लेकर ही जाऊंगा। आप ही मेरी कुछ मदद कीजिए। माहिल के दिमाग में उपाय आया, परमाल से बदला लेने का मौका है, चलो इसे भिड़ा दें, यही सोच कर बोला....मांड़ो के राजकुमार, अब आपका वचन पूरा नहीं हो सकता। नौलखा हार तो भूल जाओ। हार ले जाना आपके बस की बात नहीं है। अगर आपके अंदर अपने वचन की खातिर लड़ने मरने का बूता है तो मैं हार का पता बता सकता हूं।
क्यों नहीं है, आप बताइए तो हार कहां मिलेगा? मैं हर हाल में अपना वचन पूरा करुंगा। वह बोला
माहिल बोला..."महोबा का राजकुमार परमाल चंदेल नौलखा हार ले गया, तो करिंगाराय ने निराश हो कहा- अच्छा......आ..
माहिल बोला ..... हां, परमाल चंदेल! क्या हुआ राजकुमार उसका नाम सुनकर घिग्गी बंध गई।
कीरतवर्मन बोला- नहीं, यह बात नहीं, उन्होंने वह हार खरीदा है, मैं क्या कर सकता हू, पर सोच रहा हूं मेरे वचन का क्या होगा?
माहिल ने धूर्तता से कहा- अरे माड़ों के राजकुमार, आप कैसी बातें कर रहे हो? वचन

की खातिर आपके पूर्वज राजा भतृहरि ने तो राज्य छोड़ दिया था। अब आप अपना वचन निभाइए। दूसरी बात वह भरे मेला में चिल्ला चिल्लाकर, मुनादी करके गया है कि उसके अलावा किसी की रानी में नौलखा हार पहनने की औकात नहीं हैं। हां किसी की मां ने नाहर जन्मा हो तो आकर उससे युद्ध करके नौलखा छू के दिखाये। हम जानते हैं कि बावनगढ़ में आप जैसा वीर दूसरा नहीं है। रास्ता हम बताते हैं।
इतना सुनकर करिंगा बोला- वह कैसे? क्या ये सम्भव है?
माहिल ने कहा- राजकुमार आपके लिए इस संसार में असम्भव कुछ भी नहीं है। सुनिये, अभी-अभी राजा परमाल यहीं मेला से गया है, मेले में उसकी तबीयत खराब हो गई है, सुना है कि काला बुखार आ गया है, वह बिस्तर पर पड़ा है, युद्ध कर नहीं सकता ऐसे में आप मेला में दी उसकी चुनौती को स्वीकार कर, आधी रात को धावा बोल दें तो जीत आसानी से हो सकती है। उस राजा के पास पारस पथरी भी है, जो आप जैसे बलशाली राजकुमार के पास होनी चाहिए। सोचो मांड़ा गढ़ में पारस पथरी के आने से सब राजन में कितना नाम बढ़ जायेगा। सारा खजाना अपने आप भर जायेगा। इस समय उसके पास न कोई सरदार, न ही कोई सेना है। मौका है, आप महल में जाकर बीमार परमाल की गर्दन पर तलवार रखकर मल्हना रानी से जान के बदले नौलखा हार और पारस पथरी मांगना, वह खुशी खुशी दे देंगी। बिना रक्तपात के आपकी विजय ही विजय है। फिर आपको इस संसार में दिग्विजय करने से कोई नहीं रोक सकता। आप जैसे महावीर के लिए यह सब बहुत आसान है। इस प्रकार माहिल ने उसे दिन में ही झूठा सपना दिखाकर चढ़ाई के लिए तैयार कर दिया। करिंगाराय को उसकी सुनाई कहानी और दिखाया हुआ सपना दोनों ही अच्छे लगे। वह बिना सोचे समझे आक्रमण को तैयार हो गया और अपने सैनिकों से डेरा समेटने को कहा
कुछ दिनों की मंजिल तय करके वह आधी रात के समय महोबा पहुंचा। वह नगर चारों ओर से पर कोटे से घिरा था। बहुत ही मजबूत फाटक लगे हुए हैं। उसने अपने सैनिकों को हुकुम दिया कि फाटक तोड़कर घुस जाओ और भीतर कहर मचा दो। यह बात खजुराहो शिलालेख 1143 ई. से मालूम होती है कि यह आक्रमण इसी सन् के कुछ पहले हुआ होगा।
यह उसी रात की बात थी, जब वे तीनो बनाफर भाई यात्री बनकर फाटक के बाहर सो रहे थे। सैनिक फाटक की ओर बढ़ने लगे। घोड़ों के टापों की आवाज सुनकर वहां फाटक के बाहर सो रहे बनाफर दस्सराज और बच्छराज वीरों की नींद टूट गई। वह उठकर सोचने लगे कि माजरा क्या है? ये कौन फौज लेकर आ गया? तभी उन्होंने सुना....फाटक तोड़कर भीतर जाकर चंदेला से कहो, द्वार पर करिंगाराय तुम्हारी मौत बनकर खड़ा है। अगर अपनी जान बचाना चाहते हो, तो उसे नौलखा हार दे दो।
यह सुनकर सारा माजरा समझ गए। वह चुपचाप बैठकर तमाशा देखने लगे। करिंगा के सैनिक दरवाजे पर ठोकर दे रहे थे, पर दरवाजा बहुत मजबूत था सो नहीं टूटा। बच्छराज ने कहा.... दादा, अब हम क्या करें? क्या हमें चुपचाप तमाशा देखना चाहिए?
जस्सराज ने कहा....हमने इस नगर का पानी पिया है, इसकी छत के नीचे शरण ली है उसका कर्ज तो चुकाना ही पड़ेगा। इसके अलावा हम किसी बेकसूर के साथ अन्याय होते भी नहीं देख सकते। चलो इनसे दो-दो हाथ करने को तैयार हो जाओ।
हां दादा, बहुत नाम सुना था करिया का, आज मिल ही लिया जाय। वो तीनों अपने

हथियार बांधकर आ गए। उनको देखकर करिंगा दहाड़कर बोला....ऐ पहरेदारो अपने राजा से कहो, फाटक खोल दे और नौलखा हमारी नजर करे। अन्यथा हम नगर महोबा लूट लेंगे। जस्सराज ने कहा .... न हम जाने गढ़ महोबा को, न हम जाने राजा परमाल। हम तो मुसाफिर राहगीर हैं, रास्ता भूल यहां चले आये।" आप भी तंबू डाल दो सवेरे राजा से बात कर लेना। सोती प्रजा को क्यों सताते हो?"
इतनी बात सुनकर करिंगा का क्रोध सातवें आसमान पर पहुंच गया। वह गरजकर बोला ....अरे मुसाफिर, तेरी इतनी हिम्मत कि मांड़ो के राजकुमार को मशवरा दे। सैनिकों पहिले इनको मारो, उसके बाद महोबा लूटो। यह सुनकर बनाफरों का खून खौल गया वह अपने हथियार लेकर करिंगा की सेना पर टूट पड़े। चारों ओर मारो-मारो का शोर सुनाई दे रहा था। वह तीनों इतनी बड़ी सेना के बीच ऐसे ढंक गए थे, जैसे चांद बादल में छिप जाता है। वह दोनों हाथों से अस्त्र-शस्त्र चलाने में माहिर थे। उनकी तलवार जिस ओर घूम जाती थी वहीं मैदान साफ हो जाता। चारों ओर रुंड-मुंड ही दिख रहे थे। बहने वाले लहू से धरती लाल हो रही थी। कुछ ही देर में सारे सैनिक धराशायी हो गए और जो बचे वह जान बचाकर भाग लिए। अब जस्सराज ने अपना घोड़ा दूर असमंजस में खड़े करिंगा के सामने लाकर खांडा से वार किया। करिगा ने ढाल से वार रोका पर ढाल हाथ से छूटकर जा गिरी। करिंगा ने अब अपनी जान बचाने में ही भलाई समझी और अपना घोड़ा लेकर भाग गया। पीठ पर किसी ने वार नहीं किया।
प्रातः काल जैसे ही पहरेदार ने दरवाजा खोला, तो बाहर का दृश्य देख चकरा गया। कुछ देर बाद सम्हला तो देखा, चारों ओर लहू से धरती लाल हो रही थी। दूर-दूर तक धरा पर कटे हुए सिर लुढ़के पड़े थे। बिना सिर के धड़ आड़े टेढ़े फेले पड़े थे। वह दौड़ कर महाराज के पास पहुंचा और हकला कर सारा हाल सुनाया। सुनकर परमाले चौंक गए। वह रथ पर सवार हो किले के फाटक पर आये, तब तक नगर में आग की तरह समाचार फैल चुका था। नगरवासी भी फाटक की ओर भागे आ रहे थे। राजा वहां का दृश्य देखकर समझ गए कि रात को कितना भयानक युद्ध हुआ होगा, पर असमंजस में थे कि यह सब किया किसने हैं? तभी उनकी नजर तीनों पर पड़ी, जो अभी भी हथियारों से सजे थे, चेहरे पर युद्ध की थकान मौजूद थी। शरीर रक्त रंजित था।
महाराज ने पूछा..."हे वीर महाशय! आप कौन हैं और रात को यहां पर क्या हुआ उसका हाल बतायें?"
उन्होंने महाराज को प्रणाम किया और अपना परिचय देते हुए दस्सराज ने कहा ... हम बक्सर के राजा हैं ‘‘ये हमारे भाई हैं, ये भाई समान मित्र और हमारे प्रमुख सलाहकार तलंसीराय है। तथ्यों से ज्ञात होता है कि तल्हन हिन्दू थे। ये बनारस के रहने वाले थे, इसीलिए इन्हें बनारस वाले भी कहकर संबोधित किया जाता था। इनकी जाति पटवारी अर्थात् कायस्थ थी। ये बहुत ही बुद्धिमान, दूरदर्शी, धीर गंभीर और वीर व्यक्ति थे। पौराणिक कथाओं के अनुसार यह विदुर का अवतार थे। ये दस्सराज की सेना में थे इनकी बुद्धिकौशल को जानकर दस्सराज ने इनको अपना प्रमुख सलाहकार बना लिया था। आगे चलकर उनका छोटा नाम तल्हन का अपभ्रंश होकर आल्हा गायकों ने तालासैयद कर दिया गया। उस समय तक मुसलमान या पठान किसी भी सेना में नहीं थे। इस कारण यह बात सत्य प्रतीत होती हैं कि तल्हन हिन्दू थे। दस्सराज ने युद्ध का सारा हाल सुना दिया।
महाराज सोच में पड़ गए कि ये लोग वास्तव में महाबली हैं जिन्होंने अकेले ही पांच

हजार सेना को खदेड़ दिया। अगर आज ये न होते, तो मांडो का करिंगा सोते में महोबा लूटकर ले गया होता और अभी तक महोबा की स्त्रियां विलाप कर रहीं होती।
हम पहले ही बता चुके हैं कि महाराज परमाल वीरों के कद्रदान थे, इसलिए उनके राज्य में वीर सामंतो की कभी नहीं थी, पर ऐसे वीरों को देखकर उनका मन प्रसन्न हो गया उनका मन बार-बार उनकी ओर खिंचने लगा। मैं ऐसे वीरों को अपने पास ही रखूंगा। कैसे भी हो महाराज का दिमाग तेजी से काम कर रहा है। तभी महाराज ने उनको सीने से लगा कर कहा.... आज तो मां चन्डिका ने ही आपको मेरी रक्षा करने के लिए भेजा है। आपने वो काम कर दिखाया है, जो मेरा मां जाया भाई ही कर सकता था इसलिए आज से तुम मेरे सगे भाई से बढ़कर हो। मैं आप सभी को कहीं भी नहीं जाने दूंगा।
बच्छराज....महाराज आपका प्यार और मान पाकर हम धन्य हुए, बक्सर में हमारा अपना राज्य है, हम यहां कैसे रह सकते हैं?
महाराज चंदेल ने कहा.... हम आपकी कुछ भी नहीं सुनेंगे, ना जाने क्यों हमें ऐसा आभास हो रहा है कि आप ईश्वर की मर्जी से ही यहां पर आये हैं। अब हम आपको कहीं नहीं जाने देंगे। हमने आपको भाई कहा है, मेरे कोई पुत्र नहीं है और छोटा भाई भी पुत्र समान है। आज से ये महोबा राज्य भी आपका ही राज्य है। ‘‘इन्होंने वहीं पर हाथ में जल लेकर कहा कि मैं आज ही ये घोषणा करता हूं कि आप सभी मेरे धर्म भाई हो और मेरे राज्य में बराबर के हकदार हो। आप सभी का हर हुकम मेरे हुकम से ऊपर होगा।"
कहावत है कि ‘‘राज हठ और बाल हठ पूरी ही करना पड़ती है," दूसरी बात, वीरों की बहादुरी की प्रशंसा ही उनकी कमजोरी होती है, उन सभी ने आपस में निर्णय किया कि अभी हाल परमाल की बात मान ली जाये बाद में समय देखकर जाने की बात करेंगे, इसीलिए दस्सराज ने कहा...."महाराज, पेरम के आगे तो भगवान भी विवश हो जाते हैं फिर मैं तो एक इंसान हूं आपको इनकार कैसे कर सकता हूं? वहां खड़ी जनता दस्सराज और बच्छराज के जयकारे लगाने लगी। महाराज ने अपने साथ रथ पर उनको बिठाकर नगर का चक्कर लगाते हुए महल में आये। रास्ते में नगरवासियों ने इनके ऊपर फूल बरसाये।
राजदरबार में ऊंचे आसन पर सभी को बिठाकर, महाराज ने मुनादी करके कहा...."आज से दस्सराज-बच्छराज को हम अपनी सेना और खजाना का मालिक बनाते हैं वह अपने मित्र के साथ उसे अपने तरीके से सँभालें। इनका आसन हमारे बराबर ही होगा।"
सभी ने करतल ध्वनि के साथ महाराज के इस प्रस्ताव का स्वागत किया। इस प्रकार बनाफर वंश का महोबा में वर्चस्व हो गया।
इसके अलावा महाराज चंदेल ने कहा... इन सभी को सतरंगा महल रहने को दिया जाता है और महोबा से एक कोस की दूरी पर दशपुरवा में इनके रहने के लिए सुन्दर महल का निर्माण कराया जाये। महाराज ने अपने दरबार की प्रसिद्ध राजनर्तकी लाखापातुर और घोड़ा पपैया दस्सराज को भेंट किये, हाथी पश्चावद बच्छराज को भेंट कर दिया। ये महाराज के दरबार के रत्न थे। इस प्रकार इतना सम्मान और स्नेह पाकर वह सभी बहुत खुश हुए और वहीं पर रहने लगे।

6 - राजकुमारों का जन्म

राज्यों में सभी को वीर बनाफरों के आने की खबर लग चुकी थी। माहिल अपनी तरकीब फेल होन पर खिसिया कर रह गया।
एक दिन मल्हना रानी ने कहा..."महाराज, हमने सुना है कि वो दोनों भाई वापस जाने की सोच रहे हैं, कुछ करिए।"
परमाल ने कहा- “मैंने तो उनको महोबा का राजा ही बना दिया है अब क्या करूं?
महारानी... महाराज दोनों की उमर ब्याह लायक है, इनका ब्याह मेरी दोनों बहनों से करवा दीजिए फिर ये कहीं नहीं जायेंगे।
राजा ने कहा.... महारानी, आपकी बात सही है मैं कल ही उनसे बात करके माहिल से टीका मंगवाकर चढ़ाता हूं। इस प्रकार परमाले ने उरई में अपने ससुर से सलाह करके, टीका मंगाकर दोनों की शादी पक्की कर दी। यह बात माहिल के मन को नहीं भा रही थी, पर वह अपने पिता और राजा परमाल के विरुद्ध भी नहीं जा सकता था, इसलिए चुपचाप सारी बात मान गया। सभी राजाओं को न्योता भेज कर बहुत ही धूम-धाम से दोनों भाइयों का शुभ लग्न में एक ही मंडप में ब्याह कर दिया।
द्वार पर दोनों बहुओं की अगवानी महारानी मल्हना ने की। सारी रस्में रानी मल्हना ने ही निभाई। दस्सराज की पत्नी देवल कुंवर को मुंह दिखाई में महारानी मल्हना ने अपने गले का नौलखा हार उतारकर पहना दिया। यह वही नौलखा हार था जिसके लिए मांड़ों का करिंगा राय सेना लेकर चढ़ आया था। तिलक कुंवर को दूसरा कीमती हार पहनाया गया।
अब दोनों भाई दशपुरवा के महलों में निवास करते हुए महोबा का राज-काज देखने लगे। झिंझावत और सिरसागढ़ का सूबा परमाल के पास था वहां की व्यवस्था उनका विश्वास पात्र देवधर देख रहा था। महाराज ने झिंझावत का सूबा दस्सराज को दे दिया और सिरसागढ़ बच्छराज को दे दिया। ये दोनों ही अब वहां के राजा थे। वहां की व्यवस्था सेनापति को सौंपकर ये दोनों अधिकतर दशपुरवा में रहकर महोबा की देखभाल करते थे। इसके अलावा 1146ई. में बच्छराज ने बछराउनी में किला बनाकर बसाया जिसे बाद में अजयगढ़ कहा जाने लगा। यह बात 1147ई. कुड़ार शिलालेख में मिलती है।
माहिल परमाले से बदला लेने को उतावला हो रहा था। अब उसके दुश्मनों में परमाले के साथ-साथ दस्सराज-बच्छराज का नाम भी जुड़ गया था। शादी के छः माह बाद ही रानी देवल गर्भवती हुईं। यह सुनकर सब ओर खुशियां छा गईं क्योंकि अभी तक महोबा में कोई पुत्र नहीं था। परमाल की बेटी चंद्रावली अब तक सात बरस की हो गई थी। भविष्य पुराण के अनुसार सभी पांडवों का जन्म एक ही समय के आस-पास पांच साल के अंतराल में होगा। कुछ समय बाद दसपुरवा में महाराज दस्सराज की रानी दिवला के यहां बालक का जन्म हुआ। जिसका नाम आल्हाद रखा गया। भविष्य पुराण में जिसे युधिष्ठिर का अवतार कहा गया है। सारे घटनाक्रम का अवलोकन करने पर अनुमान होता है कि बालक आल्हा का जन्म 1145ई. के आसपास ही हुआ होगा। बाकी बालकों का जन्म भी इन्हीं पांच सालों के अन्तराल में हुआ था।
पंडित ने कहा ... महाराज यह बालक का जन्म सिंह लग्न में हुआ है सो यह सिंह के

समान ही हिम्मती, उत्तम गुणों वाला, धर्म का ज्ञाता, वीर-प्रतापी, और यशस्वी होगा। यह बालक मां चंडिका का भक्त होगा। इसका यश कलिकाल के अंत तक कायम रहेगा। इसका नाम अल्हाद यानि सभी को खुशी देने वाला होगा। उसी का अपभ्रंश आल्हा हो गया। उसके बाद बच्छराज की रानी तिलका ने भी एक बालक को जन्म दिया। चंदबरदायी के अनुसार भादों बदी अष्टमी तिथि मध्य रात्रि में बालक का जन्म हुआ जिसका नाम मलखान था, जो नकुल का अवतार कहा जाता है, पंडित ने बताया कि यह बालक बहुत ही उत्तम गुणों वाला, पराक्रमी होगा।

परमाल के खास मित्र और शुभचिंतक महोबा के पंडित थे। वह तलवार का धनी थे। वह परमाले के साथ उनकी रक्षा के लिए रहा करते थे उसका नाम चिंतामन था। उसकी पत्नी ने एक बालक को जन्म दिया जिसका नाम ढेबा रखा गया।

ढेबा को पंडित जी ने पांच साल की उम्र में ही योग्य गुरु से ज्योतिष की शिक्षा दिलवाई थी। वह ज्योतिष का अच्छा ज्ञाता था। परमाल उसे बहुत प्यार करते थे। भविष्य पुराण के अनुसार दूसरी ओर दिल्ली में एक ब्राह्मण परिवार में द्रोणाचार्य का जन्म होगा। उनका नाम चैड़ियाराय होगा। अपने बेटे अश्वत्थामा और अपनी मौत का बदला लेने के लिये वो पांडवों के खिलाफ युद्ध करेंगे।

दस्सराज की पत्नि देवलरानी ने आल्हा के बाद दूसरे बालक को जन्म दिया। यह कर्ण का अवतार था, जो द्वापर में अपने ही सगे भाइयों से युद्ध लड़ा था और कलियुग में भी लड़ा। पंडित ने बताया......महाराज यह बालक बहुत ही बलवान और अपने ही कुल से घोर संग्राम करने वाला होगा। इसका नाम चंडपुंडीर है। इस बालक के ग्रह पिता और परिवार के प्रति वक्री हैं, इसलिए महाराज दस्सराज इसका मुंह न देखें, अन्यथा उन पर प्राणघाती संकट आ सकता है। पंडित की यह बातें सुनकर, परमाले ने अपनी एक विश्वास पात्र दासी को बुलाकर उस बालक को देकर कहा....इस बालक का लालन पालन अपने घर ले जाकर करो। इसकी देखभाल में किसी तरह की कमी नहीं होना चाहिए और इस प्रकार उसके घर पर एक महल की सारी सुविधायें जुटा दीं।

जब यह बालक दो साल का था तब ही उसके लक्षण विदित होने लगे थे। उसका चौड़ा माथा, चौड़ी छाती, सुन्दर मुखड़ा किसी को भी अपनी ओर खींच लेता था। वह बालक बहुत ही चंचल और शरारती था। अपनी उम्र से बड़ा दिखता था। एक बार दासी ने परमाल से कहा.....महाराज आपकी आज्ञा हो जाये, तो मैं माघ मास में गंगा स्नान को जाना चाहती हूं और साथ ही राजकुमार को भी गंगा नहवा लाऊंगी। उनके हाथ से बहुत सा दान पुण्य भी करा दूंगी। हो सकता है उसके ग्रहों का जोर कुछ कम हो जाये। परमाले महाराज को उसकी बात अच्छी लगी और उन्होंने उसे जाने की अनुमति दे कर कहा.... राजकुमार का खास ख्याल रखना। साथ ही कुछ सेना उसके साथ भेज दी, जो राजकुमार की सुरक्षा कर सके, पर विधाता को जो मंजूर होता है सो वही होता है। माघ मेले में दासी ने स्नान किया और राजकुमार को भी स्नान कराकर उसके हाथ से पंडितों को बहुत सा दान किया।

एक पंडित ने बालक से दान लेते वक्त उसकी रेखायें देख कर कहा...यह बालक बहुत ही बलशाली होगा। युद्ध क्षेत्र में कोई इसकी बराबरी नहीं कर सकेगा। इसका यश सारा संसार गायेगा। जब पंडित उस बालक के लक्षण बता रहा था, उस समय पास ही खड़ा पृथ्वीराज चौहान ये सारी बातें सुन रहा था। इस समय पृथ्वीराज की उम्र लगभग 25 बरस की थी। यहां पर यह बात ध्यान देने की है कि पृथ्वीराज आल्हा से 20 साल बड़ा

था। उसने सोचा ऐसे वीर बालक का दासी के घर में क्या काम? यह बालक चंडपुंडीर तो किसी राजा महाराजा के वंश का लगता है। यही सोचकर पृथ्वीराज चौहान ने अपने विश्वास पात्र अइयार को बुलाकर कहा.......उस लड़के को अपने जादू से उठवा करके दिल्ली पहुंचा दिया। किसी को इस बात की भनक भी नहीं लगी।
प्रात: काल दासी ने देखा बालक नहीं है, तो वह चिल्लाकर यहां वहां ढूंढ़ने लगी। सारी सेना ने मेले में घूम-घूम कर एक माह तक बालक को खोजा पर वह कहीं नही मिला। आखिर थक हारकर दासी महोबा वापस आ गई। रो-रो कर उसने महाराज को सारा हाल सुनाया। यह सुन कर सभी के दिलों में बहुत शोक हुआ। दस्सराज ने बहुत विलाप किया कि मैं तो उसका मुंह ही नहीं देखा, फिर भी हमसे बिछुड़ गया। उसके बाद सभी ने भगवान की इच्छा समझ कर संतोष कर लिया।
उधर दिल्ली में उस बालक के शुभ लक्षण देखकर पृथ्वीराज के चाचा कान्हदेव जो संतान हीन थे, उन्होंने उस बालक को गोद ले कर अपना बेटा बना लिया। वह बालक गोल-मटोल और प्यारा सा था इसलिए सभी प्यार से धांधू कहने लगे। कुछ समय बाद परमाले को खबर मिली कि मेला से पृथ्वीराज को एक बालक मिला था जिसे कान्हदेव ने गोद ले लिया। यह सुनकर सभी को खुशी हुई। सभी ने जान लिया था कि वह दस्सराज का बेटा ही है। इसी साल बच्छराज की पत्नि ने दूसरे पुत्र को जन्म दिया। जिसका नाम सुलखान रखा गया। यह भी बड़ा वीर था इसे सहदेव का अवतार बताया गया है।
कुछ समय बाद पता चला कि परमाल की महारानी मल्हना भी गर्भवती हैं। यह समाचार सुनकर सभी की खुशी का ठिकाना न रहा। वह तो अब आशा ही छोड़ चुके थे। चौथेपन में संतान होने की खुशी परमाले से सँभाले नहीं सम्हल रही थी।
उन्होंने कहा....दस्सराज-बच्छराज यह सब तुम्हारे शुभ कदमों का ही फल है।
वैशाख महीना के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को सूर्योदय के समय मल्हना रानी के पुत्र का जन्म हुआ।
पंडित जी ने बताया ... रोहणी नक्षत्र में जन्मा यह बालक चंद्रवंश का भूषण है। इसी नक्षत्र में परशुराम अवतार हुआ था। यह वीर प्रतापी राजा होगा। इसके होने से महाराज को अतुलित आनंद की प्राप्ति हुई है। इसका नाम ब्रह्मानंद है। भविष्य पुराण के अनुसार यह बालक अर्जुन का अवतार था। पंडितजी के माथे पर कुछ असमंजस के भाव देख कर राजा ने पूछा पंडित जी कुछ संशय हो तो बताइए? कुछ संकोच से बोले...महाराज, पत्नि भाव अच्छा नहीं है। पत्नि के कारण ही मारकेश बन रहा है। जहां तक हो सके इसके ब्याह में बहुत सावधानी रखें। इसे ससुराल पक्ष, खासकर साले से सावधान रहना होगा।
दस्सराज ने कहा .... अभी तो शादी बहुत दूर है। अभी तो खुशी मनाओ इस प्रकार सब ओर खुशी मनाई जाने लगी।
इसके बाद दस्सराज की पत्नि दिवला ने दस्सराज की मृत्यु के बाद तीसरी बार फिर एक बेटे को जन्म दिया। इसका नाम ऊदल रखा गया। पंडित ने कहा-बालक हाथी के बल वाला फौलादी शरीर का मालिक होगा। इसके जैसा वीर दूजा नहीं होगा।
कन्नौज के राजा जयचंद के बहुत समय बाद एक कन्या का जन्म हुआ था जिसका नाम संयोगिता था। उसके बाद कन्नौज के राजा जयचंद के भाई रतिभान की पत्नि के यहां पर एक बालक का जन्म हुआ उसका नाम हरिश्चंद्र रखा गया। कवि चंदवरदायी के अनुसार

यह बालक लाखों कामदेव के समान सुन्दर और लाखों योद्धाओं में एक बली होगा इसीलिए उसका नाम लाखन रखा गया। भविष्य पुराण के अनुसार यह बालक अभिमन्यु का अवतार था। इस प्रकार पांडव पक्ष के सभी लोगों का जन्म ग्यारवीं सदी में ही एक दो साल के अंतर से हुआ। पृथ्वीराज चौहान का जन्म इनसे बहुत पहले अजमेर में हो चुका था।

7- करिंगाराय का महोबा पर आक्रमण

इस प्रकार कौरव पांडवों के सभी अवतारों का जन्म धरती पर हो चुका था। सभी बच्चे आपस में खेलकर बड़े हो रहे थे। राजा परमाले की खुशी का वर्णन नहीं हो सकता था। माहिल को यह बच्चे एक आंख नहीं सुहाते थे, पर वह मुंह का मीठा बनकर हर समय महोबा में ही पड़ा रहता, फिर यहां की खबर लेकर वहां के राजाओं के पास सांठ गांठ करने चला जाता था।

महोबा के दरबार में ये पांच रत्न थे। पहली, पारसमणि थी जिसे छूकर लोहा सोना हो जाता। दूसरा, लखासुन्दरी अप्सराओं सी सुन्दर नृत्यांगना, उसी का अपभ्रंश लाखापातुर हो गया। तीसरा, घोड़ा पपीहा जो रण कौशल में परंगत था, चौथा युद्ध कला में माहिर पचशावद हाथी, पांचवां नौलखा हार। इनमें से चार दस्सराज बच्छराज के पास थे। पारसमणि राजापरमाल के पास थी।

माहिल साजिश रचकर माडोंगढ़ पहुंचकर बोला- अगर उस दिन बीच में बनाफर न आते तो, आज पांचों रत्न आपके पास होते; अपने दुश्मनों को ऐसे कैसे छोड़ सकते हो? मैं जीत का उपाय बताता हूं, ...महोबा में रंगपंचमी का उत्सव होगा जिसमें नगरवासी, सैनिक भाग लेंगे, नाच-गाना, ठंढाई और भांग पी जाती है। मैं भांग में धतूरे के बीज मिलवा दूंगा जिससे सभी को गहरा नशा हो जायेगा। मैं अन्दर से किले का फाटक खोल दूंगा। उसी रात आप पांचों रत्न लूट लेना और बनाफरों का सिर काट देना।

करिंगा के पिता जयवर्मन ने कहा..... एक राजा को दूसरे राजा के यहां चोरी करना अच्छा नहीं लगता है। यह कुल के लिए कलंक होगा। वीर हो तो वीरों की भांति ललकार कर सामने से लड़ो और मरो। यही राजा का धर्म है। नीति त्याग कर अनीति मत करो।

माहिल ने कहा..... आमने-सामने की लड़ाई में उन बनाफरों को कोई नहीं हरा सकता है; उनको केवल छल से ही जीता जा सकता है। महाराज, प्रेम और युद्ध में सब जायज होता है। वह करिंगा को निमंत्रण देकर चला गया।

करिंगा को रात दिन माहिल का दिखाया सपना ही दिख रहा था। रंगपंचमी के पहिले करिंगा अपने साथ सेना लेकर चल दिया।

रंगपंचमी को महोबा में गली-गली बन्दनवारे बंध रहे हैं। ललनायें, बालायें सिंगार करके घूम रही हैं। महलों में उत्सव होने वाला है। शाम होते ही महल में रौनक छा गई। हर ओर उल्लास नजर आ रहा था। परमाल के दरबार का नजारा कुछ इस प्रकार था....

सात हाथ ऊंचा सिंहासन ता पर बैठा चंदेला राय। दांये बायें बैठे बनाफर, जैसे लगा राम दरबार।।

कुर्सी -कुर्सी राजा बैठे, मूढ़े -मूढ़े पर सरदार। मदमाते सब क्षत्रिय बैठे, नंगी हाथ गहे तलवार।।

कोई दीखे पन्द्रह बीस का, कोई दिखे साठ के पार। कोई दीखे छैल छबीला कोई दीखे राजकुमार।

भांग घुट रही है हंडा में, संग में घुटें काजू बादाम। गांजा फूंक रहे गंजेड़ी, छलक रहे दारू के जाम।।

लाखा पातुर ऐसे नाचे, जैसें नागिन रही बलखाय। तबला और सारंगी बाजे, ढोलक ठना

ठन ठन्नाय।।
हीरा मोती की झालर है, परदा मखमल के लटकाय। शीशा चमकें दीवारों पर, झाड़ फानूस बरने न जाय।।
रंगबिरंगी मछली तैरें, फूल की खुशबू रही लुभाय। केशर केवड़ा और चंदन से सारा दरबार रहो महकाय
चंदेले की सजी कचहरी, कहां तक शोभा बरनी जाय। स्वर्ग के राजा इन्द्रदेव ज्यों, उतर धरा पर बैठे आय।।
इंद्रदेव की तरह ही चंदेलदरबार सजा है। माहिल आगे-आगे सारी व्यवस्था देख रहा है। उसने नजर बचाकर भांग में धतूरे, बोबई के बीज मिलवा दिये हैं। इसका नशा चढ़ने पर आदमी दस घंटों के लिए पागल सा अर्ध बेहोशी की हालत में होता है।
फागें गाई जा रही हैं, केशर रंग और अबीर गुलाल उड़ रहा है। साजिन्दे अपने-अपने साज सँभाल कर राग अलाप रहे हैं। रत्नसुन्दरी लाखापातुर के नाच ने ऐसा समां बांधा कि सब हाय-हाय कर दिल थाम रहे हैं। नाच अर्ध रात्रि तक चलता रहा। सभी ने छककर भांग पी और नशे में बेहोश होकर अपने-अपने घरों को चले गए। किसी-किसी को घर पर छोड़ा गया तो कुछ लोग रंगशाला की दालान में ही पड़े रहे। परमाले अपने महलों में चले गए और दस्सराज बच्छराज भी नशे में रथ पर सवार होकर अपने महल दसपुरवा को चले गए। प्रहरी ने किले का फाटक ठीक से बंद किया। फाटक पर पहरा देने वाले पहरेदार महफिल में नहीं गए थे, सो वह नशे में नहीं थे। सभी को नशे में देखकर वह मुस्तैदी से फाटक पर सेना की टुकड़ी सहित पहरा दे रहे थे।
यह फागुन मास की रंगपंचमी का की मध्य रात्रि की काली रात थी। वादे के मुताबिक करिंगा महोबा के जंगल से निकलकर दसपुरवा की ओर बड़ा और किले के फाटक पर पहुंचकर उसने अपने साथ आये बौना से कहा कि वह ऊपर चढ़कर अन्दर से किले का फाटक खोले। बौना ने कमरबंध बांधा और दूसरे सिरे पर फंसते ही उपर चढ़कर अन्दर चला गया और किले का फाटक खोल दिया। सभी किले में चुपचाप प्रवेश कर गए और मुख्य महल को घेर लिया, जो कुछ सैनिक वहां थे उनको मार डाला।
महल के अन्दर दस्सराज बच्छराज और प्रमुख सरदार नशे की अधिकता के कारण अर्ध बेहोशी में थे। करिंगाराय ने जाकर सभी को सोते से पकड़कर बंधवा लिया। दस्सराज और बच्छराज की नशे की हालत में मुश्के बांध दी गईं। सभी रानियां चुपचाप खड़ी देख रही थीं। वह भी कुछ करने की स्थिति में नहीं थी क्योंकि सैनिक उनको भी घेरे खड़े थे। करिंगा ने रानी देवला के गले से नौलखा हार खींचा और बोला ....ये हार पहनने की औकात तुम्हारी नही है। यह हार तो वीरों की रानी को शोभा देता है।
देवल....वीर होते तो चोरों की तरह क्यों आते? यह सुन करिंगा तलवार खींचकर बोला...सबसे पहिले मैं तेरी वीरता देखता हूं।
देवल ने गरज कर कहा- एक निहत्थी पर रोब दिखाते हो, असल मर्द की जात है तो मेरे हाथ में भी तलवार देकर देखो?
करिंगा नंगी तलवार ले झपटा-अरी मैं अभी तेरा काम तमाम करता हूं। तिलका ने सामने आकर कहा..महाराज ये नादान है। आप सब ले जाओ, बस आप हमारे पति को छोड़ दो, तो करिंगा तुरंत बोला....नहीं मैं नहीं छोड़ूंगा, इनको बंदी बनाकर मांड़ों ले जाऊंगा वहां कटघरे में इनको रख के सबको दिखाऊंगा कि सबसे महाबली को मैंने कैसे कटघरे में रखा है। वह बोला-सैनिकों महल की कीमती चीजें, घोड़ा पपीहा, पचशावद

हाथी, लाखापातुर लूट लो। हमें महोबा से पारस-पथरी सहित परमाले को भी लूटना है।
सैनिकों ने कहा..महाराज, हमने सबकुछ ले लिया, कुछ ही देर में पौ फटने वाली है, आसमान में हल्का उजाला होने लगा है, अब हमें यहां से जल्दी चलना चाहिए। करिंगा अपने सैनिकों के साथ महोबा किले के फाटक पर पहुंचा, पर फाटक बंद था। वादे के मुताबिक माहिल को फाटक खोलकर रखना था। कुछ देर फाटक खुलने का इंतजार किया, पर उजाला होने के कारण वह रुका नहीं और सेना सहित मांडो को चला गया। वह बनाफर भाइयों को ले कर जल्दी से अपने किले में पहुंच जाना चाहता था।
उधर हुआ यूं कि सभी को नशे में देखकर महोबा के फाटक पर पहरा देने वाले पहरेदार सतर्क हो गए थे। माहिल को नशे में न देखकर पहरेदारों को संशय हो गया और वे सचेत हो गए। वह सब नंगी तलवार हाथ में लेकर रातभर पहरा देते रहे। महिल ने दो बार चक्कर भी लगाये पर उन सभी को मुस्तैद देखकर वह चुप ही रहा क्योंकि उसके हुकुम से वह फाटक खोलने वाले नहीं थे। सो चुप रहकर अपने कमरे में आ गया। इस प्रकार पहरेदारों की समझदारी से महोबा पर आई मुसीबत टल गई।
करिंगाराय के जाते ही कोहराम मच गया। कुछ पहरेदारों ने जाकर महोबे में खबर करी। सुनकर परमाले रानी मल्हना को लेकर वह दसपुरवा पहुंचे। माहिल भी उनके साथ गया। परमाल बोले... ऐसा भांग का नशा कभी नहीं हुआ कि अपना ही होश ना रहे।
सभी को धीरज बंधाया कि सेना को एकत्रित करके मांडों पर चढ़ाई करके दोनों भाइयों को वापस ले आयेंगे।
परमाले ने कहा.....मांडो का राजकुमार, चोरों की हरकत करेगा किसी को नहीं पता था। अरे ! क्षत्रिय है तो सामने से वार करता, उसे भी पता चलता किससे पाला पड़ा है। उसने तो अपने सारे कुल को लजा दिया। मल्हना सभी रानियों को अपने महल महोबा ले आई कि अब जो भी करना है महोबा में रहकर ही करेंगे। जिसने भी सुना उसी ने करिंगा की निंदा की, वीर होकर कायरों की तरह चोरी करी। सभी मित्र राजाओं के दूत आने लगे, हम आपके साथ हैं। इस समय तल्हन बनारस गए हुए थे।
उधर मांडो जाकर करिंगा ने दो मजबूत पिंजरा मंगाकर, उसमें अलग-अलग दोनों को सवा मन की हथकड़ी, बेड़ी और गले में तौक डालकर कैद कर दिया। पहरेदार चौकी पर रख दिए। उसे डर था कि ये दोनों अगर झूठ गये तो किसी को भी जीवित नहीं छोड़ेंगे। तभी दोनों भाइयों ने पहरेदारों की नजर बचाकर पिंजरें की मोटी सी सलाखें तोड़ दी और बाहर निकल आये। उनकी ही तलवार छीनकर वह बेड़ी, हथकड़ी बंधे हाथों से युद्ध करने लगे, कोई टिक नहीं पा रहा था। करिंगा डरा कि बचकर भाग गए, तो मांडो को श्मशान बना देंगे। उसने लोहे का मोटा जाल इनके ऊपर फेंका और फंसाकर उन्हें मोटी-मोटी जंजीरों में बांध दिया।
दस्सराज घायल सिंह की तरह दहाड़कर बोले.....अरे! करिया, तू अपने नाम की तरह मन वचन का भी काला है। वीर है तो वीरों की तरह हमसे दो-दो हाथ कर मैदान में आ हथियार उठा। सियार की तरह दूर से बात क्यों करता है।
करिंगा बोला.......अरे बनाफर, बड़बड़ मत कर, वरना सिर धड़ से अलग कर दूंगा। चाकरी चंदेले की और बातें राजाओं सी।
दस्सराज ने कहा......मरने की धमकी किसे देता है। वीरों की पहली सगाई तो मौत के

साथ ही होती है। तेरी मां ने सिंह नहीं सियार को जन्मा है, जो चोरों की तरह पराये घर में घुस के छल से हमें चुरा लाया है। तूने तो अपनी मां के दूध को ही बदनाम कर दिया। तू क्षत्रिय कहलाने के लायक ही नहीं हैं। वो दिन को भूल गया, जब हमने तुम पांच हजार को खदेड़-खदेड़ कर मारा था। रही बात राजा की तो हम राजवंशी हैं, राजा हैं, हमारा राजपाट है.. चंदेला मेरा धर्म भाई है, पर अनीति करने वाला तू धर्म को क्या समझेगा। हम राजा थे और राजा ही रहेंगे। तू हमारे साथ बंदी राजाओं जैसा ही व्यवहार कर।
करिंगा बोला.....इनके शरीरों में बहुत ताकत है। इनको बिना खाना-पानी दिए, रात दिन कोल्हू में जोत दो सारी हेकड़ी निकल जायगी। मैं इनको तड़पाता हुआ देखना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि ये मुझसे जान की भीख मांगे।
दस्सराज ..... जान की भीख तुझ जैसे कायर ही मांगते हैं, तभी तो उस दिन मोर्चा छोड़कर, जान बचाकर, रण में पीठ दिखा कर भागा था। हम चाहते तो उसी दिन तुझे मार सकते थे, पर हम क्षत्रिय हैं, वीर हैं, भागते हुए की पीठ पर वार नहीं करते।
बच्छराज....उसे क्या मारना जो मरने के डर से भाग रहा हो? हम अपनी मौत का भी हंस कर सामना करेंगे। क्षत्रिय हैं छाती पर वार खायेंगे। वीरों की कभी मृत्यु नहीं होती, वह तो सदा अमर रहते हैं। कुत्ते की मौत तो तुझ जैसा कायर मरता है।
मौत से बचकर कायर जीवै, रो-रो कर जिये सियार। बरस अठारह क्षत्रिय जीवै, मौत पे गरब करे संसार।।
करिंगा ने तिलमिलाकर कहा.... इनके गले में बीस-बीस सेर लोहा और पहना दो ताकि इनकी अकड़ी हुई गर्दन झुक जाये। उसके बाद कोल्हू में जोत दो। दो दो मन लोहा पहनने के बाद भी उनका सिर उठा ही रहा।
इधर माहिल ने देखा कि परमाले मांड़ो पर चढ़ाई की तैयारी कर रहे हैं, वह घबरा गया कि आज नही तो कल माहिल के छल की बात उनको पता चल ही जायेगी। अगर बनाफर वापस आ गए तो उसको जिंदा ही नहीं छोड़ेंगे। इसलिए उसने एक पत्र लिखकर जल्दी ही जा कर मांड़ो के राजकुमार को भेजा। करिंगा पत्र खोल कर पढ़ता हैं....मांडो के राजकुमार को रामजुहार।
दसपुरवा की बरबादी की बधाई हो। आगे समाचार है कि आस-पास के सभी राजा परमाले के साथ हैं। चंदेला जल्दी ही एक विशाल सेना लेकर मांड़ो पर चढ़ाई करके बनाफरों को छुड़ाने के लिए आ रहा है। टोडरमल, रहिमल, तल्हन और कन्नौज के राजा जयचंद भी आर हे हैं। राजकुमार अगर चंदेले ने मिलकर आपके ऊपर चढ़ाई कर दी, तो मांडो का नाम निशान मिटा देंगे। इस बार आपकी पराजय निश्चित है। अगर आप इनसे बचना चाहते हो, तो जितनी जल्दी हो सके जस्सराज बच्छराज के सिर काटकर उनके मरने की निशानी कटे हुए सिर जल्दी से जल्दी महोबा भिजा दो। दोनों के मरने की खबर से महोबा शोक में डूब जायेगा और फिर चढ़ाई करने की जरूरत ही नहीं रहेगी। बस बचने का यही उपाय है, बाकी आप स्वयं समझदार हैं। आपका ...शुभेच्छु।
पत्र पढ़के करिंगा को पसीना आ गया, बोल नहीं निकल रहा, पिता ने कहा.."जो न माने बड़ों की सीख, ले खपरिया मांगे भीख"। हमने कहा था चंदेले से बैर न लो, चोरों वाले काम न करो, पर नहीं, तुमने तो परमारवंश नाश करने की ठान ली है।
करिंगा बोला...ये सब बातें करने का समय नहीं हैं। आगे क्या किया जाये, ये सोचो।
जयवर्मन ने कहा.... जब माहिल हमारे दरबार में आये थे, हम समझ गए थे कि अब

मुसीबत आने वाली है। वह जहां जाते हैं, मुसीबत भी पीछे-पीछे वहीं पहुंच जाती है। अरे, इतना सोचो जो अपने बहन बहनोई का नहीं है, वह तुम्हारा कहां से होगा? अरे, भाई तो बहन के सुहाग की रक्षा करता है, पर यहां तो वह सगी बहन के सुहाग को मिटाने को तुला है।

करिंगा ने सैनिकों को आदेश दिया.....जाओ उनके सिर धड़ से अलग कर दो।

जंबे बोला...अब तुम फिर गलती कर रहे हो। उनके साथ एक बंदी राजा की तरह व्यवहार करो और फिर कुछ शर्त रख कर उनको छोड़ दो। किसी राजा का सिर ऐसे ही नहीं काटा जाता, तो करिंगा बोला.....हमें आपकी सलाह की जरूरत नहीं है।

सैनिक आदेश पा हुकुम बजाने तलवार लेकर दौड़े, पर पास जाते ही बंधे हाथों से ही बनाफरों ने उन दसों के सर काट डाले।

यह देख करिंगा आग बबूला हो गया और बोला ......तेगाराम अपने पचास जवानों को ले जाकर इनको मार डालो।

उनको देखकर मुस्कराकर दस्सराज ने कहा....बस पचास ही आये हो? अरे करिया से कहो सामने आये। हम मरने से नहीं डरते। तेगाराम उन पर वार करता है, पर बनाफर बड़े लड़ाका थे। वह हाथ में बंधीं जंजीरों से वार रोककर, उनकी तलवार छीनकर दोनों हाथों से तलवार भांजकर उनको मार डाला। करिंगा ने गुस्साकर केसरिया के दो सौ जवान भेजे जो उनपर वार करते हैं।

बच्छराज ने कहा....दादा इन सबको मैं ही अकेला काफी हूं। अरे नहीं छोटे, हम भी तो कुछ पुण्य कमा लें। इनकी वीरता और जिंदादिली देखकर सभी को आश्चर्य हो रहा था। करिया ने उन्हें कोल्हू से बांध दिया था, पर वह इतने बली थे कि उन दोनों ने कोल्हू को उठाकर चारों ओर चकरी की तरह ऐसा घुमाया कि पल भर में आधी सेना का नाश हो गया। करिंगा राय अपनी सेना का यह हाल देख कर घबरा गया और दूर से ही उन पर तीरों की बरसात करने लगा। इस समय बनाफरों की वीरता देखने लायक थी। बच्छराज दोनों हाथ से इतना भारी कोल्हू का चक्र बना कर चारों ओर घुमा रहे थे। वह कोल्हू जहां से भी घूम जाता है वहीं पर सैनिकों का सफाया हो जाता था। दूसरी ओर दस्सराज बंधे हाथों से तलवार चलाकर सेना का सफाया कर रहे थे। एक ही वार में तीन-तीन वीरों के सिर धड़ से अलग हो जाते थे। दोनों के शरीर में कई घाव हो गए, उनसे लगातार से लहू बह रहा है, पर चेहरे पर शिकन नहीं है। करिंगा के कई सैनिक समाप्त हो गए थे। इस प्रकार लड़ते-लड़ते सूरज ढलने को आया। बनाफरों का लहू बह-.बह कर चारों ओर छिटक रहा था। पूरा शरीर घावों से भर गया है। कई तीर आकर उन्हें बींध चुके थे। अब धीरे-धीरे उन पर मूर्छा हावी होने लगी है, पर बार-बार आंख खोलकर वह लड़ रहे हैं। कुछ ही देर में वह दोनों वीर जय भवानी कहकर, निष्प्राण हो गिर गए। जीते जी कोई भी उनके पास न आ सका। अब मरने के बाद भी करिंगा की हिम्मत उनके पास आने की नहीं हो रही थी। बहुत देर तक पड़े रहने के बाद जब यह विश्वास हो गया कि वह दोनों सच में मर चुके हैं, तब करिंगा हिम्मत करके उनके पास पहुंचा और एक ही झटके से उन दोनों शवों के सिर काट दिए। यह कार्य वह उनके जीते जी नहीं कर सकता था।

जंबेराय...आज तक ऐसे शूर-वीर नहीं देखे, इनकी वीरता को नमन करने को मन करता है। इनके लड़का कितने लड़ैया होंगे?

उधर करिंगा ने सोचा अब इन खोपड़ियों को महोबा कौन लेकर जायेगा? इनको यहीं

चौक पर टंगा देता हूं और माहिल को खबर भिजा देता हूं। उसने कहा....सैनिकों इन दोनों के सिरों को सामने चौक में बीचों बीच बरगद के पेड़ पर टंगवा दो।
सैनिक के द्वारा दोनों सिरों को महल के सामने चौक में टंगवा दिया जाता हैं। मांडो के सभी लोग ऐसे वीरों के सिरों को देखने आते हैं और उनकी वीरता की बातें करते हैं। सच में बनाफर बहुत वीर थे। करिंगा ने माहिल को पत्र लिखकर सारा माजरा भिजा दिया और पूछा अब आगे क्या करना है? यह जानकारी धार मूर्तिलेख 1151ई. और इच्छावर लेख 1152 ई. से मिलती हैं।
माहिल पत्र पढ़कर खुश हुआ। उसका अगला शिकार परमाले हैं। वह रोता चिल्लाता बोला..अभी-अभी सूचना मिली है कि करिंगा ने दोनों के सिर कटवा के महल के चौक में टंगवा दिए और मुनादी करा दी है कि चंदेले में दम हो तो ये खोपड़ियां ले जाये।
माहिल की बात सुनकर सभी को पसीना आ गया। परमाले ने कहा.. नहीं ऐसा नहीं होगा। एक राजा के साथ दूसरा राजा ऐसा व्यवहार नहीं कर सकता। यह तो राजधर्म के विपरीत बात है। माहिल कुछ सैनिक भेजकर पता करो खबर सच्ची है या झूठी।
माहिल...महाराज हमने पता करा है, सूचना सच्ची है। चारों ओर हा-हा कार मच गया। सब एक दूसरे को ढ़ांढस बंधा रहे थे।
परमाल ..हे विधाता हमसे का खता हो गई जो दो-दो भाई देकर छिन लिए। तल्हन अपने को कोस रहे कि क्यों बनारस गये। रहिमल, टोडरमल रो रहे..दादा से कहा था अपने वतन लौट चलो। चले गए होते तो आज ये दिन तो न देखना पड़ता।
रानियों ने दिवला और तिलका को उठाकर कहा ......जो होना था वह हो चुका, चलो अब कुछ मृतकों के निमित्त रस्में कर लो।
दिवला ने घायल नागिन की तरह फुंफकार कर कहा....नहीं हम कोई मृतक संस्कार की रस्में नहीं करेंगे। न ही चूड़ी तोड़ेंगे। जिस दिन हम अपने पति की मौत का बदला ले लेंगे, उसी दिन सारे संस्कार पूरे करेंगे।
परमाले ने कहा .तैयारी .पूरी हो चुकी है। कल हम मांडों के लिए कूच करेंगे। दिवला समझदार, दूरदर्शी और धर्मज्ञ महिला थी। उसने सोचा सभी बच्चे अभी छोटे हैं। माहिल का भरोसा नहीं है। अगर परमाले को कुछ हो गया तो माहिल हम सभी को महलों से निकाल कर गली-गली भीख मंगवा लेगा। इसलिए अभी कुछ न करके चुप रहना ही उचित है। उसका सबसे बड़ा कर्तव्य इस समय बच्चों की परवरिश करना हैं। वह क्षत्राणी है वीरों की माता है उसे कुन्ती की तरह अपने बच्चों को समर्थ बनाना है। उसके बाद बदला लेना है। उसने कहा.....नहीं अभी कोई लड़ाई नहीं होगी। मेरे बच्चे बड़े होकर स्वंय पिता की मौत का बदलालेंगे।
परमाले ने कहा....हम सब सक्षम हैं, मांड़ो को चौबीस घंटे में ही फतह करके करिया का सिर काटकर तुम्हारे कदमों में डाल देंगे। यह लड़ाई तो हो के रहेगी। करिया ने हमें ललकारा है हम चुप नहीं बैठ सकते।
दिवला ने कहा.... जीजी, आपने हमारी बात नहीं मानी तो हम पेट में पल रहे छ: मास के गर्भ को कटारी मार स्वयं मर जायेंगे। ऐसा कहकर उसने कटारी खींच ली और बोली....जीजा जी, आप हमें वचन दीजिए, नहीं तो हम मार कटारी मर जायेंगे।
अब परमाल असमंजस में थे। रानी मल्हना बोली....आप वचन दे दीजिए, जो दिवला कहेगी हम वही करेंगे। हमें संसार की नहीं अपनी बहन और उसके बच्चे की चिंता है। तो परमाल ने कहा...हमने वचन दिया जब आप कहेंगी तब हम मांड़ों पर चढ़ाई करेंगे।

दिवला ने कहा-एक वचन आप सब दीजिए कि आज के बाद कोई चर्चा नहीं करेगा कि बनाफर राजा के साथ क्या हुआ था?
सभी ने कहा हम वचन देते हैं। उसके बाद दिवला ने तल्हन से कहा.....देवर जी, आज से ये बच्चे अपको सौंपती हूं। आप सब कुछ भूलकर इनको अस्त्र-शस्त्र और हर विद्या में निपुण कर दो। गुरुजी से संपर्क करके, जहां जिस गुरु की जरूरत हो उनको महलों में बुलाकर इनकी शिक्षा की व्यवस्था गुप्त रूप से करो। इनको ऐसा बना दो कि इनके साथ आपका भी नाम इस अमर हो जाये। इन बच्चों के साथ क्या हो रहा है, इसकी खबर महल के बाहर नहीं लगना चाहिए। माहिल को पता न हो बच्चे कहां हैं?
तल्हन ने कहा....आपके हुक्म को मैं हर तरह से पूरा करूंगा। आज से आप इनकी चिंता मुझ पर छोड़ दीजिए।

8- राजकुमारों की शिक्षा

राजधर्म की परंपरा के अनुसार अब दिवला रानी को सभी आदर से राजमाता कहकर संबोधित करते थे। दिवला ने ऐसा दिखाया कि इस घटना के बाद वो टूट चुकी है हताश हो गई है। उसे अपने ही खाने पीने की सुध बुध नहीं रहती है। जबकि था उल्टा ही। मल्हना और दिवला इन बच्चों की सुरक्षा का बहुत ध्यान रखकर बहुत ही गुप्त तरीके से इनकी शिक्षा का इंतजाम कर रही थी। इन सभी बच्चों को एक खास महल में शिक्षा दी जा रही थीं। बाहर राजवंशों को पता ही नहीं था कि महोबा के राजकुमारों के साथ क्या हो रहा है? वह कहां पर हैं? माहिल की कुटिलता का पता लगते ही माहिल से मल्हना ने साफ कह दिया था कि आज से आप हमारे नगर में कभी न आयें। वह जानती थी कि वह भरोसे के काबिल नहीं है और सभी बालक बहुत छोटे थे। आल्हा की उमर इस समय सात साल की थी इसी तरह अन्य बच्चे भी समकक्ष ही थे। गुरु गोरखनाथ के चेला बोधनाथ इन बालकों को धर्म, राजनीति, कूटनीति और जादू की शिक्षा दे रहे थे।
अभी इस घटना को कुछ समय ही बीता था कि 1165ई. में दादा महाराज मदन वर्मा का स्वर्गवास हो गया। वह करीब तीन साल से बीमार चल रहे थे। एक माह तक राजकीय शोक मनाया गया। उसके बाद परमालदेव 1165ई. में ही सिंहासन पर विराजमान हुए। इस समय वह बहुत ही क्षुब्ध थे एक तो दो दो भाइयों का जाना, फिर पिता की तरह संरक्षण देने वाले दादा का चले जाना, उन्हें अंदर तक तोड़ गया था। उन्होंने सलक्षण को अपना मंत्री बनाया। सलक्षण बहुत ही दूरदर्शी, बुद्धिमान, ईमानदार और वीर था। वह राजा परमाल की आशाओं पर खरा उतरा। उसने महोबा को पूरी तरह से सँभाला था।
इस घटना के तीन माह बाद रानी दिवला ने एक पुत्र को जन्म दिया। ठीक पांच दिन बाद रानी मल्हना ने दूसरे पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम त्रिलोकवर्मा रखा गया। अपने पिता की मृत्यु के बाद त्रिलोक वर्मा ने महोबा पर 1203 ई. से 1245 ई. तक राज्य किया था। यह जानकारी अजयगढ़ शिलालेख 1212 ई. और गुढ़ा ग्राम के ताम्रलेख 1204ई. से मिलती है।
बालक ऊदल के जन्म से एक माह बाद देवलमाता ने अपनी विश्वसनीय दासी से कहा....इस बालक को ले जाकर अपनी कोठरी में रखकर पालन वैसे करो जैसा मैं कहती हूं। केवल दो समय दूध पिलाने के लिए लाना। पास आती रानी मल्हना ने सारी बातें सुनकर कहा....दिवला, तू पागल हो गई है क्या? अभी इसे मां की जरूरत है, तो दिवला बोली...नहीं जीजी, इसे मां की नहीं, धरती मां की जरूरत है, इसीलिए मैं इसे धरती की गोद में सौंप रही हूं। इसे अपने पिता की मौत का बदला लेना है। मांड़ो के खिलाफ यही तो मेरा हथियार बनेगा। जीजी मेरी प्रार्थना है कि आप इस संबंध में कुछ नहीं कहेंगी। उसका निश्चय देख मल्हनारानी ने चुप रहना उचित समझा। देवल के कहे अनुसार उसी की देखरेख में वह दासी उस बालक को बिना बिस्तर के जमीन पर सुलाती, गरमी में गरम पानी से नहलाकर धूप में लिटाती, ठंढी में ठंढे पानी से नहलाकर बाहर ठंढी हवा में लिटाती, बारिश में वह बच्चा घंटो भीगता रहता, रस्सी से पैर बांध कर वह उल्टा लटककर रोता रहता। उसके सीने पर वजन रखकर उसे कठोर बनाया जाता। उसके बदन पर शिलाजीत की जड़ी बूटियों का लेप लगाकर काया वज्र

की तरह कठोर बनाई गई। करीब एक साल का होने पर शरीर में सुई चुभोकर उसे मजबूत बनाया, खेलने के लिए चाकू कटारी बर्छी दी जाती, पत्थर तोड़ने का खेल खिलाया जाता था। दो साल के बालक को मध्य रात्रि में सबसे छुपाकर घोड़े की पीठ पर बांधकर दौड़ाया जाता था। रानी मल्हना दिवला की नजर बचाकर उसे अपना दूध पिलाती थी। उसे इस बालक से बहुत प्यार था। वह दोनों माताओं का दूध पीकर बड़ा हो रहा था। देवल मां उसे कुछ ऊपर उठाकर जमीन पर पटक देती थी। धीरे-धीरे यह क्रम बढ़ता ही गया और तीन साल बाद तो चमत्कार ही हो गया। जिस शिला पर बालक को पटका गया वह शिला चटक गई। तीन साल में वह बालक पहाड़ चढ़ जाता था, नदी में कूद जाता था, पेड़ पर चढ़ जाता था, हवा में लटक जाता था। बचपन से उसे सैनिक अभ्यास क्षेत्र में बिठाया गया, उसे हथियारों से डर नहीं लगता था। पांच साल में वह तीर, तलवार, भाला चलाने में निपुण हो गया था, अब तक उसका शरीर वज्र का बन चुका था। सभी बालकों को भी ऐसी ही शिक्षा दी जा रही थी, पर ऊदल को खास थी। पांच साल में बाकी बालक बड़े हो गए थे। ऊदल की उमर दस बरस की रही होगी, तब आल्हा की उमर 15 साल की थी इसी अनुपात में सब की उमर थी। सभी ऊदल से चार, पांच साल बड़े थे। केवल त्रिलोकवर्मन बराबर था। बच्चों की शिक्षा पूर्णता की ओर है। गुरुगोरखनाथ जिनके दर्शन दुर्लभ हैं कृपा कर पधारे हैं।
गुरुगोरख नाथ जी सौम्य सुरीला रूप, चेहरे पर दिव्य तेज, होठों पर मधुर मुस्कान, काले घुंघराले बाल कंधो तक लटके हुए। उमर यही कोई बीस साल ही लगती थी यानि कि चिर युवा। उन्होंने पीले पीतांबर वस्त्र धारण किये हुए, उनके कांधो पर एक झोली थी, हाथों में बांसुरी थी जिसे बीन मुंदरिया कहा जाता था। उसमें छत्तीसों राग निकलते थे। पैरों में पद्म खंड़ाऊ थी जो उनकी मन की गति से उड़ती थी। इसके अलावा भी झोली में बहुत कुछ था। परमाल ने सभी रानियों के साथ उनका स्वागत, चरण वंदना की।
रानी मल्हना ने कहा...गुरुदेव आपकी कृपा से सब ठीक है, अब लड़का बड़े हो गए हैं उनको कब तक छिपाकर रख सकेंगे?
गुरुदेव.. महारानी, अब चिंता करने की बात नहीं है। ये समर्थ हो गए हैं बावनगढ़ को फतह करके महोबा का नाम अमर करेंगे।
तब तक सभी बच्चे आकर चरण वंदना करके खड़े हो जाते हैं। गुरु देव ने सर्व प्रथम आल्हा के सिर पर हाथ रखकर कहा....इस संसार में तुम्हें कोई जीतने वाला नहीं है, बस हमेशा धर्म के मार्ग पर चलना। फिर ऊदल के सिर पर हाथ फिराकर कहा....इसका यश सारा संसार बखान करेगा। इसका शरीर बज्र का है। हथियार इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।
मलखान के सिर से लेकर पैरों तक हाथ ले जाते ही तिलका ने टोका ....बस गुरुदेव, चेला के पैर छुओगे, तो पाप का लगेगा। रानी इसका शरीर बज्र का हो गया है टोका लगने से इसके पैर का पद्म बाकी रह गया इसकी मृत्यु पद्म के फटने से ही होगी। उसका बचाव रखना। यह देवी का परम भक्त होगा। ब्रह्मा को हाथ फिराकर कहा .....तुम्हारी काया भी बज्र की है बस दिल्ली वालों से खास कर ताहर से दूर रहना। सुलखान की पीठ पर हाथ फिराकर कहा.. दिल्ली के धांधू से तुम्हारी टक्कर है। फिर ढेबा और त्रिलोक के सिरों पर हाथ फिरा कर उनको भी आशीर्वाद दिया। उसके बाद वह बोले, हम राजमाता देवल से अकेले में बात करना चाहते हैं। वह आल्हा की अमरता का सत्य

बताते हैं और आदेश देते हैं कि उसे किसी पर भी प्रकट ना किया जाये।
उसके बाद बाहर आकर कहा - यह सभी बालक अवतारी हैं। कुछ खास कार्य करने के लिए ही इनका जन्म हुआ है। इनका यश सारा संसार युगों युगों तक याद रखेगा। अब वह समय आ गया है कि इनको बाहर निकाला जाये, शिकार के बहाने इनको जंगल की सैर कराई जाये। ये बाहर की दुनिया से भी परिचित हों। ये बड़े से बड़ा जानवर का शिकार करने लायक हो गए हैं।
देवला ने हाथ जोड़ कर कहा गुरुदेव, अगर ये बालक बाहर जायेंगे तो इनकी रक्षा कैसे होगी।
गुरूदेव- महारानी जी, ये सब अपनी रक्षा करने में समर्थ हैं, अब इन्हें दूसरों की रक्षा करना होगी। आप चिंता ना करें, मैं मानसिक रूप से इनके संपर्क में रहूंगा। जब भी जरूरत होगी मैं उपस्थित होऊंगा। सभी उनको विदाई देने ब् ाहर तक आते हैं।

9-राजकुमारों की परीक्षा

सभी बच्चे साथ-साथ खेलते हैं ऊदल और त्रिलोक सबसे छोटे हैं। गुरुदेव के कहने से अब यह पूरे महल में और बगीचे में घूमने लगे हैं। ये बात अलग है कि उनके साथ सैनिक हमेशा उनकी रखवाली को रहते हैं। ऊदल बहुत ही उधमी और शरारती है, बात-बात पर गुस्सा बहुत आता है। वह हमेशा शरारतें करता रहता है किसी का सिर फोड़ना, किसी बाग के फल तोड़ना, पनिहारी की गगरी फोड़ना, कुएं पर जाकर रस्सी को कुयें में फेंक देना, सोते हुए सैनिकों के पैर आपस में बांध देना, इस पहरेदार कर सामान उस पहरेदार के पास रखकर दोनों को आपस में लड़ा देना, आपस में भाइयों की चीज छीना लेना; इस तरह उसकी शरारतों का कभी अंत ही नहीं था। सभी रानियों के पास ऊदल की शिकायतें आती थीं, पर रानी मल्हना उसे कभी नहीं डांटती थीं। वह हमेशा उसका पक्ष ले कर प्यार से समझाती थीं। सभी जानते थे कि ऊदल महारानी जी का लाड़ला है। आल्हा बहुत ही शांत और समझदार है। हमेशा झगड़ा बचाने की कोशिश करते, सारा दिन इनकी पंचायत ही निपटाते रहते।
ब्रह्मा कहेगा ....दादा, ऊदल ने मेरे तरकश से सारे तीर निकाल लिए! सुलखान कहेगा... दादा मैं सच कह रहा हूं इसने मेरे हिस्से के फल खा लिए, ढेबा ने कहा ... दादा किसी ने मेरे अंगरखा में छेद कर दिए। मलखान हमेशा आल्हा के साथ रहकर उसकी परेशानियों का मजा लेता था। जब आल्हा बहुत परेशान हो जाता तो कहता ...अपना झगड़ा मलखान दादा से सुनाओ, वही फैसला करेगा। क्योंकि आल्हा के बाद मलखान का नम्बर था। वह आल्हा से एक साल ही छोटा था। ढेबा को छोटी उमर में ही ज्योतिष का अच्छा ज्ञान हो गया था। वह बात बात पर अपना पत्रा खोलकर सभी को ज्ञान बताने लगता था। ऊदल उसे भी बहुत परेशान करता था। इसी तरह एक साल और गुजर गया और बचपन आगे बढ़ा जा रहा था। मल्हनारानी ने एक दिन सभी को बुलाया।
महारानी मल्हना ने कहा .... हम आज सभी की परीक्षा लेंगें। सभी ने एक स्वर से कहा......हां-हां हम तैयार हैं।
महारानी मल्हना ने कहा.....तुम सब में से जो भी नंदी सांड़ के गले की घंटी खोलकर लायेगा, वही विजेता होगा।
यह सुनकर सभी चुप हो गए। नंदी सांड़ एक अर्ध पागल खूंखार ताकतवर सांड़ है। उसके बड़े बड़े नुकीले सींग है, वह बाहर पुराने बगीचे में घूमता है। कोई पास जाने की हिम्मत नहीं करता, वह इंसानों को पास देखकर पागल हो जाता है, फिर उसे मारने पीछे दौड़ पड़ता है। कुछ देर बाद सभी ने कहा... दादा अब हम क्या करें? इस समस्या का हल आप ही निकाल सकते हैं।
आल्हा ने समझाकर कहा- बड़ी मां, हम सबकी एकता व बुद्धि की परीक्षा लेना चाहती हैं। इसलिए हमें एकजुट होकर अपनी पूरी सामर्थ्य के अनुसार ये कार्य करना चाहिए। अगर हम एक जुट होकर कार्य करेंगे तो यह असम्भव नहीं है। फिर सब सांड को खोजने निकल पड़े, उसके मिलने पर सभी ने उसको घेरकर एक साथ आक्रमण कर दिया। ऊदल ने उसके सींग पकड़े, मलखान ने पीछे से पूंछ खींची, ब्रह्मा, सुलखान, त्रिलोक, ढेबा ने पैर पकड़े और आल्हा ने आगे बढ़कर उसके गले से घंटा खोल लिया। सांड़ कुछ न समझ कर जब तक झटपटाया तब तक ये सब घंटा खोल चुके थे। सभी नाचते गाते खुशी

मनाते महलों को चल दिये।
मल्हना को गुप्तचरों से सूचना मिल चुकी थी। सभी बच्चे महारानी के सामने जाकर खड़े हो गए। घंटा त्रिलोक के हाथ में देख मल्हना ने कहा....अच्छा तो ये बहादुरी का काम त्रिलोक ने किया है? वह बोला-नहीं, ये तो बड़े दादा ने खोला था।
वह बोलीं- अच्छा आल्हा विजयी, आल्हा ने तुरंत कहा...नहीं बड़ी मां, ये घंटा सभी के प्रयासों से मिला है, ये जीत हमारी है।
महारानी ने कहा.....हां ये जीत आप सभी की है, यही मैं आप सभी को समझाना चाहती हूं कि एकता के द्वारा असभंव को भी संभव बनाया जा सकता है। आगे भी जीवन में आप सब बुद्धिमानी और समझदारी से काम लेकर एक दूसरे का साथ निभाकर चलोगे, तो हमेशा विजयी रहोगे। कोई तुम्हें हरा नहीं सकेगा। मेरी ये सीख हमेशा याद रखना। मैं तुम सभी के लिए खास ईनाम देती हूं; आओ मल्हना उन सबको लेकर, एक खास अस्तबल में गई और वहां पर जो खास नस्ल के घोड़े थे। पहले घोड़े के पास जाकर कहा....यह करिलिया नामक घोड़ा, आल्हा को दिया, दूसरा ब्रह्मा को, इसका नाम हरनागर है। तीसरा ऊदल को, जिसका नाम बेंदुला है। ये चौथी घोड़ी कबूतरी, मलखान को, पांचवां घोड़ा सब्जा त्रिलोकवर्मन् को, छठवीं घोड़ी चतुरंगी, सुलखान को और सातवां घोड़ा मनुरथा ढेबा को दिया जाता है। आज से अपने घोड़ों की देखभाल करना, सवारी करना। बेटा ये बड़े विलक्षण घोड़े हैं, रण में अपने सवार की रक्षा करना, सतखंडा पर छलांग लगाना, नदी नाले पार करना जानते हैं। इनकी चाल हवा के समान है। जरूरत पड़ने पर सब्जा और मनुरथा को छोड़कर बाकी घोड़े हवा की गति से उड़ भी सकते हैं। तुम सब अपने साथी की तरह ही इनकी देखभाल करना, मित्रवत व्यवहार करना, ये घोड़े इंसानी बोली को भली भांति समझते हैं। बस एक बात मेरी हमेशा याद रखना कि ये घोड़े किसी को कभी नहीं देना। सभी ने कहा-जी बड़ी मां हम आपकी सभी बातों का खयाल रखेंगे।
रानी मल्हना ने घोड़ों पर हाथ फिराकर कहा- आज से ये बच्चे मैं तुम्हें सौंपती हूं, इनकी रक्षा करना तुम्हारा काम है। सभी घोड़ों ने सिर हिलाकर उनका समर्थन किया और हिनहिनाकर राजकुमारों का अभिवादन किया। सभी घोड़ा पाकर खुश थे।
रानी मल्हना ने कहा....कल सुबह इन घोड़ों पर सवार होकर शिकार करने जाना और एक-एक हिरन मार कर लाना।
मलखान ने कहा- ओय पंडित, बता तेरा पत्रा क्या कहता है? ढेबा ने झट अपनी पोथी निकाली और देखकर बोला...हां कल का मुहूर्त अच्छा है। भइया ऊदल आप उत्तर दिशा के जंगल में नहीं जाना, वहां का योग अच्छा नहीं है। कोई न कोई झमेला होगा। ऊदल ने उसे चिढ़ाकर कहा-जी पंडित जी, झमेला ही पीछे पड़ जायेगा तो मैं क्या करूंगा? दूसरे दिन सभी शिकार पर गए।
आल्हा ने कहा .... कोई भी घने जंगल में नहीं जायेगा और ऊदल तुम हर समय हमारे आस पास रहोगे।
वन में बहुत देर से घूम रहे हैं, पर शिकार नहीं मिला, वह घने वन में आ गए तभी हिरनों का झुंड दिखा सभी उनके पीछे भागे, पर वो भी हिरन थे आसानी से हाथ कैसे आते? वे कुछ दूर तक पीछे भागकर रुक गए लेकिन ऊदल एक हिरन के पीछे भागा जा रहा था। वह कभी दिखता कभी छिपता, इस तरह ऊदल घने वन में आगे निकल गया। हिरन भी अपनी जान बचाकर भागता हुआ उरई राज्य की सीमा में चला गया और

बाग में घुस गया, यह बाग में अनार नारियल से लेकर काजू बादाम तक के फल लगे हुए थे। बेला, चंपा, चमेली, जूही, मोगरा, केवड़ा के फूलों से सारा बाग महक रहा था। ऊदल हिरन खोजता हुआ बाग में भाग रहा था घोड़ों की टापों से सारा बाग तहस-नहस हो गया था। जो बाकी बचा उसे ऊदल के भाले ने हिरन को तलाशने में मिटा दिया। यह देख माली मोटा डंडा लेकर आया और ललकार कर बोला.....ऐ बालक, तू ऐसे कैसे बाग में दाखिल हो गया? तू जानता नहीं यह बाग उरई के राजा माहिल का है। वह पकड़कर तेरी गत बना देंगे, सारी हेकड़ी भुला देंगे। ऊदल बचपन से माहिल के किस्से सुनता आ रहा था, सोचा मामा को कुछ पहचान दे जाऊं। उसने माली का डंडा छुड़ाकर उसे मार-मार कर लहूलुहान का दिया और बोला...कह देना अपने राजा से हम महोबा से उदयराय आये थे। हम जहां जाते हैं वहां तबाही आ जाती है।

रास्ते में घोड़ा पानी देख हिनहिनाया, तो ऊदल ने पास जाकर कहा...ऐ पनहारी, मेरे घोड़े को पानी पिला दो।

पनिहारी ने बालक जानकर ढिढोली करने के अंदाज में कहा.... ए नौजवान इतने अकड़ते काहे हो। हम माहिल राजा की राज पनिहारी हैं। हम राहगीरों को पानी नहीं पिलाती हैं। बारह साल का ऊदल बड़ा ही सुन्दर लगता था। वह घड़ा उठाकर जाने लगी।

ऊदल ने तीर चलाकर सभी घड़े फोड़ दिए और बोला....अपने राजा से कहना महोबा का ऊदल तुम्हारा नगर घूम के जा रहा है।

माली ने दरबार में जाकर रोते हुए राजा से सारा हाल सुनाया। माहिल के बदन में आग लग गई.... कल के लड़का आज इतने बड़े हो गए कि मेरे ही राज में आकर मेरा बाग उजाड़ गए। अब तो इस बात का बदला परमाले को चुकाना ही पड़ेगा। तभी पनिहारिनों ने आकर हाल बताया। माहिल ने फौरन ही एक पत्र लिखकर महोबा भेजा। हरकारे ने पत्र चंदेल राय को दिया।

वह पत्र पढ़ने लगे........चंदेला राय, अपने टुकड़ों पर, जो तुम बनाफरों के लड़का पाल रहे हो, वह कल तुमको ही मिटा कर रहेंगे, वह सब जगह से आपका बैर कराकर एक दिन महोबा को माटी में मिला देंगे। रांड़ के लड़का सांड़ ही होते हैं, जो किसी काम के नहीं होते, अभी भी समय है उन्हें महोबा से निकाल दो। ऊदल ने यहां आकर मेरी बगिया तहस-नहस कर डाली, माली को मारा, पनहारी के घड़ा फोड़े। अरे! इतने ही लड़ैया हैं, तो मांड़ो जाकर बाप का बदला क्यों नहीं लेते? बारह साल से खपरी टंगी हैं। बनाफरों से कह देना उरई की तरफ देखें भी ना, नहीं तो आंखें निकलवा लूंगा। ...माहिलराय !

चूंकि परमाले किसी तरह का बैर नहीं बढ़ाना चाहते थे इसलिए चुप रहे और ऊदल से मना किया कि वह कभी भी उरई न जाये। यह पाती वाली बात उन्होंने नहीं बताई क्योंकि वह जानते थे कि ऊदल अगर यह जान जायेगा तो फिर उसे जवाब देने पहुंच जायेगा। परन्तु ऐसी बातें कहां छिपती हैं एक माह बाद ऊदल को इस बात की भनक लग ही गई थी।

10- ऊदल का शिकार पर जाना

दो माह बाद ऊदल शिकार पर गया, वह शिकार का पीछा करता हुआ फिर उरई की ओर पहुंच गया। उसने सोचा मामा ने शिकायत तो कर दी है, तो जवाब देना चाहिए यही सोचकर वह उसी बाग में पहुंचा और बाग को घोड़ा से रौंदवा कर मिटा डाला। बाग के माली को मना करने पर बहुत पीटा। माहिल को खबर लगते ही उसने अपने बेटे अभई को कुछ सैनिकों के साथ भेजकर कहा......उस पाजी ऊदल को बांधकर मेरे सामने ले आओ। अभई सैनिकों सहित बाग में आके ललकार कर बोला....ऐ बनाफर, क्यों मरने के लिए बार-बार उरही में आते हो, लागत है आज तेरी मौत ही तुझे यहां खींच लाई है। अभई की बात सुन ऊदल ने घोड़ा बढ़ाया और अभई के बाजू से जाकर उसका हाथ पकड़कर ऐसा दांव मारा कि अभई को घोड़ा से खींच लिया, उसे मारने ही वाला था कि याद आया मामा का एक ही बेटा है वह रोता फिरेगा। सो उसका हाथ तोड़कर जमीन पर पटककर बोला- मैं जानता हूं मामा के तुम इकलौते बेटे हो मेरे भाई हो फिर भी मुझसे शत्रुता का व्यवहार करते हो। ऊदल को ललकारने वाला जिंदा नहीं बचता फिर भी नाते का लिहाज करके तुम्हें छोड़ रहा हूं। इसके बाद वह वापस आ गया।

तुरंत ही वैद्य को बुलाकर उसका उपचार कराकर उसे वैद्य की देखरेख में छोड़ कर चार पहर बाद क्रोधित माहिल सीधे महोबा पहुंचा और बंदगीकर बैठ गया। परमाल बोले...अरे उरई वाले, आओ बैठो, का हाल हैं, आपका बदन काहे गरमाय रहा है?

इतना सुनकर माहिल फट पड़ा और बोला.....महाराज, हमने आपका क्या बिगाड़ा है? आपका पाला कल का ऊदल हमारी फुलबगिया को उजाड़ आया, माली को पीट पीटकर मारा, अभई का हाथ उखाड़ दिया, हमारे राज में हमारी ही किरकिरी कर दी है। कहां है वो जोरावर ऊदल, बड़ा लड़ैया बना फिरता है। हम भी तो देखों वह कितना बड़ा योद्धा हो गया है। कितनी जवानी आय गई है।

परमाल सोचने लगे कि अगर इसकी गरमी भरी बातें ऊदल ने सुन ली तो अनर्थ हो जायेगा। इसलिए वह तुरंत ही बोले- .... अरे माहिल राय, शांत हो जाइए, लड़का है माफ कर दो, हम सारा नुकसान भर देंगे। अभई का हाथ भी ठीक करा देंगे।

अरे, ऐसे कैसे शांत हो जायें। वो ऊदल बड़ा लड़ैया है तो मांडो जाकर अपने बाप की मौत का बदला क्यों नहीं लेता, बाप की खोपड़ी आज भी मांडों के बीच चौक में लटक रही हैं। उसने खजाना लूटा, उससे लड़े; अरे जब करिंगा से सामना होगा तब पता चलेगा। उसने बाप को मारा अब लड़कों को खदेड़ खदेड़ मारेगा। माहिल के आने की खबर मिलते ही ऊदल दरबार में आया तभी उसके कानों में आवाज पड़ी, तो उसने पूछा...मामा, कौन से करिंगा की धौंस दे रहे हो। अरे किसने किसके बाप को मारा था?

परमाल ने कहा......कुछ नहीं बेटा, वो पौरीगढ़ में बहुत लड़ाई हुई थी वहीं पर तुम्हारे पिता वीर गति को प्राप्त हुए थे।

माहिल ने कहा....अरे हमसे क्या पूंछत हो, जाके अपनी माता से पूछों कि मेरे बाप को किसने मारा और उसने अभी तक चूड़ियां क्यों नहीं फोड़ी है? यह सुनकर ऊदल के चेहरे पर क्रोध की छाया फैल गई वह पसीने-पसीने होकर माता देवल के पास पहुंचा।

देवल ने पूछा.... अरे बेटा किससे गुस्सा होकर आये हो, ऊदल बोला...माता सही-सही बता कि मेरे पिता को किसने मारा था?

राजमाता... बेटा, जब जिसकी आ जाती है वह दस बहाने से चला जाता है। ऐसे ही तुम्हारे पिता युद्ध में वीरगति पा गए थे।
ऊदल बोला-अगर पिता वीरगति को प्राप्त हुए, तो आपने चूड़ी क्यों नहीं फोड़ीं? मां मुझे सच्चाई बता दे, ये करिंगा कौन है, माड़ो से क्या संबंध है? अगर सच नहीं बतायेगी तो मैं कटारी मारकर मौत बुला लूंगा और उसने कटारी गले पर रख ली।
राजमाता ने सोचा अब सच बताना ही पड़ेगा, अब मेरे बेटे सक्षम हो गए हैं कि वह बाप का बदला लें। रानी देवल दृढ़ निश्चय कर बोली.....ऊदल, तू सुनना चाहता है, तो सुन....तेरे पिता दस्सराज और काका बच्छराज बहुत बड़े शूरमा थे। उनकी वीरता के चर्चे बावनगढ़ में प्रसिद्ध थे। एक बार महोबा को लूटने आधी रात को मांड़ो का राजकुमार आया, उस समय फाटक पर तुम्हारे पिता-चाचा रात्रि विश्राम को रुके थे। तीनों ने मिलकर उन पांच हजार को मार भगाया, उसके बाद परमाले ने तुम्हारे पिता को गंगाजल हाथ में लेकर धर्म भाई बनाकर महोबा के राज में बराबर का हिस्सेदार बनाया था। सात साल बाद माहिल के सहयोग से छल करके, सभी को नशा पिलाकर आधी रात को चोरी से आकर, सोते में बंदी बना लिया, मेरे गले से नौलखा हार उतारा, तुम्हारे पिता का घोड़ा पपइया, हाथी पचशवद, राजनर्तकी लखापातुर सहित बहुत सा खजाना लूटा, साथ में तुम्हारे पिता और काका को भी ले गया। दोनों को मांड़ो ले जाकर उनके सिर काटकर महल के चौक में टंगवा दिए कि जिसकी मां ने सिंहा जन्मा हो तो आके ले जाये।
ऊदल का चेहरा लाल हो गया, बदन कांपने लगा, आंखों से अंगारे बरसने लगे। तलवार म्यान से बाहर निकालकर बोला- मैं इसी वक्त मांड़ो जाकर करिंगा का सिर काटकर अपने पिता का बदला लूंगा। देवल ने झकझोर कर कहा- ‘‘नहीं बेटा, यह समय जोश से काम लेने का नहीं है। सोच समझकर, रणनीति बनाकर, मुकाबला करने सभी भाई एक साथ जाना।
ऊदल बोला-मां, पर तूने मुझे यह बात अब तक क्यों नहीं बताई और फिर पिता की याद में मां से लिपटकर रोने लगा।
देवल ने कहा....नहीं उदल...वीर कभी आंसू नहीं बहाते। मैने करिया की चुनौती को स्वीकारा था। अब समय आ गया है कि मैं करिया को बता दूं कि देखो मैंने सिंहा जन्मा है और वह बारह साल बाद तुम्हारी लंका जलाने आ रहा है। मैंने बारह साल से अपने कलेजे में बदले की आग जला रखी है। अब उस आग से मैं उसकी लंका अपनी आंखों से जलते देखना चाहती हूं। बेटा, आज मैं अपने दूध का कर्ज मांगती हूं। तू अपने पिता, काका के सिरों को लाकर मुझे दे, ताकि मैं उनका मृतक संस्कार कर सकूं, उनके नाम की चूड़ियां तोड़ सकूं। उनकी भटकती आत्मा को शांत कर सकूं, जो बारह सालों से अपने बेटों के आने की बाट जोह रही है।
ऊदल नें क्रोध में कांपते हुए कहा....."मां मैं तेरे चरणों की सौगंध खाकर कहता हूँ, मांडो जाकर अपने पिता का बदला जरूर लूंगा और उस करिंगा को मार अपने पिता की आत्मा को शांति दूंगा। ‘‘राजमाता ने उसके सिर पर हाथ रखकर कहा...विजयी भव। माता भवानी तेरी रक्षा करें। अब तू जा, सभी को बताकर युद्ध की तैयारी कर। सबसे पहिले बड़ी मां से जाने की आज्ञा मांग। ऊदल हाथ में नंगी तलवार ले रानी मल्हना के महल में पहुंचा और उनके चरणों में तलवार रखकर बोला...बड़ी मां, मुझे मांड़ों के बारे में सब पता चल गया है। मैं मांडोगढ़ जाकर अपने पिता और काका का बदला लेना

चाहता हूं। आप मुझे आज्ञा दीजिए।
मल्हना ने कहा..... हां ऊदल, अब समय आ गया है कि तुम सब कुछ जानो समझों। इसके बाद उसके हाथ पर रक्षा कवच बांधकर तलवार उठा कर देते हुए कहा...मैं तुम्हें आज्ञा देती हूं कि मांड़ोगढ़ फतह कर युगों-युगों तक अपना नाम रोशन करो।

11-ऊदल और पिता का बदला

मल्हना से आज्ञा लेकर ऊदल दरबार में आकर आल्हा को सारी बात बताई कि हमारे पिता के साथ क्या-क्या हुआ। ऊदल की बातें सुनकर सभी के चेहरे सफेद हो गए कोई भी कुछ न बोला। ऊदल बोला.....दादा उठो, लड़ाई की तैयारी करो। हम माड़ोंगढ़ जाकर उस करिंगा के वंश का नाश कर देंगे। इस समय आल्हा की उमर है सोलह साल, पर वह समझदारी से निर्णय लेता है।
आल्हा ने कहा...मांडो से बदला लेना बच्चों का खेल नहीं है, अभी तुम्हारी उमर लड़ाई के लायक नहीं; अभी लड़ने जायेंगे, तो दादा की खोपड़ी के पास हमारी भी खोपड़ी टंगी नजर आयेंगी। हमें जोश से नहीं होश से काम लेना होगा। हम करिंगा से बदला जरूर लेंगे, पर योजना बनाकर। आल्हा की बात सुनकर ऊदल के बदन में आग लग गई। वह गरजकर बोला....दादा बोलो वचन संभार, बारह बरस के हम हो गए हैं। हम मरबे को नहीं डराय? क्षत्रिय की पहली सगाई युद्ध से होती है।
मलखान भी तलवार निकालकर बोला....दादा, हम समरथ हो गए हैं तुम महलों में बैठो। हम बाप का बदला लेंगे; ऊदल हम तुम्हारे साथ हैं, देखें कैसा करिंगा है? उसका सिर काट के महोबा में टांग दूंगा, मांडोगढ़ का किला खोद बीच से नर्मदा को बहा दूंगा।
परमाले ने कहा.....ऊदल, मांडोगढ़ फतह करना बालकों का खेल नहीं है। तुम्हारे पिता की मौत के बाद उसने अपनी सुरक्षा में किले के चारों तरफ फौलाद की दीवार बनवाई है, बड़ी बड़ी लौह सुरंगे छिपने को बनाई हैं। धार ताम्रलेख 1157ई. पता चलता है कि जयवर्मन के पुत्र कीरत वर्मन ने लोहानी गुफा, लौह दुर्ग और लौह दीवार का निर्माण कराया था। जादू टोना, तंत्र और शिलाजीत खा-खा कर उसने अपनी काया वज्र की कर ली है। कुंवर आल्हा की बात सत्य हैं। हमें सबर से काम लेना चाहिये।
ऊदल और मलखे एक दूसरे का हाथ पकड़ कर बोले .....अब तो हम गढ़माड़ो को फतह करने जरूर जायेंगे।
ऊदल ने कहा....काका तल्हन, आप तो हमारे साथ हो?
तल्हन ने कहा......बेटा जहां तुम्हारा पसीना गिरेगा वहां हमारा खून बहेगा। हमें तो इस दिन का कब से इंतजार था।
ऊदल ने कहा......काका, मांड़ो पर चढ़ाई की भूमिका तैयार करो। कैसे क्या करना है। सारी फौजों को तैयारी का आदेश दो। हम जल्दी से कुरियल बौनियाराय को भी खबर भिजाते हैं। बौनियाराय कुरियल का सरदार एक लुटेरा जाति का था, यही उसका मुख्य व्यवसाय था। यह बौना थे। इनकी ऊंचाई केवल तीन फुट थी, पर वीरता और चालाकी में वह बड़े बड़े सरदारों की बराबरी करता था। वह दीवालें चढ़ने में माहिर, जमीन के भीतर सुरंग खोदने में उस्ताद, कठ काठी छोटी होने के कारण वह कहीं भी चढ़ जाता था, छुप जाता, जादू भी जानता था। उसके पास दीवाल पर चिपकने वाली 'गुआ' नामक जानवर थे। आल्हा ऊदल का उस पर बरदहस्त था। वैसे सभी राजा कीमत देकर उसकी सेवायें लेते थे, जीत के बाद बाजारों में बोना सेना जमकर लूट करती, यही मेहनताना था।
मलखान ने ढेबा से कहा....अब तू मेरा मुंह क्यों ताक रहा है? जल्दी से अपनी पोथी निकाल कर साइत बता।

ढेबा ने अपनी पोथी निकाल बताया......मांड़ो, पर इस समय शनीश्चर की दशा चल रही है, केतु भी बक्री है। राहु की महादशा चल रही है महा भयंकर जोगनी की दशा चल रही है। कुल मिला कर सर्वनाश के आसार हैं। इससे अच्छा शगुन नही हो सकता। तुम्हारी मांड़ो पर विजय होगी। बस एक उपाय करना होगा, तो मलखान बोला.......वो भी जल्दी बता दो?

ढेबा ने कहा.....जोगी का रूप बनाकर मांड़ो गढ़ में प्रवेश करो, वहां का भेद जानो। बस तुम्हारे सब काम सिद्ध होंगे।

आल्हा बोला... ये बात ठीक है, जब तक दुश्मन की शक्ति का उचित आकलन ना हो उस पर वार नहीं करना चाहिये। जब सबने निर्णय ले लिया, तो हम जोगी बनकर वहां प्रवेश करेंगे, सारा भेद लेके, दुश्मन की कमजोरी समझ के फिर योजनाबद्ध तरीके से चढ़ाई करेंगे। इस युद्ध में ब्रह्मा, त्रिलोक और सुलखे नहीं जायेंगे वह महोबा में रहकर यहां की व्यवस्था देखेंगे।

ब्रह्मा ने गरज कर कहा....दादा, मैं आपका ये हुक्म नहीं मान सकता; मेरा मत ऊदल के साथ है। मैं करिया से दो-दो हाथ करने अवश्य जाऊंगा। यह मेरा प्रण है। हां सुलखे और त्रिलोक महोबा मे ही रहेंगे। ....जल्दी ही जोगिया थान मंगाकर पांच गुदड़ी बन गईं। हीरा, मोती, मूंगा पन्ना सभी रत्न और हथियार गुदड़ी की सात परतों के अन्दर हथियार छिपा लिए गए। गुदड़ी पहनकर, आल्हा, उदल, मलखान, ब्रह्मा और तल्हन जोगी बन गए। उनके कानों में कुंडल, एक हाथ में कमंडल और दूसरे हाथ में रुद्राक्ष की माला थी। मुख पर अलख निरंजन का नारा। आल्हा ने डमरू, ऊदल ने बांसुरी, मलखान ने इकतारा, ढेबा ने खंजरी और तल्हन ने सारंगी ले ली, तो मलखान बोला... अब हम सबसे पहिले अपनी जन्म दायिनी माता के पास जायेंगे। अगर वो नहीं पहचानी, तो फिर कोई नहीं पहचानेगा। इसके अलावा माता से आज्ञा भी लेना है। सभी ने महल में जाकर अलख निरंजन का नारा लगाया। मल्हना और दिवला दोनों दरवाजे पर आकर बोलीं ... हे जोगी तुम कौन से देश से आ रहे हो और कहां को जा रहे हो?

ऊदल बोला....हे माता आपके सामने आपके ही बेटे खड़े हैं; मांडो बदला लेने जा रहे हैं। बस आपसे आज्ञा लेने आये हैं।

दोनों ने आरती उतारकर विजय तिलक किया, भुजाओं का पूजन किया, फिर मल्हना ने पूछा...बेटा ऊदल अब कब मिलोगे?

ऊदल ने कहा.... माता एक मास में मांड़ो फतह करके, दूसरे मास आपके दर्शन करूंगा। मल्हना बोली-विजयी भव।

देवल ने कहा... बेटा, मैं भी चलूंगी। मैं करिया को मार तो न सकी, पर उसे मरते हुए तो देख सकती हूं। वहीं अवन्तिका जाकर महाकाल के दर्शन भी कर लूंगी... तो आल्हा घबराकर बोला....मां वह लड़ाई का मैदान है, वहां पर बहुत से कष्ट मिलेंगे।

बेटा, मैं एक वीर क्षत्राणी हूं, मैंने भी युद्ध का अभ्यास किया है, आज भी तलवार के दो-दो हाथ कर सकती हूं। तू मुझे कष्टों की याद मत दिला। देवल ने ऊदल की बांह पकड़ कहा.....मेरा ऊदल मुझे मांड़ो के करिंगा की मौत दिखाकर, मेरे कलेजे में लगी बारह बरस की आग बुझायेगा। यह सुन ऊदल बोला-हम आपकी यह इच्छा अवश्य पूरी करेंगे। मां हमारे साथ ही चलेंगी।

‘‘बस, अभी आये!" कहकर देवल अन्दर चली गयीं, फिर वापस आकर बोली चलो....सभी उसे देखकर चौंक जाते हैं। वह एक सैनिक के वेश में हाथ में दस्सराज की

तलवार लिए खड़ी थी। ऊदल गर्व से बोला......अब आप आल्हा-ऊदल जैसे बेटों की मां लग रहीं है।
रानी मल्हना ने देवल के बाजू पूजकर कहा.....जा बहना, अपने मन की ज्वाला शांतकर विजयी होकर जल्दी वापस आ।
मैदान में सैनिकों की तैयारी और उत्साह देखते बनता है। चारों ओर हथियारों की झंकार सुनाई दे रही है। हाथी दरोगा ने ...दुंईदंता, इकदंता, गजराज, गिरिराज, मुकुन्दी, मोतिया, भूरा, और कजली वन के हाथी हौदा बांध कर तैयार हो गए। घोड़ा वाले ने...कच्छी, मच्छी, मुसकी, ढोला, डमरू, लक्खा, हरियल, पंचरंगा काले घोड़ा, सफेद घोड़ा, बरदिया घोड़ा तथा दरियाई घोड़ा रकाबें कस कर तैयार कर लिये। दूर-दूर तक घुड़सवार ही नजर आ रहे हैं। पैदल सिपाही भी तैयार हो गए। सभी केसरिया पोशाक में हैं। सबके सिर पर पगड़ी है और तुर्रा ऊपर को निकला है। सारी सेना सजकर आदेश की प्रतीक्षा में है। तभी बेंदुला घोड़े पर सवार ऊदल वहां आये, चारों ओर नजर घुमाकर अपनी सेना को निहारा। फिर प्रसन्न मन से ऊदल ने सारी सेना को संबोधित कर कहा..... ‘‘प्रिय सैनिकों, अब वक्त आ गया है कि हम अपनी मातृ-भूमि की रक्षा की कसम खायें और महोबा के वीरों की वीरता पर लगा कलंक, कि करिया जैसा चूहा चोरी से आकर हमारे राजा को उठा ले गया। उसको धो डालें और सारे संसार को बता दें कि महोबा वीरों की धरती है। आप सभी मेरे भाई हो रण में भाई ही साथ देता है। आप सभी के परिवार की जिम्मेदारी हमारी है। आज आप सभी के साथ की हमको जरूरत है। हमारी एकता हमारी ताकत है। हम सब मांड़ो को फतह करके आयेंगे। वापस आने पर सभी को बहुत सा इनाम दिया जायेगा। जिसको कुछ भी शंका हो या जान प्यारी हो वह वापस जा सकता है।
सभी सिपाहियों ने कहा... हम मरते दम तक लड़ेगे और आपके साथ रहेगे। जय-जय भवानी के नारे से महोबा गूंज उठा।
आल्हा, ऊदल, मलखे, ब्रह्मा, और तल्हन सभी मां चंडिका और मनियादेव के दरबार में जाकर माता का पूजन करते हैं। विजयी होने का आशीर्वाद मांगते हैं। पांचों परमाले से बोले.....महाराज, आप हमें युद्ध नीति की शिक्षा देकर अपना आशीर्वाद दीजिए।
महाराज ने कहा...बेटा, जम्बैराज, उसके लड़का करिंगा, अनूपी, सरजू बड़े लड़ाका हैं। लौहदुर्ग विजय लोहे के चने चबाना है।
ऊदल ने तमतमा कर कहा...महाराज हम लड़ेगे या मरेंगे, अब पीछे हटना मुश्किल है। अगर जीवित बचेंगे, तो फिर मिलेंगे।
परमाले ने कहा..... बेटा ऊदल, रण में हमेशा अपने क्रोध पर काबू रखना ठंढे दिमाग से सोच समझकर चाल चलना। .जो युद्ध रीति, नीति, युक्ति, और ईमानदारी से लड़े जाते हैं, वह हमेशा जीते जाते हैं। तुम सब इन बातों का घ्यान रखना.....
पहली चोट कभी न करना, न निर्बल पर करना वार। तिरियन पर न हाथ उठाना, न शस्त्रहीन पर करे प्रहार।
बूढ़े बालक कभी न मारे, न भगते के पीछे जाय। सब क्षत्रियों का यही धर्म है, मानो रणभूमि के माहि।
आल्हा..दादा महाराज, हम इन बातों का पालन करेंगे। उसके बाद ब्रह्मा ने शंख बजाकर कूच का एलान किया। रात दिन सफर करके सातवें दिन फौजें घने वन में पहुंचीं, जो कई कोसों तक फैला हुआ है। युद्ध अभ्यास में गुरुजी ने इस वन के बारे में बताया था।

इसमें महीनों तक छिपे रहने के लिए बड़ी-बड़ी खोहें है। खाने पीने के लिए भरपूर फल और नर्मदा का जल हैं।
सभी ने बीच जंगल में बसेरा किया और अपने को गुप्त रखा। उसके बाद आल्हा ऊदल रानी दिवला महाकाल भगवान के दर्शन को जाते हैं। रानी मां वहां पर बहुत सा दान पुण्य करके आपने सभी बच्चों की करिया से सलामती की दुआ और मांडौगढ़पर विजय मांगी। उसके बाद वापस आकर आल्हा ने कहा...ब्रह्मा तुम यहीं रहकर सारी सेना की देखभाल करोगे। हम वेश बदल कर वहां का भेद लेने जाते हैं। यह मालवा का इलाका है बहुत होशियारी से रहना। जी दादा आप अपना ध्यान रखना। ब्रहम ने कहा

12-आल्हा-ऊदल का जोगी बन मांडोगढ़ जाना

मांड़ोगढ़ उस समय मध्य भारत का एक सशक्त राज्य था, जहां 12वीं शताव्दी में परमार वंशीय जयवर्मन का राज्य था। यह राजा ये धार के राजामुंज और भोज के वंशज थे। जयवर्मन ने 1142 से 1160ई. तक राज्य किया है जिसे आल्हा गायकों ने जंबेराय कहा है, उसका पुत्र कीरतवर्मन् था, बहुत सांवला रंग होने के कारण उसे आल्हा में करिया या करिंगाराय कहा है। मांड़ो का फौलादी किला उस समय अजेय माना जाता था। दस्सराज और बच्छराज को मारने के बाद करिंगा को सोते जगते बनाफरों से डर लगता रहता था। इसलिए उसने अपनी सुरक्षा के लिये लोहानी गुफा का निर्माण कराया था और दुर्ग के चारों ओर लौहानी दीवार बनवाई थी। इस बात का उल्लेख उज्जैनी ताम्रपत्र 1157ई. से मिलता है। राजकुमार करिंगा क्रोधी और लड़ाका था।
वह पांचों जोगी बनकर मांड़ो के किला के फाटक पर पहुंचे, पहरेदार ने पूछा......ऐ जोगी बाबा, कहां से आये हो?
तल्हन ने अपना चिमटा बजाकर नारा लगाया अलख निरंजन। आल्हा ने कहा... बच्चा, हम बंगाले के रहने वाले, कजली वन के वासी हैं। नगरी-नगरी घूम-घूम कर, हिंगलाज दर्शन के अभिलाषी हैं। फाटक जल्दी खोलो। हम विश्राम करना चाहते हैं।
पहरेदार ने कहा... बाबा जी, आप तनिक इंतजार करिए सामने ही हमारे राजकुमार आ रहे हैं, हम उनसे आज्ञा ले के द्वार खोलते हैं। दरबान ने अनूपराज से कहा... महाराज पांच पहुंचे हुए, चमत्कारी जोगी आये हुए हैं, जो नगर में आने की आज्ञा चाहते हैं।
सामने अनूपराज को देखकर आल्हा ने सोचा इससे रामजुहार करना पड़ेगी, पर दुश्मन से कैसी रामजुहार? इसी कारण बांये हाथ से अभिवादन किया। यह देख अनूपराज चिल्लाया...इस बेअदब जोगी को मेरी नजर से दूर करो। यह बायें हाथ से बंदगी करता है।
ऊदल ने गरजकर कहा....हम जोगी हैं, दायें हाथ से माला फेरेंगे, तो बांये से ही बंदगी करेंगे। अन्यथा योग खंडित हो जायेगा।
अनूपराज ने कहा...अभी तो तुम्हारे दूध के दांत भी नहीं टूटे हैं; तुमने क्यों जोग ले लिया है?
ऊदल ने कहा... महाराज, जोग लेना ना लेना हमारे हाथ नहीं; वह सब तकदीर का लिखा है।
तभी कोतवाल बोला..ये अघोरी भी हो सकते हैं। बंगाली जोगी जादू की विद्या के माहिर होते हैं, इनको गुस्सा करना ठीक नहीं है।
राजकुमार.. हां हां, जाओ! अब तक सम्मोहन का असर हो चुका था। अब वह जोगी मांडो का मुआइना करते हुए बाजार, चौक गली कूचे में बांसुरी बजाते घूम रहे हैं। सभी उनके सम्मोहन से मोहित हो रहे हैं। कुंए पर पनिहारी पानी भरना छोड़ देख रही है। दासी ने महल में जाकर रानी कुशला से बताया ऐसे पहुंचे हुए ज्ञाता जोगी आये हैं, सारा नगर जय जय कार कर रहा है।
रानी बोली....जल्दी से बुला ला,हम भी दर्शन कर लें।
दासी ने प्रणामकर कहा..जोगी राज, हमारी महारानी आप सभी के दर्शन करना चाहती हैं, आप महलों में पधारने की कृपा करें।

आल्हा ने कहा.... चल बच्चा हमारे लिए क्या महल, क्या कुटिया? क्या बाल्टी, क्या लुटिया? सब बराबर हैं। सभी चल दिए।
महल के मुख्य दरवाजे पर आकर बांदी बोली..."मैं खबर करके आती हूं, तब तक आल्हा ऊदल की नजर सामने बरगद के पेड़ पर लटकती दो बहुत पुरानी सी खोपड़ी पर पड़ी, वह समझ गए कि ये मेरे पिता और काका की हैं। उसकी आंखों में क्रोध की ज्वाला दिखने लगी, उसके मसल फूलने पिचकने लगे, बदन मारे क्रोध के कांपने लगा। आल्हा का हाल भी यही था, पर उसने अपने को सँभाल रखा था। वह जानता था कि अभी वह दुश्मन के किले में है जरा सी भी लापरवाही खतरनाक हो सकती है। ऊदल म्यान से तलवार निकालने लगा तो तल्हन और आल्हा ने उसे पकड़ा और कहा, ऊदल अपने को सँभालों ये उचित समय नहीं है।
बांदी ने वापस आकर कहा...चलो! तभी उसने ऊदल का चेहरा क्रोध से लाल देखा, तो चौंक कर बोली इन जोगी को क्या हुआ है?
मलखे ने कहा....कुछ नहीं, यहां पर प्रेत आत्माओं का वास है। यह जोगी उन्हीं से बात कर रहा था। बांदी ने चलते-चलते कहा....हां, बरगद में ये बनाफर राजा दस्सराज, बच्छराज की खोपड़ी टंगी है। उनका क्रिया कर्म नहीं हुआ, तो उनकी आत्मा भटक रही होगी? अब तक वह महल में पहुंच गए। चारों ओर उसकी भव्यता झलक रही है। परदे की ओट से रानी कुशला बैठ्ी थीं। उनके गले में पड़े नौलखा हार को आल्हा ने पहचान लिया। जोगियों ने राग भैरवी में सूफी भजन शुरू दिया। ऊदल ने कुछ मटक-मटक कर अपनी बांसुरी बजाकर सबको सम्मोहन मंत्र से बांध लिया तभी रानी ने पूछा...योगी, कहां से आये हो कहां की तैयारी है?
ऊदल बोला... हम जोगी हैं बंगाल के, बोधनाथ जी गुरू हमार। हम सब माता के दर्शन को, हिंगलाज रहे हैं जाय।।
रानी बोली....आप से प्रार्थना है कि आप चौमासा यही व्यतीत करें। आप जैसे जोगी यहां रहेंगे, तो राज में सुख चैन सुरक्षा रहेगी।
मलखान बोला-अलखनिरंजन, तोड़ माया के बंधन ! नहीं रानी जी, रमता जोगी बहता पानी का कोई ठिकाना नहीं होता। आज हम आपके महल में हैं, कल दूसरी जगह चले जायेंगे। रानी ने थाल भर कर मोती और जवाहरात दिए।
आल्हा ने कहा....महारानी जी, हम जोगियों को इन मोतियों से क्या काम? आप अपनी कुछ प्रिय वस्तु हमको दीजिए, ताकि हम याद रख सकें। दे सकें तो, अपने गले का हार दान दे दीजिए, ताकि हम आपकी उदारता दिल्ली की रानी को बता सकें।
रानी कुशला ने सोचा कि वैसे भी यह लूट का हार है। जोगियों को देकर कुछ पुण्य ही मिलेगा और हार उतार कर दे दिया।
जोगी....महारानी, मां भवानी आपकी सभी कामना पूर्ण करेगी, तब तक राजकुमारी बिजमा भी वहीं आ जाती है, उसे देख रानी ने कहा- आ बेटी, आशीर्वाद ले ले। उसने सभी जोगियों को गौर से देखा और ऊदल से नजर मिलते ही नजरें उलझ गई। दोनों ही एक दूसरे को देखते रह गए, मलखे ने ऊदल को कुहनी मारकर इशारा किया। ऊदल सचेत होकर बैठ गया। कुछ देर बाद जोगी उठ खड़े हुए, बिजमा भी चली गई। उसने अपनी दासी से कहा कि बांसुरी वाले जोगी को जल्दी से बुला ला, पर किसी को पता ना चाहिए। अभी जोगी अंदर ही थे कि दासी ने ऊदल से कहा....आप हमारे साथ चलिए, आपको राजकुमारी जी बुला रहीं हैं। ऊदल उसके साथ चला गया। उदल को अंदरकर

वह दरवाजे पर पहरा देने लगी। सभी जोगी चौक पर उसका इंतजार करते हैं।
राजकुमारी ने ऊदल का स्वागत कर चौकी पर बिठाकर कहा.....आइए महोबा के राजकुमार उदयराज, आपका स्वागत है।
ऊदल बोला....राजकुमारी जी कहां राजा, कहां जोगी? आप मेरी हंसी उड़ा रही हैं।
नहीं राजकुमार हम सच कह रहे हैं, आप उदय राज ही हो। आपने तो पहली ही नजर में हमें घायल कर दिया।
हो सकता है हमारी शक्ल ऊदल से मिलती हो, पर आपने ऊदल को कहां देखा?
देखिए राजकुमार बातें बनाना बंद करो! हमने महल के छज्जे से आपको अपने पिता के सिर देखकर क्रोधित होते देख लिया था। तभी आपके साथी ने आपका नाम लिया था। हमने बचपन से आपकी बहादुरी के चर्चे सुने हैं। आपने पहली ही नजर में हमें घायल कर दिया; हमने उसी नजर में आपको अपना मानकर प्रण ले लिया है कि आप से ही शादी करुंगी। इसलिए तुम ऊदल ही हो अपना भेद सही बताओ नही तो हम बांदी को बुलाते हैं। ऊदल ने तुरंत पैंतरा बदलकर कहा....राजकुमारी जी, आपने सही पहचाना। हमने ये जोगी रूप आपको खोजने के लिए ही बनाया है। कहां-कहां नहीं आपको ढूंढा, एक साल से घूम रहे हैं, अब जाकर मिलना हुआ। अपने पता ठिकाना बताया नहीं, बस सपनों में यही सुन्दर रुप देखते रहे और उसी की तलाश में जोगी बन गए।
बिजमा ने ऊदल का हाथ पकड़कर उसकी आंखें में आंखे डालकर कहा... आप सच कह रहे हो, तो हम अभी गंधर्व विवाह कर लेते हैं। आंखों में आंखें डालते ही ऊदल सम्मोहन चलाकर बोला....नहीं प्रिये, हम अपना ब्याह चोरी से नहीं करेंगे। हमने आपसे प्रेम किया है। आपको सम्मान के साथ भांवर डालकर ले जायेंगे। हम क्षत्रिय हैं बारात लेके आयेंगे और आपको जीतकर ले जायेंगे। बिजमा ने उसकी आंखों में खोते हुए कहा-आप इस किले को कभी नहीं जीत पायेंगे।
ऊदल ने उसकी आंखों में झांक कर कहा....जब आप हमारे साथ हैं, तो हम ये किला क्या इंद्र का दरबार भी जीत लेंगे।
बिजमा बोली .... हम आपको ये सब क्यों बतायेंगे आपका क्या भरोसा?
ऊदल बोला....हमने तो आप पर भरोसा कर लिया। अब आप बताइए हम क्या करें कि आप को हम पर भरोसा हो जाये।
आपको गंगाजल हाथ में लेकर हमको वचन देना होगा कि आप मुझसे ब्याह करेंगे। बिजमा ने कहा
गंगाजल हाथ में लेकर उसने कहा....मैं बनाफर वंशीय राजकुमार वचन देता हूं कि मांड़ो फतह करके राजकुमारी से ब्याह करूंगा।
राजकुमारी ने कहा...लौह दुर्ग इतना मजबूत है कि उसे तुम्हारी सेना के हाथी नहीं तोड़ सकते। यह किला सात परकोटों के अंदर बना है। किले के अंदर जाने का एक रास्ता धारनगरी के वन से लेकर एक बड़ी सुरंग से है। भैया उसी से बाहर जाते हैं। दूसरा रास्ता नगरकोट के तीसरे फाटक के पास बनी तीसरी कोठरी के भीतर से है, जो रंगमहल के बीचों बीच आकर सरजराय भैया के सिंहासन के पीछे खुलता है। इन दो रास्तों के अलावा फिर सामने के फाटक हैं जिन पर कड़ा पहरा रहता है। वहां से आना नामुमकिन है। इसके अलावा और भी जानकारी बिजमा से ले कर ऊदल ने कहा...अब हम चलते हैं आप हमारे बारात लेकर आने का इंतजार कीजिए। बिजमा ने ऊदल को गले लगा कर विदाई देकर कहा.... हम आपका इंतजार करेंगे।

ऊदल बाहर आ गया जहां पर बाकी जोगी उसका इंतजार कर रहे थे। ऊदल को देख कर सभी के चेहरे खिल जाते हैं।
मलखान ने पूछा...क्या हुआ कुछ काम बना? ऊदल बोला....राजकुमारी ने हमारी बातें सुन ली थी, वह हमें पहचान गई है, पर मेरे संग ब्याह का प्रस्ताव रखकर भेद बताने को राजी हो गई, तब हमने भी गंगा तुलसी करके उससे मांड़ो का भेद ले लिया।
आल्हा ने गरज कर कहा....उदल, अकल से काम लो। दुश्मन की बेटी से तुम ब्याह कैसे कर सकते हो?
मलखान ने बीच-बचाव करते हुए कहा....दादा, अभी ब्याह नहीं होने वाला, बदला लेने आये हैं, तो किसी तरह बदला लेके जायेंगे। उसके लिए साम, दाम, दंड, भेद सब जरूरी है। इसके बाद वह सब लौहदुर्ग देखने गए फिर वह राजदरबार को चल दिए दरबान से कहा...महाराज, से कहो जोगी दर्शन करना चाहते हैं। महाराज की आज्ञा पा जोगी दरबार में जाते हैं। जंबेराय का दरबार सजा है। बड़े-बड़े सरदार, सूरमा बैठे हैं। जोगियों ने दरबार में जाकर अलख जगाई, जोगियों को देखकर जम्बे राज चौंका; ये कैसे जोगी हैं जिनका रूप राजकुमारों सा है। उसने पूछा ....ये गुदड़ी तुमने कहां से बनावाई जिसमें इतने मंहगे रत्न जड़े हैं।
ऊदल बोला...महाराज, गढकनवज के राजा जयचंद के दरबार में गए थे उन्हीं ने ये गुदड़ी भेंट की हैं।
करिंगा राजकुमार ने कहा....अब हमको भी वही सुनाओ जो कनवज में सुनाया था। हम देखें उसमें क्या था।
जी महाराज, कहकर उन पांचों ने गाना शुरू किया। सबसे पहले तो उन्होंने अपना सम्मोहन मंत्र फूंका फिर सूफिया अंदाज में निर्गुणी भजन सुनाया फिर अन्य राग रागिनी सुनाकर राजा का मन मोह लिया। ऊदल की बांसुरी और गंधर्व नृत्य ने सभी का मन मोहा। जब ऊदल नृत्य दिखाता था, तो सभी की सांसें रुक जाती थीं। राजा करिंगा के मुंह से वाह-वाह निकल रही थी। सभी दरबारी झूम उठे। करिंगा ने अपनी कलगी उतारकर ऊदल के माथे पर पहना दी। ऊदल को लगा मानों, राजमुकुट पहना दिया हो। मौका देखकर ऊदल बोला... महाराज, आपका दिया हमें शिरोधार्य है, पर एक इच्छा है! कनवज में तारीफ सुनी थी कि आपके दरबार में लाखापातुर नर्तकी अप्सराओं की तरह नृत्य में प्रवीण है। उसके नृत्य पर संगत करने वाला अभी तक कोई परिपूर्ण नहीं है; हम ठहरे कला के पुजारी...; हो सकेगा तो उससे कुछ सीख लेंगे और उसके साथ संगत देना चाहेंगे।
मलखान ने कहा... ऊदल, होश में रहकर बात कर, हम जोगी हैं, हमें नाच से क्या काम?
आल्हा ने कहा.....हम दुश्मन के दरबार में बैठे हैं। ऊदल, ऐसा कुछ मत करना कि उसे शंका हो जाये।
तल्हन ने कहा ... महाराज, बालक है अभी नादान है। राजदरबार के नियम कायदे से अनजान है। क्षमा करना।
सभी सोच रहे थे कि अब जंबेराय क्या कहेगा, तभी जंबे ने हंसकर कहा.... इस छोटे बालक की यह इच्छा हम अवश्य पूरी करेंगे। जाओ, लाखापातुर को दरबार में आने का हुकुम दो। कुछ ही समय में लाखापातुर दरबार में आ गई।
करिंगा ने कहा.....संगीत की सभी कलाओं में पारंगत ये जोगी आपका नृत्य देखना चाहते हैं। ये छोटा जोगी तुम्हारे नृत्य पर संगत देना चाहता है। इन्हें ऐसा नृत्य दिखाओ

कि ये कभी न भूलें। लाखा ने हाथ जोड़कर जोगी को प्रणाम किया और नृत्य आरंभ किया।
मलखान ने उसके नृत्य पर ठुमरी और राग भैरवी गायी दोनों के संयोग से ऐसा समां बंधा कि सब अपनी सुध-बुध भूल गए।
ऊदल ने आल्हा से कहा...दादा, ये हमारी राजनर्तकी है। हम उसे नौलखा दे के बता दें कि महोबा वाले आ गए हैं।
आल्हा ने सख्ती से मनाकर कहा....ऊदल बचपना मत करो, भेद खुल गया तो अभी सबको कैद करा लिया जायेगा। अभी शुरूआत है, आगे बहुत लड़ाई है। बहुत देर हो गई जल्दी ही यहां से बाहर निकलो। ऊदल ने आल्हा की बात अनसुनी करके, नौलखा हार चुपके से लाखा को पहना दिया। हार देख चौंक गई। वह गौर से उन सबको देखने लगी और नाचते-नाचते सोचने लगी कि महोबा के लड़का समर्थ हो गए हैं और बदला लेने आ गए हैं। उसने झट से हार कपड़ों में छिपा लिया। वह नाचते हुए बोली....हमने जान लिया कि महोबा वाले आ गए हैं। बदला ले के हमें यहां से ले जाओ, पर अभी दरबार से निकल जाओ। करिंगा बहुत जल्लाद है।
वे सब जोगी अलख निरंजन का नारा लगाते हुए दरबार से वापस निकल गए, किसी को पता नहीं चला सब नाच देखते रहे।
लाखा का आंचल उड़ा और जम्बे की नजर पड़ी। वह बोला...ऐ लाखा, ये नौलखा हार तुम्हारे पास कैसे? यह तो महारानी के पास था। लाखा जानती थी कि झूठ बोलकर नहीं बच सकते, इसलिए बोली-.महाराज यह हार तो हमें जोगी दे गए हैं। ये उनका है।
जम्बेराज ने कहा......राजकुमार हमें विश्वास है कि ये हार महोबा वाला है। सैनिक भेजकर शीघ्र ही रानी से नौलखा हार मंगवाओ। ...सरजूराय, जाकर रानी से बोला.... महाराज ने नौलखा हार मंगाया है। माता कृपा कर जल्दी से वह हार दे दीजिए।
रानी बोली... महाराज को हार की क्या जरुरत पड़ गई? वह हार हमें बहुत पसंद है हम उसे किसी को नहीं देंगे।
उसने कहा...वह हार केवल हम सब देखना चाहते हैं। पता नहीं कैसे मेरी मति मारी गई थी? मैं उन जोगियों की बातों में आकर हार दे बैठी। वह बोली.....बेटा सरजू, हार हमारे पास नहीं है। पांच जोगी द्वारे पे भिक्षा मांगने आये थे हमने हार उनको दे दिया।
सरजूराय वापस आकर बोला.....आपका शक सही है। वह हार मां ने उन जोगियों को ही दिया था।
जम्बे..वह जोगी नहीं, कहीं के राजकुमार थे, जो भेद लेने आये थे। जाओ पकड़ो, वह भेद लेकर मांडो से बाहर न जा पायें।
सरजूराय ने कहा....हम अभी उनको पकड़ते हैं। वह रास्ते में जोगियों को देख रहा है, काफी दूर जाने पर वह दिखे, उसने पास जाकर कहा...जोगी बाबा, आप सभी को महाराज ने बुलाया है। वह आप सभी का भजन फिर से सुनना चाहते हैं। सरजूराय को देखकर ही आल्हा समझ गया कि गड़बड़ हो गई है। उसने धीरे से उदल से कहा...लो आ गयी मुसीबत, होशियार रहना।
मलखान बोला....नहीं बच्चा हमारे गुरु का आदेश है, आगे बढ़कर पीछे नहीं लौटना। अब हम वापस दरबार नहीं जा सकते।
सरजूराय बोला....आप एक बार चलिए तो आपको इतनी धनराशि दी जायेगी कि सात पीढ़ी तक को मांगने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

बच्चा, हम माया के लोभी नहीं, ये संसारिक माया हमारे किसी काम की नहीं, जो मिला हम उससे खुश हैं। मलखान ने कहा
जोगी बाबा आपको चलना पड़ेगा! यह राजआज्ञा हैं और आप राजा की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकते। उसने कहा
आल्हा ने कहा.....हम पृथ्वी पर राज्य करने वाले किसी राजा की आज्ञा नहीं मानते। हम बैरागियों के ऊपर तो एक ही राजा का राज चलता है, वो है ऊपर वाला और वह आगे चल दिये। अब सरजूराय ने म्यान से तलवार खींच कर कहा...आप मुझे मजबूर मत करिए। मैं राज आज्ञा से बंधा हूं इसलिए मुझे आपको साथ लेकर ही जाना पड़ेगा। कृपया आप मेरे साथ चलिए।
ऊदल ने तलवार देख कहा.....ये तलवार का डर किसे दिखाते हो? तलवार चलाना हमें भी आता है। हम सब अघोर पंथी हैं। अपने मन के मालिक होते हैं, बहुत देर से तुम्हारी बकवास सुने जा रहे हैं। तुम हमें हुक्म देने वाले होते कौन हो? हम अपनी पर आ जायें तो एक पल में मांड़ो में प्रलय बुला दें और उसने अपनी तलवार खींच ली। ऊदल को देख सभी ने तलवारें खींच लीं, अब वह समझ गया कि ये कोई राजकुमार हैं, उसने सोचा अब इनको साथ ले जाना संभव नहीं है। न ही अकेले लड़ा जा सकता है, सो प्रकट में बोला....जोगी बाबा आप नाराज मत होइए। ना ही श्राप दीजिए। मैं महाराज को समझा दूंगा और वह पलटकर चला गया।
आल्हा.... अब हमें शीघ्र ही फाटक से बाहर हो जाना चाहिए, वह वापस आकर हमें घेरेगा। अभी अकेला था इसलिए चला गया।
सरजूराय...महाराज, वो जोगी नहीं आये। वो तो तलवार लेकर लड़ने को तैयार थे। मैं सेना ले जाकर उनको बांधकर लाता हूं।
जंबेराय ने कहा.....अब वे हाथ आने वाले नहीं, मोर्चा सँभालने को तैयार रहो। वो कभी भी अपनी सेना लेकर आ सकते हैं।
तभी सैनिक ने कहा...महाराज, अइयार रमैया दर्शन की इजाजत चाहते हैं। महाराज बोले- उनको आने दो।
रामैया ने कहा....महाराज महोबा की विशाल सेना धार के पास कंटीले वन में डेरा डाले है। कभी भी नर्मदा पारकर आ सकती है।
ठीक है, तुम जा सकते हो। उनकी गतिविधियों पर नजर रखो और सूचना देते रहो। महाराज ने कहा
ज्ांबेराय ने कहा.....महोबा वाले अपने बाप का बदला लेने आ गए, उनके मन में बारह बरस से बदले की आग जल रही है। अब सांप की बांबी में हाथ डाला है, तो उससे डसाने को भी तैयार रहो। सुना है महोबा वाले बड़े लड़ैया हैं; उनसे पार पाना कठिन है।
करिंगा ने कहा... महाराज आप हमारा मनोबल गिरा रहे हो। वो अगर लड़ने वाले हैं, तो हमने भी चूड़ियां नहीं पहनी है। सबको बंदी बना कर उनकी भी खोपड़ियां उनके बाप के बगल में लटका देंगे।
जंबेराय....तुम भूल रहे हो इनके पास लड़ाई का मकसद है, जो युद्ध मकसद को लेकर लड़े जाते हैं, वह हमेशा जीते जाते हैं।
करिंगा....अब कुछ उपाय नहीं, कल अनूपराय और तुम सेना लेकर जाना और पांचों की मुश्कें बांध के दरबार में हाजिर करो।
जी दादा, सरजूराय ने सभी को तैयार होने का आदेश दिया। वह दोनों भी पांचों वस्त्र

और हथियारों को बांधकर तैयार हो गए और हर-हर नर्मदे का जयकारे लगा कर आगे बढ़ते है। उनकी सेना का नेतृत्व सरजूराय और अनूपराय दोनों भाई कर रहे हैं।
उधर माता देवल बेचैनी से बच्चों का इंतजार कर रहीं हैं। वह कभी यहां-वहां घूमती हैं, तो कभी माता की मूर्ति के सामने बैठ कर उनकी कुशलता मनाती हैं, तभी दरबान ने कहा... राजमाता, राजकुमार पधार गए हैं। सभी ने उनके चरण स्पर्श किए।
ऊदल बोला...माता आपके आशीर्वाद से हम अपने मकसद में कामयाब रहे हैं और वहां का सारा भेद ले कर आये हैं।
देवल ने पूछा...ऊदल तुमने अपने पिता और चाचा के सिर लटकते देखे हैं?
हां मां हमने वे देखे थे और हम तो उसी समय उन्हें लाने वाले थे, पर आल्हा दादा ने मना किया था। ऊदल ने कहा
मलखान बोला... हमें बातों में समय बर्बाद नहीं करना चाहिए। करिया को पता चल गया है कि महोबा वाले आ गए हैं; वह भी तैयारी करके हमें ढूंढने निकल पड़ेगा। अब छुपने से कोई फायदा नहीं है। हमें अपनी सेना के साथ नर्मदा पार उतर जाना चाहिए।
आल्हा ने कहा- ऊदल और ढेबा जाकर पता करो कि नर्मदा कहां पर उथली हैं। वहीं से सेना उस पार उतार कर तंबू तान लो।
उसके बाद रात में ही सारी सेना नदी के पार उतर गई। भोर होते ही सब ओर तंबू-तंबू नजर आ रहे थे। सेना के सभी दलों को लाइन से लगा दिया गया। सबसे पहिले पुखराजदल, नीलमणि दल, हीरामणि दल, कुबेर दल, नीलकंठ दल, इंद्रमणि दल, हिमालया दल आदि। हर दल में हाथी, घोड़ा, पैदल और रथ सहित दस हजार सेना होती है, जिसमें सौ दरोगा, पचास नायब, पांच सेना प्रमुख और एक सेनापति होता है, जो युद्ध की रणनीति तय करता है। उसी रणनीति के अन्तर्गत सेना युद्ध करती है। सेनापति की आज्ञा सर्वोपरि है। इस समय तोपों, बंदूकों का चलन नहीं था। तीर कमान, तलवार भाला, सांग, खांडा, कटार, सिरोही, तेगा, बर्छी और गुलेल ही हथियार थे, जो पैदल, हाथी-घोड़े पर बैठकर चलाये जाते थे।

13-मांडोगढ़ की लड़ाई

तंबू में दरबार लगा है। युद्ध की भूमिका बनाई जा रही है। रत्न जड़ित थाली में पांच पान का बीरा रखा है। तल्हन ने कहा....मांड़ों की फौजें आने के पहिले हमें भी मोर्चा सँभाल लेना चाहिए। आज का सेनापति कौन बनेगा और वीरा कौन चाबेगा?
इतना सुनते ही ऊदल ने वीरा उठाकर चबा लिया और बोला... पहली मुठभेड़ तो हम ही देखेंगे। दादा तंबू में आराम करेंगे।
तल्हन ने कहा.... ठीक है, ऊदल को आज का सेनापति बनाया जाता है। मलखान, लला तमोली और हम भी रण में जायेंगे और हर समय ऊदल की सुरक्षा में रहेंगे। ‘‘पुखराज दल" की सारी सेना आज लड़ाई के लिए कूच करेगी। ऊदल ने रेशमी कपड़े कि भीतर कवच पहना जिसमें हथियार नहीं गड़ता था। दोनों भुजाओं में बख्तर बंध बांधे। सिर पर झलरिया टोप पहना, छप्पन छुरियों को कमर में बांधा, दायें-बांये तीर कमान और भाला लटकाये, गैंडे की खाल की ढाल बाजू में टांगी और तलवार हाथ में लेकर तैयार हो गया। ऊदल और उसके भाइयों की उँचाई छ: फुट थी। रंग गोरा शरीर मजबूत। उस समय के हथियार बहुत वजनी होते थे। पर ये सभी वीर उसे आसानी से चला लेते थे। राजमाता ने आरती उतारी तिलक कर सभी की भुजाओं का पूजन कर विदा किया।

ब्रहमा ने शंख बजाकर सेना को कूच करने का आदेश दिया। बेंदुला के पास आकर उसकी पीठ पर हाथ फिराकर उसे गुड़ चना खिलाकर उदल बोला... चल भाई, आज तुम्हारी असली परीक्षा है। ऐसी कलाबाजी दिखाना कि दुश्मन चक्कर खा जाये।
केसरिया बाना और केसरिया झंडा सब ओर लहरा रहे हैं। चंद्रवंश का निशान त्रिशूल और ढाल ध्वजा पर लहरा रहा है। दोनों सेना आमने सामने खड़ी हैं। ऊदल के मुकाबले मांड़ो की सेना तीन गुनी यानि कि तीस हजार है। मैदान से दूर नीले वस्त्रों में नीला झंडा लिए सांड के ऊपर दूत बैठे हैं। मलखान के आगे टोडरमल खड़ा है। ऊदल के आगे अनूपराय है।
अनूपराय ने कहा.... कहां के राजकुमार हो, किस मकसद से चढ़कर आये हो? क्यों लाखों बेगुनाहों का खून बहाना चाहते हो?
ऊदल गरजकर बोला....इस लड़ाई का बीज, तो बारह साल पहले करिंगा बो आया था, जब वह चोरी करके महोबा से सोते हुए मेरे पिता और काका को निहत्था उठा लाया था। उसके बाद निहत्थों के सिर काटकर के अपनी कायरता का परिचय सारे संसार को दिया था। हम उसी का बदला लेने आये हैं....हां अगर तुम चाहते हो, कि बेगुनाहों का लहू न बहाया जाय, तो घोड़ा पपइया, हाथी पचशावद, लाखापातुर, नौलखा हार, राजकुमारी का डोला और करिंगा का सिर हमें दे दो। हम बिना रक्तपात किये चले जायेंगे।
अनूपराय बोला....खबरदार! शायद तुम भूल रहे हो जहां खड़े हो, वह मांड़ोगढ़ की सीमा है। यहां से जीवित नहीं जा सकोगे।
ऊदल बोला....उदयराज जहां खड़ा होता है वहीं से उसकी अपनी सीमा शुरू होती है। पहला वार करो, व्यर्थ गाल मत बजाओ।
अनूप चिल्लाया....आक्रमण। ऊदल बोला-जय भवानी, यह सुनते ही पैदल से पैदल, हाथी से हाथी, और घोड़ा से घोड़ा भिड़ गए।
ऊदल ने कहा- हम दुश्मन पर कभी पहला वार नहीं करते हैं। तुम अपनी साध पूरी करते हुए पहला वार करो।
अनूपराय ने पहले वार में शिरोही मारी। ऊदल का घोड़ा दूर चला गया। दूसरे वार में बर्दमान ने भाला फेंका, ऊदल ने वार बचाया। तीसरी बार में तलवार लेकर ऊदल पर टूट पड़ा। ऊदल ने उसके वार को ढाल पर रोका और घोड़ा छिटकाकर दूर हो गया।
ऊदल ने कहा ...ले परमार, अब मेरा वार और खांडा चला दिया। अब दोनों के बीच तलवारें चलने लगीं। दोनों ही पैंतरा बदल-बदल कर लड़ रहे थे। ऊदल ने गुस्साकर अनूपराय पर वार किया। उसने ढाल अड़ाकर बचाया, पर ढाल टूट गई और तलवार सीधी उसके कलेजे में समा गई। अनूपराय जमीन पर गिर गया उसके प्राण पखेरू उड़ गए थे। अनूप के गिरते ही टोडरमल आया। वह बहुत वीर था। उसने ऊदल को ललकारा....लो बनाफर, वार सँभालो और गुर्ज चला दी। ऊदल ने वार बचाये। अब बारी ऊदल की थी उसने तलवार से टोडरमल पर वार किया, वह वार बचा ले गया, पर दूसरे वार में उसकी ढाल टूट गई और वह जमीन पर गिर पड़ा। उसके गिरते ही बेंदुला घोड़ा ने सीने पर दोनों टापों से वार किया और मुंह से खून आ गया, इसी के साथ प्राण पखेरू उड़ गए।
संदेशवाहक बोला....राजकुमार अनूपराय और टोडरमल घायल होकर भूमि पर गिरे हैं, हमें शीघ्र ही सहायता को जाना चाहिए, सरजूराय ने घबराकर पूछा-हमारी बाकी सेना

के क्या हाल हैं, तो डरते हुए बोला- रणभूमि में लाशों के ढेर दिखाई दे रहे हैं।
सरजूराय शीघ्र ही सेना लेकर जाता है, वहां पता चला कि वह वीरगति को प्राप्त हुए हंै। उनके मृत शरीरों को पालकी में रखकर महल में भिजवाया। चारों ओर चीख पुकार मची है। बिना सेनापति के सेना भी तितर-बितर है।
सरजूराय ने ललकारा...मेरे भाई को मारने वाला सूरमा कौन है? सामने आये आज मैं उसे यमलोक पहुंचाकर ही पानी पिउंगा।
ऊदल के कानों में आवाज पड़ी, वह सामने आकर बोला.....हमने मारा है। वह सूरमा हम हैं, नाम उदयराज है।
उसे देख सरजूराय बोला....इन महुबियन के सिर धड़ से अलग कर दो और वह तलवार लेकर झपटा।
ऊदल सेना पर टूट पड़ा, कुछ ही समय में मांड़ो की सेना छिन्न-भिन्न हो गई। जो बची वह भाग खड़ी हुई।
घोड़ा बढ़ गयो नर ऊदल को, दोनों हाथ गहे तलवार। जैसे भेड़ बकरी के दल में, रह-रह गरज रहो वनराज।।
जैसे पान तंबोली काटे, जैसे काटे खेत किसान। तैसइ ऊदल रण में बिचरे। सेना काट करो खरयान।।
बड़े लड़ैया महोबे वाले, रण में कठिन करें तलवार। देख सिपाही मांड़ो गढ़के, भागे फेक-फेंक हथियार।।
अब मैदान में दो शेर हैं, दोनों खूंखार आंखों से एक दूसरे को घूर रहे हैं। सरजूराय ने सांग ऊदल पर चलाई। ऊदल ने अपने घोड़े को एड़ लगाई और वह ऊंची छलांग लगाकर वार बचाया। सरजूराय ने तलवार से वार किया ऊदल ने उसका वार अपनी भुजा पर रोका और दूसरे हाथ से बिजली की गति से उलट वार किया। वह इस वार को समझ न पाया और तलवार उसके घोड़े की जीन काट गई। उसी समय ऊदल ने दूसरा वार किया और उसका सिर कटकर मैदान मे जा गिरा और उसका धड़ घोड़े की पीठ पर ही बैठा रहा फिर कुछ देर बाद लुढ़क कर जमीन पर गिर गया। यह देख उसके सैनिक भाग गए। आज का युद्ध समाप्त हो गया है।
सूर्यास्त के बाद आसमान में लाली छायी है। पंछी अपने घरों को लौट रहे हैं। कुछ गिद्ध, कौवे मंडरा रहे हैं। कुछ देर में सूरज डूबने वाला है, लेकिन मांड़ो का सूरज आज हमेशा के लिए डूब गया। बचे सैनिकों ने लड़ाई का हाल महाराज को सुनाया। तीन बेटों की एक दिन में मौत से उनको सदमा लगा, मुख से निकला...जो कुपंथ पग धरे खगेसा, रहे न तेज बुद्धि लवलेशा।

हमने बहुतेरा समझाया, पर करिंगा ने नहीं मानी, उसकी ग़ल्ती का परिणाम सारे परिवार को भोगना पड़ेगा। रानी कुशला अचेत हैं।
दूसरी ओर ऊदल, माता को युद्ध का हाल बता रहा है। ब्रह्मा, मलखान और आल्हा घायल सैनिकों के हाल देख रहे हैं। जो ज्यादा घायल है, वह कल युद्ध में नहीं जायेंगे। सभी की मरहम पट्टी हो रही है। उनको जड़ीबूटी का लेप लगाया जा रहा है।
सबेरे का सूरज निकलने वाला है। करिंगा अपने महल में पूजा कर रहा है। देवता का ध्यान करके, उसने अपने पांचों वस्त्र पहने, सभी हथियार ढाल, तलवार, तेगा, सांग कटार साजे। सिर पर झलरिया टोप पहनकर माता कुशला के पास जा कर पैर छुए।

माता ने आरती का थाल लेकर पत्थर हृदय से बेटे का तिलक करके कहा....विजयी भव, रण में जीत कर आना।
दरबार में आकर उसने सभी सामंतों से कहा....आज की लड़ाई में सरदार रंगा, बंगा की अगुवाई में ‘‘कारी जोगन दल" के जवान दक्षिण दिशा से जायेंगे और सेना पर पीछे से धावा बोलेंगे। रंगा, बंगा करिंगा की सेना के दो महाबली वीर थे। उन्होनें खड़े होकर कहा...जी राजकुमार, हम तैयार हैं। करिंगाराय बोला-सेनापति मेरे साथ भैरव दल, बजरंग दल, नंदी दल के जवान जायेंगे।
सेनापति ने कहा....महाराज नंदीदल को राजकुमार के साथ भेजा जा चुका है उसमें के ज्यादा सैनिक मारे जा चुके हैं।
करिंगा ने कहा...बस-बस, अब नगाड़ा बजने दो। इतनी जोर से नगाड़ा बजाओं कि रणखेतों तक आवाज सुनाई दे।
करिंगा ने पिता जंबे के पैर छुए। जंबे ने उसे छाती से लगाकर पीठ पर हाथ फिराया पर उनके मुख से बोल नहीं निकला। करिंगा ने कहा... मेरा हाथी पचशावद लाओ! हाथी लेकर पीलवान आया, उस पर सोने का हौदा, मखमली गद्दा है। करिंगा चंदन की सीढ़ी पर पैर रख हाथी पर चढ़ गया। लश्कर आगे बढ़ गया, चारों ओर धूल का गुबार है।
मलखान, ब्रह्मा, ऊदल, ढेबा, तंबोली और तल्हन सभी तैयार हो कर सेना के साथ कूच का डंका बजा कर चल दिए। सेना उत्साह में भर कर चली आ रही है। जय-जय भवानी, हर-हर महादेव के नारे गूंज रहे हैं। दोनों सेनायें आमने-सामने हैं। करिंगा ने गरज कर कहा...कौन ऊदल है मेरे सामने आये आज मैं उसे यमलोक पहुँचाउंगा। ऊदल ने सामने आकर कहा....मैं ही ऊदल हूं।
करिंगा ने कहा... नादान बालक ऊदल को मेरे सामने भेजो। कहना करिंगा तुम्हारी मौत बन कर आया है।
ऊदल ने कहा... मैं ही ऊदल हूं। मैंने ही तेरे वंश का नाश किया है। अब आखिरी पत्ता तू ही बचा है उसे भी तोड़कर फेंकूंगा।
करिंगा ने कहा....अभी दूध के दांत नहीं टूटे, बाते बढ़-बढ़ कर करता है, वारकर अभी पता चल जायेगा, आखिरी पत्ता कौन है?
ऊदल ने कहा... वीर पहला वार नहीं करते और तुम तो वीर हो नहीं। तुम्हारी कायरता तो जग जाहिर है। कही, चोरों की तरह आज भी पीठ पर वार करने की तो नहीं सोच रहे हो? इतना सुनकर करिंगा आग बबूला हो गया और बोला.....आक्रमण।
करिंगा ने अपनी सांग उठाकर ऊदल पर पहला वार कर दिया। ऊदल वार बचा गया। फिर करिया ने उसे संभलने का मौका दिये बिना दूसरा वार गुर्ज का किया। बेंदुला उचककर वार बचा गया। तीसरे में तेगा फेंका। ऊदल ने घोड़ा बढ़ाकर वार बचा लिया। अब ऊदल ने सांग फेंककर कहा...लो अब मेरा वार बचाओ। उसकी सांग सीधे हौदा पर लगी और करिया डगमगा गया।
यह देख करिया ने कहा...अरे पचशावद, अब तुम दुश्मन की सेना का संहार कर दो। पीलवान सांकल खोल दो। पीलवान ने सांकल की कड़ी खोल दी, जो हाथी के दोनों ओर बंधी हुई थी। तब तक ऊदल ने तीसरा वार घोड़ा बाजू से ले जाकर तलवार का कर किया। तलवार उसके बाजू को चीरती हुई उसके होदा को काट गई और करिंगा हौदे से गिरकर बेहोश हो गया। करिंगा को गिरते देख हाथी गुस्सा हो जाता है। अब तक उसकी सांकल खुल चुकी थी। हाथी पचशावद सांकल का खिलाड़ी था। उसने पांच सौ किलो

की सांकल सूंड से उठा कर, चारों ओर फेंकना शुरू किया। उसके सामने ऊदल था सांकल सीधे ऊदल के सिर से जा टकराई उसे सम्हलने का मौका ही नहीं मिला और वह चक्कर खाकर गिर गया। उसके बाद जो भी दस बीस सिपाही सामने आते, वह एक ही वार में मारे जाते। इस तरह से महोबा की सेना गाजर मूली की तरह कटने लगी। हाथी पागल हो गया है। इंसानों से तो लड़ा जा सकता है पागल हाथी से कौन लड़े। सिपाही मैदान छोड़ भागने लगे। ऊदल के गिरने से भी सिपाही घबरा गए थे।
उधर रंगा बंगा ने सुना करिंगा हौदे से गिर गया है। वह उसे मैदान से बाहर लाकर उसके होश में आने का इंतजार करते हैं।
मलखान ने सुना कि ऊदल गिर गए हैं। वह वहां पहुंचा और ऊदल को उठाकर साथ ले तंबू में आ गया अब तक दिन चढ़ आया था। ऊदल को देख देवल घबराकर पानी के छींटे देकर बोली..ऊदल! ऊदल! तभी उदल ने आंख खोलकर कहा-हम ठीक हैं।
देवल ने पूछा...ये सब कैसे हुआ? मलखान ने बताया पचशावद कैसे पागल हो गया है। इसी कारण रण में हाहाकार मचा है।
देवल ने कहा ...मैं अभी आती हँू। वह अंदर जाकर वापस आती हैं। वह अब सैनिक के वेश में हैं, उसने कहा....चलो, हमें जल्दी ही रण भ्िाम में जाना चाहिए। हाथी पचशावद को मैं समझाउंगी वह मुझे पहचान लेगा। वह मेरे बेटे जैसा है। ...बेटा ऊदल, आप अभी कुछ देर विश्राम कीजिए। हम जल्दी ही आते हैं। आपकी जगह अब आल्हा हमारे साथ जायेगा।
ब्रह्मा ने कहा ...काकी जी, हम आपके साथ चलेंगे। आप हमें मत रोकना। एक घोड़ी पर सवार होकर मलखान के साथ देवल माता चली जाती हैं। साथ में आल्हा और ब्रह्मा भी जाते हैं। रन भूमि जाकर देवल ने देखा, तल्हन, ढेबा धनुआं मैदान संभाले हैं। हाथी पचशावद कहर बरसा रहा है। उसके सामने कोई टिक नहीं पा रहा था। देवल ने उतरकर हाथी के पास जाने का उपक्रम किया। दायें बांयें करके कुछ कठिनता से वह पचशावद के पास पहुंच गई। उन्होंने आवाज लगाई -पई -पई-पई पचशावद पई-पई पई। गई-गई-गई गुड़ की भेली गई। यह आवाज सुनकर हाथी जहां का तहां रुक गया। चारों ओर देखने लगा, मानों कुछ खोज रहा हो। यही उचित समय जानकर, राजमाता देवल ने पास जाकर उसकी सूंड पकड़कर प्यार से हाथ फिराया और अपने साथ लाया एक बड़ा सा लड्डू खिलाया। उस लड्डू को खाते ही वह पहचान गया कि ये माता देवल हैं। देवल ने हाथ फिरा कर कहा.....अरे! पचशावद तू हमें भूल गया? उस प्यार को भूल गया, जब हम तुझे मना-मना कर रातिब खिलाया करते थे। तू महोबा को भूल गया, तू बनाफर कुमारों को भूल गया? क्या तू उस काली रात को भूल गया जब ये करिंगा दसपुरवा से दस्सराज -बच्छराज को सोते से चोरी से उठा लाया था। घोड़ा पपइया को और तुझे उठा लाया था, महलों में लूट करा ली थी और बनाफर भाइयों को मारकर उनकी खोपड़ी बीच चौक में मांडो में टंगा दी थी जो आज भी टंगी हैं। ये लड़का महोबा के ही राजकुमार हैं, ये मुझ दुखिया मां के बेटे हैं। ये अपने बाप का बदला लेने आये हैं। तुझे वापस लेने आये हैं। अब तुम बदला लेने में इनकी सहायता करो।
हाथी पचशावद माता देवल को पहचान गया। उनकी बातें सुनकर सांकल फेंक दी और सूंड उठाकर उन्हें प्रणाम किया। देवल ने आल्हा को आगे करके कहा... यह आल्हा है, मेरा बेटा! आज से इसको तुम्हें सौंपती हूं। ले सँभाल अपने राजकुमार को।
पचशावद ने झुककर आल्हा को पीठ पर बैठने का इशारा किया। आल्हा ने मां की ओर

देखा। देवल ने बैठने का इशारा कर कहा... बेटा तुम निश्चिंत होकर बैठ जाओ। ये जानवर हैं, पर कभी अपने स्वामी से गद्दारी नहीं करते हैं। आल्हा बैठ गया, तो उसने सूंड उठाकर जोर की गर्जना की जिससे सैनिकों में सब ओर फिर से नए उत्साह की लहर दौड़ गई। रणभेरी फिर बज उठी।

रंगा-बंगा करिंगा की रक्षा में हैं। करिया को होश आया, तो वह भरभरा कर उठा और हाथी को बुलाया, पर वह तो अब आल्हा को बिठाये है। करिंगा समझ गया कि वह धोखा दे गया। वह सैनिकों से अपना काला घोड़ा बुलवाकर, उस पर सवार होता है,

मलखान... परमार, अभी भी समय है। हमारी चीजें देकर सुलह कर लो। ये नाहक का रक्तपात बच जायेगा। करिंगा घायल है, वह लड़ना नहीं चाहता इसलिए बोला....बनाफरराय हमसे बाद में लड़ना पहिले हमारे इन सरदारों से निपट लो, रंगा बंगा को भेजा।

मलखान ने कहा.....चलो अपनी इच्छा पूरी कर लो, पहला वार तुम ही करो वरना पछताओगे कि हम वार ही नहीं कर पाये।

रंगा बंगा ने दोनों ओर से शिरोही घुमाकर फेंकी, मलखान अपनी कबुतरी घोड़ी सहित हवा में कलाबाली खा गया। दूसरी बार दोनों ने फिर वही वार किया। अबकी वार मलखान पीछे हट कर वार बचा गया। उसी समय ब्रह्मा वहां आकर बोला......ये क्या एक से दो-दो लड़ रहे हो? बंगा ने आव देखा न ताव झट से तेगा ब्रह्मा के ऊपर चला दिया। ब्रह्मा ने एक हाथ से अपनी ढाल अड़ा कर वार बचते हुए कहा....बैरी तेरा बुरा हो जाये, धोखे से वार करता है, तो ये ले मेरा भी वार संभाल... और दूसरे हाथ से तलवार का वार कर दिया। ब्रह्मा की तलवार बंगा का कलेजा चीरती हुई निकल गई। बंगा भरभरा कर जमीन पर गिर पड़ा।

उधर रंगा के तीनों वार झेलने के बाद मलखान ने सांग से वार किया, जो घोड़े को लगा। घोड़ा लड़खड़ाया। तब तक मलखान ने दूसरे वार में तलवार से उसका सिर काट दिया और ब्रह्मा को देख हाथ हिलाया। करिंगा ये देखकर सोच रहा है कि आज मैं इनसे नहीं लड़ पाऊंगा। शाम हो रही है किसी तरह युद्ध टालना चाहिए। उसने सैनिक से कहा....युद्ध समाप्ति की तुरही बजवा दो।

उसी समय मलखे पास आकर बोला....अरे करिया, कहां छुपे फिर रहे हो? क्या फिर कोई चोरी की वारदात करने की योजना बना रहे हो? वीरों की तरह तलवार उठाओ और युद्ध करो। करिया ने सोचा, अब तो बुरे फंसे। लगता है काल आ गया, तभी युद्ध समाप्ति की तुरही बजी। करिंगा जल्दी से बोला....आज तो युद्ध बंद हो गया है कल तुम्हारी इच्छा पूरी करेगें।

सभी अपने-अपने शिविर में लौट जाते हैं। घायलों को रथों में ले जाया जा रहा है। आल्हा के साथ हाथी पचशावद तंबू में आ गया, सब प्यार से सहला रहे हैं। देवल माता उसे हाथों से रतेबा खिला रही हैं। चारों ओर खुशी है।

मलखान ने कहा-यह हमारी पहली जीत है। हम अपनी सारी चीजें माड़ो से वापस लेकर जायेंगे।

तल्हन ने कहा...करिया बहुत धोखेबाज है कल उससे युद्ध में सावधान रहना। मैं ऊदल के साथ, ढेबा मलखे के साथ, लाला तमोली आल्हा के साथ और धनुआं ब्रह्मा के साथ रहेगा। अभी सभी को भोजन कर विश्राम करना चाहिए।

उधर करिंगा मरहम पट्टी कर के बैठा सोच रहा है। महोबा वाले सचमुच बहुत वीर हैं।

उनसे सीधे-सीधे लड़ कर पार पाना संभव नहीं है। अब तो छल युद्ध का सहारा लेना पड़ेगा। वह उठकर रात के अंधेरे में घोड़े पर सवार होकर टेड़े मेड़े जंगली रास्तों को पार कर नर्मदा किनारे महेश्वर की पहाड़ियों में पहुंचा है। घने जंगल में ऊंची पहाड़ी पर एक मठ बना है। वह उसमें प्रवेश कर गया ''हम यह पहले ही लिख चुके हैं कि इस काल में जादू की शक्ति का प्रयोग होता था; हर राज्य के राजा के पास कुछ तांत्रिक और जादूगर अवश्य होते थे। उनकी मदद राजा युद्ध में लेते थे। एक खरखराती हुई सी आवाज आई.....हूं उं उं .....आइए राजकुमार।

सामने एक व्यक्ति बैठा है। गले में बहुत सी रंगबिरंगी मालायें पहन रखी हैं। उसके सामने एक बड़ा सा आईना रखा है। इसके अलावा जादू के काम आने वाले कुछ सामान रखे हुए हैं। करिंगा खड़ा होकर उसे देखता है, तो वह बोला-विराजिए राजकुमार।

जादूगर घटोपी हम बैठने नहीं आये हैं। मांडो पर महोबा वालों ने चढ़ाई करी है। हमारे तीनों भाई मारे जा चुके हैं। हमने आज मैदान में देख लिया वो बहुत वीर हैं। हम चाहते हैं कि तुम आल्हा के भाई ऊदल और मलखान का हरण करके हमें सौंप दो।

जादूगर आईना देख बोला....राजकुमार, मैं देख रहा हूँ, उनके ऊपर गुरु गोरखनाथ का हाथ है। जिनके पास जादू की विद्या के साथ आध्यात्मिक सिद्धि भी है। इस संसार में उनकी विद्या का तोड़ किसी के पास नहीं और उनके पास हर विद्या का तोड़ है।

करिंगा....घटोपी हम सब जानते हैं, पर अभी गोरखनाथ यहां नहीं हैं। वह जब तक मदद को आयेंगे, तब तक हम युद्ध जीत जायेंगे। तुम्हारे नाम पच्चीस गांव की जागीर कर देंगे। तुमने मांडो का नमक खाया है। इसकी रक्षा करना आपका भी फर्ज है।

जादूगर ने कहा .....ठीक है, मैं आपकी सहायता करूँगा। कल मैं सैनिक वेश में आपके साथ चलूंगा।

दूसरे दिन सबेरे-सबेरे करिंगा युद्ध के लिए तैयार होकर रणभूमि में पहुंचता है। दोनो सेनायें आमने सामने हैं। घोड़ा पपइया पर करिंगा बैठा है। पास ही एक घोड़े पर जादूगर सैनिक वेश में है। आल्हा हाथी पचशावद पर है। ऊदल सहित बाकी सभी अपने-अपने घोड़ों पर सवार हैं। युद्ध का नगाड़ा बजते ही सेनायें आपस में भिड़ जाती हैं। करिंगा ने आज अगली पंक्ति में अपने बीस लड़ाकू सरदार भेजे हैं। आज का सेनापति विक्रमजीत को बनाया है। वह अपना बचाव करके, पीछे रहकर युद्ध कर रहा है।

करिंगा को न देख तल्हन बोला...मलखान और ढेबा पीछे मोर्चा सँभालों हो सकता है करिया पीछे से चढ़ाई करने की सोच रहा हो? उधर तल्हन मलखान बात करते हैं, तब तक ऊदल करिंगा को तलाशता अकेला पीछे की पंक्ति में करिंगा के पास पहुंचा।

ऊदल बोला...अरे परमार, पीछे रहकर सुरक्षा देख रहे हो? मैदान में आ के युद्ध करो या शर्तें मानकर युद्ध बंद करो।

करिंगा बोला....उदयराय, अपने ईश्वर का ध्यान कर लो, आज तुम्हें मेरे हाथों से कोई नहीं बचा सकता। लो वार सँभालो और उसने सिरोही चलाकर जादूगर को इशारा किया। जादूगर हाथ में सारसों लेकर ऊदल के पास आने का प्रयास कर रहा है। वह उसके चेहरे पर सारसों फेंकना चाहता है। ऊदल वार बचा गया। अब करिंगा ने योजना के अनुसार झट से भाला मारा। ऊदल ने घोड़ा को कलाबाजी देकर बचाया, अब करिंगा ने तलवार से वार किया ऊदल ने ढाल अढ़ाकर वार रोका और बोला....अब मेरी बारी है ये ले...और ऊदल का हाथ हवा में ही लहराकर रुक गया। कारण जादूगर अपना काम कर चुका था। ऊदल के देखने, सुनने और समझने की शक्ति खो चुकी थी। वह कुछ देर में

ही अचेत हो कर घोड़े से गिर पड़ा। ऊदल के गिरते ही सैनिकों ने उसको बंदी बना लिया और पालकी में डालकर चुपचाप पीछे के पीछे करिंगा उसे दरबार में ले आया। महोबा वालों को यह पता ही नहीं चल सका।
दरबार में आकर करिंगा ने कहा....महाराज हम ऊदल को बंदी बना लाये हैं और बंधे हुए अचेत ऊदल को दिखाया।
जंबेराय ने कहा....शाबाश बहादुर, पर यह चमत्कार तुमने किया कैसे?
करिंगा ...जादूगर घटोपी ने हमारी मदद की है। अब हम इसका सिर काटकर इसके बाप के पास ही लटका देते हैं।
जंबेराय ने सोचा....आज फिर वह गलत कर रहा है। अगर ऊदल मारा गया, तो महोबा वाले उसके राज्य को जलाकर लंका की तरह ध्वस्त कर देंगे। वह समझाकर बोला...नहीं राजकुमार, इसे तिलस्मी भक्सी में कैद कर दो। वहां कोई नहीं पहुंच सकता।
अचेत उदल को भक्सी में डाल दिया गया, जहां पर उसे होश तो आ गया, पर वह कौन है यह भूल गया। भक्सी....यह एक तिलस्मी महल का कैदखाना है जो ऊपर से देखने में एक मंदिर है, जिसका एक गुप्त रास्ता राजमहल की घुड़साल से काले घोड़ा के खाने की चरही से होकर जाता है। यह करीब सौ गज की गहरी, अंधेरी और संकरी खाई है, जिसमें से एक आदमी ही सीधा जा सकता है, पर वापस नहीं आ सकता है। जिसमें से जाने पर भयंकर सर्दी, गरमी और खुजली का सामना करना पड़ता है।
दूसरा रास्ता लौह महल के अन्दर बने मंदिर से जाता है। मंदिर का पुजारी तिलस्म का एक दरोगा है। मंदिर के भगवान की मूर्ति के पीछे से एक रास्ता सुरंग से हो कर जाता है। सुरंग के रास्ते में जगह-जगह पर जादू के गोले बने हुए हैं। गलत गोले पर पैर पड़ने से कहीं से भी तीर, तलवार आकर लग सकती है। उसमें चार दरवाजे हैं जो तिलस्म के द्वारा ही खुलते हैं। इसे केवल तिलस्म का दरोगा ही खोल सकता है। बाजू से ही एक कमरे में खजाना रखा है। दो दरोगा हमेशा दरवाजे पर रहते हैं।
दोपहर ढल रही है तल्हन युद्ध के मैदान में ऊदल को न देख उसे ढूंढता है। उसे करिंगा भी कहीं नजर नहीं आ रहा है। तल्हन एक-एक कर सभी को ये बताता है। सभी ऊदल को खोजने लगते हैं। सांझ हो गई, पर ऊदल का पता नहीं, महोबा के तंबू में उदासी छायी है। सेना के गुप्तचरों को भी ऊदल का कुछ भी पता नहीं है।
आल्हा ने कहा....हमने पहिले ही कहा था, मांडो से जूझना आसान नहीं है, योजना पर अमल करो, ऊदल को रण से दूर रखो।
मलखान ने कहा....दादा कैसी नासमझी की बात करते हो? ऊदल कोई बच्चा नहीं है, वह जहां भी होगा ठीक होगा।
आल्हा....दूरदर्शिता और समझदारी को नासमझी नहीं कहते, तो मलखान बोला.....पंडित पोथी देखकर बता उदल कहां है?
ढेबा ने पोथी देखकर गणित लगाकर बताया.... ऊदल जीवित है, पर बंदी हैं। जादू के कब्जे में हैं।
माता ने कहा...मोंडो में बहुत जादूगर हैं। जादू से निपटने के लिए हमें गुरुदेव की सहायता चाहिए; गुरुजी को लाना होगा।
मलखान ने कहा ....जी बड़ी मां, हम अभी तैयारी करके जाते हैं। उधर आल्हा कुछ न कहकर पूजागृह मे जाकर ध्यान लगाके बैठ गये। गुरुदेव ने यह विद्या सिखायी थी कि योग द्वारा उनसे मानसिक संपर्क कर सके, आल्हा ने उन्हें सारी बात बता दी।

सैनिक ने कहा....गुरुदेव आये हैं। सभी खुश होकर उनकी अगवानी करते हैं। उनके चेहरे पर शांत मुद्रा है और होठों पर हमेशा रहस्यमयी सी मधुर मुस्कान रहती है। गुरुदेव अपनी झोली गोद में रखकर बैठे हैं, तभी मलखान ने कहा ....गुरुदेव झोली एक ओर रखकर आराम से बैठिए; आप थककर आये हैं और झोली उठाने को हाथ बढ़ाया, पर वह इतनी भारी थी कि उठी ही नहीं।

गुरुदेव ने कहा... नहीं कुमार, यह झोली चमत्कारी है इसे कोई हाथ नहीं लगा सकता, ना किसी से उठती है। मलखान ने उत्सुक हो कर पूछा- गुरुवर इसमें ऐसा क्या है हमें भी बताइए। गुरुदेव ने एक सुन्दर सी बांसुरी निकाल कर कहा.... इसका नाम ''बीन मुंदरिया" है। दूसरी ''ज्ञान गुदरिया" है, तीसरा ''जादू का चिमटा" है इसे बजाने पर मेरे द्वारा जाग्रत की हुई, जोगनी, वीर, यक्ष, गंधर्व, भैरव, वेताल और बावन कलुआ आते हैं जिनमें कुछ भी करने की अपार ताकत है। चौथी, अभिमंत्रित सरसों की छोटी छोटी थैलियां हैं जो किसी भी जादू का तोड़ हैं और पांचवीं ''उड़न खड़ाऊ" हैं जिन्हें पहनकर हवा की गति से आ जा सकते हैं।

देवल चरणों में गिर बोली...गुरुदेव, सही समय आये हो; हम मलखान को भेज रहे थे, दुखिया का लाल दुश्मन के घेरे में है।

गुरुजी ने कहा.....महारानी मां, हम सब जानते हैं, इसीलिए बिना विलम्ब किए आ गए, सब ठीक होगा धैर्य रखो। फिर ध्यान लगा कर कहा....ऊदल तिलस्म में कैद है। जादू के जोर से उसकी याददाश्त चली गई है। इस समय मांड़ों में कड़ी चौकसी है, परिन्दा भी पर नहीं मार सकता है। सबसे बड़ी चुनौती लौह दुर्ग के सात परकोटे पार कर अंदर जाने की है। अब ये तुम्हारे ऊपर है कि अंदर तक कैसे जाते हो? जितनी लगन से कर्म करोगे वैसा ही फल पाओगे। अंदर जाकर रानीमहल के पास बने मंदिर में भगवान विष्णु के हाथ का कमल उठाने से तिलस्म महल का दरवाजा खुल जायेगा। उससे अंदर जाना और अपने विवेक से उसे पार करना। पूरे रास्ते में खतरा है। सारी बातें बताकर गुरुदेव ने मलखान को जादू की तीन पुड़िया दी और उसे कब कहां काम में लाना है बताया।

मलखान ने कहा...गुरुदेव कंटीले वन के बाहर से एक सुरंग है, जो सीधे राजमहल तक जाती है। इसका राज करिंगा की बहन बिजमा ने ऊदल को बताया था। हम उसी सुरंग के रास्ते महल में जायेंगे।

गुरुदेव-ठीक है, अब हम विश्राम करेंगे। आल्हा उनकी सेवा के लिए साथ चला जाता है। वह आल्हा को नीतिज्ञान दे रहे हैं।

मलखान ने कहा... मेरे साथ तल्हन चाचा और ब्रह्मा चलें; हम वहां पर मंदिर में जोगी के वेश में जायेंगे। अंधेरा होते ही वे तीनों जोगी बनकर चल दिए। वन में सुरंग का द्वार खोज रहे हैं। कुछ प्रयासों के बाद एक जगह पर उन्हे सामने की पहाड़ी पर कुछ निशान दिखाई दिए। वह तीनों आस पास की झाड़ियां हटाते हैं तो पता चला वही दरवाजा है, पर दरवाजा खोलें कैसे? मलखे की नजर कुछ दूरी पर लटक रहे एक कुन्डे पर पड़ी। जैसे ही कुन्डा खींचा दरवाजा खुल गया, तीनो उससे अंदर जाते हैं। दरवाजा सीधा महल तक गया है। छिपते-छिपाते मंदिर में आते हैं। मंदिर का दरोगा चाक चौकस पुजारी वेश में सजगता से जाग रहा है।

तल्हन ने कहा....अलख निरंजन, पुजारी आश्चर्य से बोला....अरे जोगी, तेरा बुरा हो जाये, आधी रात को यहां क्या कर रहा है?

ब्रह्मा ने कहा...एक-एक सवाल पूछो, हम सबका जवाब देंगें। तब तक मलखे ने जादू की पुड़िया उस पर फूंक दी। वह बेसुध हो कर गिर पड़ा। जल्दी से उसे एक कोठरी में हाथ पैर बांधकर डाल दिया और तल्हन उसके कपड़े पहनकर दरोगा बनकर पहरा देने लगे। मलखान ने जल्दी से विष्णु जी की मूर्ति का कमल उठाकर रखा तो एक दीवार में दरवाजा खुल गया।

तल्हन ने कहा....जल्दी जाओ और अपना काम करके मुर्गा बोलने से पहिले वापस आ जाना। वे दोनो अंदर चले गए, अंदर लंबी सुरंग है। दोनों ओर नुकीले भाले लटके हैं। वह दोनों नीचे लेटकर घिसटकर आगे जा रहे हैं। अंदर के दरवाजे पर दो दरोगा आराम से बैठकर बातें कर रहे हैं। आहट पाकर चौंकते हैं और जैसे ही पलटते हैं। मलखे और ब्रह्मा जादू की पुड़िया उस पर फूंकते हैं। वह दोनों अचेत हो बैठे रह जाते हैं। उनकी कमर में चाबी लटक रही है। मलखान चाबी लेकर दरवाजा खोला।

ब्रह्मा ने कहा....मैं यहां पहरा देता हूं दादा आप आगे जाकर अपना काम कीजिए। जय भवानी।

मलखान आगे बढ़ता है। उसने देखा कि फर्श पर काले सफेद गोले बने है। वह अपनी झोली से एक रेत की पोटली निकालकर उसमें डोरी बांधकर उन गोलों पर रखता है। जो सही गोला होता है उस पर पोटली के गिरने से कुछ नहीं होता, गलत गोले पर पोटली के गिरने से बाजू की दोनों दीवारों से बड़े नुकीले भाले बाहर आ जाते हैं। जरा सी चूक होने पर वह आर पार हो जायेंगे। इस प्रकार मलखान सावधानी से पैर रखकर आगे बढ़ता है। धीरे-धीरे करके वह दूसरे द्वार तक पहुंच जाता है। द्वार बंद है, अब वह द्वार कैसे खोले उसके लिए यहां वहां देखता है। तभी उसकी नजर सामने लिखी चौपाई पर पड़ती है।

जो राम को लखन करे, लखन करे श्रीराम। सिद्ध होय सकल काम, कहें पूरन राम।।

मलखान बार-बार उसे पढ़ता है, पर राम लखन को मूर्ति नजर नहीं आती। अचानक वह चौंकता है उसे सामने की पूरी दीवाल में काले पीले चौकोर पत्थर लगे हैं। वह समझ जाता है कि यहां काले पत्थर को राम और पीले पत्थर को लखन कहा है। अब वह उन पत्थरों को छूकर देखता है। एक पीला और एक काला पत्थर उसे कुछ अलग से रखा लगता है। वह उसे निकालकर अदल बदल कर रखता है। ऐसा करते ही दरवाजा खुल जाता है। वह उस कमरे में प्रवेश करता है। कमरे में अंधेरा है। वह अपनी झोली से एक पोटली में बंधे बहुत से जुगनू निकाल कर उड़ाता है। जुगनू के चमकने से कमरे में कुछ उजाला होता है। उस कमरे में गड्ढे बने हैं। वह एक गड्ढे में रेत की पोटली को डालता है जहां वह खड़ा है वह जगह हिलने लगती है। वह झट से पोटली उपर खींच लेता है। भूकंप रुक जाता है। अब मलखान गड्ढों से बचकर उसे पार करता है और तीसरे अंतिम दरवाजा पर पहुंचता है।

तीसरे दरवाजे पर पहुंच कर वह उसे खोलने का उपाय सोचता है। सब ओर देखने पर कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। सारी दीवारें प्लेन हैं। बस दरवाजे में बहुत से नगीने जड़े हुए हैं। मलखे उन नगीनों को गौर से देख रहा है। उन सबके बीच उसे एक बात खटक रही थी। उन नगीनों के बीच नगीनों का ही एक त्रिकोंण बना था, जो गौर से देखने पर दिखाई दे रहा था। वह झिझकते हुए उस त्रिकोण पर दबाव देता है। कुछ जोर से दबाने पर एक खट की आवाज के साथ एक बड़ी सी चाबी दरवाजे से बाहर आती है। मलखे चौंक कर पीछे हट जाता है। कुछ देर चाबी को देखकर पास जाकर छूता है फिर उसे

सीधी दिशा में घुमाता है, पर वह टस से मस नहीं होती है, वह उसे उल्टी दिशा में घुमाता है। चाबी घूम जाती है और दरवाजा खुल जाता है। वह कुछ देर तक कमरे की ओर देखता है फिर धीरे-धीरे कमरे में कदम रखता है, चारों ओर नजर घुमाता है, एक ओर अंधेरे में ऊदल दिखाई दिया। वह पास जा कर बोला....ऊदल! ऊदल उठो। उठो ऊदल हम तुम्हें लेने आये हैं। उदल तो बस उसे आंखें फाड़ कर देख रहा है।
कुछ देर बाद उसने पूछा... तुम कौन हो? कहां ले जा रहे हो? मैं कहीं नहीं जाऊंगा।
मलखान ने झोली से तीसरी पुड़िया निकाल कर उसके उपर फूंक दी, ऐसा करते ही उसका जादू खत्म हो गया और ऊदल बोला... दादा, हम यहां क्या कर रहे हैं? ये कौन सी जगह है? मलखान ने कहा....तुझे जादू से करिया ने कैद कर लिया था, अब जल्दी ही यहां से निकलो; हमें सुबह होने से पहिले शिविर में पहुंचना है। दोनों जैसे आये थे वैसे ही वह वापस आ जाते हैं।
मलखान ने कहा......अभी सुबह होने में देर है, चलो उस घटोपी जादूगर से भी मिल लें। तीनों मठ पहुंचकर उसे जगाते हैं। उदल को सामने देख चौंकता है, वह जैसे ही जादू करने के लिए अपना कटोरा उठाता है। मलखन झट से तलवार से गर्दन काट देता है।
ब्रह्मा ने कहा ... ये ठीक हुआ, न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी। अब वे चारों उसी सुरंग के रास्ते से नर्मदा के किनारे के कंटीले वन में आ जाते हैं। इस समय सुबह की लाली आसमान में फैल रही है। पक्षी चहचहा रहे हैं, हवा भी मंद-मंद बह रही है। कुछ जानवर जैसे खरगोश, हिरन, सियार आदि यहां वहां भागते दिखाई दे जाते हैं। ऐसा लग रहा है मानो सभी ऊदल का स्वागत कर रहे हैं। कुछ ही समय में वे तंबू में थे, माता ने सीने से लगाया। उसके बाद उदल ने गुरुजी को प्रणाम किया। गुरुजी ने सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देकर कहा-हमेशा जोश में होश रखा करो। जोश में होश खोना ये तो तुम्हारी बहुत पुरानी आदत है।
देवल ने कहा .. गुरुदेव, इन अनाथ बच्चों पर अपनी दया इसी तरह बनाये रखना।
राजमाता आप चिंता ना करें, इनके साथ क्या हो रहा है मुझे भान रहता है, पर जो गलती करेगा उसका दंड भी वही भरेगा। इसीलिए कुछ भी करने से पहले उसके परिणाम पर विचार करो, फिर उस कार्य को करो। बस अब हमें चलना चाहिये।
ऊदल मलखान ब्रह्मा आल्हा सभी ने कहा ....आज के युद्ध में करिया को नहीं छोड़ना है। पांच पान का बीरा आते ही मलखान ने चबा लिया और बोला करिया को मैं मारूंगा, तो ऊदल ने पास आकर कहा... ठीक है दादा मैं आपके साथ रहूंगा।
ऊदल सैनिकों की मदद से सामने बरगद के पेड़ पर मचान बनवा रहा है, सभी पूंछ रहे हैं कि वह यह क्या कर रहा है?
मलखान ने पूछा... यह क्या हो रहा है? कुछ हमें भी तो पता चले। तभी माता देवल ने कहा.. हां बेटा यह सही रहेगा।
ऊदल ने कहा.. दादा आज करिया से आखिरी युद्ध है। वचन के अनुसार राजमाता यहां पर बैठकर करिया का मरण देखेंगी।
माता देवल मचान पर जा बैठी। करिया सेना लेकर आया, वह सोच रहा है ऊदल के न होने से उदासी छाई होगी कोई भी युद्ध करने नहीं आयेगा। ऐसे में उनकी सेना पर विजय पाकर उनके शिविर को लूट लेंगे। वह गर्व से गर्दन उंची उठाकर सबसे आगे है। महोबा की सेना भी सामने है, सामने की पंक्ति में उसे तल्हन ही सेनापति नजर आ रहा है।

करिया ने कहा... तलंसीराय, उदास क्यों हो? महोबा के वीर कहां छुप गए? लगता है, सबने चूड़ियां पहन रखी हैं। उसकी बातें सुनकर ब्रह्मा का घोड़ा सेना को चीरता हुआ तल्हन के पास आ खड़ा हुआ। उसके बाद मलखे का और अब ऊदल अपने बेंदुला को नचाता हुआ आकर खड़ा हो गया। मलखान ने कहा- करिंगा राय चुड़िया तो आज तुम्हें पहनाने को लाये हैं।

ऊदल को देख करिया की आंखें फटी रह गईं। वह थूक भी नहीं गुटक पा रहा है, सोच रहा है, अगर अभेद तिलस्म से ऊदल को छुड़ा लिया, तो ये महुबिया कुछ भी कर सकते हैं। वह सामने से भाग भी नहीं सकता है क्योंकि वह चारों ओर से घिरा है। आज तो उसे युद्ध करना ही पड़ेगा। तभी मलखान ने कहा...मांडो के राजकुमार, क्या सोच रहे हो? ऊदल हवा का झोंका है, उसे कोई नहीं बांध सकता। उसकी उमर पर मत जाओ, उसके कार्यों की समीक्षा करो। नगाड़ा बजवाओ और मैदान में आओ...राजकुमार, पहिले वार तुम करो करिंगा ने ताबड़तोड़ वार किए। मलखान सावधान था, उसने वार बचाए। बनाफर कुमार, भाग्य सराहो करिंगा के वार से बच गए; इस बार यमलोक जाने से कोई नहीं बचा सकता। करिंगा ने बातों में लगाकर तीसरा वार कर दिया।

मलखान ने कहा.....पुख्य नक्षत्र में जन्मा हूं, बारह पड़े ब्रहस्पति आय। आन देवता की न मानू, श्ांका करू काल की नाय।।

ले मेरा वार संभाल और सांग फेंकी। करिया ने वार बचाया पर उसके घोड़ा की जीन कट गई। मलखान और करिंगा के बीच दांव पेंच हो रहे हैं, तभी ऊदल ने कहा-..दादा, तुमरी वरनी को नहीं करिया, नाहक राखी देर लगाय। मार गिरावो यहि खेतन में, दादा वीर मलिखे राय। ऊदल की बात सुन मलखान ने घोड़ी आगे बढ़ायी और करिंगा के बाजू से जा तलवार का ऐसा वार किया कि उसका सिर कटकर जमीन पर जा गिरा। ऊदल ने उसका सिर भाले की नोंक पर उठाकर टांग दिया। करिया का कटा सिर देख मांडो सेना भाग गई। ऊदल ने कहा... मां देखो हम करिया का सिर काट कर ले आये। मांडो फतह हो गया समझो।

देवल उसके सिर को कुछ देर देख कर बोली....बेटा ऊदल, करिया का बाकी शरीर भी उठा लाओ। उनके परिवार को अंतिम संस्कार करने को काया नहीं मिलना चाहिए। उसकी ठठरी को मेरे तंबू के सामने पेड़ पर टांग दो, चील कौवे नोंचने दो, जब हम तुम्हारे पिता और काका का संस्कार कर लेंगे। उसके बाद इनका संस्कार होगा। उदल और मलखे शीघ्र ही रणभूमि में जाकर करिया की सिर कटी लाश को लाकर सामने के पेड़ पर टांग देते हैं। देवल मां की आंखों में एक अजीब सी तृप्ति दिखाई दे रही है।

"प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल टॉड ने राजमाता देवल को विश्व की सबसे वीर और चत्रिवान महिला माना है।"

ऊदल ने कहा....दादा, हम बड़ी मां से दूसरे महीना में आने का बोल आये थे। आज एक महीना हो गया, हमें अपनी कुशलता की खबर भेजना चाहिए साथ में करिया का सिर भी। मैंने उनसे वादा किया था कि करिया का सिर उनकी नजर करुंगा।

मलखान ने उसे प्यार करके कहा...ऊदल, तू है तो सबसे छोटा, पर बातें बहुत बड़ी करता है। हमे यह याद नहीं आया।

आल्हा ने रूपन बारी को बुला कर कहा...रूपन जल्दी से महोबा जाओ और ये करिया का सिर आपको नजराने में भेजा है।

उधर महोबा में राजा परमाल हर दिन सूचना की बाट देखते हैं। कच्ची उमर के कारण

उन्हें बच्चों की चिंता है। महारानी मल्हना और तिलका बहुत बेचैन हैं। रात को बुरे सपने आते हैं। खाना पहनना भी नहीं सुहाता है। एक-एक दिन गिन कर काटे हैं। एक महीना पूरा हो गया पर बच्चों की कोई खबर नहीं मिली है। जिसके बारह साल के छोटे-छोटे बेटे लड़ाई करने गए हों उस मां को चैन कहां हो सकता है? वह हर समय पूजा-पाठ में लगी रहती हैं, पर आज तो उनका पूजा में भी मन नहीं लग रहा है। दूसरा महीना लग गया अब धीरज खोने लगा है। वह यहां से वहां उठ बैठ रही हैं। मल्हना की आंख फड़क रही है। माहिल को मौका की तलाश है। उसने आकर रोते हुए कहा...बहना सब कुछ लुट गया, मैं बर्बाद हो गया। मेरे सभी भांजे लड़ाई में जूझ गए कोई भी न बचा। करिंगाराय जैसे शेर से लड़ने दुध मुंहे बच्चों को नहीं भेजना था। अरे वो तो चीता है चीता। खा गया मेरे बच्चों को।

यह सुनकर मल्हना और तिलका चक्कर खाकर गिर पड़ीं। परमाल भी यह सुनकर टूटकर एक ओर बैठ जाते हैं।

सेनापति..महाराज, हम पता कराते हैं; हो सकता खबर झूठी हो, हमें अपने राजकुमारों की वीरता पर संदेह नहीं करना चाहिए।

महाराज ने कहा... सेनापति, जिसे अपने बेटों के मरने की खबर मिली हो उसके दिल का हाल तुम नहीं समझ सकोगे।

तभी एक सैनिक ने कहा ....युद्ध क्षेत्र से दूत आया है।

महाराज ने कहा.... अब तो युद्ध भूमि से भी खबर आ गई और मूर्छित हो गए। दोनो रानियां भी रोने लगीं।

सेनापति ने कहा... दूत को अंदर लाओ, दूत के रूप में रूपन बारी को देख कर सेनापति ने पूछा.... बताओ क्या समाचार हैं?

महाराज सभी समाचार अच्छे हैं। यह सुन सभी चौंक जाते हैं। माहिल चुपचाप खिसक जाता है। मल्हना रूपन को देख पूछती है....रूपन बता मेरे लाल कैसे हैं? तुम मुझसे कुछ छिपा रहे हो। सच बताओ क्या बात है? तभी उनकी नजर कपड़ों पर लगे खून पर पड़ी, जो करिया के सिर को बांधकर लाने से लग गया था। वह चीखीं यह खून कैसा है? बता मेरे किस लाल का है?

रूपन ने करिया का सिर गठरी से निकाल कर मल्हना के चरणें में रख कर कहा.... ऊदल कुंवर, ने वादे के अनुसार करिया का सिर आपकी नजर भेजा है। यह लहू उसी का है। उन्होंने कहा है मांडो को लूट कर शीघ्र ही आवेंगे।

मल्हना...रूपन तू सच कह रहा है? मेरा ऊदल ठीक तो है? उसने सच में करिया को मार डाला है?

हां महारानी जी, सभी राजकुमार कुशल हैं। करिया ही नहीं मांडो के चारों बेटे मारे जा चुके, बस जंबेराय से लड़ाई बाकी है। एक मास की अवधि समाप्त हो गई, तो आपको खबर देने आ गए, सभी को आपकी चिंता हो रही थी। हम वापस जायेंगे।

परमाल.... माहिल तेरी जुबान से ऐसी बात निकली भी कैसे? पर माहिल तो कब का जा चुका था। महलों में खुशियां छा गईं।

सुबह होते ही आल्हा ने पत्र लेकर धावन भेजा..... मांडो में जंबेराय के दरबार में जा कर धावन ने सात कदम से बंदगी की और पाती एक सेवक को दे कर कहा....महोबा के राजकुंवर आल्हादेव जू ने इसका जवाब मांगा है।

जंबे राय पाती पढ़ता है। मांड़ों के महाराज, हमारी आपसे कोई दुश्मनी नहीं है। जिससे

थी उसे हमने मिटा दिया। आप अगर लड़ाई नहीं चाहते तो घोड़ा पपइया, लाखापातुर, नौलखा हार, सौ छकड़ा मुहरें, हमारे पिताश्री-काकाश्री के सिर और साथ में अपनी बेटी बिजमा का डोला दे कर हमारी मित्रता स्वीकार कर लें। इतना पढ़ते ही जंबेराय की आंखें लाल हो गईं।
वह चिल्ला कर बोला...कह देना अपने आल्हा से, उसकी ऐसी पाती लिखने की हिम्मत कैसे हुई? हम अपनी बेटी का डोला नहीं देंगे। वह अपने को बड़ा लड़ैया समझता है। मैं उन महोबियों के सिर काटकर बाप के बगल में लटका दूंगा। वह यह नहीं जानता कि लौहगढ़ की दीवालें अभेद्य हैं। इस दुर्ग तक कोई भी बाहरी सेना नहीं आ सकती। अंदर आने का एक मात्र रास्ता है फौलादी फाटक उसे कोई नही भेद सकता। वे सब बाहर इंतजार करके थक हार कर वापस लौट जायेंगे। इससे अच्छा है अभी लौट जायें।
जंबेराय ने अपनी सेना को आदेश दिया ......किले का फाटक बंद कर दो। लाल कमान दल को फाटक की सुरक्षा में किले पर तैनात कर दो। फाटक पर जो दिखे मार डालो। महोबा वाले सिर पटककर मर जायेंगे, पर फाटक नहीं तोड़ पायेंगे।
धावन वहां से वापस कर आल्हा से सारा हाल बताता है। आल्हा ने कहा ....सारी फौजें तैयार करो और मांड़ो के फौलादी फाटक पर धावा बोल दो। देखें कैसा फाटक है? कब तक जंबेराय अपने बिल से बाहर नहीं आता है? सारी सेना मांड़ो के फाटक पर पहुंच जाती है। उस पर अचानक ही किले के ऊपर से तीरों की बरसा होने लगती है। यहां से भी तीर चलने लगते है। दोपहर तक ऊपर की सेना कम हो जाती है, अब वह बचाव की स्थिति में रहकर छुप कर तीर बरसा रही है।
ऊदल ने कहा ... इस तरह हम कब तक फाटक खुलने का इंतजार करें? जंबेराय कोई पानीदार वीर योद्धा नहीं है कि अपनी शान बचाने को सामने आ जाये। वह तो कायर है। चूहे की तरह बिल में बैठ गया है और बैठा ही रहेगा।
ब्रह्मा ने कहा ....उसे बिल से बाहर तो आना पड़ेगा, तो मलखान बोले....वह आयेगा नहीं, उसे हम बाहर ले के आयेंगे।
आल्हा ने कहा....हम कैसे लायेंगे, तो तल्हन ने कहा....हमें उसी सुरंग के रास्ते अंदर जाना चाहिए।
ऊदल को छुड़ाने के बाद उन्होने वो सुरंग बंद कर दी होगी। मलखान ने कहा
ऊदल..... हम उनकी तरह छिपकर वार नहीं करेंगे। जिस फौलादी फाटक पर जंबे को इतना गर्व है हम सबसे पहिले उस फाटक को तोड़ेंगे। पंडित बता....ये फाटक कैसे टूट सकता है? ढेबा ने रसायन की पोथी निकाल कर बताया कि शीशा और लोहा के मेल से बना फाटक आग में गर्म होकर कमजोर हो जायेगा फिर उस पर लट्ठे से हाथियों के द्वारा ठोकर लगाई जाये तो वह टूट जायेगा।
आल्हा ने कहा ...फाटक के आस-पास सुरंग खुदा कर उसमें जंगल से लकड़ी लाकर भरवाने का इंतजाम करो।
तल्हन, धनुआं लाला तमोली, मन्ना गूजर, वीर बांकुरा, धन्नी गड़रिया और दया लुहार सभी ने कहा काम हो जायेगा।
रातों रात फाटक के नीचे एक सुरंग खोदी गई। उसमें जंगल की लकड़ी भरी गई। फाटक के बाहर जो कोठरी बनी थीं उसमें भी लकड़ी भर दी गईं, घी के कुछ पीपा डाले गए, दो रातों में यह तैयारी कर ली गई, अब तीसरी रात का इंतजार था। रात होते ही उन सबमें आग लगा दी गई। कुछ ही घंटों में चारों ओर आग फैल गई। और भोर की बेला में

फाटक का शीशा लाल होकर पिघलने लगा और देखते ही देखते लट्ठे की ठोकर से फाटक टूट गया। गरम होकर दीवालें भी चटक कर कमजोर हो गईं थीं कुछ ही देर में उन कमजोर दीवारों को तोड़कर महोबा की सेना मांड़ों में दाखिल हो गई। उस ओर तैनात सेना पल भर में मिट गई। जो करिंगा ने लोहानी सुरंग छुपने के लिए बनाई थीं वह गरमी पाकर इतनी गरम हो गईं थी कि उनमें जाना मानों मौत के मुंह मे जाना था। बचे सैनिकों ने भोर होते ही महल में जाकर कहा....महाराज, महोबा वाले फाटक तोड़कर घुस आये हैं। यह सुन जंबराये का पसीना छूट गया। जिसे वह अभेद्य समझ रहा था। वह तो उनके लिए खेल बन गया। अपने ईष्ट का ध्यान करके उसने अपने सभी हथियार बांधे कवच पहने और हाथी पर सवार हो कर अपनी सेना ले कर चल दिया।
उधर महोबा की सेना ने मांड़ों में मारकाट मचा रखी थी। जंबे ने ललकारा....कौन महुबिया है, जिसने मेरे बेटों को मारा है?
ऊदल ने सामने आकर कहा... हम ही हैं जिसने तुम्हारा वंश नाश कर दिया है।
जंबे ने कहा... अरे मूर्ख बालक, आज अपने ईष्ट को ध्यान करले, तेरा काल आ गया है।
ऊदल...अरे महाराज, इम्तहान में फेल आप हुए और मूर्ख हमें कह रहे, जरा आत्म निरीक्षण करिये पता चलेगा कौन मूर्ख है?
जंबेराय ने कहा ... रे मूर्ख! ले मेरा वार सँभाल और सांग फेंक कर ऊदल पर उछाल दी। ऊदल ने उसे बचाया, तो जंबेराय ने गुर्ज चला दी। ऊदल के घोड़े ने अपने को बहुत बचाया पर फिर भी वह हिल गया और पांच कदम पीछे हट गया। यह देख तल्हन ने जंबे पर अपना तेगा चलाया। जंबे ने उस पर अपनी शिरोही चला दी। तल्हन का घोड़ा लड़खड़ा गया। जंबेराय सबके ऊपर ताबड़ तोड़ प्रहार कर रहा है उसके सामने कोई नहीं टिक पा रहा है।
ऊदल ने आल्हा से कहा....दादा, अब जंबे से आप मोहरा लीजिए। वह पागल हो गया है। आपको मलखन दादा और दादा को ब्रह्मा पीछे से कवच देंगे। उनके पीछे हम सब रहेंगे। इस तरह से योजना बनाकर वह आगे बढ़े। आल्हा ने अपना हाथी उसके बराबर ला कर कहा....महाराज, नाहक में गाजर मूली काहे कट रहे हो? हमारी तुम्हारी बरनी है सो सामने आ जाओ।
जंबे ने कहा...तुम बच्चे हो हमको क्या सिखाते हो? हथियार चलाओ। आल्हा बोला.... पहला वार हम नहीं करते। आप करिये
जंबे ने अपने तरकश से तीर निकाल कर आल्हा के उपर चला दिया। आल्हा ने ढाल अड़ाकर बचाया। जंबे ने तुरंत ही सांग चला दी। आल्हा बाल-बाल बचे, तीसरी बार में हाथी आल्हा के बाजू से ले जाकर भाला से वार किया। आल्हा ने ढाल अड़ाकर वार बचाया और दूसरे हाथ से सांग फेंककर महावत को मारी, महावत गिर गया। उसके गिरते ही जंबेराय ने तलवार का वार किया। आल्हा ने भी तलवार अड़ा दी अब दोनों के बीच खट-खट तलवार चल रही है। दोनो तलवार के धनी हैं। बहुत देर तक आपस में जूझते रहे, कोई भी हार मानने को तैयार नहीं है। सभी सांस रोककर इनका युद्ध देख रहे है। तभी मलखान नें आल्हा के महावत को इशारा किया कि वह जंबराय के हाथी पर चोट करे। महावत ने सांकल खोलकर हाथी को इशारा किया। पचशावद ने सिर की टक्कर मारकर जंबे को हौदा से नीचे गिरा दिया उसके गिरते ही आल्हा ने उसके गले पर तलवार रख दी।
मलखान ने चारों ओर से घेरकर बांधा लिया। अब जीत का नगाड़ा बजने लगा। मांडो के

सैनिक मोर्चा छोड़ कर भाग गए।
ऊदल ने कहा... जाओ जवानो मांडो का दरबार लूट लो। तीन घड़ी की लूट माफ है ध्यान रहे किसी माता बहन को हाथ नहीं लगाना है ना ही नुकसान पहुंचाना है। सारी सेना जीत की खुशी में दरबार की कीमती चीजों पर टूट पड़ी। तीन घंटे बाद लूट बंद करने का आदेश हुआ। जंबेराजा को बंदी बनाकर बनाफर कुमार मांड़ो में घुस आये हैं तो वह रानी कुशला आल्हा के पास आकर बोली..मैं आपकी मां समान हूं, जो गल्ती हुई उसे माफ कर दीजिए। हम जानते हैं आप अबलाओं पर हाथ नहीं उठाते।
ऊदल ने कहा ... हमारी आप से कोई बुराई नहीं है, हम चाहते हैं आप पपइया घोड़ा, नौलखा हार, लाखा पातुर, पचास बचका पश्मीना, हमारे पिता श्री, काकाश्री के सिर, राजकुमारी बिजमा का डोला, और अपने खजाने से सौ छकड़ा भराकर हर्जाना देंगी।
रानी कुशला ने कहा .. सब कुछ आपका है आप जो कहेंगे हम देने को तैयार हैं। आपकी राजमाता का स्वागत हम स्वयं फाटक पर जाकर करेंगे। इसके बाद महारानी ने आरती का थाल मंगाया, सोने के दो थाल खाली मंगाये, गंगाजल मंगाया।
आल्हा ने पालकी माता देवल को लाने को भेज दी थी, अब तक राजमाता देवल मांड़ो में आ गईं। आल्हा और रानी कुशला ने उन्हें आदर सहित पालकी से उतारा फिर उनको साथ लेकर रानी कुशला बरगद के पेड़ के पास पहुंची। ऊदल ने आदर सहित सिरों को उतारा और गंगा जल भरी सोने की थाली में रखा उन पर रेशम का वस्त्र उड़ाया और उनकी आरती उतारी।
उसके बाद वे सब बंदी जंबेराय को लेकर उस कोल्हू पर गए जहां पर उनके पिता को कोल्हू से बांध कर रखा था। उदल ने जंबेराय को कोल्हू में जोतकर कहा- देख करिया तेरे बाप के साथ भी वही सलूक हो रहा है। उसके बाद तलवार निकाल कर जंबेराय का सिर काटना चाहा, तभी रानी कुशला ऊदल के पैरों पर गिर पड़ी और बोली हमारे पति का इसमें कोई हाथ नहीं था। हमने अपने बेटे को समझाने की बहुत कोशिश की पर वह नहीं माना और उसका परिणाम उसे मिल गया। बस आज आप हमारे सुहाग को हमें लौटा दीजिये। उसने सभी आठ-दस पोते पोतियों को साथ ले कर कहा... हम हमेंशा ही इन बच्चों के साथ आपके कर्जदार रहेंगे। अभी तो हमें बेटी का कन्यादान भी करना है। बेटी का कन्यादान कौन करेगा?
उसी समय दस्सराज और बच्छराज की आवाज आई...बेटा, आज मेरी आत्मा मुक्त हो गई। तुमने वीर बेटों का फर्ज निभाया। संसार में तुम्हारा नाम अमर रहेगा। अब तुम गंगा में हमारी अस्थियां विसर्जित कर देना। सभी ने कहा - जी पिता श्री।
ऊदल ने रानी कुशला से कहा....महारानी जी, आपने जो कुछ अपनी आंखों से देखा है, वह हमारा कृत्य नहीं है। हम तो अपने दुश्मन के घर की महिलाओं का भी सम्मान करते हैं। यह सब तो करिंगाराय की करनी थी जो दुहराई गई है। हमें अपने पिताश्री, काकाश्री की आत्मा की शांति और अपनी राजमाता की कसम पूरी करने के लिए यह सब करना पड़ा।
इसके अलावा एक बेटे के फर्ज को भी पूरा करना था। अब आप हमारी धर्म की माता हैं। आप को कोई भी परेशानी हो हम तुरंत ही सहायता को आयेंगे। जब तक आपके पोते सयाने नहीं हो जाते, तब तक आपकी रक्षा करना हमारा फर्ज है। जो भी मांडो की तरफ आंख उठा कर देखेगा हम उसकी आंखें निकाल लेंगे। महोबा वालों ने इस वचन को निभाया भी। उसी समय करिंगाराय के पुत्र विंध्यवर्मन को विधिवत् राजा बना कर

गद्दी पर बिठाया, इस समय उसकी उम्र 12 साल थी। उसने 1162ई. से लेकर 1193ई. तक मांडो पर राज्य किया। इसका इतिहास परमार वंशावली में मिलता है।
राजा रानी ने बिजमा का ब्याह ऊदल के साथ कर दिया, घोड़ा पपइया, लाखापातुर सहित और भी बहुत सा सामान देकर विदा किया। राजकुमारी का डोला लेकर वह महोबा को चल दिए। सब कंटीले वन में रात विश्राम करते हैं, तंबू में सभी भाई बैठे हैं। आल्हा ने समझाया....बैरी की लड़की से ब्याह नहीं करना चाहिए। उसके पिता के साथ जो किया वह उसे कैसे भूल सकेगी?
ऊदल ने तमक कर कहा .....उसके भाई ने हमारे पिता के साथ जो किया वह क्या भूलने लायक था?
आल्हा... हम यही तो समझा रहे हैं, दोनों ओर से जो हुआ वह भूलने लायक नहीं है। ऐसे में बिजमा से ब्याह करना उचित नहीं है। वह अपने पिता और भाइयों की मौत का बदला कभी भी, हम सबसे ले सकती है। वह हमारे साथ छल कर रही है।
ऊदल....दादा, मैंने गंगा उठाकर वचन दिया था, क्षत्रिय होकर वचन कैसे तोड़ सकता हूं, पर उसके तेवर देखकर ऐसा लग रहा है कि वह बहुत नाराज है, कुछ खा पी नहीं रही है। देखकर ऐसा लगता है कि घायल सिंहनी है, आंखों से आग बरस रही है।
मलखान ने कहा.... दादा, अभी तो हम सब जीत का जश्न मनायें। महोबा चल कर इस समस्या पर विचार करेंगे। अर्धरात्रि को सभी सो रहे हैं। मलखान, ऊदल, ब्रह्मा एक ही तंबू में हैं, मलखान को ऊदल की चिंता में नींद नहीं आ रही है, तभी आहट पाकर उसने आंखें खोली, तो देखा कि बिजमा हाथ में नंगी कटार लिए तंबू में आई, वह सोते हुए ऊदल की ओर बढ़ रही है, तभी मलखान ने पानी का बर्तन गिराया, आवाज सुनकर वह छुप गई और मलखान भी उठकर बैठ गया। यह देख वह अपने तंबू में वापस चली गई। अब मलखान को यकीन हो गया कि वह ऊदल से धोखा करने ही आई है। उससे पीछा छुड़ाना ही पड़ेगा।
करीब दो घड़ी रात जाने पर मलखान लाला तंबोली और धनुआं तेली को चुपचाप जगाकर बाहर आ जाते हैं। मलखान ने जो देखा वह बताकर कहा- आज तो हमने बचा लिया कल किसने देखा? काका, आप जानते हैं कि बिजमा जादू जानती है। वह कभी भी कोई रूप रखकर ऊदल को नुकसान पहुंचा सकती है, हम किसी अबला नारी पर हाथ कैसे उठा सकते हैं।
ललातंबोली ने कहा- राजकुमार वह अबला नहीं घायल शेरनी है जिसे जिंदा नहीं छोड़ा जाता, रही बात वचन की तो दुश्मन से क्या वचन निभाना? वचन ऊदल ने दिया हमने नहीं, तोमलखान बोला-आप जो उचित समझो करो और ऊदल की जान बचाओ।
सुबह होते ही सभी चलने की तैयारी कर रहे हैं। तभी सैनिक ने चिल्लाकर कहा....राजकुमारी जी अपने तंबू में नहीं है। पीछे से तंबू फटा है। पंजों के निशान हैं, घसीटे के निशान हैं, लगता है, राजकुमारी को शेर उठा ले गया। हल्ला सुन कर सभी आते हैं।
माता...दुखद बात है कि हम बहू की रक्षा न कर सके, उसकी मां को क्या जवाब देंगे?
मलखान ने कहा....हम जीत की खुशी में गहरी नींद सोते रहे और राजकुमारी बिजमा को शेर उठा ले गया।
ऊदल ने मलखान से कहा....दादा, खूंखार शेरनी को शेर उठा ले गया, यह बात समझ में नहीं आई?

मलखान ने कहा...शेर तो शेर है, उसके सामने जो पड़ जायेगा उसे ही उठा ले जायेगा। चलो अब चलने की तैयारी करो। और वहां से चला गया, तो ऊदल बोला - दादा, शेर का शिकार कोई दूसरा कैसे ले जा सकता है। जबकि ये निशान तो.....
मलखान ने कहा- ऊदल, ये निशान-विशान कुछ नहीं, देखो जो होना था सो गया अब शीघ्र ही चलने की तैयारी करो।
मलखान बोला..दादा, का हुकुम है कि हम दोनों प्रयागराज जाकर पिताश्री और दादाश्री का श्राद्ध करके दानपुण्य करें।
महोबा नगर सजाया गया है। रानी और राजा परमाल बहुत खुश हैं। उनके बेटे पहली विजय करके आ रहे हैं। दूर से लश्कर की धूल दिखी, तो मल्हना अटा से उतरकर आरती करती है, सभी बेटों को देख सिर गर्व से ऊंचा हो गया, नेत्रों से खुशी के आंसू बहने लगे, मल्हना सभी को सीने से लगाकर बोली.....धन्य हो बेटा, जुग-जुग जियो, युगों-युगों तक तुम्हारा नाम अमर रहे।
आल्हा ने कहा.... बड़ी मां अपके आशीर्वाद और दादा महाराज की दी हुई शिक्षा से ही ये सब संभव हो सका है।
परमाले ने कहा....सभी सैनिकों की तनख्वाह दुगनी की जाये। युद्ध क्षेत्र में जिन लोगों ने उत्साह पूर्वक खास कार्य किया है, उनकी उन्नति की जाये, जेल में बंद कैदियों को रिहा किया जाये, याचकों को दान दिया जाये। एक माह तक उत्सव मनाया जाये।

14-सिरसा की लड़ाई

मांडो की जीत के बाद महोबा की कीर्ति पताका चारों ओर फहरा रही थी। इस समय दो ही राज वंश चर्चा में थे। एक तो दिल्ली के पृथ्वीराज चौहान और दूसरे महोबा के बनाफर राजकुमार। परमाल सभी बच्चों को एक ही नजर से देखते थे। दसपुरवा में महल बनवाये एक सुसज्जित राजदरबार भी बनवाया। जिसे आल्हादरबार कहा जाता था। सभी भाई का दरबार यहां पर ही लगता था।

माहिल इसी प्रयास में रहता कि इनका सर्वनाश कैसे हो? इस समय पृथ्वीराज जैसे योद्धा से इनको भिड़ाना ही इनका सर्वनाश कर सकता है। एक दिन उसने मलखान को अकेला देखकर कहा...... चलो भांजे, बागों की सैर कर आयें।

मलखान ... मामा कुछ कहना चाहते हो? हां चलो वहीं पर बतायेंगे, बागों में जाकर माहिल बोला.....बेटा, तुमने अपने बाप का बदला करिया से ले लिया इस बात से हम सभी खुश हैं, पर तुम्हारे स्वर्गवासी पिता की आत्मा को शांति नहीं मिली होगी।

मलखान ने चौंक कर पूछा....मामा जी, मेरे पिता की आत्मा को शांति क्यों नहीं मिली होगी?

माहिल.... देखो बेटा, देवल कहना नहीं चाहती कि उसके बेटे पृथ्वीराज चौहान जैसे महायोद्धा से बैर मोल लें। देवल और मल्हना अपने बेटों को लड़ाई से बचाना चाहती हैं। इसीलिए ये बात तुमको कोई नहीं बता रहा है, पर मैं जानता हूं कि मेरे जीजा श्री की आत्मा अभी भी भटक रही है। वह बार बार मेरे सपने में आकर मुझसे सवाल करते हैं। उसी आत्म शांति के लिए मैं ये बात बता रहा हँू। परमाले ने सिरसा की जागीर तुम्हारे पिता को मित्रता की भेंट में दी थी वह सिरसा का राज देखते थे, वहीं रहते थे। वह तो संयोग था कि उस दिन रंगपंचमी मनाने आये थे। इतना कहकर माहिल चुप हो गया। ...मामा जी आगे बताइए क्या हुआ?

माहिल....तुम्हारे पिता की मौत के बाद पृथ्वीराज ने सिरसा पर कब्जा कर लिया और अपने राज में मिला लिया। इस समय उसका बेटा पारथराज वहां का राज संभाल रहा है। अब आप ही सोचो जब तक आप सिरसा को अपनी राजधानी नहीं बनाते हो, तब तक आपके पिता की आत्मा को शांति कैसे मिलेगी? राजकुमार, आज आप समरथ हो। बावनगढ़ मे आपके आगे टिकने वाला कोई नहीं है। यही मौका है कि अपना सिरसा वापस ले लो। आप तो अकेले ही पारथ पर भारी हो। मांड़ो आपके दम पर जीता है और हार ऊदल पहिने फिरता है। आप तो बिना बताये ही कूच कर जाओ हम तुम्हारे साथ हैं।

माहिल की बातें सुनकर मलखान के बदन में आग लग गई, वह बोला .... मेरे रहते मेरे पिता के राज सिंहासन पर कोई और कैसे बैठ सकता है? मैं अभी सिरसा जाने की तैयारी करता हूँ। मलखान माहिल का स्वभाव जानता था, सो उसने सबसे पहिले तल्हन से पूछा.... काका, सही बताना सिरसा मेरे पिताश्री का राज था और उसे पृथ्वीराज ने दबा लिया है?

तल्हन बोला...हां बेटा, मेरे मित्र की मृत्यु के बाद उसे पृथ्वीराज ने ले लिया था, अब समय आ गया है हम उसे वापस ले लें।

सभी महोबा दरबार में आते हैं। महाराज ने प्यार से पूछा...आज राजकुमारों की सवारी

एक साथ कहां जा रही है? किसकी शामत आई है? सभी चुप रहे। मलखान को उदास देख परमाले ने पूछा.....पुत्र मलखान, तुम्हारे मुख पर ये उदासी क्यों है? किसी ने कुछ कहा तो बोलो, तुमसा वीर दूसरा नहीं है। आज मेरा राज्य बेखौफ चल रहा है, वह तुमसे ही है, तुम बच्छराज और तिलका के कुल दीपक हो। मलखान मैं सच कह रहा हूं, जबसे तुमने तलवार गही है, तबसे मैं चैन की नींद सोता हूँ। जिनके तुम्हारे जैसे समर्थवान पुत्र हों उसे किस बात की चिंता। आज जो भी है, राज-पाट, माल खजाना वह तुम छहों का है। बेटा तुम्हारी जो इच्छा हो लेलो।

मलखान ने हाथ जोड़ कर कहा.....दादा महाराज, आप मुझे लज्जित कर रहे हैं। यह सब तो आपके और बड़ी मां के आशीर्वाद का फल है, हमारा सौभाग्य है कि आपकी छत्र-छाया मिली हुई है। ये आपका स्नेह है कि आप हमारा मनोबल बढ़ाते रहते हैं। मलखान जानता है पृथ्वीराज से युद्ध की अनुमति नहीं देंगे इसीलिए वचन लेना चाहता है, पर कैसे? यही सोचकर कहा..महाराज, कुछ कहता हूं तो मन में शंका उठती है, चुप रहता हूं तो मन में बेचैनी होती है। इसीलिए मेरी गल्ती को क्षमा कर देना।

परमाल ... पुत्र, आपको जो भी कहना है कहो, हम भरे दरबार में वचन देते हैं कि आपकी हर बात पूरी करेंगे।

आल्हा सहित सभी भाई यह सोच रहे हैं कि मलखान ऐसा क्या मांगने वाला है? जिसके लिए उसे इतना संकोच हो रहा है?

मलखान ने कहा....महाराज, कई राजाओं को जीत कर, ये माल खजाना राज-पाट सब कुछ आपके चरणों में अर्पण कर दिया है। अब उसे क्या मांगूं? आपके बाद यह सब मेरे भ्राता ब्रह्मा का है। आप तो बस इतनी दया कर दीजिए कि मेरे पिता श्री का राज सिरसागढ़, जो पृथ्वीराज ने दबा लिया है, उसे वापस लेने की आज्ञा दे दीजिए। मैं पारथ को भगा कर सिरसा के किले पर महोबा का ध्वज लहराना चाहता हूं। मलखान की बात सुनकर मानों सभी पर गाज गिर पड़ी, सभा में सन्नाटा छा गया।

परमाल राजा मन में सोच रहे हैं, अगर इसे युद्ध की आज्ञा देता हूं, तो पृथ्वीराज से लड़ना आसान नहीं, वह मुहम्मद गोरी को चार बार हरा चुका है। सारे संसार में चौहानो का डंका बज रहा है। ऐसे में पृथ्वी से लड़ना अपना वंश नाश कराना है।

परमाल ने कहा....पुत्र, तू सिरसा की बात क्यों करता है। तू जहां कहे वहां नया राज बसा दूं। नया किला बनवा दूं। तू कहे तो महोबा खाली कर दूं। कालिंजर का किला खाली पड़ा है, वहां रुकमन देव उसकी देख भाल कर रहा है। तुम उसे ले लो, उसका विस्तार करो। पुत्र मेरी बात मानो, पृथ्वीराज से मत उलझो। वैसे भी हमारी मित्रता जयचंद से है, तो वह हमसे खुश नहीं है, इसी मित्रता के कारण ही तो सिरसा दबाया था, पर हमने सोचा रिश्तेदार है रहने दो। तुम भी सिरसा को भूल जाओ।

मलखान...महाराज आपने वचन दिया है, हां कहिए। मैं सिरसा को दिल्ली से सुन्दर बसाऊंगा। घूरे-घूरे पर महल बनवा दूंगा।

आल्हा ने कहा....सिरसा दिल्ली से पास है, पृथ्वीराज अपने वीरों संग बार-बार चढ़ाई करके, महलों को फिर घूरा बना देगा। और हम सब उसी लड़ाई में उलझे रहेंगे। इसमें कोई समझदारी नजर नहीं आ रही है। बैठी ततैयां न उड़ाओ। इससे अच्छा है महाराज की बात मान कर कालिंजर के आस-पास का हिस्सा आबाद करो। इतना सुनकर मलखान क्रोधित हो बोला...दादा, मैं सिरसा अपने बलबूते पर लेने की बातकर रहा हँू, मुझे किसी की सहायता की जरूरत नहीं है। पृथ्वीराज अमरौती खाकर नहीं आया,

ना ही उसकी काया वज्र की है, वह भी हमारे जैसा ही है, मृत्यु जब होना होगी, तभी होगी। इस संसार में कोई अमर नहीं है।
महाराज ने कहा....कटक से दिल्ली तक उसका राज है। जरूरत पड़ने पर वह शब्दभेदी बाण भी चला सकता है। तुम क्या सारे भ्राता मिलकर भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते हो। बैठे बिठाये क्यों सांप की बांबीं में हाथ डालते हो?
मलखान...महाराज, आपको पुत्रों की चिंता है तो मैं वचन देता हूं कि मैं अकेला ही जाऊंगा, कभी आपको नहीं बुलाऊंगा।
महाराज.....वत्स, ब्रहमा मेरी जान है, तो तू मेरा हृदय है। तू राज-पाट की बात करता है, मैं तो तेरे ऊपर अपने प्राण न्योछावर कर दूं। संकट में तू भले ही न याद करे, पर मैं सुनकर ही तेरी ढाल बनकर खड़ा हो जाऊंगा।
मलखान ने चरण पकड़कर कहा...महाराज, जब आप जैसे चक्रवर्ती राजा का हाथ मेरे सिर पर है, तो मुझे किस बात की चिंता?
ऊदल ने उठकर कहा....महाराज, गल्ती की माफी चाहता हूं, मैं दादा की बात से सहमत हूं पृथ्वीराज वीर है तो हमने भी चूड़ियां नहीं पहन रखी हैं हमारी माता ने भी सिंहा जाये हैं। मैं दादा के साथ जाकर पृथ्वी से सिरसा छीनकर महोबा का मान बढ़ाऊंगा।
महाराज ने सोचा अब तो ऊदल का साथ भी मिल गया है। वह रोके से नहीं रुकेंगा, तो पीठ ठोककर बोले.....जाओ पुत्र, पृथ्वीराज से अपना सिरसा वापस लेलो। उस पर ऐसा कहर बन कर टूटो कि उसे भी पता चले महोबा में भी वीरों का बसेरा है।
मलखान ने ढेबा से कहा... पंडित, अब तुम भी बता दो, तुम्हारी पोथी क्या कह रही है?
ढेबा बोला.....सब ओर से ग्रह साथ हैं। आपकी विजय होगी। तभी मलखान बोला.....मैं सभी से निवेदन करता हूं कि मेरे साथ कोई नहीं जायेगा; मैं अकेला जाने को वचनबद्ध हूं। पृथ्वीराज के लिए मैं अकेला ही काफी हूं। उदल ने कुछ कहना चाहा, पर तल्हन ने इशारे से मना किया। मलखान ने वस्त्र पहने सभी हथियार बांधे और मल्हना, माता तिलका से जाने की आज्ञा ली।
मल्हना ने कहा...मुझे अपने लाल पर पूरा भरोसा है; वह सिरसा लेकर ही आयेगा। उसके बाद उसने आरती उतार कर उसके बाजू पूज कर युद्ध पर जाने की आज्ञा दी...विजयी भव। मलखान पैर छूकर अपनी बछेड़ी पर बैठ कर बोला...मैं चंडिका माई और मनियां देव की पूजा करके वहीं से चला जाऊंगा। सभी उसे खड़े देखते रह जाते हैं। उसके जाते ही तल्हन ने कहा.....वह हठी है, अकेला ही जायेगा। अभी मैं उसके साथ जाता हूँ। आप सभी परसों सारी फौज साथ लेकर आ जाना और उससे कहना......वह वचनबद्ध था अकेला जाने को, सो अकेला गया। हम सब वचन बद्ध हैं साथ निभाने को, सो बाद में आ गए।
मलखान और तल्हन विल्ह नदी पार पहुंचे, यहां से सिरसा की दूरी तीन कोस है। एक ही तंबू में दोनों विश्राम कर रहे हैं, पर मलखान को नींद नहीं आ रही, भाइयों की याद आ रही है, आज तक हर सुख दुख में साथ रहे, पर आज सबने मुझे अकेला छोड़ दिया। कुछ देर में नींद आ गई, मलखान सुबह उठता है, तो दूर आसमान में उसे धूल के गुबार दिखाई देते हैं।
वह तल्हन से बोला...काका किसी और की सेना भी सिरसा पर चढ़ाई करने आ रही है।
तल्हन ने कहा... पास आने दो तभी पता चलेगा किसकी है? कुछ पास आने पर मलखे बोला... यह तो महोबा की सेना के निशान हैं। अरे ये तो अपनी फौज है। तब तक सभी

भाइयों के घोड़ा पास आ जाते हैं। सभी उतरकर कर बारी-बारी से गले मिले।
मलखान ने कहा... आप आ गए। सच में सबकी बहुत याद आ रही थी, कहीं मन नहीं लग रहा था।
ऊदल बोला....दादा, आपने कैसे सोच लिया कि हम आपको अकेला छोड़ देंगे। सभी के तंबू तन गए। आल्हा का दरबार लगा और पाती लिखी गई..दिल्ली के राज कुमार राम जुहार, सिरसा का किला हमारे पिता वत्सराज का है, जो आपके पिता ने उनकी मृत्यु के बाद दबा लिया था इसलिए वह आपका नहीं है, युद्ध करके जीती गई चीज आपकी होती है चुराई गई नहीं। अब हम समर्थ हो गए हैं और अपना किला वापस लेने आये हैं। आप अपनी दिल्ली चले जाइए। अगर आप लड़ना चाहते हो तो हम तैयार हैं।
धावन की दी पाती पढ़कर पारथ बोला...इस पाती का जवाब भेज दो। सिरसागढ़ मांगे से नहीं मिलेगा। हमसे युद्ध करो और जीत जाओ तो सिरसा पर राज करो। पाती पढ़कर मलखान के बदन में ज्वाला धधकने लगी दूसरे दिन दोनों सेनायें मैदान में थीं।
पारथ ने कहा ... बारह बरस से यह राज्य हमारे अधिकार में है। इसे वापस लेने का तुम्हें कोई अधिकार नही है।
मलखान- किसी की ली हुई वस्तु पर अपना अधिकार नहीं मानना चाहिए, असली अधिकारी आने पर उसे वापस देनी चाहिये।
पारथ ने कहा ... अब तो यह मेरी है, तुम इसे वापस छीन सको तो छीन लो। यह कहकर पारथ ने आक्रमण कर दिया दोनों ओर की सेनायें जमकर लड़ने लगी। मलखान बाज की तरह झपट-झपट कर पारथ पर वार कर रहा है। दूसरी ओर ऊदल उसकी सेना का सफाया कर रहा है। दिन भर में पारथ की सेना के पांव उखड़ गए। सारी सेना मरखप गई, जो बचे वह भाग गए।
अकेला पारथ सोच रहा है, महोबा वाले सचमुच बड़े लड़ाका हैं, शाम होते ही युद्ध समाप्ति का नगाड़ा बज गया। पारथ ने बहुत संकोच के साथ रात को ही पत्र लिखा...पूज्य पिता श्री, सादर चरण बंदन, महोबा के बनाफर कुमार मलखान ने एक लाख से सिरसा पर चढ़ाई करी है। युद्ध में हमारे सैनिक मारे गए। आप जल्दी ही फौजें भेजिए अन्यथा सिरसा हमारे हाथ से निकल जायेगा।
पत्र पढ़कर पृथ्वीराज ने कहा....महोबा वालों की मौत उन्हें सिरसा खींच लाई है। पुत्र चंदन, अपनी सेना सजाकर, एक लाख लश्कर लेकर अभी सिरसा कूच करो, साथ में चौड़ा काका व धांधू को भी ले लो। महोबा की सेना ने सिरसा पर चढ़ाई करी है। पृथ्वी ने सोचा हिसार का राजा धीरजदेव का राज्य सिरसा का पड़ौसी राज्य है वह हमारा मित्र है उसे सूचना देना चाहिए।
अब तक दिल्ली की सेना आ चुकी थी। धांधू का ऊदल से और ब्रह्मा का चौड़ा से घमासान युद्ध हुआ। पारथ ने दुगने उत्साह से युद्ध किया, पर दो दिन में ही उसका उत्साह ठंडा पड़ गया उसकी आधी सेना नष्ट हो चुकी थी।
आल्हा बोला.... परथ कुमार, बहुत नरसंहार हो चुका, क्यों न हम प्रमुख सामंतों के सहित आपस में धर्म युद्ध कर लें, जो भी जीत जाये वह सिरसा ले ले। पारथ ने कहा ... हमें मंजूर है, पर कौन किसके साथ लड़ेगा यह हम तय करेंगे। इस प्रकार... धीरजराय-तल्हन, आल्हा-चैड़ियाराय, चंदन-उदयराय, धांधू-ब्रह्मा और मलखान के साथ मैं युद्ध करुंगा। सभी मैदान में खड़े हैं। नगाड़ा बजते ही तीन पहर तक युद्ध हुआ। पारथ सहित सभी एक-एक कर हार गए, तो अपनी सेना को आदेश दे दिया आक्रमण और तैयार

खड़ी सेना आपस में भिड़ गई। कुछ ही घंटों में सेना के पांव उखड़ गए, अब आल्हा सेना सिरसा में घुस गई।
मलखान ने कहा... प्रजा की जान बख्श कर, बाजार व दरबार लूट लो, महोबा की सेना ने लूट मचा दी। दो पहर के बाद लूट बंद करा दी। मलखान ने सिरसा सिंहासन पर कब्जा कर लिया। दूसरे दिन सब दरबारियों के सामने मलखान का राजतिलक हुआ और मलखान सिरसा के राजा बन गये। कुछ दिन रहकर आल्हा ऊदल महोबा वापस गए। इतिहास में 26 युद्ध मलखान ने और 26 युद्ध ऊदल ने जीते थे। मलखान ने अपने राज्य को अपने तरीके से निर्माण कराया, नए किले बनवाये। नगर कोट की दीवार बनवाई। और अपने रहने के लिए एक भव्य किला बनवाया। उसके बाद अपनी माता को आदर सहित लाकर महलों में रखा और उसे भी राजमाता का दरजा दिया। अपने भाई सुलखान को सारा राज-काज समझाकर राज्य की जिम्मेदारी दी, मलखान तो अधिकतर महोबा में ही रहता था। इसकी जानकारी अजयगढ़ शिलालेख 1163 ई. एवं सरकनपुर मूर्तिलेख 1164 ई. से मिलती है।
मलखान का राज्य अलग हो जाने पर राजा परमाल ने एक दिन आल्हा ऊदल को बुलाकर कहा... पुत्र, कालिंजर एक बहुत ही पवित्र नगरी है, उसके आस-पास का इलाका बिना देख-रेख के पड़ा है। जमना पार के कई सूबों से कर भी नहीं मिला है। मेरी इच्छा है कि अब आप कालिंजर के किले को आबाद करके उसे अपनी नई राजधानी बना लो। वह इलाका मैं आपको देता हूं।
आल्हा ने हाथ जोड़कर कहा....महाराज, मुझसे कोई गल्ती हो गई है क्या जिसके फलस्वरूप आप मुझे अपने से अलग करने की सोच रहे हैं? महाराज ने उसके हाथ पकड़कर कहा.... नहीं पुत्र, हम आपका अलग राज्य देखना चाहते हैं।
ऊदल ने कहा....महाराज हमें राज्य की इच्छा नहीं है। जंगल में खड़े होकर भी हम विशाल साम्राज्य की स्थापना कर सकते हैं। यह बात आप भी जानते हैं। हमारे पिता ने आपके राज्य की रक्षा का वचन दिया था; हम भीष्म पितामह की तरह उसी वचन से बंधे हैं। इसलिए हम महोबा को छोड़कर कहीं नहीं जायेंगे। यह हमारी जन्म भूमि है और कर्म भूमि भी।
महाराज...पुत्र, मैं अपने छहों बच्चों को बराबर प्रेम करता हूं और मैं नहीं चाहता कि कल आप सभी भाइयों में राज्य को ले कर कोई विवाद हो। आप भी मलखान की तरह कालिंजर को अपना लेंगे, तो हमें प्रसन्नता होगी।
आल्हा ने कहा....महाराज मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हम भाइयों के बीच ऐसी स्थिति कभी नहीं आयेगी। अगर आ भी गई, तो मैं आपको वचन देता हूं कि मैं अपने अनुज ब्रह्मा लिए यह राज्य त्याग कर अन्यत्र चला जाऊंगा।
महाराज दोनों को बहुत प्यार करते थे। वो दिल से चाहते थे कि आल्हा अपनी स्वयं की राजधानी बना ले इसीलिए उन्होंने आखिरी दांव फेंककर कहा....वत्स, ये तो और भी गलत है। कल को किसी कारण आप राज्य छोड़कर चले गए, तो फिर ऐसा न हो कि किसी राजा के कहने पर आप महोबा पर ही आक्रमण कर दें। इतना सुनते ही आल्हा का खून खौल उठा आँखे लाल हो गई।
उसने कहा....महाराज, मेरे जीवन को धिक्कार है, मैं आपको सत्ता लोभी अधर्मी लगता हूं? अगर मैं आपको विश्वास नहीं दिला पाया, तो यह मेरी गलती है। मैं दस्सराज पुत्र आल्हा वचन लेता हूं कभी भी कहीं भी अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित नहीं करुंगा।

महाराज यह सुनकर स्तब्ध रह गए। उन्होंने यह सपने में भी नहीं सोचा था कि उनकी बात को आल्हा इस तरह से लेगा। अब कुछ भी नहीं हो सकता था। वह दुखी मन से बोले.... वत्स आल्हा, मेरे स्नेह को इतना हल्का समझ कर गाली मत दो। मैं इतना ही कह सकता हूं कि ब्रह्मा मेरा हृदय है, तो तुम उसकी धड़कन हो! मैं कुछ देर अकेला रहना चाहता हूं। दरबार बरखास्त हो गया था, पर आल्हा की प्रतिज्ञा दरबार में गूंज रही थी। बनाफरों को श्रीकृष्ण का श्राप था कि पूरा जीवन युद्ध करते बीतेगा, इसीलिए एक समस्या समाधान के बाद दूसरी तैयार रहती थी।

15-आल्हा का ब्याह

तिब्बती में नेपाल का अर्थ है पवित्र भूमि! यह हिमालय क्षेत्र का एक हिस्सा और अखंड भारत का एक भाग था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र और चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार वैशाली के एक वीर राजा मानदेव ने यहां पर लिच्छवि वंश की स्थापना की थी। यह बात चांगुनारायण मंदिर मुद्रा शिलालेख से पता चलती है। महाभारत काल में भी इसका नाम नेपाल ही था।

नेपाल का प्राचीन काल सभ्यता, संस्कृति और शौर्य की दृप्टि से गौरवपूर्ण रहा है। यहां पर ईसा पूर्व सिद्धार्थ, महावीर, चंद्रगुप्त और अशोक के साथ-साथ गुप्तवंश, किरातवंश, सोमवंश, लिच्छिविवंश, और सूर्यवंशी राजाओंने राज्य किया है। लिच्छविवंश का काल नेपाल का स्वर्णयुग रहा है। इस काल में राजा मानदेव व राजा अंशुवर्मा का कार्यकाल अच्छा रहा। 880में लिच्छिवि वंश का शासन था। 1020 ई. में लिच्छवी राजवंश का पतन होने लगा था जिससे केन्द्रीय शासन कमजोर हो गया और नेपाल अनेक इकाइयों में विभाजित हो गया। उसके छोटे छोटे राज्य हो गए थे। नैनागढ़, कुठारगढ़, लुम्बनी, मिथिला, कपिलवस्तु, अंग-वंग, आदि। उसके बाद नेपाल में 1024 ई. में ही नुवाकोटे के ठाकुरी राजवंश नेवार जाति का उदय हुआ। इस वंश ने दो सौ साल तक राज्य किया। राजा राघोमच्छ इसी वंश का राजा था और नैनागढ़ में उसका राज्य था। आल्हा ऊदल के 1164 में नेपाल आने का उल्लेख नेपाल की लिच्छिवी राजवंश की वंशावली में मिलता है। चांगुनारायण शिलालेख में भी इनके महायोद्धा होने का उल्लेख है।

नेपाल की तराई में बसा नैनागढ़ बहुत ही सुन्दर था। यहां से कुछ दूरी पर पावन मिथलापुरी है, जहां पर सीता जी का जन्म हुआ था। नैनागढ़ परनेवार वंशज राजा राघोमच्छ का राज्य था। राजा राघोमच्छ बहुत ही धर्मात्मा और दानी थे। एक बार हिमालय के पहाड़ों पर राघोमच्छ को ईश्वर की कृपा से एक सिद्ध महामुनि के दर्शन हुए थे। राजा से खुश होकर उन्हें अमर ढोल देकर कहा... राजा यह अमर ढोल है। इसकी आवाज सुनकर रण भूमि में, घायल पड़े हुए लाखों सैनिक जीवित हो जायेंगे। आप ये ढोल जीवन में केवल तीन बार बजा सकते हैं, वो भी जब आपको इसकी बहुत जरूरत हो। ऐसे धर्मपरायण राजा की किसी से कोई शत्रुता नहीं थी। राघोमच्छ के दो बेटे थे। योगमच्छ, भोजमच्छ और एक बेटी थी सुलक्षणा वह बहुत सुंदर थी उसका रूप सोने की तरह दमकता था इसीलिए उसे रानी जी सुनवां कहा करती थीं इसीलिए इनके दोनों ही नाम चलते हैं। वह रण कौशल में निपुण और बुद्धिमान थी, उसने वेद-पुराणों का भी अध्ययन किया था, जादू की विद्या का भी ज्ञान था। वह तोता, कबूतर, बाज और चील की भी बोली समझती थी। नैनागढ़ में बाज और चीलों को पालने का चलन था। बाज-चील सभी पक्षियों में समझदार होते हैं।

सुनवां की उम्र इस समय सोलह बरस की थी। वह बहुत सुन्दर थी, ऐसा लगता था मानों उसे विधाता ने फुरसत से गढ़ा है। उसकी चाल मोरनी की तरह मन भावन थी, बोली कोयल की तरह मधुर थी, हंसने पर ऐसा लगता था, मानों कई सितार एक साथ बज उठे हों। वह संगीत की विद्या में भी निपुण थी। आश्चर्य की बात तो ये थी, कि सुनवां के सौन्दर्य की चर्चा दूर-दूर तक होने पर भी किसी राजकुमार ने आज तक उससे प्रणय निवेदन नहीं किया था। अमरढोल के कारण कोई लड़ना ही नहीं चाहता था।

उसकी सखी ने उसे छेड़ा ...चंपा तुझमें तीन गुण, रूप रंग और बास। अवगुण तुझ में एक है, भंवर न आवै पास।।
सुनवां यह सुनकर उदास होकर महलों में चली गई। रानी ने उदासी का कारण पूछा, पर वह टाल गई। उसकी सखी ने बताया कि चमेली ने ऐसा कहा है, तभी से राजकुमारी जी उदास हैं। रानी ने दासी को भेजकर महाराज को बुलाकर कहा....महाराज आपकी बेटी ब्याह लायक हो गई है। किसी अच्छे देश का राजकुमार देखकर उसका ब्याह करा दीजिए।
महाराज ने कहा...महारानी, हमारी बेटी के लिए वर की कमी नहीं है, पर हम चाहते हैं कि जैसी गुणवान हमारी बेटी है। वैसा ही महाबली-बुद्धिमान वर भी मिले, हम उसी मिथिलापुरी के निवासी हैं, जहां जानकी जी के लिए सुयोग्य वर की खोज में जनक जी ने धनुष तोड़ने की शर्त रखी थी। हम भी अपनी बेटी के ब्याह की शर्तें रखकर उसके लिये उचित वर का चयन करेंगे।
महाराज ने दरबार में आकर पत्र लिखवाया.......माननीय महाराज, हमारी बेटी के ब्याह की पांच शर्तें हैं। जो भी राजा ये शर्तें पूरी करेगा वही राजकुमारी से विवाह का अधिकारी होगा। पहली शत...वृंहदा हाथी को पछाड़ना, दूसरी..बीस गज उंचा तीन गज मोटा जैतखम्भ, उसे एक ही वार में तलवार से काटना, तीसरी....अस्सी गज की उंचाई पर घूम रही मछली को तीर के एक ही वार से भेदना, चौथी....खौलते तेल में नहाना और पांचवीं... जोगराज और भोजराज की तलवार के वारों के बीच भांवर डालना। इसके साथ ही एक रथ में एक लाख मुहरें भरकर सगुन का टीका है और शादी में जी भरकर दान दहेज।
महाराज ने फिर कहा....नेगी, यह टीका आप सभी वीर राजा के दरबार में ले जाना। पहले पाती पढ़वाना अगर सभी शर्तें मंजूर हों तो टीका चढ़ाना। तुम महोबा मत जाना, हालांकि आल्हा-उदल बहुत वीर हैं, हम उनकी वीरता की कद्र करते हैं, पर ब्याह नहीं कर सकते। जोगा ने पूछा......पिताश्री, जब आप जानते हैं कि वो वीर हैं, तो मना क्यों किया? क्या वो क्षत्रिय नहीं हैं?
महाराज..... राजकुमार ये बात नहीं हैं, वो सच्चे क्षत्रिय हैं, सच्चे वीर हैं, वो वीर क्षत्रियों के सभी नियम मान कर रण में चलते हैं, पर हमारा और उनका गोत्र समान है। इस कारण भी हम सामाजिक व्यवहार में उनसे संबंध नहीं कर सकते।
क्षत्रिय वंश की 36 शाखायें हैं। दस रवि ते दस चंद्र से, द्वादश ऋपि प्रमाण। चार हुताशन से हुए, वंश छत्तीसों जान।।
यानि कि दस सूर्यवंशी, दस चन्द्र वंशी, बारह ऋपि वंशी और चार अग्नि वंशी इस प्रकार क्षत्रिय वंश की 36 शाखायें हैं। बनाफर चंद्रवंशी हैं। चन्द्रवंशी और सूर्यवंशी अपनी बेटियों का ब्याह ऋिपिवंश और अग्नि वंश में करते हैं। समान गोत्र में ब्याह करना वर्जित है। इतिहास से पता चलता है कि आल्हा उदल ने जबरन किसी नारी का अपहरण नहीं किया है। आल्हा उदल या उनके समकक्ष राजाओं के साथ समस्या ये थी कि उनकी वीरता से प्रभावित हो कर किसी भी देश की राजकुमारी मन ही मन उनका वरण कर लेती थी और उनको पत्र द्वारा अपना प्रणय निवेदन भेज कर ब्याह की प्रार्थना के साथ-साथ उनकी वीरता को चुनौती भी देती थी। उनके ना आने पर मरने की घमकी भी देती थी। अब वह एक वीर राजा होने के नाते उसके आमंत्रण को स्वीकारना धर्म संगत भी था और उनकी मजबूरी भी। पहले तो बनाफर बंधु आदर पूर्वक उसके पिता

को ब्याह करने का पत्र भिजवाते थे। लेकिन समान गोत्र होने के कारण, आपसी गठबंधन या दुश्मनी के कारण या माहिल की कसम के कारण जब लड़की का पिता ब्याह के लिए मना कर देता था, तब आल्हा उदल उसका प्रणय निवेदन स्वीकार कर लड़ाई करके उसे ब्याह लाते थे। स्वंय राजकुमारी उन्हें इस लड़ाई के लिए आमंत्रित कर आन्तरिक सहायता करती थी। '',

पृथ्वीराज ने भी इसी तरह कई ब्याह किये हैं। समुद्र शिखर के राजा पदमसेन की कन्या पद्ममावती ने तोता से पाती भेजकर अपना प्रणय निवेदन भेजा था उसके पिता से युद्ध कर ब्याह हुआ। देवगिरी की राजकुमारी शशिव्रता का हरण कर युद्ध के बाद उससे विवाह किया, कर्नाटक की राजकुमारी शशिकला और संयोगिता हरणकर ब्याह हुआ। इस तरह से विवाह करना उस युग का चलन था।

इस समान गोत्र के ब्याह के कारण आल्हा उदल बंधुओं का दूसरे राजाओं ने विरोध किया और इसी बात को माहिल ने अपना हथियार बनाकर सभी राजाओं से इनको बेटी न देनें की बात कही और ओछी जात कहकर इन्हें बेइज्जत करके बदनाम करके अपने दिल की भड़ास निकालता था। भविष्य पुराण में लिखा है कि राजा की कोई जाति नहीं होती। वह सभी का होता है। वह किसी से भी शादी करने को स्वतंत्र होता है, तो यहां पर समान गोत्र का नियम लागू नहीं होता।

नेगी टीका लेकर चला गया। दिल्ली के राजा पृथ्वीराज की वीरता के चर्चे सब ओर थे, उसके पुत्र शादी के लायक थे, वह सबसे पहिले दिल्ली पहुंचा और सात कदम से बंदगी करके पाती महाराज को भिजा दी। पाती सुन कर पृथ्वीराज क्रोधित होकर बोला.... राघोमच्छ जैसे राजा की हिम्मत कैसे हुई हमारे दरबार में सशर्त टीका भेजने की, सच कहें तो उनकी बेटी हमारे लायक नहीं है। हम किसी शर्तों पर विवाह नहीं करेंगे। हमारे बेटे के विवाह में शर्तें भी हमारी होंगी और तलवार भी हमारी, ले जाओ ये टीका।

नेगी टीका लेकर पंचाल, पटना, बंगाल, कंकनगढ, लोहागढ़, पथरीगढ़, कोटा, ॰ बूंदी, गढ़कांसो, कोट कसौंदी, कोट बुखारे, बितियागढ़, मारवाड़, गुजरात, राजपूताना, अवधखंड, रूहेलखंड, सभी जगह घूमा पर पत्र पढ़ने के बाद सभी ने टीका वापस कर दिया। किसी ने ऐसे पत्र को अपना अपमान समझ कर वापस कर दिया। नेगी वापस नैनागढ़ पहुंचा राजा ने उत्साहित होकर पूछा...नेगी जल्दी बताओ, किस राजा ने हमारी बेटी को स्वीकार किया है?

नेगी....महाराज गुस्ताखी माफ हो, महोबा छोड़कर, सभी राजाओं के दरबार में घूम आया, पर किसी राजा ने टीका नहीं स्वीकारा।

महाराज..लगता है धरती वीरों से खाली हो गई है। क्या इस धरा पर कोई भी ऐसा वीर नहीं है, जो हमारी शर्तें पूरी करे।

महाराज ने फिर कहा.....मेरी बेटी ने उसी स्थान पर जन्म लिया है, जहां पर सीता जन्मी थी, मैं भी योग्य वर की तलाश में उसका स्वंयवर कराउंगा। मंत्री जी, सभी नरेशों को आमंत्रण भेज दो और स्वंयवर की तैयारी करो। अगले तीन माह में स्वंयवर रखा गया सभी देशों के राजा पधारे हैं। राघोमच्छ का दरबार सजा हुआ है। सभी के स्वागत में कोई कसर नहीं रखी जा रही है। मनोरंजन के लिए तरह-तरह का नाच गाना भी हो रहा है। महाराज बहुत खुश हैं कि सभी राजा स्वंयवर में आये हुए हैं। महाराज ने एक बड़ा घंटा टंगवाया है कि जो भी राजा शर्त पूरी करना चाहे वह घंटा बजा दे। एक दिन, दो दिन और आज तीसरा दिन है दरबार सजा है सभी नरेश बैठे हैं, पर घंटा कोई

नहीं बजा रहा है।
राजा ने कहा.....आप सभी पधारे हुए हैं, आप आइये घंटा बजाकर अपनी बहादुरी का परिचय दीजिए।
सभी राजा बोले....महाराज, हम यहां घंटा बजाने नहीं आये। आपने निमंत्रण भेजा, तो हम चले आये। साथ ही यह उत्कंठा थी, कि कौन राजा यह शर्तें पूरी करता है? उसकी वीरता को भी देख लेंगे। सभी की बातें सुनकर, राजा का गला सूख गया, वह उदास होकर बोले....हम समझे थे दरबार वीरों से भरा है, पर यहां तो सब तमाशाबीन हैं। दूर-दूर तक हमें कोई वीर नजर नहीं आता? मैं अपनी बेटी का ब्याह उसी से करुंगा, जो शर्तें पूरी करेगा, अन्यथा क्वांरी ही रखूंगा। सभी राजा वापस चले गए महलों में उदासी छा गई। राजकुमारी सुनवां उदास बैठी है। सभी सखियां उसका मन बहला रही हैं, सुनवां ने कहा... सखी, क्या सचमुच ऐसा कोई वीर नहीं है, जो ये शर्तें पूरी कर सके? क्या मैं सारी उम्र कुवांरी ही रहूंगी?
सखी सुमैया ने कहा.... राजकुमारी जी, वीर नगरी महोबा का राजा आल्हा बहुत वीर है। उसके छोटे भाई उदल और मलखान है। ये तो अपनी वीरता दिखाने के अवसर ही ढूंढते रहते हैं। ये तीनों ही महावीर और पराक्रमी हैं। सच्चे क्षत्रिय हैं। क्षत्रिय धर्म का पालन पूरी तरीके से करते हैं कभी स्त्रियों पर, कमजोरों पर, भागे हुए पर हाथ नहीं उठाते, कभी छल से युद्ध नहीं करते। आल्हा जैसा वीर इस धरती पर दूसरा नहीं है। सुन्दरता में साक्षात् कामदेव की मूरत है। कहा जाता है वह कोई अवतारी पुरूष है। आज तक जहां भी युद्ध किया जीत उनकी ही हुई है। बारह बरस की उमर में उन्होंने अपने बाप का बदला ले लिया। आपके पिता ने नेगी को महोबा जाने से मना कर दिया था। अगर महोबा नेगी जाता, तो आपका टीका आल्हा के लिए जरूर चढ़ गया होता।
आल्हा की वीरता और सुन्दरता के चर्चे सुनकर सुनवां मन ही मन उसका वरण कर बोली... सखियो, अब तो मैं ब्याह आल्हा के साथ ही करुंगी। अन्यथा मार कटारी मर जाउंगी। वह बुद्धिमान थी उसने वेद पुराण पढ़े थे। उसे याद आया कि रूकमणि ने श्रीकृष्ण को पत्र लिख कर, अपनी मदद को बुलाया था। यही सोचकर उसने पत्र लिखा और रेशम के धागे में लपेटकर अपने प्रिय तोता के गले में बांधकर कहा... हे हीरामन, तू ये संदेश लेकर महोबा चला जा। वहां पर बनाफर कुमार आल्हा के छोटे भाई उदल रहते हैं। यह पत्र तू उनको ही देना और उनका जवाब ले कर शीघ्र ही नैनागढ़ वापस आना। .उसने तोते को उड़ा दिया।
तोता महोबा के बाग में पहुंचकर एक पेड़ पर बैठकर थकान मिटा रहा था। तभी उसने देखा कि एक राजकुमार ने बाग में आया है। उधर उदल की नजर तोता पर पड़ी। तोता के गले में पाती देखकर उदल समझ गए कि यह किसी का संदेश वाहक है। उदल ने कहा...अरे तोता, तुम किस देश से आये हो हम नहीं जानते। पर तुमको बतायें यह महोबा नगरी है। हम आल्हा के छोटे भाई उदल हैं। अगर तुम महोबा का संदेशा लाये हो, तो हमारी बांह पर बैठ सकते हो। तोता उदल की बांह पर बैठ गया, उदल ने गले से पत्र छोड़ा और कहा.... हम महलों में ये पत्र ले कर जाते हैं, तब तक तुम इस बाग में आराम से फल खाओ।
उदल परमाले के दरबार में पहुच कर बोला...ये पाती किसी देश से आई है। लो ढेबा भइया पढ़कर सुनाओ। ढेबा पढ़ता है......
....देवर उदल, शुभ आशीर्वाद। मेरे पिता ने मेरा टीका नीचे लिखी पांच शर्तों के साथ

बावनगढ़ में भेजा था, पर किसी भी राजा ने उसे स्वीकार नहीं किया। फिर मेरे पिता ने मेरा स्वंयवर रचाया, पर किसी ने हिम्मत नहीं दिखाई। मेरे पिता के घर अमर ढोल है जिसके डर से सभी पीछे हट गए हैं। आप सभी की वीरता के चर्चे सुने हैं। हमने आपके भाई आल्हा का मन ही मन वरण कर लिया है। इसी नाते आप मेरे देवर हुए इसी अधिकार के साथ आपको पाती लिख रही हूं। मैं आपके भाई से ही ब्याह करुंगी अन्यथा अपना जीवन समाप्त कर लूंगी। अगर मुझ अबला की पुकार सुनकर तुम नहीं आये, तो तुम्हारे क्षत्रियपन को धिक्कार है। अपने हथियार गंगा में बहा देना और भगौती मांग कर खाना। मेरा यह पत्र मेरी प्रार्थना भी है और आपकी वीरता को चुनौती भी। मेरा यह पत्र अपने भाई को भी पढ़वा देना। मैं आप सभी का इंतजार करुंगी। ....राजकुमारी सुनवां नैना गढ़।

शर्तें सुनकर सभी चुप, परमाल बोले.... ये राघोमच्छ की बेटी ब्याह ने की शर्तें हैं कि मौत का फरमान सुना रहा है। आल्हा के लिए राजकुमारियों की कमी नहीं, कई मित्र राजाओं के रिस्ते आ चुके हैं, हमारे हां कहने की देर हैं। कोई कहीं नहीं जायेगा।

मलखान ने कहा....महाराज एक स्त्री की रक्षा न कर सके, तो हमारा क्षत्रिय होना बेकार है। हम अभी नैनागढ़ को प्रस्थान करेंगे मैं अकेला राघोमच्छ को बहुत हूं, तोपरमाल बोले.. नैनागढ़ में अमर ढोल और जादू है। उनकी बराबरी हम नहीं कर सकते।

उदल ने कहा....उनके घर अमर ढोल है, तो हमारे पास भी अमर गुरू गोरखनाथ हैं, चंडिका मां जैसी महाशक्ति है, आप ये भी तो समझिए कि राजकुमारी ने हमें चुनौती दी है। हमारी सात पीढ़ी को कलंक लगेगा। नहीं हम पीछे नहीं हट सकते।

आल्हा ने कहा ...हमें नहीं करना ऐसा ब्याह, जहां भाई बाप ही लड़की के दुश्मन हैं। ये शर्तें कोई भी मानवदेह धारी कैसे पूरी कर सकता है। उसे तो कोई अवतार ही पूरी करेगा। मैं ब्याह के लिए अपने भाइयों को मौत के कुएं में नहीं ढकेल सकता।

मलखान गरजकर बोला... दादा मंडलीक अवतार, कहलाते हो और बातें नादानों सी करते हो। एक नारी का प्रणय निवेदन स्वीकार न कर सके, तो सोचो कितनी जग हंसाई होगी? राजकुमारी स्वंय बहुत वीर है, दोनों हाथों से तलवार चलाने में माहिर है। जादू की विद्या जानती है, अभी उसने पाती भेजकर निवेदन किया है, तो इज्जत बरकरार है। अगर उसने आपका हरण कर लिया, तो फिर लड़ाई करना ही पड़ेगी और सम्मान की धज्जियां उड़ेंगी सो अलग। मलखान की बात सुनकर सभा में सन्नाटा छा गया।

उदल ने कहा... दादा आप तो बस चलने की तैयारी कीजिए। मलखान दादा सही कह रहे हैं।

परमाल रनिवास में जाकर मल्हना से बोले... महारानी, नैनागढ़ से ये पाती आई है। आपके लाड़ले जाने को मचल रहे हैं।

मल्हना बोली...महाराज, आप दोनों को मेरे पास भेजिए, हम समझाते हैं। उदल और मलखान ने माता को प्रणाम कर कहा...जी बड़ी मां, आप बस जाने की आज्ञा दीजिए। मल्हना जानती है कि अब ये मानने वाले नहीं है, तो बोली.... हम जानते हैं कि परिस्थिति ऐसी है कि मना नहीं किया जा सकता है। इसलिए सगुन पूछ कर ढोल बजवाओ।

ढेबा ने अपना पत्रा खोलकर सगुन बताया ... अभी सगुन अच्छा है। गुरू और चन्द्र की स्थिति अच्छी बन रही है और गुरू का पुण्य भी जोर मार रहा है सब ओर से विजय है। उधर राघोमच्छ का राहू केतू बक्री है। भ्रामरी जोगनी भी नैनागढ़ पर मंडरा रही है।

उसके ग्रह अच्छे नहीं हैं। उदल ने जल्दी से पत्र लिखकर आने की सूचना तोता के गले में बांध कर भेज दी।
रानी ने पंडित चिंतामन को बुलाकर गणेश पूजन कराया, सभी रानियों के साथ हल्दी तेल की रस्में पूरी की। मल्हना ने बहुत प्यार से आल्हा को दूल्हा बनाया। परमाल ने मित्र राजाओं को ब्याह का न्योता भेजकर बारात में शामिल होने के लिए सीधे नैनागढ़ पहुंचे। कनवज से लाखन रास्ते से ही उनके साथ शामिल हो गया था। उदल और लाखन हम उम्र थे दोनों की दोस्ती थी।
दूसरे दिन बाजे-गाजे के साथ मां चंडिकाजी और मनियादेव का पूजन करके बारात की निकासी की। बारात में सारी फौजें हाथी घोड़ा और पैदल का लश्कर था। सभी जय भवानी के नारे लगाते हुए चले जा रहे हैं। नैनागढ़ से तीन कोस पहले ही सेना का पड़ाव डाला गया। जहां तक नजर जाती है सेना ही नजर आती है। रात्रि में भी सारी सेना सर्तक है।
आल्हा सुबह तंबू से बाहर देख रहा है तभी मलखान ने हंसकर कहा.... दादा भाभी से मिलना इतनी जल्दी नहीं होने वाला, अभी तो महीना भर भी लग सकता है, फिर बोला... उदल, आप जाकर घंटा बजाइये ताकि हमारे आने की सूचना नेपाली राजा को हो जाये। कुछ ही देर में उदल और मलखान नैनागढ़ के बाग में पहुंचकर ब्याह का घंटा बजाते हैं। घंटे की आवाज सुनकर नेपाल के दरबार में खुशी छा गई। जोगमच्छ ने कहा सैनिक पता करो ये घंटा किसने बजाया है?
सैनिक पता लगाकर आता है वह महाराज की बंदगी कर बोला....महाराज किसी राजा की बारात आई है।
इधर उदल ने मलखान से कहा....दादा, बारात तो आ गई है, अब रूपन बारी को बुला कर एपनबारी भिजा दी जाये।
रूपन से कहा....रूपन, तुम एपनबारी ले जाकर नेपाली राजा के दरबार में रखकर आओ। कहीं मंडप तो गड़ा नहीं है। ऐपन बारी लाल कपड़े में बंधा एक कलश होता हैं, जिसमें सिंगार का सामान होता है, जिसे मंडप के नीचे रखने की प्रथा है। दूल्हा के मित्र वारी को साथ लेकर इसे रखने आते हैं। जब लड़के वाले इसे रखने आते हैं, तो लड़की पक्ष की सारी महिलायें बेलन और मूसल मारकर उनको रोकती हैं, उस काल में ऐपनवारी दरबार में ही रखा ली जाती थी। उसे रखने से रोकने के लिए लड़की के भाई उस बारी से लड़ते थे, पर वह उसे रखकर चला जाता था। अगर लड़ने में कमजोर हुआ तो घायल हो कर लौट जाता था।
रूपन बोला....महाराज मैं इस लायक कहां हूं कि दरबार में अकेला एपन बारी लेकर जाउं। आप किसी और को साथ भेजिए।
उदल..रूपन, हम जानते हैं कि तुम बहादुर हो हर परिस्थिति से मुकाबला कर सकते हो।
राजा राघोमच्छ के दरबार में जाकर रूपन ने दरबारियों से कहा... महोबा नगरी के राजा आल्हादेव राजकुमारी को ब्याहने आये हैं। उनकी हम ऐपनबारी लाये हैं, अपने राजा से कहो एपन रखाकर हमारा नेग देवें। दरबानी बोला ....नेग में क्या चाहिए है?
रूपन बोला....हम वीरों के देश महोबा से आये हैं, तो नेग भी वीरता भरा ही होगा। द्वार से दरबार तक बहे लहू की धार।।
दरबान ने कहा ... महाराज द्वार पर बारी एपनबारी लाया है और नेग में द्वार से दरबार

तक रक्त की धार बहाना चाहता है।
राजा ... पुत्र, जाकर उस नेकी की मश्कें बांधकर हमारे सामने लाओ। तब तक रूपन ने अंदर आकर बंदगी कर कहा...महाराज बंदा हाजिर है मैं एपन बारी लाया हूँ। निशानी में आल्हा की बैजनी पाग लाया हूँ। रूपन ने सोने का कलश रख दिया।
रे नेगी तू चाकर होकर बड़ी-वीरता दिखाता है, ..इसको बांध लो। सैनिक उस पर टूट पड़े, पर वह बचाव करता हुआ बाहर आया, और घोड़ा पर बैठ गया, घोड़ा एक छलांग में बाहर आ गया। सभी उसे देखते रह गए।
लहू से लाल गुलाल रूपन तंबू में पहुंचा, मलखान ने हंसकर पूछा... कहो, दरवाजे पर क्या छाप छोड़कर आये हो?
रूपन....मैं उनके द्वार पर रक्त की धार बहाकर मुश्किल से जान बचाकर आया हूँ। बस फौजें आती ही होंगी।
मलखान ....आने दो हमारी फौजें उनके स्वागत को तैयार हैं। दोनों ओर की फौजें आमने सामने खड़ी हैं। मलखान, ऊदल, ब्रह्मा ढेबा, तल्हन सभी सेना के साथ खड़े हैं। दूसरी ओर जोगामच्छ भोजमच्छ अपनी सेना के साथ हैं।
जोगामच्छ ने कहा... हे महाशय, बिन बुलाये मेहमान की तरह तुम यहां पर क्यों आये हो?
ऊदल- हम आल्हा के छोटे भाई हैं, ऊदल हमारा नाम है। हम अपने बड़े भाई मंडलीक अवतार की बारात लेकर आये हैं।
जोगामच्छ....बनाफर कुमार, मांडो के धोखे में न रहना। माना मांडो का लौहदुर्ग फतह किया, पर ये नैनागढ़ है। जहां पर राघोमच्छ का राज है। बिना इजाजत परिन्दा भी नहीं आ सकता है।
ऊदल...धोखा तो जंबेराय ने किया था उसका फल उन्हें मिल गया। रही बात बिना इजाजत आने की, तो हम किसी के बुलावे पर ही आये है। आपकी बहन ने हमारे भ्राता आल्हा का वरण कर हमें आमंत्रण देकर बुलाया है। हम भांवर डलवाने आये हैं।
जोगामच्छ ने सांग उठाकर चलाते हुए ललकारा ....ऊदल सावधान हमारी बहन की बात मत करो। ऊदल ने वार बचाया और दोनों ओर से युद्ध होने लगा। दोनों ओर की सेना कट-कट कर गिरने लगी। शाम होते तक लाशों के ढेर लग गए। पहला दिन इसी तरह गुजरा दूसरे दिन फिर वही युद्ध के मैदान में आज भी महोबा वाले भारी रहे।
जोगमच्छ.....महाराज, एक लाख सिपाही मारे गए, अगर ऐसा ही रहा तो हमारी सेना दो दिन में ही समाप्त हो जायेगी।
राजा ने कहा....मंदिर में बने तिलस्म में जो ढोल रखा है, उसे ले जाकर अपनी सेना में बजा दो। जोगमच्छ ने देवी मंदिर में जाकर उसका पूजन किया और ढोल लेकर रणभूमि में बजाया, आवाज सुनकर चमत्कार हो गया नेपाली सेना के सभी घायल व मृत सिपाही उठकर, दुगने जोश से तलवार चलाने लगे, महोबा के सिपाही मूली की तरह कटने लगे। किसी तरह युद्ध बंद हुआ।
रात को मलखान ने कहा... आज हमने अमरढोल की ताकत देख ली, हमें इसका उपाय सोचना चाहिए, नही तो हम युद्ध नहीं जीत पायेंगे। तभी सिपाही ने आकर कहा....तंबू के बाहर एक सैनिक संदेहावस्था में घूम रहा था, उसे हमने पकड़ लिया है।
ऊदल ने कहा ... उसे सामने लाओ, सामने आने पर उदल ने पूछा-तुम कौन हो और क्या चाहते हो?

वह बोला....मैं राजकुमारी की सखी सुमैया हूं, ये पत्र मैं ऊदलजी को देने आई हूं।
ऊदल ने पढ़ा....देवर जी, अब तक पता चल गया होगा कि नैनागढ़ से लड़ना लोहे के चना चबाना है। खैर हमें आपकी ताकत पर भरोसा है। हम आपसे मिलना चाहते हैं वैसे तो किले के अंदर पंछी भी पर नहीं मार सकता, पर आप सुरंग के रास्ते मेरी सखी के साथ आ सकते हो। भरोसा रखना हम करिंगाराय की तरह दगा नहीं करेंगे, ये हमारा वचन है। ......राजकुमारी सुनवाँ।
ऊदल वेश बदलकर बोला- चलिए, हम चलने को तैयार हैं वह उसके साथ बाग में पहुंचा, सुमैया ने सरोवर के चारों ओर बने हाथियों में से ईशान कोंण वाले हाथी की सूंड़ में फंसी सांकल को नीचे किया तो हाथी पीछे खिसक गया और वहां पर सीढ़ी नजर आई, वे दोनों उतर गए। कुछ दूर तक लंबी सुरंग में जाकर कई गलियारे थे, हर बार दायीं ओर मुड़ना था। कुछ ही समय में वह रानी महल के पीछे बाग में निकले। ऊदल अपनी तरफ से सर्तक था। वह सैनिक के पीछे चारों ओर देखता हुआ जा रहा था। अब दासी के कमरा थे। राजकुमारी वहां इंतजार कर रही थी। दासी ऊदल को छोड़कर बाहर आकर पहरा देने लगी।
राजकुमारी ने उठकर कहा...बैठिए राजकुमार, ऊदल वहीं पड़ी चौकी पर बैठ कर बोला ... कहिए आपने हमें क्यों बुलाया है?
हम जानते हैं कि आप ये सारी परेशानियां हमारे आमंत्रण पर उठा रहे हो। इसलिए आपकी मदद करना हमारा फर्ज है। बताइए हम आपकी क्या मदद कर सकते हैं? आपको कुछ जादू की मदद चाहिये हो तो हम तैयार हैं।
ऊदल ने कहा....अपनी मदद हम स्वयं करते हैं। हम तो बस आपके आमंत्रण पर चले आये, अगर आप हमारी मदद ही करना चाहती हैं, तो एक बार हमें उस अमर ढोल के दर्शन करा दीजिए।
ठीक हैं, कल ब्रहम मुहूर्त में देवी मां के पूजन के लिए जायेंगे। जो आप वहीं पर आकर उस ढोल को देख सकते हो।
ठीक है, ऊदल अपने तंबू में रात्रि विश्राम करता है। सुबह उठकर उदल, ब्रह्मा, मलखान और ढेबा माली का वेश बनाकर अपने सभी हथियार बांधकर, फूलों की डलिया ले मंदिर को चल दिए। राजकुमारी ढोल लेकर माता पूजन को आती है, ढोल की रक्षा में सौ सैनिक आते हैं। ढोल सुमैया के पास छोड़कर वह पूजन के लिए मंदिर में जाती है। उसी समय मालिन वेशधारी ऊदल सुमैया को बातों में लगाकर, सम्मोहित करके, ढोल को उठाकर चुपचाप चला जाता है। सैनिक सोचते हैं कि वह महल की कोई सखी है।
राजकुमारी वापस आकर बोली... सुमैया ढोल कहां है? अब सुमैया का सम्मोहन टूटता है वह बोली... मुझे कुछ नहीं मालूम वह कौन थी, पर एक सखी आकर सम्मोहित करके ढोल ले गई है। इतना सुनते ही सब ओर खलबली मच जाती है। चारों ओर ढोल खोजा पर कहीं भी उसका पता नहीं चला। अब राजकुमारी किसी से कुछ न कह वापस महलों में आ जाती है।
ऊदल ढोल लेकर तंबू में आता है फिर आपस में विचार कर, ऊदल ने ढोल का पूजन किया और देवी मां से प्रार्थना की कि इस ढोल को खंडित करने के अपराध को क्षमा करें और ढोल फोड़कर टुकड़े-टुकड़े करके अलग अलग नदी में बहा दिया।
आज चौथे दिन का युद्ध होता है और नैनागढ़ की सेना का सफाया हो गया, जोगमच्छ और भोजमच्छ पूजा घर में ढोल लेने जाते हैं। वहां पर ढोल को न देख कर वह पूछ तांछ

करते हैं, राजकुमारी ने बताया कि किस तरह ढोल चोरी हो गया।
जोगमच्छ भंवरी जोगन से उससे ढोल का पता लगाने को कहते हैं। वह अपने जादू से पता लगाकर बोली....राजकुमार, वह ढोल अब किसी काम का नहीं। किसी ने उसे खंडित करके दो अलग-अलग नदियों में बहा दिया है। अब आप उसे भूल जाइए।
मैदान में दोनों सेनायें हैं। जोगमच्छ, भोजमच्छ अपने छोटे भाई विजयमच्छ सहित पहली पंक्ति में डटे हैं। राजकुमार जोगमच्छ ने कहा.... कुंवर ऊदल अभी समय है आप महोबा लौट जायें, ये ब्याह तो कभी नहीं होगा चाहे बहन कुंवारी रह जाये।
ऊदल..राजकुमार हम तो ब्याह कराकर ही जायेंगे, आप तलवार चलाओ आज आर-पार की लड़ाई हो ही जाये। जोगमच्छ और ऊदल, भोजमच्छ और मलखान, विजयमच्छ और ब्रह्मा, जगनिक और राजा पूरनमल, आपस में आमने-सामने हैं। कोई किसी से कम नहीं। सांझ होते-होते नैनागढ़ की सेना के पैर उखड़ने लगे। ऊदल ने जोगमच्छ को हराकर कैदकर लिया। उधर मलखान ने भी भोजमच्छ को बंदी बना लिया, कुछ ही देर में विजयमच्छ भी बंदी हो गये। अब सेना मैदान छोड़ कर भाग खड़ी हुई।
परेशान राघोमच्छ को रानी ने सांत्वना देकर कहा....महाराज, महोबा वाले सच में बहुत वीर हैं। हमें अपनी पुत्री के लिए ऐसे ही वीर की तलाश थी। हमारी उनकी कोई दुश्मनी भी नहीं है। अब हमें उनसे सुलहकर अपनी बेटी ब्याहने की बात करनी चाहिए। हां महारानी जी, आप सही कह रही हैं। हमें ऐसे वीर से नाता जोड़कर गर्व होगा, अपने बेटों को भी उनकी कैद से छुड़ाना हैं। हम अभी उनसे मिलने की व्यवस्था करते हैं। महाराज दरबार में आकर मंत्री से बोले ...मंत्री जी यह सिद्ध हो गया है कि महोबा वाले बहुत वीर हैं हर तरह से हमारी कन्या के लायक हैं। हमारी उनसे मुलाकात का इंतजाम करो। हम अभी उनसे मिलने जायेंगे।
तभी दरबान ने आकर कहा...महाराज उरई के राजा पधारे हैं। हां, उनको आदर सहित लेकर आओ।
महाराज उन्हें आदर सहित बिठाकर बताते हैं कि हमने मान लिया है कि आल्हा हमारी कन्या के लिए उचित वर है।
माहिल ने कहा....महाराज, आपके बेटों की बंदी बना लिया इन बनाफरों ने, कहां आप इतने बड़े महाराज और कहां वह परमाल के चाकर, उनका अपना स्वयं का कोई राज्य नहीं है। उनसे बेटी ब्याहोगे, तो सारा संसार आप पर हंसेगा। रिश्ता तो बराबरी वालों से होता हैं। महाराज पर माहिल की बातों का असर होने लगा था, वह बोले .....आप ही बताइए हमें क्या करना चाहिए?
माहिल ....देखिए महाराज आपकी शर्तें कठिन हैं। बनाफर तलवार के धनी हैं, पर छल कपट की लड़ाई नहीं करते। परंतु राजनीति में सब जायज है। आप उनको शादी की मंजूरी दें, शर्त पूरी करने को महलों में बुलाओ और कोठरी में अपने सरदारों को बिठा दो वह जब वह आये तो सबके सिर कटा दो। बस जीत आपकी होगी। राजा को माहिल की बात भा गई। वह कुछ भेंट लेकर महोबा के लश्कर में जाकर दरबान से बोले... राजकुमार आल्हा से कहो राजा राघोमच्छ मिलने आये हैं। दरबान सूचना दे कर आता है और राजा को आदर सहित ले जाता है। सभी ने उठकर महाराज का स्वागत कर कहा ... आइए महाराज विराजिए।
राघोमच्छ बोले...बनाफर कुमार, आप सभी वीर हैं हमें अपनी कन्या के लिए ऐसे ही वर की तलाश थी। आप परीक्षा में सफल हुए। हम अपनी बेटी का ब्याह करने को तैयार

हैं। आप महलों में आकर शर्तें पूरी कर राजकुमारी का पाणिग्रहण स्वीकार करें।
मलखान ने कहा... ठीक है महाराज हम अच्छा सा मुहूर्त देख कर आते हैं; आप जाकर ब्याह की तैयारी करिए।
राघोमच्छ....आप से निवेदन है कि आप तीनों भाइयों को बंदी बना चुके हैं, तो रस्म करने के लिए एक भाई को छोड़ दीजिए।
आल्हा ने कहा.....महाराज, बंदी नहीं, बल्कि मेहमानों की तरह रखा है। अब जब हम रिश्तेदारी में बंध रहे हैं, तो आपस में ये नजर बंदी कैसी? आप उनको ले जा सकते हैं। आखिर वो हमारे भी तो भाई हैं। विजयमच्छ राघेमच्छ का भतीजा है।
कुछ ही देर में तीनों को लेकर महाराज महलों में आ जाते हैं और अपनी सारी योजना राजकुमारों को बताते हैं।
मलखान ने कहा.....राजा की नीयत साफ नहीं लग रही, वह छल कर रहा है और विश्वास देकर अपने बेटों को छुड़ा ले गया।
आल्हा ने कहा.... तुम्हारी बात सत्य है, वह धोखा करेगा क्योंकि गुप्तचर ने बताया है कि माहिल मामा उसके दरबार में पधार चुके हैं। हर ओर से सम्हलकर रहना होगा।
दूसरे दिन गुरु गोरखनाथ आते हैं। उन्होंने कहा....समझदारी से काम लेना होगा। अभी तो बारात सजाकर द्वारचार के लिए चलो, पर सभी अपने हथियार बांध कर तैयार रहना, गुरुदेव भी वेश बदलकर साथ हो लिए।
राजा ने कहा...आप अपना लश्कर द्वार पर ही रहने दो। शर्त पूरी करने के लिए केवल दूल्हाराजा की जरूरत है।
तल्हन ने कहा....हमारे यहां पर दूल्हा के सभी भाई मिलकर रस्में करते हैं। आखिरी की खास रस्म दूल्हा पूरा करता है। इसलिए हम पांच लोग आल्हा, ऊदल, मलखान, ब्रह्मा, ढेबा, जगनिक और बारी जायेगा। पूजन को पंडितजी जायेंगे। सभी हथियार छिपाये हैं।
मलखान ने ढेबा और जगनिक को समझाया कि तुम चारों तरफ नजर रखकर, खतरे को भांप कर आगाह करना। सभी के अंदर आते ही किले का फाटक बंद हो गया। ऊदल का माथा ठनका, अभी वह आगे चले ही थे कि कोठरियों से निकल कर सूरमाओं ने उन पर आक्रमण कर दिया। ये सभी अपने अपने हथियार लेकर उन पर टूट पड़े। दोनों ओर से घमासान होने लगा। लड़ने वाले निकलते ही आ रहे थे। करीब चार घड़ी की लड़ाई के बाद सब शांत हुआ।
राघोमच्छ ने जब ये देखा, तो वह हाथ जोड़कर बोला...राज कुमार माफ करना, ये आपके युद्ध कौशल की आखिरी परीक्षा थी। आइए अब आगे की तैयारी करें। वह सब एक बड़े मैदान की ओर जाते हैं। एक ओर इन सभी के बैठने के लिए आसन लगे हुए हैं। दूसरी ओर दस गज के फासले से राघोमच्छ अपने बेटों के साथ बैठा हुआ है। रनिवास की रानियां परदा की ओट करके बैठी हैं। चौथी ओर कुछ दरबारी और सैनिक बैठे हुए हैं। सभी को उत्सुकता है कि इतनी कठिन शर्तें कोई मानव कैसे पूरी करता है?
मंत्री ने घंटा बजाकर कहा.... पहली शर्त....वो सामने पागल हाथी खड़ा है उससे पछाड़ना है। वह हाथी पचशावद की जाति का था। भांग के नशे में जोर-जोर से सांकल घुमा रहा था, उसके पास जाना भी मुश्किल था।
तल्हन ने कहा ....कौन जायेगा इससे लड़ने? आगे बढ़ो, सभी नेग जल्दी से पूरे करना हैं।
मलखान...ऊदल, सौ-सौ कुंजर के बल राखे, अब क्यों राखी देर लगाय। वंश बनाफर का कैसा है, राघोमच्छ को देउ बताय।

ऊदल ने गुरूदेव और आल्हा को प्रणाम किया, गुरुदेव ने कहा....विजयी भव। ऊदल कटघरे के बाहर खड़े होकर उसे देखने लगा। फिर एक छलांग के साथ कटघरे में पहुंचा। हाथी चिंघाड़कर सांकल लेकर आगे बड़ा, पर ऊदल उसे पकड़ने का मौका न देकर दायें बांये भगा रहा है। कुछ देर बाद ऊदल उचककर उसकी सूंड़ में चिपक गया और सूंड को पकड़कर मरोड़ दिया। हाथी की सांकल छूट चुकी थी वह जोर से चिंघाड़ रहा था, पर ऊदल की पकड़ नहीं छूटी। हाथी घबराकर बैठ गया और सूंड़ पछाड़ने लगा, उसके बैठते ही ऊदल ने उसके माथे पर दोनों हाथों से बज्रमुस्टिका के कई प्रहार किये। उस चोट से हाथी एक जोरदार चिंघाड़ के साथ निर्जीव होकर लुढ़क गया। सभी ऊदल की ताकत देख कर स्तब्ध रह गए। उदल विजयी चाल से चलता हुआ मैदान से बाहर आ गया।
मंत्री ने घंटा बजाकर कहा.....हमने सुना है कि आल्हादेव बहुत वीर हैं और रस्म के सारे नेग दूल्हा ही करेंगे। ये बीस गज ऊंचा और तीन गज मोटा विजयखंभ है, इसे एक ही वार से काटना है। इतना सुन गुरुदेव ने कहा.....वत्स, खांड़ा से इस खम्भे के दो टुकड़े कर दो। मैंने इसे योगशक्ति से लकड़ी का बना दिया है। आल्हा ने गुरुदेव को प्रणाम कर खांड़ा लेकर खंभे के पास जाकर मांचडिका और मनियांदेव का ध्यान करते हुए पूरी ताकत से खंभे पर वार किया। खंभा बीच से विभाजित होकर, भरभरा कर गिर गया। आल्हा की ताकत देखकर सभी चुप रह गए। रनवासों से दासियां उन पर फूलों की बरसा करने लगी।
मंत्री ने फिर कहा ...तीसरी शर्त वो सामने अस्सी गज की ऊंचाई पर मछली घूम रही है। उसे एक ही वार में तीर के निशाने से बेधना हैं। आल्हा मछली के नीचे जाकर कुछ देर तक उसे देखते हैं। फिर तीर चलाते हैं, तीर सीधा जाकर मछली बेधता है
मंत्री ने कहा.....चौथी शर्त ..गरम तेल में नहाने के लिए कुंवर आल्हादेव पधार रहे हैं। सभी की निगाह उसी ओर घूम गई। जहां भट्ठी पर बड़ा सा कड़ाह चढ़ा है। नीचे आग जल रही है तेल खौल रहा है। सभी अपने-अपने गले का थूक गटकने लगे। किसी के मुंह से बोल नहीं फूटा। गुरुदेव ने कहा....वत्स, संदेह त्याग कर तुम तेल में कूद जाओ; मेरी योगिनी शक्तियां चारों ओर पहरा दे रही हैं, जो तुम देख रहे हो वह सभी की आंखों का भ्रम है। कहीं कोई आग नहीं है, केवल नजर कर धोखा है, जादू की माया है। देवी मां से तुम वरदानी हो, तुम्हारा शरीर बज्र का सा है।
आल्हा ने गुरु के चरणों में नमन किया और अपने कपड़े उतारकर एक रेशमी चादर ओढ़कर कढ़ाव की ओर चल दिये। सभी सांस रोककर देख रहे थे। कुछ देर में आल्हा ने हाथ जोड़कर कढ़ाव को प्रणाम किया और हाथ से धीरे से तेल का स्पर्श किया, उसे आंखों से लगाया। तेल ठंढा था। उन्होंने अपनी चादर एक सैनिक को दी और प्रसन्न मन से तेल में उतरकर मल-मल कर नहाने लगे। यह देख सभी को विश्वास हो गया कि ये बनाफर कुमार किसी देवों के अवतार हैं। इन पर भगवान की छाया है। ये कोई साधारण मानव नहीं हैं। कुछ देर में आल्हा बाहर आये, अब सैनिक रेशमी वस्त्र से उनके बदन को साफ कर रहे थे।
मंत्री ने कहा...अब पांचवीं शर्त मंडप के नीचे है। तीनों राज कुमारों की तलवार से बच कर भांवर पड़ना है।
राघोमच्छ ने कहा ... अब जल्दी ही मंडवा का नेंग कर भांवर डलवाओ। सखियां मंगल गा रही हैं। मोतियों के चौक पुरे हैं। आल्हा को जकनिक ने दूल्हा के कपड़े पहिनाये। बाकी सभी ने मिलकर उसे दूल्हा बना दिया, उनकी सुन्दरता कामदेव को भी मात कर

रही है। जोगमच्छ ने उन्हें घोड़े से उतारा और टीकाकर उनका स्वागत किया और सभी भांवर के लिए मंडप के नीचे आ गए, महोबा वाले सभी चौकन्ने हैं। वो जानते हैं कि कभी भी कुछ भी हो सकता है। उनके हाथों में नंगी तलवारें हैं।

सभी सखियों के साथ राजकुमारी सुनवां दुल्हन के वेश में आती है। उसकी सुन्दरता की मिसाल नहीं है। उसने सखियों की किसी बात पर हंसा, तो ऐसा लगता है मानों कहीं बादल में बिजली चमकी हो। पंडित ने नेगचार के मंत्र पढ़े और दोनों का गठबंधन कराया.. जैसे ही ऊदल गठबंधन करने को झुका, वैसे ही अचानक राजकुमार विजयमच्छ ने तलवार का वार किया। मलखान सावधान था। उसने उसके वार को झेला। अब तक ऊदल ने गठबंधन कर दिया था। यह रस्म पूरी हुई। अब वर-वधू फेरों के लिए खड़े होते हैं। ढेबा ने पत्रा देखकर बताया था कि मंडप के नीचे धोखा है, पर कहां, समझ नहीं आ रहा है। ऊदल ने सर्तक निगाहों से यहां वहां देखा उसकी नजर मंडप के नीचे बिछे एक छोटे से सुन्दर हरे कालीन पर पड़ी, उसने पहली भांवर के लिए आगे बढ़ते ही आल्हा को पकड़कर पीछे खींचा और एक भारी कलश उठाकर कालीन पर पटक दिया। कलश गिरते ही कालीन सहित दस गज गहरे खंदक में समा गया। दूसरी भांवर के लिए आल्हा आगे बढ़ा तो जोगमच्छ ने रस्म निभाई और वार किया, ऊदल सतर्क था उसने वार को अपनी तलवार से रोका और एक जोर का मुश्टिका प्रहार उस पर किया जिससे वह लड़खड़ा गया। दूसरी रस्म पूरी हुई

तीसरी भांवर को आगे बढ़ते ही भोजमच्छ ने अपनी तलवार से वार किया। मलखान ने अपनी ढाल पर झेल लिया और अपनी तलवार का उलट वार उस पर कर दिया। उसकी तलवार छूट कर दूर जा गिरी। चौथी भांवर को बढ़ते ही विजयमच्छ ने अपनी तलवार चला दी जिसे ब्रह्मा ने अपना तेगा अड़ा कर रोक लिया। पांचवीं भांवर में राघोमच्छ ने आल्हा पर जादू चला दिया। अब आल्हा जड़ होकर एक ही जगह पर खड़े रह गए। ऊदल ने यह देखकर जल्दी से गुरुदेव की दी हुई पुड़िया फूंक दी और आल्हा ने पांचवी भांवर पूरी की, छठवीं भांवर में मंडप के ऊपर से एक विशाल खंभ गिरा, पर उसे इन चारों भाइयों ने उसे अपनी बांहों पर रोक लिया और आल्हादेव ने उसके नीचे भांवर की परिक्रमा पूरी की। आखिर में सातवीं भांवर बाकी थी। सभी सतर्क थे। भांवर के लिए आगे बढ़ते ही सभी के ऊपर जादू हुआ। सभी बेहोश होकर जड़ थे केवल गुरुगोरखनाथ पर जादू का असर नहीं हुआ था। उन्होंने झट से पुड़िया निकाल फूंक दी सभी को होश आ गया और इस प्रकार आल्हा ने सातों फेरे पूरे किये और मांग भरकर सभी रस्में पूरी कीं। दोनों भाइयों ने लावा परसाई की रस्म की और बहनोई के हाथ से नेग लिया। तल्हन ने मंडवा के नीचे खुब मुहरें लुटाई। गुरुदेव ने कहा जल्दी ही विदा कराकर किले के बाहर निकलो तो उदल बोला.. रानी मां, विदाकर दीजिए हम जल्दी जायेंगे।

रानी मां ने भी कहा ... हाँ बेटी, तू जल्दी ही नेपाल की सीमा को पार कर जा। नही तो वो उरई का माहिल महाराज का दिमाग खराब कर रहा है। रानी मां ने पालकी में बिठा कर सुनवां समझा बुझाकर गले लगाकर को विदा किया।

वह डोला लेकर रनिवास से बाहर निकलते हैं कि महाराज के सैनिकों ने उन पर आक्रमण कर दिया। महोबा के सातों शूर-वीर घमासान करने लगे। तल्हन ने कहा, ज्यादा लड़ने में समय न बिता कर तीनों भाइयों को पकड़ लो। मलखे ने जोगा को, ऊदल ने भोगा का, और ब्रह्मा ने विजयराज को बंदी बना लिया। और जल्दी ही डोला को लेकर अपने तंबू में आ गए।

गुरु गोरखनाथ ने रानी सुनवां को आशर्वाद दिया और ऊदल से कहा-अब हम जाना चाहेंगे, सभी कार्य पूर्ण हो गए हैं। अब आगे का रास्ता आपको स्वयं तय करना है और वह चले गए। डोला में सुनवां को अकेले देख कर ऊदल ने पूछा.... दादा कहां हैं?
सुनवां ने कहा.... हम क्या जाने, वह आपके साथ होंगे? सब ओर आल्हा को ढूंढ़ लिया पर वह नहीं मिले।
मलखान ने कहा.... ढेबा भइया, जल्दी से अपना सगुन देखकर बताओ दादा मंडलीक कहां हैं?
ढेबा ने बताया ..... आल्हादेव को जादू के जोर से बंदी बना लिया है, वह इस समय नेपाली राजा की कैद में है।
ऊदल बोला...भाभी, आपके पिता ने गंगा की कसम लेकर भी धोखा किया। एक राजा होकर भी वह वचन की कीमत न जान सके।
सुनवां... देवर जी, हो सकता है यह आपकी आखिरी परीक्षा हो; मेरे भाई आपके बंदी हैं, आप सौदा करके भाई को छुड़ा लीजिए।
ऊदल ने कहा... भाभी, सौदा तो बनिया करते हैं, हम क्षत्रिय हैं दादा को खोजकर अपनी तलवार के दम पर वापस लायेंगे।
सुनवां........देवर जी, मैं भी आपके साथ चलूंगी। ऊदल, और सुनवां वेश बदल कर बाग के माली के पास जाते हैं। सुनवां ने मालिन को अपना राजदार बनाया और गुप्त रास्ते से मालिन बनकर आल्हा का पता लगाया कि आल्हा खुद की तिलस्म में कैद है। रात को ऊदल और लाखन किले में गुप्तद्वार से वेश बदलकर जाते हैं और आल्हा को मुक्त करके वापस लाते हैं। उनके बाहर निकलते ही तिलस्म का दरोगा जाग जाता है और उससे लड़ाई होती है, पर वह बाहर आने में कामयाब हो जाते हैं।
दूसरे दिन तीनों ने हाथ जोड़ कर कहा...अभी तक जो भी हुआ उसे हमारी नासमझी समझ कर क्षमा कर दीजिए।
आल्हा ने कहा... साले साहब, रिश्तेदारी में क्षमा कैसी? एक रथ पर तीनों भाई और दूसरे पर पांचों महोबा वाले जाते हैं।
राजा ने रानी से कहा.... मेरे तीनों बेटे महोबा वालों की कैद में हैं। एक बार तो उन्होंने छोड़ दिया था। अब न जाने वे क्या हाल करेंगे? मेरी मति मारी गई जो मैं माहिल के कहने में आकर ऐसे वीरों से दुबारा भिड़ बैठा। अब समझा कि उनसे रिश्ता जोड़ना गर्व की बात हैं, वो तो कोई अवतारी लगते हैं। महारानी बोली...महाराज, किसी भी तरह आप मेरे बेटों को वापस ले आइए।
महाराज ..अब किस मुंह से जाऊं, तभी सैनिक ने सूचना दी है कि महोबा की सेना की ओर से दो रथ आ रहे हैं।
राजा ....अब तो कोई लड़ने वाला ही नहीं, वह जो कहेंगे हमें मंजूर है, सभी को आदर सहित लेकर आओ। वह सोच रहे हैं पता नहीं महोबा वाले क्या करने वाले हैं? सभी अंदर आते हैं अपने बेटों को प्रसन्न मुद्रा में देखकर राजा ने राहत की सांस ली।
महाराज ने कहा.....आइए बनाफर कुमार पधारिए आसन ग्रहण कीजिए। वे पांचों आसन पर बैठ जाते हैं।
मलखान....महाराज हम राजकुमारों को छोड़ने आये हैं। ब्याह की सारी रस्में पूरी हो चुकी हैं। इस बीच हमसे कोई गल्ती हुई हो, तो क्षमा करना। आखिर हम भी आपके बच्चे हैं। अब हम जाने की आज्ञा चाहते हैं। आपको जब कभी हमारी जरूरत हो आप हमें

सूचित करिए हम हाजिर हो जायेंगे। एक दूसरे के काम आना हमारा धर्म है। आप अचलराज करें यही हमारी शुभ कामना है।
महाराज ये बातें सुनकर गदगद होकर बोले.....बनाफर कुमार, आप सभी बहुत वीर और पराक्रमी हो। हमारी बेटी का सौभाग्य है कि उसे आल्हा जैसा वर प्राप्त हुआ। पुत्र हमसे भी गल्तियां हुई हैं उसे क्षमा करना, आप सभी को समझने में मुझसे भूल हुई है। हम किसी के बहकावे में आ गए थे। हमारा आशीर्वाद आप सभी के साथ है। हम अपनी बेटी जंवाई को विदाई देने स्वंय जायेंगे।
आकर सारा हाल बताकर ऊदल ने कहा....राजा फिर आ रहा है पता नहीं क्या चाल चलेगा। सेना को सतर्क कर दो। राजा राधोमच्छ अपने बेटों और महारानी के साथ बहुत सा माल खजाना लेकर आते है। बहुत से हाथी घोड़ा और रथों पर लदा माल है। यहां ऊदल सहित सभी नंगी तलवारें लिए सजग खड़े हैं। आल्हा और तल्हन ने उनका स्वागत किया, सभी आसन पर बैठते हैं।
महारानी ने सुनवां को गले से लगाया और नारी धर्म की शिक्षा दी। उसके बाद कहा .. बेटी ये चारों चीलें, जादूगरनी साबिया हम आपकी सुरक्षा के लिये साथ भेज रहे हैं। इसे अपनी सहेली बताना और इन्हें हमेशा अपने पास रखना। ज्ञात हो कि ये चारों चीले सुनवां की सहेली थी। जरूरत पड़ने पर वह अपनी साथी चीलों को बुलाकर युद्ध भूमि में भी साथ दिया करती थी। इन पर किसी का जादू नहीं चलता था। उनकी बोली को वह दासी और सुनवां समझती थी।
अब सारा लश्कर महोबा को वापस लौटता है। द्वार पर सभी का स्वागत हुआ। वर वधू ने सभी माताओं के पैर छू कर आशीर्वाद लिया। सभी सुनवां की सुन्दरता की प्रशंसा कर रहे हैं। सब ओर आनंद ही आनंद छाया है।
ऊदल और मलखान ने कहा.... सबसे पहले नेग हमें मिलना चाहिए हम भाभी को लेकर आये हैं।
मल्हना ने कहा....ठीक है नेग के बदले हम जल्दी ही आपका भी ब्याह करा देंगे। यह ठिठोली सुन कर सभी हंस पड़े।

16-मलखान का ब्याह

छठवीं से आठवीं सदी में गुजरात प्रांत में चालुक्य राजवंश का उदय हुआ जिनमें वकाटक, पल्लव और कदम्ब वंश की शाखायें विकसित हुई उसके बाद सतवाहन वंश ने दसवीं सदी में अपना पृथक राज्य बना लिया था। पुलकेशन द्वितीय के अभिलेख से उस काल की जानकारी मिलती है। इस समय के चालुक्यों ने अन्हिलवाड़ा यानि कि दक्षिणी गुजरात, वातापी और कल्याणी को राजधानी बनाया था। गुजरात के वातपी में 11वीं सदी के उत्तरार्ध में राजराज प्रथम 1014 ई. मे शासन था, जो बहुत वीर पराक्रमी और न्याय प्रिय राजा थे। इनका विवाह तंजोर के राजा राजेन्द्रचोल की इकलौती पुत्री से 1011 में हुआ था। उससे इनका पुत्र कुलोत्तुंग हुआ। अधिराज की मृत्यु 1070 में होने पर उनका राज्य भी कुलोत्तुंग को मिल गया। कुलोत्तुंग ने 1076 में अपने चाचा पर आक्रमण करके आंध्र का राज्य भी जीत लिया था। इस समय चोल, पंड्य, गुर्जर, प्रतिहार, बंग, और केरल छोटे छोटे राज्यों को मिलाकर राष्ट्रकूट बना लिए गए थे जिन पर किसी एक राजा का आधिपत्य होता था, हालांकि सभी राजा स्वतंत्र होते थे, पर आपसी सहयोग से वह एक बड़ी शक्ति होते थे। इस काल में मालवा के परमारों और महोबा के चंदेलों यानि कि बनाफरों से भी चालुक्यों के युद्ध का वर्णन इतिहास में बहुतायत में है। अनिहलपट्टी के शिलालेख से ज्ञात होता है कि 1165 में बनाफरों का युद्ध अन्हिलवाड़ा यानी कि गुजरात के राजा गजराजा से हुआ था। यह युद्ध मलखान के विवाह को इंगित करता है।

1114 में इनका उत्तराधिकारी गजराजा बना उसने कल्याणी वंश के राजा की पुत्री से विवाह किया और दंतीवाड़ा के दंतीदुर्ग पर कब्जा करके समुद्र तट पर बसे कोट कसौंदी को अपनी राजधानी बनाया उसने 1128 ई. में कसौंदी में एक अभेद्य किला बनवाया, उसमें चौबीस दरवाजे थे। हर दरवाजा देखने में एक जैसा ही था, न जानने वाला अपनी राह भूल जाता था। उस समय वहां की भौगोलिक स्थिति ऊबड़ खाबड़ थी। तीन तरफ से यह राज्य समुद्र से घिरा था। तीन तरफ जो समुद्र के किनारे का हिस्सा था वहां पर मसाले और मेवा की खेती और धान भी होता था। कसौंदी से मसाला का व्यापार करने अफगानी, तुर्की व पठान आते रहते थे। चौथी ओर आधे राज्य के क्षेत्र में दलदल था। देखने पर जमीन दिखती थी, उस दलदल के किनारे नारियल, सुपाड़ी व कंटीली झाड़ियों का सुदूर तक फैला घना जंगल था। दलदल के किनारें सांपों की बांबी थी जिसमें में अनगिनत जहरीले सांप और कई प्रजाति के जहरीले बिच्छू रहते थे, कोई अनजान व्यक्ति नहीं आ सकता था। राज्य के चौथी ओर राजस्थान की सीमा से लगा काले पत्थर का मैदान था। उस पर हरियाली का तृण भी नहीं था, पत्थर इतना कठोर था कि न तो उसमें सुरंग लगती थी, न कोई लोहे के खूंटे गाड़ते थे। इसलिए इस राज्य का नाम पथरीगढ़ था। इस प्रकार कसौंदी राज्य की चारों सीमायें सुरक्षित थीं।

कहावत थी कि पथरीगढ़ में किसी भी राजा का तंबू नहीं गड़ता। अर्थात जब पत्थर में खूंटे ही नहीं गढ़ेंगे, तंबू कैसे गड़ेगा। जो भी राजा आक्रमण करेगा उसे न छाया को कहीं कोई पेड़ था, न ही रेगिस्तानी हवाओं से बचने का कोई साधन, न पीने को पानी था। समुद्र का पानी था पर वह खारा था। पथरीगढ़ के बने हथियार तलवार, भाला, बर्छी, बल्लम, कटार, तेगा, सांग सभी अच्छे माने जाते थे। कहा जाता था कि पथरीगढ़ और

बूंदी के हथियारों की धार में मजबूती है, ये मैदान में धोखा नहीं देते।
ऐसे सुरक्षित सीमा वाले राज्य में राजराजा चालुक्य के वंशजों ने 1070 से 1271 ई. तक दो सौ साल तक शासन किया। चालुक्य वंशी गजराजा के चार पुत्र थे। गजलोहन, गजाधरन, गजराघवन, और बबरूवाहन। ये सभी वीर और लड़ाका थे। उनके एक अति सुन्दर, बुद्धिमान और रणकौशल में निपुण एक कन्या थी, जिसका नाम गजमोतिन था। वह ब्याह लायक हो गई थी। महाराज ने जब से सुना था कि नेपाल के राजा राघोमच्छ ने अपनी कन्या का विवाह कुछ कठिन शर्तें रखकर किया है, तो वह सोच रहे थे कि मैं भी योग्य दामाद पाने के लिए कुछ न कुछ परीक्षा तो जरूर रखूंगा। मेरी भी कन्या बहुत गुणवान है, देवि की भक्त भी है।
एक दिन शुभ समय देख कर राजा ने पंडित को बुला कर कहा... कन्या के विवाह का सगुन बताइए।
पंडित जी ने कहा... महाराज इस कन्या को वरण करने वाला बहुत बली होगा, उसकी भुजाओं में इतनी ताकत होगी कि वह अकेला ही सारी पृथ्वी को जीत सकने वाला होगा। अब समय आ गया है कि आप राजकुमारी जी के ब्याह की तैयारी करें।
महाराज ने पाती लिखवाई- मैं चालुक्यवंशी राजा अपनी पुत्री का टीका भेज रहा हूं। मेरी कन्या सुन्दर सुशील गुणवान है, मेरी कुछ शर्ते हैं, जो भी इन को पूरा करने की इच्छा और ताकत रखता हो वह बारात लेकर आये, हम उसके स्वागत के लिए तैयार मिलेंगे। पहली शर्त है कि आने वाला राजा राजस्थान के सफेद रेगिस्तान के रास्ते से उसे पार करके आयेगा। दूसरी राजस्थान के पथरीगढ़ का ऊबड़-खाबड़ मैदानी इलाके में अपने तंबू गाड़कर, चार दिन विश्राम करेगा। तीसरी.....कांसों के दलदल को, जिसकी सांपबनी और बिच्छु बनी में जहरीले सांप बिच्छु भरे पड़े हैं, उसे पार करेगा। चौथी में..श्यामा जोगन के जादू से मुकाबला। पांचवी....भांवर पर चारों राजकुमारों से लड़ाई, शर्तें पूरी न होने पर समुद्र के किनारे बने जल-जेल में कैद होगा।
नेगी को बुला कर महाराज ने कहा... ये पाती ले जाकर सभी राजाओं को पढ़ाकर उनके राजी होने पर टीका चढ़ा देना। साथ में ये सवा लाख मोहरें व रथ में रखा अन्य सामान भेंट दे देना। सामान की रक्षा के लिए सौ सिपाही साथ में भेजे जा रहे हैं।
नेगी सबसे पहले पृथ्वीराज के दरबार में जाते हैं। उसके बाद कनवज आदि सभी राज्यों में जाने पर भी किसी राजा ने टीका नहीं स्वीकारा। अब नेगी परमाले के राजदरबार मे जाता है। राजा उंचे आसन पर विराजमान हैं। नेगी बंदगीकर पाती देता है। मंत्री ने पाती सुनाई। पाती सुनकर राजा ने कहा...पाती वापस ले जाओ अभी कोई राजकुमार ब्याह के लायक नहीं है।
ऊदल ने कहा... महाराज, दरबार में आया रिश्ता क्यों वापस करते हो, तो आल्हा ने तुरत समझाया.....ऊदल ये रिस्ता नहीं है। तलवारों के साये में रिश्ता करना पागलपन है। ये धन-जन की बरबादी का पैगाम है। अकारण ही रक्त-पात करना राजधर्म नहीं है। हमें हर कार्य मानवता के हित में करना चाहिए; हमें ऐसा रिश्ता नहीं चाहिए जिसमें व्यर्थ का रक्तपात हो। हमें इन कुरीतियों का विरोध करके इन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिये। हमें इस तरह की नरभक्षी शर्तों पर किसी का ब्याह नहीं करना है।
ऊदल बोला....मलखान दादा के लिए टीका चढ़वा दो। टीका लौटाओगे तो जग हंसाई होगी; सब कहेंगे नैनागढ़ को फतह करने वालों ने कांसौदीं का रिश्ता लौटा दिया। महोबा वालों की तलवारों को जंग लग गई। नहीं दादा नहीं, हम इतना बड़ा कलंक

लेकर नहीं जी सकते। अब तो ये टीका तो लेना ही पड़ेगा, आल्हा समझ गया कि ऊदल नहीं मानेगा, उन्होनें ढेबा से कहा....ढेबा सगुन बता साइत क्या बोलती है? ढेबा ने पत्रा देख बताया ...सगुन अच्छा है ये ब्याह होकर ही रहेगा। सारी बाधायें पार कर जीत हमारी है।
पंडित को बुला कर गणेश पूजन किया और मलखान को टीका चढ़ा दिया था। सभी नेगियों को खूब इनाम दिया गया।
चारों नेगी कसौदी आकर बोले......महाराज हम सभी राजाओं के यहां पर गए, पर किसी ने टीका नहीं स्वीकारा। उसके बाद हम महोबा नगरी में राजा परमाले के यहां गए, तो वहां के दरबार की शोभा देख ठगे रह गए। उनका दरबार तो देवराज इन्द्र के दरबार की तरह लग रहा था। बड़े-बड़े वीर योद्धा नंगी तलवारें लिए बैठे थे। हमने कुंवर आल्हा को पत्र दिया, तो उसे पढ़कर उनके चेहरे पर कोई चिंता नहीं उपजी और अपने भाई के लिए हमारी राजकुमारी का रिस्शा स्वीकार कर लिया। राजकुमार मलखान सिरसागढ़ के राजा हैं। ये वही सिरसागढ़ है जो उन्होंने पारथ चौहान से छीना है। महाराज, राजकुमार मलखान हमें राजकुमारी जी के लिए सब ओर से लायक वर लगे हैं। उनके पास न बल की कमी है, न धन की। उनके पास इन्द्र देव की दी हुई पारस मणी है।
महाराज ने कहा..जो कुछ तुम बयान कर रहे हो, वह सुनकर हमें अत्यंत सुख महसूस हो रहा है। हमारी राजकुमारी बहुत किस्मत वाली है, जो ऐसे योग्य राजा को ब्याहने जा रही है। राजकुमार गजलोहेन्द्र इन सब की झोली मोतियों से भर दो।
उरई के माहिल के कानों तक जब ये बात पहुंची कि गढ़कांसोंदी के चालुक्यों से मलखान का रिश्ता पक्का हो गया है, वह छटपटाकर रह गया उसने कसम खाई थी कि वह महोबा वालों कों मिटाके रहेगा, पर उसके सारे हथकंडे फेल हैं, उनको गुजरात के राजा को रिश्तेदार बनता देख वह जल भुन गया। वह सीधा कसौंदी पहुंचा और राज दरबार में दाखिल हुआ।
महाराज गजराजा ने कहा....आइए महिलिया राय आपका स्वागत है। अब तो हम आपस में संबंधी बन गए हैं।
माहिल ....महाराज, मुझे चिंता तो इसी बात की हो रही है कि आपने बिना कुछ जाने समझे बनाफरों के यहां पर अपनी फूल सी राजकुमारी का रिस्ता तय कर दिया है। हम आपके मित्र हैं आपका बुरा होते कैसे देख सकते हैं?
महाराज....बनाफर हैं तो क्या? वो भी तो 36 के चंद्रबंशी क्षत्रिय हैं, राजा है, बनाफरों में हमारे रोटी बेटी के संबंध होते हैं।
माहिल....महाराज, उन्होंने सगोत्रिय विवाह किए हैं, तो सभी राजवंश उनको नीचा समझते हैं; उनका कोई मान सम्मान नहीं है।
महाराजा...ऐसा है, तो नैनागढ़ के राजा ने अपनी राजकुमारी का विवाह उनके यहां क्यों किया? झूठा और चुगलखोर माहिल सफेद झूठ बोला...मजबूरी महाराज! मजबूरी! तभी तो राघोमच्छ ने फरमान जारी किया है, जो भी आल्हा, ऊदल, मलखान के कटे सिर लायेगा, उसे हम अपना आधा राज्य देंगे। क्या आप ऐसे राजा से अपनी बेटी का ब्याहेंगे जिसकी जान का सौदा हो चुका हो?
चूंकि महाराज इस फरमान से अनजान थे, वह उसकी चिकनी चुपड़ी बातों में आ गए। उन्होंने निर्णय किया कि वह अपनी बेटी का ब्याह बिके सिर वाले के साथ कभी नहीं

करेंगे, वह प्रकट में बोले ....आपने मुझे बहुत बड़े धोखे से बचा लिया मैं अपने ही हाथों अपनी बेटी का बुरा करने जा रहा था, मैं यह विवाह कभी नहीं होनें दूंगा। मैं उन्हें सूचना भेजकर मना कर दूंगा।
माहिल ने कहा ... महाराज, राजकुमारी मेरी भी बेटी जैसी है इसीलिए आपको सावधान करना मेरा कर्तव्य था। मैं भी एक राजा हूं और दूसरे मित्र राजा को सावधान करना मेरा धर्म है। अब माहिल वहां आग लगाकर चले गए। उनका काम हो चुका था।
महोबा में सभी मित्र राजा बारात में चलने को आ गए, परमाले की बारह रानियां मिलकर नेगाचार कर रही हैं। मलखान को दूल्हा बनाकर अस्त्र-शस्त्र धारण कराये गए हैं। मलखान अपनी घोड़ी कबूतरी पर बैठे हैं। आल्हा, ऊदल, ब्रह्मा, रनजीत, जगनिक, तल्हन, ढेबा, चिंतामन आदि सभी खास वीरों के सहित सेना सज गई। मल्ल युद्ध के लड़ाका ...लला तमोली, धनुआं तेली खुनखुन कोरी, मदन गड़रिया, बुधई लुहार, मन्ना गूजर आदि भी सजकर तैयार हो गए। इस बार चूंकि रेगिस्तान का मुकाबला था इसलिये ऊंट और ऊंट गाड़ी की संख्या सेना में बहुत थी। बुधई लुहार, मढ़ई लुहार लोहा मिश्रित अप्ट धातु के ऐसे खूंटा बनाते थे, जो पत्थर की शिला में भी छेद करके निकल जाते थे। उनकी बनाई तलवारें, बल्लम, भाले, वजनी से वजनी ढाल को भेद डालती थीं।
मल्हना ने सभी बेटों का टीका किया आरती उतारी और भुजाओं का पूजन किया। सभी मां चण्डिकाजी और मनियां देव की पूजा को जाते हैं, तभी एक बाहरी सैनिक को देख, ऊदल के मन में संदेह हो जाता है, वह सबकी नजर बचाकर, उसे एकांत में ले जाकर हाल पूंछता है। वह कांसो की पाती देकर चला गया, ऊदल पाती खोलकर पढ़ते हैं, विवाह की मनाही पढ़कर ऊदल का खून खौल जाता है कि दूल्हा की घुड़चड़ी हो गई है, सभी राजाओं सहित बारात प्रस्थान कर चुकी है। अब मनाही कैसे हो सकती है। अगर ऐसा हुआ तो महोबा वालों की बहुत बदनामी होगी। बहुत कुछ सोच समझकर उदल ने चुप रहना ही बेहतर समझा, तभी लाखन ने पास आकर कहा मित्र, किस सोच में डूबे हो। उसने पाती बताई, तो उसने भी ऊदल का समर्थन कर चुप रहने को कहा।
दो हफ्ते में राजस्थान के सफेद कांच के रेगिस्तान में पहुंच जाते हैं। उस रेगिस्तान में तेज हवायें चलती हैं, ऐसे में तंबू लगाना बहुत मुश्किल है। कांच के समान नुकीले कण हवा में उड़कर त्वचा से रगड़कर खून निकाल लेते हैं, फिर घाव बनकर फैलता है। रेगिस्तान में रुकने के कारण सेना में पर्याप्त ऊंट और खाना पानी लदा है। तूफानी हवाओं से बचने के उपाय सोच रहे हैं।
आल्हा के बताये अनुसार.....सभी जानवर ऊंट, घोड़ा, हाथी व रथों को एक गोल घेरें में खड़ा करके बीच में तंबू को रथों से बांधा गया और इस प्रकार तंबू तैयार हो गए। राजकुमारों और मेहमानों को रथों पर रुकने की व्यवस्था थी। वे रातों को चलते और दिन में विश्राम करते क्योंकि रात को तूफानी हवायें कम थीं। चार दिन की परेशानी के बाद रेगिस्तान सेना ने पार कर लिया था।
अब दूसरे पड़ाव में वह चिकने काले पत्थर के पहाड़ पर थे। राजस्थान का यह इलाका पथरीगढ़ के नाम से जाना जाता था। यहां के राजा मां काली के भक्त ज्वालादहन हैं, कहते हैं कि देवी मां उनसे सामने होकर बात करती थीं। आल्हा ने भी अपने तंबू से मां कालिका की पूजा अर्चना की और उनसे सहायता की प्रार्थना की। यह अरावली पर्वत की विशाल श्रृंखला का पश्चिमी कोना था। इस पर केवल काले पत्थर की बड़ी-बड़ी

चिकनी चट्टाने थीं, दूर-दूर तक कहीं कोई पौधा नहीं था। पत्थर तपने से गरमी बहुत थी, पत्थर पर तंबू कैसे गड़ेगा अब यही सोचना था। शर्तानुसार किसी से किसी भी प्रकार की सहायता नहीं लेना थी।
मलखान ने कहा.....बुधई और मड़ई अब तुम्हारे हुनर दिखाने की बारी है। अष्ट धातु ऐसे खूंटे बनाओ जो इस पहाड़ की छाती में भी छेद कर सके। गुजरात वालों को पता चल सके कि महोबा के लुहार वीर हैं। उन्होंने पहाड़ को जांच परख कर खूंटे बनाये और मन्नागूजर, खुनखुन कोरी सहित सभी ने काले पहाड़ में खूंटे ठोके, पर खूंटे न गड़े। ऊदल ने बताया सभी जगह खूंटे नहीं गड़ेंगे। हमें पहाड़ की जांच करके कुछ नरम पत्थर की खोज करके वहां पर खूंटे ठोकना चाहिये। इस प्रकार जांच परखकर मां कालिका का नाम लेकर अरावली पर्वत की चोटी पर पत्थर में खूंटे गड़ गए। कुछ ही देर में पहाड़ पर तंबू ही तंबू दिख रहे थे।
तल्हन ने बताया...पीने का पानी समाप्त हो रहा है। अब हमें पानी की व्यवस्था करना चाहिए अन्यथा घोर संकट में पड़ जायेंगे।
आल्हा ने कहा....यहां वहां पत्थरों पर देखों इनके नीचे अवश्य पानी का झरना होगा। जो शिला छूने पर शीतल महसूस हो उसके नीचे जल का स्रोत होना चाहिए। ढेबा ने पत्रा देख कर कहा...उत्तर दिशा में पानी के संकेत मिल रहे हैं। कुछ प्रयासों के बाद एक जगह पानी का आभास होने पर कान लगाकर सुना तो पता चला वहां पानी है, पर निकलेगा कैसे?
ढेबा ने कहा... राजकुमार ऊदल, अपनी ताकत दिखाओ, ऊदल वहां पर एक बड़ा सा खूंटा ठोकता है और कुछ देर में पानी का स्रोत मिल जाता है। अब पहाड़ी पर रहने में कोई परेशानी नहीं थी। इसके आगे दलदल था। दलदल के किनारे पर नारियल और समुद्री प्रजाति के कंटीले पेड़ों का घना वन था। उस शेर वन में शेर, बब्बर शेर, सिंहा, बाघ, चीता सहित सैकड़ों खूंखार जानवरों का निवास था। उसके बाद सर्पबनी और बिच्छुबनी थी। सभी विचार विमर्श कर रहे हैं। शेर वन के शेरों से कैसे निपटा जाये?
आल्हा ने कहा.... शेरों से तो हम निपट भी लेंगे, पर जहरीले सांपों से नहीं लड़ पायेंगे। हमें हर सैनिक की जान प्रिय है। हम किसी भी तरह का खतरा मोल नहीं ले सकते। अब हमें गुरुदेव की शरण में जाकर उनसे सलाह लेकर कार्य करना चाहिए। ब्रह्मा तुम जाकर गुरूदेव को ले कर आओ। तब तक ऊदल ने शेरों से निपटने के लिए सैनिकों को भेजकर पेड़ों पर मचान बनवाये।
उसके बाद ऊदल, मलखे और लाखन ने जबरू, गबरू, श्शेरू, कलुआ सहित दो दर्जन कुत्तों को साथ लिया, जो महोबा से ही साथ में लेकर आये थे। महावत सहित पचास खूंखार हाथी जो शेरों से लड़ने में माहिर थे। दस ढोल नगाड़ा वाले जो एक ओर से हांका देंगे। पांच सौ वीर जो भाला फेंकने में माहिर थे। उन सभी को साथ लेकर उस जंगल में घुस गए। ढोल वालों ने एक ओर से हांका शुरू किया। भाला फेंक और तीरंदाज मचानों पर जम गए। ऊदल, मलखे, लाखन अपने-अपने घोड़ों पर सवार हुए। ढोल सुनकर सबसे पहिले चीतों ने भागना शुरू किया, सभी ने उनपर निशाना साधा। करीब पचास चीतों का शिकार हो चुका था। कुछ ही देर में जंगल शेरों की दहाड़ों से गूंज उठा। कुत्ते शेरों से लड़ने में लगे थे। जब तक कुत्ते शेरों से लड़ते तब तक सैनिक निशाना साथ कर भाला फेंक कर मारते, जो गर्दन के आर-पार हो जाता था। सब ओर से शेरों पर भाला, बर्छी, बल्ल्म, और तीरों की मार हो रही थी। हाथी भी शेरों से लड़ रहे थे। सब ओर से

आक्रमण होने पर शेर घबरा गए और क्रोध में पागल होकर भाग-भाग कर शिकार करते हुए लड़ने लगे। कुछ बब्बर शेर ज्यादा आक्रामक हो कर ऊंचाई तक उचक-उचक कर वार कर रहे थे।
एक शेर ने ऊदल को झप्पटा मारा तो उदल घोड़े से गिर पड़ा अब वह तलवार से शेर का सामना कर रहा है। शेर के छलांग लगाते ही ऊदल ने तलवार के एक ही वार से उसका सिर काट दिया। तब तक दूसरे बब्बर शेर ने उस पर आक्रमण कर दिया ऊदल गजब कर फुर्ती से उचक कर बच गया और उसी बब्बर की पीठ पर कूदकर उसके गले में अपनी तलवार घुसा दी। इसी तरह लाखन और मलखे भी अपने-अपने तरीके से सामना कर रहे हैं। दिन भर के हांके के बाद सभी शेरों का सफाया हो गया।
वापस आकर सभी घायलों का उपचार हो रहा था। मलखे और ऊदल को भी कई घाव हुए हैं वह अब विश्राम कर रहे हैं।
प्रातः काल के समय गुरुदेव का आगमन हुआ। दरबार में आसन पर बिठाकर सभी हाथ जोड़कर खड़े हुए।
आल्हा ने कहा... गुरुदेव, यहां तक हम आपकी कृपा से आ गए, इस दलदल को पार करने में आप मार्ग दर्शन कीजिए।
मलखान ने कहा.......गुरुदेव, सबसे पहले तो हमें सर्पबनी के जहरीले सांपों से निपटना है। वो कोबरा, पौनियां, पर्रान, गड़ेंता, धामन, काला नाग, चितकबरा, ततैया आदि कुछ ऐसे सर्प हैं, जो इतने जहरीले हैं कि उनके काटने पर बचने का कोई उपाय नहीं हैं। पर्रान जैसे सर्प तो चार गज तक हवा में उड़कर डस लेते हैं। उसके बाद सुनहरे बिच्छुओं की बनी से निपटना होगा।
गुरुदेव ने पूछा....ऊदल क्या जंगल के सारे शेर मारे जा चुके हैं? ऊदल तुरंत बोला-जी गुरूदेव,।
गुरुदेव कहा....आज रात को दो हजार सैनिक भेजकर, मरे हुए जानवरों को उसी दलदल में फिंकवा दो। यह काम आज ही रात्रि में हो जाना चाहिए। एक भी शव जंगल में पड़ा नहीं रहना चाहिए। ऊदल और मलखान रातों रात यह कार्य पूर्ण करा दिया।
दूसरे दिन गुरुदेव ने कहा- मलखान दो हजार सैनिक भेजकर तटीय इलाके का जंगल काटकर साफ करा दो।
दो हजार सैनिकों ने सारे दिन मे जंगल साफ कर दिया। रात को सभी अपने-अपने तंबू में विश्राम कर रहे है।
सुबह गुरुदेव ने कहा अब हमें चलकर, उस दलदल के आसपास का निरीक्षण सावधानी से करना होगा। ऊदल महोबा से एक बड़े पिंजड़े में नेवला भरकर लाये थे। वह पिंजड़ा साथ ले कर वह सभी वहां जाते हैं। हुआ यूं कि जानवरों के शव दलदल में फेंकने से दलदल का पानी और कीचड़ ऊपर आकर सर्पों और बिच्छुओं की बांबी में भर गया इसलिए वह सांप-बिच्छु बाहर आ गए।
सभी ने दूर से देखा कि अनगिनत बांबियां और बमीठे उस क्षेत्र में बने हुए हैं, मानों सर्पों का पूरा नागलोक ही बसा हो। अनगिनत जहरीले सांप मैदान में फैले पड़े हैं। सब एक दूसरे के ऊपर चल रहे हैं। कोई-कोई फन फैलाए बैठे हैं। कुछ सर्प अपनी ही जगह पर उछालें मार रहे है, सभी सांस रोके ये नजारा देख रहे थे। किसी की हिम्मत कुछ भी कहने की नहीं हो रही थी। घोड़े भी अपनी जगह पर बिदक रहे थे। मनुष्य की गंध व आहट पा कर कुछ सर्प आगे बढ़ने लगे थे। उन्हीं सर्पों के आस-पास सुनहरे बिछू भी फैले

पड़े हैं। वह एक दूसरे में इस तरह गुंथ कर बैठे हुए कि देखने पर मधु मक्खी का छत्ता नजर आता है।
आल्हा ने कहा.... गुरुदेव इस संकट से आप ही बचाकर पार लगा सकते हो।
गुरुदेव ने कहा.... जहां अधिक संख्या में सर्प रहते हैं, वहां आस-पास नेवला भी रहते हैं। यह प्रकृति का नियम हैं। इसलिए इस जंगल में नेवला अवश्य होना चाहिए। इसलिए मैं जंगल के नेवलों का आवाहन करूंगा। उन्होंने अपनी झोली से सरसों निकाल कर आंख बंदकर कुछ मंत्र पढ़-पढ़कर चारों ओर फेंकने लगे। कुछ ही देर में बहुत से जंगली नेवले वहां पर इकट्ठे हो गए। पिंजड़े के नेवले भी खोल दिए गए। अब गुरुदेव ने वशीकरण मंत्र पढ़कर उन सभी नेवलों पर फेंका देखते ही देखते सभी नेवले उन सर्पो के ऊपर टूट पड़े। सभी सर्प बिलबिला कर इधर-उधर भागने लगे। कुछ मोटे और बड़े सर्प जंगली नेवलों से बराबरी की लड़ाई लड़ रहे थे। चारों ओर सर्पों के टुकड़े बिखरे पड़े थे। कुछ सर्प वापस बांबियों में घुस गए। धीरे-धीरे सर्पों की संख्या कम होने लगी। इसके बाद नेवलों ने सभी बिच्छुओं को मारना शुरू किया बीच बीच में जो भी मुंह में आया उसी के टुकड़े कर दिए।
अब गुरुदेव ने झोली से बीन मुंदरिया निकाली और उसे बजाना शुरू किया। उसमे से बीन की मस्तानी धुन बज रही थी, जिसे सुनकर सर्प क्या इंसान का तन-मन भी झूमने लगे। सभी सर्प बीन की धुन पर लहराते हुए बांबी से बाहर आने लगे। उनके बाहर आते ही नेवले उन्हें मार डालते थे। इस प्रकार सारे सर्प मारे गए। वहां की जमीन लाल हो गई और सर्पों के टुकड़े चारों ओर फैले थे। सांझ होने वाली थी सभी वापस आ गए। गुरुदेव ने संध्या पूजन किया और ऊदल मलखे और ब्रह्मा को बुलाया।
गुरुदेव ने कहा.....तुम तीनों अपनी देखरेख में दो हजार सैनिक लेकर जाओ। वह मरे हुए सांप बिच्छु दलदल में उसी जगह पर फिंकवा दो, जहां पर कल की रात मरे हुए शेरों के शवों को फेंका था। अब तक उन शवों से दलदल का काफी हिस्सा भर चुका होगा। उसके बाद जो जंगल की लकड़ी यानि कि पेड़ काटे गये थे, उसे दलदल के ऊपरी हिस्से पर बिछाते चले जाओ। सभी पेड़ो की टहनियों को एक दूसरे में इस तरह से बांधते और फंसाते चले जाओ ताकि इस दलदल पर लकड़ी का पुल तैयार हो सके। इस कार्य के लिए तुमको कुछ कुशल कारीगरों की भी आवश्यकता होगी। उन्हें लेकर जाना। जहां पर तुम सबका जाना संभव न हो वहां पर मेरी योगिनी शक्ति इस कार्य में तुम्हारी सहायता करेगी। यह कार्य आज रात्रि को ही पूरा हो जाना चाहिए।
तीनों आज्ञा ले चले गए। सिपाही और कुछ कुशल कारीगरों की सहायता और गुरुकी कृपा से रात भर में दलदल पर पुल बन चुका था। प्रातः काल तीनों ने गुरुदेव चरणों में प्रणाम कर कहा..... आपकी कृपा से सारा कार्य सम्पन्न हो गया।
गुरुदेव ...अब हम दलदल पार अपना शिविर लगायेंगे। आल्हा से कहो यहां से कूच करने का आदेश जारी करे।
सारा लश्कर दलदल के पुल को पार कर कांसोदीं की सीमा में पहुंच गया। हालांकि कांसों में जाने का चौथी तरफ से रास्ता था, पर आल्हा को तो चुनौती के अनुसार इसी दलदल को पारकर के जाना था। दलदल पार सभी के तंबू लग गए। बीचों बीच आल्हा और मलखे के तंबू लगे थे। रात होते ही सभी विश्राम करने लगे। यह श्यामा जोगन का इलाका था। सुबह आंख खुलते ही आल्हा सहित सभी भाइयों ने देखा कि वह दलदल में फंसे है और अनगिनत सांप बिच्छु उनके शरीरों पर रेंग रहे हैं। वह एक दूसरे को

सहायता के लिए भी नहीं पुकार सकते थे। तभी आल्हा को गुरुदेव का ध्यान आया और उसने मां भवानी का स्मरण कर गुरुदेव को पुकारा....गुरुदेव......गोरखनाथ जी उस समय ध्यान में लीन थे। आल्हा की करुण पुकार सुनकर उन्होंने नेत्र खोल दिये और वह सब समझ गए। उन्होने आल्हा के तंबू में आकर जादू हटा कर कहा ...यह सब श्यामा जोगन के जादू की माया है। कहीं कोई सांप नहीं है, उन्होंने सभी को एक एक अभिमंत्रित जायफल देकर कहा...इसे अपने पास रखनें से, किसी के ऊपर किसी जादू का असर नहीं होगा। अब हमें जाना होगा, आगे का कार्य तुम स्वयं अपनी समझदारी से करोगे। गुरुदेव उड़न खंड़ाऊं पहन कर चले गए।

तंबू में ऊदल ने भूमिका बनाकर कहा.... हमने गजराजा के कहे अनुसार सारी शर्तें पूरी कर दी हैं। मैं बारात लेकर उनकी सरहद में आए दो रोज हो गए, उनकी ओर से कोई स्वागत नहीं हुआ है न ही कोई हाल पूछने आया कुछ गड़बड़ है?

ब्रह्मा बोला...टीका तो राजा ने अपनी इच्छा से भेजा था। फिर गड़बड़ कैसी? हम जबरन बारात लेकर तो नहीं आये हैं?

मलखान...मामाश्री भी बारात में आये हैं, वो छुपकर गजराजा से कल रात मिलने गये थे। हमें सावधानी की आवश्यकता है।

आल्हा ने दूरदर्शिता से कहा.. महसूस हो रहा है कि कुछ गड़बड़ है यह ब्याह उतना आसान नहीं जितना हम समझ रहे; हो सकता, शत्रुओं ने राजा के कान भरकर विपरीत कर दिया हो। वह अपने वचन से फिर तो नहीं सकते, पर इस ब्याह को रोकने का भरसक प्रयास तो करेंगे। अब ऊदल ने सच बताना उचित समझा और कहा- दादा, वह अपने वचन से फिर गए हैं, ये देखो पाती। क्षमा करना, जब ये मिली थी तब बारात प्रस्थान कर चुकी थी। ये सन्नाटा इसीलिए है। राजा बिना लड़े ब्याह नहीं करेगा।

आल्हा ने कहा- अब हमें किसी तरह कांसों के किले के अंदर जाकर वहां की स्थिति जानकारी लेना चाहिए कि कहां पर क्या है? अगर किसी कारण अंदर घुसकर लड़ना पड़े, तो अपने बचाव के लिए जानकारी चाहिए।

तल्हन ने आल्हा की बात का समर्थन कर कहा....राजकुमार, हम आपकी बात से सहमत हैं। ढेबा, सगुन बता क्या किया जाये?

ढेबा अपना पत्रा देखकर बोला..... आप सब सौदागर के वेश में किले के अंदर जाओ, सारा काम सिद्ध होगा।

आल्हा ने कहा....तल्हन, ऊदल, ब्रह्मा और लाखन चले जायें, यह सुन मलखान बोला.. दादा, मैं भी जाना चाहता हूं।

आल्हा ने कहा....ठीक है, आप सभी गुरुजी के दिये हुए जायफल साथ रखना। वे पांचो वेश बदल कर अलग-अलग किले में प्रवेश करते हैं। तल्हन अघोरी बनकर कटोरा लेकर किले में गए। ब्रह्मा और लाखन ने जौहरी का रूप बनाया और कुछ हीरे-मोती देकर दरबान से कहा.....कोट कांसौंदी का बहुत नाम सुना है; अगर अच्छी कमाई हुई तो और देंगे। मलखान ने मनिहार का रूप बनाकर, दो बड़ी-बड़ी झोली कांधे पर टांगी। जिनमें एक से एक सुन्दर चूड़ी और कड़े भरे थे, ऊदल बजाज बनकर रेशम, सिल्क, मलमल के रंगबिरंगे कपड़े का गट्ठर बना लिया। दोनों ने स्वयं भी रंगगिरंगे कपड़े और पगड़ी बांध कर साथ-साथ चल दिए।

वह पांचों अंदर थे। सभी ने चौक, बाजार, गलियों और महल का निरीक्षण किया। तल्हन ने मंदिर पर अपनी बैठक लगाई।

मलखान बोला ...ऊदल जब हम यहां तक आये हैं तो हमें रानी महल तक जाना चाहिए। हो सकता है राजकुमारी से मुलाकात हो जाये? मैं एक नजर उसे देखना चाहता हूँ, उसे भी तो पता चले कि महोबा वाले वीर होने के साथ दिलवाले भी हैं?
ऊदल......दादा, यह बहुत कठिन काम है। हमें जानबूझ कर जोखिम नहीं लेना चाहिए।
मलखान बोला.....वह प्रेमी ही क्या, जो जोखिम से डरे और तू कब से जोखिम से डरने लगा?
ऊदल... ठीक है, चलिए। मलखान ने आवाज लगाई...चूड़ी ले लो चूड़ी....तभी दासी ने कहा... मनिहार तुम्हें राजकुमारी ने बुलाया है। दोनों बोले.. यह तो हमारा सौभाग्य है, चलो। दासी बोली.....बजाज, तुम यहीं नीचे बैठकर इंतजार करो। तुम ऊपर नहीं जा सकते।
ऊदल वहीं बैठ गया। मलखान दासी के साथ महल में गया। राजकुमारी सोने की रत्न जड़ित चौकी पर बैठी हुई थी। उसका रूप लावण्य भी सोने से मेल खा रहा था। मलखान कुछ देर तक उसे देखता रहा। फिर उसके कानों में मधुर आवाज पड़ी...ऐ चूड़ी वाले, सबसे सुन्दर चूड़ी दिखाओ। आवाज सुनकर मलखान चौंका और गठरी खोलकर बोला....राजकुमारी जी, सारी चूड़ी अच्छी हैं। इसमें ब्याहे का चूड़ा भी है, खास जयपुर का बना असली हाथी दांत का; राजकुमारी चूड़ी देखकर खुश हो चूड़ी उठाकर देखने लगी।
मलखान ने उसे दिखाते हुए कहा...राजकुमारी जी, ये पीला जोड़ा पांचाल पटियाला का है, ये पंचरंगा पटना पूना का, ये नीलम लगा नीला काश्मीर और काबुल का है, ये सतरंगा जोड़ा चारकसी महोबा का है, ये हाथी दांत का जड़ाऊ जोड़ा सिरसा का है।
राजकुमारी ने कहा....ऐ मनिहार, तुम बताओ महोबा कैसा है? वहां के राजा आल्हा ऊदल कैसे हैं? सिरसा कैसा है और वहां के राजा वीर बनाफर कैसे हैं? हमने सुना है उनके जैसा वीर दूसरा नहीं, हमने उनको पाने के लिए बहुत व्रत किए हं ै।
मलखान ने कहा....राजकुमारी जी, महोबा जैसी नगरी धरा पर दूसरी नहीं है। वहां राजा आल्हा धर्म रूप से राज करते हैं उनका राज गीता के कर्मयोग सिद्धांत पर आधारित है। वहां मां जगदम्बा का साक्षात् निवास है। बनाफर वीर योद्धा हैं।
राजकुमारी बोली...मनिहार, अब तुम सिरसा के राजा के बारे में बताओ कि वे दिखते कैसे हैं? उनका रूप कैसा है? हमने सुना है। सिरसा के राजा और ऊदल बहुत सुन्दर हैं। उनकी उनहारी कामदेव के समान है।
मलखान ने मुस्कराकर कहा...राजकुमारी जी, आपने सही सुना है। जो बजाज मेरे साथ है और नीचे बैठा है, बिल्कुल वैसा ही रूप ऊदल का है, सिरसा के मलखान का रूप बिल्कुल मेरे जैसा है, अगर आप मन की आंखों से देख सको तो पहचान लो।
राजकुमारी यह सुनकर चौंककर कर उसे गौर से देखने लगी और मलखान को मुस्कराता देख कर समझ गई कि वेश बदल कर बनाफर कुमार उससे मिलने आ गए हैं। उसने सिरसा का चूड़ा उठाकर कहा...इसे पहना दीजिए। मलखान हाथ पकड़ कर धीरे-धीरे उसे ब्याह का चूड़ा पहनाने लगा। उसकी आंखों में प्रेम रस हिलोरें ले रहा था। वह एक दूसरे को एकटक निहार रहे हैं, पे्रम की अपनी बोली होती है, उसमें कुछ कहने सुनने को नहीं होता। वह नजरों से ही एक दूसरे को प्यार का इजहार कर रहे हैं। पास खड़ी एक दासी ने इनाम के लालच में रानी को हाल बताया, रानी ने सारी सूचना राजकुमार गजलोहन को भिजा दी।

राजकुमार ने सौ सैनिक लेकर चुपके से राजकुमारी का महल घेर लिया। ऊदल ने ज्यों ही राजकुमार को देखा वह समझ गए और सतखंडा पर जाकर मलखान से कहा... दादा चलो हम चारों ओर से घिर गए हैं, यह सुन राजकुमारी बोली...अब कब मिलेंगे?
मलखान ने कहा... हम जल्दी ही आपको ले जायेंगे। ये हजार पांच सौ सिपहियों की मलखान और ऊदल की तलवार के आगे क्या बिसात? मलखान ने दरवाजे बंद कर दिये। गजलोहन ऊपर आकर बोला...बहना दरवाजा खोलो। हम जानते हैं कि भेदी अंदर छुपा बैठा है। तुम डरो मत, हम आ गये हैं। कोई जवाब न मिलने पर उसने दरवाजा तोड़ने का आदेश दिया। अब तक सारी सेना वहीं पर आ चुकी थी। ऊदल ने खिड़की खोलकर देखा बाहर मैदान साफ था। वह अपनी चाल में सफल हो गये थे।
ऊदल ने कहा... दादा, हमे सतखंडा से कूदना होगा और दोनों ही सतखंडा से कूद गए। फिर हाथों में तलवार लेकर बाहर खड़े दस बीस सैनिकों पर टूट पड़े। गजलोहन वहीं दरवाजा तोड़ते ही रह गये। यह खबर चौक पर बैठे तल्हन ने सुनी वह अपना चिमटा छोड़कर, तलवार लेकर भागा और ऊदल का साथ देने लगा। कुछ ही देर में मारकाट करते हुए वह किले के फाटक के बाहर थे।
दरबार में राजा चिंतित हैं। राजकुमार गजाधरन ने कहा....सच में बनाफर कुमार बहुत बहादुर हैं। जैसा सुना वैसा ही पाया। हम उनसे लड़कर नहीं जीत सकते इसीलिए उनसे बहना का ब्याह कर दीजिए। हमें ऐसे ही वीरों की तलाश थी।
वहीं बैठे माहिल ने कहा.... वाह राजकुमार! ये भी कोई बात हुई वह चोरों की तरह महल में घुस कर, आपकी बहन से मिलकर आपके मुंह पर तमाचा मार कर गए हैं और आप उनकी बहादुरी के गीत गा रहे हो। ये बात सच है कि उनसे लड़कर नहीं जीता जा सकता, पर छल से उन्हें जरूर जीता जा सकता है। बनाफर कुमार छल और फरेब की लड़ाई नहीं लड़ते। यही उनकी कमजोरी है। इसी का फायदा उठा कर उनको बंदी बना लो। राजा ने तुरंत कहा... वो कैसे? आप साफ साफ कहिए?
माहिल... महाराज, आप राजकुमार को भेजकर उनके आने पर बधाई दीजिए और उनके स्वागत में मेवा, मिठाई फल और शरबत भेजिए। उस शरबत में बेहोशी की बूटी मिला दीजिए। उन सातों भाइयों को राजकुमार स्वयं अपने हाथों से शरबत पिलायेंगे। उनके बेहोश होते ही उनकी मुश्कें बांध कर उनको बंदी बना कर तिलस्मी भक्सी में डाल दीजिए बस सारा खेल खत्म।
राजकुमार गजाधरन ने माहिल के जाने पर कहा....पिता श्री, आप माहिल की बातों में आकर गलत व्यवहार कर रहे हो। एक राजा को अकारण छल कपट करना न्याय संगत नहीं है। माहिल राजा जब अपनी बहन के नहीं हो सके, तो वो हमारे शुभ चिंतक कैसे?
महाराज....कुमार, हम अपनी बेटी की भलाई के लिए ही यह सब कर रहे हैं। आप अभी वह सब नहीं समझ पा रहे हो।
उधर नेगियों को साथ लेकर स्वागत के सामान सहित गजलोहन आल्हा की सेना में पहुंचा। वह दरबार में आता है सभी योद्धा अपने आसन पर बैठे हैं। आल्हा कहा... आइए अन्हिलवाड़ा के राजकुमार, महोबा के सैन्य दरबार में आपका स्वागत है।
राजकुमार ने कहा....हम आपको भांवर का न्योता देने आये हैं। आपकी सेवा में यह फल, मेवा मिठाई और शरबत लाये हैं नेगी के हाथ से सोने के जड़ाऊ गिलास का शरबत लेकर सभी को दिया। सभी ने शरबत के गिलास हाथों में लिए आल्हा ने कहा....राजकुमार आप बुरा न माने हम बिना जांच किए किसी बाहरी वस्तु का सेवन

नहीं करते। नीति भी यही कहती है। ऊदल ने इशारा करके झबरा कुत्ता को बुलाया और थोड़ा सा शरबत पीने को दिया, शरबत के पीते ही वह एक ओर लुढ़क गया।
यह देखकर राजकुमार घबरा गया, पर बात संभालकर हाथ जोड़कर बोला...अरे महाराज, हम तो बुद्धि की परीक्षा लेने आये थे, सो ले ली। आप हर तरह से हमारे रिश्तेदार बनने लायक हो। अब आप कुंवर मलखान को भेज दीजिए। जब तक दूल्हा पूजन नहीं करेगा तब तक मंडप नहीं गड़ेगा। पूजन के बाद हम स्वयं छोड़ जायेंगे। उसके बाद आप दूल्हे के साथ बारात लेके आ जाइए।
आल्हा ने कहा .... अभी-अभी आपने हमारे साथ छल किया है। हम आपके उपर विश्वास कैसे कर लें।
गजलोहन ने कहा....आप गंगा जल लाइए हम कसम उठाने को तैयार हैं। उसने कसम लेकर सबको विश्वास दिला दिया, पर ऊदल का दिल नहीं मान रहा था। उसने साफ मना करते हुए कहा... दादा अकेले नहीं जायेंगे। हम उनके साथ जरूर जायेंगे।
लोहा ने कहा...हमने सुना था महोबा के कुंवर ऊदल मलखान दस-दस हाथी का बल रखते हैं। चीतों से कुश्ती लड़ते हैं, काल की भी शंका नहीं करते, शेर का कलेजा रखते हैं, पर आप तो अपनी ही ससुराल अकेले जाने में गीदड़ की तरह डर रहे हैं।
मलखान तलवार खींचकर बोला....अरे लोहा, जबान संभालकर बात कर, तुझे पता नहीं तू किसके सामने बात कर रहा है।
लोहा कुटिलता पूर्वक बोला.....महाराज, मुझे आपकी वीरता पर कतई संदेह नहीं, पर शायद आपके भाइयों को भरोसा नहीं है। मैं उनको यही विश्वास दिला रहा हूं कि आप अकेले ही सौ के बराबर हैं। चलिए महाराज, मेरी बहना आपका इंतजार कर रही है।
मलखान ने उसकी बातों में आकर कहा...दादा, आप मुझ पर भरोसा रखिए। हम अकेले ही जाकर सारी रस्में करके आते हैं।
लोहा ....महाराज आप कुछ भी हथियार साथ लेकर नहीं जायेंगे। यही रिवाज है और आपकी वीरता का इम्तहान है।
ऊदल ने कहा.... हम बनाफरों का रिवाज है कि हम सोते हैं तो भी तलवार साथ। हम हथियार का त्याग कभी नहीं करते।
लोहा... तब आप एक कटारी ले लीजिए तो आपकी रश्म हो जायेगी और हमारी भी, वह मलखान को साथ लेकर चला गया।
राजदरबार में जाकर गजलोहन ने धीरे से कहा...महाराज, महोबा वाले बड़े सगुनियां हैं। वह जान गए कि शरबत में कुछ मिला है सो सारा शरबत फिंकवा दिया। अब मैं छल से मलखान को अकेला ले आया हूं। उसके साथ जो करना हो सो करिए।
गजराजा... आइए महाराज बनाफर राय, हम आपका स्वागत करते है। आप आसन गृहण कीजिए। मलखान आसन पर बैठ गया।
राजा मलखान को लेकर महल के चौक में जाते हैं। वहां पर मंडप आदि कुछ नहीं है मैदान में एक मोटा चंदन का मल्लखम्ब गड़ा है। चौक में जाते ही सारे फाटक बंद हो गए, मलखान सतर्क हो गया, तभी राजा ने वहां छिपे सैनिकों से कहा....मारो बचने न पाये, शीश काटकर देवी में चढ़ा दो। यह सुनते ही मलखान चंडी का का ध्यान करके दौड़कर वह मल्लखंब उखाड़ लिया और उससे अपना बचाव करते हुए सेना पर वार करने लगा। उस खंब के एक ही वार से चार-चार सैनिक मौत के घाट उतर जाते थे। कुछ ही घंटों में सारा मैदान साफ हो गया। लोहा तलवार लेकर कुछ सैनिकों के साथ

आगे बढ़ा तभी मलखान ने अपना खंब उसके ऊपर फेंक दिया जिससे लोहा उसके नीचे दब गया। अब ऊपर से मलखान उस खंब पर चढ़कर लड़ रहा है। अब गजराजा ने हाथ जोड़कर कहा....धन्य है वह माता जिसने तुम्हें जन्म दिया। तुम हर तरह से हमारे जवांई बनने लायक हो। राजकुमार, कुंवर गजलोहन को छोड़ दो, यह तो हमारी रस्म का हिस्सा था और वह पूरी हो गई। मलखान उसे अविश्वसनीय नजरों से देख रहा है। गजराजा ने कहा.... राजकुमार हम सच कह रहे हैं। मलखान ने उसे छोड़ दिया। उसके शरीर से भी रक्त बह रहा था। उसे राजा ने अपने ही अंगोछे से साफ किया और एक पालकी मंगा कर उसमें बिठाकर महल में बने मंदिर ले जाकर राजा ने कहा ...महाराज, हमारी पुरखों से ये रीत चली आ रही है कि दंड बांधकर दूल्हा मां भवानी को दस कदम की दूरी से दंडवत करता है। यह एक रस्म है कोई छल नहीं। मलखान ने विश्वास करके उनकी बात पर सहमति दे दी। आज्ञा पाकर सैनिकों ने छट से मलखान के हाथ पैरों में बेड़ी डाल दी और गले में तोक पहनाकर, देवी मां के सामने दस कदम की दूरी पर बिठा दिया।

जहां मलखान को बिठाया गया था वहां पर चालीस गज गहरे अंधेरे तिलस्मी तहखाने का दरवाजा था जिसे दाहक खंदक कहा जाता था। मलखान के बैठते ही पुजारी बने तिलस्म के दरोगा ने जैसे ही देवी मां के सामने रखे नारियल को उठाया वह दरवाजा नीचे की ओर खुल गया और मलखान उस अंधेरे तिलस्म के दाहक खंदक में खट से गिर गया। उसके साथ छल हो गया।

उधर सभी को मलखान की चिंता लगी है। माहिल जाने का बहाना ढूंढरहे थे सो बोले... मैं राजदरबार में जाकर मलखान का समाचार ले कर आता हूं। माहिल को पता चला कि मलखान को दाहक खंदक में डाल दिया है, तो वह बहुत खुश हुआ और वापस आकर बोला.....मलखान वहां की रस्में पूरी करके बहुत पहले वापस आ चुका है। राजा बारात के इंतजार में हैं।

उधर राजकुमारी एक बांदी ने मलखान को खंदक में डालते देख लिया था। उसने राजकुमारी को सारा हाल बताया।

राजकुमारी यह सब जानकर बहुत दुखी हुई और मलखान को छुड़ाने का उपाय सोचने लगी। दाहक खंदक में दरवाजे से जाने का रास्ता स्वयं महाराज के कक्ष से होकर जाता था। दूसरा रास्ता दो सौ फीट गहराई वाला वही था जहां से मलखान को फेंका गया था। राजकुमारी रात के तीसरे पहर तिलस्म के दरोगा यानी कि पुजारी के पास पहुंचकर बोली-.... बनाफर राजा का मैं वरण कर चुकी हूं, आप मुझे उनसे बात कर लेने दीजिए। दरोगा ने सहमति दे दी और दाहक खंदक का दरवाजा खोला। राजकुमारी ने जोर से कहा.. राजकुमार, मैं आपका हाल जानने आई हूं आप कैसे हैं, तो मलखान बोला.....आप दगाबाज बाप की बेटी हो। आपके पिता ने गंगा तुलसी की कसमें खाकर हमारे साथ विश्वासघात किया है। मैं आपकी कोई बात नहीं सुनना चाहता आप जाइए यहां से।

राजकुमारी.....स्वामी मैंने आपको पाने के लिए बहुत तपस्या की है। मैं रेशम रस्सी डाल रही हूं आप ऊपर आ जाइए।

मलखान....राजकुमारी जी, हम चोरी दगाबाजी नहीं करते, न हम चोरी-चोरी जायेंगे, अगर आप कुछ करना ही चाहती हैं, तो हमारे दादा अल्हा को हमारे साथ हुए धोखा का पैगाम भिजा दीजिए।

राजकुमारी....ठीक है बनाफर कुमार, कल ही दादा तक पैगाम भिजाती हूं। राजकुमारी ने वापस आकर पत्र लिखकर अपनी खास दासी को देकर कहा.....बहना, तू कल सुबह होते ही पहाड़ी मंदिर में अटका चढ़ाने के बहाने से चली जा और ये पत्र पहुंचा दे।
दासी पत्र अपने जूड़े में खोंसकर टोकरी में पूजा का सामान लेकर चल दी। सवेरे दरबान ने उसकी तलाशी लेकर जाने दिया। वह कुछ ही घंटो में आल्हा के लश्कर में पहुंचकर दरबान से बोली ...वह आल्हादेव को संदेशा लायी है। माहिल ने दासी को देखा उनका माथा ठनका और वह बोले...किससे मिलना है? क्या काम है? वह बोली...हमें अल्हादेव के लिए पैगाम लाये हैं।
माहिल बोला-हम ही आल्हा है। बताओ क्या पैगाम है? आओ मेरे साथ, माहिल उसे अपने तंबू में ले गया। दासी ने जूड़े से पाती निकालकर दी। माहिल ने पाती पढ़कर, चाबुक उठाया और मालिन को मार के बोला... तुम किसी से न कहना कि मलखान खंदक में कैद हैं। यह हमारे लिए अपमान की बात है। बनाफरों का रिवाज है कि हम दूत का कोड़ा मारकर स्वागत करते हैं।
चाबुक पड़ते ही वह चीखकर रोते हुए बोली...सरकार, गल्ती हो गई हम किसी से नहीं कहेंगे, हमें जाने दीजिए और वह भागी।
इधर आल्हा का दरबार लगा है। ऊदल ने कहा...ढेबा, जल्दी सगुन बताओ।
ढेबा ने पोथी देख कर कहा... दादा के साथ छल हुआ है, वह कैद में हैं। यह सुनकर सभी का कलेजा कांप गया।
आल्हा.....मलखान अकेला है, पता नहीं उसके साथ कैसा सुलूक हो रहा होगा?
ऊदल ने कहा....दादा, अब हमें देर नहीं करना चाहिए। गजराजा पर चढ़ाई करके वहां से मलखान दादा को छुड़ाना चाहिए।
आल्हा..ऊदल बात तो तुम्हारी सही है, पर हमें जल्दबाजी नहीं करना चाहिए। बिना लड़ाई के काम बन जाये तो अच्छा है।
तभी किसी स्त्री की चीख ऊदल के कानों में पड़ी वह चौंक कर तंबू से बाहर आकर यहां वहां देखने लगा। तभी उसे वह दासी जाते दिखी। ऊदल ने कहा...कौन हो? कहां भागी जा रही हो, रुक जाओ नहीं तो तीर चला देंगे। भागती हुई दासी रुक गई। वह डर से थर-थर कांप रही थी कि एक ने चाबुक मारे, दूसरा तीर चलाने को कह रहा है, अब क्या होगा?
ऊदल ने पास जा कर कहा....सच बताओ तुम कौन हो? कहां भागी जा रही हो?
दासी ने हाथ जोड़कर कहा... हम महाराज के लिए राजकुमारी का संदेशा लाये थे, पर वह तो पाती पढ़कर हमें मारने लगे।
ऊदल...कहां, किसको संदेश दिया है बताओ? दासी ने हाथ से माहिल के तंबू को इशारा किया। उदल ने दासी को साथ लेकर माहिल के पास जाकर कहा... मामा, हम ये क्या सुन रहे हैं? वो पाती कहां है, जो इसने दी है, आपने इसे क्यों मारा है?
माहिल...ये चिल्ला रही थी कि मलखे को खंदक में डाल दिया है। इसीलिए हमने मारा है। हम पाती ले के आ रहे थे।
ऊदल ने कहा... मामा हम आपको अच्छी तरह से जानते हैं और माहिल के हाथ से पाती ले ली। दासी को साथ ले कर दरबार में पहुंचकर ऊदल ने सारी बात बता दी और संदेश पढ़कर सुनाया। मलखान का समाचार पाकर दिल में कुछ राहत मिली। ऊदल ने दासी को बहुत सा इनाम देकर कहा... राजकुमारी जी, से कहना..हम जल्दी ही मलखान को

छुड़ाकर बारात लेकर आयेंगे।
तल्हन ....ये तो पता चल गया है कि मलखान किस खंदक में है। अब समस्या ये है कि उस खंदक तक कोई नहीं पहुंच सकता है। राजा के कमरे तक चौकसी बहुत है। आल्हा बहुत दूरदर्शी था। वह कठिन से कठिन समस्या का हल तलाश लेता था। सभी उसकी ओर देख रहे हैं। ब्रह्मा ने कहा... दादा, आप ही बताइए क्या किया जाये? कौन-कौन उनको छुड़ाने जाये?
आल्हा.....धर्म का पालन करते हुए, हमें कुछ ऐसा करना चाहिए कि मलखान को वह महल के बाहर ले आयें। उसके बाद तो उसे छुड़ाने में कोई परेशानी नहीं है, तल्हन ने कहा...महाराज आपने जो सोचा है वह खुल कर बताइए।
आल्हा ने कहा....हममें से कोई जोशी पंडित बनकर दरबार तक पहुंच जाये और महाराज पर सम्मोहन डालकर उन्हें मलखान को बाहर लाने को कहे तो काम बन जाये। यह सुनकर ऊदल तुरंत बोला- दादा मैं जाने को तैयार हूं।
तल्हन... ऊदल कुंवर यह काम आपके वश का नहीं है। जरा सी लापरवाही काम बिगाड़ सकती है। ज्ञान ध्यान की बातें करने में कुंवर आल्हा होशियार हैं। योजना आपकी है आप ही इसे अच्छी तरह से अंजाम दे सकते हो।
आल्हा ने कहा....हम सारी तैयारी करके अर्ध रात्रि को ही निकलेंगे। ऊदल ने कहा दादा, हम आपके साथ चलेंगे। आल्हा ने कहा ठीक है, पर हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि यह योजना मामा को पता नहीं चलना चाहिए। वह यह भी ना जान पायें कि हम तंबू से बाहर हैं। ब्रह्मा और लाखन को मामा की चौकसी करना है; वह अपने तंबू से बाहर न जाने पायें।
दोनों ने ही पंडित आचार्य का वेश बनाया। बड़ा मोटा सा चंदन लगाया। एक झोली कांधे पर रखकर उसमें पोथी पत्र रखकर, अर्धरात्रि को गुपचुप तरीके से बाहर निकल जाते हैं। प्रातःकाल होते ही किले के फाटक पर दो जोगी पहुंचे, एक गुरु और दूसरा चेला। चेला के कांधे पर झोली है गुरु के हाथ में चिमटा और पैरों में खड़ाऊं हैं, माथे पर अलौकिक तेज है। उन्होंने दरबान का हाथ देखकर उसका अगला पिछला बताया। उसने खुश होकर दरवाजा खोल दिया और आने वाले कल के सपने देखने लगा।
नगर में जाकर वह दोनों चौक पर बैठकर लोगों का भविष्य बता रहे हैं। एक सिपाही अपना हाथ दिखाता है। गुरु ने कहा...इस राज्य के ऊपर भारी मुसीबत आने वाली है। तुम भी इस राज का हिस्सा हो इसलिए तुम भी सावधान रहना।
सिपाही ने दरबार में जाकर कहा...महाराज गुस्ताखी माफ हो। नगर में दो पहुंचे हुए जोगी आये हैं, जो लोगों का हाथ देख रहे हैं। वह कह रहे हैं राज के ऊपर मुसीबत आने वाली है। राजा बोला ... उन जोगी को महल में ले कर आओ।
योगीराज को देख कर राजा उनसे प्रभावित होकर बोले... आइए योगीराज, विराजिए। मुनिवर, आप कहां से आ रहे हैं?
योगी...हम हिमालय के रहने वाले हैं। दिल्ली से आये हैं, कल भोर होते ही बनारस को जायेंगे फिर हिंगलाज के दर्शन करेंगे।
राजा....मुनिराज, यह तो हमारा सौभाग्य है कि आप हमारे नगर पधारे। अभी कुछ दिन हमारे राज में रुक कर जाइएगा।
योगी....नहीं महाराज, रमता जोगी, बहता पानी का ठिकाना नहीं होता। वैसे भी हम आपके राज में ज्यादा नहीं रुक सकते क्योंकि महाराज, आपके सभी ग्रह वक्री हैं। राहु

और केतु एक ही घर में बैठकर आग लगा रहे हैं, ऊपर से शनि की युति बन रही है, जो सीधा मारकेश बनाती है। बृहस्पति के सप्तम भाव में आते ही भयानक परिणाम सामने आयेंगे। कोई आपका अपना ही आपसे विद्रोह कर रहा है। हो सकता है आपको अपनों का बिछोह सहना पड़े।
महाराज ने कहा......मुनिवर, आप तो अंतर्यामी हैं। इस विपदा से बचने का कोई तो उपाय होगा? आप उपाय बताइए।
योगी ...महाराज उपाय तो है, पर बहुत कठिन है। महाराज तुरंत बोले- आप बताइये तो सही; मैं उसे अवश्य पूरा करूंगा।
योगी....आपके राज्य की सीमा पर दक्षिण दिशा में बने आपकी ग्राम देवी के मंदिर में तांत्रिक पूजा करनी पड़ेगी। उसके बाद ऐसे क्षत्रिय राजकुमार की बलि देना होगी जो क्वांरा हो, वीर हो, अंग भंग न हो। महाराज, अब आप ही बताइए कौन सा राजा अपने राजकुमार की बलि देगा? इसलिए यह पूजा नहीं हो सकती। महाराज कुछ देर सोचते हैं फिर उनको ख्याल आया कि मलखान भी तो राजकुमार हैं, क्वांरे हैं; उनकी बलि दी जा सकती है। यही सोचकर बोले....योगीराज, हम राजा हैं, प्रजा की रक्षा करना हमारा धर्म है। फिर किसी एक राजकुमार की जान के बदले सैकड़ों जानें बच रही हैं, तो यह राजधर्म है। हम बलि देने को तैयार हैं।
योगी...आप धन्य हैं महाराज! जिस प्रजा के सिर पर ऐसे राजा का हाथ होगा, वह दुखी कैसे हो सकती है? आप पूजन की सामग्री और राजकुमार को लेकर मंदिर आ जाइए। हम देवी मां की विधिवत अर्चना करके आपके हित में रक्षाबलि चढ़ायेंगे।
राजा बेटे से बोला....गजलोहन, पूजा का इंतजाम करके मंदिर में भिजा दो और बलि के लिए राजकुमार को लेकर हम स्वयं जायेंगे।
योगी राज...मंदिर पहुंच कर पूजा का इंतजाम करते हैं। चेला बने ऊदल के द्वारा कुछ जड़ी लाने के बहाने से अपने खेमें में सूचना भिजा देते हैं कि लाखन, ब्रह्मा सहित पचास सैनिक जंगल में छिप जायें और जरूरत पड़े तो बाहर आयें।
रात्रि होते ही पूजन शुरू होता है। राजा अपने बेटे गजलोहन और कुछ सैनिकों के साथ कपड़ा से मुंह ढंककर राजकुमार को लाते हैं। राजकुमार को पूजा के लिए सामने चौकी पर बिठा दिया जाता है।
योगी....राजकुमार के हाथ पैर खोल दीजिए और मुंह से कपड़ा हटा दीजिए। एक सैनिक ने कपड़ा हटाकर पैर खोल दिए, पर हाथ बांधकर ही रखे, अब वह एक दूसरे को पहचान चुके थे। मलखान और आल्हा ने एक दूसरे को देखा और इशारा किया।
लोहन बोला ..बनाफर, कोट कांसौंदी में घुसने का अंजाम देख लिया। अब अपनो को याद कर लो, मौत की घड़ी आ चुकी है।
मलखान ...सच्चा क्षत्रिय कभी मौत से नहीं डरता न किसी से आपकी तरह कसमें खाकर धोखा करता।
लोहा... मरने जा रहे हो, पर अकड़ नहीं गई। आस-पास कोई मददगार भी नहीं है फिर भी गरज रहे हो? देखा, आज तुम मेरे रहमो करम पर हो। ऊदल यह सुनकर अपनी हथेली को मसल रहा है आल्हा ने उसे शांत रहने का इशारा किया।
मलखान ने निर्भीक होकर कहा....राजकुमार, इतना गर्व मत करिये आपकी तरह गर्व अहिरावण ने भी किया था। वह राम-लखन को हर लाया था और इसी तरह देवी की भेंट चढ़ा रहा था, तभी हनुमान जी ने उनको बचाकर अहिरावण को यमपुरी पहुंचाया

था।
लोहा....वो भगवान थे सो बच गए, पर तू नहीं बचेगा। आज तू यमपुरी अवश्य जायेगा और अगर अपना मुंह बंद नहीं करेगा तो पूजा से पहले ही, मैं तेरा सिर काट दूंगा ओछी जात बनाफर की। कहकर लोहा ने अपनी तलवार खेंच ली।
यह देख सुनकर ऊदल के बदन में आग लग गई। वह अपनी तलवार निकाल कर लोहा पर झपटा और बोला.....ए दगाबाज बाप का दगाबाज औलाद, ओछी जात किसे कहता है? ओछी जात वो होता है जो अपने वचन का पक्का न हो, पीठ पर वार करता हो। तुम सब तो गंगा तुलसी की कसमें खाकर भी झूठ बोलते हो, अरे, ओछी जात तो तुम हो। ऊंची जात बनाफर की है जो मन, वचन कर्म के पक्के हैं और जैसे के साथ तैसे भी हैं। इस अचानक आक्रमण से लोहा घबराकर ऊदल से लड़ने लगा।
इधर आल्हा ने तलवार खींच कर मलखान की बेड़ी काट दी और दूसरी तलवार मलखान की ओर उछाल दी। यह सब इतनी जल्दी हुआ कि कोई कुछ समझ ही नहीं पाया, आल्हा और गजराजा लड़ने लगे। मंदिर में छिपे काला सिंदूरी पोते आल्हा के सैनिक भी निकल पड़े। लाखन और ब्रह्मा भी अपनी तलवार का जौहर दिखाने लगे। कुछ ही देर में कांसों के सारे सैनिक मारे गए। गजराजा के पैर उखड़ने लगे। वह बोले आल्हा महाराज आप धन्य हो आपकी दूरदर्शिता धन्य है। हम आपको मान गये, हमें क्षमा करना।
लोहा की तलवार हाथ से छूट गई ऊदल ने उसकी गर्दन पर तलवार रखते हुए कहा....राजकुमारी के भाई हो इसलिए छोड़ रहे हैं। जाओ ब्याहे की तैयारी करो, वह सब अपने अपने घोड़े पर सवार हो अंधेरे में विलीन हो गये, लोहा तिलमिला कर रह गया।
मलखान सहित सभी आल्हा के तंबू में बैठे हैं, सर्व सम्मति से राजा को पत्र लिखा कि आप अपनी बेटी का राजी खुशी से ब्याह कीजिए बिना बहू के बारात वापस नहीं जायेगी। हम व्यर्थ का खून खराबा नहीं चाहते, अन्यथा आखिरी रास्ता है कि युद्ध करो।
पाती पढ़कर राजा ने कहा....गजलोहन, गजधरन और बब्रूवाहन इन महोबियों को खदेड़-खदेड़ कर मारो एक भी बच ना पाये।
ऊदल को सेनापति बनाया गया और दूसरे दिन दोनों ओर की सेनायें मैदान में खड़ी हैं। दिन भर के युद्ध में गजराजा के आधे सिपाही मारे गए। गजराजा को जब ये पता चला, तो वह चिंतित हो गए और झट से श्यामा जोगिन से कहा......ये महोबा वाले तो बड़े लड़ैया हैं, इनसे पार पाना कठिन है। हमें हर हाल में जीतना है। तुम अपने जादू के जोर से इन सबको जड़ कर दो
श्यामा जोगन ने राजा को आश्वस्त किया और युद्ध-भूमि में आ गई। उसने देखा चारों ओर कोट कांसौंदी के सैनिक मरे पड़े हैं। कई घायल कराह रहे हैं। महोबा के सैनिक बड़ी वीरता और उत्साह से लड़ रहे हैं। श्यामा ने अपने गुरु बेताल का ध्यान किया और मंत्र पढ़कर उंगली का खून छिड़क कर सेना पर मशान छोड़ दिया। सारी सेना जहां की तहां जड़ हो गई। उनकी आंखें तो खुली थीं पर वह कुछ भी करने या सोचने समझने की स्थिति में नहीं थे। इसी को कहते हैं कि सेना पत्थर की हो गई।
ऊदल के गले में गुरुगोरख का जायफल था, सो उस पर जादू का असर नहीं हुआ और ढेबा दूसरी ओर होने के कारण बच गया। सारी सेना को जड़वत् होते देख ऊदल और ढेबा पीछे के पीछे वापस हो लिए और तंबू में आकर आल्हा को सारा हाल सुनाया।

सभी के चेहरे पर चिंता की रेखायें घिरी थीं। इस समय गुरुदेव भी नहीं आ सकते, वह कहकर गए थे कि वे एक मास की साधना करने हिमालय पर जा रहे हैं। इस बीच उनसे संपर्क नहीं हो सकेगा और वह भी कोई विघ्न नहीं चाहते हैं।
आल्हादेव ने कहा... इस समय हमारी सहायता महारानी सुनवां कर सकती हैं। वह जादू की विद्या में निपुण हैं। श्यामा जोगन का जादू वही तोड़ सकती हैं। ऊदल तुम जाकर बहुत ही गुप्त तरीके से अपनी भाभी को लेकर आओ, यह बात किसी को भी पता नहीं चलना चाहिए कि महारानी सुनवां युद्ध के क्षेत्र में आ रही हैं। ऊदल सुनवां रानी को लेने चला जाता है। ऊदल ने बताया... भाभी, श्यामा जोगन ने जादू से सेना को जड़ कर दिया है और गुरुदेव हिमालय गए हैं, दादा ने आपको बुलाया है।
सुनवां ने कहा... आप कुछ देर रुको हम तैयार हो कर आते हैं। यह कह कर मछला देवी माँ के सामने जाकर पूजन करती हैं। उसने अपने गुरु का दिया अमृत पात्र मां के सामने रखकर जागृत किया फिर मां से प्रार्थना कर बोली....माँ, आज मेरे पति संकट में हैं। उनकी मान-मर्यादा दांव पर लगी हुई है। माँ, मुझे शक्ति दो कि मैं उनकी सहायता कर सकूं। रानी सुनवां युद्ध विद्या में निपुण थी। वह सैनिक वेश में अपने हथियार बांधकर अमृतपात्र लेकर, सासू मां की आज्ञा से ऊदल के साथ चल दी। उनके जाने का महलों में किसी को पता नहीं चला। उसने पीहर से आई चारों चीलों को भी ले लिया, जो उसकी खास हथियार थी।
कुछ अंतराल के बाद वह अपने पति के खेमें में थी। इस समय तीन घड़ी रात्रि बीत चुकी थी। उसने आल्हा के चरण स्पर्श कर कहा... आप विश्वास रखिए मां जगदम्बा सब अच्छा करेंगी। बस ख्याल रहे कि मेरे यहां आने की बात गुप्त रहे।
आल्हा... महारानी, यह बात गुप्त रहेगी, हम अभी अर्ध रात्रि में ही जाकर यह अमृत-पात्र का जल सेना पर छिड़क कर आते हैं। आल्हा ऊदल सहित रानी मछला सैनिक वेश में ही जड़ सेना के पास पहुंची और मां जगदम्बा का ध्यान कर सभी सेना के उपर अमृतपात्र का जल छिड़ने लगी। धीरे-धीरे सारी सेना मूर्छा त्याग कर जागृत हो गई। दूसरे दिन महोबा की सेना रणभूमि में थी।
आज उनका सामना श्यामा जोगन से है इसलिये सुनवां ने उन चारों चीलों को मैदान में भेज दिया था और स्वयं गुरुदेव व देवि का ध्यान लगाकर तंबू में बैठ गई। वह जानती थी कि जादू का तोड़ जादू ही है।
गजराजा के मंत्री ने कहा... महाराज महोबा की सेना बढ़ी चली आ रही है। उनकी सारी सेना की मूर्छा टूट चुकी है।
राजा... जल्दी से अपनी सेना को कूच करने का आदेश दो। आज की सेना का सेना नायक बब्रूवाहन को बनाओ।
दोनों सेना मैदान में हैं। गजलोहन और तल्हन, लाखन और गजधरन, बब्रूवाहन और ऊदल के बीच युद्ध हो रहा है। एक-एक कर तीनों बेटों को हराकर सभी के दंड बंधाकर बंदी बना लिया है। राजकुमारों के बंदी बनते ही सेना में भगदड़ मच गई। राजा को खबर मिली तो वह श्यामा जोगन को लेकर युद्ध मैदान में आये और ललकार कर बोले... किसने हिम्मत की है मेरे बेटों को बांधने की? ऊदल ने सामने आकर कहा...हमने ही बांधा है, हमारा नाम उदयराय है। सकल संसार आल्हा ऊदल को जानता है। आप नाहक रार बढ़ा रहे हो, अभी भी वक्त है आप राजी खुशी से ब्याह कर दीजिए अन्यथा हमें मजबूरन आपको भी बांधना पड़ेगा।

ऊदल की बातें सुनकर राजा ने कहा... अभी तक वह रस्सी नहीं बनी जो गजराजा को बांध सके। काहे गाल बजाते हो। लो मेरा वार सँभालों! कहकर राजा ने तेगा चला दिया। उदल ने वार बचा कर अपनी शिरोही चला दी। राजा के कंधे में चोट आई। सैनिक वेश में पास ही खड़ी श्यामा से राजा ने कहा..... क्या देखती हो? कुछ करो। श्यामा ने यह सुनकर अपनी जादू वाली पुड़िया मुंह में भरकर जोर से फूंकी और सब ओर से महोबा की सेना पर तेज हवा के साथ पेड़ पत्ते उड़-उड़ कर गिरने लगे। इतना तेज अंधड़ था कि किसी को कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। यह देख सुनवां ने अपने तंबू से ही उसका जादू काट दिया।
अब चौंकने की बारी राजा और श्यामा की थी। वह सोच रहे थे कि उनके जादू का जवाब देने वाला कौन है? श्यामा ने जादू के जोर से सांप ही सांप पैदा किए जो केवल दिखते थे, पर काटते नहीं थे। यह देखकर सैनिकों में भगदड़ मच गई। यह एक तरह का सम्मोहन था। मछलारानी ने अपने जादू से वह सम्मोहन काट दिया। अब श्यामा जोगन ने मंत्र मारा और आकाश में चील कौवे मंडराकर सैनिकों पर छपटने लगे। उसके साथ आई चारों चीलें उन चीलों से लड़ने लगीं। यह देखकर वह जोगन बार बार मंत्र फूंकने लगी। तब वह चारों चीलें उसी जोगन पर झपट पड़ीं और कुछ ही देर में चारों चीलों ने उसे लहू लुहान कर दिया। ऊदल को सुनवां भाभी के कहे शब्द याद आये कि देवर जी, जब श्यामा का जादू असहनीय हो जाये, तो जब दोपहर ढलने को हो, सूरज की चमक सीधी उसके चेहरे पर पड़ रही हो, उस समय श्यामा का सिर काट लेना सारी मुसीबत ही खत्म हो जायेगी।
ऊदल ने कहा... भाभी मां, आप तो जानती हैं कि हम स्त्री पर हाथ नहीं उठायेंगे अन्यथा हमारा क्षत्रिय धर्म कलंकित हो जायेगा। तब सुनवा ने कहा था देवर जी, यह न कर सको तो उसका जूड़ा काट लेना, उसका जादू समाप्त हो जायेगा।
तभी ऊदल ने देखा वह खप्पर ले कर आ रही है उसके चेहरे पर सूर्य की चमक सीधी पड़ रही है। ऊदल ने सोचा वह आगे कोई चाल चले उससे पहले उसका जूड़ा काट ले। उदल ने झट से उसके बाल पकड़े और तलवार के एक ही वार से उसका जूड़ा काट लिया। जूड़ा के कटते ही वह चिल्लाती हुई भाग गई। अब गजराजा अगनियां घोड़े पर सवार होकर सेना में घूम-घूम कर सबको मारने लगे। यह एक अलग तरह का जादुई घोड़ा था। इसकी पूंछ से आग की लपटें निकल कर सभी को जला रही थीं। वह घोड़ा सारी सेना में नाच नाच कर सभी को भयभीत कर रहा था। उसे देखकर सभी भयभीत हो रहे थे। ऊदल ने मनियां देव का नाम लेकर एक ही वार से उसकी पूंछ काट दी, पूंछ के कटते ही उसका जादू समाप्त हो गया। अब गजराजा ने उसी घोड़े को आगे बढ़ा कर ऊदल पर वार कर दिया ऊदल वार बचा गया। तब तक आल्हा सामने आ गए। ऊदल ने कहा यह राजा आपके बराबर का है आप इससे निपट लीजिए। आल्हा ने अपना हाथी बढ़ाया और राजा के सामने आ गया। आल्हा भाला फेंकने में कुशल था। उसने पहला भाला मारा जो घोड़े के गले में आरपार हो गया। गजराजा संभल न पाये और घोड़े से गिर गए। आल्हा ने उनके गले पर तलवार रख दी। और सैनिकों ने उनको बांध लिया। राजा के बंधते ही सारी सेना भाग गई और युद्ध बंद हो गया।
सैनिक वेश में सुनवां रातों-रात ऊदल के साथ महोबा वापस आ गई। उसके आने जाने का किसी को पता ही नहीं चल पाया।
सुबह आल्हा का दरबार लगा, सभी अपने-अपने आसन पर विराजमान हैं। चारों

राजकुमार और गजराजा को दरबार में लाया जाता है। आल्हा ने सम्मान के साथ कहा... आइए महाराज विराजिए। राजकुमार आप लोग भी अपना आसन ग्रहण कीजिए।
गजराजा ने हाथ जोड़कर कहा........महाराज आल्हादेव, आप हमें कैद से मुक्त कीजिए, हम बेटी का ब्याह करने को तैयार हैं।
आल्हा.....महाराज आपने इतनी बार धोखा किया है, कि आप पर अब विश्वास नहीं किया जा सकता।
गजराजा ने कहा... महाराज हम अपनी करनी पर शर्मिंदा हैं। हमें एक मौका दीजिए। हम अभी मंडप तैयार कराते हैं।
आल्हा ने कहा....ठीक है, महाराज आप चलिए। भांवर की तैयारी कराइए हम आपके बेटों को अपने साथ में लेकर आते हैं।
कुछ देर बाद बीस घराती, मलखान को दूल्हा बनाकर किले में जाते हैं। सबका यथायोग्य सम्मान होता है। पहली भांवर के पड़ते ही रस्म के मुताबिक गजलोहन ने मलखान पर वार किया, तो ऊदल ने रोका। दूसरी में गजधरन, तीसरी में बब्रूवाहनने बाकी भांवर में भी सभी ने रस्म निभाई। अब तक सातों भांवर पड़ गयीं। माहिल ने राजा को एक ओर ले जाकर कुछ समझाया।
गजराजा ने कहा....महाराज, कुंवर कलेवा और हमारी कुल देवी की पूजा के लिए केवल घराती ही अंदर जायेंगे। केवल सात लोग आल्हा, ऊदल, ब्रह्मा, लाखन, सुलखे, त्रिलोक और सातवां मलखान मंडप के नीचे थे। बस इतनी प्रार्थना है कि हथियार लेकर हम कुल देवी के सामने नहीं जाते, हमारा यही रिवाज है। वह सब राजा की बात मान कर निहत्थे चले गए। सभी को सोने की थालियों में खाना परोसा गया और दो दो किलो सोने का वजनी गडुवाजल भरकर रखा गया। कलेवा कराने साले आते हैं।
गजराजा ने कहा...हमारा रिवाज है कि लड़ाई के बीच यह कलेवा खत्म किया जाता है। इतना कहना था कि चारों साले तलवार ले कर उनपर टूट पड़े। ये निहत्थे थे, पर महोबा वाले थे, हर परिस्थिति में राह निकाल लेते थे। आल्हा चिल्लाया, गडुआ उठा लो। सभी ने लोटा उठा लिए, एक वार भी जिसके सिर पर पड़ता उसका सिर तरबूज की तरह फट जाता, चारों राजकुमार घायल हो गए। उन सातों ने फिर बैठकर आराम से कलेवा किया और कहा .. क्या अभी भी कोई रस्म बाकी है।
अब राजा ने हाथ जोड़कर आल्हा से कहा... महाराज, बस आखिरी बार क्षमा कीजिए। हम माहिल की बातों में आ गए थे।
ऊदल ने कहा... दादा, ये चालुक्य राजा बहुत दगाबाज है। इसकी किसी बात का भरोसा मत करना। मुझे तो इतना क्रोध आ रहा है कि इसके राज्य को समुंदर में डुबा दूं और इसके वंश का नाश कर दूं।
आल्हा...महाराज आप क्षमा मांग कर हमें शर्मिंदा न करें। हम अब आप पर भरोसा नहीं कर सकते। महाराज, आप तो स्वयं समझदार हैं। आप स्वयं एक राज्य के राजा हैं, प्रजा के आदर्श हैं। हमें कोई भी गलत आचार व्यवहार नहीं करना चाहिए कि हमारी आने वाली पीढ़ी को शर्मिंदा होना पड़े। ये कसमें, वादे, वचन, गंगा तुलसी, विश्वास की चीज होती है। इसमें ईश्वर की सत्ता का निवास होता है। ये हमारी मान्यतायें हैं हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। हमें इनका मान रखना चाहिए। तभी हमारी आने वाली पीढ़ी इनका सम्मान करेगी। हम सब तो उस राजवंश से हैं कि..प्राण जायें, पर वचन न जाई।

वचन की खातिर राम वन को गए थे।
वचन की खातिर हरिश्चन्द्र ने अपना राज्य विश्वामित्र को दे दिया। भीष्म पितामह बाणों की शय्या पर पड़े रहे। हम क्षत्रिय हैं, हमारा वचन, हमारी कीर्ति, हमारा यश, हमारा इतिहास ही तो हमारी आने वाली पीढ़ी की सबसे बड़ी धरोहर है, जिसे ये संसार युगों-युगों तक याद करता रहेगा। हमारे आदर्शों पर चलेगा। हमें आपसी प्यार और सद्भाव की मिसाल कायम करना चाहिए।
गजराजा....महाराज आल्हन् हम आपकी दिल से इज्जत करते हैं, आपके विचार उत्तम हैं। हमारी बेटी का सौभाग्य है कि उसे आपके भाई जैसा वीर पराक्रमी पति मिला है। आप हमारे संबंधी बन गए हैं, तो अब हमारी ताकत भी दुगनी हो गई है।
आल्हा..महाराज आप हमारे संबंधी हैं, कहीं भी कभी भी हमारी जरूरत हो आप हमें याद करिये हम आपके पास जरूर आयेंगे।
राजा ने आल्हा से गले मिलकर भेंट की। मलखान की सरहजें आकर उनका मनौआ करने लगी। सासू मां ने आरती उतारी, राजा ने बहुत सा सामान धन दौलत और उपहार बेटी और उसके घरवालों को दिए। मां ने बेटी को समझाकर विदा किया।
बहू को विदा कराकर सभी महोबा वाले वापस चल दिए। अबकी बार वह दलदल के रास्ते से नही, दूसरे रास्ते से जा रहे हैं।
आल्हा ने कहा... हम सब जब यहां पर गुजरात में आ ही गए हैं तो अब सोमनाथ जी और द्वारकापुरी के दर्शन करते हुए ही वापस चलेंगे। सभी को यह बात भा गई। इस प्रकार सभी तीर्थ स्थान के दर्शन करके वापस महोबा को जाते हैं।
महोबा में तो चारों ओर उत्सव हो रहे हैं। बहू के आने पर सभी सासू में उसका स्वागत करती हैं। मुंह दिखाई में तरह-तरह की बेशकीमती भेंट दीं। महलों में अब दो-दो बहुंओ के आ जाने से रौनक हो गई थी। सब ओर खुशियां थीं।

17- चन्द्रावली का गौना

इतिहास के सूत्रों और वहां की भौगोलिक स्थिति से पता चलता है कि बौरीगढ़ वर्तमान के अफगानिस्तान, पंजाब, कश्मीर और अरुणाचल प्रदेश के बीच का हिस्सा था। पहाड़ी इलाका होने से इसका नाम पठौरीगढ़ था। उसी का अपभ्रंश होकर बौरीगढ़ हो गया। अपनी समझ, उस काल की परिस्थिति, भौगोलिक स्थिति को समझकर जगहों के नाम लिखे हैं। हम भी उसे पठौरीगढ़ ही कहेंगे।
इस इलाके के पर 1027ई. में महमूद गजनवी का आखिरी आक्रमण हुआ था और उसने पंजाब को अपने राज्य में मिला लिया और लाहौर का नाम बदल कर महमूद नगर रख दिया था। यहां पर जो भी हिन्दूशाही राजा थे उनका पतन हो गया, परन्तु 1036 में गजनवी के जाने के बाद ललितशाह के वंशज मधुकरशाह ने इसे अपने अधीन कर लिया था। उसके बाद उसने अपनी सीमा का विस्तार पश्चिम में अफगानिस्तान तक कर लिया था, पर वह इतने बड़े राज्य को सँभाल ना सका। उसी समय अफगान में मुहम्मद गौरी उसके सैनिकों ने 1144 ई. में अफगान सीमा पर आक्रमण करके पश्चिम का आधा भू भाग मधुकरशाह के बेटे वीरशाह से छीन लिया। था। उसके बाद गौरी 1173ई. में गजनी का शासक बना। वीरशाह के दो बेटे थे विजयशाह और जोरावरशाह।
वीरशाह की दिल्ली के राजा पृथ्वीराज और महोबा के परमाल राजा से मित्रता थी, इसी मित्रता के कारण पृथ्वीराज के कहने पर राजा परमाल में अपनी पुत्री चंद्रावली का विवाह 1148 ई. में वीरशाह के पुत्र विजयशाह से कर दिया था। परमाल चंदेल की पुत्री के विवाह का उल्लेख 1149-50 में लिखी गई कल्हण की राजतरंगणी में मिलता है। परमाल के दरबार के वीर योद्धा दस्सराज और बच्छराज का उल्लेख भी मिलता है। पृथ्वीराज रासो और परमाल रासो में भी इस बात का उल्लेख मिलता है कि जब ऊदल चंद्रावली की विदाई को गया था, तो दिल्ली के राजा पृथ्वीराज से मिलकर गया था, इसके बाद वीरशाह से युद्ध होने पर पृथ्वीराज ने उन्हें अपने राज्य से सेना ले जाने की अनुमति दी थी। इस बात से ज्ञात होता है कि ये वही बौरीगढ़ यानि पठौरीगढ़ है।
राजकुमारी चंद्रावली राजा परमाले की पहली संतान थी। राजकुमारी के जन्म के चौदह साल बाद तक राजा के कोई संतान नहीं हुई थी। आल्हा और मलखान के जन्म के बाद राजा परमाल को पुत्र सुख मिला था। रानी मल्हना की कोख से ब्रह्मा का जन्म हुआ था, उस समय राजकुमारी चौदह साल की हो गई थी। उसकी सुन्दरता के चर्चे दूर-दूर तक थे। उसी समय राजा परमाल के मित्र, बौरीगढ़ के राजा बीरशाह ने अपने बेटे के लिए चंद्रवली का हाथ मांगा था जिसे परमाल ने खुशी से स्वीकार कर लिया था।
सारी रस्मों और धूम धाम से चंद्रावली का ब्याह सम्पन्न हुआ था। राजकुमारी को बहुत सी भेंट और खजाना दे कर विदा किया गया। यह उसी समय की बात है, जब राजा के दरबार में दस्सराज और बच्छराज का आगमन हुआ था। उस समय दूर के कारण एक साल में गौने की रस्म की जाती थी। इसलिए तीसरी साल में चंद्रावली का गौना लेना था, पर विधाता को कुछ और ही मंजूर था। उसी बीच दस्सराज- बच्छराज भाइयों की मृत्यु के बाद राजा परमाल कुछ ऐसे उलझे कि बेटी की विदाई चार साल तक नहीं करा पाये, इसी बात का फायदा उठाकर माहिल ने एक पत्र परमाल को वीरशाह के नाम से भेजा था कि

मित्र चंदेल राय, मैं आपको अपने वचन का पक्का समझता था, पर आपने अपनी बेटी को ब्याह कर उसकी चौथी की रस्म नहीं निभायी है। हमारा रिवाज है कि पांचवी साल लग जाने पर हम विदाई नहीं देते; अब बारह साल में चौथी देंगे। इस बीच आप हमसे कोई संबंध नहीं रखना ना ही अपनी बेटी की खोज खबर लेने की कोशिश करना। बस मित्र थोड़ा लिखा ज्यादा समझना। आपका मित्र -बीरशाह। रानी और राजा ने उस पाती को सच समझकर मित्र की इच्छा मानकर कलेजे पर पत्थर रख लिया।
अब सावन का महीना चल रहा है। सावन तीज पर बागों में बहू-बेटियां झूला झूल रही हैं। रानी मल्हना आपने महल के सतखंडा पर खड़ी होकर देख रही हैं। उन्हें चंद्रावली की याद आ गई। वह सोचने लगीं कि अब तो उनकी बेटी को बारह सालों से भी ज्यादा हो गए हैं, आज उसके भाई समर्थ हैं। वह उसकी चौथी चालकर विदा करा सकते हैं। एक मां का मन बेटी से मिलने को मचलने लगा, सोई हुई ममता तड़पने लगी और वह रो पड़ीं। तभी ऊदल आए, मल्हना आंसू पोंछकर बोलीं....आओ मेरे लाड़ले बैठो।
ऊदल ने पूछा... बड़ी मां क्या बात है आप किस बात को लेकर चिंतित हो? ऐसा लग रहा है कि आप रो रहीं थी?
मल्हना... नहीं बेटा ऐसा कुछ नहीं है। फिर कभी बताऊंगी।
ऊदल... जो बात मेरी बड़ी मां की आंखों में आंसू ला दे, वह ऐसे ही नहीं हो सकती। आप बताइए आपको मेरी कसम।
मल्हना... पुत्र बात कुछ नहीं है, बस बागों में पड़े झूलों को देखकर मुझे आपकी बहिन और अपनी बेटी की याद आ गई।
ऊदल ने खुश होकर कहा..... बड़ी मां मेरी बहिन भी है। कौन है वो? कहां रहती है? आपने कभी बताया ही नहीं। आज तक तो मैने उसे देखा ही नहीं; वह कहा हैं? मल्हना ने सारी बात बताकर कहा..अब हम उसकी चौथी ले सकते हैं।
ऊदल...बड़ी मां आप तैयारी करिए हम जीजी की चौथी लेने जरूर जायेंगे। हमारे जैसे भाइयों के होते मेरी बहन की चौथी की रस्म न हो, ऐसा कैसे हो सकता है? इस त्यौहार पर हम सब अपनी बहन से राखी बंधवायेंगे।
मल्हना भी अपनी बेटी से मिलना चाहती थी। उसकी ममता उसे बार-बार बेटी की याद दिलाती थी, पर वह अब तक चुप थी। उसने कहा... पुत्र, सबसे पहले तो आप हमें वचन दीजिए कि आप किसी तरह की लड़ाई बढ़ाकर नहीं आओगे। अगर वह कुछ कहें, तो तुम उसे सहन करके चले आना। अगर वह भेजने से मना कर दें तो तुम किसी तरह की जोर जबरदस्ती ना करना।
ऊदल ... बड़ी मां मैं अपनी तरफ से कुछ भी गड़बड़ नहीं करूंगा। आपको वचन देता हूं।
मल्हना.... आप सबसे पहले महाराज से और फिर कुंवर आल्हा से आज्ञा ले लो। तब तक हम तैयारी करते हैं।
ऊदल ने जाकर पहले परमाले से और फिर आल्हा से आज्ञा ली। पहले तो सभी ने रोका, पर ऊदल की हठ देखकर आज्ञा दे दी।
परमाले ने रानी से कहा....रानी यह तुमने क्या किया? तो मल्हना बोली ...महाराज, सबको दौलत की भूख है। आपके घर तो पारसमणि है। खूब दौलत पहुंचा दो बौरीगढ़ वालों को, वह बहू की विदाई खुशी-खुशी कर देंगे।
महाराज ने अस्सी हाथी, पांच सौ घोड़ा, बीस रथ भरकर माल खजाना, रेशम थान, शाल दुशाले, कालीन तरह-तरह के गहने और दामाद के लिए सवा लाख की चौरा

कलंगी रख दी। सभी रानियों ने मिलकर सोने के 101 कलश सजाकर रखे।
राजा ने कहा.....पुत्र ऊदल, तुम सबसे पहले दिल्ली जाना और महाराज चौहान को अपने पठौरीगढ़ जाने का कारण बताना। वीरशाह चौहान के परम मित्र हैं, फिर वह जो मार्ग दर्शन दें, उसे मानकर तुम आगे का कार्य करना।
ऊदल...जी महाराज, मैं आपकी आज्ञानुसार ही कार्य करुंगा।
रानी मल्हना ने कहा- ऊदल, वीरशाह की महारानी कमला देवी और दिल्ली के चौहान की पटरानी अगमारानी मेरी बड़ी बहने हैं। उनके लिए हमने उपहार रखे हैं, उनको दे देना। ऊदल के जाने की बात पता लगते ही माहिल दिल्ली पहुंचा और पृथ्वीराज से बोला... महाराज, चंदेलाराय ने पठौरीगढ़ का बहाना करके ऊदल को भेजा है। असल में वह आपकी दिल्ली को लूटने आ रहा है। उसके पीछे मलखान भी है, यह सुनकर पृथ्वीराज बोला... राजा परमाल ऐसा क्यों करेंगे? हमने उनकी कौन सी खिलाफत करी है? हमने अपने बेटा पारथ और मलखान की लड़ाई को भूल कर सिरसा पर मलखान का अधिकार मान लिया है। हमारे लिए दोनों बच्चे बराबर हैं। यही आपको करना चाहिए। आप तो सभी बच्चों के मामा हो। आपको तो सबके लिए अच्छा सोचना चाहिए।
पृथ्वीराज एक बहादुर दूरदर्शी व न्ययाय प्रिय राजा था। सोच समझ के कदम उठाता था, पर जहां तक अहम के टकराव का सवाल आता, वहां पर हर राजा सब कुछ भूलकर अपने अहम को पूरा करने में लग जाता, इसी को सत्ता का मद कहते हैं।
चौहान ने फिर कहा-माहिलराय, आज देश में दो ही राजवंशों की वीरता के चर्चे हो रहे हैं, एक दिल्ली वाले, दूसरे महोबा वाले। आपको तो गर्व होना चाहिए कि आप दोनों के संबंधी हो, पर आप जब भी आते हो हमेशा किसी न किसी की चुगली लगाते आते हो। अब इस उमर में आपको यह सब शोभा नहीं देता। ऐसा न हो किसी दिन इसी चुगली के कारण बहुत बड़ा अनर्थ हो जाये और हम सब आपस में ही कौरव-पांडवों की तरह लड़कर समाप्त हो जायें।
माहिल... महाराज, मेरा काम आपको होशियार करना था, बाकी आप जाने। महोबा वालों से मित्रता कर आज नहीं तो कल आप पछताओगे। ये करिया नाग हैं। जब डसेंगे तब पता चलेगा। उसकी चाल सफल नहीं हुई तो वह पठौरीगढ़ को चल दिया।
ऊदल ने दिल्ली पहुंचकर बागों में डेरा डाला और दिल्ली महाराज को खबर करा दी कि हम आपके दर्शन के लिए आ रहे हैं।
ऊदल ने पृथ्वीराज को प्रणाम किया। पृथ्वीराज ने सिंहासन से उठकर ऊदल को सीने से लगा लिया और उंचे आसन पर बिठाया। उसके बाद पूछा.....महोबा में सब कुशल मंगल है? मेरे मित्र राजा परमाल कैसे हैं?
ऊदल....महाराज, आपके आशीर्वाद से सब ठीक है। आपके मित्र भी सकुशल हैं, महाराजा दादा ने ही हमसे कहा था कि हम आपसे मिल कर जाये। उसने एक सैनिक को इशारा किया और उसके हाथ से उपहार का थैला लेकर पृथ्वीराज को देकर कहा यह आपको उपहार दिया है। हम अपनी बहिन चंद्रावली की चौथी लेने पठौरीगढ़ जा रहे हैं।
पृथ्वीराज...कुंवर ऊदल, पठौरीगढ़ का शाहवंश बहुत हठीला है। इतने दिनों तक बहिन को भुला रखा था, अब चौथी लेने आये हो, तो हो सकता है, वो चंद्रावली को भेजने से इंकार कर दें। आप लड़ाई मत करना, वरना अभी समय है लौट जाओ!
ऊदल... महाराज, हम अपनी बहिन की विदा कराकर ही वापस आयेंगे। अब चाहे प्राण

रहें या जायें।
पृथ्वीराज ....ठीक है कुमार, तभी अगमारानी ने सुना कि ऊदल आया है, तो उसे अंदर बुलवाया। ऊदल ने महलों में जाकर रानी अगमा के चरण छुए। अगमा ने बहुत दुलार किया। अपनी बहनों के हाल चाल पूछे, बहुओं के समाचार जाने। उसके बाद चंद्रावली के लिए लहर-पटोरे और उपहार अपनी ओर से दिए। उसके बाद कुछ भेंट देकर कहा... ये मेरी बहन कमला जीजी को दे देना।
उसके बाद पठौरीगढ़ पहुंच एक कोस पहले डेरा डालकर ऊदल ने वीरशाह को पत्र लिखा ....महाराज, को राजकुमार ऊदल का प्रणाम.....हम आपके मित्र राजा परमाल का संदेश लाये हैं, आपके दर्शन करना चाहते हैं। आगे आपकी अनुमति होगी तो हम अपनी बहन की विदाई कराकर उसके साथ त्योहार मनायेंगे। हम चौथी का सारा सामान और उपहार आपकी सेवा में लाये हैं।
पाती सुनकर राजा खुश हुए और मंत्री से बोले....मंत्रीवर आप जाकर कुंवर ऊदल को सम्मान के साथ महलों में लाओ।
मंत्री ने कहा-राजकुमार हम आपको लेने आये हैं महाराज ने आपको बुलाया है। दोनों साथ-साथ महलों में जाते हैं।
राजदरबार बहुत ही राजसी तरीके से सजा था। सबके सिर पर एक ही रंग की एक जैसी पगड़ी थी। सभी अपने हाथों में नंगी तलवारें लिए बैठे थे। सभी ऊदल को एक टक देखे जा रहे थे। एक पल के लिए ऊदल को लगा कि राजा ने उसके साथ छल किया है, पर अगले ही पल उसने अपने को सँभाल कर राजा को प्रणाम किया। बाद पाती देकर कहा...राजा परमाल ने यह पाती आपके लिए दी है, यह चौथी का सामान और आपके लिए कुछ भेंट भेजी है, जो द्वार पर पचास छकड़ों में भरी है। पाती पढ़कर, वीरशाह बहुत खुश हुए और ऊदल के पास आकर उसे गले से लगाकर बोले.....आप सभी ने तो पठौरीगढ़ की सुध ही बिसरा दी थी, पर हमारे मित्र ने हमें याद किया, हमें यही बहुत है। हम आज आपको देखकर बहुत खुश हैं। राजकुमार, आप आसन पर विराजिए।
ऊदल....महाराज, ये चौथी के मटका और कुछ भेंट हैं जो रिवाज के मुताबिक हमें बहन को देना है। आप आज्ञा दीजिए।
वीरशाह ऊदल को लेकर महलों में जाते हैं। ऊदल अपने बेंदुला पर सवार हो कर महलों को जा रहे हैं। नगर की शोभा देखकर ऊदल का मन खुश हो गया। रास्ते में ऊदल का स्वागत फूल, अबीर, गुलाल केशर बरसा कर हो रहा हे। ऊदल जहां से भी निकलते हैं, स्त्रियां उसे देखकर आह भरकर रह जाती हैं। चंद्रावली ने सुना कि उसका भाई उसे लेने आ रहा है, तो वह बहुत खुश हो गई है। उसके मन में पीहर की यादें हिलोरें लेने लगीं। उसके माता पिता, उसका बचपन उसकी आंखों के आगे तैर गया। उसके छोटे छोट भाइयों की तस्वीर उसके मन में समाई थी, वह उसे बड़ा करके कल्पना करने लगी कि मेरा भाई कैसा दिखता होगा। उसका तन हल्का होकर मानों हवा में उड़ रहा है। कुछ ही देर में ऊदल का घोड़ा दरवाजे पर पहुंचा। रानी कमला ने आरती उतारकर कुंवर ऊदल का स्वागत किया। चंद्रावली ने टीकाकर उसके दोनों भुजबल को पूजा और आदर सहित अंदर लिवा लाई। ऊदल ने रानी के चरण छुए और साथ लाये भेंट के सामान को दिया। चौथी के मटका और उपहार रख दिए। उसके बाद कुछ गहना देकर कहा... ये सब नेगियों के लिए है। कमला रानी ने ऊदल से अपनी सभी बहनों के हाल पूछे। किसके कितने बच्चे हैं? बहुए कैसी हैं?

उसके बाद ऊदल अपनी बहिन के महल में चले गए। चंद्रावली अपने भाई का हाथ पकड़ कर महोबा के हाल पूछ रही है। वह उसे बहुत दुलार कर रही है... मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा कि मेरा छोटा भाई मेरे सामने है? वह अविश्वास से बोली
उदार ऊदल के जाते ही पीछे से माहिल दरबार में आते हैं। वीरशाह ने पूछा ... राजन सब कुशल मंगल तो है?
माहिल..महाराज, कहीं कुशल नहीं है। राजा परमाले ने आल्हा ऊदल को महोबा से निकाल दिया है। आखिर कब तक वो उनकी मन मानी सहते? उन दोनों ने राजा परमाल को बहुत बेइज्जत किया है, वो दोनों महोबा से निकलकर परमाल से बदला लेने के लिये उनका सिर उतारने की कसम खा चुके हैं। ऊदल ने कसम खाई है कि वो परमाल की बेटी को अपने महलों की बांदी बनाकर दिखायेगा। इसीलिए चौथी का बहाना करके आपकी बहू को लिवाने आया है। अब आप ही बताइए हम चंद्रावली के भी तो मामा हैं। ऐसा कैसे होने देंगे इसीलिए भागे चले आ रहे हैं। आप ऊदल को ठिकाने लगा दीजिए न रहेगा ऊदल, न रहेगी उसकी कसम।
वीरशाह.....यह कैसे होगा? ऊदल को मारना इतना आसान नहीं है। हमने उसकी वीरता के बहुत से चर्चे सुने हैं।
माहिल....अभी ऊदल महलों में ज्योनार करने गया है, उसी में जहर मिलाकर खिला दीजिए। किसी को कुछ पता ही नहीं चलेगा। इस बहाने आप अपने मित्र राजा परमाल की मदद भी कर सकेंगे। वीरशाह माहिल की बातों में आ गए, उन्होंने बेटों को बुलाकर यह बात बताई और सलाह की कि जान से न मारकर बेहोश करके तिलस्मी खंदक में डाल दिया जाये। चुपचाप भोजन में बूटी मिलाकर ऊदल को खिला दी और उसे बेहोश करके खंदक में डाल दिया। चंद्रावली को जब यह पता चला वह बहुत दुखी हुई। आज इतने सालों बाद मेरा भाई मुझे लेने आया और उसको कैद करा लिया। मैं ऐसा जानती, तो द्वार से ही उसे लौटा देती। उसने पता किया कि वह किस खंदक में कैद है और आल्हा को पाती लिखी......वीरन ऊदल कैद करा लिए गए हैं। आप मेरी चौथी भले न चलाओ, पर कोई जतन करके उसे छुड़ा ले जाओ और अपने तोता के गले में पाती बांध कर कहा ...हे राधारमण तोता, मेरा एक भाई खंदक पड़ा है, आज तू इस बहना का दूजा भाई बन जा और ये पाती मेरे भइया आल्हा को दे आ।
मालिन की नजर उस पर पड़ी, तो बोली... तोता अगर तू महोबा के राजा का संदेशा लाया हो तो बैठा रह, नहीं तो उड़ जा। तोता बैठा रहा। मालिन जाकर राजकुमार ब्रह्मा से बोली...राजकुमार जी, बागों में एक तोता बैठा है उसके गले में पाती बंधी है।
ब्रह्मदेव ने तोता से कहा.... ऐ तोताराम, हम महोबा के राजा परमाल देव के पुत्र ब्रह्मदेव हैं। हम राजा आल्हादेव के छोटे भाई हैं, अगर ये संदेशा महोबा के लिए है तो हमारी बांह पर आकर बैठ जाओ। तोता उसकी बांह पर आकर बैठ गया।
ब्रह्मा ने उसके गले से पाती खोली और पढ़कर बोला....यहीं पर बैठो हम जवाब लाते हैं। ब्रह्मा ने पाती लाकर दरबार में बांची और सारा हाल जान कर सभी सन्न रह गये, तो परमाल ने कहा ... हम जानते थे यही होने वाला है इसीलिये चुप थे।
ब्रह्मा ने कहा... हम अपनी बहन को विदा कराने जरुर जायेंगे। यह तो हमारा और हमारी बहन का अधिकार है।
आल्हा ने कहा.... ढेबा सगुन बताओ का कहता है? ढेबा ....सगुन के हिसाब से जोगी रुप में काम सिद्ध होगा।

आल्हा....काका तल्हन, आप कुछ खास फौजों को तैयार होने का आदेश दो। क्योंकि हम इतनी दूर से ज्यादा सेना न ले जा कर सिरसा की सेना ले जायेंगे। ब्रह्मा, मलखान को खबर भिजा दो अपनी फौज सहित तैयार हो कर हमें दिल्ली में मिले। हम दिल्ली में रुक कर महाराज पृथ्वीराज से भेंट करके कुछ गुप्त मंत्रणा करके आगे निकल जायेंगे। इस प्रकार आल्हा, ढेबा, ब्रह्मा, तलहन और लला तंबोली सहित खास-खास सरदारों की सेना तैयार हो कर चल दी। सेना ने दिल्ली के बाहर पड़ाव डाल दिया।
आने की सूचना दिल्ली दरबार में पहले ही मिल चुकी थी। पृथ्वीराज ने अपने मंत्री को भेजकर महाराज आल्हा देव को आदर सहित बुलाया। सभी के दरबार में आते ही पृथ्वीराज ने कहा.....आइए बनाफर कुमार, पधारिए। हालांकि पृथ्वीराज आल्हा से उमर में बीस साल बड़े थे। दोनों को ऊंचे आसन पर आदर सहित बिठाया और पूछा....ये लाव-लश्कर कहां जा रहा है?
मलखान ... कुंवर ऊदल बहन चंद्रावली की चौथी लाने गए थे, वहां महाराज वीरशाह ने धोखे से भोजन में बेहोशी की बूटी मिला कर उनको खंदक में डाल दिया है। अब एक ही रास्ता है पहले तो हम पत्र लिखकर उनसे बात करेंगे। अन्यथा युद्ध कर ऊदल को वापस लें। मलखान ने जोगी बनने वाली गुप्त योजना नहीं बताई। राजाओं को असली बातें बहुत गुप्त रखना पड़ती थी।
पृथ्वीराज ने कहा....वीरशाह, को ऐसा करना शोभा नहीं देता। इस समय देश में जो परिवर्तन हो रहा है। उसे नजर अंदाज नहीं करना चाहिए। अगर समाज इसी तरह आपस में लड़ता रहा, तो हम एक दिन शक्तिहीन होकर टूटकर बिखर जायेंगे।
आल्हा देव ....महाराज मुझे भी चिंता है। बार-बार ये म्लेच्छ हमारे देश में आकर लूट-पाट करके चले जाते हैं। गौरी भी पांच आक्रमण करके मुंह की खा चुका है। माना वो आपको हरजाना दे जाता है, पर हर बार उसका मनोबल बड़ जाता है, जो आगे हमें दुखदायी होगा। आपसे निवेदन है कि अबकी बार अगर सामना हो, तो सिर काट कर ये किस्सा ही समाप्त कर दीजिये।
पृथ्वीराज....महाराज आल्हादेव, मैं जानता हूं कि मैं गौरी को कभी भी मार सकता हूं, पर मैं जानता हूं कि एक गौरी के मरने से अफजलखां, उलजब्ती, रहमत खां, खोते खां, गजनी जैसे कई नए गौरी तैयार हो जायेंगे, जो अलग-अलग तरीकों से हर बार आकर हमारे देश को लूटेंगे। मैं हर बार उसे बंदी बनाकर इसलिए छोड़ता हूं कि वह जब भी आता है तो कई राज्यों में लूट-पाट करके वहां का खजाना और सुन्दर स्त्रिया, कन्याऐं साथ लेकर आता है। मैं उसे हराकर उसका सारा खजाना और वह बालायें उससे वापस ले लेता हूं और जो मां-बहन जहां की होती है, उसे गुप्त रूप से बाइज्जत वापस उसके घर पहुंचा देता हूं। इससे अपने देश का खजाना अपने ही देश में रहता है और देश की इज्जत भी। मैं जानता हूं अगर ये मां बहनें देश से बाहर चली गईं तो इनका जीवन नरक से भी बद्तर हो जायेगा। इनको मांगे से भी मौत नहीं मिलेगी। इससे अच्छा तो फिर इनको जान से मार देना ही बेहतर है। अफगानी इनको दास बना कर बेचेंगे फिर इनके साथ बहुत जुल्म होगा, बस इसी कारण मैं गौरी को झेलता रहता हूं।
आल्हादेव....महाराज, आपकी सोच तो सही है, पर हमारे ही कई राजवंश अपने घृणित स्वार्थों की पूर्ति के लिए, कूटनीति के तहत उन म्लेच्छों से अलग-अलग मित्रता कर रहे हैं। यह बहुत बड़े खतरे का संकेत है। हमें एक जुट होकर आपसी बैर भूल कर, आपस में विचार विमर्श कर इन सभी को समझाना चाहिए। कामरूप और पेशावर, सिंध प्रांत

और पंजाब की ओर से इनका आना जाना बहुत बड़ गया है। वहां के छोटे राज्यों पर इनका बहुत प्रभाव है। कुछ राजाओं ने इन्हें अपने राज्यों में रुक कर व्यापार करने की अनुमति दे दी है। पता चला है कि उनके पास अस्त्र-शस्त्र भी भारी संख्या में है। घोड़ा बेचना तो बहाना है। ‘‘महोबा, कन्नौज और दिल्ली इस समय महाशक्ति हैं।" ‘‘अत: हमारा नैतिक कर्तव्य भी बनता हैं कि हम एक धार्मिक महासभा कर सभी को एकत्रित कर उनसे इस पर विचार विमर्श करें।" माना हमारे सभी राजवंशों के आपस में किसी बात पर विचारों में मतभेद हो, पर बाहरी ताकतों के लिए हमें एकजुट होना चाहिए। तभी हम अपनी संस्कृति की रक्षा कर पायेंगे।

पृथ्वीराज....महाराज, हम आपकी बात से सहमत हैं। समस्या ये है कि कामरूप पेशावर पंजाब और सिंध प्रात के राजाओं को हम ये सभी बातें समझाते हैं तो इस बात को वे अपना अपमान समझकर हमारी बात को अनसुनी कर देते हैं।

आल्हा देव ... इस समय सबसे बड़ी समस्या सत्ता का मद है। छोटे से छोटे राज्य का राजा भी अपने को दिल्ली का चौहान समझता है, पर हमें प्रयास करना चाहिये। हमें लगता है कि एक वृहद धर्म सभा का आयोजन करके उसमें सभी राजाओं को बुलाकर हमें अपनी बात उनके सामने रखनी चाहिए। अपने देश पर जो दुश्मन बुरी नजर डाल रहे हैं यह अवगत कराना चाहिए।

पृथ्वीराज ...हम इस कार्य में आपके साथ हैं। उसके बाद आल्हा ने कहा ... महाराज अब हमें आज्ञा दीजिए।

वापस आकर आल्हा ने कहा-.... मलखान ब्रह्मा और तल्हन जोगी बनकर गुप्त रूप से पठौरीगढ़ जाओ और ऊदल को कैद से मुक्त कराओ। हम तीन दिन बाद सेना लेकर आते हैं। वे तीनों चले गए इस बात की किसी को कानों कान खबर नहीं होती।

बौरीगढ़ के फाटक पर जाकर जोगियों ने अलख जगाया। दरबान ने पूछा...जोगी बाबा कहां से आये हो?

तल्हन ....बच्चा हम बंगाले से आये हैं, हिंगलाज के दर्शन को जा रहे हैं। रमता जोगी बहता पानी, कहीं भी नहीं टिकता हम आज यहां अलख जगायेंगे, कल निकल जायेंगे। बाबा ने उसके सिर पर हाथ रखकर कहा......जा बच्चा खुश रह, मौज कर, तेरी तकदीर बदलने वाली है। दरबान ने फाटक खोल दिया। जोगी गाते बजाते नगर में घूमने लगे। ब्रह्मानंद ने जादू की बांसुरी बजाई जिसे सुनकर सभी का मन मोह गया। एक दासी ने महलों में जाकर रानी से कहा... महारानी जी नगर में जोगी आये हैं बहुत मीठी बांसुरी बजाते हैं। अच्छा तमाशा दिखा रहे हैं। रानी ने कहा... जा जोगियों को बुला ला। दासी जोगियों को साथ लेकर आ गई।

महारानी ने जेगियों से कहा....कोई अच्छी सी रागनी सुनाओ। ब्रह्मा ने अपनी बंशी बजाई, मलखे ने इक तारा बजाया, तल्हन खंजरी लेकर नाचने लगे। तीनों ने सभी का मन मोह लिया। चंद्रावली जोगियों का रुप देख सोच रही है। ये जोगी नहीं लगते, ये तो राजकुमार से लगते हैं। मेरा मन इनकी ओर बार-बार क्यों खिंच रहा है? मेरी बांयी आंख भी फड़क रही है।

जोगी बोले ... महारानी जी हम चलेंगे। रानी ने वशीकरण के चशीभूत होकर कहा...जोगी जी, हमारे राज में ही रूक जाइए।

जोगी... नहीं महारानी जी, हम जोगी हैं एक स्थान पर नहीं रुकते। हम कल ही यहां से चले जायेंगे। अगर आप कुछ करना ही चाहती हैं, तो राजघराने की सुहागन बहन-बेटी

के हाथ से भोजन करवा दीजिए।
रानी ने कहा....हां हां, जोगीराज हम अभी आपके खाने की व्यवस्था कराते हैं, चंद्रावली ने बीच में ही कहा.... मां जी, आप परेशान मत होइए। हम इनके खाने का इंतजाम करते हैं। आइये जोगीराज कहकर जोगियों को अपने साथ ले गई। भोजनशाला में उनके खाने की थाली लगवाई। उसके बाद चंद्रावली ने पूछा....आप जोगी जैसे तो नहीं लगते? आप कौन हो मुझे सच-सच बता दो।
मलखान ने कहा....बहना हम जोगी ही हैं, कनवज दिल्ली होकर आये हैं अब महोबा को होते हुए आगे निकल जायेंगे।
चंद्रावली ने हाथ जोड़कर कहा...आप महोबा जाकर मेरा संदेशा दे देना, रानी मल्हना हमारी मां हैं, ब्रह्मा, ऊदल मलखान मेरे भाई हैं। उनसे कहना ऊदल को खंदक में कैद करा लिया गया है, सो आ करके उसे छुड़ा ले जायें?
मलखान...बहन मन में धैर्य धरों तुम्हारे सामने ये ब्रह्मा और हम मलखान हैं.। यह सुनकर चंद्रवली की आखों से आंसुओं की धार बहने लगी। वह एक टक अपने भाइयों को निहारे जा रही है। फिर बोली-भैया आप जल्दी से ऊदल को लेकर निकल जाओ। मेरे भाई जहां भी रहें सुखी रहें। मैने आपको देख लिया, बस यही खुशी मेरे लिए बहुत है।
मलखान ...हम ऊदल को ले जायेंगे और आपकी चौथी ले जायेंगे। अब हमें ये बताइए ऊदल कौन से तिलस्म में कैद है?
चंद्रावली.....महल के पीछे एक राज नर्तकी रहती है। उसके द्वार पर दो दरबान हमेशा पहरा देते रहते हैं। वह कभी-कभी ही नृत्य करने जाती है असल में वह नर्तकी और दरबान उस तिलस्म के दरोगा हैं। उस नर्तकी के पलंग के नीचे से सीधा रास्ता खंदक तक जाता है। बाकी दूसरा रास्ता कठिन है वहां बिना राजा के कोई नहीं पहुंच सकता।
मलखान... बहना, उस नर्तकी की कोई कमजोरी हो तो वह भी बताओ।
यह सब हमको नहीं पता, पर उसके कोई संतान नहीं है तो वह उसी के लिए पूजा-पाठ कराती रहती है। अभी कुछ दिन पहले उसके यहां अनुष्ठान कराने बनारस से भद्राचार्य जी आये थे। मलखान बोला-बस बहन तुम चलने की तैयारी करो।
मलखान ने कहा हम और ब्रह्मा उसके पास जायेंगे। काका, आप बाहर से दोनों दरबानों का ख्याल रखना। वह शाम होते ही उस नर्तकी के घर पर पहुंच अलख जगाकर बोले.... जय बाबा बम-बम, जयगुरुदेव भद्राचार्य जी महाराज।
दरबानों ने पूछा... जोगी बाबा कहां से आये हो? क्या चाहते हो? जोगी बोले...हमें राज नर्तकी जी से मिलना है।
तब तक नर्तकी उनकी आवाज सुनकर बाहर आकर बोली ...जोगी राज हम ही राजनर्तकी हैं बताइए क्या बात है?
मलखान बोला....पुत्री हम भद्राचार्य जी के शिष्य हैं। उन्होने हमें कुछ जड़ी बूटी लेकर भेजा है।
यह सुनकर वह बोली...यह तो हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है। आइए महाराज आप अंदर आइए।
मलखान ने कहा....पुत्री यह बूटी आपको भद्राचार्य जी ने भेजी है। इसे सवा सेर पानी में तब तक उबालना है जब तक वह एक छटाँक न रह जाये। ऊँ शिवाय का जाप करते हुए पूरे समय उसे चलाते रहना है। हम तब तक यहीं बैठकर पूजन करेंगे।
उसने पूजा की व्यवस्था की तो ब्रह्मा समाधि लगाकर बैठ गए और मलखान देखभाल

कर रहे हैं। राजनर्तकी दवा बनाने चली गई। दवा में बेहोशी की जड़ी थी जो पानी खौलने पर, कुछ ही देर में नर्तकी को बेहोश कर गई। मलखान ने जायजा लिया और एक कमरे में पलंग पड़ा देखकर वह समझ गया कि यह वही कमरा है, जहां से रास्ता है वह चारों ओर रास्ता तलाश रहा है फिर उसने पलंग को एक ओर खिसकाया तो उसके नीचे से रास्ता बन गया। यह एक बहुत संकरी सुरंग थी, जो सीधी कैद खाने में जाती थी। मलखान ने पतली मजबूत रेशम की डोरी पास के खंबे से बांधकर सुरंग में लटकाई और सरकता हुआ नीचे पहुंचा। मलखान ने ऊदल को गले लगाया और दोनों ही आगे पीछे एक एक करके उसी डोरी से चढ़कर के वापस कमरे में आये। अब मलखान ने अपने साथ लाये जोगी के कपड़े ऊदल को पहनने को दिए और उसे भी जोगी बनाकर उसको लेकर बाहर आकर दरबान से बोला- हम कुछ जड़ी लेकर अभी आते हैं। फिर मलखान अकेला वापस आकर अंदर चला गया और कुछ पल बाद ही ब्रह्मा के साथ बाहर आकर बोला राजनर्तकी जी आपको बुला रही हैं। उनके अंदर जाते ही बेहोशी की पुड़िया फूंककर, वहां से निकल लिए।

ऊदल को लेकर वह तंबू में पहुंचे। सभी के चेहरों पर खुशी छा गई और आगे की रण नीति तय की।

आल्हा ने पत्र लिखा....महाराज वीरशाह को रामजुहार, हमने अपनी बहिन की चौथी लेने के लिए अपने लघु भ्राता ऊदल को भेजा था। आपने उसे बिना कुसूर कैद कराकर खंदक में डाल दिया। खैर हम उस बात को भूलकर आपसे विनम्र निवेदन कर रहे हैं कि आप हमारी बहिन की चौथी की विदा कर दीजिए। हम उसे लेने आये हैं और लेकर ही जायेंगे। आपके उत्तर की हमें प्रतीक्षा है। हम अनावश्यक खून खराबा नहीं करना चाहते। अगर आप चाहें तो हम आपस में बैठकर समस्या को सुलझा सकते हैं।

ऊदल को कैद से छुड़ाने को लेकर उनका गुस्सा सातवें आसमान पर था। उस पर धामन पत्र लेकर पहुंचा, महाराज ने कहा.....यह तो धमकी दे रहा है। माहिल ने सही कहा था कि दोनों भाइयों को ताकत का गर्व हो गया है। राजकुमार जोरावरशाह शीघ्र ही सेना तैयार करो, हम अपने मित्र राजा परमाल की बेइज्जती का बदला लेंगे। दूसरे दिन दोनो सेनायें आमने सामने हैं।

जोरावरशाह ने कहा...आपने चुपके से ऊदल को कैद से छुड़ा लिया, तो यह मत समझना कि हमको जीत लिया। लो अब मेरा वार सँभालो, जोरावर ने शिरोही चला दी। मलखान ने वार झेला और तीसरी बार में अपना वार किया जिसे जोरावर नहीं झेल पाया और एक ही वार में घोड़े से गिर गया। उसके गिरते ही मलखान के सैनिकों ने उसकी मुश्कें बंधा ली और कैद कर लिया। अब वीरशाह का दूसरा बेटा आगे आया, जिनका ब्रह्मा ने सामना किया। बहुत देर तक दोनों ओर से वार होते रहे और अंत में दोनों राजकुमारों को भी कैद कर लिया गया। यह सब देख कर सारी सेना भाग खड़ी हुई।

दूसरे दिन राजा वीरशाह स्वयं मैदान में थे। आज आल्हा से उनका सामना हैं। ब्रह्मा, मलखान, ऊदल भी उनके पीछे ही हैं।

आल्हा ने कहा... महाराज, आप वार करिये, हम पहला वार नहीं करते। यह सुन वीरशाह बोला....पहला वार नहीं करते, पर पीठ पे वार करते हो? यह कहकर सांग का वार किया। आल्हा ने वार बचाकर कहा......महाराज हम क्षत्रिय धर्म का पूरी तरह पालन करते हैं। हम निहत्थों, स्त्रियों, घायलों और बच्चों पर वार नहीं करते। हमने कभी

किसी की पीठ पर वार नहीं किया।
वीरशाह..जिस थाली में खाया उसी में छेद किया, बदला लेने उनकी बेटी भी नहीं छोड़ी; सिद्धांतों की बात करते हो और तेगा चलाया। आल्हा ने ढाल अड़ाकर कहा....महाराज जो कहना है, साफ कहिए पहेलियां, मत बूझिए। हम आपका आशय नहीं समझे?
वीरशाह ...जब तुम पिता समान राजा के स्नेह को न समझ सके, तो हमारी बातें कैसे समझोगे और तीसरा वार किया।
आल्हा ने ढाल पर वार रोका और उलट वार किया। राजा सम्हल न पाये और लड़खड़ा गए। ब्रह्मा और मलखान ने आकर उनको घेर लिया। आल्हा अभी उनकी बातें सुनकर किसी निर्णय पर पहुंचना चाहते थे सो उन्होंने रोककर कहा.....ब्रह्मा रुको, अभी रहने दो। ब्रह्मा नाम सुनकर वीरशाह चौंक गए। अब तक वह सम्हल कर बोले.... आल्हा देव, हम आपसे कुछ पूछना चाहते हैं। ....ये ब्रह्मा कौन है? किसका कुंवर है? आल्हा ने कहा...महाराज ये आपके मित्र राजा परमाल के सुपुत्र ब्रह्मदेव हैं।
वीरशाह... ये आपके साथ कैसे हैं? क्या परमाल ने अपने पुत्र को भी देश निकाला दे दिया है?
अब तक मलखान ने युद्ध रोकने का इशारा कर श्वेत ध्वज फहरा दिया था। सभी अपनी जगह पर रुक गए थे।
आल्हा....महाराज, ये आप क्या कह रहे हो? हम में से किसी को भी देश निकाला नहीं हुआ है। हम सब महोबा से आ रहे हैं। ऊदल के हाथ से महाराज चंदेल ने आपको पाती भी भेजी थी। हम तो बस अपनी बहन को ले जाने आये थे, पर अफसोस आपने ही हमें लड़ने को मजबूर किया हैं वीरशाह ने घोड़े से उतरकर ब्रह्मा को पकड़कर कहा... क्या तुम सच में परमाल के पुत्र हो?
ब्रह्मा... हां, महाराज, हम गंगा की सौगंध लेकर कहते हैं कि हम परमालदेव के पुत्र हैं। हम अपनी बहन को लेने आये हैं।
वीरशाह .... अरे बेटा! हम माहिल की बातों में आकर बहुत बड़ा अनर्थ करने जा रहे थे। हम माहिल की चालाकी नहीं समझ पाये और सारी बात बताकर राजा ने कहा...माहिल ने गंगा तुलसी करके हमसे चंद्रवली को बचाने की बात कही तो हमें उसका विश्वास हो गया। राजा ने ब्रह्मा को गले से लगाकर कहा कुंवर आल्हा, आप का बौरीगढ़ में स्वागत है। जो हुआ उसे भूल जाओ। और हमारा आतिथ्य स्वीकार करो। अब तक सारी बातें साफ हो गई, सभी महलों में आये। सभी का स्वागत हो रहा है।
आल्हा ने कुछ राजनीतिक पहलुओं पर राजा वीरशाह से बात की और समझाया कि किसी भी समस्या को आपसी सलाह मशवरा से हल करना चाहिए। बिना वजह युद्ध कर निरीह जन की बलि नहीं चढ़ाना चाहिए। विदेशी ताकतों के आगमन पर भी चर्चा हुई। आल्हादेव ने कहा...महाराज आपके राज्य की सीमायें बहुत ही महत्त्व की हैं यही वो जगह है जहां से बाहरी ताकतें हमारे देश में प्रवेश कर सकती हैं, ऐसी जगह पर है बहुत चौकसी की जरूरत है।
वीरशाह- हम आपकी बात समझ रहे हैं। हमारी यही कोशिश रहेगी कि विदेशी हमारी सीमा का उपयोग न कर पायें।
दूसरे दिन बहुत धूमधाम और खुशी-खुशी चंद्रावली की विदाई हुई। सभी बहन का डोला लेकर महोबा को चल दिये। चंद्रावली की सारी सखियां उसके स्वागत को खड़ी

थीं। रानी मलहना आरती का थाल लेकर दरवाजे पर थीं। बेटी डोला से उतरकर अपनी मां से लिपट गई। फिर सभी माताओं मिली। सभी उसे बार-बार दुलार कर रही हैं, सब ओर खुशियां छाई हैं।

चंद्रावली के महोबा आने के दस दिन बाद रानी सुनवां ने शुभ लग्न में पुत्र को जन्म दिया है। पंडितों के अनुसार यह बालक देवी का परम भक्त होगा। इसका नाम इंदल होगा। महलों में बधाई गाई जा रही है। द्वार पर नौबद बज रही है। रानी मल्हना बहुत से हीरे मोती दान में, नेग में लुटाने में लगी हैं। सभी दरबारी आल्हा व महाराज को बधाई दे रहे है

18-ऊदल का ब्याह

माहिल के मन में विचार आया कि ...ऊदल को काबुल भेजकर, यवनों से सांठ-गांठ करके मारा जा सकता है। वह महोबा पहुंचा।
परमाल ने कहा....आओ उरई वाले, विराजो! आज तो बहुत शुभ दिन है, हम पर दादा बन गए हमने पोते का मुंह देख लिया।
माहिल बैठने के बाद बोले..महाराज, बधाई हो, यह तो बहुत खुशी की बात है। पर एक बात और है कि सभी राजाओं में चर्चा हो रही है कि महाराज अपनी सेना की ओर ध्यान नही नहीं दे रहे हैं। उनकी सेना के सारे घोड़े बूढ़े हो रहे हैं। हमें भी यह बात सच लगी। खम्बात के राजा ने काबुल से दो हजार घोड़ा मंगवाये, काबुल का बादशाह उसका मित्र है इसीलिए अच्छी नस्ल के घोड़े उसे मिल गए हैं। आप भी किसी राजकुमार को भेजकर, घोड़ा मंगवा लीजिए। महाराज को यह बात मन भाई। घोड़ा की कमी उनको भी लग रही थी, सो उन्होने कहा...सेनापति से बात करके किसी को भेजते हैं। माहिल ने देखा सामने से ऊदल आ रहा है सो सुनाकर कहा.... महाराज, सेनापति वहां जायेंगे, तो यहां कौन देखेगा? वहां तो कोई अपना राजकुमार हो, जो बादशाह से मित्रता करे, उपहार दे और अच्छी नस्ल के घोड़ा भी लाये। ऊदल ने आते-आते यह बात सुन ली, तो वह बोला... महाराज बहुत दिनों से कहीं घूमना नहीं हुआ है। काबुल और कंधार देखने का बड़ा मन है। हम घूम आयेंगे और घोड़ा भी खरीद लायेंगे।
माहिल को मन मांगी मुराद मिल गई। वह बोला....महाराज कुंवर उदयराय से अच्छा घोड़ों का जानकार कौन है? ये तो बेंदुला जैसे घोड़े पर सवारी करते हैं। इनकी परख तो सबसे ऊंची होगी।
महाराज ...नहीं कुंवर उदल नहीं, किसी और को भेजेंगे, लंबा रास्ते है, दो महीना का समय लगेगा। इतने दिन हम कुंवर ऊदल को अकेला नहीं छोड़ सकते, पता नहीं वह किस-किस से झगड़ा कर बैठेगा और नई-नई मुसीबतें ले कर वापस आयेगा।
ऊदल ...महाराज दादा, हम कसम खाते हैं किसी से नहीं लड़ेंगे। हम घोड़ा खरीद कर सैनिकों को दे देंगे। वो पीछे लाते रहेंगे।
महाराज......कुंवर आल्हादेव आपको कहीं नहीं जानें देंगे, यह सुन ऊदल बोला... महाराज मैं रण में नहीं विनोद बिहार के लिए जा रहा हूं। मैने काबुल कंधार नहीं देखा, आप सब मुझे बच्चा समझते हैं। हर समय मुझ पर पहरा सा बिठाये रहते हैं। अब मैं बड़ा हो गया हूं। आप मुझे आज्ञा दीजिए नहीं तो, मैं कटारी मारकर यहीं मर जाऊंगा। यह कहकर उसने कटारी गले पर रख ली। महाराज. मजबूरी में कहना पड़ा.....ठीक है, पर तुम अकेले नहीं जाओगे साथ में अपने मित्र ढेबा को लेकर जाना।
ऊदल ने कहा... आल्हा दादा, हम काबुल घोड़ा खरीदने जा रहे हैं, घूमना भी हो जायेगा। तात् महाराज ने हमको आज्ञा दे दी।
आल्हा ने चौंक कर पूछा-.....महाराज ने तुम्हें आज्ञा कैसे दे दी?
ऊदल.... वो....वो दादा, उनका कहना है कि हमसे अच्छा घोड़ा का जानकार कौन होगा इसीलिए।
आल्हा...कुंवर ऊदल, तुम जानते हो कि मैं तुम्हें अपनी नजरों से ओझल नहीं करना चाहता और तुम इतनी दूर अकेले जा रहे हो; मेरे भाई मुझे वचन दो कि किसी से झगड़ा

नहीं करोगे और जल्दी ही वापस आओगे। ....ढेबा, ऊदल तुम्हारी जिम्मेदारी है। तुम दोनों वेश बदलकर सौदागर बनकर जाना। अपनी पहचान किसी पर भी प्रकट नहीं करना और शीघ्र ही महोबा वापस आ जाना। साथ में लाली और कंठी तोता का पिंजरा ले जाना जहां कहां भी विपदा हो तो पाती पहुंचा देना।
ढेबा.....महाराज आप चिंता न करें हम वेश बदल कर जायेंगे। और कुंवर जी का पूरा ध्यान रखेंगे। छकड़ों में धन भरकर चल दिए।
ऊदल ने कहा- मित्र हमने आज तक बाहरी दुनिया नहीं देखी, हम घूमना चाहते हैं इसलिए लंबा चक्कर लेकर कई राज्य घूमते हुए चलेंगे। ढेबा ने छकड़ों को दो जगह कर दरोगा को व्यापारी बनाकर बिठा दिया। उनके पास पर्याप्त हथियार थे।
उनसे कहा.... हम तुमको बीच-बीच में मिलते रहेंगे। तुम हमको नियत स्थान पर मिलना जब तक हम ना आयें वहीं रहना।
घोड़ों पर सवार होकर ऊदल और ढेबा चल दिए। अब वह साधारण नागरिक बनकर रास्ते में झूमते इठलाते चले जा रहे हैं। रास्ते में नगर को घूमते हैं, किसी सराय में रुकते हैं फिर आगे बढ़ जाते है। इस जीवन में ऊदल को बड़ा मजा आ रहा है।
इसी तरह कुछ दिल चलने के बाद वह ग्वालियर से होते हुए पचास कोस आगे नरवरगढ़ में पहुंचते हैं यह सिंध नदी के तट पर स्थित एक बहुत बड़ा राज्य था। महाभारत काल में यह राजा नल का राज्य था। 12वीं सदी में इसका नाम 'नलपुर' था। जजाल्लदेव के बाद उसका पुत्र रतनदेव द्वितीय 1120 ई. में यहां का राजा बना, उसके बाद उसका पुत्र करनदेव गद्दी पर बैठा। उसक काल के पांच अभिलेख अकलतरा, परगांव, शिवरीनारयन से मिले हैं। इसके अलावा नरवर और ग्वालियर का बहुत सा इतिहास मौजूद है। शिलालेखों से ज्ञात होता है कि 1165 में परमाल चंदेल से नरवर का युद्ध हुआ था।
व्यापारी बने ऊदल और ढेबा एक सराय में पहुंचते हैं। वहां पर रुकते हैं। तभी उसने देखा कि एक व्यक्ति खंजड़ी बजाकर ढोला मारू की प्रेम कथा सुना रहा है। उस कथा में बहुत दर्द था। सराय के मालिक ने बताया कि राजा नल के पुत्र साल्हकुमार और जांगलू देश की राजकुमारी के पे्रम की यह सच्ची कहानी है। आज भी नरवर के किले में इन प्रेमियों की रूह घूमती है। ऊदल ने कहा, मैं कुछ दिन यहां रुकना चाहता हूं, उस किले को देखना चाहता हूं। तभी एक घटना हो जाती है। नगर कोतवाल सराय में आता है और बेंदुला को देखकर पूछता है कि यह घोड़ा किसका है? सराय के मालिक ने कहा... दो व्यापारी हैं उनका है।
कोतवाल ने दोनों को बुलाकर कहा.... हमने सुना है आप घोड़ा के व्यापारी हैं, तो यह घोड़ा तुम हमको बेच दो।
ऊदल ने कहा...कोतवाल जी, हमने बचपन से इसे पाला है इसलिए यह घोड़ा बिकाऊ नहीं है।
कोतवाल... सौदागर हम तुम्हें मुंह मांगी कीमत देने को तैयार हैं। ऊदल ने देखा अब बात बढ़ रही है, तो वह बोला.....कोतवाल साब? हम काबुल से दूसरा घोड़ा लेकर आयेंगे। तब यह घोड़ा हम आपको दे देंगे। अभी हमे इस घोड़े की जरूरत है।
कोतवाल........नहीं, हम अभी यह घोड़ा खरीदेंगे। बदले में तुम हमारे अस्तबल से कोई भी घोड़ा लेकर काबुल जा सकते हो।
ऊदल.... नहीं हम अभी यह घोड़ा नहीं दे सकते।

कोतवाल....तो फिर अभी हमारे नगर से निकल जाओ। यहां पर तुम नहीं रह सकते हो, अभी यहां से जाओ।
यह सुनकर उसने हाथ की मुट्ठी भींच ली। उसके नेत्रों से ज्वाला निकलने लगी, ढेबा ने समझाया उसने दादा को वचन दिया है।
वह कोतवाल से बोला... हम अभी ही यहां से काबुल के लिए कूच करते हैं। वापस आकर आपको ये घोड़ा बेच देंगे।
नगर के बाहर आकर ऊदल ने कहा.... ढेबा भइया, पहली बात हम अभी नगर घूमना चाहते हैं। दूसरी बात, उस पाजी काजी के कहने से हम नगर नहीं छोड़ेंगे। यह हमारी शान के खिलाफ है। हम ऊदल हैं, अपनी मर्जी के मालिक हैं।
ढेबा... कुंवर जी, वह हमें अब नगर की किसी भी सराय में नहीं रहने देगा हम यहां और रुके तो हो सकता है रार बढ़ जाये।
पर वह ऊदल ही क्या जो किसी भी बात को आसानी से मान जाये, वो तो हठी था, उसकी नजर सामने बाग पर पड़ी, उसके अंदर कई कमरे बने थे। ऊदल ने कहा....तुम रुको, और वह बाग में बेधड़क घुस गया। अभी वह बाग निहार रहा था कि मालिन ने आकर कहा....ऐ मुसाफिर तुम कौन हो? कहां से आये हो? यहां से भाग जाओ अन्यथा बिना मौत मारे जाओगे।
ऊदल ने उसे ग्यारह मुहरों का कंठा देकर कहा.... यह लो अपना इनाम, हम आज रात इस जगह पर रुकना चाहते हैं। हम सौदागर हैं; एक लुटेरा सराय से हमारे पीछे लग गया है, हम उसी से बचकर यहां आ गए हैं उसका पीछा छूटते ही यहां से चले जायेंगे। तब तक हम आपको रोज पांच अशरफी देते रहेंगे। बस दो दिन की बात है। कंठाहार देख उसकी आंखों में चमक आ गई, मालिन बोली.... ठीक है आप यहां पर रह सकते हो पर दो दिन की पेशगी देना पड़ेगी, ऊदल ने दस मुहरें देकर कहा...हां यह लो।
मालिन ने उनके रहने की व्यवस्था कर दी और खंडहर पिछवाड़े उनके घोड़ा बंधवा दिए। मालिन ने पूछा...कहां से आये हो?
ऊदल ने कहा... हम महोबा के रहने वाले हैं, तो मालिन ने कहा...हम नैनागढ़ की मालिन की बेटी हैं। हमारे यहां की राजकुमारी सुनवां महोबा के राजा आल्हा महाराज को ब्याही हैं। वह हमारी सखी हैं। वह कैसी हैं उनका हाल बताओ।
ऊदल ...अब हम तुम से सांची बात बताते हैं। हम सुनवां के देवर ऊदल हैं। सुनवां भाभी अच्छी तरह से है। यह सुनकर हिरिया मालिन बहुत खुश हुई। वह बोली अब तो आप जब तक चाहो यहां रह सकते हो। इसे अपना ही घर समझो। दिन में ऊदल रूप बदलकर नगर घूमता, रात को बाग में विश्राम करता। मालिन रोज फूल चुनती फिर गजरा बनाकर ले जाती थी। यह देख ऊदल ने पूछा...भौजी इतना परेशान क्यों होती हो, रोज ये गजरा किसे ले जाती हो?
मालिन....हमारी राजकुमारी हर रोज बदल बदलकर फूलों का सिंगार करती हैं और जिस फूल का हार, गजरा बनेगा उसी का बिछौना भी लगेगा। फूलों के इसी शौक के राजा-रानी उन्हें प्यार से फुलवा कहते हैं। हमारी राजकुमारी बहुत सुन्दर और फूलों के समान नाजुक हैं। आज फूल तोड़ने में बहुत देर हो गई है। अभी आप सभी का भोजन बनाना है और हार गजरा भी।
ऊदल ने कहा....तुम भोजन बना लो, गजरा हम बनाते हैं ऐसा गजरा बनायेंगे कि राजकुमारी तुम्हें बहुत सा इनाम देगी।

मालिन....तब तो आप ये गजरा जरूर बना दो। ऊदल ने सात लर का बहुत ही सुन्दर हार बनाया। बालों की बेणी को इस तरह से एक दूसरे में फंसाया कि उनकी सुन्दरता बहुत बढ़ गई। बीच बीच में अपनी ओर से मोती भी पिरो दिये। मालिन चौक कर बोली.....अरे कुंवर जी, हम तो दो लर का बनाते थे ये आपने तो सात लर का हार बना दिया, सचमुच बहुत सुन्दर है। आज तो राजकुमारी जी बहुत खुश हो जायेंगी। हार लेकर मालिन पहुंकर सिंगार करने लगी, फुलवा जेसे ही हार को देखती है, चौंक कर हार अपने हाथ में लेकर बोली... यह हार तो बहुत सुन्दर बना है, किसने बनाया है? मालिन ने कहा....राजकुमारी जी हम ही बनाये हैं।

राजकुमारी ने हार को उलट पलट कर देखा और पहना उसके बाद फिर बोली ... नहीं ये हार तुमने नहीं बनाया, सच बताओ किसने बनाया? झूठ बोलने पर सजा मिलेगी, अब मालिन ने घबराकर कहा....जी वो...हमारी बहन की लड़की आई है। उसी ने यह हार बनाया है। उसे हार गूंथने का बड़ा शौक है। वह घबराहट में यह सब बोल गई।

राजकुमारी ने पूछा... वह कहां रहती है? मालिन ने घबराकर कहा... जी, वह महोबा में ब्याही है। वहीं से आई है।

राजकुमारी.. कल तुम उसे हमारे पास लाना, हम उसे इनाम देंगे। हां कल भी उसी से हार बनवाना, उसके लिए पालकी भेजेंगे।

मालिन उदास होकर बागों में पहुंची और सिर पकड़कर ऊदल से बोली... महाराज हम तो फंस गए, अब का करें? राजकुमारी ने हार देखकर कहा .. यह हार तुमने नहीं बनाया है। सच बताओ किसने बनाया? तो हमने कह दिया हमारी बहन की लड़की आई है उसी ने बनाया, अब वो उससे मिलना चाहती हैं? कल महलों में बुलाया है। अब हम का करें? कहां से किसको ले जायेंगे?

राजकुमारी जी, कल तो हमारी जान ले लेंगी- वह रोने लगी। ऊदल को ठिठोली सूझी। उसने सोचा यह मेरे कारण मुसीबत में पड़ी है। अब मदद करना मेरा धर्म है, इस बहाने राजकुमारी को भी देख लेंगें, जिसके रूप का गान हिरिया करती है। उसने कहा तुमने हमारे लिए इतना किया, हम समस्या हल करेंगे। ये लो मुहरें अच्छे से कपड़े, चूनर, चूड़ी, ले आओ। हम कल साथ चलेंगे।

दूसरे दिन लंहगा लुंगरा पहनकर, हाथ भर का घूंघट डाल कर, जनाना वेश लिए ऊदल मालिन के साथ पालकी में बैठ कर चल दिया। पालकी से उतरकर ऊदल मालिन के पीछे-पीछे महलों में गया। मालिन ने कहा....राजकुमारी जी ये हमारी बहनोती है।

राजकुमारी ने पलटकर देखा। ऊदल ने देखा राजकुमारी सचमुच बहुत सुन्दर है। उसके बारे में जितना सुना था, वह उससे कहीं ज्यादा सुन्दर थी। वह घूंघट से देखता ही रह गया। राजकुमारी बोली.... यह जनाना महल है, ये घूंघट क्यों निकाले हो?

मालिन....यह तो हमारी बहू बेटी की मर्यादा है। मचिया पर बैठने का इशारा करके फुलवा ने कहा..बैठो और महोबा के हाल बताओ।

ऊदल सोच रहा है कि बुरे फंसे, अब अगर वो मचिया पर बैठता है, तो उसकी शान में गुस्ताखी होती है उसका बीरोचित धर्म खंडित होता है। वह सामने पड़े दीवान पर बैठ गया। फुलवा ने मालिन की ओर देखा.....मालिन ने हाथ जोड़कर कहा....महोबा की महारानी सुनवां की सहेली है वो इसे अपने साथ बराबर पर बिठाती थी, तो इसकी आदत खराब हो गई है।

फुलवा... इसे यहीं रहने दो। तुम जाओ, फुलवा ने पूछा... तुम्हारा नाम क्या है?

'छलबलिया' ऊदल ने बहुत ही मीठी वाणी में जवाब दिया....मेरा नाम चंपा है। वह बोली-चंपा अपना घूंघट खोल लो। उसने घूंघट उलट दिया, रूप देख फुलवा चौंक गई। वह बोली....अरे तुम तो बहुत सुन्दर हो। मालिन जैसी नहीं लगती? ऊदल...राजकुमारी जी, यह तो महोबा के पानी का असर है।

फुलवा उसकी सखी बन गई। वह बोली .....महोबा के बारे में, वहां के राजारानी के बारे में, राज के बारे में सभी कुछ बताओ।

ऊदल... महोबा इंद्रपुरी के समान सुन्दर नगरी है, हर ओर मां भवानी की कृपा बरस रही है; पारस पथरी राजा के पास है। वहां के राजा आल्हा और ब्रह्मा का ब्याह दिल्ली में हुआ है, उनके भाई ऊदल क्वांरे हैं।

फुलवा बोली- हार देखकर ऐसा लग रहा था कि किसी मर्द ने बनाया है। बहुत कड़ी गांठे लगी हुई थीं। अब तुम्हें देखकर पता चला गांठे कड़ी क्यों लगी थीं? फुलवा ने उसका हाथ पकड़कर पूछा........अच्छा चंपा एक बात बताओ, तुम्हारे ये हाथ इतने मजबूत से मर्दों जैसे क्यों हैं? तुम्हारी सुन्दरता और नाजुकपन को देखकर ऐसा लगता है जैसे किसी राजमहल में पली बढ़ी हो?

ऊदल...राजकुमारी जी, हम हमेशा से ही महलों में रहे हैं, तो कुछ उसका असर है, कुछ विधाता की दया है कि छप्पर फाड़ कर रूप दे दिया, अब यही रूप जी का जंजाल बना हुआ है। वो कैसे? राजकुमारी ने मुस्करा कर पूछा

ऊदल ने कहा.....अरे जो देखे, वही पीछे पड़ जाता है तभी तो घूंघट करती हूं। ऊदल को इस ठिठोली में मजा आ रहा था। वह फुलवा को देखना चाहता था, पर किसी क्वांरी के साथ अकेला नहीं रहना चाहता था। इसलिए उसने कहा... आपकी आज्ञा हो तो जायें।

फुलवा ने हंसकर कहा.....चंपा आज तो हम नहीं जाने देंगे, आज हम पंसासार खेलेंगे। दासी ने पांसे बिछाये और पंखा करने लगी। दोनों पांसे के पास आकर बैठ जाती हैं। दोनों खेलने लगते हैं। ऊदल चौसर का खिलाड़ी था, उसकी चालें देखकर फुलवा हैरत में पड़कर बोली... तू तो किसी मंजे खिलाड़ी जैसी चालें चलती है। ऊदल सम्हलकर बोला- हां रानी के साथ खेलकर सीख गई हूं।

उसने पूछा.....चंपा एक बात बता, तूने कहा था कि कुंवर ऊदल क्वांरे हैं; हमने सुना कामदेव की उन्हारी हैं, कैसे दिखते हैं?

ऊदल ने चाल चलकर कहा.....हां वह बहुत सुन्दर हैं, तलवार के धनी हैं, पर पराई तिरियों पर आंख नहीं उठाते हैं।

फुलवा...चंपा, हमने उनकी वीरता की बहुत सी बातें सुनी हैं। सच बताऊं, हम ने मन से उनको वरणकर लिया है। इसीलिए जब सुना कि तू महोबा से आई है, तो तुझे बुलाया है, तू मेरा प्ेरमपत्र ले जाकर कुंवर ऊदल को दे देना।

ऊदल...जी राजकुमारी कहकर, चाल चलने को करता है तभी पंखा के झोंके से उसकी चुनर का छोर उड़ जाता है और बगल में खुंसी तलवार की मूठ पर फुलवा की नजर पड़ गई। उसने पंखा करने वाली दासी को कहा...तुम जाओ सुबह होने वाली है।

अब फुलवा ने क्रोध से कहा....तुम कौन हो, तुम्हारी हिम्मत कैसे पड़ी हमारे महल आने की? हम अभी भाई को बुलवाते हैं।

ऊदल.....राजकुमारी जी, आपके हर सवाल का जवाब है आप शांत हो जाइए। हम बनाफर कुमार ऊदल हैं। इसके बाद जो हुआ वह सब ब्यान कर दिया। सुनकर फुलवा का गुस्सा शांत हो गया, तो उसने पूछा... आपने ये जनाना वेश क्यों धरा?

ऊदल....यह सब आपके कारण हुआ। हम आये नहीं हैं बुलाये गए हैं। बिना बुलाये हम कहीं नहीं जाते। हिरिया की जान बचाने को हमने रूप बदला, उसका बुरा कैसे कर सकते? दूसरी बात भाई को बुलाने की, तो हम लड़ने से नहीं डरते।

फुलवा ने ऊदल का हाथ पकड़कर कहा.....आज मेरे सारे व्रत सफल हो गए। हम आपसे प्रेम करते हैं। आप हमसे ब्याह करके हमें अपने साथ चुपचाप ले चलिए। ऊदल ने उससे अपना हाथ छुड़ा कर कहा...हम चोरी-चोरी ब्याह नहीं कर सकते। यह क्षत्रिय धर्म के खिलाफ है। हम आपका प्रणय निवेदन स्वीकार करते हैं और आपको वचन देते हैं कि, हम भांवर डालकर आपको ले जायेंगे।

फुलवा ने ऊदल को परखने के लिए कहा..... कुंवर जी, मेरा भाई बहुत वीर है उसके आगे कोई नहीं टिकता है। इसके अलावा काठ का घोड़ा, बाण अजीता, शैल शनीचर की मार है जिससे कोई बच नहीं सकता और उसे भेद नहीं सकता।

ऊदल ने हंसकर कहा...कुछ भी हो, प्ेरम किया है तो आपके भाई से लड़ना भी पड़ेगा। अब सुबह होने वाली है हम अब चलेंगे।

फुलवा .....राजकुमार जी, आप वचन दीजिए कि कल फिर आयेंगे। अभी तो हमने जी भरकर बातें ही नहीं की हैं।

ऊदल....माना हम प्रेम करते हैं, पर किसी क्ंवारी कन्या के साथ एकांत में रहना उचित नहीं, यह क्षत्रियों का धर्म नहीं है।

फुलवा ...कुंवर जी ... हमारे बाग तक महल से एक सुरंग जाती है कल आप उसी से आना। हम हिरिया को समझा देंगे। रही बात एकांत की, तो हिरिया हमारे साथ यहां रहेगी। हम पंसासार खेलेंगे, आपस में बातें करेंगे। आप मेरे लिए दो दिन तो यह कर सकते हैं। ऊदल ने उसका अनुरोध मान कर हां कह दी। करते क्यों नहीं। अभी तो उनके अंदर प्रेम का नया नया अंकुर फूटा है। वह भी राजकुमारी से दूर नहीं जाना चाहते थे। दो दिन तक ऊदल वही रूप रखकर उससे मिला और आपस में खूब बातें की। हिरिया इनके पवित्र प्रेम की गवाह थी। प्यार छूत की ऐसी बीमारी है, जो एक बार लग जाये तो बढ़ती ही जाती है। फुलवा ऊदल को हर बार मनाकर कसमें देकर जाने से रोक लेती थी और ऊदल उसके प्रेम पाश में बंधकर हर रोज खिंचा चला आता। ऊदल ने फुलवा को कुछ बेश कीमती उपहार भी दिए, इसी तरह एक महीना बीत गया। साथ लाया सारा खजाना खत्म हो गया।

ढेबा ने कहा....कुंवर जी, अब हमें वापस महोबा चलना चाहिए, तो ऊदल ने कहा ...बस आज उससे विदाई ले लूं फिर चलेंगे।

ऊदल ने राजकुमारी के साथ प्यार की कसमें खाकर जल्दी आने का वादा करके दुखी मन से विदायी ली।

फुलवा ने ढोला मारूं की कसम देकर कहा...स्वामी, अगर आप चार माह के भीतर बारात लेकर नहीं आये तो हम मार कटारी मर जायेंगे। यह हमारा प्रेम पत्र है। हम आपको आकर हमें ब्याह कर ले जाने का निमंत्रण दे रहे हैं। ऊदल उससे गले मिलकर दुखी मन से विदाई लेकर चल दिया। कुछ रोज की मंजिल करके वह महोबा के पास पहुंच गए। अब प्यार का जोश कम हुआ, तो जग का होश आया, कुछ सोचकर उदल बोला.... ढेबा, अब हम घर जाकर दादा से क्या कहेंगे। हमने सारा धन तो नरवर में खर्च कर डाला, अब राजा परमाल को क्या जवाब देंगे? ढेबा अब तुम ही कोई उपाय करो।

ढेबा ने कहा.... गलती तो आपने की है, अब तुम पागलपन का ढोंग करो, बाकी हम देख लेंगे।
ढेबा ने एक तंबू महोबा के बाहर बाग में लगाया, उसमें ऊदल को लिटाकर महोबा दरबार में जाकर परमाल को प्रणाम किया।
राजा ने कहा.... आओ ढेबा, कैसे हो? कैसे घोड़ा लाये हो हम देखना चाहते हैं?
ढेबा-महाराज, ऊदल महोबा के बाहर पंचरंगा बाग में डेरा डाले हैं जब तक आप और आल्हा दादा नहीं जायेंगे, वह नहीं आयेंगे। यह सुनकर आल्हा और महाराज दोनों चिंतित होकर शीघ्र वहां पहुंचे। ऊदल ने दोनों को आया जान अलट-पलट करना चालू कर दिया, वह तरह-तरह के मुंह बनाने लगा, आंय बांय बकने लगा। उसकी यह हालत देखकर वह घबरा गए।
आल्हा ने पूछा.. ढेबा, ऊदल को यह क्या हो गया? यह कैसी बातें कर रहा है? हाय विधाता मेरे भाई को क्या हो गया?
ढेबा....महाराज हम रात बिताने को नरबरगढ़ में रुके थे, वहां रात को चुड़ैलों ने आकर कुंवर ऊदल को दबा लिया, तभी से छाड़ फूंक कराये जा रहे हैं। कई वैद्यों की दवा कराई, सारी माया इनके ठीक कराने में लग गई। बहुत मुश्किल से महोबा आ पाये हैं।
देवल माता और सुनवां रानी ने यह सुना, तो एक पालकी भिजाकर उदल को दशपुरवा के महलों में बुला लिया। ऊदल के आते ही रानी मल्हना भी आ गईं। वह अपने साथ राजवैद्य को लेकर आई हैं। सभी मातायें ऊदल को दुलार रहीं हैं। ऊदल उन सभी को परेशान कर रहे हैं। सुनवां गौर से उसको देखे जा रही है। कुछ देर में सुनवां ने कहा....हमने उन चुड़ैलों को पहचान लिया है। आप सब देवर जी को अकेला छोड़ दीजिए। हम जादू के जोर से उनको पकड़ लेंगे, यह सुनकर सभी बाहर चली जाती हैं।
दरवाजा बंदकर सुनवां ने कहा....देवर जी, इश्क-मुश्क छिपाये नहीं छिपता! आप किसको बहला रहे हो? जल्दी से उस चुड़ैल का नाम बता दो, या हम बतायें। ऊदल यह सुनकर हंस दिया और उठकर बैठ गया फिर सुनवां के चरण पकड़कर बोला ....भाभी, आप का ही आसरा है। हम फुलवा को वचन दे आये हैं। उसके बाद जो भी जैसे हुआ वह सब हाल बता दिया।
सुनवां ....देवर जी, आप भी कहां कांटो में दिल उलझा आये हो? नरपति के पास, काठ का घोड़ा, बाण अजीता और शैल शनीचर है। आप जिस हिरिया की बात कर रहे हो वह एक बड़ी जादूगरनी है। हमने एक ही गुरु से शिक्षा ली है। वह वहां तिलस्म की दरोगा है, पता नहीं कैसे उसने आपको कैद नहीं किया और आपके राज को राज रखा। इस ब्याह को कोई तैयार नहीं होगा।
ऊदल... भाभी श्री, हमने वचन दिया है, तो ब्याह करुंगा या बेमौत मरूंगा, तो सुनवां बोली...हम बात करेंगे, पर वचन नहीं देतें।
आल्हा शयन कक्ष में विश्राम कर रहे थे। सुनवां पंखा लेकर उनको झलने लगी। आल्हा ने आंख खोलकर पूछा.....क्या बात है, कुछ कहना चाहती हो, तो कहो, सुनवां ने कहा...आपके भाई नरवरगढ़ की राजकुमारी फुलवा से गंगा तुलसी कर आये हैं। फुलवा ने मालिन के हाथ प्रेमपत्र ऊदल को भेजा था। वह मन से देवर जी को पति मान चुकी है, देवर जी ब्याह करना चाहते हैं।
आल्हा बोले.....अपने देवर को समझाओ, कुंवारियों की कमी नहीं है, वहां ततैया के छत्ते में क्यों हाथ डाल रहा? नरवरगढ़ की कठिन लड़ाई सब जानते हैं। हम अपने स्वार्थ के

लिए सेना का कटवां क्यों करायें? व्यर्थ बैर बढ़ायें, यह ब्याह नहीं होगा।
सुनवां...स्वामी, आपको यह विवाह तो करना ही पड़ेगा। आप कुंवर ऊदल को जानते हैं, वचन के लिए अपनी जान दे देंगे। बात बहुत बढ़ चुकी है, वह अकेले ही नरवर चले जायेंगे। अब आप अकेले नहीं हो सभी संबंधियों को ब्याहे का न्योता भेज दो।
आल्हा ने दरबार लगाया, मलखान ने पूछा... दादा महाराज., क्या हुआ आपने इतनी जल्दी काहे बुलाया?
आल्हा....कुंवर ऊदल घोड़ा खरीदने काबुल गए थे और मालिन के षडयंत्र से नरवर की राजकुमारी से गंगा तुलसी कर आये हैं। अब उनको समझाओ कि हठ न करें। यह सुनकर मलखान बोला... दादा, ऊदल तो मानने से रहे यह बात हम सभी जानते हैं। अब हमें ब्याह करना ही पड़ेगा। अपनी तरफ से सभी राजाओं को ब्याहे का न्योता भेज कर बारात बुला लीजिए।
बहन चंद्रावली और कुंवर इन्द्रसेन भी आ गए हैं। महलों में मंगलाचार होने लगे। तेल हल्दी की रस्म हो रही है, कंकन बांधकर दूल्हा तैयार हो गया। मां चंडिका और मनिया देव की पूजा करके बारात अपने लाव लश्कर और सारी सेना सहित चल दी। कुछ दिनों का सफर करके बारात नरवरगढ़ के पास पहुंच गई। करीब पांच कोस की दूरी पर सभी राजाओं के तंबू तन गए। रसोई बन रही है। गवैया गाना गा रहे हैं। ढेबा को बुला कर मलखान ने पूछा.... अब बता, सगुन क्या कहता है?
ढेबा....महाराज, सब कुछ अच्छा है, ऐपन बारी पहुंचा दीजिए।
आल्हा ने पाती लिखी.....नरवर महाराज राम जोहार। आपकी राजकुमारी फुलवा ने हमारे भाई कुंवर उदयराय का वरणकर उसे अपना पति स्वीकार कर लिया और हमें पाती लिखकर ब्याह के लिए आमंत्रित किया है। उन्होने तीन माह की म्यांद दी है कि अगर ऊदल कुंवर बारात लेकर नहीं आये, तो वह मार कटारी मर जायेंगी। उनकी पाती पढ़कर हम अपने क्षत्रिय धर्म के अनुसार कुंवर ऊदल की बारात लेकर आ गए हैं, सो आप जानवी। हम ऐपनबारी पहुंचा रहे हैं। आप भांवर की तैयारी कर हमें सूचित करें।
महाराज ने पाती सुन बोले.... इन महुबियों की इतनी हिम्मत हमसे पूछे बिना एपन बारी पहुंचाई है। सलाह मशवरा भी नहीं किया। सीधा आदेश थमा दिया हम बारात लेकर आये हैं। यह तो हमारा अपमान है। कहना आल्हा से कल रण में मुलाकात करे।
दूसरे दिन सेना का सेना पति महाराज मलखान थे। इसके अलावा सभी प्रमुख योद्धा भी थे। उधर से करनदेव सेनापति थे।
करनदेव ने कहा......महाराज नैनागढ़ के धोखे में न रहना। ये नरबर है नरबर। यहां आपकी एक भी चाल नहीं चलेगी। हम अपनी बहन का ब्याह महोबा में नहीं करेंगे। उसने वार कर दिया। मलखान ने वार बचाया। दूसरा वार करनदेव ने तेगा चलाकर किया। मलखान ने ढाल अड़ा दी। अब तीसरे वार में उसने तलवार चला दी, मलखान ने वार बचाकर अपनी तलवार चला दी। दोनों ओर से वार पर वार हो रहे थे। हर वार पर करनदेव घोड़ा पीछे हटा लेता था। तीसरे वार पर करनदेव बाल बाल बचा, वह अपना घोड़ा लेकर भाग गया और महल में जाकर बाण अजीता, शैल शनीश्चर और काठ का घोड़ा लेकर चल दिए। काठ का घोड़ा एक जादू का घोड़ा था। उसके दोनों ओर पंख थे। उसमें एक डोरी डली थी जिसे खंींचने पर वह हवा में उड़ता था। अब करनदेव उस घोड़े पर बैठकर लड़ने आया। आते ही मंत्र पढ़कर शैल शनीचर अस्त्र का वार कर दिया। उसके प्रभाव से सेना पर पत्थरों की बारिश होने लगी। सेना इन बड़े-बड़े पत्थरों की

मार से लहू लुहान होने लगी। बहुत से सैनिक घायल होकर गिर पड़े। मलखान ने गुरुदेव का ध्यान कर उनका दिया हुआ अस्त्र चलाकर उसका प्रहार विफल किया, तो उसने बाण अजीता चलाकर सभी को मोह-पाश में बांध लिया। उसके प्रभाव से सभी एक दूसरे को देखकर पागलों की भांति हंस रहे हैं।
यह देखकर मलखान आगे आ ललकार कर बोला.... जादू और वरदान का सहारा लेकर लड़ते हो, अरे, अपने वीरों की तरह अपने दम पर लड़ो और उसने सांग उठाकर करनदेव पर दे मारी। वह अपने घोड़े सहित हवा में उड़ गया। उसके बाद उसने तेगा चलाया, जो कबूतरी घोड़ी के पैर में लगा और वह लंगड़ाने लगी। उसी समय युद्ध बंद होने की भेरी बज गई और युद्ध बंद हो गया।
मलखान ने तंबू में आकर सारा हाल आल्हा को सुनाया। दूसरे दिन ऊदल ने अपना मौर उतारकर बैजनी बांधी, दो-दो तलवारें बांधकर सभी अस्त्र-शस्त्र धारण किए और मलखान के साथ रण के मैदान में पहुंच गया। दूसरी ओर से करनदेव आज अपने साथ हिरिया मालिन को लेकर आया। रणभेरी बजते ही ऊदल उनकी सेना पर टूट पड़ा और कुछ ही समय में उनकी सेना को गाजर मूली की तरह काट डाला। ऊदल ने सामने आकर करनदेव को ललकारा और अपनी तलवार का वार कर दिया। करनदेव ने अपनी ढाल अड़ा दी। पर उसकी ढाल फट गई और उसके हाथ से लहू की धार बह निकली, अब करनदेव ने बाण अजीता हाथ में लेकर चलाने को किया तभी हिरिया मालिन बोली.....राजकुमार, कुंवर ऊदल पर वार नहीं करना। मैंने राजकुमारी को वचन दिया है। आप मेरा कहना मानो हम उन पर जादू डालते हैं। यह कहकर उसने जादू पड़ा और ऊदल सहित सारी सेना को जड़कर दिया।
करनदेव ने ऊदल को बांधकर नरबर में भिजा दिया। ढेबा यह देखकर पीछे को लौटने लगा तभी रणबंदी की भेरी बज गई।
तंबू में आकर ढेबा ने सारा हाल बताया। यह सुनकर आल्हा विचार मगन हो गए। उनका अपना सिद्धांत था कि युद्ध वीरता से लड़ना चाहिए जादू और छल से नहीं। इसके अलावा जब तक सामने वाला युद्ध में जादू का उपयोग न करे, वह स्वयं कभी नहीं करते थे। उन्होंने जादू का उपयोग अपने बचाव के लिए किया है किसी को हराने के लिए नहीं। वह देवी मां के परम उपासक हैं, उन्होंने देवी की पूजा कर, अमृत पात्र का जल लिया जो आते समय सुनवा रानी ने दिया था। अब वे युद्ध के लिए तैयार हो गए।
आज के युद्ध में महाराज आल्हा स्वयं जा रहे हैं। लड़ाई के लिए आते समय उनकी पत्नि सुनवां ने उनको जादू की कुछ पुड़िया दी थी। कुछ पुड़िया उन पर गुरुदेव की दी हुई थी। आल्हा ने कुछ पुड़िया मलखान को दे कर सब समझाया और रण में आ गये। मलखान ने सारी सेना पर अमृतपात्र का अभिमंत्रित जल छिड़का, तो सारी सेना मूर्छा से जाग गई। सभी लड़ने को तैयार हैं।
उधर करनदेव ने जब सुना कि महोबा की सेना मूर्छा से जाग गई है, तो वह सेना लेकर आ गया। बाण अजीता और शैल शनीचर का प्रयोग वह कर चुका था, अब उसके पास काठ का घोड़ा और हिरिया का जादू था।
आल्हा ने कहा.... राजकुमार हम अपने भाई का ब्याह कराने आये हैं, दोनों ओर की निर्दोष सेना को काहे मरवा रहे हो? आप मान जाइए, राजी से ब्याह कर दीजिए। यह सुनकर करनदेव ने कहा...यह ब्याह तो नहीं होने वाला, लो मेरा वार सँभालो और वह काठ के घोड़े से उड़-उड़ कर वार पर वार करने लगा, आल्हा ने उसका सामना किया

और अंत में वार बचाकर अपनी तलवार से काठ के घोड़े का पंख काट दिया। पंख कटते ही वह घोड़ा जमीन पर गिर गया और करनदेव भी गिर पड़ा। मलखान ने सैनिकों को आदेश दिया कि उसे बांध लिया जाये। अब हिरिया अपना मंत्र पढ़-पढ़कर मार रही थी। मलखान ने कहा ...हम दोनों पर तुम्हारा जादू असर नहीं करेगा। पुख्य नक्षत्र में जन्मा हूं शंका करूं काल की नाय। फिर तुम्हारा ये जादू टोना किसी गिनती का नहीं है। यह कहकर मलखान ने उसका बटुआ छिना लिया। वह बेबस हो रण से भाग गई। करनदेव की सारी सेना तितर बितर हो गई।

करनदेव को बंदी बनाये जाने पर महाराज टूट गए। वह बहुत घबरा गए और मंत्री से बोले ... महोबा वाले बहुत वीर हैं। हमें अपनी राजकुमारी के लिए ऐसे ही वीरों की तलाश थी। अब हम अपनी बेटी का ब्याह कुंवर ऊदल से करने को तैयार हैं। मंत्री जी सारी तैयारी करिये। हम कुंवर ऊदल को लेकर अभी महाराज आल्हा के पास जाते हैं; हमें नाहक में बैर नहीं बसाना है।

सारी लड़ाई बंद हो गई। आल्हा के दरबार में सभी बैठे हैं। घायलों का उपचार हो रहा है। तभी सैनिकों ने सूचना दी कि महाराज रतनदेव आये हैं, आल्हा ने कहा... उनको आदर सहित ले कर आओ, वह कुंवर ऊदल के साथ आते हैं यह देख सभी चकित हैं।

उनके आते ही आल्हा ने कहा....आइए महाराज आसन गृहण कीजिए। कुंवर ऊदल ने आल्हा के पैर छुए।

महाराज ने कहा.... राजकुमार आल्हादेव, हमने आपको भली-भांति परख लिया, आप हर तरह से मेरी बेटी के लायक हैं, हम राजी खुशी से ब्याह करने को तैयार हैं। आप कल आइए हम ब्याह की तैयारी करते हैं।

दूसरे दिन बारात का द्वार पर स्वागत हुआ। पहली भांवर के पड़ते ही करनदेव ने शिरोही खींचकर ऊदल पर मारी, जिसे मलखान ने बचाया। दूसरी भांवर में वीर सरदार भुवई ने, जिसे बंह्मा ने, तीसरी में वीरमृदंग ने तेगा चलाया, लाखन ने रोका, अभी चौथी भांवर के लिए कदम आगे बढ़ाया ही था कि कुछ सरदारों ने एक साथ हमला कर दिया। अब तो सभी अपनी-अपनी तलवारें लेकर लड़ने लगे। ऊदल ने भी अपनी तलवार खींच ली और एक जगह पर खड़े-खड़े ही लड़ने लगा ताकि गठबंधन न छूट पाये। मंडवा के नीचे जमकर युद्ध हुआ और लाशों के ढेर लग लए। अब लड़ाई खत्म हो गई, पर मंडप में लगे हरे-हरे कदली पेड़ कट गए, सारा मंडप बिखर गया। खम्ब भी टुकड़े-टुकड़े हो गया। अब महोबा के वीरों ने अपनी तलवारों से एक घेरा बनाया और अंदर ऊदल को किया और खम्ब की जगह एक लंबी सांग गाड़कर उस पर ढाल को टांगकर मंडप बनाया गया, क्योंकि अभी भांवर बाकी थी।

मलखान ने कहा...पंडित जी चौथी भांवर से फेरे शुरु करिये। पंडित जी ने मंत्र पढ़कर सातों भांवर की विधि पूरी कराई। अब राजा नरपति ने आकर कहा... महाराज बच्चा है, गलती कर बैठा उसे माफ कर दो। अब तो आप हमारे संबधी बन गए हो।

आल्हा ... ठीक है महाराज, जो हुआ उसे भूल जाओ और जल्दी से विदाई की तैयारी करिए। कलेवा की रस्म शांति से हो गई। उसके राजा ने सभी को उपहार दिए और खुश होकर अपनी बेटी को विदा किया।

महोबा महलों में मंगला चार होने लगे। बहू को मुंह दिखाई दी और बहुत समय तक नगर में खुशी मनाई जाती रही।

19-ब्रह्मा का ब्याह-दिल्ली की लड़ाई

अजमेर के चौहान वंशीय महाराज नहू थे, जो बहुत ही धर्म परायण और इतिहास प्रसिद्ध विद्वान थे। महाराज नहू के पुत्र सोमदेव चौहान, उनके पुत्र पृथ्वीराज चौहान थे। दिल्ली के महाराज अनंगपाल जो पृथ्वी के नाना थे। उनका दिल्ली पर शासन था। वही दिल्ली जो द्वापर में कुरूक्षेत्र का हिस्सा थी, जिसे महाराज अनंग पाल ने दसवीं शताब्दी में अपनी राजधानी बनाया था। बाद में उसी दिल्ली का उत्तराधिकारी पृथ्वीराज को बनाया था। उन्होंने 1149 से 1192 तक दिल्ली पर राज्य किया। उसके पहले वह अजमेर के शासक थे। पृथ्वीराज का यश चारों ओर फैला था। पृथ्वीराज के महलों में बहुत सी रानियां थीं, उनसे सात पुत्र और एक पुत्री थी बेला। बेला पूर्णिमा के चांद की तरह सुन्दर, युद्ध कला में निपुण और सर्व गुण सम्पन्न कन्या थी। बेला पृथ्वीराज की पटरानी और माहिल की बहिन अगमा की बेटी थी। पुराणों के अनुसार वह द्रोपदी का अवतार मानी जाती है। इस समय राजकुमारी की उम्र दस साल थी। ‘‘उसके जन्म पर पंडित ने कहा था, कि महाराज राजकुमारी के ब्याहे के समय आप बहुत ही सावधान रहना और धीरज रखना, वरना ये आपके वंश का नाश करा देगी। जब भी आपकी राजकुमारी का ब्याह होगा बहुत बड़ा घमासान होगा। लहू की नदिया बहेंगी, अनेको ललनाओं की मांग उजड़ेगी, कई माताओं की गोद सूनी हो जायेगी।"

बेला खेलती हुई आकर पृथ्वीराज की गोद में बैठ गई। पृथ्वीराज उसे देखकर सोच में पड़ गए कि कुछ सालों में वह ब्याह लायक हो जायेगी। वह बेला का ब्याह किससे करें? उनकी बराबरी का कोई नहीं था। नामी राजवंश महोबा और कनवज में वह ब्याह नहीं करना चाहते थे। वह सोचने लगे पंडित के अनुसार ब्याह में बहुत घमासान होगा, तो उसे कैसे रोका जा सकता है। अगर बड़ी होकर बेला ने स्वयं किसी ऐसे वैसे को वरण कर लिया तो फिर क्या होगा? साख पर बट्टा लग जायेगा। यही सब सोचकर पृथ्वीराज ने निर्णय लिया कि दस साल में ही उसका ब्याह कर दें और बाकी बारह साल बाद उसका गौना कर देंगे।

महाराज ने अपने बेटों से सलाह मशवरा करके पत्र लिखवाया....हम दिल्ली महाराज पृथ्वीराज चौहान अपनी पुत्री राजकुमारी बेला का टीका भेज रहे हैं। उसके लिए पहली रस्म...घमासान लड़ाई दिल्ली के वीरों से दरवाजे पर है। दूसरी रस्म.... लड़ाई मंड़वा के नीचे भांवर पर बेला के सातों भाइयों से है। उसके बाद तीसरी रस्म ....कुंवर कलेवा को जब लड़का आयेगा, तो उसका शीश काट लेंगे। जिस राजा को यह रस्में मंजूर हों वह टीका स्वीकार करे और अपनी राज मुहर लगा दी।

महाराज ने अपने बेटे ताहर और चौड़ा ब्राहमण से कहा-नाउ, बारी, भाट, पुरोहित चारों नेगी और पांच लाख मोहरों सहित बहुत सा उपहार का सामान लेकर, कुछ सेना लेकर राजकुमारी बेला का टीका लेकर जाओ और किसी प्रतापी राजा को टीका चढ़ा कर आओ। दिल्ली के राजा से संबंध जोड़ना किसी भी राजा के लिए गौरव की बात होगी।

ताहर अपनी सेना लेकर कई राज्यों में गए, पर किसी राजा ने टीका स्वीकार नहीं किया। ताहर निराश होकर वापस दिल्ली की राह पकड़ता है। वह सोच रहा है, बेला का क्या होगा? तभी बीच राह में उसे मलखान मिल गए, जो शिकार खेलने के लिए जा रहे थे। उन्होंने पूछा.... राजकुमार ताहर, क्या बात है? कहां से आ रहे हो? इतने उदास

क्यों दीख रहे हो?
ताहर ने सारी बात बताकर कहा.....आपकी नजर में कोई लड़का हो तो हमें बताइए?
मलखान कुछ देर सोचकर बोला.... ताहर कुमार, अब आपको टीका वापस ले जाने की जरूरत नहीं है। महोबा के चंदेल वंशी राजा परमाल की कीर्ति सर्वविदित है, पारस पथरी उनके पास है, विजयश्री यज्ञ करा चुके हैं, वीर आल्हा ऊदल उनके भतीजे हैं, नेपाल राजा के यहां पर आल्हा का और कोट कसौंदी राजा के यहां पर मेरा संबंध हुआ है। आज के समय में महोबा एक बड़ी ताकत है। महाराज पृथ्वीराज भी उनसे दोस्ती मानते हैं। उनका राजकुमार ब्रह्मानंद सर्व गुण सम्पन्न है। आप उसे टीका चढ़ा दीजिए।
ताहर ने कहा... ठीक है हम तैयार हैं। वह सभी महोबा आते हैं। देख के परमाल ने पूछा.....कहो पुत्र दिल्ली में सब कुशल मंगल है। महाराज कैसे हैं? यहां पर कैसे आना हुआ? ताहर कुछ बोलता तभी मलखान ने बीच में कहा...महाराज आपसे एक निवेदन है। दिल्ली से यह पाती आई है और पढ़कर सुना दी। परमाल ने कुछ ना कहा और उठकर महलों में चले गए। उनके पीछे मलखान और ऊदल आ गये, तो परमाल ने कहा ....हमें अपने पुत्र का विवाह ही नहीं करना है। वहां जाने में ब्रहमा को खतरा है। हम लड़का को बलि चढ़ाने नहीं भेजेंगे। दिल्ली में तो ब्रह्मा का ब्याह कभी नहीं हो सकता, चाहे वह क्वांरा क्यों ना रहे।
मलखान ने कहा...काहे नहीं हो सकता? दिल्ली वाले अमरौती खाकर नहीं आये हैं। हमने उनको हराकर सिरसा वापस लिया था आगे भी ब्रह्मा का ब्याह कराकर ले आयेंगे। हमने ताहर को वचन दिया है कि हम महोबा में टीका चढ़ायेंगे। अगर यह टीका नहीं चढ़ा तो हम कटारी मारकर मर जायेंगे। यह कहकर मलखान ने तलवार गर्दन पर रख ली।
ऊदल ने कहा....मलखान दादा, सही कह रहे हैं हम यह रिस्ता वापस नहीं भेजेंगे। आल्हा ने भी हां में हां मिलाकर कहा ...दिल्ली में रिश्ता हो जाने से हम सभी एक भाईचारा में बंध जायेंगे। इस समय जो राजनैतिक उथल पुथल हो रही है विदेशी बार बार सीमा से भीतर घुस रहे हैं। हमें पृथ्वीराज से मिलकर इनको भगाने में मदद मिलेगी। ये लड़ाइयां, तो रस्मों के नाम पर कुरीतियां हैं जिन्हें खत्म करने के लिए पृथ्वीराज से बात की हैं। अभी तो हम उनसे मिलकर आये थे, वह बहुत ही सुलझे हुए इंसान है। ब्याह तो दो आत्माओं का, दो परिवारों का मिलन है। इस अवसर पर व्यर्थ का रक्तपात उचित नहीं है। जब हम चौथी लेने गए थे, तो हमारी दिल्ली नरेश से काफी देर इस बात पर चर्चा हुई थी। लगता है उसी बात से सहमत होकर उन्होने यह रिश्ता भेजा है।
परमाल-बेटा हमें तो दिल्ली में ब्रह्मा का काल ही नजर आ रहा है। गुरुदेव ने कहा था कि ब्रह्मा का काल दिल्ली में ही है।
मलखान-दादा महाराज, कोई अमरौती खाकर नहीं आता, सबको एक ना एक दिन मरना है फिर नाम कमा के काहे ना मरें।
आल्हा सोच रहे हैं उसकी बातों से सहमत होकर पृथ्वीराज ने रिश्ता भेजा है इसलिए वह समर्थन कर बोला-दादा महाराज! जरा सोचो जब सबको पता चलेगा कि हमने पृथ्वी की तलवार से डरकर उसकी बेटी का रिश्ता लौटा दिया तो जगहंसाई होगी और अगर पृथ्वी ने इस बात को अपने मान सम्मान पर चोट मान लिया तो वह हमारा दुश्मन बन जायेगा और जहां आज वह बेटी ब्याहने की बात कर रहा है वही वह सेना

लेकर चढ़ाई करने आ जायेगा। दादा होनी तो अटल है उसे कोई नहीं टाल सकता है।
परमाल सोच रहे हैं कि एक तरफ कुंआ है, तो दूसरी तरफ खाई है। सही कहा है कि होनी तो हो के रहे अनहोनी ना होय। वह सोच रहे हैं कि टीका न लेने पर अभी ही दुश्मनी हो जायेगी और टीका चढ़ाने पर हो सकता है पृथ्वी अपने दामाद की रक्षा स्वयं करेगा इसलिए हमें टीका लेना ही पड़ेगा। बहुत सोच समझकर वह सब दरबार में वापस आ जाते हैं।
ताहराज ने कहा ...महाराज, भरोसा करके हम आये हैं। टीका वापस करोगे, तो जग हंसाई होगी। जो देखा सुना वह हम किसी से बताने में भी सकुचायेंगे। अगर टीका चढ़ गया तो गर्व से कहेंगे कि महोबा वालों ने हंसकर हमारा टीका स्वीकार किया है।
ढेबा को बुला कर शगुन पूछा तो ढेबा ने कहा...यह ब्याह तो होकर रहेगा, होनी अटल है। इसे विधाता भी नहीं टाल सकते।
हारकर महाराज को हां कहना पड़ी। उनको मेहमान महल में ठहराया गया। दूसरे दिन ताहर और चौड़ा नेगियों सहित रानी महल में आये। उन पर फूलों की बारिश हो रही है। महोबा का वैभव देखकर ताहर खुश हो गया। वह सोचने लगा कि जिनके घर पर पारस पथरी है उनको चिंता किस बात की है। ब्रह्मा साक्षात् कामदेव का अवतार लग रहा था। मंत्रोचार के बीच ताहराज ने टीका चढ़ाया। तभी ताहराज की निगाह कोने में रखे सात तवों पर पड़ी, जो बहुत ही वजनी थे। उसने सोचा ये यहां पर किसी मकसद से ही रखे हैं। महोबा वालों को अपनी वीरता का नमूना दिखाने का अच्छा मौका है। यही सोचकर उसने सांग उठाकर, उन पर दे मारी। वह सातों तवा बेधकर जमीन में समा गई, उसकी मूठ दिखाई दे रही थी। यह देखकर सभी चौंक गए।
ताहर बोला...हमारे कुल का व्यवहार है कि जहां जाओ अपनी छाप छोड़कर आओ। ऊदल ने बायें हाथ से वह सांग उखाड़कर कहा... हमारे कुल की भी यही रीत है कि किसी का उधार नहीं रखते, चलो हिसाब बराबर। उसके बाद दोनों हंस कर गले मिले। चौड़ा ब्राह्मण ने सभी को बहुत सा नेग दिया। उसके बाद ताहराज और चौड़ा चले गए। महोबा में मंगलाचार होने लगे।
उधर ताहर ने जो हुआ वह बताया कि हम महोबा में चंदेल कुंवर को टीका चढ़ा आये हैं। महोबा का क्या वैभव है। यह सब सुनकर पृथ्वीराज खुश हुए। पृथ्वीराज एक समझदार राजा था वह कही सुनी बात पर जल्दी विश्वास नहीं करता था।
माहिल ने पृथ्वी और परमाल के विरोधी राजाओं की एक सभा बुलाई इनमें मुगल समर्थक भी थे। वे सभी राजा भेंट लेकर सभा में आये। औपचारिकता के बाद उन्होने कहा....उरई नरेश, दिल्ली और महोबा की लड़ाई होनी चाहिए। अगर ये दोनों एक हो गये तो शक्तिवान हो जायेंगे। आप सम्राट नहीं बन पाओगे। कुछ न कुछ चाल चलकर हमें दोनों के बीच फूट डालना जरूरी है।
माहिल... आप सब निश्चिंत रहिए, समय आने पर हम कुछ न कुछ रास्ता अवश्य निकाल लेंगे।
सभी ने कहा...हमें आपकी बात पर भरोसा है, हम अपनी अपनी सेना सहित सदा आपके साथ हैं। सभी चले गए।
माहिल तभी से जुगत में है, पर उसे मौका नहीं मिल रहा है। अब वह मल्हना के पास रहकर उसका विश्वास जीतने में लगा है। अपने सुधरने का दिखावा कर रहा है। उसे मालूम है कि महिलायें और खासकर बहिनें भाई पर विश्वास कर ही लेती हैं।

यहां पर धीरे-धीरे करके समय पास आ रहा था। सभी को ब्याह का न्योता भेजा जा चुका था, सो सभी राजा महाराजा आने लगे। राजा जयचंद की पृथ्वीराज से दुश्मनी है, सो उनको न्योता नहीं दिया। वो दिन भी आ गया जब ब्रह्मा को दूल्हा बना नेग चार होने लगे। दूसरे दिन माहिल ने मल्हना के पास आकर एक झूठी पाती देकर कहा...बहना, यह पाती दिल्ली से आई है। उसमें लिखा है कि माहिल राजा तुम अकेला लड़का लेकर आ जाओ, तो हम भांवर डालकर केवल विवाह की रस्में कर लेंगे, उसके बाद बारह साल बाद हम गौना करेंगे, बेटी की विदाई करेंगे तभी फौज फाटा से आना। अगर आल्हा, ऊदला, मलखान आयेंगे, तो उनको देखकर हमारे भी सात सात लड़कों की जवानी जोश मारेगी और आपस मे रार बढ़ जायेगी। ऊदल और मलखान तो बिना कारण लड़ाई लेते हंै। ऐसे मे वो तो मरेंगे और...ब्रह्मा? ब्रह्मा को कोई नुकसान हो हम ये कतई नहीं चाहेंगे। आप भी किसी तरह की कोई सेना भी लेकर न आना। यह सब हम राजगुरु के कहने पर ब्रहमा और बेला की भलाई के लिये ही कर रहे हैं। थोड़ा लिखा बहुत समझना अपनी बहन को भी समझा देना। वह बहुत समझदार हैं। हमारी मजबूरी को समझेंगी।
मल्हना और परमाल ने सोचा...अगर ऐसा करने से व्यर्थ का रक्त-पात बचता है और मेरे सभी बेटों की जान बचती है, तो अकेला लड़का भेजने में कोई बुराई नहीं है। वैसे भी हमें भविष्यवाणी के अनुसार ब्रह्मा को लेकर दिल्ली वालों से बैर नहीं बढ़ाना है। हमें उनकी बात मान लेनी चाहिये। आल्हा ने भी बताया था कि पृथ्वीराज व्यर्थ का रक्तपात करना नहीं चाहते हैं। दिल्ली वालों ने तो स्वेच्छा से टीका चढ़ाया है। उसमें लड़ाई वाली बात ही नहीं है। रही बात ऊदल की तो मैं उसे मना लूंगी।
माहिल ने कहा... बहन मेरा भरोसा करो मैं ब्रह्मा का दुश्मन नहीं हूँ मैं हर तरफ से उसकी सलामती चाहता हँू, मैं मानता हूं कि आल्हा ऊदल को पसंद नहीं करता, पर ब्रह्मा मेरा प्यारा भांजा है, कलेजे का टुकड़ा है, महोबा का राजा है, मैने आज तक आपका और बहनोई का कभी बुरा नहीं चाहा, मैं सौगंध खाकर कहता हूं कि मैं ब्रह्मा को आंच नहीं आने दूंगा।
मल्हना ने कहा...वीरन, मैं अपने जिगर का टुकड़ा तुम्हें सौंपती हूं, तुम किसी तरह का दगा मत करना।
माहिल...बहना...मैं गंगा जल और अपने इकलौते बेटे की कसम खाता हूं। ब्रह्मा को कोई नुकसान नहीं पहुंचने दूंगा।
आपस में सलाह मश्वरा करके मल्हना और परमाल ने ब्रह्मा को दूल्हा बनाकर माहिल के साथ डोला में बिठाकर अकेला भेज दिया। ब्रह्मा से कहा कि बुरे ग्रह का तोड़ निकालने के लिए यह किया जा रहा है। आल्हा ऊदल पीछे से आते हैं। वह जानता है कि बारात तैयार है, सो किसी तरह शंका मन में नहीं थी, वह विश्वास मानकर माहिल के साथ प्रात: काल ही चला गया।
कुछ गुप्तचरों ने ऊदल को खबर दी कि माहिल दूल्हा को पालकी में लेकर चले गए हैं। यह खबर सुनते ही ऊदल दशपुरवा के महलों से आकर बोला.....बड़ी मां, आपने भी भरोसा तोड़ दिया। सोचा अब दिल्ली जैसे राजा के यहां संबंध हो रहा है, हमें क्या चिंता? अब आल्हा-ऊदल की क्या जरूरत? एक पल में पराया कर दिया। लड़ने-मरने को हम हैं, सेहरा बंधाने को माहिल मामा आगे हो गए। आप ने ये भी न सोचा कि ये देश-देश के राजा बारात में जाने को आये हैं, उन्हें क्या मुंह दिखायेंगे? लेकिन बड़ी मां

जैसा सोच रही हो बात वैसी नहांr है। माहिल मामा ब्रह्मा दादा का हरण करके ले गए हैं। अब आप अपने बेटा का मुंह देखने को तरस जाओगी। ठीक है, हम भी आज से महोबा में पांव न रखेंगे। ऊदल दनदनाते हुए जैसे आये थे वैसे ही चले गए।
ऊदल को गुस्से में आता देखकर सुनवां ने पूछा...देवर जी क्या बात हो गई? गुस्से से लाल क्यों हो रहे हो?
ऊदल...भाभीश्री, क्या बतावैं? माहिल मामा जन्म के बैरी, उन्होंने बड़ी मां को जाने क्या पट्टी पढ़ाई, कि बड़ी मां ने ब्रह्मा को अकेला उनके साथ दिल्ली भेज दिया, सारी बरात यहीं पड़ी है। हम बड़ी मां से साफ कह आये कि लड़ने-मरने को आल्हा-ऊदल हैं सेहरा बांधने को माहिल प्यारे हो गए। अब माहिल के भरोसे ही रहो, हम महोबा के महलों में कभी न आयेंगे।
रानी सुनवां बहुत ही समझदार और दूरदर्शी महिला थी। उसने कहा... देवर जी, आज आपकी सोच को क्या हो गया है? आप जान रहे हो कि ब्रह्मा देवर के प्राण संकट में हैं। मामा जी का कोई भरोसा नहीं है। वह किसी भी सीमा तक गिर सकते हैं। ऐसे मे अगर ब्रह्मा को कुछ हो गया तो यह बदनामी आप सबकी होगी। बड़ी मां की गल्ती नहीं हैं। मामाजी ने जो कहा वह मान गईं, आप यह कैसे भूल गए कि उनका दूध भी आपकी रगों में बह रहा है। आज उनके बेटे की रक्षा करना आपका नैतिक कर्तव्य है। दिल्ली वालों का भी कोई भरोसा नहीं। इन छ: महीनों में मामा ने क्या लगाई-बुझाई होगी? आप बारात कूच कराइए।
ऊदल को बात समझ में आ गई। उसने आल्हा से बात करके पाती मलखे को भिजा दी कि मामा को रास्ते में रोक लें। वह ब्रह्मा को अकेला लेकर गये हैं, कुछ भी कर सकते हैं। उसके बारात सहित दिल्ली को कूच किया।
मलखान ने सुलखे से कहा...मामा ब्रह्मा का हरण करके दिल्ली जा रहे हैं, उन्हें बंदी बना लो। सुलखान सैनिकों को ले जाकर माहिल को ढूंढने निकालते हैं और चारों ओर से घेरकर कहा... मामा, अपनी आदतों से बाज नहीं आते हो? काहे ब्रह्मा दादा को अकेला लेके भाग आये? कहां लिए जा रहे हो? सुलखान उसे पेड़ से बांधकर ऊदल सहित बारात की राह देखने लगा।
कुछ समय के बाद आल्हा ऊदल बारात को लेकर वहीं पर आ गए, आल्हा ने माहिल को पेड़ से बंधा देख खोलने को कहा।
माहिल ने रोकर कहा.... सुलखे ने हमारी बेइज्जती की है। अब हम बारात में नहीं जायेंगे। तो आल्हा ने समझाया कि ....बालक है माफ कर दो, बिन मामा के ब्याह कैसे होगा? कुछ मनौआ के बाद माहिल मान गए और साथ चल दिए। दिल्ली से दो कोस दूर राजाओं के तंबू तन गए। चारों ओर रंग बिरंगे झंडे फहरा रहे हैं। सर्व सम्मति से ऐपनबारी भिजा दी गई।
राजदरबार पहुंचकर बारी बोला ....राजकुमार के ब्याहे की ऐपन बारी लाया हूं। नेग देके हमें विदा करो।
चौड़ा ने कहा... नेग क्या है कहो, तो तुरंत बारी बोला ...द्वार पर चले दो घड़ी तलवार। यह सुनकर पृथ्वी ने चौड़ा को इशारा किया और वह तलवार लेकर छपट पड़ा। रूपन ने भी तलवार चलाना शुरू किया और अपनी रस्म पूरी करके बोला... अब हम चलतें हैं अपना नेंग भांवर में लेंगे। उसी समय माहिल दरबार में आते हैं। पृथ्वी राज ने कहा... आइए उरई वाले विराजिए।

माहिल ने कहा... महाराज हम क्या सुन रहे? एक अदना सा बारी दरबार में कह गया कि वह अपना नेग भांवर में लेगा। अब दिल्ली के ये दिन आ गए कि बारी आंख दिखा गए। महोबा से रिश्ता जोड़कर जाने क्या-क्या सहना पड़ेगा। महाराज, आपको तो मेरी बातें गलत लगती हैं। वहाँ बारात में सभी देशों के राजा महाराज आये हैं। सब एक ही चर्चा कर रहे हैं कि पृथ्वीराज ने बड़ी आसानी अपनी राजकुमारी, महोबा वालों को सौंप दी। उससे ज्यादा तो नेपाल और कोट कसौंदी वालों ने उनका पसीना निकाल लिया था। जान के लाले पड़ गए थे। यहां तो सब ऐसे हो रहा है जैसे पृथ्वीराज आल्हा ऊदल की वीरता के चर्चे सुनकर, बिना लड़े ही हार गए, जबकि सभी सोच रहे थे कि दिल्ली और महोबा के बीच जमकर घमासान होगा। दिल्ली वालों की बिटिया ब्याहने में परमाल को पसीना छूट जायेगा। महाराज हमसे तो उनकी बोलियां सुनी नहीं गईं, आखिर बेला मेरी भी भांजी है। मैं भी यही चाहता हूं कि उसका ब्याह ऐसा हो कि सालों तक चर्चा रहे। माहिल की चोट करारी थी, पृथ्वी का अह्म जागा और सोच में पड़ गया।

यह देख माहिल बोला...महाराज जो परंपरा चल रही है उसे हम कैसे समाप्त कर सकते हैं? हमें अपनी ताकत दिखाने के लिए शर्तें तो रखना पड़ेगी, अन्यथा आसपास के राजा-प्रजा समझेंगे कि आप महोबा वालों की शक्ति देखकर भय खा गए हैं।

पृथ्वी गरजा....खबरदार, जबान को लगाम दो, अभी हमारी भुजाओं में वो ताकत है कि हम हिमालय खोदकर धरा पर धर दें।

माहिल हाथ जोड़कर बोला-दिल्लीपति की जय। सब लोग आपका यही वीर रूप देखना चाहते हैं।

पृथ्वीराज - आप बताइए अब क्या किया जाये, तो महिल बोला ....अरे, महाराज अपने जोरा, भौरा हाथी को नशा करा दो; भांग में धतूरा मिलाकर खिलाकर पागल कर दो, फिर कहो हमारे कुल की रीत है कि इन्हें पछाड़कर अंदर आओगे। उसके बाद बीच चौक में जो साठ गज ऊंचा मल्लखंब गड़ा है उस पर एक जलती लालटेन टंगा के कहो कि इसको जलता ही उतारना है तभी द्वार चार होगा अन्यथा नहीं होगा। ऐसा करने से महोबा वालों के बल की परीक्षा हो जायेगी और आपका नाम भी हो जायेगा।

पृथ्वीराज ने दोनों कामों का आदेश दे दिया। बारात दरवाजे पर आई, पृथ्वीराज सहित सातों भाई दरवाजे पर खड़े हैं ताहर ने कहा..द्वारचार के नेग में कुल की कुछ रस्में पूरी करना होंगी, तो ऊदल ने विनम्रता से कहा... आपकी क्या रस्में हैं बताइए?

मोटी सांकल से बंधे पागल हाथी के पास ले जाकर ताहराज ने कहा.... इन हाथियों को सांकल से खोलकर पछाड़ना है।

ऊदल और मलखे ने एक दूसरे की ओर देखकर कहा ...ठीक हे, वे दोनों हाथियों के पास जाकर उनकी सांकल खोलने का प्रयास करते हैं। हाथी जोर-जोर से चिंघाड़ रहा हैं छटपटा रहा हैं। सभी सांस रोककर ये तमाशा देख रहे हैं। सांकल खुलते ही हाथी उदल पर झपटा, पर उदल छिटककर दूर खड़ा हो गया। हाथी फिर क्रोध में भरकर बढ़ा, अबकी बार ऊदल ने उसकी सूंड पकड़ ली और उससे चिपक गया अब हाथी उसे हटाने के लिए यहां वहां सूंड फटकार रहा था। सिर को छटक रहा था, पर ऊदल तो उससे चिपका था। इसके बाद वह एक झटके से दूर जा गिरा। ऊदल हाथ झाड़कर खड़ा हुआ और हाथी को देखने लगा। हाथी ने पास आकर जैसे ही उसे पकड़ने के लिए सूंड़ बढ़ाई ऊदल दौड़कर उसी सूंड़ पर से ऊपर चढ़कर उसके सिर पर कूदकर जा बैठा और उसके

माथे पर घूंसे बरसाने लगा। हाथी का माथा लहूलुहान हो गया, वह चिंघाड़ता, छटपटाता रहा और फिर शांत होकर एक ओर लुढ़क गया।
महाराज पृथ्वीराज तो वीरता के पुजारी थे। वह मन ही मन इनकी वीरता की सराहना कर रहे थे।
उधर हाथी सांकल खुलते ही मलखे पर झपटा पर वह तैयार था। उसने दोनों दांत पकड़ कर लिये, अब हाथी अपने को बचाने छुड़ाने का प्रयास कर रहा। कभी मलखान पीछे हटता था कभी हाथी। बहुत देर तक यही चलता रहा। इसी कशमकश और खेंचातानी में हाथी का एक दांत टूट गया। मलखान बड़ी ही फुर्ती से वह नुकीला दांत लेकर पीछे को हटा और तेजी से सूंड़ पर पैर रखकर उसके सिर पर पहुंच, पूरी ताकत से वह दांत उसके माथे में घोंप दिया। हाथी जोर से चिंघाड़ कर शांत हो गया।
हाथियो के मरने पर दोनों विनम्रता से बोले .... आपका नेग हो गया अब आगे बताइए क्या करना है?
पृथ्वीराज के बेटे इनकी वीरता देखकर जल उठे। उनकी वीरता उन्हें अपना अपमान लग रही थी। उस काल के राजाओं में यही कमी थी कि वह किसी की बड़ाई सहन नहीं कर पाते थे। इसके बाद चौक में मलखंब के ऊपर जलती हुई मशाल दिखाकर कहा...हम सातों भाइयों से बचकर उसे जलती हुई ही उतारकर लाना है। वह सातों भाई तलवारें लेकर मलखंब को घेरकर खड़े हो गए ताकि कोई उस पर चढ़ न सके। मलखान उनसे दो दो हाथ करने लगा। वह सब मलखान की ओर ही ध्यान दिये थे।
अब ऊदल ने सभी मल्ल योधाओं मन्ना गूजर, लला तंमोली, तल्हनकाका, खुनखुन गड़रिया, करिया लुहार, गिंठा पंडित को बुलाकर कहा आप सब मलखंब के से दूर जाकर एक-एक करके अपनी लंबाई के अनुसार लाइन में खड़े हो जाओ। वह एक लाइन से खड़े हो गए। ऊदल दूर से दौड़कर उनके कंधों पर पैर रखाता हुआ उछलकर खंब पर करीब बीस गज ऊपर उझलकर चढ़ गया, उसके बाद वह खंब से चिपककर छिपकली की तरह ऊपर तक चढ़ जाता है और जलती मशाल लेकर नीचे कूद जाता है।
पृथ्वीराज को मशाल देकर बोला... महाराज, आपका नेग पूरा हुआ। पृथ्वीराज ने उसकी पीठ पर हाथ फिराकर कर कहा....शाबाश बहादुर! जिस राजा के आपके जैसे बेटे हों, उनको ही पारस पथरी रखने का अधिकार है। पृथ्वीराज ने सोचा कि इनके बल की परख तो हो गई, अब लगे हाथों आल्हा से भी आमना सामना हो जाए। उसकी भुजाओं की ताकत का भी अंदाजा लेना चाहिए।
अब समधोरा होगा। पृथ्वीराज जानते थे कि इस रश्म के लिए परमाल तो आयेंगे नही, आल्हा को ही आना पड़ेगा।
आल्हा समधौरे के लिए आते हैं। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा है मानों स्वयं देवराज इंद्र पधारे हैं। दोनों अभिवादन कर खड़े हो जाते हैं। पृथ्वीराज की छाती पर पंडित ने मंत्र पढ़कर दही मलकर पान का पत्ता चिपका दिया, दूसरी ओर आल्हा की छाती में कत्था मलकर पान का पत्ता चिपका दिया, दोनों ही हाथ फैलाकर आगे बढ़ते हैं और एक दूसरे को बाहों में भर लेते हैं, दोनों की छाती से छाती मिल गई, पहले तो आल्हा साधारण तरीके से गले मिले, पर पृथ्वीराज अपनी तरफ से बाहें कसे जा रहे थे, यह देखकर आल्हा ने जोर लगाया, तो पृथ्वीराज के शरीर से पान का पत्ता कत्था, दही के साथ इस तरह मसला कि लाल-लाल पसीना बह निकला, पृथ्वीराज कुछ विचलित से दिखाई दे रहे हैं, पर महाराज आल्हा शांत भाव से मुस्करा रहे हैं। पृथ्वीराज ने मन ही मन मान

लिया कि बाहुबल में आल्हा उनसे आगे हैं, पर उनकी मधुर मुस्कान पृथ्वी के कलेजे में कांटा बनकर चुभ गई। उनकी सरलता को वो अपना अपमान समझ बैठे, उनका अहम जाग उठा। पृथ्वीराज ने आल्हा का टीका कर, हार पहनाया, पशमीना का शाल उढ़ाकर समधौरा किया। महाराज आल्हा ने भी पृथ्वीराज का टीका किया। दोनों एक दूसरे को देखकर मुस्कराये जा रहे हैं।

आल्हा ऊदल की वीरता को देखकर वह विचार करने लगे कि हमने इनकी वीरता को कम आंका। अभी इनकी और परीक्षा ली जा सकती है। सच कहा जाये तो उनके मन में जलन होने लगी कि मेरे द्वार पर आकर मुझे ही वीरता दिखा रहे हैं। हर चुनौती को ये पूरी करते चले गए। इस समय उन पर अहंकार हावी होने लगा। पृथ्वीराज भजन पूजन वाले नहीं थे कि उनकी बुद्धि सात्विक रहे। वह सामने वाले को अपने से अधिक मानने को तैयार नहीं थे। उनका मन बेचैन हो गया और मन में बदला लेने की भावना बलवती होने लगी। तभी पंडित की वाणी याद आई और वह शांत हो गए कि ...जब बेला की विदा करेंगे, तब इनको अपनी ताकत का अहसास कराऊंगा। उस समय आल्हा की मुस्कान देखूंगा। यह कर्ज इनका मेरे ऊपर उधार रहा।

आल्हा को पृथ्वीराज के भाव अच्छे नजर नहीं आ रहे थे। व्यर्थ की रार नहीं बढ़ाना चाहते थे इसलिए अपने तंबू में चले गए।

उसके बाद नेगी ने लश्कर में आकर कहा... जितने भी घराती हैं सबको बारात में बुलाया गया है। दूल्हा की पालकी लेकर सभी घराती और दो हजार वीर सरदार चल दिए। जोगमच्छ-भोगमच्छ नैनागढ़ वाले, गजलोहन कोट कसौंदी वाले, आल्हा, ऊदल, मलखान, सुलखान, लाखन, ढेबा, तल्हन, सहित मल्लयुद्ध के सभी योद्धा साथ चल रहे हैं। सभी चौकन्ने थे, बड़े फाटक के भीतर जाते ही फाटक बंद हो गया। ब्रह्मा की पालकी और महाराज आल्हा आगे निकल गए, तभी दिल्ली के वीरों ने आक्रमण कर दिया। सभी सतर्क थे, सो दोनों ओर से तलवारें चलने लगीं। कुछ ही घंटों में दिल्ली के जवानों के छक्के छूट गए और वह घायल हो कर मैदान में पड़े कराह रहे थे। कुछ घराती भी रक्त से लाल हो गए थे। सभी का दरवाजे पर स्वागत हुआ। टीका हुआ। दूल्हे का टीका कर भांवर के लिए ले जाने लगे, तो ताहराज ने कहा... हमारे यहां पर रिवाज है कि अकेला लड़का ही जायेगा।

ऊदल तमककर बोला .... आपके खत में लिखा है कि भांवर में सातों भाई तलवार चलायेंगे, दुल्हा भांबर लेगा और उसके सातों भाई उसके साथ चलेंगे। हमारा यही रिवाज है और कायदा भी यही है। हम अकेला दूल्हा नहीं भेजेंगे।

ताहर...आप सात लोग साथ आ सकते हैं। पालकी के साथ कुंवर आल्हा, ऊदल, मलखान, लाखन, ढेबा, जोगराज, और कवि जगनिक चले। पंडित जी ने मंत्रोचार किया और गठबंधन कर फेरे शुरू कराये। पहली भांवर को जाते ही ताहराज ने ब्रह्मा पर तलवार का वार किया। आल्हा ने बांये हाथ से रोका, दूसरी में पार्थराज ने, तीसरी में चदनराज ने, चौथी में सूरजराज ने, पांचवीं में मोतीराज ने, छटवीं अरिमर्दराज और सातवीं में गोविंदराज ने वार कर रस्मे पूरी की और तलवारों के साये में सातों भांवर पड़ गईं।

अगमा रानी ने कहा...बेटा अब कुंवर कलेवा का नेग करने चलो। ब्रह्मा उठ खड़ा हुआ रानी ने कहा अकेला लड़का जायेगा।

ऊदल ने कहा ... महारानी जी, एक सहबाला तो दूल्हा के साथ जाता है हमारे कुल की

यही रीत है।
रानी ने कहा... केवल एक ही आओ, ऊदल और ब्रह्मा आगे बढ़े तो चौड़ा रास्ता रोककर बोला...बनाफर कुमार बिना नेग दिए कहां जा रहे हो? हमसे कुछ निशानी तो लिये जाओ और तलवार का वार किया। ऊदल सावधान था उसने भी एक हाथ से ढाल अड़ाकर दूसरे से उलट वार किया। ऊदल के लगातार वार से चौड़ा के हाथ से तलवार छूटकर जा गिरी। ऊदल ने गले पर तलवार अड़ा दी। चौड़ा उठकर बोला...शाबाश बहादुर, किसी शेरनी मां का दूध पिया है। चौड़ा ऊपर से तो यह बोला, पर अंदर से अपने को अपमानित महसूस कर रहा था। उसने निश्चय किया कि ऊदल को यहां से जिन्दा नहीं जाने दूंगा। चाहे छल-कपट से मारना पड़े।
रानी रस्मों के नाम पर यह नहीं चाहती थीं, बोलीं रस्में हो गई हैं अब कोई लड़ाई नहीं। भीतर केवल महिलायें जायेंगी।
उधर बदले की आग में जलता चौड़ा लंहगा लुगड़ी, कंगन-चूड़ी, टीका काजल करके जनाना रूप रखकर, जहर बुझी कटार कमर में छिपाकर, घूंघट डालकर रानी महल में, ऊदल के पास बैठ गया। दूल्हे ने उनकी कुल देवी का पूजन किया और उसके बाद दो थाल में बहुत से व्यंजन परोसकर रखे गए। ऊदल ने सावधानी के लिए थाल उठाकर ब्रह्मा से कहा....दादा, पहिले आप भाभी को खिलाइए। तभी से यह रीत चली आ रही है कि कुंवर कलेवा में लड़का लड़की और सहबाला एक ही थाली में खाते हैं।
ऊदल ने कौर उठाया, तभी चौड़ा ने जहर कटारी उसके पेट में मार दी। ऊदल सतर्क था, उसने हाथ अड़ा दिया, कटार उसकी बांह में घुस गई। दासियों ने उसको पकड़ा, पर वह कपड़े छोड़कर भाग निकला। रानी अगमा ने रोकर कहा... अरे चैड़िया, तेरा बुरा हो जाये, तैने बड़ा धोखा किया रे! ये वीरों के काम नहीं हैं अरे वीर था, तो वीरता से लड़ता; जा मैं तुझे श्राप देती हूं कि जिस कपड़े से अपने को ढंककर तूने छल किया है, उसी कपड़े को फैला कर समस्त ब्राह्मण जाति भिक्षा मांगकर अपना निर्वाह करेगी। ब्रह्मणों के अंदर से वीरता का गुण हमेशा के लिए खत्म हो जायेगा। अरे कोई राजवैद्य को लाओ, दासी राजवैद्य को बुलाने भागी।
ब्रह्मा ऊदल का हाल देखकर घबराकर बोला ... भाई की जान कुर्बान करके मुझे पत्नि नहीं चाहिए। आप सब धोखे बाज हो। तलवार के जोर पर नहीं जीत सके, तो छल कपट पर उतर आये। युग बदल गया पर आपका स्वभाव नहीं बदला। ऊदल को धीरे-धीरे मूर्छा आने लगी। उसी समय वैद्य जी आ गए और ऊदल को दवा पिलाकर घाव पर लेप लगाकर कहा... चिंता की बात नहीं, सब कुछ ठीक हो जायेगा। कुछ देर में ऊदल को होश आ गया। ऊदल ने अपने घाव को भाइयों से छिपा लिया, पर मन ही मन कसम खा ली थी कि चौड़ा से इस धोखे का बदला जरूर लेंगे। रस्म पूरी होने के बाद ब्रह्मा को लेकर तंबू में आ गए।
जब आल्हा पूजन कर रहे थे, तभी देवी मां की आवाज सुनाई दी कि किसी भी हालत में बहू की विदा नहीं कराना है। बिना दुल्हन के बारात वापस जायेगी। आल्हा विचार कर रहे हैं कि देवी की आज्ञा मानना जरूरी है, पर वह पृथ्वीराज को कैसे मना करें। वह इसी असमंजस में हैं। तभी ताहराज ने आकर कहा....महाराज ने कहा है हमारे कुल की रीति के अनुसार हम विदाई अभी नहीं करेंगे। आप समझदार हैं परिस्थिति को समझेंगे। रीतिनुसार बारह साल बाद गौना करेंगे, उसके लिए आप सभी को पुन: सादर आमंत्रित किया जायेगा। अभी सभी राजाओं और बारातियों के लिए महाराज ने ये उपहार भेजे

हैं, जो बाहर रथों पर रखे हैं। आल्हा को यह सुनकर अच्छा लगा कि वह जो चाहते थे वह मां की कृपा से हो गया। अनुमानत: यह विवाह 1167 के आसपास था।
इस प्रकार महाराज पृथ्वीराज ने सभी बाराती राजाओं को बहुत से उपहार दे कर विदा किया बारात की विदा होकर महोबा वापस आती है। महलों में बहुत से मंगला चार हो रहे हैं। त्रिलोकवर्मन ने कहा...मां, अब तो बारह साल बाद आप बहू देख पायेंगी।
रानी सुनवां ने कहा.... देवर जी, कोई बात नहीं, हम आपकी और कुंवर ब्रह्मा की दोनों बहुओं की एक साथ मुंह दिखाई करें। यह सुनकर सभी हंसने लगे और वह शरमा गया। इस प्रकार ब्रह्मा का ब्याह पूरा हुआ। सभी के बीच ऐसी ही हंसी ठिठोली के चलते समय गुजर रहा था। बनाफरों को तो श्राप था कि पूरा जीवन युद्ध करते बीतेगा, इसीलिए दूसरी समस्या तैयार रहती थी।
इसी काल में जैन धर्म का प्रचार प्रसार बहुत हो रहा था। बानपुर, खजुराहो, दुदही, अहार, मदनपरु, महोबा, नवागढ़, जदई, कुंडलपुर में जैन मतावलंबी अपना वर्चस्व बना चुके थे। माहिल ने इन जैन मुनियों को कालिंजर और खजुराहो के मठों में बिठा रखा था। इसके अलावा अन्य हिन्दू साधु भी माहिल से मिले हुए उसी समय 1166 में परमाल ने अजयगढ़ में तालाब और मंदिर बनवाये, परमाल के मंत्री सलक्षण ने बटेश्वर में शिवजी एवं लक्ष्मीनारायण का मंदिर बनवाया। उसके बाद 1167 ई. में परमाल ने महोबा में जैन मूर्ति की स्थापना कराई और उसकी प्राण प्रतिष्ठा में यज्ञ का आयोजन किया जिसमें हिन्दू साधुओं ने भी भाग लिया। राजा स्वंय यज्ञ वेदी पर बैठे। इसी समय उन जैनमुनि ने राजा से दक्षिणा में यह वचन ले लिया कि अब वह कभी भी, किसी भी हथियार को हाथ नहीं लगायेंगे और उन्होंने अपने सभी हथियार पूजन करके कीरत सागर में विसर्जित कर दिये। यह अजयगढ़ शिलालेख 1168ई. और ओरछा गजेटियर 1169 में उल्लेखित है। राजा बहुत दुखी हुए, पर उन्होंने मन को समझाया कि आल्हा ऊदल के होते उन्हें किसी से युद्ध करने की क्या आवश्यकता है। यह माहिल की बहुत बड़ी जीत थी जिस पर वह मन ही मन बहुत खुश था, अब उसका अगला कदम आल्हा ऊदल को महोबा से बाहर करना था।

20-सुलखान का ब्याह

उत्तराखंड का इतिहास पौराणिक काल जितना पुराना है। केदारखंड और मानसखंड के नाम से इसका उल्लेख मिलता है। इसे देवभूमि व तपोभूमि भी कहा गया है। यहां पर चंद राजाओं का राज्य था। इतिहासकारों ने शक, हूण, सकाश, नाग और खश आदि जातियों का उल्लेख किया है। यहां बद्रीनाथ केदारनाथ सहित अनकों हिन्दु तीर्थ हैं। 600-1200ई. से पौरव, कुशान, गुप्त, कत्यूरी, पाल, चंद और परमारों ने यहां शासन किया है। केदार खंड 64 राज्यों में बंटा था, जो आपस में अधिकारों के लिए लड़ते रहते थे, उसी समय चंदवंशी राजा कनकचंद का पुत्र अजयचंद, जो चांदपुर गढ़ी कबीले का वीर था। इन गढ़ों को अपने अधिकार में लेकर, एकजुट करके गढ़वाल राज्य की स्थापना की और श्रीनगर को अपनी राजधानी बनाया। उस साम्राज्य में सभी राजा स्वतंत्र थे, पर पंवार साम्राज्य का हिस्सा थे। तभी से कुमायूं का गढ़वाल नाम प्रसिद्ध हुआ। पांडुकेश्वर के ताम्रपत्र दर्शाते हैं कि इनकी राजधानी नीति-माना घाटी में थी, फिर श्रीनगर हुई। इतिहासकार नौटियाल के अनुसार इनकी राजधानी गढ़ावाल के जोशीमठ में थी।

12वीं सदी में वहां पर गढ़वाली राजा रतनचंद का राज था। उसके अधिकार में भाटकोट, डूंगरकोट, उदयकोट और ऊंचाकोट के चार दुर्ग थे। कुमायूं गढ़वाल चारों ओर पहाड़ियों से घिरा एक सुरक्षित राज था। हिमालय पर्वत का हिस्सा कहे जाने वाली शिवालिक पहाड़ियों पर यह बसा था। यहां पर मेवा और फलों की खेती होती थी। भागीरथी व अलकनंदा इन्हीं पहाड़ों से होकर बहती है। गढ़वाली लोग भगवान शिव के भक्त और वीर थे, पर चतुर चालाक नहीं थे। यहां रहने वाले लोग सात्विक जीवन जीते थे। राजा रतनचंद के लालचंद, कुंवरचंद नाम के दो पुत्र और शिवाली नाम की एक पुत्री थी, जो शिव जी की भक्त थी।
कहानी का आरंभ सिरसा से होता है। सिरसा का राज्य सुलखान ही देखा करते थे। उनका मन पूजा पाठ और दान धर्म में अधिक रहता था। कुछ समय से कुंवर सुलखान को एक ही सपना बार-बार आ रहा था कि वह बद्रीनाथ केदारनाथ के दर्शन को गए हैं और केदारनाथ में कांवर का जल चढ़ा रहे हैं। सुलखान ने पंडितजी को सपना सुनाया, तो उन्होंने कहा...राजकुमार, सावन का महीना आने वाला है। आप गंगाजल लेकर केदारनाथ में चढ़ायें, यही शिव जी की इच्छा है। सुलखान को जाने की लगन लग गई। मलखान ने कहा... अगर गंगा जल चढ़ाना जरूरी है तों हम जाकर चढ़ा देते हैं, पर सुलखान नहीं माना और अपनी हठ पर अड़ा रहा, अंत में मलखान ने उसे जाने की आज्ञा दे कर कहा....तुम अकेले नहीं जाओगे। ढेबा और कवि जगनिक साथ में जायेंगे।
इस प्रकार सभी सामान और पर्याप्त धन लेकर वह चल दिये। महाराज ने सुन्दररत्न जड़ित कांवर बनवा कर सुलखान को दी। हरिद्वार से गंगाजल भरकर वह चले, लंबा सफर करके केदारनाथ पहुंचे। उस समय पहाड़ियों का सफर बहुत कठिन था। चारों ओर बर्फ के ऊंचे-ऊंचे पहाड़, टेढ़ा मेढ़ा रास्ता, गहरी-गहरी खाइयां। वहां पर मंदाकिनी नदी में स्नान किया, भगवान शिव का पूजन किया। उसे ऐसा लगा मानों स्वयं भगवान शिव उससे बात कर रहे हों। उसके मन को बहुत ही अधिक सुकून मिला। मंदिर के आगे बड़ा सा जगमोहन बना हुआ है, जिसमें पांचों पांडवों और द्रोपदी की मूर्तियां और नंदीश्वर की विशाल मूर्ति विद्यमान है। वहां पर बहुत सा दान पुण्य किया। लौटकर उखी मठ और जोशी मठ होते हुए, वह अब बद्रीनाथ के लिए चल दिए।
इस धाम में आकर सुलखान को बहुत ही अच्छा लगा बद्रीनाथ धाम में आकर ऐसा लग रहा था मानों वह साक्षात विष्णुलोक में आ गया है। वहां की रमणीकता उसके मन को बहुत अधिक शांति प्रदान कर रही थी। अलकनंदा में स्नान कर भगवान बद्रीनाथ के दर्शन किए। उसके बाद ब्रह्म कपाली में जाकर सुलखान ने अपने सभी पूर्वजों को पिंडदान और तर्पण किया। अब महोबा को वापस चल दिये। संकरी-संकरी पगडंडी पर चलकर आना जाना पड़ता था। वापस आते समय वह तीनों रास्ता भूलकर गढ़वाल राज की सीमा में चले गए। वहां नगर देखकर सुलखान ने कहा... चलो किसी सराय में रुककर कुछ आराम करके थकान मिटा लें।
वे सराय में रुक जाते हैं। सुलखान ने सुबह कहा...ढेबा दादा, हमने भोर पहर में सपना देखा है कि एक बाग में हम रुके हैं, वहां पर सात सखियों के साथ एक राजकुमारी आई और बोली... हम राजकुमारी शिवाली हैं। आपसे ब्याह करना चाहते हैं, उसने हमें वरमाला पहना दी। हमसे कौल कराया और गंगा तुलसी कराई कि आप हमसे ब्याह करेंगे। अब आप ही बताइए वह कहां की राजकुमारी है? हम उसे कहां खोजेंगे। ढेबा बोला....कहीं खोजने की जरूरत नहीं है। कुमांयू के राजा की पुत्री भी शिवाली है।

जगनिक बोला-जरूरी नहीं कि ये वही हो, सपने के चक्कर में न पड़कर अपने घर चलो। ये पहाड़ी बहुत खतरनाक होते हैं।
सुलखान बोला- ... हमने तो सुना है कि राजा शिवभक्त हैं। ढेबा.... शिवभक्त हैं तो क्या तुम्हें अपनी बेटी ब्याह देंगे।
सुलखान....एक बार राजकुमारी को देखकर पहचान जायेंगे। अगर ये वो नहीं है, तो चल देंगे, पर देखेंगे अवश्य।
जगनिक...हमारा काम दर्शन करना था, सो हो गया अब घर चलें, किस्मत में उसका साथ लिखा होगा, तो आपसे जरूर मिलेगी।
सुलखान.....हो सकता है किस्मत हमें इसीलिए खींच लाई हो, देखे बिना नहीं जायेंगे। यह ईश्वर का कोई इशारा हो?
उधर राजकुमारी शिवाली शिवभक्त थी। उसने सुबह उठकर कहा... माता, मुझे भोर में सपना आया है कि महोबा के राजकुमार हमारे नगर में पधारे हैं और उन्होंने शिवमंदिर में हमसे गंधर्व विवाह किया है। हमने स्वयं उनको वर माला पहनायी है। मां अब वो हमारे पति हैं। हमने उनको स्वप्न में वरण कर लिया है। आप पता लगवाइए कि वह कहां रुके हैं? हम उनका नाम नहीं जानते हैं, पर यह जानते हैं कि वह शिवभक्त हैं। उनको देख कर पहचान सकते हैं।
रानी.... अरे बेटी, ये सपने कभी सच नहीं होते। कहां तो गढ़वाल और कहां महोबा? एक दूसरे की क्या बराबरी, यहां कोई मर जाये तो वहां खबर नहीं, वहां कुछ हो जाये तो यहां खबर नहीं। जा तू अब आराम कर।
राजकुमारी ने अपने कमरे में जाकर पत्र लिखा..... महोबा के शिवभक्त राजकुमार को, राजकुमारी शिवाली का प्रणाम।
भगवान सदाशिव के आदेश से हमने आपको स्वप्न में वरमाला डालकर वरण किया है। अब आप ही मेरे पति हैं। आप जब सामने आयेंगे हम आपको पहचान लेंगे। आप यथाशीघ्र बारात लेकर आयें और हमें ब्याह कर ले जायें अन्यथा मैं अपना जीवन समाप्त कर लूंगी। हमें पता है कि आप गढ़वाल में हैं। आप एक बार आकर हमसे जरूर मिलना। हम देखना चाहते हैं कि महोबा वाले इतने पहरों के भीतर कैसे हम तक पहुंचेंगे? यह हमारी प्रार्थना भी है और चुनौती भी... आपकी शिवाली!
इसके बाद दासी को पाती देकर कहा... रैना, अपनी कुछ विश्वास पात्र सखियों को साथ लेकर तू सभी सराय और बाजारों में जाकर पता कर कि महोबा से आये राजकुमार कहां ठहरे हैं? उनका पता लगाकर तू ये पाती उनको दे देना। रैना दासी अपनी साथियों के साथ जाकर सारे बाजार और सराय में गुप्त रूप से राजकुमार का पता लगाती है। अथक प्रयास के बाद पता चला कि तीन विदेशी शिवालिक की पहाड़ी पर बने सराय में ठहरे हैं। वह वहां जाकर उनसे पूछताछ करती है और विश्वास होने पर कि यही महोबा के कुंवर हैं, उनको पाती दे कर बोली... यह पाती आपको हमारी राजकुमारी जी ने दी है।
सुलखान पाती पढ़कर बोला....ये देखो मेरा सपना सच था। शिव जी ने उसे भी वैसा ही सपना दिखाया है। वह भी मेरा इंतजार कर रही है। उसने मुझे चुनौती भी दी है कि आकर मुझसे मिलो। अब जगनिक ने जान लिया कि ये सब जो हो रहा है उसमे शिवजी की मर्जी है। अब कुंवर राजकुमारी को देखे बिना नहीं जायेंगे और चुनौती भी है, तो पूरी करना ही पड़ेगी। सो वह बाजारों से सामान लाकर जोगी का वेश बनाकर चुनौती पूरी करने चले। सुलखान की बांसुरी से अलग-अलग राग निकल रहे हैं। वह कभी

भैरवी, कभी धुरपद, कभी ठुमरी बजा रहा है, उसी तर्ज पर ढेबा अपना करतब दिखा रहा है। सभी वाह-वाह कर रहे हैं।
दासी ने कहा...महारानी, चौक में तीन जोगी आये हैं। खूब तमाशा दिखा रहे, अच्छी रागरागनी गाते हैं। आपकी आज्ञा पाऊं तो उनको ले कर आऊं। आज्ञा पाकर दासी जोगियों को लाती है, तो रानी ने पूछा.....जोगीजी कहां से आये हो? कहां जा रहे हो?
जगनिक.... महरानी जी, हम तो रमते जोगी बहता पानी हैं। बंगाले से आये हैं, केदारनाथ के दर्शन करके वापस जा रहे हैं।
रानी ....कुछ राग रागनी सुनाओ, हमारी राजकुमारी कुछ उदास हैं। सुलखान राजकुमारी को देखकर पहचान गया। यह सपनों वाली ही थी। वह एक कोने में दीवान पर उदास सी बैठी है, सुलखान ने बांसुरी की तान छेड़कर समां बांधा, ढेबा खंजड़ी की ताल दे रहा है और जगनिक डमरू बजा रहे हैं। अंत में सम्मोहन राग से सभी को सम्मोहित करके सुलखान ने पूछा... महारानी जी, आपकी बेटी बहुत उदास क्यों है? क्या हम राजकुमारी जी का हाथ देखकर उदासी का कारण और निवारण बता सकते हैं।
रानी बोली-.. हां महाराज आप उसका हाथ जरूर देखिए। जगनिक रानी को बातों में उलझाये था।
सुलखान बोला...आप अपना हाथ दीजिए। राजकुमारी बोली....हम ऐसे वैसे को अपना हाथ नहीं देते। आप यहां से जाइए।
सुलखान ने मुस्कराकर कहा.... कमाल है! पहले तो आप पाती लिखकर बुलाती हैं। फिर जाने को कहती हैं।
अब राजकुमारी ने चौंककर उसकी ओर देखा। सुलखान जवाब में मुस्करा दिया। उसकी उस मुस्कान ने राजकुमारी का मन मोह लिया। वह स्वप्न में देखे चेहरे को पहचानने का प्रयास कर रही थी। उसने धीरे से पूछा-आप आप!
हम महोबा के राजकुमार सुलखान हैं। हम यहां पर तीर्थ करने आये थे। अब वापस जा रहे थे कि आपकी पाती मिली।
राजकुमारी ....आप, हमें छोड़ कर वापस जा रहे हैं। हम आपके बिना कैसे जी पायेंगे? आप हमें भी साथ ले चलिए।
सुलखान....हम बारात लेकर आयेंगे। उसके बाद आपको लेकर जायेंगे। अभी आप खुश होकर अपनी माता के पास जाइए।
सुलखान ने कहा... महारानी जी, आपकी बेटी के ऊपर महादेव जी की बहुत कृपा है। वह सपने में आपकी बेटी का स्वंयवर रचा चुके हैं। एक दिन वही राजकुमार बारात लेकर आयेगा और राजकुमारी को ब्याह कर ले जायेगा। आप उसका इंतजार करना।
रानी... जोगी महाराज क्या इसका देखा सपना सच होगा। सुलखान बोला-....बिलकुल सच होगा। इस ब्याह को कोई नहीं रोक सकता। यह तो स्वयं भगवान शिव की इच्छा है। आप उनको ब्याह का आमंत्रण भेज दीजिये। अब हम सब प्रस्थान करेंगें।
वह महोबा पहुंच गए। राह के हाल चाल पूछे। सुलखान ने सब कुछ बताया, पर राजकुमारी की बात न बताई। वह उसको भुला नहीं पा रहा था, सोचा था कि किसी उचित मौके पर बताऊंगा। वह इसी सोच में गुमसुम रहने लगा। एक दिन ऊदल ने उसे बाग में ले जाकर हाल पूछा, तब सुलखान ने सारी बात बताकर कहा...अब ब्याह तो उसी से करूंगा यह मेरे शिव जी का आदेश है।

ऊदल ने दरबार में आकर राजा महाराज से सारी बात बताई, वह साफ मनाकर गए। आल्हा ने भी उनका समर्थन कर कहा....वहां पहाड़ों पर ब्याह रचाने क्यों जायें? हमारे आसपास के राजा, ब्याह के लिए तैयार हैं। वो कब से आस लगाये बैठे हैं।
ऊदल और मलखान ने कहा...जब राजकुमारी शिवाली ने सुलखान को पाती लिखकर बारात लेकर बुलाया है, तो हमको जाना ही पड़ेगा। वरना हमारा क्षत्रिय धर्म कलंकित होगा कि हम किसी स्त्री की रक्षा न कर सके।
रानी मल्हना और सुनवां ने भी समझाया कि वैशाख महीना का ब्याह तय कर दो। इस मौसम में वहां पर हिम पात नहीं होता है। वहां जाने में सभी को सुविधा रहेगी। सभी को निमंत्रण भेज दो। बारात की तैयारी करो। इस प्रकार सबकी सलाह से बारात का आमंत्रण भेज दिया गया। महलों में मंगलाचार होने लगे और फिर शुभ मुहूर्त में बारात की निकासी हो गई। एक माह तक निरंतर चलकर शिवालिक पर्वत शृंखला की ऊंची-नीची पहाड़ियों को लांघकर बारात गढ़वाली राजा के राज में पहुंच गई। भागीरथी के तट पर सभी ने अपना तंबू डाला और पड़ाव डालकर आराम फरमाने लगे। एक माह के सफर से सभी को थकान हो गई थी।
अब आल्हा ने पाती लिखी... महाराज रतनचंद जी, भगवान शिव जी की महान कृपा से आपकी बेटी ने कुंवर सुलखान को अपना पति वरण किया है और पाती लिखकर हमें बारात लाने को आमंत्रित किया है। हम बारात लेकर आ गए हैं। अत: आप अपनी बेटी की विधिपूर्वक सातों भांवर डलवाने की रस्म पूरी करें। पाती ले कर दूत रतन सेन राजा के दरबार में जाता है।
पाती पढ़कर राजा रतनचंद ने पाती लिखकर दूत को देकर कहा, अपने राजा को दे देना, आल्हा ने पत्र पढ़ा..... महाराज आल्हा, हमें यह ब्याह मंजूर नहीं है। हम अपनी बेटी बहुत दूर उस निचले इलाके में नहीं ब्याहेंगे, जहां से उसकी कुशलता की कोई खबर तक ना आ सके। हमने उसका ब्याह अन्यत्र तय करके, किसी को वचन दे रखा है। सो आप अपनी सेना लेकर यहां से कूच कर जायें। अगर आप फिर भी लड़ना चाहो तो हमारी सेना आपका स्वागत करने को तैयार है। ... राजा रतनचंद गढ़वाली।
पाती पढ़कर ऊदल के नथुने फूलने लगे। वह क्रोध में भरकर बोला.....सारी सेना की तैयारी करो और कूच करो।
ऐपन वारी लाने वाले की बहादुरी देखकर रतन सेन घबरा गए। उधर रानी ने राजकुमारी का सपना और जोगियों की भविष्यवाणी की बात बताकर यह ब्याह कराने के लिए कहा। यह सुनकर राजा ने कुछ सोचा और समझा कि बात सही है; हमें राजकुमारी का ब्याह तो करना ही है, तो फिर भगवान शिव की इच्छा से ही करूं तो अच्छा है। अपने बेटे लालचंद और कुंवरचंद को बुलाकर कहा....चालीस गज के खम्ब गड़वा लग्गी बांधकर उस पर कबूतर बांधकर बिठा दो और महोबा के खेमें मे खबर भिजा दो कि द्वारचार के नेग में जब आप कबूतर लग्गी से उतार दोगे तो हम द्वारचार की रस्म पूरी कर देंगे।
यह खबर मिलते ही सबके चेहरे पर खुशी छा गई। दूसरे दिन सभी घराती बारात सजाकर आ गए। द्वार पर दोनों ओर से संग्राम होने लगा। गढ़वाली सेना किसी को लग्गी के पास आने ही नहीं दे रही थी। मलखान ने ऊदल से कहा.... हम इन सबको सभांलते हैं। तुम कबूतर उतारने का प्रयास करो। मलखान सेना में घुसकर तबाही मचाने लगा। ब्रह्मा और लाखन भी उसके साथ हैं?

उधर ऊदल ने बेंदुला से कहा... अब जो भी करना है तुम्हें करना है। लाज तुमको बचाना है। ऐसी छलांग लगाओ कि एक ही झटके में बाज तक पहुंच जाऊं। बेंदुला ने दौड़ लगाई और झलांग लगाकर बाज तक पहुंच गया। ऊदल ने भाला की नोंक पर कबूतर को फंसाया और नीचे आ गया। यह देखकर सेना में खलबली मच गई कि नेग पूरा हो गया। दोनों सेनायें वापस लौट गईं।
दूसरे दिन सारे घराती भांवर के लिए दूल्हा लेकर आये। लालचंद ने कहा...भांवर के नेग में आपको हम दोनों भाइयों को मल्ल युद्ध में हराना पड़ेगा। तभी भांवर पड़ सकेगी। ऊदल और मलखान ने कहा... हमें आपकी शर्त मंजूर है।
वह चारों ही मल्लयुद्ध के लिए अखाड़े में आ गए। सभी मैदान में घूम कर अपना जोर दिखा रहे थे। नगाड़ा बजते ही लालचंद और ऊदल, मलखान और कुंवरचंद आपस में भिड़ गए। सभी अपने-अपने दांव पेंच आजमा रहे थे। कभी ये नीचे, तो कभी वो नीचे। देखने वाले सभी सांस रोक कर देख रहे थे। गढ़वाली कुमार तो पहाड़ी थे। उनका शरीर वज्र की तरह कठोर था। ऊदल और मलखे के प्रहारों से उन पर कोई असर ही नहीं हो रहा था। वह हर प्रहार के बाद दुगने जोश से खड़े हो जाते थे। वह चिपक जाते थे तो उनको छुड़ाना मुश्किल हो जाता था। आल्हा ने यह सब देखकर समझ लिया कि इनसे मल्लयुद्ध में पार पाना कठिन है। ये अखाड़ा लोटकर ही जवान हुए हैं। अत: इनको हराने का उपाय बताते हुए आल्हा ने कहा.....
‘‘सौ-सौ कुंजर के बल राखे अब क्यों राखी देर लगाय। दुई हाथन में उठा के पंचो, खपरी के बल पछार लगाय।"
यह सुनकर दोनों बात का मरम समझ गए कि इनके सिर में चोट करना है। दोनों ने ही उनको हाथों पर उठा कर गोल-गोल चक्कर काट कर सिर के बल जमीन पर दे मारा। सिर में चोट लगते ही वह बेहोश हो गए। सैनिक ने उन्हें होश में लाने का उपक्रम करने लगे। उधर आल्हा ने कहा, भांवर की रस्म शुरू की जाये। कुछ ही समय में फेरे पूरे हो गए क्योंकि यहां पर भांवर में तलवार चलाने की रस्म नहीं थी। सभी एक दूसरे से गले मिले। महाराज ने कहा.....हमें गर्व है कि हमारी बेटी को सुलखान जैसा शिवभक्त वर मिला। महाराज ने बहुत सा धन उपहार दे कर अपनी बेटी को खुशी-खुशी विदा किया।

21-इंदल-हरण

दस्सराज की पत्नि देवलमाता के गर्भ से अभुक्त मूल नक्षत्र में एक बालक पैदा हुआ था जिसके कारण उसे दासी ने पाला था। दो साल का वह बालक गंगा मेले से पृथ्वीराज द्वारा हरणकर लिया था और कान्हादेव ने अपना पुत्र मानकर पाल लिया था। पुराण के अनुसार यह कर्ण का अवतार था। उसका नाम धांधू था। पृथ्वीराज के दरबार का महान योद्धा था।

ग्यारहवीं सदी में अखंड भारत अफगान सीमा तक फैला था। काबुल, कंधार, खुरासान, समरकंद आदि राज्य थे। इन्हीं के पास अफगान सीमा पर बलखबुखारा राज्य था, जहां सेनवंश के शासकों का राज्य था, जो उस समय गंगवंश के संबंधी थे। वहां के राजा श्रीशूरसेन बहुत ही शंतिप्रिय और प्रतापी राजा थे। उनके दो बेटे थे, बड़ा श्री अभिनंदन दूसरा श्री धीरनंदन। वे भी अपने पिता की ही तरह प्रतापी थे। महाराज अपने दोनों ही बेटों को बहुत प्यार करते थे इसीलिए उन्होंने अपने जीवन काल में ही राज्य को दो भागों में विभक्त कर दिया था। पूर्वी भाग का नाम बलख हुआ जिसका राजा श्री अभिनंदन था, पश्चिम का भाग कोट बुखारा जिसका राजा श्री धीरनंदन था। दोनों राजधानी के बीच दस कोस का अंतर था जबकि राज्य सीमायें एक दूसरे से लगी थीं। दोनों आपसी सहमति, परस्पर प्रेम से राज करते थे। बुखारा के राजा श्रीधरनंदन की एक सुन्दर कन्या चंद्रप्रभा थी, जिसका विवाह धांधू के साथ हुआ था। उसी विवाह में चंद्रप्रभा की चचेरी बहन ने इंदल को देख वरण कर लिया था। वह तभी से उससे मिलने को बेचैन थी।

हर साल गंगा दशहरा पर इलाहाबाद में बहुत बड़ा मेला लगता था। इस मेले में सभी देशों के राजा महाराजा आते थे।

ऊदल और ढेबा दोनों आल्हा से बोले... दादा, आपकी आज्ञा मिल जाये, तो हम गंगा दशहरा की पर्वी करने जाना चाहते हैं।

आल्हा...वहां जाकर क्या करोगे? मेला घूमोगे दो चार से रार बढ़ाओगे, बिना लड़ाई किये तुम कहीं से लौटते ही नहीं हो।

तल्हन ने कहा...महाराज, गंगा नहाने से न रोको। सुना है ऐसी पर्वी पूरे सौ साल बाद पड़ी है।

आल्हा ने कहा- ठीक है। तुम ढेबा को साथ लेकर दो हजार सिपाही लेकर जाना। ध्यान रखना स्नान करके जल्दी ही वहां से वापस हो लेना; किसी से उलझना नहीं है। ऊदल जाकर अपनी तैयारी करने लगे। राजकुमार इंदल ऊदल से बहुत प्यार करता थे। इस समय उसकी उमर पन्द्रह साल है, पर समझदारी बहुत है, वह पास आकर बोले-काका जी, हमने सुना आप गंगा दशहरा का मेला देखने जा रहे हैं। हमने आज तक कोई मेला नहीं देखा, हमेशा घर में रहते हैं। अब हम बड़े हो गए हैं, हम भी मेला चलेंगे।

ऊदल ने कहा.... दादा, आपको मेरे साथ मेला नहीं जाने देंगे क्योंकि आप उनके लिए छोटे ही हो।

इंदल ने गले पर कटार रखकर कहा....मुझे साथ नहीं ले जाओगे, तो हम मार कटारी मर जायेंगे।

ऊदल... ये सब जाकर अपने पिता को समझाओ! इंदल ... काका जी, आप मेरे साथ

चलकर पिता जी से आज्ञा दिलाइए।
ऊदल..... वाह बेटा, हमारी जूती, हमारे ही सिर। उसका हाथ पकड़कर ऊदल उसे दरबार में लेकर गया और बोला....दादा, देखो ये कुंवर इंदल पीछे पड़े हैं कि हम भी मेला चलेंगे। हम मना कर रहे हैं, तो कटारी मारने की रट लगाये हैं।
आल्हा ने कहा...नहीं, कुंवर इंदल कहीं नहीं जायेंगे। वहां कई देशों के राजा-महाराज, जादूगर-जादूगरनी, राजकुमारी और कई अइयार आयेंगे, कुछ भी हो सकता है। कुंवर का जाना ठीक नहीं है। अगर इंदल नहीं मानते, तो ऊदल भी नहीं जायेंगे।
ऊदल....देखा, अब मेरा जाना भी खतरे में पड़ गया। तुमको अगली साल मेला जरूर ले चलेंगे।
इंदल... काकाजी, हम आपके साथ अभी चलेंगे, नहीं तो आप भी अगले साल जाना।
ऊदल इंदल को लेकर रानी सुनवां के पास पहुंचा और सारी बात बताकर बोला....भाभी मां, अब आप ही इसे समझाइए।
मां ने भी समझाया पर इंदल अपनी जिद पर अड़ा रहा। अंत में उसने कहा ठीक है देवर जी, आप इसे ले जाइए और हम महाराज से बातकर उन्हें समझा लेंगे। बस आप इसका ध्यान रखना और होशियार रहना।
ऊदल और इंदल गंगा घाट पर पहुंच गए। ऊदल ने गंगा किनारे अपना तंबू लगाया और डंका बजवाया। ऊदल को देख सभी राजा सनक गए कि बिना बात के रार बढ़ाने वाला ऊदल ठाकुर आ गया। अब तो जल्दी ही गंगा डुबकी लगाओ और वापस होओ।
देर से डंका बज रहा है। एक सैनिक आकर बोला...हमारे राजकुमार का हुकुम है, देर से डंका बज रहा है अब बंदकर लो।
ऊदल बोला.... अपने राजा से कहना महोबा वाले मेला में आ गए हैं। अब यह डंका ऐसे ही बजता रहेगा।
धावन बोला .... हमारे कुंवर ने कहा है महोबा वाले ही लड़ना नहीं जानते, हमें भी तलवार चलाना आता है।
ऊदल ने कहा... अपने राजा से कहना आ जाये मैदान में; ऊदल सामने खड़ा है।
ढेबा ने कहा...महाराज ने लड़ाई करने को मना किया है। हमें कुंवर इंदल की सुरक्षा भी करना है। लड़ाई मत करो। डंका बंद कर लो। हमारे भी कान फटे जा रहे हैं, तो ऊदल बोला... तुम सेना लेकर इंदल के पास रहो इससे तो मैं अकेला ही निपट लूंगा।
धावन ने आकर कहा...हमारे महाराज कह रहे हैं, जिसे लड़ना हो तंबू में ही आ जाये, हम लड़ने किसी के पास नहीं जाते।
ऊदल के बदन में आग लग गई। उसने कहा..बड़ा गुमान है तेरे राजा को अपने तंबू का, देखता हूं वो तंबू से बाहर कैसे नहीं आता! ऊदल ने एक जलती हुई मशाल ली और धनुष पर चड़ाकर छोड़ना चाहा कि आवाज आई... उदयराज रुको! ऊदल ने आवाज की दिशा में देखा और तंबू से निकलते लाखन को देखा, तो मशाल फेंक दौड़कर एक दूसरे की बांहों में समा गए।
ऊदल बोला -मुझे समझ जाना चाहिए था कि आप कहीं आस-पास ही हो और ऐसा मजाक आप ही कर सकते हो।
जब यह सब हो रहा था तब तक कुछ राजा अपना सामान समेटनें लगे कि आते ही महुबिया ने लड़ाई शुरू कर दी है।
लाखन ने राजाओं से कहा... आप लोग आराम से गंगा दशहरा की पर्वी मनाइए। हम तो

अपने मित्र का स्वागत कर रहे थे।
दोनो तंबू में आ गए। इंदल को देखकर लाखन ने कहा... मित्र बहुत सावधान रहना। मेला बहुत बड़ा है; हर समय कुंवर इंदल पर नजर रखना। क्योंकि बावन गढ़ों की राजकुमारियों और राजाओं की नजर इंदल पर लगी है।
ऊदल.. ठीक है अब हम मिलकर कुंवर इंदल की रखवाली करेंगे। मेले में बहुत भीड़ थी। सभी राज्यों के राजा महाराजा पधारे हुए थे। उधर बलख-बुखारा दो भागों में बंट गया था, तो बलख नगर के राजा धीर नंदन थे। बुखारा नगर का हाल अभी धांधू के ब्याह में हम जान ही चुके हैं। अब बलख नगर का हाल जानेंगे। यहां का जादू सारे संसार में विख्यात है। उनके सात बेटे और एक बेटी थी; उसका नाम चित्रलेखा था। वह जादू की विद्या में बहुत होशियार थी। वह सहेलियों के साथ गंगा नहाने आई है। राजा ने अपने बेटे हंसनंदन से कहा...तुम अपनी बहन को गंगा मेला दिखाकर, स्नान कराकर, जल्दी वापस आ जाना। उसका भी डेरा लगा है।
अब राजकुमारी चित्रलेखा का हाल सुनिए। उसने धांधू की बारात में आये कुंवर इंदल को देख मन ही मन वरण कर लिया था। वह इसी आशा से मेला आई थी कि महोबा वालों के साथ कुंवर इंदल भी आयेंगे, तो दो बात करने का मौका मिलेगा। वह अपने साथ सोने का पिंजड़ा भी लेकर आई है। इसी से उसके इरादों का पता चलता है। दूसरे दिन अपनी सखियों के साथ बहुत देर तक घाट पर रही, पर महोबा वाले नजर नहीं आये। शाम को वह मेला में घूम रही थी, नजरें इंदल को ही तलाश रहीं, पर उसे नजर नहीं आया। उधर इंदल अपने काका के साथ गंगा नहाने गया, मेला देखा, उसे बड़ा मजा आ रहा है। उसने खरीददारी भी की है।
राजकुमारी ने कहा.. हम मेला घूमने नहीं, अपने पिया से मिलने आई थी, पर उनका पता ही नहीं चल रहा। एक सखी ने कहा हम नटनी का रूप बनाकर एक-एक तंबू को देखें तभी जान सकते हैं कि महोबा वाले आये हैं कि नहीं। राजकुमारी को यह बात भा गई। उसने हंसनंदन को जादू से गहरी नींद सुला दिया और सखियों ने नटनी का रूप बनाया। रूपा दासी नृत्य कला में बहुत होशियार और सुन्दर थी। उसे सजाया और राजकुमारी अपने हाथ में एक खंजड़ी लेकर उसी झुंड में शामिल हो गई।
अब वह एक-एक डेरा में जाकर नृत्य करती हुई इंदल को ढूंढ़ रही हैं। उनका नाच गाना देखकर सभी राजा मोहकर रह जाते हैं। काश ये नटनी न होकर कहीं की राजकुमारी होती? महोबा के तंबू में आकर उसकी मंशा पूरी हो गई। उसने कुंवर इंदल को पहचान लिया। जैसे ही उसने जादू उठाया वैसे ही ढेबा सब जान गए और दोनों के बीच आ गए। वह खिसिया कर रह गई, ढेबा ने उनको पांच मुहरें देकर कहा...बस हमें जाने को देर हो रही है। कहकर ढेबा ने उनको तंबू से बाहर कर दिया। उसके बाद अपनी शंका मिटाने के लिए वह ऊदल और इंदल के साथ गंगा तीर पर आ गया। यहां वहां कुछ देर तक घूमता रहा। कुछ देर बाद ढेबा ने देखा वही नटनी वहां पर आ रही हैं। ढेबा ने एक नाव देख कहा...चलो उस नाव में बैठकर गंगा की सैर करें।
वह तीनों नाव में बैठकर चल दिए। इधर राजकुमारी ने देखा कि नदी में विचरण कर रहे हैं। वह अब और कोई धोखा नहीं खाना चाहती थी। उसने मल्लाह को पांच मुहरें दे कर कहा... उस नाव के पास ले चलो। अब नाव इंदल की नाव के पास आ गई थी। वह बड़ी हसरत भरी नजरों से ऊदल को निहार रही थी। कुछ और पास जाने पर चित्रलेखा ने ऊदल और ढेबा पर अपना जादू चला दिया, जिससे वह कुछ देर के लिए स्तब्ध से हो

गए और पलक छपकते ही नाव बिल्कुल पास ले जाकर, जादू डालकर इंदल को तोता बनाकर पिंजरे में कैद कर लिया। उसके बाद बड़ी शीघ्रता से किनारे पर आकर अपने डेरा पर वापस आ गई।
कुछ देर के लिए दोनों की नजर बंद हो गई। जो हुआ उन्हें दिखाई नहीं दिया। जादू हटने पर ऊदल बोला, इंदल कहां है?
ढेबा....यहीं तो था, कहां गया? ऊदल घबराकर जोर-जोर से आवाजें लगाने लगा। वह गंगा के पानी को बार-बार निहार रहा है।
ऊदल-ढेबा जल्दी से पता करो कि इंदल कहां है? ढेबा बार-बार अपना शगुन विचार रहा है, पर उसे कुछ भी आभास नहीं हो पा रहा है। उसका कारण यह है कि इंदल तोता के रूप में है। ऊदल ने किनारे पर आकर कई गोता खोरों को गंगा जी में उतारा। जाल भी डलवाया, पर इंदल का कहीं पता नहीं चला। यह सब हो रहा था कि माहिल मामा आये और पूछा... कुंवर ऊदल क्या हुआ? ऊदल ने मामा के गले लगकर सारी बात बता दी।
माहिल... घबराओ मत, हम जाल वाले को फिर से जाल डालने को कहते हैं। उसके बाद माहिल चला गया, पर वह बहुत खुश था। आज उसे मन मांगी मुराद मिल गई थी। दोनों भाइयों के बीच दरार डालने की।
ढेबा ने कहा... कुंवर ऊदल जान पड़ता है, वो नटनी कुंवर इंदल को ले गई। मुझे उसे देख शंका हो गई थी, इसीलिए नदी में घूमने का बहाना करके आ गया था। चलो उसे खोजते हैं। तभी माहिल भी पास आ गए और बोले ... हां हां चलो देखते हैं, शायद किसी को कहीं किनारे लगा मिल गया हो। इस प्रकार वह पूरे मेला मे पागलों की तरह इंदल को खोज रहे हैं पर वह कहीं भी नहीं मिला। ऊदल का हाल बुरा था। वह कह रहा था...अब मैं अपने दादा को क्या मुंह दिखाऊंगा? हम इंदल के बिना कैसे रहेंगे? अब मैं जीवित महोबा नहीं जाऊंगा, यह कहकर ऊदल ने तलवार निकाली और अपने गले पर वार करने को हुआ, तभी ढेबा ने पकड़ कर कहा... अरे जो तुम मर जैहो, तो इंदल को कौन ढूंढकर लावेगा? अभी हम महोबा चलते हैं, महाराज को बतायेंगे कि युवराज का हरण हो गया है। पांच मास का समय दे दो, तो हम इंदल को खोज लायेंगे।
उधर उरई के माहिल ने भी कहा... हां यही सही रहेगा। हम भी महाराज को समझायेंगे कि पांच माह का समय दे दो।
उधर माहिल मेला से भाग कर आल्हा के दरबार में जाकर बोला...महाराज, गल्ती माफ हो, जो देखा वो कहा नहीं जाता, पर बिना कहे रहा भी नहीं जाता। आल्हा बोला... मामाजी, जो भी कहना है साफ-साफ कहिए।
माहिल... हम गंगा में नौका विहारकर रहे थे कि मेरी निगाह नाव पर पड़ी। उसमें ऊदल ढेबा और कुंवर इंदल भी थे। नौका पर सोलह बरस की सुन्दर नटनी थी, जो नाच दिखा रही थी। वह नटनी इंदल के पास मंडरा रही थी और ऊदल को देख तक नहीं रही थी। ऊदल ने बार-बार उस पर मुहरों की बरसात की, पर उसने उनकी ओर देखा तक नहीं और उस नटनी ने युवराज के गले में बांहें डाल दी। अब तो ऊदल का क्रोध सातवें आसमान पर पहुंच गया। ऊदल ने आव देखा न ताव और उन दोनों को धक्का देकर गंगा जी में गिरा दिया और अपनी नौका लेकर चले गए। युवराज सहायता के लिए हाथ पैर मार रहा था। हम अपनी नौका ले कर शीघ्र ही वहां पर पहुंचे, पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। वह दोनों डूब चुके थे। यह कहकर माहिल रोने लगा।

हमने किनारे पर आकर ऊदल से कहा ..ये क्या हुआ? तो उदल बोले ..मामा कुंवर इंदल नाव से गिर गये, हमने कुछ न कहकर चुप रहना ही उचित समझा, सोचा ऐसा न हो ऊदल हमको ही ठिकाने लगा दे। ताकि आप तक बात ही न पहुंचे। हमने मछुआरे से गंगा जी में जाल डलवाया। कुंवर इंदल को बहुत ढूंढ़ा पर वह न मिले। मेरे फूल से राजकुमार को मगर खा गए होंगे।
माहिल फिर बोला....उसके बाद ऊदल बोले, हम महाराज दादा से कह देंगे कि कुंवर इंदल को कोई जादूगर उठा ले गया। ये नहीं बतायेंगे कि वो गंगा में गिरकर डूब गए। महाराज उसके बाद हमने सभी राजाओं के तंबुओं में जाकर देखा कि किसी को वह गंगा किनारे लगे मिल गए हों, तो शायद बच गए हों, पर वह कहीं नहीं मिले। यह सब कुछ करके मैं आपके पास आ रहा हूं।
हालांकि इंदल के मरने की बात सुनकर आल्हा भी अंदर से घबरा गए हैं। वह उसको बहुत प्यार करते हैं। अपना दिल कड़ाकर आल्हा ने कहा......मामा जी आपकी बातों का मैं विश्वास कर ही नहीं सकता क्योंकि आप की तो लगाई बुझाई करने की आदत है। आप कितनी बार झूठ बोल चुके हो; कुंवर ऊदल इंदल को जान से ज्यादा चाहते हैं। वह अपनी जान देकर भी उसकी रक्षा करेंगे।
माहिल....जान देकर रक्षा करेंगे यह बात सही है, पर ये सब बातें लड़ाई के मैदान में होती हैं। इश्क के मैदान में कोई किसी का नहीं होता। सब एक दूसरे के दुश्मन होते हैं। किसी ने सही कहा है.....इश्क में भैया बैरी लगत है, रण में लगे दूसरी बांह।। .
ये औरत जात होती ही ऐसी है कि नैन मटक्का कर भाई को भाई से लड़ा देती है। इसके चक्कर में बड़े-बड़े देवता और मुनि भी नहीं बच पाये, तो ऊदल की का बिसात? आप अपने तरीके से ऊदल से पूंछकर बात की तह तक पहुंचना। मेरी बात गलत हो तो तलवार से मेरा सिर उतार देना, पर ऊदल को दंड अवश्य देना। मेरा तो कलेजा फटा जा रहा है।
ऊदल ने महोबा में प्रवेश किया। उसकी हिम्मत भाई के सामने जाने की नहीं है वह अपने बंगले में रोये जा रहा है। उसने ढेबा से कहा... हमसे कुछ कहा नहीं जायेगा; तुम जाकर दादा को सारा हाल बता दो और कहना हम कल ही युवराज को ढूंढ़ने जायेंगे।
ढेबा ने महाराज को प्रणाम किया तो आल्हा ने कोई जवाब न दे कर पूछा ... कुंवर इंदल कैसे हैं?
महाराज, वो...वो... आल्हा ने फिर पूछा-कुंवर ऊदल कहां है? ढेबा ... जी महाराज वो अपने महल में हैं। एक तो आल्हा अंदर से बेचैन था, ऊपर से ऊदल का न आना। क्रोध सातवें आसमान पर पहुंच गया। उसने कहा... कुंवर ऊदल को दरबार में लाओ।
मुंह में घास का तिनका दबा, हाथ रस्सी से बंधवा कर, नंगे पैर ऊदल दरबार में दाखिल हुए। यह इस बात की निशानी है कि मैं आपकी शरण में हूं। आल्हा ने गुस्सा दबाकर हकीकत जानने का प्रयास कर कहा..ऊदल ये क्या ढोंग है? कुंवर कहां हैं?
ऊदल ने कहा....महाराज, हमसे बहुत बड़ी गलती हो गई। हम कुंवर इंदल की रक्षा नहीं कर सके। किसी ने जादू डालकर उनको गायब कर दिया। आप मुझे पांच माह की मोहलत दे दीजिए, हम कुंवर इंदल को ढूंढ़कर वापस ले आयेंगे।
आल्हा-तुमने मेला में ढूंढ़ा? ऊदल तुरंत बोला... हमने सारा मेला ढूंढा, सभी राजाओं का कहना है कि उसे किसी ने नहीं देखा।
आल्हा....गंगा में जाल डालकर भी देखना था; कहीं बेहोश करके किसी ने वहां तो नहीं

फेंक दिया।
ऊदल....महाराज हमने गंगा में जाल डलवाकर बहुत ढूंडा, पर उसमें भी सफलता नहीं मिली।
आल्हा .. हमने सुना था कोई सुन्दरी नटनी मेला में नाच दिखा रही थी। इंदल के गायब होने में उसका हाथ तो नहीं है?
महाराज आपने सही सुना; कोई अपूर्व सुन्दरी मेले में नाचकर रही थी। हम इसी लिए आपसे समय चाहते हैं। हम कुंवर इंदल का पता लगा ही लेंगे, आल्हा ने अपना गुस्सा दबा कर कहा..... ऊदल जो भी सच है, हमें बताओ, हम सच जानना चाहते हैं।
महाराज हम सच बता रहे हैं। आल्हा का मन अब विचलित होने लगा है। उसे लग रहा है माहिल की बात सच तो नही है?
उसने पूछा...तुम इंदल को नौका विहार के लिए ले गये थे।
ऊदल -हां महाराज हमने उसे नौका विहार कराया था।
आल्हा चीखकर बोला....नौका बिहार कराया या नदी में धक्का दे दिया? तुमने मार डाला मेरे बेटे को। ऊदल सन्न रह गया।
वह बोला... महाराज, हम नौका विहार को गए थे और कुंवर इंदल उसी नौका से गायब हुए। हमें पता ही नहीं चला कहां चले गए। नदी डुबा ले गई या आसमान खा गया। अब आल्हा को माहिल की सारी बातें सच लगने लगीं।
वह चिल्लाकर बोला.....झूठ-झूठ-झूठ, सब झूठ। तुमने मेरे बेटे को मार डाला। आल्हा हरे बांस का कोड़ा उठाकर ऊदल को मारने लगे। वह मार खाकर भी विश्वास दिला रहा है कि उसने इंदल को नहीं मारा, पर क्रोध, मोह में इंसान विवेक खो देता है।
ढेबा ने जाकर माता देवल को हाल बताया। वह बोली...पुत्र, नाहक में ऊदल को काहे मार रहे हो? ऐसा नहीं हो सकता।
आल्हा... माता तुम जाओ यहां से, हम न मानें बात तुम्हार। जियत न छोड़ें हम ऊदल को, इनने मारो पुत्र हमार।
माता देवल ने रानी सुनवां से कहा......बहूरानी, ऊदल को बचा लो। पता नहीं क्या बात हो गई। उसे आल्हा मारे जा रहा है।
रानी ने कहा...बहुत प्यारे थे ऊदल, पर ऐसा क्या हुआ कि मार रहे हो? उसे लहूलुहान करके भी आपका दिल नहीं रो रहा?
आल्हा ....महारानी, आपको पता नहीं है इसलिए तरफदारी कर रही हो; पता चलेगा तो बैठ कर रोओगी।
मछला...महाराज, बताइए तो ऐसी क्या बात हुई, तो आल्हा ने कोड़ा फेंककर कहा..... इस दगाबाज ने हमारे बेटे को मार डाला।
सुनवां यह सुनकर अवाक रह गई। उसका कलेजा दहल गया। उसने ऊदल की ओर देखा।
ऊदल ने कहा...भाभी मां, हमने ऐसा नहीं किया है आप मेरा भरोसा कीजिए। हम इंदल को वापस लायेंगे।
मछला... मुझे भरोसा है, देवरजी ऐसा कभी नहीं कर सकते। हमे पूरी बात का पता लगाना चाहिए।
आल्हा.... महारानी, हमने सभी कुछ पता कर लिया है। अब इंदल के साथ-साथ इसे भी मरना होगा। यह मेरा हुकुम है।

मछला बहुत समझदार रानी थी। वह सोच रही है कि जरूर गंगा घाट पर कुछ हुआ है, जो सभी की समझ से परे है। वह बोली.....स्वामी आप ऊदल जैसे भाई को कैसे मार सकते हो? इंदल जैसा बेटा तो और मिलेगा, पर ऊदल जैसा भाई दूसरा नहीं मिलेगा। ऊदल के मरने की खबर पा कर सभी दुश्मन महोबा पर चढ़ाई करने के सपने देखने लगेंगे।

आल्हा ...ऊदल की दम पर राज नहीं करता हूं; मेरी भुजाओं में भी ताकत है। ये संपूर्ण भारत की सेना मिलकर भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। आल्हा ने सैनिक को हुकम दिया... जल्लादों को पेश करो।

आल्हा ने कहा.... जल्लादो, इसे ले जाकर जान से मार दो। इसके नैन और कलेजा निकाल कर हमारी नजर करो।

ऊदल सोच रहा...ढेबा ने बताया था कि मेरे ऊपर शनि की साढ़े साती, शनी और मंगल दोनों की युति मारकेश बना रही है। कुछ भी हो सकता है। सावधान रहना, पर अब अपनों से क्या सावधान रहें? बड़ा भाई बाप के बराबर होता है। मैं इनसे लड़ भी नहीं सकता हूं और भाई के मारने का कलंकी बनते भी नहीं देख सकता हूं। अब तो माता भवानी का ही भरोसा है।

सुनवां ने जल्लादों से कहा...देखो, आज ऊदल को मरवा दे रहे हैं कल वो ऊदल को मांगेगे, देवर ऊदल तो अपने भाई की आज्ञा पर हंसते-हंसते जान दे देंगे। ये मेरा हुकुम है कि ऊदल छोड़कर तुम हिरना मारकर नैन और कलेजा महाराज को दिखा देना।

रानी फुलवा ने भी जल्लादों को गहने देकर कहा....यह मेरा हुकुम है कि कुंवर ऊदल को छोड़ देना और कहना युवराज को साथ लेकर ही आयें। हमें आपकी बात का विश्वास है। ये तलवार आपके लिए दी है और ऊदल की तलवार दे दी।

जंगल में ऊदल ने कहा... अपनी कटारी दो, हम अपने ही हाथों से कलेजा निकाल कर देते हैं। हाथ जोड़कर जल्लाद बोला....महाराज, आपकी भाभी मां और फुलवा जी का हुकुम है कि आपको छोड़ दें। आप कुंवर को खोजकर ही वापस आयें।

ऊदल ने मोहन माला उतार कर दी और चला गया। जल्लाद ने हिरन का कलेजा और आंखें महाराज को दिखा दीं। दसपुरवा से यह खबर महोबा पहुंचीं। राजा रानी मूर्छा खाकर गिर पड़े। होश में आने पर वह दोनों रथ लेकर दशपुरवा पहुंचे। महाराज ने गुस्सा कर कहा....पुत्र आल्हादेव, हम ये क्या सुन रहे हैं? तुमने ऊदल को मृत्यु दंड दिया। अरे, वो आपका भाई था। आपका बेटा था; हमारे महल की, हम सबकी शान था। बज्र की छाती थी ऊदल की जो दिल्ली लेकर गया था बरात, नैनागढ़ में तुम्हारा ब्याह ऊदल के कारण ही हुआ था ये भूल गए, हर मुसीबत से ऊदल लड़ा है और आपको गरम हवा नहीं लगने दी। अरे तुमने मेरे ऊदल को पहचाना ही नहीं। आपके कहने पर वो स्वयं अपना कलेजा निकालकर चरणों में रख देता। उसने केवल आपकी आज्ञा मानकर अपनी जान दे दी होगी वरना उसे मिलकर सौ शूर भी नहीं मार सकते; तो इन जल्लादों की क्या मजाल?

मल्हना रानी विलाप कर बोली.....अरे मुझे मेरा ऊदल वापस चाहिए, मैं उसके बिना नहीं जी सकती। आल्हा तूने किसी का न सोचा, न काहू से पूछा, अपने मन की कर डाली। अरे तुम कहते हो मेरा बेटा मर गया, पर उदल भी तो आपका बेटा था। एक बेटे की तरह वह आपका खयाल रखता था। वो तो आपको अपना पिता मानता था, पर आप उसे अपना बेटा न बना सके, धिक्कार है तुझ पर। अरे बेटे के मोह मे तू अंधा होकर ये सब

कुछ भूल गया। राजा होकर भी न्याय न कर सका। इतिहास आपकी इस गलती को कभी माफ नहीं करेगा। आज के बाद मैं भी आपका चेहरा नहीं देखूंगी, चलो महाराज, हम अब यहां नहीं रुकेंगे।

यह सुन समझकर आल्हा की आंखों से मोह का अरवरण हटा, होश आया कि ये मैंने क्या कर दिया? ऊदल जैसे भाई को अपने हाथों मरवा दिया। ये संसार मुझ पर हंसेगा, मैं ऊदल को कहां पाऊंगा। ये सच है कि इंदल जैसा बेटा, तो पाया जा सकता है, पर ऊदल जैसा दूसरा नहीं हो सकता। अरे मैने यह क्या कर दिया? पुत्र मोह में इतना अंधा कैसे हो गया? ऊदल भी तो मेरा बेटा था। हाय! विधाता मैंने यह क्या किया? आल्हा आत्मग्लानि में व्यथित हो, कमरा बंदकर ऊदल का शोक मनाने लगे।

उधर महलों में पहुंच राजकुमारी रात होते ही सोलह सिंगार कर, वरमाला रखकर बैठ गई। अर्धरात्रि होते ही उसने इंदल को पिंजरे से बाहर निकाला, मंत्र पढ़ा और उस पर भस्मी फूंककर असली रूप में लाकर कहा...स्वामी मैं अपनी गल्ती के लिए माफी चाहती हूं, पर क्या करूं जब मैंने आपको जीजा धांधू की बारात में देखा था, तभी आपको वरण कर लिया था। वहां पर मैंने आपसे बात करने की बहुत कोशिश की थी, पर आपने मौका ही नहीं दिया था। आपसे मिलने का, अपना प्रेम संदेश पहुंचाने का कोई रास्ता भी नहीं था। इस कारण मुझे आपका हरण करना पड़ा। अब आप ही बताइए क्या प्रेम करना पाप है?

इंदल....राजकुमारी जी, आपका रास्ता बहुत गलत है। आपने जादू का सहारा लेकर हमें चोरों की तरह लाकर, हमारे जैसे वीर का अपमान किया है। आप एक क्षत्राणी की तरह अपना प्रेम संदेश भिजातीं तो हमें प्रसन्नता होती।

राजकुमारी घबराकर बोली...हमें कोई राह नहीं दिखी तो हमने यह कदम उठाया, आप हमें माफ कर गंधर्व विवाह कर लीजिए।

इंदल ने कहा... पहली बात हम वीर हैं, क्षत्रिय हैं। विवाह जैसा पवित्र कार्य चोरी से नहीं करते है, दूसरी बात आपने जो किया हम उसके लिए आपको माफ भी नहीं कर सकते। इसलिए हम ये विवाह नहीं करेंगे।

राजकुमारी ने कहा...हम मानते हैं कि हमसे गल्ती हो गई, पर हमें क्षमा कर, हमारे प्रणय निवेदन को स्वीकार कीजिए। राजकुमार का धर्म है कि प्रणय निवेदन को न ठुकराये। यह क्षत्रिय धर्म के विरुद्ध है। अगर आप हमसे विवाह नहीं करेंगे, तो हम आपनी जान दे देंगे, यह कहकर उसने कटारी को गले पर रख ली। इंदल ने उसकी कटारी लेकर कहा....राजकुमारी आप केवल दिल से सोच रही हैं जबकि हमें इस समय दिमाग से काम लेना चाहिए। चलो मान लिया कि हम आपके प्रणय निवेदन को स्वीकार करते हैं, तो भी हम आपसे विवाह नहीं कर सकते हैं। हम बनाफर कुमारों ने आज तक किसी कन्या का हरण या चीर हरण कभी नहीं किया है। हम अपने परिवार वालों के साथ बारात ले कर आयेंगे और तलवारों के साये में आपको ब्याह कर ले जायेंगे।

राजकुमारी-आप तो हमारे पास हैं फिर घर वाले बारात कैसे लायेंगे, तो इंदल हंसकर बोला...हमारे घर वाले हमें ढूंढ ही लेंगे।

राजकुमारी ने कहा... देखिए राजकुमार हमें नहीं लगता कि आपके घर वाले आपको खोज सकेंगे क्योंकि बुखाराकोट के जादू से पार पाना आसान नहीं है। किसी को भनक भी नहीं लगेगी कि आप कहां पर हैं? दूसरी बात हम आपको तब तक नहीं छोड़ेंगे, जब

तक कि आप के घर वाले पता नहीं लगा लेते। इसलिए आप यहां से जाने का सपना मत देखिये। राजकुमार इंदल सोच रहे हैं कि सच ही कहा है कि स्त्रीहठ अपनी बात मनवा कर ही रहती है। सो वह बोला हमें आपकी शर्त मंजूर है, पर जैसे ही हमारे घरवाले हमारा पता लगाकर आयें तुम उसी समय हमें यहां से जाने दोगी, तो राजकुमारी बोली ... हां, आपकी शर्त मंजूर है।

ऊदल सोच रहा है कि अब वह कहां से अपना सफर शुरू करे। अगर वह मलखान के पास जाता है, तो हो सकता उसको भी आल्हा दादा का कोप भाजन बनना पड़े, इसलिए वह किसी के पास नहीं जायेगा। अपनी मंजिल खुद तलाश करेगा। वह जानता है कि ग्रहों के प्रकोप से कोई भी नहीं बचा। बड़े बड़े राजाओं को भी ये समय देखना पड़ा। वह जंगलों से होता हुआ कजली वन की ओर चला जा रहा है। बहुत समय की राह तय करके वह गुरुदेव की गुफा में पहुंचता है। वहां पर गुरुदेव समाधि में बैठे हुए हैं। वह वहां रहकर गुरु की सेवा करता है। गुफा की साफ सफाई, वन से लकड़ी काटकर लाना, धूनी प्रज्वलित करना, पास ही देवी की प्रतिमा है, उनकी मन लगाकर अर्चना करता है। इस प्रकार दो माह का समय साधना कार्य में ही निकल जाता है।

आज उसने उससे अग्नि जलाई और उसमें कुछ सुगन्धित औषधियां भी डाल दी हैं। उनकी खुशबू चारों ओर फैल रही है। अचानक गुरुदेव आंखे खोलते हैं। उनको जागा देख ऊदल उनके चरणों में दंडवत कर गिर पड़ता है। उसे उठाकर गुरु ने कहा- वत्स ऊदल उठो, अब तुम्हारा बुरा समय समाप्त हो गया है। तुमने ऐसे समय वन में निवास करके एक साधक का जीवन व्यतीत किया है। मां आदिशक्ति की उपासना करके तुमने उनकी परम कृपा प्राप्त कर ली है। जिससे तुम्हारा विपत्ति का समय निकल गया।

ऊदल उठकर प्रणाम कर बोला...गुरुदेव मुझे अपनी चिंता नहीं है। युवराज इंदल का हरण हो गया है। उसी के लिए चिंतित हूं।

गुरुदेव ने अपनी आंखें बंदकर ध्यान लगाकर कहा...बुखारा की राजकुमारी चित्रलेखा ने तोता बनाकर उसे कैद में रखा है।

ऊदल ने हाथ जोड़ कर पूछा -गुरुदेव बुखारागढ़ के जादू की तो बड़ी मार है, कैसे पार पायेंगे?

गुरुदेव- ये लो बीन मुंदरिया, ज्ञानगुदरिया और जादू की गोली। एक मुंह में रखने पर किसी जादू का असर नहीं होगा। इसके बाद उड़न खड़ाऊं देकर कहा- ऊदल, इनको पहन लो। ये तुमको जंगल से बाहर पहुंचा देंगी और उतारने पर वापस आ जायेंगी।

जी गुरुदेव, उदल ने वह खड़ाऊं माथे से लगाने के बाद पहन ली और विचार आया कि मकरंद से महोबा के हाल पूछेगा फिर इंदल को खोजेगा। बस पलक छपकते ही वह नरवरगढ़ बाग में था। उसने श्रद्धा पूर्वक खड़ाऊं को उतारा और वह उड़ गईं।

हिरिया ने महलों में खबर दी, रानी ने कुंवर मकरंद को ऊदल की आगवानी करने भेजा और दामाद की बहुत आवभगत की। ऊदल ने जो भी हुआ बताकर कहा-अब हम इंदल को खोजने जा रहे हैं, सोचा आप सबसे मिलके महोबा के हाल जान लें।

रानी मां ने कहा...मकरंद, तुम कुंवर जी के साथ जाओ। बलखबुखारे का जादू जग प्रसिद्ध है। परदेश में एक से भले दो होते हैं। और हम तो ये भी कहेंगे कि झुन्नागढ़ से होकर जाना और अपने साले कांतामल को भी साथ लेते जाना।

ऊदल मकरंद एक दिन झुन्नागढ़ रुककर अपने साले कांतामल को भी साथ ले लेते हैं। अब वह बलखबुखारा की ओर घोड़ों पर चले जा रहे हैं। नगर समीप आने पर घोड़े

जंगल में छोड़ दिए और तीनों ने जोगी का रूप बना झोली टांगकर चल दिए।
फाटक पर अलख जगाया और दरबान से कहा...हम बंगाल से आये हैं हिंगलाज को जा रहे हैं। आज इस नगर में भ्रमण करेंगे, कल चले जायेंगे। दरबान जोगियों को देखता रह गया। उसने ऐसे रूपवान जोगी कभी नहीं देखे थे। उसने द्वार खोल कर तीनों को प्रवेश कराया। आशीर्वाद लिया। वे तीनों नगर चौक में आसन लगाकर बैठ गए। मकरंद खंजड़ी बजा रहे हैं, कांतामल एकतारा और ऊदल ने गुरुदेव की दी हुई बीन मुदरिया बजाई, तो उसकी मोहनी से नगर के सभी नर नारी मोह गए; उस आवाज के जादू में बंधे सभी अपना-अपना काम छोड़कर उसकी धुन पर झूमते रहे। पनहारी पानी भरना भूलकर कुंए में ही घड़ा लटकाकर रह गई, कोई सिर पर घड़ा रखे खड़ी है, तो कोई अपना बच्चा छोड़ दूसरे का बच्चा लिए खड़ी है। यही हाल आदमियों का था।
ऊदल ने बीन बंद की, तो संगीत की प्रंशसा करते हुए सभी काम में लग गए। उधर महलों में दासियां देर से पहुंचीं, दासियों ने बताया कि महारानी जी, नगर में ऐसे जोगी आये हैं कि उनकी बीन की धुन पर सारा नगर झूम रहा है। उनकी सुन्दरता ऐसी है मानो साक्षात् कामदेव जमीन पर आ गए हों। रानी ने आदेश दिया कि उन जोगियों को महल में बुलाया जाये। जोगियों को देखकर रानी ने कहा-जोगी बाबा ये नाहीं हैं ये किसी देश के राजकुमार। गज-गज भर की छाती इनकी और नैनन में बरे मशाल।।
ऊदल बोला... बाप हमारे बारे मर गये देश हमारे सूखा पर गए। रुप विधाता हमको दीन्हें माता बेचो जोगियन हाथ।।
ऊदल ने फिर कहा...महारानी जी, तकदीर के खेल निराले होते हैं। हमने तो अब जोगी बाना लेकर शपथ ले ली है। आपकी आज्ञा हो तो हम आपको कुछ करतब दिखायें। कुछ सोच कर महारानी ने कहा....हां दिखाओ, पर मेरी बेटी को आ जाने दो। रानी ने एक बांदी से कहा जाकर चित्रलेखा को साथ में ले आ। ऊदल ने अपनी बीन बजाई और कुछ ही समय में ऐसी मोहनी फैली कि सभी को अपना होश न रहा। जब बीन बंद की तो सभी ने अपने-अपने गले से हार, माला आदि निकाल कर दिए।
ऊदल ने कहा...महारनी जी, हमें माया का क्या काम? हम तो जोगी ठहरे, इसे कहां सँभालेंगे। आप तो किसी क्वांरी कन्या के हाथ से भोजन करवा दीजिए। बस यही इच्छा है। चित्रलेखा अभी तक जोगियों को एकटक देखे जा रही थी।
उसने कहा ...माताजी, हम इन जोगियों को भोजन करवाते हैं। उन तीनों को आदर सहित उसने भोजन परोसा।
ऊदल ने कहा...राजकुमारी जी, आपके हाथों से भोजन कर आनंद आ गया। ऐसा आनंद हफ्ता भर पहले महोबा की रानी सुनवां के हाथ से बने भोजन में भी आया था, कुंवर इंदल ने भी हमको भोजन परोस कर खिलाया था।
चित्रलेखा ने क्रोधित होकर कहा...अरे बाबा, जोगी होकर क्यों झूठ बोलते हो? तुमको कुंवर इंदल भोजन कैसे करा सकते हैं?
ऊदल ने कहा...राजकुमारी जी, कुंवर इंदल बहुत ही धरम करम वाले हैं। वह हमेशा साधू संतों की सेवा करते हैं। हम जोगी हैं हम झूठ क्यों बोलेंगे? वह क्रोधित होकर बोली- अरे साधू, तू सरासर झूठ बोल रहा है। इस बात का मैं प्रमाण दे सकती हूं।
ऊदल ने कहा...हम झूठे प्रमाणों पर विश्वास नहीं करते, हम अपनी आंखों देखी पर भरोसा करते हैं।
राजकुमारी ने क्रोध में आकर कहा ....आप मेरे साथ आइए, हम आपकी आंखों देखी पर

ही विश्वास करा सकते हैं।
ऊदल ने कहा ... चलिए हम तैयार हैं। यह कहकर ऊदल राजकुमारी के पीछे-पीछे चल दिया। महल में जाकर राजकुमारी ने सामने रखे सोने के पिंजरे में बंद तोता को दिखाकर कहा.....कुंवर इंदल तो ये हैं। हमने इनका गंगा दशहरा की परवी पर तोता बनाकर हरण कर लिया था। ये तभी से हमारे पास हैं। फिर ये आपको खाना कैसे खिला सकते हैं?
ऊदल ने कहा....राजकुमारी जी, आप हमें बालक समझकर बहला रही हैं। ये तोता इंदल नहीं हो सकता। अपनी बात सिद्ध करने के लिए झूठी गवाही मत बनाइए। अब राजकुमारी ने तिलमिलाकर कहा...मैं आपको अभी इंदल से मिलवाती हूं। राजकुमारी ने तोता बाहर निकाला और पुड़िया से कुछ भस्मी लेकर मंत्र पढ़कर तोता पर फूंका, पलक झपकते ही तोता इंदल के रूप में आ गया।
राजकुमारी ने कहा... देखिए जोगी जी, ये महोबा के युवराज कुंवर इंदल ही हैं, यह सुनकर इंदल ने कहा....राजकुमारी जी, जोगी के धोखे न रहना, ये हमारे काका कुंवर उदयसिंह सामने खड़े हैं। ऊदल ने उसे सीने से लगाकर पूछा... कुंवर, तुम ठीक तो हो?
इंदल ने कहा....अरे काका श्री, का ठीक हैं, ये दिन भर तोता बनाकर रखती हैं और रोज रात को ब्याह करने को कहती हैं। हम इसकी एक ही बात रोज-रोज सुनकर ऊब गए हैं। हम इनसे गंगा तुलसी कर चुके हैं। इनसे ब्याह करने का वचन दे चुके हैं। अच्छा हुआ आप आ गए अब हम यहां से जा सकेंगे। राजकुमारी ने सिर ढंककर उदल के चरण छू कर कहा...हां काका श्री, हम चाहते हैं कि आपकी साक्षी में हम गंधर्व विवाह कर लें। फिर आप हमारा डोला हमारे पिता से मांगकर कर ले जा सकते हैं।
ऊदल ने कहा.... नहीं राजकुमारी जी, हम चोरी-चोरी ब्याह नहीं करेंगे। जिस दिन हमारे महोबा के लाड़ले युवराज कुंवर इंदल का ब्याह होगा, उस दिन सात रोज तक अंधाधुंध तलवार चलेगी। रक्त की नदियां बहेंगी। नए नए इतिहास बनेंगें।
राजकुमारी ने गर्व से कहा....काका जी, मांडों के धोखे में न रहना, जहां बाप का दांव ले लिया यह राजा अभिनंदन की राजधानी है, जहां पग-पग जादू की मार है। हम सात वीर भाइयों की इकलौती बहन हैं। मेरे पिता से लड़ाई में नहीं जीत सकते।
यह सुनकर ऊदल के बदन में आग लग गई। उसकी आंखों से शोले निकलने लगे, उसने मुट्ठी भींच कर कहा...राजकुमारी जी, सकल जहान में ऊदल के बेंदुला की टाप बाजी है। हमने किसी का गर्व नहीं रखा है। हम बारात लेकर आयेंगे और आपके पिता सहित सातों भाइयों को बांधकर सातों भांवर डालकर आपको लेकर जायेंगे। यह वीर बनाफर कुंवर उदयसिंह का वचन है।
राजकुमारी ने कहा... काका श्री, हम जानते हैं, आप वचन के पक्के हो फिर भी मेरी तसल्ली के लिए आप गंगा उठा लीजिए।
ऊदल ने शपथ ले कर कहा...हम एक मास के भीतर ही आपको इंदल से ब्याह कर ले जायेंगें। अब बहुत समय हो गया है हमें यहां से चलना चाहिए। आप हमारे कुंवर को हमारे साथ भेज दीजिए। राजकुमारी ने इंदल को तोता बनाकर ऊदल को देकर कहा... आप जल्दी से जल्दी नगर के बाहर निकल जाइये। डेढ़ घड़ी बाद कुंवर अपने असली रूप में आ जायेंगे।
अब ऊदल ने तोता को अपनी झोली में रख लिया और महल से बाहर आ गए, जंगल में जाकर पेड़ से अपने वस्त्र निकाले पहने, तब तक इंदल अपने असली रुप में आ गए।

कांतामल और मकरंद अपने-अपने घर चले गए और ऊदल इंदल को साथ लेकर महोबा को चल पड़े। रास्ते में ऊदल ने इंदल को जो कुछ भी हुआ सब बताकर कहा...अब हम सिरसा चलेंगे। जैसे ही मलखान को खबर मिली वह उठकर द्वार पर आकर ऊदल से मिले, ऊदल ने चरण छुए तो मलखान ने उसे छाती से लगाकर कहा... ऊदल, तू मुझे बिना बताये कहां चला गया था? तूने यह भी नहीं सोचा कि तेरे बिना मैं कैसे जियूंगा।
ऊदल ने कहा-दादा, मैं क्या करता? आल्हा दादा ने तो मुझे जान से मारने का आदेश दे दिया था। मैं भाई की आज्ञा कैसे टाल सकता था। सो उधर भाभी मां ने जल्लादों से संदेश भेजकर आज्ञा दी थी कि मैं इंदल को खोजकर लाऊं।
मलखान ने कहा... मैं जानता था मेरा भाई जीवित है। उसे कोई नहीं मार सकता। मैं हर दिन तुम्हारी बाट देखता था।
ऊदल.....दादा, मैं इंदल को ले आया। आप इसे महोबा ले जायें और आल्हा दादा का दुख दूर करें। मैं महोबा कभी नहीं जाऊंगा, जो हुआ उसे नहीं भूल सकता। जहां विश्वास न हो वहां रहना ठीक नहीं। दादा ने माहिल का भरोसा किया मेरा नहीं।
इंदल ने कहा... काका श्री, मैं आपको छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा, अगर आप सिरसा में रहते हो तो हम भी यहीं पर रहेंगे।
उदल ने उसे समझाकर कहा.....कुंवर जब आपकी बारात यहां से जायेगी तब हम उसमें शामिल हो जायेंगे। अभी आपका जाना बहुत जरूरी है। महोबा में सब ओर दुख छाया है। भाभी मां और दादा दुखी हैं। ऊदल ने दो पाती लिखकर इंदल को देकर कहा.. एक भाभी मां को देना और दूसरी फुलवा को। इसके अलावा किसी से मत बताना कि ऊदल जीवित हैं। ऊदल को सिरसा में छोड़कर मलखान और इंदल महोबा पहुंचते हैं। इंदल को सामने खड़ा करके, मलखान ने प्रणाम किया। उनको देख कर राजा परमाल ने उठकर इंदल को गले लगा लिया और पूछा ...मलखान तुमने इंदल को कहां पाया?
मलखान ने बताया कि इंदल का किस प्रकार हरण हुआ और हम उसे छुड़ा कर लाये है, यह सब बाद में बतायेंगे। रानी उदास हो बोली....मेरा उदल बिना मौत के भाई की आज्ञा से मारा गया। ऊदल की याद आते ही राजा ने कहा...मलखान जाकर आल्हा से कहो कि वे अपना इंदल ले लें और हमारा ऊदल वापस दे दें। अगर वह ऐसा नहीं करते, तो दसपुरवा में आग लगवा दो।
दसपुरवा पहुंचकर इंदल ने कहा....काका श्री, हम मां और काकी श्री को यह पाती देकर आते हैं। फुलवा रानी उसे देखकर खुश होकर बोली.... कुंवर इंदल तुम आ गए, देवी मां की लाख-लाख कृपा है। बताओ आपके काका श्री कहां हैं? वो कैसे हैं?
इंदल... वह ठीक हैं, यह पाती भेजी है। अब वह अपनी मां के महल में पहुंचा और मां के चरण स्पर्श किए, पर सुनवां ने उसे देखकर भी उससे कोई बात नहीं की, तो इंदल ने पूछा... मां हमसे कौन सा अपराध हो गया कि आप बात नहीं कर रही?
सुनवां ने कहा... मैं यह जानती थी कि तुम एक न एक दिन वापस आआंगे, पर तुम्हारे जाने के कारण मेरा बड़ा बेटा बिना अपराध के सजा पा गया। इंदल ने मां से लिपट कर कहा... मां ये पाती ऊदल काका ने दी है। सुनवां ऊदल का नाम सुनकर खुश हो पाती खोल कर पढ़ती है। तब तक रानी फुलवा भी वहां पर आ जाती हैं। दोनों ही ऊदल की सलामती की खबर पा कर खुश हो कर गले मिलती हैं। कुछ देर बाद इंदल ने कहा..... हम दरबार में जा रहे हैं।
अब मलखान इंदल को साथ ले दरबार में गया, उसके हाथ में नंगी तलवार है। आल्हा

उन दोनों को हतप्रभ सा देख रहे हैं। उनके चेहरे पर ग्लानि के भाव साफ दिख रहे हैं। मलखान ने कहा.. राजा परमाल का हुक्म है कि आल्हा महाराज अपना बेटा इंदल लेकर उनका बेटा कुंवर ऊदल वापस दे दें, अगर आप ऐसा नहीं कर सकते, तो दसपुरवा के महलों में आग लगवा दी जाये।
आल्हा ने कहा.. ऊदल के जाने का मुझे भी दुख है, पता नहीं विधाता की क्या लीला थी कि मैं ऐसा कर बैठा, हमें जीने का हक नहीं। उन्होंने तलवार से गर्दन पर वार किया, पर मलखान ने रोका और तलवार छुड़ाकर कहा....दादा, यूं जान देने से बिगड़ी बात नहीं बनती है। यह अपयश लेकर जीवन भर जीना पड़ेगा। बलखबुखारे के राजा अभिनंदन की बेटी चित्रलेखा इंदल का हरण कर ले गई थी। मुझे देवी मां ने सपना दिया था, तो उनकी ही कृपा से हम जोगी बनकर इंदल को राजकुमारी से वापस लाये हैं।
आल्हा ने कहा... मलखान, सच बताओ ऊदल कहां है? मेरा दिल कहता है ऊदल जीवित है और अपने दादा को याद करता है। उसकी आवाज मेरे कानों में सुनाई देती है। कुंवर इंदल को वापस लाने का कठिन कार्य ऊदल ही कर सकता है। मेरे भाई बताओ ऊदल कहां हैं? मैं उसे मनाकर लाऊंगा। मैं हर दिन देवि से उसकी सलामती मनाता हूं, वापस आने की रोजबाट जोहता हूं।
मलखान ने कहा ... वहां पर राजकुमारी ने हमसे गंगा तुलसी करवा ली है। कुंवर इंदल ने भी वचन दिया है, अब आप सब कुछ भूलकर ब्याहे की तैयारी करो। अब ऊदल तो है नहीं, सब कुछ आपको ही करना है। उसके बाद मलखान चले गए।
कुंवर इंदल के आने पर भी खुशी नहीं है। आल्हा को ऊदल के जाने का दुख अंदर से खाये जा रहा है। रानी सुनवां ने कहा....महाराज आप अब इंदल के ब्याह की तैयारी कीजिए। हमारे बच्चों ने राजकुमारी को वचन दिया है, हमें उसे पूरा करना है।
आल्हा ने कहा...महारानी हमारा मन किसी भी तरह से इस ब्याह को राजी नहीं है। जिस कन्या की गलती से हमें अपने भाई को खोना पड़ा, हम उसको बहू बनाकर कैसे ला सकते हैं? दूसरी बात अभी हम भूले नहीं हैं कि धांधू के ब्याहे में राजा पृथ्वीराज जैसे भी हारकर गए थे। आज मेरा मझला भाई भी नहीं है। मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता, बस किसी तरह जी रहा हूं क्योंकि लोगों की नजरों में, मैं अपने ही भाई का हत्यारा हूं। महारानी मैं नहीं जानता कि विधाता की क्या मर्जी थी, वरना सभी जानते हैं कि मैं बचपन से ऊदल की कितनी गल्तियां अनदेखी करता आया हूं। मैं यह भी जानता हूं कि ऊदल जीवित है, बस वह मुझसे रूठा है। क्रोध शांत होते ही वह वापस आ जायेगा। तभी हम ये विवाह करेंगे। ऊदल के बिना हम कोई खुशी नहीं मनायेंगे।
सुनवां आल्हा का यह पश्चाताप देखकर दुखी हो गई, पर उसने समझाकर कहा... महाराज, ज्ञानीजन गए हुए का शोक नहीं करते, जो हो चुका उसे बदला नहीं जा सकता और अकर्मण्य बनकर भी नहीं जिया जा सकता। आप एक राजा हैं, आपको राजधर्म निभाना होगा। आपको दोनों कुंवर के वचन की खातिर बारात लेकर जाना ही होगा यही हमारी परंपरा है। आज अगर कुंवर उदल होते तो वह भी यही करते। आपको रण में अगर भाई की कमी खल रही हो तो मैं सैनिक वेश में आपके साथ चल सकती हूं।
यह सुनकर आल्हा तिलमिला कर बोले... रानी मैं लड़ने-मरने से नहीं डरता हूं। सारे बावनगढ़ के राजाओं से अकेला निपट सकता हूं। बस अभी कोई खुशी मनाने का मन नहीं है, तभी रानी ने कहा... क्षत्रियों का धर्म अपने वचनों को पूरा करना हैं, अब चाहे खुश हो करो या दुखी हो। आप मेरी बात मानिये और सबसे पहिले राजा और महारानी

से अपनी गल्ती की क्षमा मांगकर कुंवर इंदल का ब्याह करने की आज्ञा लीजिए, उसके बाद सभी राजाओं को ब्याहे का न्योता भेजिये और तैयारी कराइए।

आल्हा... हां, हम महोबा जायेंगे। अगर बड़ी मां मुझे माफ करती हैं और अनुमति देती हैं, तो फिर हम कुछ करेंगे। महोबा पहुंचकर दोनों ने रानी को प्रणाम किया। रानी उठकर चली जातीं हैं। सुनवां पीछे से उनको ऊदल के जीवित होने की बात बताती हैं। साथ ही यह भी कहती है कि वे इसे गुप्त रखें। वह दिखावा करती हुई उसे माफ कर ब्याह की मंजूरी देती हैं।

अब महाराज आल्हा ने सभी राजाओं को पत्र लिख कर आमंत्रित किया और महलों में भी मंगलाचार होने लगे।

22-इंदल का ब्याह

महोबा में चारों ओर कुंवर इंदल के विवाह की तैयारी हो रही है। रानी मल्हना आज बहुत खुश हैं कि उनके पोते का ब्याह है, नतबहू आने वाली है। वह भाग-भाग सभी नेग कर रही हैं। इंदल को दूल्हा बनाया गया है। आज उनकी सुन्दरता देखते ही बन रही है, सभी मातायें बार-बार उनकी बलैयां ले रही हैं। मलखान भी अपनी सेना लेकर आ गये है। इंदल को पालकी पर बिठा कर माता चंडिका और मनिया देव के पूजन को ले गए। ढोल बजाकर माता जी को बड़ी-बड़ी ध्वजा चढ़ाई जा रही हैं। पूजन के बाद बारात रवाना होती है। ऊदल के कहे अनुसार उनका साला मकरंदी अपनी विशाल सेना लेकर मौरंगगढ से शामिल हो गया। इसी सेना में अपना वेश बदलकर ऊदल मकरंद के तंबू में है। तीन कोस की दूरी पर सभी आराम फरमा रहे हैं।
दरबार लगा। सभी की सहमति से आल्हा ने पत्र लिखा...राजा अभिनंदन को महोबा के राजा आल्हा देव की रामजुहार! आपकी राजकुमारी चित्रलेखा ने हमारे युवराज कुंवर इंदलदेव का हरण कर लिया था और उसे अपना पति मानकर वरण कर लिया है। उनके आमंत्रण पर हम बारात लेकर आये हैं और ऐपनबारी भेज रहे हैं। आप राजकुमारी जी की भांवर की तैयारी कीजिए।
राजा अभिनंदन का दरबार में ऐपनबारी लेकर बारी आल्हा का पत्र देता है। राजा क्रोधित होकर बोले इसका सिर काट लो! पर वह महोबा का बारी था। इतनी आसानी से हाथ कैसे आता, सो अपनी तलवार का जौहर दिखाता हुआ वहां से बच निकला।
अल्हन, हंसनंदन, ब्रजनंदन, हरिनंदन, सुखनंदन, मोहननंदन और भुजनंदन सात बेटे थे। राजा को अपने सात बेटों पर बड़ा गर्व था। उसने कहा... तुम सातों भाई जाकर महोबा वालों को बता दो कि बुखाराकोट अनाथ नहीं है कि कोई भी आकर उनकी राजकुमारी का डोला मांगने लगे। तुम रातोंरात बारात लुटवा लो। उनको सम्हलने का भी मौका नहीं मिलना चाहिए।
अल्हनंदन आधी रात को सोये हुए सैनिकों पर धावा बोलता है। उधर पहरे पर खड़े महोबा के सैनिकों ने जैसे ही देखा कि बुखारागढ़ से सेना आ रही है, तो उन्होने सतर्क बिगुल बजाया। महोबा सेना आनन-फानन में उठकर हथियार सँभाल कर तैयार है। अब लड़ते-लड़ते भोर हो जाती है पर कोई पीछे हटने का नाम नहीं ले रहा है। मकरंद का खेमा काफी पीछे लगा है। उन्होंने इस लड़ाई में भाग नहीं लिया है। वह कल लड़ेंगे।
हंसनंदन ने मलखान से कहा... महोबा वालों की मौत उनको यहां खींच लाई है।
मलखान ने कहा...अभी पता चलेगा मौत किसकी आई है? तुम्हारी बहन ने हमें बुलाया है, बिना ब्याहे तो हम जायेंगे नहीं।
हंसनंदन ने कहा ...दिल्ली वालों के धोखे में ना रहियो। चौहान ने ब्रह्मा के ब्याहे में बिना लड़ाई के ब्याह कर दिया तो महोबा वालों के मन बढ़ गए हैं, पर हम ऐसे नहीं हैं। हम सबका सिर काटकर उनकी समाधि यहीं बनायेंगे।
मलखान ने कहा... काहे दिन में सपना देख रहे हो; महोबा वालों का सिर काटने वाला पैदा ही नहीं हुआ है। यह कहकर उसने अपना वार कर दिया। हंसा उस वार को न सँभाल पाया और उसका घोड़ा घायल हो गया। उधर ब्रह्मा, ढेबा, जगनिक, सुलखे और सियानंद सहित सभी योद्धा लड़ रहे हैं। अचानक मलखान को सातों भाइयों ने घेर

लिया, बचाव का रास्ता नजर नहीं आ रहा है। मलखान ने सोचा ऊदल को बुलाया जाये, उसने ब्रह्मा से कहा..मकरंदी के लश्कर में खबर करो कि मलखान घिर गए हैं।
यह सुनकर ब्रह्मा अपना घोड़ा दौड़ाकर मकरंदी के खेमा में जाकर बोला... मलखान दादा को उन सातों भाइयों ने घेर लिया है।
यह सुन ऊदल-मकरंदी घोड़े लेकर दौड़ें, ब्रह्मा कुछ न समझा, नही वह वेश बदले ऊदल को पहचान पाया। ऊदल ने रण भूमि में आ ललकारा... अरे दुश्मन तेरा बुरा हो जाये, काहे अनीति से युद्ध करे हो। एक से सात भिड़े हो, अब देखो तुम सबका काल आ गया। वह उन पर तलवार लेकर टूट पड़ा। कुछ ही देर में ऊदल ने सारी सेना को खड़ी फसल की तरह काट डाला। हंसनंदन ने पीछे से ऊदल पर वार किया, पर घोड़ा बचा ले गया, तब ऊदल ने उस पर वार करके कहा... ये ले सामने से वार झेलो। हंसा उसको सँभाल न सका और घोड़े पर ही आधा लटक गया। मलखान ने मुश्कें बांधकर बंदी बनाया। ऊदल पर बिरजनंदन ने वार किया, पर ऊदल के वार से वह भी घोड़े से गिर पड़ा और बंदी बन गया। उसी समय युद्ध बंदी का नगाड़ा बजा।
दूसरे दिन राजा ने जादूगर विद्याधर को बुलवाया और हरिनंदन, सुखनंदन के साथ जाने को कहा.. दोनों सेनायें मैदान में हैं। ऊदल साधारण सैनिक के वेश में सेना में है। ऊदल ने मलखान इंदल और मकरंद को गुरुदेव की दी हुई गोलियां मुंह में रखने को दी हैं ताकि उन पर जादू का असर न हो। ऊदल और मलखान चुन-चुन कर उनके वीरों को मार रहे हैं। कुछ ही देर में महोबा वाले भारी पड़ने लगे, तो हरिनंदन ने विद्याधर से कहा... अब किस बात का इंतजार कर रहे हो? अपना जादू दिखाओ। आदेश पाते ही विद्याधर ने अपना जादू पढ़ना शुरू किया और कुछ ही देर में सेना को जड़ बना दिया। सैनिक वेश में ऊदल पर जादू का असर नहीं हुआ। किसी को उसका भेद पता न चले इसलिए ऊदल अपने खेमें में आ गया। अब समर में अकेला मलखान तलवार भांज रहा, वह दस पर भारी पड़ रहा शाम होते रणभूमि लाशों से पट गई। सभी सोच रहे हैं महोबा वाले सच में बड़े लड़ाका हैं।
सेना के पत्थर होने से सब उदास हैं। आल्हा ने कहा ....काश आज कुंवर ऊदल होते तो हमें ये दिन न देखना पड़ता
मलखान...इसीलिए कहा है कि बहुत सोच विचार कर कार्य करना चाहिए। जल्दबाजी में लिए निर्णय जीवन भर दुख देते हैं।
आल्हा...वो एक अनहोनी थी, सो हो गई, अब आगे क्या करना है बताओ? इस समस्या से हमें गुरुदेव ही बचा सकते हैं।
मलखान ने कहा... ठीक है, हम रात को ही अमर गुरू के पास जाते हैं; वही हमें इस समस्या से निजात दिला सकते हैं।
ऊदल ने मलखान से कहा...परेशानी की कोई बात नहीं, गुरुदेव ने पूरी तैयारी करके ही भेजा है। उसने अपने झोला में टंगा जल निकाला और रातभर में सारी सेना पर जल झिड़क दिया। ऊदल ने जैसे ही ताल्हन पर जल छिड़का, वह होश में आ गए और सामने ऊदल को सैनिक वेश में देखकर भी पहचान, सीने से लगाकर बोले...हमें विश्वास था कि मेरा शेर सही सलामत है और वह एक दिन वापस जरुर आयेगा; ऐसा ही भरोसा महोबा के लोगों को भी है। ठीक है बेटा अब मैं दुगने उत्साह से लड़ूंगा।
सबेरे मलखान ने आकर बताया, दादा गुरुदेव हमारी मदद करके चले गए हैं। आल्हा ने अफसोस के साथ कहा... क्या गुरुदेव ने हमें दर्शन देना भी उचित नहीं समझा। लगता है

वह भी नाराज हैं। इस ब्याह के बाद हम स्वयं ही उनसे मिलने जायेंगे।
मलखान ने कहा... दादा आज राजा अभिनंदन भी आ रहे हैं। आपको आज मैदान में उतरना चाहिए। आज तो आर-पार की लड़ाई होनी चाहिए। राजा के दो लड़का हमारे पास बंदी हैं। बाकी के पांचों लड़कों को आज बंदी बनाना है। अपने बेटों के साथ खड़े राजा ने सेना को सजीव देखा, तो वह आश्चर्य से बोले....लगता है, महोबा वालों के पास भी जादू की बहुत बड़ी ताकत है।
सुखनंदन और मोहन नंदन ने पास आ तेगा का वार कर दिया। मलखान इनसे लड़ने लगा।
दूसरी ओर महाराज आल्हादेव के सामने आकर राजा अभिनंदन ने कहा... आज यहां से आप जीवित नहीं लौट पायेंगे।
आल्हा ने कहा... हम एक बार जो सोच लेते हैं वह करके रहते हैं। आप अपनी ओर से वार करिये। दोनों के बीच युद्ध हो रहा है। आल्हा ने चार घड़ी तक राजा के साथ युद्ध किया। चारों ओर हाहाकार मचा। राजा के कहने पर विद्याधर पढ़-पढ़कर जादू मार रहा है, पर वह बे असर हो रहा है। क्योंकि ऊदल ने अमर गुरुगोरखनाथ के भेजे वीर छोड़ रखे हैं, जो उसे बे असर कर रहे हैं। वह जादूगर अग्नि बाण चलाता है, तो उदल उसको शांत करने वाला बाण चला देता है। जादूगर ने पक्षी बाण और आंधी बाण चलाया तो ऊदल ने उसे भी शांत कर दिया। अपना जादू बेअसर होते देख वह जादूगर अपनी झोली लेकर चला गया।
आल्हादेव यह देखकर हैरान हैं कि उनके आसपास जादू का असर क्यों नहीं हो रहा है। इसके अलावा एक कम उमर का नौजवान सैनिक भी उनको बार-बार अपनी ओर खींच रहा है। वह भी कुछ जादू कर रहा है। उसके पास जादूगर के जादू की काट है, पर वह है कौन? अभी वे अपना ध्यान केवल युद्ध पर लगाये हुए हैं, पर मन है कि उस ओर चला जाता है। उनकी इस लापरवाही का फायदा उठाकर राजा ने सांग चला दी। ऊदल ने अपनी ढाल अड़ाकर दूसरे हाथ से तलवार का वार राजा पर कर दिया। राजा उस वार को न सँभाल पाये और लड़खड़ा कर हौदा से नीचे आ गए। उनके नीचे आते ही जगनिक ने उन्हें बंदी बना लिया। उसी समय हरनंदन और मोहन ने आक्रमण कर दिया और ऊदल ने उन पर भी वार किया। दोनों की रकाबें कट गईं और वह घोड़ा पर ही लटककर बंदी बना लिए गए। अब तक अभिनंदन की सेना में भगदड़ मच गई और सब सेना तितर बितर हो गई।
आल्हा का मन बार बार कह रहा है...यह वीर कौन है, जिसकी ओर मेरा मन बरबस ही खिंचा जा रहा है। उनका हाथी ऊदल के सामने जाकर रुक गया। आल्हा के हाथ में नंगी तलवार है, जिसे देखकर मलखान ने समझा कि वह उसे दुश्मन का आदमी समझ कर वार तो नहीं कर रहे हैं। इसलिए वह अपना घोड़ा पास में ला घबराकर बोला...दादा ये दुश्मन नहीं अपना ऊदल है।
आल्हा हाथी से कूदकर बोले...ये ऊदल है तभी मेरा मन इसकी ओर खिंच रहा था। दोनो बाहें फैलाकर बोले...ऊदल मेरा भाई, मेरा बेटा, आ मेरे सीने से लग जा इस बिछोह की धधकती हुई आग को शांत करदे, ऊदल ने मुंह फेरकर कहा...कौन भाई? कैसा भाई? उसे तो आपने कबका मरवा डाला, यह तो ऊदल की लाश है जो वचनबद्ध होने के कारण अपना बोझ ढो रही है।
आल्हा ने कहा... अपने इस दादा को माफ कर दे। मेरे भाई जिस दिन से तुम गए हो

उसी दिन से मैं सोया नहीं हूं। ये तो कोई अनहोनी थी, जो ये सब हो गया, पर मेरा मन कहता था कि मेरा ऊदल वापस आयेगा। मैं उसी दिन समझ गया था कि इंदल को वापस लाने वाला ऊदल ही हो सकता है। अब अपने इस दादा को माफ कर दे। उसकी आंखों से आंसू बह निकले।
ऊदल जानता था कि यह सब ग्रहों का फेर था। पश्चाताप देखकर चरणों में गिरकर बोला...दादा, मैं भी आपके बिना कैसे रह सकता हूं। मुझे माफ कर दीजिए। आल्हा ने उसे अपनी छाती से लगाया। सभी की आंखों में खुशी के आंसू हैं। ऊदल सभी से मिलता है। सभी ने यही कहा कि हम सभी जानते थे कि ऊदल आस-पास ही है और एक दिन जरूर वापस आयेंगे।
दूसरे दिन राजा अभिनंदन को उनके बेटों सहित आदर पूर्वक दरबार में आसन पर बिठाकर आल्हा ने कहा... महाराज आप अपने को बंदी ना समझिये। हम राजकुमारी के आमंत्रण पर आये हैं। अब आपसे अनुरोध है कि आप बेटी की भांवर डालकर विदा करें।
राजा ने कहा....महाराज, हमें आपकी बात मंजूर है। हमने जान लिया कि कुंवर इंदल हर तरफ से हमारी बेटी के लायक हैं।
महोबा वाले बारात तैयार करके आ गए। राजा ने अपने बेटों के साथ अगवानी की और आल्हा से समधौरा भेंट की। उसके बाद सभी मंडप में भांवर के लिए गए। सोलह शृंगार करके जब राजकुमारी आई, तो सभी की आंखें खुली रह गईं। पंडित ने मंत्रोच्चार किया और रानी ने गठबंधन किया। उसके बाद वे सातों भांवर में सातों भाइयों ने रस्म की जिसे महोबा के वीरों ने रोका। इस प्रकार सातों भांवर पूरी हुईं। सब कुछ आराम से हो गया। विदाई में सभी साथ आये घरातियों को बहुत से उपहार दिये। बेटी के साथ भी बहुत सा सामान, हाथी, घोड़ा दान दिया। राजा रानी ने अपनी बेटी को गले लगा कर आंसू भरी आंखों से विदा किया। सभी बाराती खुश हो कर महोबा को चल दिये। आल्हा ने मकरंदी और कांतामल को ऊदल की सहायता करने के लिए धन्यवाद दिया।
राजा परमाल ने ऊदल आगमन की खुशी में नगर को फूलों से सजाने का आदेश दिया। सभी ओर खुशियां छा गईं।

23-आल्हा निकासी

समय सबका सदा एक सा नहीं रहता है। जीवन में उतार चढ़ाव न हों तो जीवन का आनंद ही कहां होता हैं। आल्हा ऊदल के साथ भी यही बात थी। उनका तो जन्म ही परेशानियों से लड़ने के लिए हुआ था। एक परेशानी हल होती थी, तो दूसरी द्वार पर दस्तक दे रही होती थी। उन्हें श्राप था कि उनका सारा जीवन लड़ते हुए बीतेगा। माहिल की तरह और भी कई राजा थे जो आल्हा उदल की ख्याति से जलते थे। इन सबके दिलों में आग लगाने का काम माहिल करता था। उसने अपने कुछ गुप्तचर इनके महलों में भी लगा रखे थे। इसके अलावा आज कल माहिल राजा परमाल का प्रिय बना हुआ है। उसने अपनी राजनीति से कुछ साधुओं को परमाल से मिलवाकर बाग में बने मठ में रहने को जगह दे दी। अब वह साधु धीरे-धीरे राजा का विश्वास पात्र बन गया। राजा उससे हर बात में सलाह लेने लगे। उसके परिवार को रहने के लिए कालिंजर के किले में जगह दी है। उसने किले में अपना ठाट-बाट जमा लिया था। माहिल और दूसरे राजा भी आकर वहीं रुकते, गुप्त मंत्रणा करते और चले जाते थे। सभी का एक ही मकसद था कि आल्हा ऊदल को मारना। माहिल की नजर कालिंजर के किले पर थी। वह उसे पाना चाहता था।

वह साधु आल्हा ऊदल के प्रति भी राजा के कान भरने लगे कि ऊदल का मकसद महोबा राज्य पाना है। पहले तो राजा ने इस बात का प्रतिवाद किया... हमने आल्हा से अलग राज्य बसाने को भी कहा, पर वह नहीं माना और भीष्म प्रतिज्ञा कर बैठा कि वह जीवन में कभी कोई अपना राज्य नहीं बनायेगा। यह बात पता चलने पर वह साधू ऊदल को मोहरा बनाकर चाल चलने लगे कि ऊदल के मन में खोट है। वह महोबा का राज्य चाहता है, उसने अन्य राजाओं से ऊदल के खिलाफ इस बात की गवाही भी दिला दी। अब राजा धीरे-धीरे उसकी बातों का विश्वास करने लगे। माहिल ने यह भी कहा कि वे ब्रह्मा को कभी भी रास्ते से हटा सकते हैं। इसीलिए ब्रह्मा और ऊदल की आपस में इतनी मित्रता है कि कोई शंका न कर सके। धीरे-धीरे राजा के मन में इनके प्रति जहर भरने लगा, वह ऊदल को अनदेखा करने लगे। वैसे भी ये दशपुरवा में रहते थे, पर ऊदल इंदल आते रहते थे। राजा के रुखे व्यवहार के कारण वह भी कम आने लगे थे। एक दो साल के समय में माहिल ने परमाल को साधू के माध्यम से अपने कब्जे में ले लिया। माहिल इन भाइयों को महोबा से निकलवाने का ठोस कारण खोज रहा था।

इस समय पृथ्वीराज पर भी चारों ओर से आक्रमण हो रहे थे। गौरी उसे बार-बार परेशान कर रहा था। अब तक वह बारह आक्रमण कर चुका था। हर बार उसकी सैनिक शक्ति बढ़ती जा रही थी। पृथ्वी के लिए चिंता की बात ये थी कि इस बार आक्रमण में वह अपने साथ तोपें लेकर आया था, जो बारूद से चलती थीं और दूर तक मार करती थीं। अभी तक हिन्दुस्तान के समस्त राजाओं की सेना के पास तीर, तलवार, भाला, बर्छी, कटार, सांग, तेगा, जुनब्बी, गुलेल और बारूद लगा कर चलने वाले कुछ तीर ही थे। बंदूक और तोपों से वे वाफिक नहीं थे। सेना इन दैत्याकार तोप को देखकर पहले ही अचम्भित थी और उनसे निकलने वाली बारूदी आग को देखकर वह भाग खड़ी होती थी। इन तोप के गोलों के आगे हाथी घोड़ा जैसे जानवर भी बेकाबू होकर यहां वहां भागते थे। यह सब बातें राजा को चिंतित कर रहीं थी। पृथ्वीराज के दुश्मन राजा भी

गौरी की मदद कर रहे थे।
इसी समय माहिल दरबार में पहुंचकर बोला... महाराज, चिंता यही है कि गौरी के पांव मजबूत होते जा रहे हैं, इस बार अपने साथ तोप लेकर आया है, जिसके कारण हमारे हाथी घोड़ा नहीं टिक पा रहे, मैं आपको एक सुझाव देने आया हूं। राजा परमाल के पास उड़न बछेरा घोड़े हैं जो पलक झपकते ही हवा में बीस गज की छलांग लगाते है। वे घोड़े अपनी व अपने सवार की रक्षा अच्छी तरह से करते हैं। युद्ध के सारे करतब उनको आते हैं। रानी मल्हना ने वे घोड़े अपने चाकर आल्हा ऊदल भाइयों को बांट दिये थे।
पृथ्वीराज ने बीच में ही कहा....आप उन्हें चाकर न कहें, आज सही मायने में महोबा के राजा वही हैं।
माहिल...दूसरों के राज्य में रहने वाला चाकर ही होता है। वो तो राजा का भोलापन है कि उन्हें राजकुमार का दर्जा देते हैं।
पृथ्वीराज ने कहा... ठीक है मैं इस बात पर अभी बहस नहीं करना चाहता। आप घोड़ों के बारे में बताइये।
माहिल ने कहा... महाराज, ये करिश्माई घोड़े आप कुछ दिनों के लिए अपने पास मंगा लीजिए और उनपर सवार होकर मुहम्मद गौरी से युद्ध करिये। ये घोड़े आपको इन तोपों के बीच सही सलामत रखेंगे और विजय भी दिलायेंगे। आज आपको इनकी सख्त जरूरत है। रिश्तेदार ही रिश्तेदार के काम आता है। काम हो जाने पर आप घोड़े वापस कर दीजिए।
पृथ्वीराज ने कहा... धन्यवाद, आपने सही सलाह दी है। हम आज ही राजा परमाल को पाती लिखकर वो घोड़े मंगवाते हैं।
आग लगाकर माहिल चल दिये। वह जानते थे कि ये घोड़े आल्हा-ऊदल कभी नहीं देगें।
एक रोज पृथ्वीराज की पाती आ गई। मंत्री ने पढ़ी, राजा कुछ सोचने लगे, तो माहिल तपाक से बोले... आज दिल्ली के सम्राट ने महोबा को बहुत बड़ा मान दिया है। वह जानते है महोबा ने किसी को निराश नहीं किया। राजा ने साधु की ओर देखा।
साधु बोले- महाराज वह आपके संबंधी हैं। उन्होंने आपके ऊपर विश्वास किया है, आपको उनके विश्वास की लाज रखनी चाहिए। कुछ दिनों के लिए ही मांग रहे हैं। काम होने पर वापस कर देंगे, यह तो आपके उनके घर की बात है।
दूसरे साधू ने कहा ... आज दिल्ली नरेश ने याचक बनकर आपसे कुछ मांगा है। आप उन्हे निराश कैसे कर सकते हो। फिर इतिहास में आपका नाम भी अमर हो जायेगा कि राजा परमाल के घोड़ों पर बैठकर ही पृथ्वीराज ने गौरी को हराया था। सबसे बड़ी बात म्लेच्छों से अपने देश की रक्षा का सवाल है। इस देशभक्ति के यज्ञ में आप पीछे कैसे रह सकते हैं? राजा को उनकी बात मन भा गई। उन्होंने आल्हा ऊदल को बुलाने को संदेश भेजा। सूचना मिलते ही वह दोनों भाई महाराज के दरबार में आते हैं। महाराज को प्रणाम कर दोनों भाई अपने आसन पर बैठते हैं। राजा ने वह पाती ऊदल को दे कर कहा... ये पढ़ लो।
ऊदल बोला... दिल्लीपति ने यह कैसे मान लिया कि हम उन्हें अपने घोड़ा देंगे? उनकी हिम्मत कैसे हुई ऐसी पाती भेजने की?
राजा ने कहा ... ऊदल, वे हमारे संबंधी हैं; आज उन्हें इन घोड़ों की जरूरत है। तोपों के सामने साधारण घोड़ा नहीं टिक पायेंगे। इसलिए हमें उनकी सहायता करनी चाहिए। मुहम्मद गौरी सहित अन्य म्लेच्छों को हराकर वह ये घोड़े हमें वापस कर देंगे।

ऊदल ने गरजकर कहा... महाराज दादा, आपको जग हंसाई का डर नहीं है। सब ओर हमारी कितनी हंसी होगी कि चंदेले चौहान से डर गये और अपने चढ़ने के घोड़ा उन्हें सौंप दिये। नहीं हम ये घोड़ा नहीं देंगे।
राजा ने कहा... पुत्र ऊदल जिद नहीं करते; कभी-कभी समझदारी से भी काम लेना पड़ता है। आज राजनीति यही कहती है कि हमें चौहानों से बिना कारण बैर नहीं लेना चाहिए, अन्यथा वह बहू की विदा में बखेड़ा खड़ा करेंगे, नुकसान ब्रह्मा का होगा।
ऊदल ने गरजकर कहा..महाराज, आप किस बखेड़ा की बात कर रहे हो? कौन डरता है चौहानों से? ये वही चौहान हैं जिनके महलों में घुसकर हम ब्रह्मा दादा की भांवर डलवा लाये थे। उसी तरह विदाई भी करा लायेंगे। आप चिंता मत करिये।
राजा ने कहा... पुत्र ये समझदारी की बातें नहीं है, तुम चुप रहो। हम कुंवर आल्हा की राय जानना चाहते हैं।
आल्हा ने कहा.....महाराज, आप याद करिये, पृथ्वीराज ने अपने नाना का राज्य लेकर, उसे वापस नहीं दिया और कहा था पृथ्वी एक बार जिस चीज पर कब्जा कर लेता है वह उसकी हो जाती है। उन्हें अपने अंतिम दिन अपने ही राज्य में बंदी की तरह बिताना पड़े थे। स्वयं का राजपाट होते हुए भी बद्रीनाथ धाम में अपना शरीर छोड़ा; हम कैसे एतबार कर लें कि वह घोड़े हमें वापस कर देंगे। मान लो अगर घोड़ा लेने के बाद हम पर दिल्ली नरेश ने या किसी ने आक्रमण कर दिया, तो हम सामना कैसे करेंगे?
राजा ने कुछ क्रोधित हो कर कहा...पुत्र आल्हा, क्या आज आप अपने महाराज दादा की आज्ञा का उल्लंघन करोगे?
आल्हा.... महाराज, हम आज्ञा का पालन ही कर रहे हैं। बड़ी मां ने ये घोड़े देकर कहा था, किसी भी परिस्थिति में इन घोड़ों को अपने से अलग नहीं करना और हमने उनको वचन दिया था। इसलिए हममें से कोई भी अपना घोड़ा नहीं देगा।
माहिल....कुंवर आल्हा देव, आप अपने महाराज दादा से मुंहजोरी कर रहे हो? उनकी बात का मान रखना आपका कर्तव्य है।
आल्हा.. मामाजी, कृपया आप बीच में ना बोलिये। महाराज को गलत राह पर जाने से रोकना मेरा कर्तव्य है।
माहिल....गलत राह? क्या महाराज को सही गलत की भी समझ नहीं है। अब आप उन्हें बताओगे सही और गलत।
ऊदल ने कहा... मामा जी, आप बात को गलत दिशा में ले जा रहे हो। आप आग मत लगाइये।
माहिल ने कहा... भरे दरबार महाराज की बेइज्जती करे जा रहे हो और हमें चुप रहने को कहते हो। अब हमसे यह सब सहन नहीं होता। महाराज हम जा रहे हैं। इनकी जगह कोई और होता तो अब तक वह यमलोक जा चुका होता। वह उठकर चलने लगा।
महाराज ने क्रोधित होकर कहा... बस, अब आप सब चुप करो और हमारी आज्ञा है कि ऊदल ये घोड़े दिल्ली पहुंचा दो।
ऊदल ने कहा ....नहीं कभी नहीं और वह दरबार से गुस्सा होकर चला गया।
आल्हा ने कहा... महाराज, आप आराम से सोच विचारकर निर्णय लीजिये। ऐसे कार्यों में जल्दबाजी ना कीजिए। अभी हम चलते हैं, आप जो भी निर्णय लेंगे हमें मान्य होगा और वह चले गए, अब माहिल बोला...महाराज आपने ऊदल के बागी तेवर देखे?
साधू ने कहा... यह तो सरासर राजाज्ञा का उल्लंघन है और इस अपराध की सजा राज्य

से निकाला है।
माहिल.....महाराज, इस आंधी को यहीं रोकना होगा, अन्यथा यह महोबा में एक बड़ा ताण्डव दिखायेगी।
महाराज ने कहा... मंत्री जी, कागज कलम लेकर एक राजाज्ञा तैयार कराकर मुहर लगाकर आल्हा के पास दशपुरवा भिजा दो। ऊदल ने पाती पढ़कर सुनाई। पत्र परमाल का, हुकुम दरबार का .....कुसूर...आल्हा-ऊदल का...
..."राजाज्ञा उल्लंघन करने के अपराध में आल्हा ऊदल को सजा देते हुए इस राज्य से सात साल के लिए निष्कासित किया जाता है।" दोनों को आदेश दिया जाता है कि वे अड़तालीस घंटों के भीतर इस राज्य की सीमा से बाहर निकल जायें। आदेश मान्य अभी से हो। कौल है गंगा मैया का, आपके लिए इस राज्य का अन्न-जल गौ मांस भक्षण के तुल्य होगा। नीचे राज मुहर लगी थी।
पाती सुनकर सभी एक दूसरे का मुंह देखने लगे। किसी को विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि ये सब सच है। ऊदल ने सैनिक से पूछा... क्या ये पाती दादा महाराज ने ही दी है? उन्हें पता है कि इसमें क्या लिखा है?
सैनिक ने कहा...जी हां, यह पाती महाराज ने ही लिखवाई है।
आल्हा ने कहा... हम तो ये कभी सोच ही नहीं सकते थे कि दादा महाराज ऐसा भी कर सकते हैं। कोई अपने ही बच्चों से ऐसे कैसे रुठ सकता है कि घर से ही निकाल दे। हमें तो अब चिंता उनकी ही हो रही है। वह माहिल मामा और उस साधू बाबा के कब्जे में पूरी तरह से आ गए हैं। आखिर माहिल मामा अपने मकसद में कामयाब हो ही गए। मां उनकी रक्षा करें।
इस समय इंदल की पत्नि चित्रलेखा ने बालक को जन्म दिया है, जो केवल पांच दिन का है। सुनवां बोली-इस बरसात में नन्हें शिशु को लेकर हम कैसे और कहां जा सकते हैं, अभी तो उसका छठी-पूजन भी नहीं हुआ है। बहू नदी नाले कैसे पार करेगी।
देवल ने कहा... हम अभी जाकर मल्हना जीजी से बात करते हैं। हम कोई रैयत नहीं खा रहे हैं ना ही उनकी दया पर जी रहे हैं। महाराज ने भरे दरबार में मुनादी करके दच्छराज और बच्छराज को अपने महोबा राज्य में बराबर का हकदार बनाया था। हमारे पुत्रों ने अपना जीवन इस राज्य की रक्षा में लगा दिया। हमने अपने खून पसीना से इस राज्य को सींचा है। राजा परमाल ने तो अपने हथियार गंगा में सिरा दियें। माहिल न जाने कब उनका राज हड़प लेगा, वह ऐसे कैसे निकाल सकते हैं। भादों का महीना है। चारों ओर से बारिश की झड़ी लगी है। नदी नाले उफन कर एक हो रहे हैं। कहावत है-
भादों चिरैया न घर छोड़े, ना बंजारे हाट पर जायें। जिनके पिया परदेश बसे हैं, वो भी वापस घर को आयें।
आल्हा ने कहा...राजमाता, इस समय माहिल मामा उनके मंत्री बने बैठे हैं। उनको अपना अच्छा बुरा नजर नहीं आ रहा है। यह राजाज्ञा है, हमें इसका मान करना चाहिए, हम यह राज्य छोड़कर चले जायेंगे। आप सब अपनी अपनी तैयारी कर लीजिए।
हमारे पोते को कुछ नहीं होगा, भगवान श्रीकृष्ण जी भी ऐसी ही बरसात में मथुरा से गोकुल गए थे।
देवल ने कहा... कहां जायेंगे? चारों ओर तो हमारे बैरी बसते हैं। आपकी प्रतिज्ञा के

कारण हम अपना अलग राज्य बसा नहीं सके। आपने यह प्रतिज्ञा न ली होती तो हमारा स्वयं का एक राज्य तो होता। हमें यह दिन तो ना देखना पड़ता।
ऊदल ने कहा ... माता आप शोक ना करें, अभी आपके सपूतों में इतनी ताकत है कि सारी दुनिया को उलट-पुलट सकते हैं।
ढेबा ने कहा...दादा, राज्य से निकाला तो आपको जा रहा है फिर आप अपने परिवार को साथ में क्यों ले जा रहे हो?
आल्हा ने कहा.. जब हम सात साल तक इस राज्य में नहीं आ सकते तो अपने परिवार से कैसे मिलेंगे। दूसरी बात हम और हमारा परिवार अलग नहीं हैं। जहां हम जायेंगे, वहीं हमारा परिवार जायेगा। हमारी भुजाओं में अभी दम है; हम अपना परिवार दादा महाराज के बिना भी पाल सकते हैं। ढेबा ने शगुन विचारा और कहा ग्रहों की चाल के हिसाब से आपको यहां से चला जाना चाहिए। अभी समय उचित नहीं है। शनी की महादशा है, महायोगनी बनकर भ्रामरी अपना जोर लगा रही है। अभी जाना ही उचित है।
आल्हा के पास दशपुरवा में पचास हजार सेना थी। उन्होंने उसे वहीं छोड़, एक हजार सिपाही और अपनी जरूरत का सामान छकड़ों में भरा और रानियों के डोला तैयार किये और सब लदवाकर चल दिए। कवि जगनिक ने भी अपनी तैयारी कर ली है।
आल्हा... कांटा बुरा करील का और बदली को घाम। सौत बुरी है चून की, बुरा साझे को काम।। कविराज इस साझे के राज्य का एक दिन यही हश्र होना था। आप महोबा में रहेंगे दादा महाराज का ख्याल रखेंगे और जरूरत पड़ने पर सहायता भी।
कविराज ने कहा.. हमने आपको मित्र माना है इसलिये हम आपके साथ चलेंगे और वह भी साथ हो लिये।
उसके बाद हाथी पश्चावद पर आल्हा सवार हुए हैं, घोड़ा करिलिया पर इंदल, मनुरथा पर ढेवा, बेंदुला घोड़ा पर ऊदल सवार हुए हैं। घोड़ा पपैया और हंसामनि घोड़ा को साथ में लेकर दशपुरवा से चल दिये। वहां की प्रजा रो रही है। वह रानी मल्हना के चरण छूने पहुंचे। अभी-अभी रानी को यह समाचार मिला है, तभी आल्हा ऊदल परिवार सहित रानी महल में पहुंचते हैं।
ऊदल से रानी ने कहा...अरे बेटा, महाराज तो सठिया गए हैं। वह यह नहीं जानते कि तुम सबके जाते ही दिल्ली वाले महोबा लुटवा लेंगे। उनकी बात को दिल से मत लगा, चलो यह सब उतारों और कहीं नहीं जाना। मैं तुम्हारी बड़ी मां तुमको आदेश देती हूं।
आल्हा ने कहा... बड़ी मां आपके लिए जान हाजिर है, पर राजाज्ञा आपसे उपर है। महाराज के अनुसार यह मेरे अपराध की सजा है। अब आप मुझे अपना धर्म निभाने दीजिए, अन्यथा मैं अपनी ही नजरों में गिर जाऊंगा। बस बड़ी मां आप मुझे आज्ञा दीजिए। दोनों उनके चरण स्पर्श करते हैं। चंद्रावली उस समय महोबा आई हुई थी। वह ऊदल से बोली ...भइया, महोबा को छोड़कर मत जाओ। आपके बिना अनाथ हो जायेगा। ऐसे कोई अपना घर छोड़कर जाता है क्या? मुझे तुम पर बड़ा भरोसा है।
ऊदल ने कहा...जीजी, आपको जब भी मेरी जरूरत हो खबर भेज देना हम दौड़े चले आयेंगे। उसी समय ब्रह्मा को समाचार मिला वह भागकर आया और ऊदल से लिपट कर बोला..नहीं ऊदल, नहीं तुम कहीं नहीं जाओगे। मैं तुम सबके बिना नहीं रह सकता।
ऊदल...दादा वीरों को सबसे पहले अपने वचन की सोचना चाहिए। अपना धर्म निभाना चाहिए, अब हमारा जाना उचित है।

ब्रह्मा ने आल्हा से लिपटकर कहा... दादा अगर आपका जाना जरूरी है, तो मैं भी आपके साथ चलूंगा।
आल्हा...कुंवर, इस समय महोबा में आपको रहना आवश्यक है, अपने आंख, कान खोलकर रखना और कोई भी निर्णय बहुत सोच समझकर लेना। आज से आपकी जिम्मेदारी शुरू होती है, ब्रह्मा बोला... मुझे कुछ नहीं सुनना; मैं आपके साथ चल रहा हूं।
आल्हा...ब्रह्मा आप यहीं रहकर राज्य की देखभाल करें यह मेरा आदेश है। आपको जब भी जरूरत हो, खबर देना हम आ जायेंगे।
अब वह बेबस होकर उसके चरणों में गिरकर रोने लगा, वह बार-बार अपने भाइयों से लिपटता है। सभी रानियों का भी यही हाल है। रानी मां कह रही हैं, मैं अपने ऊदल के बिना कैसे जी पाऊंगी? आल्हा का छोटा बेटा अभयंकर अभी दस साल का है। वह रानी मल्हना को बहुत चाहता है। वह उनसे लिपटकर बोला नहीं, मैं बड़ी मां को छोड़कर नहीं जाऊंगा। आप भी हमारे साथ चलिये। आल्हा ने उसे गोद में लेकर समझाया कि हम जल्दी ही वापस आ जायेंगे। इस तरह वह रोता हुआ मां की गोद में बैठ गया।
रानी मल्हना ने आल्हा के जाने का समाचार सुनकर एक हरकारा मलखान को बुलाने भेज दिया था। आल्हा को रानियों के साथ रुककर जाना पड़ रहा था। पानी भी बरस रहा है, नदी नाले भी ऊपर से बह रहे हैं। पर वह हिम्मत से बढ़े चले जा रहे हैं। पांचवे दिन मलखान ने आकर उनके चरण छुए और हाथ जोड़कर कहा...दादा क्या बात हो गई? यह सब क्या है?
आल्हा ने सारी बात उसे बताकर कहा... अब मैं महाराज दादा की आज्ञा को कैसे टाल सकता हूं?
मलखान ने कहा...दादा जो हुआ उसे भूल जाइये और आप सिरसा में चलिए, मैं नित उठ आपकी सेवा करूंगा आप राज करना।
आल्हा...नहीं भाई, सिरसा का राज्य उन्होंने ही काका को दिया था। इस नाते वह उनका ही है। हम वहां नहीं जा सकते हैं।
मलखान- वह तो पृथ्वीराज ने छीन लिया था। उसके बाद सोलह साल बाद उसे हमने वापस लिया है। अब वह हमारा है।
आल्हा ने कहा...नहीं भाई यह सब मन समझाने वाली बातें हैं, तो मलखान बोला...आप जहां कहें वहां किला बनवा दें।
आल्हा ने कहा... मलखान, हमारा आदेश है कि अभी आप सिरसा को जाइये। हमें अपनी मंजिल खुद तय करने दीजिये। अभी हमारा समय विपरीत चल रहा है। हमें अनुकूल होने का इंतजार करना चाहिये। हम अपने बुरे ग्रहों की छाया किसी अपने पर नहीं पड़ने देना चाहते। हमारे संबंध कनवज वालों से हमेशा अच्छे रहे हैं, सो हम कनवज के आस-पास ही रहेंगे। वह आगे बढ़े।
कभी पानी बरसता, कहीं जोर की बिजली तड़कती, पर ये सब बाधायें उनको रोक नहीं पा रही हैं। चलते-चलते वह हम्मीरपुर के पास बेतवा पर आ गए। इस समय नदी उफान पर है। उसका विकराल रुप देखते ही बनता था। कुछ दिन इंतजार के बाद बेतवा को पार करके बढ़े, अब आगे जमुना नदी अपनी बांहें पसारे स्वागत में खड़ी थी। उसमें भी बाढ़ आई हुई थी। यहां पर सब ओर रेत ही रेत और नदी का शोर था। सभी रानियों का चेहरा कुम्हला गया था। पानी उतरने पर वह सब जमुना पार कालपी के घाट पर

उतरे। वहां से आगे बढ़कर वह सब परहुल पहुंचे और रात रुककर सवेरे सियरमउ को चल दिये। सियरमउ में दूर-दूर तक मैदान था और कुछ आदि वासियों का जंगली इलाका था। यहां पर सभी ने अपने तंबू गाड़ दिये। अब वह आराम से यहां पर रहने का सोच रहे थे। चारों ओर खुला मैदान था। पास ही नदी का किनारा था। इसलिए हर तरह से सुविधा पूर्ण था।
आल्हा निकासी की बात लाखन ने सुनी, तो पता लगाकर मिलने आकर बोला..अरे वाह! दादा आपने तो जंगल में भी इंद्रपुरी बसा ली, पर कनवज का राज्य होते हुए आप इस तरह नहीं रह सकते, आपको हमारे महलों में चलकर रहना होगा।
आल्हा ने कहा..... नहीं हम यहीं पर रहेंगे। हमें महलों की ख्वाहिश नहीं है। हम यहां पर भी बहुत सुखी हैं।
ऊदल ने कहा... हमें अपनी मित्रता पर भरोसा था, इसीलिए हम आपके राज्य की सीमा में ही आये हैं।
लाखन..मित्रवर, दोस्ती में मेरा तेरा नहीं होता, सब हमारा होता है इसलिए जो मेरा है वह आपका है। आप हमारे साथ चलिये।
ऊदल ने समझाकर कहा...मित्र हम आपके महलों में नहीं जा सकते। हम अपने ही वचनों से बंधे हैं इस कारण किसी के दिये हुए महलों में नहीं रह सकते और अपना अलग राज भी नहीं बसा सकते। हम यहीं खुश हैं। लाखन जानता था ऊदल अपने बल पर भरोसा करता है। वह क्षत्रिय है। किसी की दी हुई चीज कभी नहीं लेगा। लाखन ने सारी बात जयचंद को बताई, उसने सोचा इस समय उसके राज्य की हालत कमजोर है। संयोगिता हरण में उसका भाई और वीर सैनिक मारे जा चुके हैं। पृथ्वी का भरोसा नहीं, वह कब आक्रमण कर दे। लगता है कि भगवान ने ही हमारी सहायता के लिए इनको भेजा है। यही सोचकर राजा जयचंद ने लाखन से कहा कि तुम जो चाहे करो, पर ऐसे वीरों को अपने दरबार में स्थान दो। इससे हमारा लाभ ही लाभ है।
लाखन....काका जी, हम एक मेला लगाकर, प्रतियोगिता कराते हैं, जो जीतेगा उसे रिजगिर की जागीर इनाम दी जायेगी। वह यह चुनौती जरूर स्वीकार करेगा, तो जयचंद बोला ... अगर यह चुनौती कोई और जीत गया तो?
लाखन ने कहा ... यह तो प्रतियोगिता है कोई और जीता तो वह इनाम में जागीर ले जायेगा। और लाखन ने मुनादी करा दी, जो जोरा-भौंरा हाथियों को पछाड़ेगा उसे रिजगिर का किला इनाम दिया जावेगा। ऐसा कोई कोई वीर है, तो सामने आये।
ऊदल ने मुनादी सुनी और कनवज को चल दिया। उधर हाथियों को मदिरा पिलाकर मदहोश किया गया। वह मोटी-मोटी जंजीरों से बंधे चिंघाड़ रहे थे। जोर-जोर से ढोल पीटकर वीरों का आवाहन किया जा रहा है, पर शाम तक कोई वीर नहीं आया है। बेंदुला पर सवार ऊदल यह तमाशा देख रहा है। अंत में निराश होकर जयचंद ने कहा- लगता इस धरा पर ऐसा कोई वीर नहीं है?
ऊदल द्वार पर पहुंचकर बोला... सावधान महाराज, अब आगे कुछ ना बोलना, मैं ऊदल हूं और इस चुनौती को स्वीकार करता हूं। कुछ ही देर में डंका बजा कि एक वीर राजकुमार हाथियों से लड़ने आया है। अब राजा, प्रजा और दरबारी देख रहे थे। महावत ने हाथी के पैर खोल दिये, वह मदमस्त हो यहां वहां दौड़ने लगे। उदल ने भाला हाथ में लेकर बेंदुला पर खड़े होकर हाथी के सामने झलांग लगा दी। हाथी उस पर झपटा पर वह कभी दायें कभी बायें भागकर अपना बचाव कर रहा है। अभी वह हाथी पर

निशाना तौल रहा था कि जोंरा हाथी अपनी सूंड़ उसको पकड़ने के लिए सामने को फैलाकर ऊदल की ओर दौड़ा ऊदल ने सूंड़ पर चढ़कर पूरी ताकत से भाला हाथी के माथे पर खींच मारा। भाला दो फुट अंदर घुस गया और हाथी चीत्कार करके लुढ़क गया।
सभी सांस रोक कर देख रहे थे। अब भौंरा हाथी ऊदल की ओर दौड़ा, उसके दोनों दांत बहुत बड़े और नुकीले थे। यह देखकर सबकी सांसे रूक गई क्यों कि ऊदल निहत्थे थे, उनका भाला हाथी के सिर में घुसा था। ऊदल भौरा हाथी के दोनों दांत पकड़कर लड़ने लगा, इसी खींचतान में भौंरा का दांत टूट गया और ऊदल एक छलांग लगा कर हाथी के ऊपर पहुंचा और वही दांत पूरी ताकत से उस हाथी के सिर पर गाड़ दिया। वहां से लहू का फव्वारा फूट पड़ा और हाथी चिंघाड़ कर बैठ गया।
राजा जयचंद ने पीठ ठोकरकर कहा...शाबाश बहादुर, मान लिया कि आज भी भीम का उन्हारी इस संसार में है। हमें गर्व है कि तुम जैसा महावीर मेरे राजकुमार का दोस्त है। राजा ने ऊदल को हार पहनाकर कहा.. आज से रिजगिर का किला आपका हुआ। हम इस जीत की खुशी में जश्न करना चाहते हैं। जिसमें आप अपने भाई के साथ पधारियेगा। हम आमंत्रण भिजवा देंगे।
ऊदल आल्हा के पास आकर बोला...दादा हमने कनवज के मेला में दो पागल हाथी को पछाड़कर रिजगिर का किला जीत लिया है। उसने अपना हार और रिजगिर की जागीर का पट्टा दादा के चरणों में रखकर कहा दादा यह सब मां शारदा की कृपा से ही संभव हो सका है। फिर सब उसी किले में रहने चले गए। रिजगिर के किले का परकोटा दस कोस का था। उसके अंदर बीस हजार की आबादी थी। जो आल्हा ऊदल की प्रजा थी। आल्हादेव ने वहां पर अपना दरबार सजाया और आराम से रहने लगे। रिजगिर की आबादी में से कुछ वीरों का चयन करके, आल्हा ने सेना का विस्तार किया। अब उनका स्वयं का स्थान हो गया।

24-लाखन का विवाह

कन्नौज के राजा विजयचंद्र राठौर ने अपनी बीमारी के कारण पुत्र जयचंद्र को बहुत पहले ही राज्य की देखरेख का उत्ताराधिकारी 1142 ई. में बना दिया था। जयचंद की पत्नि और पृथ्वीराज चौहान की पत्नि दिल्ली के तोमर वंशी राजा अनंगपाल की पुत्रियां थीं। जयचंद एक प्रतापी राजा था, उसका राज्य विस्तृत था, जयचंद्र के द्वारा राजसूय यज्ञ किए जाने के भी प्रमाण मिलते हैं। कनवज, असनी, फतेहपुर और बनारस के शिलालेख इस बात की गवाही देते हैं। उस समय चौहान, गहड़वाल, चंदेल, चालुक्य सभी एक दूसरे से शत्रुता रखते थे। जयचंद्र का छोटा भाई रतनचंद्र था, जो उसके साथ राज की व्यवस्था देखता था। आल्हा गायकों ने इसे रतिभान नाम से गाया है। विवाह के सत्रह साल बाद संयोगिता का जन्म हुआ था। यह उसकी इकलौती संतान थी। इसी तरह रतनचंद्र के यहां बारह साल बाद पुत्र जन्म हुआ था जिसका नाम हरिश्चंद्र था, पर लाखों में सुन्दर होने के कारण उसे लाखन कहा गया।
इसी लाखन के कहने पर उसकी मित्रता की खातिर आल्हा-ऊदल के सम्मान में राजा जयचंद ने एक बड़े भोज का आयोजन किया। उन्होंने आल्हा का आसन दरबार में अलग से लगवा दिया था कि आप जब चाहें इस दरबार में आकर विराज सकते हैं। इस प्रकार अब आल्हा कनवज निवासी बन गए। ऊदल को राजा जयचंद अपने पुत्र के समान ही स्नेह करने लगे। लाखन और ऊदल हमेशा ही साथ रहते थे। वह कभी दरबार में बैठते, कभी शिकार पर जाते, कभी नाच तमाशा देखने जाते, कभी लखा बाग में झूला झूलने जाते थे। लखा बाग कनवज में गंगा किनारे का प्रसिद्ध बाग था। उसमें फल, फूल, लता पुष्प, औषधि, मेवा, लौंग, इलायची, सुपाड़ी सहित, लाखों चीजों के लाखों वृक्ष थे। इसीलिए उसे लखा बाग कहा जाता था। गंगा के किनारे होने से उसकी सुन्दरता और भी बढ़ गई थी। यह बाग कई कोस तक फैला हुआ था। उसमें जंगली जानवर भी छुपकर रहते थे। राजा लोग इस बाग में शिकार खेलने भी आते थे। इसके अलावा सावन या बसंत के मौसम में राजकुमारियां, रानिया, सूबेदारनियां, सेठानियां, और नगर के धनाढ्य वर्ग की बहू बेटियां झूला झूलने आया करती थीं। इस बाग में लताओं के मंडप बने थे। लताओं के ही झूले डले थे। उनमें रंगगिरंगे फूल और कलियां लिपटी थीं, जो देखने वाले का मन मोह लेती थी। इसीलिए इस बाग की चर्चा दूर-दूर तक थी। हरेक की इच्छा यही रहती थी कि एक बार इस बाग को जरूर देखे। आज ऊदल लाखन इसी बाग में जाने वाले हैं। वह दरबार में बैठकर लाखन का इंतजार कर रहा है, तभी एक सेवक ने कहा... महाराज कामरुंदेश के राजकुमार पधारे हैं आपके दर्शन की आज्ञा चाहते हैं।
राजा ने कहा....उनको आदर सहित लाया जाये। कमरुगढ़ यानि कि कामरुप कामाख्या प्रदेश के राजा कामशाह का राज्य था। यह राज्य ब्रह्म पुत्र नदी के किनारे बसा था। जिसे आज कल हम सब असम-गुवाहाटी के नाम से जानते हैं। यहां पर कामाख्या माता का विश्व प्रसिद्ध मंदिर है। यह देवी राजा कामशह की कुल देवी हैं, जो राजा की सहायक हैं। यहां पर जादू की माया बहुत थी। असल में यह तंत्र साधनाओं का क्षेत्र था और आज भी है। यहां पर बहुत से साधू महात्मा अपनी साधना करते रहते थे। उनके पास बहुत सी चमत्कारिक अलौकिक शक्तियां थी। यहां पर कोई भी साधना आज भी सिद्ध की जा सकती है।

राजा के दो बेटे लालशाह, सूरजशाह और एक कन्या कौशकी थी। कन्या ब्याह लायक हुई, तो उन्होंने बेटे से कहा... आप पांच सोने के थाल में मोती भरकर, नौ हीरा, सवालाख मुहरें, रेशम के थान और चारों नेगी ले जाकर किसी अच्छे राजा के यहां टीका चढ़ाओ। साथ में पाती लिख दी जो भी राजा बंगाल के जादू का सामना करे वह आये और हमारी बेटी से विवाह करे।
राजकुमार सभी जगह से घूमता हुआ कनवज पहुंचा और आज्ञा पाकर दरबार में दाखिल हुआ। राजा जयचंद का दरबार लगा है उसकी भव्यता चारों ओर बिखरी हुई है। कामरू के राजकुमार सूरजशाह ने आकर प्रणाम किया और महाराज का इशारा पाकर आसन पर बैठ गए। उसके बाद नेगी ने महाराज को पाती देकर कहा...कामरूगढ़ के महाराज का टीका है।
जयचंद ने पाती सुनी और सोचा बंगाल का जादू बहुत प्रसिद्ध है। वैसे भी ब्याह के लिए पास के रिश्ते आ रहे हैं। कौन उतनी दूर जायेगा, तो वह बोला... आप आये हो तो विश्राम कीजिए, पर हम ये टीका नहीं ले सकते। हमें अभी ब्याह की जरुरत नहीं।
ऊदल वहीं बैठे थे। बोले काका जी, आप ये पाती वापस कैसे कर सकते हो? आपका ऊदल से लेकर अस्ताचल तक नाम है। घर आया टीका वापस करने से हमारी बदनामी होगी। ये टीका लाखन को चढ़ाइये, हम सब लाखन का ब्याह कमरूगढ़ में करेंगे।
ऊदल की बात सुन जयचंद सोचने लगा कि ऊदल जैसे वीर के साथ रहते हम लड़ाई जीत सकते हैं, इससे हमारा यश बढ़ेगा।
वह बोला... ठीक है कुंवर ऊदल, अगर आप कहते हो, तो ये टीका अपनी देखरेख में चढ़वा दो।
ऊदल ने कहा... काका जी आप चिंता न करो, जहां लाखन का पसीना गिरेगा वहां मैं लहू की धार बहा दूंगा।
जयचंद ने कहा... कुंवर ऊदल, हम आप दोनों की दोस्ती को जानते हैं। आप जो उचित समझो सो करो। बस अब क्या था, जल्दी ही पंडित को बुलाकर धूमधाम से लाखन को टीका चढ़ गया। फागुन मास की पुन्यदायी तिथि तेरस का ब्याह निकला।
जल्दी ही ब्याह का दिन आ गया। राजा जयचंद ने सभी को न्योता भेजा आखिर उसके बेटे की शादी थी। कुरियल के मामा गंगा ठाकुर, जौनपुर के मामा, परहुल के परशुराजा, सिरौंज वाले, उरई वाले, नरवर वाले, नेपाल वाले सभी अपनी बारात सजा आ गए।
लाखन को दूल्हा बनाकर राजा जयचंद अपनी भूरी हथिनी पर सवार हुए। हाथी पश्चावद पर आल्हा बेंदुला पर ऊदल, मनोरथा पर ढेबा, करिलिया पर इंदल और भी जो महोबा के चौबीस सरदार आल्हा के साथ आये थे वे सभी बारात में चल दिये।
रानी सुनवां ने कहा....स्वामी, कमरूगढ़ में जादू का बहुत जोर होगा इसलिए आप साबिया जोगन और चारों चीलों को ले जाइये। बहुत दिनों की मंजिल तय करके बारात कामरूगढ़ के मेंड़े पर पहुंच गई। सभी ने वहां पर अपने-अपने तंबू लगा लिए।
उसके बादबारी ने दरबार में जाकर कहा... महोबा के राजा आल्हा ने ऐपन बारी भेजी है सो स्वीकर करो और हमारा नेग दे दो।
राजा कामशाह ने जब सुना कि महोबा के राजा आल्हा आये हैं, तो उनके कान खड़े हो गए। उनको याद आया कि पड़ोसी नेपाली राजा के दरबार में ऊदल से उनके दो-दो हाथ हो चुके हैं, अपनी जान बचाकर भागना पड़ा था। अपमान याद आते ही वह क्रोध की आग में जल उठे। वह बोल....टीका तो हमने राजा जयचंद के कुंवर को चढ़ाया था ये

महोबा वाले यहां क्या कर रहे हैं?
बारी ने कहा ... महाराज आल्हा बारात के अगुआ हैं। सभी नेग वही कर रहे है।
राजा अपने अपमान का बदला चाहते थे, सो कामशाह ने अपने राजकुमार को समझाकर भेजा कि वह दूल्हा को लेकर आये।
सूरजशाह ने जाकर कहा...कि आप बारात लेकर आ सकते हैं, पर शर्त है कि महोबा के आल्हा ऊदल को बारात में ना लायें।
जयचंद ने क्रोध में भरकर कहा...यह तो हमारे साथ आये बारातियों का अपमान है। महाराज आल्हा हमारे मित्र हैं, हम उनका यह अपमान सहन नहीं करेंगे। वह इस ब्याह के अगुवा हैं। वह बारात में जरूर आयेंगे। आप जाकर अपने पिता से कह दीजिये।
उसके बाद बारात चल दी। सबसे आगे महाराज आल्हा का हाथी चल रहा था। बारात द्वार पर आई और कामशाह को पता चला कि आल्हा बारात में सबसे आगे आ रहे हैं, तो उन्होंने दरबान को आदेश दिया कि फाटक बंदकर दिया जाये और किसी को भी अंदर न आने दिया जाये। अब दोनों ओर से राजहठ की लड़ाई थी, जो सर्वत्र प्रसिद्ध है। ऊदल ने ललकार कर कहा... अरे बंगाल के राजा, कायरों की तरह दुम दबाकर बैठे हो, हिम्मत है तो सामना करो। पहले बुलाते हो फिर मुंह छिपाकर बैठ जाते हो।
ऊदल की ललकार सुनकर राजा ने आदेश दिया, दुश्मन पर टूट पड़ो और मारकर, पचास कोस खदेड़ दो, ताकि कभी कमरूंगढ़ की तरफ आंख भी ना उठा सकें। फाटक खुल गया और लालशाह सेना लेकर जयचंद पर टूट पड़ा। जयचंद की सेना ने खूब गदर काटी। कमरूंगढ़ के सैनिक गाजर मूली की तरह कट गए। ऊदल का घोड़ा नाच-नाच कर सबको रौंद रहा था और ऊदल की तलवार सैनिकों के सिर ऐसे काट रही थी, जैसे खेत में किसान फसल काटता है। शाम होते-होते लालशाह के पैर उखड़ गए।
लालशाह- बारात बुलाकर नाहक बैर लिया। उनके साथ महोबा वाले हैं, उनसे नहीं जीत सकते, अब युक्ति से काम लीजिए।
कामशाह...राजकुमार आपकी बात सच है, तुम लाखन को किसी भी तरह भक्सी में डाल दो, किस्सा खत्म हो जायेगा।
दूसरे दिन लालशाह जयचंद के खेमे में निवेदन कर बोला... महाराज हमने आपका रण कौशल देख लिया, आप हर तरह से हमारी बहन के लायक हैं। हमारी कुलरीति है कि भांवर के लिए अकेला दूल्हा आता है। उसके बाद विदाई में सभी आयेंगे।
आल्हा... राजकुमार जी, आप की बात सच है। हमें एक दूसरे के रिवाजों का सम्मान करना चाहिए। हमारी कुलरीति के अनुसार घराती चारों नेगी भांवर को जाते हैं, पर आप चारों नेगियों और दूल्हे के सहबाला को ले जाकर भांवर पड़वा दीजिए।
लालशाह इस बात को राजी हो गया और बोला हमारी रीत के अनुसार साथ में कोई शस्त्र नहीं जायेगा।
आल्हा ने कहा ...राजकुमार, क्षत्रिय की पहली शादी तो शस्त्रों से ही होती है; अब जल्दी ही ढेबा, तल्हन, धनुआं तेली और इंदल ने नेगी यानी कि नाऊ, बारी, ढीमर और पंडित का वेश बनाकर, हथियार छुपाकर हाथों में बिजना, टोकरी, मूसल, झंडी लेकर तैयार हुए। ऊदल सहबाला बन, लाखन को पालकी में बिठा सातों महलों की ओर चल दिये। इनके अंदर जाते ही फाटक बंद हो गया।
लालशाह...आप भोजन कर लीजिए। चारों नेगी यहीं पर भोजन करेंगे और दूल्हा को हम अंदर रानी महल में मंडप के नीचे ले जाकर भोजन करायेंगे। ऊदल और लाखन

अंदर चले जाते हैं। उनके अंदर जाते ही रानी महल का दरवाजा बंद हो जाता है।
लाखन और ऊदल कीमती गलीचा बिछे पलंग पर भोजन के लिए बैठे, लालशाह एक एक लड्डू लाखन और उदल को खिलाता है। ऊदल जैसे ही खिलाने को लड्डू उठाता है, तलवार लिए पचास सरदार उन पर टूट पड़े। लाखन और ऊदल निहत्थे थे।
ऊदल ने कहा... राजकुमार गंगा तुलसी करके भी तुमने छल किया। यह वीरों का नहीं कायरों का काम है। वह उसी पलंग को तोड़ उसकी पाटी लेकर उन पर टूट पड़े। एक घड़ी के समय में उन दोनों ने पचास सरदारों को बिछा दिया। जो लड्डू दोनों ने खाया, उसमें बेहोशी की दवा थी। अब उन पर असर होने लगा। दोनों की पलकें भारी होकर बंद हो रही हैं और कुछ देर में वह दोनों लहरा कर गिर पड़े। लालशाह ने सैनिकों से कहकर दोनों को बंदी बना लिया।
कामशाह बोला-इनको तिलस्मी भक्सी में डालकर कड़ा पहरा लगा दो। इसके अलावा जादुई शक्तियों का पहरा बिठा दो, किसी भी हाल में ये बाहर न आयें। अब जयचंद को पता चलेगा कि कमरूंगढ़ के बादशाह से दुश्मनी करने का अंजाम क्या होता है?
लालशाह ने कहा... पिता जी, बाहर नेगी बैठे हैं उनका क्या करें? राजा ने कहा...वह तो नेगी हैं उनका क्या? वापस भेज दो।
लालशाह ने कहा...ऊदल और लाखन भांबर के समय चलने वाली तलवारों से बचाव न कर सके और मारे गए हैं। अब तुम यह खबर अपने राजा को दे दो। यह सुनकर इंदल की आंखों से आग निकलने लगी और हाथ कमर में छिपी तलवार पर गया, पर तल्हन ने हाथ पकड़ा...ये समय चुप रहने का है। वास्तविकता का पता लगाना चाहिए उसके बाद अगला कदम उठायेंगे।
ढेबा ने कहा... अभी चुपचाप चलकर सारी बात महाराज को बताना चाहिए। इस प्रकार वे चारों वहां से वापस आ गए।
आल्हा ने यह सुना तो वह लड़खड़ा कर बैठ गए। वह कहने लगे मैंने अपने भाई को अकेला भेजा ही क्यों था?
ढेबा ने पत्रा देखकर कहा...वह दोनों जीवित हैं, उनको छल से बंदी बना लिया है, हमें उनको छुड़ाने का उपाय करना चाहिए।
उधर ऊदल को तिलस्म में कैद कर लिया है, यह बात जब राजकुमारी कौशकीशाह ने सुनी तो वह रात को वेश बदल कर तिलस्मी भक्सी पर पहुंची और सभी दरबारियों को बहुत सा इनाम देकर वहां के हाल पूछे, जाने का रास्ता पूंछा, उसके बाद पाती लिखकर अपनी बांदी से राजा आल्हा के पास पहुंचा दी। सुबह पाती पाकर राजा को सारा हाल पता चला।
आल्हा ने कहा... हमारे साथ कामशाह ने छल किया है। हमें अपनी फौजें तैयार करके उन पर चढ़ाई करना चाहिए।
दूसरे दिन लालशाह के सामने आने पर इंदल ने कहा... अरे धोखेबाज, छल करता है। तूने छल से मेरे काका लोगों को बंदी बनाया है। अब मैं तुझे जिंदा नहीं छोड़ंगा। लालशाह ने अपना वार कर दिया और दोनों के बीच घमासान होने लगा। उसी तरह सूरजशाह के साथ आल्हा राजा का युद्ध हो रहा है। आज की लड़ाई में धनुआं तेली, लला तंबोली, मन्नागूजर, बलई लुहार सहित सभी अपना जौहर दिखा रहे थे। लहू की धार ब्रह्मपुत्र नदी तक जा पहुंची। दोनों ओर के बहुत से सैनिक मारे गए। लालशाह के साथ आया जादूगर का जादू कुछ काम नहीं दे रहा है। वह बार-बार पढ़-पढ़कर सरसों फेंक

रहा है। उसकी झोली खाली होने को आई पर कुछ असर नहीं हुआ है। वह बार-बार ऊपर को देखता है। उपर आकाश में चार चीलें मंडरा रहीं हैं। अचानक एक चील नीचे को आई और झपट्टा मार कर जादूगर की झोली लेकर उड़ गई। वह अरे अरे करता रह गया। लालशाह को काफी चोट भी आई है। उसे मूर्छा आने लगी है। अब शाम हुई और युद्धबंदी की तुरही बज गई। दोनों दल में कोई किसी से कम नहीं है।
आल्हा ने कहा... इस प्रकार खुल्लम खुल्ला लड़कर हम ऊदल से नहीं मिल सकते हैं। पहले हमें किसी जुगत से ऊदल और लाखन को निकालना चाहिए और उसके बाद लड़ाई करना चाहिए। राजकुमारी का कहना है कि उस तिलस्म में वही जा सकता है जिस पर जादू का असर न हो। ऐसे में मुझे ही जाना पड़ेगा।
तल्हन ने कहा ... महाराज आपको हम अकेले नहीं जाने दे सकते। आपके अलावा ऐसे में मलखान जा सकते हैं या फिर गुरुदेव को बुलाया जाये, तो तल्हन ने कहा-ढेबा जाकर सिरसा से मलखान को लायेगा।
खेमें में पहुंच मलखान ने आल्हा को प्रणाम कर कहा... दादा, आप चिंता मत करिये हम सब मिलकर ऊदल को जल्दी ही तिलस्म से बाहर कर लेंगे। दूसरे दिन सुबह मलखान की अगुवाई में सेना की तैयारी की गई। मलखान ने कहा... ऊदल और लाखन कहां पर हैं। इस बात की हमें पक्की खबर नहीं है इसलिए हमें जबरन महलों में घुसकर सारी जानकारी पता करके उनको आज ही बाहर लेकर आना है। जब तक हम बाहर न आ जायें तब तक आप सभी को राजा कामशाह और उनकी सेना को उलझा कर रखना है। इंदल और ढेबा अपनी सेना लेकर राजा के ऊपर आक्रमण करेंगे। जब राजा लड़ने के लिए बाहर आयेंगे, तो अपनी सेना को पीछे हटाकर उत्तर की ओर चले जाना। दूसरी ओर आल्हा व जयचंद किले के पश्चिमी तरफ से दो घड़ी बाद आक्रमण करें और जब राजा की बची सेना किले से बाहर आयेगी, तो पीछे को हटते हुए आपको पूर्व की ओर बढ़ना है। इस प्रकार सेना को महल से काफी दूर ले जाना तभी दक्षिण की ओर से मलखान महलों में घुसकर तिलस्म पर पहुंचेंगे। साथ में साबिया जोगन जायेगी।
सभी अपने काम में लग गए, फाटक पर लड़ाई का बिगुल सुनकर कामशाह अपनी सेना लेकर बाहर आता है, छुटपुट लड़ाई करते हुए ढेबा पीछे हटने लगता है। पश्चिमी फाटक पर आल्हा ने आक्रमण किया और सूरजशाह अपनी सेना लेकर बाहर आया। आल्हा भी पूर्व की ओर पीछे हटने लगे। यह सब होने के दो घड़ी बाद मलखान ने अपनी सेना लेकर दक्षिण के फाटक से आक्रमण किया। इस समय महलों में सैनिकों की संख्या कम है। कुछ देर की लड़ाई के बाद सारा मैदान खाली हो गया।
अब मलखान ने रानी महल में जाकर कहा... हम किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचायेंगे और राजकुमारी से कहा -तिलस्मी भक्सी कहां पर है? वहां ले चलिए। राजकुमारी के साथ मलखान भक्सी पर पहुंचते हैं। वहां जाते ही तिलस्म के दरोगा से युद्ध होने लगा। कुछ देर की लड़ाई के बाद दरोगा को बंदी बना लिया गया। वहां के जादू से लड़ाई साबिया जोगन कर रही थी। मलखान ने देखा कि वहां का तिलस्म बहुत ही उच्चकोटि का बना हुआ था। अगर वह अपने बूते पर तिलस्म में जाता है, तो तिलस्म को तोड़ने में बहुत समय लगेगा और उस पर बंगाल का जादू भी असर कर सकता है। इसीलिए मलखान ने उसी दरोगा के गले पर कटारी रख कर उसके हाथ पीछे बांधकर कहा... कि वह स्वयं साथ चलकर तिलस्म का दरवाजा खोले। वह तिलस्म का दरवाजा मंत्र पढ़-पढ़कर खोलता है। फिर तिलस्म के अन्दर बने गोले में से वह शतरंज के घोड़े की

तरह ढाई घर की चाल चलकर आगे बढ़ता है। मलखान भी वैसा ही करके उसके साथ जाता है। आगे जाकर देखा कि एक बहुत ही गहरी खाई है। मलखान ने सोचा कि इसे कैसे पार किया जायेगा, पर वह दरोगा साधारण कदम उठाता हुआ जहां पर पत्ते थे वहां पर पैर रखता हुआ आगे बढ़ गया। उसने बताया कि दीवाल की परछायीं पर पैर पड़ते ही आप दूसरे खंदक में गिर जाओगे। अब समझ आया कि यह सब तिलस्मी माया थी। इस प्रकार मलखान दरोगा की मदद से ऊदल और लाखन को बाहर लेकर आता है।
मलखान ने कहा .. राजकुमारी जी अब आप जाइये और ब्याहे की तैयारी करिये, हम बारात लाते हैं, उसके बाद दरोगा को साथ लेकर फाटक के बाहर तक आते हैं, ताकि वह कोई जादू न कर सके। अब तक शाम भी हो चुकी थी।
उधर महलों में लौटने पर कामशाह को पता चला कि मलखान दोनों को कैद से निकाल कर ले गया है, तो वह उनकी रण नीति की प्रशंसा करने लगे। लालशाह ने कहा... पिता जी, हमारा जादू उनका कुछ भी न बिगाड़ सका।
कामशाह...राजकुमार यह मत भूलो कि हमारे पड़ोसी राजा राघोमच्छ की बेटी उनकी बहू है। उसके पास हर जादू का तोड़ है।
वो बात अलग है कि हम कल युद्ध में उनकी बहादुरी देखेंगे; गुरुदेव की तंत्रशक्ति हमारी मदद करेगी और विजयी भी।
दूसरे दिन कामशाह ने ललकार कर कहा...मलखान, अपनी जान की खैर चाहते हो तो लाखन को लेकर वापस चले जाओ।
मलखान...महाराज हम भी यही चाहते हैं कि आप भांवर डाल दें, तो हम वापस चले जायें। अन्यथा हम जाने वाले नहीं हैं।
राजा... नहीं जाना तो वार सँभालो, ऊदल की और लालशाह की लड़ाई हो रही है। कामशाह के साथ उनके गुरु महाराज भी पधारे हैं। महोबा वाले उन पर भारी पड़ने लगे, तो कामशाह बोला... गुरुवर अब अपनी शक्ति का चमत्कार दिखाइए। गुरुदेव ने आंख बंद करके मंत्र पढ़ा और सेना के ऊपर अग्नि की बरसा होने लगी। सैनिक घबराकर इधर उधर भागने लगे। तभी मलखान ने जल बरसा अस्त्र चलाया और बारिश होने से अग्नि की ज्वाला शांत हो गई। फिर गुरुदेव ने आंधी अस्त्र चलाया। मलखान ने उसको शांत कर दिया, अब गुरुदेव ने सांप छोड़े। सेना भागने लगी, मलखान चिल्लाया ये सब जादू की माया है, डरो मत और उसने उसका तोड़ अस्त्र चलाया। अब गुरु महाराज ने मंत्र मारा और महोबा की सारी सेना चेतना शून्य होकर जड़ हो गई। जो जहां था उसी तरह से खड़ा रहा। मलखान और ऊदल पर इस विद्या का असर नहीं हुआ, पर जब उसने सारी सेना को जड़ देखा तो वह भी जड़वत खड़ा रहा क्योंकि अकेले तो लड़ा नहीं जा सकता था। कामशाह ने समझा सभी जड़ हो गये।
कामशाह ने कहा - गुरुदेव आल्हा के पास हर जादू का तोड़ है। उसके गूरु गोरखनाथ बहुत ही ऊंचे दर्जे के तंत्र साधक हैं।
गुरु महाराज ने कहा... राजन आप चिंता ना करें यह जादू नहीं है, न ही किसी योगिनी का फेरा है। यह कामाख्या माता की चौकी लगी है। उसे वही तोड़ सकता है, जो कामाख्या माता को प्रकट करके उनसे वरदान मांगे। वह कुल देवी आपकी हैं। दुश्मन को वरदान क्यों देंगी? वह जादू से इसका तोड़ खोजते रहेंगे और हारकर लौट जायेंगे। ऐसी बातें करते हुए वह वापस हो लिए।
उनके जाने पर मलखान ने सारा हाल आल्हा को बताया। सभी के गले में थूक अटक

गया कोई कुछ न बोल सका।
जयचंद ने कहा ... महाराज अब तो हमें वापस कनवज लौटना चाहिये। जो बचे हैं उनकी रक्षा करना चाहिये।
आल्हा ने कहा... हम अपने वीर सैनिकों को छोड़कर वापस नहीं जा सकते हैं। बाकी सेना के प्राणों की रक्षा करना भी हमारा कर्तव्य है। अब हमारे सामने एक ही रास्ता है हमें कामाख्या माता की साधना करके उनसे वरदान प्राप्त करना होगा।
इंदल ने कहा... पिताजी हम देवी मां की साधना करने जायेंगे। मलखान ने कहा ..यह तुम्हारे बस की बात नहीं, हम जायेंगे।
इंदल ने कहा....पिता जी, विश्वास रखिये और हमें आज्ञा दीजिए, हम ये काम जरूर करेंगे। इंदल गेरुआ वस्त्र पहन कर कामाख्या माता के मंदिर में जाकर उनका ध्यान लगाकर बैठ जाते हैं। इसी तरह उसे छ: दिन बीत गये हैं उसने कुछ भी नहीं खाया पिया है। अभी तक मां की ओर से उसे कुछ भी इशारा नहीं मिला है। वह सातवें दिन अर्धरात्रि में मां से बोला ... मां मेरी पुकार सुनो मेरे साथ आये सभी बेकसूर सैनिकों को जीवन दान दो। मुझे अपने कर्तव्य पथ पर चलने की शक्ति दो मां प्रकट होओ, मां प्रकट होओ। अपने भक्त की पुकार सुनो, मां हमें दर्शन दो! इस प्रकार वह विलाप करता हुआ मां को बुला रहा है। वह उनके चरणों को पकड़ कर बिलख रहा है। इसी तरह सारी रात बीत गई। इंदल ने देखा, अब भोर होने वाली है और प्रमुख पुजारी कुछ ही देर में पूजा करने आ जायेगा फिर वह मां से कुछ भी नहीं कह पायेगा। उसने अपनी कटार गले पर रखकर कहा ....मां अगर आप अपने भक्त की पुकार नहीं सुन सकती हो तो मैं अपना शीश आपके चरणों में अर्पण कर आपकी शरण में आ रहा हूं। और उसने कटार पर जोर देकर कहा...जय कामाख्या माता। उसी पल चमत्कार हो गया। मां ने प्रकट होकर इंदल का हाथ पकड़ लिया। मां को देखकर इंदल उनके चरणों में गिर पड़ा और बिलखकर बोला..मां कृपा करो, मां दया करो। मां ने कहा वत्स उठो, इस छोटी सी उमर में तुम्हारी लगन देखकर मैं प्रसन्न हूं। एक वरदान मांगो।
इंदल.."मां, बस हम यह ब्याह कराके अपनी समस्त सेना और परिवार सहित कुशलता पूर्वक वापस जायें। ‘‘
मां ने कहा ...तथास्तु, ऐसा ही होगा सूरज की पहली किरन के पड़ते ही तुम्हारी सारी सेना की मूर्छा टूट जायेगी, पर एक बात का ध्यान रखना कि अभी से लेकर ‘‘चालीस ऊपर आठ घड़ी" तक का समय तुम्हारे पास है। इतने समय के अंदर तुम अपनी सेना सहित कमरूंगढ़ की सीमा से पार हो जाना। इंदल ने मां के चरणों में प्रणाम किया और मां अलोप हो गईं।
इंदल वहां से अपना कमंडल ले कर भागा-भागा आया, उसने आकर देवी से वरदान मिलने की सारी बात बताई और देवी मां की दी हुई समय सीमा अड़तालीस घंटे के अन्दर ही ब्याह करने की तैयारी करते हैं।
आल्हा ने कहा... अब तो एक ही तरीका है कि सामने से लड़ो और दोनों बेटों सहित राजा को बंदी बनाकर भांवर डलवाओ।
वह सभी तैयार होकर युद्ध के मैदान में जाते हैं। सुबह होते ही सारी सेना जीवित हो जाती है। सेना चढ़कर महल के दरवाजे पर पहुंच जाती है। वहां से कामशाह भी अपने बेटों को साथ लेकर लड़ने आ जाता है, पर वह सारी सेना को जीवित देख समझ गया कि अब इनसे पार पाना कठिन है। इनके पास भी देवी मां की शक्ति है। तब तक सामने

से गरजता हुआ मलखान आ गया और बात विवाद के बाद दोनों दलों में घमासान लड़ाई होती है। कुछ ही देर में कामशाह की सेना के पांव उखड़ जाते हैं।
कामशाह आल्हा को ललकार कर बोला... ये दिल्ली नहीं है जो जीत कर चले जाओ। ये लो मेरा वार सँभालो। आल्हा ने एक हाथ से ढाल पर उसे रोका और दूसरे हाथ से वार कर दिया। राजा सम्हल न पाया और हौदा से गिर गया। मलखान ने उसे बंदी बना लिया। उसी तरह इंदल ने लालशाह को और ऊदल ने सूरजशाह को बंदी बना लिया। राजा को बंदी बनाकर एक ऊंचे आसन पर इज्जत के साथ बिठाकर आल्हा ने कहा... महाराज हमारी आपकी कोई दुश्मनी नहीं है। आपने हमारे घर आकर कुंवर लाखन को टीका चढ़ाया और हमें बारात लाने का न्योता दिया। तो फिर ये हठ कैसी? माना कि कुछ रस्मों के नाम पर हम सब ये खून खराबा करते चले आ रहे हैं। पर अब बस! बहुत हो गया! यह सब गलत है। हम अपनी हठ के कारण कितने ही बेकसूरों की बलि चढ़ा देते हैं। जब हम आपस में संबंधी बन रहे हैं तो फिर ये तलवार बाजी कैसी? ये लड़ाई क्यों? बड़े छोटे का सवाल कैसा?
कामशाह ने कहा ... महाराज, हम बेटी की शादी करने को तैयार हैं। आप सब ओर से हमारे लायक हैं।
आल्हादेव-महाराज आप तैयार हैं, तो शीघ्र ही भांवर की तैयारी करें। हम आपके बेटों के साथ बारात ले कर आते हैं।
रानी को सारा हाल बताया। तो रानी ने समझाया कि महाराज अब आप हठ त्याग कर, राजा खुशी से बेटी का ब्याह कीजिए।
राजा ने कहा ...रानी आपकी बात सही है। ये लो सवा लाख का लहर पटोरा हमारी बेटी को पहना दो। कुछ समय बाद बारात आ गई। राजा ने खुश होकर बारात का स्वागत किया और जयचंद के गले मिलकर समधौरा किया। उसके बाद मंडप के नीचे भांवर के लिए दूल्हा गया साथ में ऊदल और इंदल भी हैं। इन तीनों का रूप देखकर सभी मोहित हो रही हैं। सखियां गाना गा रही हैं कि इनकी माता धन्य हैं जिन्होनें इतने सुन्दर राजकुमारों को जन्म दिया है। पहली भांवर से लेकर सातवीं तक सभी नेग दोनों पक्षों के भाइयों ने निभाये। अब तक छत्तीस घंटे बीत गए है। अब बारह घंटों में विदाई कराके कमरुगढ़ से बाहर निकलना है।
आल्हा ने कहा ....शुभ मुहूर्त बीता जा रहा है, आप शीघ्र ही विदाई करिये। राजा ने बहुत सा उपहार देकर सभी का मान रखा। सभी सैनिकों का मुहरें दी। रानियों महारानियों को भी बहुत सा उपहार रख दिया फिर राजा ने हाथ जोड़कर सभी को विदा किया।
महलों से निकलकर शीघ्र ही तंबू उखाड़ने को कहा...और कुछ घड़ी बाकी रहते ही वह सब कमरूंगढ़ की सीमा को पार कर गए।
सूचना मिलते ही कनवज में मंगलाचार होने लगे। बहू के दरवाजे पर आते ही सभी रानियों ने उसका स्वागत किया। मुंह दिखाई में उसे बहुत से उपहार दिये गए। कनवज में बहुत दिनों तक आल्हा, ऊदल और इंदल की वीरता के चर्चे होते रहे।

25-सिंहलद्वीप की लड़ाई

सिंहलद्वीप यानी कि लंका का राज्य। 1025 में राजेन्द्र चोल ने गंगासागर पार करके जावा सुमात्रा पर अपना अधिकार कर लिया था। इसके बाद 1030 में उन्होंने मलयद्वीप पर आक्रमण करके केडाह के बंदरगाह को जीत लिया था। इसके बाद सिंहलद्वीप, अंडमान निकोबार द्वीप समूह पर भी कब्जा करके चोलसेना का ध्वज पहरा दिया था। राजेन्द्र चोल की इस विजय के शिलालेख आज भी मलेशिया, इंडोनेशिया और सुमात्रा में हैं, हालेण्ड के चार सौ साल पुराने लिडेन विश्वविद्यालय में उसके लिखे 21 आज्ञापत्र हैं जो तामपत्र पर हैं उनका वनज 30 किलोग्राम है। इस काल में वास्तुकला, स्थापत्य कला और साहित्य कला का भरपूर विकास हुआ। उसके बाद उसके पुत्र राजा धिराज ने 1066 में राज्य सँभाला और अपनी विजय पताका फहराई।

11वीं सदी के अंत तक एक नए राजवंश का उदय हुआ पांड्य वंश। ये राजा बहुत बलशाली थे युद्धकला के साथ-साथ जादू और तंत्र मंत्र की विद्या में भी निपुण थे। इस समय चोल वंश का पतन होने लगा था और श्रीमारवल्लभ और सहस्त्रवर्मा ने चोल, गंग और पल्लवों को हरा कर सिंहलद्वीप पर अधिकार कर लिया। उसके बाद बारहवीं सदी में जटावर्मा और कुलशेखर वर्मा ने अपने को सिंहल द्वीप का स्वतंत्र राज संभाला उसने 1160 से 1216 तक राज्य किया।

सहस्त्रवर्मा सिंहल द्वीप का राजा था। उसके मारवर्मा और जटावर्मा नामक दो बेटे थे और एक बेटी थी जिसका नाम लेखा पद्मिनी था। राजकुमारी युद्ध कला और जादू की सभी कलाओं में पारंगत थी। कहा जाता है कि हिमालय की तराई से एक मुनि राज में पधारे थे। पदमिनी ने उनकी बहुत सेवा की थी। उसकी सेवा अर्चना से प्रसन्न होकर मुनि महाराज उसे एक अदृश्य सिद्ध जड़ी और सिद्धमंत्र दिये थे। जड़ी को मुंह में रखकर मंत्र पढ़ने पर अदृश्य होकर कहीं भी जाया जा सकता था। राजकुमारी हर माह की पूरनमासी को फूलों से तुला करती थी। उसकी सुन्दरता बेमिसाल थी, रूप ऐसा कि देखकर स्वर्ग की अप्सरा भी मोह जाये, चित्रकला में ऐसी पारंगत कि एक बार वह किसी का वर्णन सुनले तो हू बहू वैसा ही चित्र बना दे इस प्रकार वह सर्वगुण सम्पन्न थी। इस समय सिंहल द्वीप में जन जीवन अन्य भारतीयों की तुलना में अलग था। ये लोग जादुई शक्ति में बहुत पारंगत थे। यहां का तिलस्म और अइयारी का लोहा पूरा भारत देश मानता था। चारों ओर से समुद्र से घिरा होने के कारण सुरक्षित भी था। यहां के लोगों का खान-पान और रहन सहन कुछ अलग था। परन्तु पे्रम, प्यार और दिल लगाने की बोली तो सभी जगह एक सी ही है।

उस समय वीर गाथा काल का समय था। सभी राज्यों की राजकुमारियों के बीच चर्चा है कि महोबा के राजकुमार कुंवर इंदल बहुत सुन्दर व वीर हैं। हर किसी के मन में ऊदल और इंदल को पाने की चाह है। राजकुमारियां अपने-अपने तरीके से वीरों की खोज कराती रहती थीं। कभी जादू के माध्यम से, तो कभी पक्षियों से सेदेश भेजकर उन तक अपना पैगाम भी भेजती रहती है। राजकुमारी पद्मिनी की उमर सोलह साल हो गई है। राजा बहुत समय से वर की तलाश में हैं, पर अभी तक उन्हें अपनी सर्व गुणी बेटी के लायक कोई वर नहीं मिला है। उसकी उमर बढ़ती जा रही है।

उधर माहिल जानता था वह महोबा पर तिरछी नजर डालेगा, तो ऊदल जिंदा नहीं

छोड़ेगा। ब्रह्मा और मल्हना का ऊदल के लिए लगाव उसकी चिंता का कारण था। वह जानता था कि ये कुछ समय तक कनवज में रहे, तो इनसे पार पाना संभव नहीं होगा। उसे पता चला कि सिंहलद्वीप के राजा की कन्या ब्याहे के लिए है। उसने एक कुटनी को दासी बनाकर सिंहलद्वीप भेजा। ताकि वह राजकुमारी को इंदल को पाने के लिए मानसिक रूप से तैयार करे। उसे इंदल से मिलवाने की व्यवस्था करे। वह दासी अपनी दूर की सहेली का वास्ता देकर वहां आ गई और कुछ ही समय में राजकुमारी की सखी बन गई।

राजकुमारी को सखी के द्वारा इंदल के बारे में बहुत सी जानकारी मिली और उसने उसका हूबहू चित्र बनाया और उसकी सुन्दरता पर मोहित हो गई। अब उसके कमरे में चारों ओर इंदल के ही चित्र लगे थे। उसने इंदल को वरण कर लिया और प्रण किया कि वह उसी से ब्याह करेगी। अब समस्या ये थी कि वह इंदल को अपने प्यार का पैगाम कैसे भिजाये? वह जानती थी कि इंदल के चार चार ब्याह हो चुके अत: वह उसके पैगाम पर ज्यादा तवज्जो नहीं देगा। उसे अपने रूप का अभिमान था, वह जानती थी कि उसकी एक झलक पाकर कोई भी दीवाना हो सकता है। इसके अलावा वह क्षत्रिय है, कौल करार करके बांधा जा सकता है।

यही सब सोच कर उसने एक दिन अर्ध रात्रि में अपना जादू साथ लेकर मुनि की दी हुई जड़ी मुंह में रखकर, महलों से गायब हो गई। वह रिजगिर के किले में पहुंची। वहां कुंवर इंदल पर उसकी पहली निगाह पड़ी। वह बहुत देर तक निहारती रही। उसके बाद अपना जादू डाला और प्यार से उसे जगाया। इंदल ने आंख खोलकर देखा तो देखता ही रह गया। उसने आज तक ऐसी सुन्दरी और ऐसा खिंचाव नहीं महसूस किया था। ऐसा लगा मानों उसका दिल धड़ककर पसली से बाहर आ जायेगा। उसे समझ नहीं आया कि यह सपना है या हकीकत, खिंचता चला जा रहा था। पद्मिनी बोली...युवराज, मैं सिंहलद्वीप के राजा सहत्रवर्मा की पुत्री हूं।

इंदल ने कहा... किसी राजकुमारी का चोरों की तरह से किसी पराये मर्द के महल में आना उचित नहीं है।

राजकुमारी बोली- राजकुमार, मैंने मन से आपको अपना पति वरण किया है।

राजकुमारी जी, इस बात की सूचना आप भिजा सकती थी। पिता से टीका भिजा सकती थी। आपको स्वयं नहीं आना था।

उसने कहा- हम आपकी वीरता के चर्चे सुन खिंचे चले आये। आपको एक नजर देखना चाहते थे, अब आ गए हैं तो क्या आप हमें बैठने को नहीं कहेंगे। उसने जादू का वार कर कहा....हम आपको चौपर खेलने का आमंत्रण देते हैं। आपको स्वीकार है?

इंदल ने सोचा, मना करता हूं तो राजधर्म और क्षत्रिय धर्म पर दाग लगता है। मना तो युधिष्ठिर भी नहीं कर पाये थे जबकि वह परिणाम जानते थे। अब खेलना ही पड़ेगा। सोच में देख राजकुमारी ने कहा ...हम केवल दो दांव लगायेंगे, देखो मां शारदा किसकी सहायता करती हैं। अगर आप जीतते हो तो हमसे अभी भांवर डालकर ब्याह करोगे और हम आपकी दासी बनकर यहीं पर रह जायेंगे और हम जीतेंगे, तो आपको सिंहलद्वीप आकर हमसे ब्याह करना होगा। दोनों ही दांव में राजकुमारी का हित हो रहा था। राजकुमारी ने गंगा बीच में रखकर कहा...युवराज आप वचन दीजिए कि आप हमसे ब्याह करेंगे। इंदल ने सोचा अगर यह ब्याह रचाकर यहीं रहना चाहती है, तो अच्छा है हम सवरे-सवेरे मां को एक और बहू से मिलवा देंगे। इंदल ने गंगा की सौगन्ध

ले ली।
दोनों ने चौसर खेलना शुरू किया पहला दांव चला इंदल और उसके पौ बारह पड़े। राजकुमारी के काना तीन पड़े। दो-दो बार की बाजी में इंदल की जीत हुई। उसने कहा राजकुमारी जी, ...आप बाजी हार गई, उसने गहरी सांस लेकर कहा... हां दिल तो हम पहले ही हार चुके थे, अब बाजी भी हार गए। आप अभी भांवर डाल लीजिए।
इंदल ने कहा...सवेरा होने पर पंडित को बुलाकर ब्याह रचायेंगे, तो वह बोली हम तो अभी भांवर डालेंगे। उसने झट से इंदल के शाही दुपट्टे से अपनी रेशम चूनर को मिलाकर गठबंधन किया और साथ लाई गुगल की गांठ में आग लगाकर फेरे लेने लगी। तीन फेरे लगने के बाद उसने गठजोड़ का दुपट्टा उसके गले से खींच लिया और बोली...कुंवर इंदल, हम इस तरह चोरी से आपकी रानी नहीं बनेंगे। इसके लिए आपको सिंहलद्वीप बारात लेकर आना पड़ेगा। ये गठजोड़ा उस दिन का इंतजार करेगा। अगर आप सच्चे वीर हो तो मुझे ब्याहने आना। कुँवर इंदल तुम्हें आना है, अपनी मां मछला के दूध की, तुम्हें आना है रानी मल्हना के दुलार, की अगर तुम तीन मास में नही आये और अपने वचन से फिरोगे, तो समझो तुम महलों में भोजन नहीं गौ का मांस खाओगे। जो तुम अपनी तिरिया की सेज पर पांव रखोगे तो समझो अपनी माता की सेज पर चढ़ रहे हो। फिर यह अधब्याही पत्नि तुम्हारी बहादुरी सारे संसार को बतायेगी और वह हंसती हुई चली गई। उसकी हंसी ऐसी थी मानों किसी वीणा के तार झनझना उठे हों।
इंदल समझे तब तक वह गायब हो गई। कानों में हंसी की मधुर आवाज गूंज रही थी। उसने यह बात किसी को नहीं बताई, पर रात दिन उसकी बातें याद आती थीं। ऐसे ही एक मास बीत गया। उसकी उदासी देख ऊदल ने कारण पूछा......अब इंदल ने सारी बात बताकर कहा...अब मैं क्या करुं। उसकी वह व्यंगभरी हंसी मेरा पीछा नहीं छोड़ती है। काका उसने मुझे कसमें दी हैं मैंने उससे गंगा तुलसी करी है, समय पूरा हो रहा है, मैं वचन से पीछे कैसे होऊं? उसने चुनौती दी है, मुझे ललकारा है।
ऊदल ने जाकर सारी बात आल्हा को बताई। उन्होंने इंदल को कैद करा दिया और तल्हन से कहा कि वह कड़ी चौकसी रखे। आल्हा ने ऊदल से कहा कि मेरा आदेश है कि तुम इंदल की सहायता नहीं करोगे। कुछ दिन में सब भूल जायेगा। ये भी कोई बात है कि समुद्र पार से आकर जबरदस्ती भांवर डाले और चली जाये। गई तो जाने दो, कौन सा क्वांरा बैठा है?
अब इंदल को बतख महल में कैद करा दिया गया जहां पर सात तालों के भीतर वह रहता है। भारी भरकम पहरा है। उसने भी विधि का विधान मान लिया, पर जैसे ही तीन माह पूरे हुए उसने खाना-पीना छोड़ दिया क्योंकि राजकुमारी ने कहा था अन्न खाओ तो गौ मांस खाये। चार दिन से उसने अन्न नहीं खाया, वह मन से बहुत दुखी है, बस देवि मां का ध्यान करता है। उसने कहा... मां मैं क्या करूं मुझे आप राह दिखाइए। मेरे लिए जो उचित हो मैं वही करूंगा। आप मुझे मार्ग दर्शन कीजिए।
उधर सिंहलद्वीप की राजकुमारी ने अब तक तो इंतजार किया, पर इंदल के न आने से वह बहुत दुखी हुई और वह दुर्गा मां की साधना में बैठ गई उसने अन्न-जल त्यागकर घनघोर तप करना आरंभ कर दिया। अब देवी मां का आसन डोला, आखिर वह भी तो मां हैं। राजकुमारी के सतीत्व की रक्षा करना थी। इंदल को मां ने वचन दिया था कि जब भी तुम पर विपदा आयेगी मैं सहायता करुंगी। अचानक रात को कमरे में प्रकाश फैल गया। मां कालिका साक्षात् उसके सामने खड़ी, इंदल पैरों में गिर पड़ा।

मां ने कहा... वत्स उठो और अपने कर्तव्य का पालन करो। तुम सब कौरवों पांडवों का पुर्नजन्म ही आपस में लड़ने के लिए हुआ है। अभी तुम सभी के कर्मों का लेखा जोखा बाकी है जिसे पूरा करो। इस जन्म में युद्ध ही तुम्हारा धर्म है। जब तक सभी का अभिमान चूर नहीं हो जाता एक दूसरे को समाप्त नहीं कर लेते हो तब तक लड़ते रहो। यही तुम्हारे इस जन्म की नियति हैं। तुम गुरुगोरख नाथ के पास जाओ वह तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं। वही आगे तुम्हारा मार्ग दर्शन करेंगे।
''एक दिन इसी तरह धर्म की रक्षा के लिए वासुदेव जी को कारागार से निकाला था, आज उन्हीं वासुदेव के वचन की रक्षा के लिए तुम्हें निकाल रही हूँ।" जाओ वत्स रात्रि समाप्त होने से पहिले तुम गंगा की तलहटी पार कर जाओ। तुम्हारा घोड़ा तुम्हें किले के बाहर मिल जायेगा। देखते ही देखते ताले खुल गए, पहरेदार सो गए। इंदल ने शीश नवाया और चल दिया। नगर के बाहर घोड़ा लेकर कजली वन गया, वहां गुरुदेव की सेवा पूजाकर उनकी समाधि खुलने का इंतजार करने लगा। चार दिन बाद गुरुदेव ने समाधि खोली। इंदल चरणों में गिर गया और सारी बातें बताकर कहा.... अब आप ही मेरा मार्गदर्शन कीजिए।
गुरुदेव ने समझाकर, हर तरह से परीक्षा लेकर उन्होंने अपने जादू से उसे ऐसा बना दिया कि कोई उसे पहचान ही नहीं सकता था। उसके बाद बीन मुंदरिया देकर कहा...इसे बजाने पर छत्तीसों राग रागिनी निकलेंगे, जिसकी आवाज से सभी मोहित हो जायेंगे। ये सोंटा है जिसके द्वारा तुम हर अस्त्र-शस्त्र का सामना कर सकोगे। इससे तुम्हारी कभी हार नहीं होगी। इस जादुई बटुआ में कुछ अभिमंत्रित सरसों व जादू की गोलियां हैं जो समय-समय पर काम देंगी। ये पवन खड़ाऊं, जिसे पहनकर कुछ क्षणों में पहुंच जाओगे, लंका पहुंचकर उतार देना वापस आ जायेंगी। पुत्र इस समय सिंहलद्वीप में सूखा पड़ा है। तुम जाकर स्वर्णबाग में डेरा देना और बाग के सूखे कुंडसरोवर में यह सफेद गोली वरुण देव की प्रार्थना करके डाल देना, वह भर जायेगा। इस पुड़िया की भभूति शाकम्भरी मां का सुमरन करके बाग के उत्तरी हिस्से में फूंक देना। वह हिस्सा हरा-भरा हो जायेगा। उसके बाद का काम तुम्हें ही करना है।
इंदल गुरुदेव को नमन कर बाहर आकर खड़ाऊं पहनकर लंका में आकर बाग से काफी दूर उतर गया और खड़ाऊं उतार कर उन्हें नमन कर बोला... आप गुरुदेव के पास जाइए। इंदल ने उचित सी जगह देखकर पेड़ के नीचे अपना आसन लगा लिया।
मालिन ने कहा...महाराज, यहां सूखे पेड़ के नीचे बैठकर क्या करोगे। पीने को मीठा पानी नहीं; चारों ओर हाहाकार मचा है।
इंदल ने कहा...मां शारदा सब ठीक करेगी। वह कुछ देर तक वरुण देवता का ध्यान करता रहा और फिर गुरुदेव का ध्यान करके उसने सफेद गोली उस सूखे कुंडसरोवर में डाल दी। वह एक बड़ा सा कुंड था जिसे बाग की शोभा के लिये बनाया गया था। कुछ ही देर में उस कुंड में कुछ नमी आई फिर वह नमी चारों ओर बढ़ने लगी। तालाब के बीचों बीच कुछ पानी नजर आया और फिर वह थोड़ा सा पानी देखते ही देखते बढ़ने लगा और सरोवर शाम तक पानी से लबालब भर गया। सभी लोग यह नजारा देखने के लिए उमड़ पड़े। मालिन सभी को बता रही है कि योगी बाबा के आने से यह चमत्कार हुआ है। सभी लोग तालाब को देख रहे थे, कि इंदल ने भभूति को उत्तरी छोर की क्यारियों की ओर फूंक दिया। अब तो चमत्कार हो गया। उस ओर की क्यारियों में लगे पौधों की काया बदलने लगी। धीरे-धीरे हरे हरे पत्ते निकलने लगे और दो दिन में वे

क्यारियां हरी भरी हो गयीं। पौधों में रंग बिरंगे फूल खिल गये। इस चमत्कार की खबर जैसे ही नगर में फैली, तो सारा नगर बाबा की जयकार करता हुआ दर्शनों के लिए दौड़ पड़ा। सभी नगरवासी खुशी से फूले नहीं समा रहे हैं। मालिन ने दौड़कर यह सारी सूचना राजा को दी।
राजा सहत्रवर्मा अपने रथ पर दूध की बंहगी भर के, मेवा के थाल सजाकर, रानी को साथ ले जोगी के दर्शन को आये।
जोगी की परिक्रमा कर राजा मोहित होकर बोले....या तो आ गए कैलासी, या आये राम अवतार।।
इंदल के पास नारियलों का ढेर लगा है। माल खजाना राजा चढ़ा रहे हैं। इंदल ने कहा... महाराज ये माल खजाना हमें नहीं चाहिए है। हम देश-देश घूम के योग की तैयारी करते हैं। राजकुमारी ने जब जोगी के बारे में सुना तो वह भी सखियों के साथ दर्शन को चल दी। उसका दिल कह रहा है कि कुंवर इंदल बागों में आये हैं। उसकी बांयीं आंख फड़क रही है। राजकुमारी ने इंदल की परीक्षा लेने के लिए एक दासी को अपने जैसा सिंगार कराके सारी बात समझाकर भेजा। वह पीछे रही और राजकुमारी बनी दासी ने चरण छूकर कहा...योगी महाराज, भोजन ग्रहण कीजिये। इंदल ने नेत्र खोले सामने किसी और को देख संशय में पड़ गया कि अगर यह राजकुमारी है, तो वह कौन थी? क्रोधित होकर बोला... हमसे ठिठोली करती हो, मैं भोजन ग्रहण नहीं करुंगा।
दासी-मैं महलों की राजकुमारी हूं, आप मेरा अपमान नहीं कर सकते। आप मेरे द्वारा लाया हुआ उपहार स्वीकार कीजिये।
इंदल को क्रोध आ गया उसने सोंटा उठाकर, दो तीन जड़कर कहा...दासी होकर मुंह जोरी करती है। अभी श्राप दे दूंगा तो कुबड़ी हो जायेगी। वह चरणों में गिरकर बोली ...महाराज क्षमा करो, राजकुमारी को सारा हाल बताया। राजकुमारी डोला से बाहर निकली और झूमती हुई चलने लगी। ऐसा लग रहा था, मानो कामदेव की पत्नि रति चली आ रही है। बाग में एक अजीब सा माहौल बन गया। मंद-मंद पवन मदमाती होकर बहने लगी, पक्षी चहचहाने लगे, मोर नाचने लगे। राजकुमारी को इंदल पहचान गया, पर नेत्र बंद किये बैठा रहा। राजकुमारी ने शीश नवाकर कहा...महाराज दासी पर कृपा कीजिये। इंदल ने नेत्र खोले, आंखे उलझ गईं। वह देर तक इसी प्रकार खोये रहे, तभी राजकुमारी बोली... कुंवर आपने रूप ऐसा बनाया है कि पहचाना नहीं जा रहा है। इंदल ने कहा...तुम्हारे कारण ही यह सब करना पड़ा। मेरा परिवार मुझसे रूठ गया। उनको बिना बताये ही चला आया हूं।
स्वामी चिंता ना करिये? दिन बाग में काटना और रात महलों में आकर आराम करना। मुलाकात कर वह चली गई।
इंदल ने दिन में बीन बजाकर सारा नगर घूम लिया और सारा भेद ले लिया कहां पर क्या है? कैसा है? ऐसे ही वह दिन भर नगर घूमता और रात को राजकुमारी अपने जादू से दासियों की नजर बांधकर उसे अपने पास ले जाती थी।
पहले दिन इंदल ने कहा... मैं किसी कंवारी कन्या के पलंग पर नहीं चढ़ूंगा ना ही उसका स्पर्श करूंगा, तो राजकुमारी ने कहा ... कुंवर जी मैं क्वांरी कहां हूं? मैं तो आपके साथ तीन फेरे ले चुकी हूं। इसलिए आधी पत्नि तो बन गई हूं।
इंदल ने कहा... फिर भी! हम आपस में बैठेंगे, बात करेंगे, पांसा खेलेंगे, पर पत्नि का हक सात भांवर डालने के बाद ही दूंगा। यह मेरा क्षत्रिय धर्म है। उसी धर्म की खातिर मैं

तुमसे वादा निभाने आया हूँ। पन्द्रह दिन बाद पूरनमासी आई और राजकुमारी हमेशा की तरह फूलों से तुली, पर यह क्या? जहां डलिया भर फूल में काम हो जाता था, वहां पर मालिन फूल चढ़ाकर हार गई पर तराजू ना उठा। अब मालिन ने हारकर पंसेरी का बांट चढ़ा दिया तो पलड़ा उठ गया। मालिन घबराकर राजा के पास दौड़ी गई अर्ज किया....महाराज, महारानी ने आपको महलों में बुलाया है। राजा महल में आकर बोले महारानी क्या बात हो गई?

महारानी ने कहा...महाराज खता माफ हो। आज तो सारी बगिया के फूल चढ़ाने पर भी राजकुमारी का पलड़ा नहीं उठ रहा है। राजकुमारी इतनी भारी कैसे हो गई? उसका सत्त कैसे डिग गया? कहीं कुछ ऐसा तो नहीं हो रहा जो हमें ना दिख रहा हो?

महाराज ने कहा ... महारानी जी, आप परेशान मत होइये। समुद्र पार करके आने की कौन हिमाकत करेगा? हम अभी कुटनी को पता लगाने के लिए तैनात करते हैं। वह दो दिन में सारी बात सामने रख देगी। दरबार में आकर राजा ने कुछ जासूस दासियों को बुलाकर कहा ...जो भी महलों में आने वाले का पता लगायेगा उसे मुंह मांगा इनाम दिया जायेगा।

एक अइयारिन जो जादू में बहुत होशियार थी, उसने पता लगा लिया कि बाग में रहने वाला जोगी रात को महलों में आता है। उसने जाकर राजा को सारा हाल बताया। राजा ने हुकुम दिया कि ....सौ सैनिक जाकर उसे बांध कर लायें।

सैनिकों को आता देख इंदल सारा माजरा समझ गए और सबको गुरूदेव के सोंटा ने मारकर भगा दिया।

राजा ने जटावर्मा से कहा... वह योगी अस्त्र-शस्त्र का बड़ा खिलाड़ी लगता है। तुम अपनी सेना लेकर जाओ और उसे बांधकर लाओ। जोगाजित ने जाकर उसे ललकार कर कहा...रे जोगी तू कौन है? यहां पर क्यों आया है?

इंदल ने कहा .. नाम पूछने में क्या रखा है? मेरी शस्त्र विद्या का मजा ले, यह कहकर वह राजकुमार पर टूट पड़ा। अमर गुरु का सोंटा मार-मार कर उसने दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये। बहुतों को मार डाला और बहुत से अपने हथियार छोड़कर भाग गए। राजकुमार भी उसके सामने ना टिक पाया, उसके सभी हथियार विफल हो गए। वह भी अपनी जान बचाकर महलों में वापस आ गया।

राजा के पास शिव जी का दिया हुआ ब्रह्म फांस नामक हथियार था। ‘‘ब्रह्म फांस मंत्रों से अभिमंत्रित ब्रह्म गांठ लगी हुई जनेऊ की तरह एक रस्सी होती है, जो सामने वाले पर जाकर लिपट जाती है। और हर क्षत्रिय, शूर वीर और हिन्दू उसका आदर करते हैं। एक बार उसमें बंधने पर उसे सभी उसका मान रखते हैं। उसे तोड़ने का प्रयास कतई नहीं करते हैं। ‘‘ राजा ने वह हथियार दे कर कहा...यह ब्रह्म फांस ले जाओं, अगर वह कोई क्षत्रिय वीर होगा, तो इसका मान रखकर चुपचाप बंधा चला आयेगा।

जटा वर्मा ने उसे ललकारा और सामने आने पर वह अस्त्र छोड़ दिया। ‘‘इंदल ने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि राजा के पास ब्रह्मास्त्र भी होगा। उसने उसे आते देखा और सोचने लगा कि अब तो इसका मान रखना ही पड़ेगा। बड़े-बड़ों ने यहां तक कि भगवान ने भी इसका मान रखा है। मुझे भी रखना होगा। मैं कोई भी मर्यादा नहीं तोड़ूंगा। और यही सब सोच कर इंदल ने अपना सिर झुका कर उसे प्रणाम किया और उसमें बंध गया। इंदल को बांध कर दरबार में लाया गया।

राजा ने कहा ... अरे जोगी, क्यों जोगी के नाम को बदनाम कर रहा है? तू कौन है? कहां

से आया है?
इंदल ने कहा...राजन मैं महोबा के आल्हादेव का पुत्र हूं, आपकी बेटी ने मेरे साथ जो किया वह सुनिये.......इस प्रकार सब कुछ बता कर कहा, उसके बाद मुझे यह जोगी का वेश लेना पड़ा और मेरा कुटुम्ब परिवार भी मुझसे खफा हो गया है। मैं उनको बताये बिना ही अपने वचन का पालन करने यहां पर आया हूं। मेरे परिवार वाले तो यह भी नहीं जानते कि मैं यहां पर हूं।
राजा ने क्रोधित होकर कहा... अगर यह सब हुआ था, तो वीर राजा की तरह बारात लेकर आना था, चोरों की तरह पराई तिरिया से मिलने की क्या जरुरत थी? आपने अपराध किया है और उसका दंड आपको मिलेगा।
इंदल ने कहा ...महाराज, मैंने कोई अपराध नहीं किया है। वह पराई तिरिया नहीं है। वह मेरी अधब्याही पत्नि है और अपनी पत्नि से मिलना कोई अपराध नहीं है। अपराध तो आप कर रहे हो मेरी पत्नि को मुझसे दूर करके।
राजा....इसके हाथ पांव गले में हथकड़ी बेड़ी डालकर नवरंग तिलस्म में डाल दो। लखीरा-फकीरा जादूगर को चौकी पर बैठा दो। चिड़िया भी पर ना मारे। यह तिलस्म बड़ा रहस्यमय था जिसमें नौ रंगों का प्रयोग था, उसमें घुसने वाला इन रंगो के चक्कर में फंसकर रह जाता था। राजा का गुस्सा इस बात का था कि मेरे अजेय कहलाने वाले दुर्ग में यह कुंवर कैसे आ गया?
रानी ने कहा.... महाराज हमें बेटी का ब्याह करना है, तो अब घर आये वर का निरादर ना करें हमें भगवान शिव का आर्शीवाद मान कर स्वीकार करना चाहिये। फिर हमारी बेटी ने स्वयं उसके महलों में जाकर उससे ब्याह किया है। उसी को दिये वचन की खातिर वह अपनी जान जोखिम में डालने आया है। इससे पता चलता है कि वह बहुत वीर है। जिस सहत्रवर्मा के सिंहलद्वीप में बिना मर्जी के कोई आ नहीं सकता, उसी में वह अकेला आ गया यह उसकी वीरता का प्रमाण है।
राजा ने कहा...महारानी तुम्हें बेटी के प्यार ने अंधा कर दिया है। दुनिया क्या कहेगी कि राजा सहस्रवर्मा अपनी बेटी का ब्याह न कर सका और घर घुसकर इज्जत पर नजर डालने वाले को राजा ने अपना जंवाई बना लिया। नहीं उसने मेरे महल में घुसने की हिम्मत की है। मैं उसे माफ नहीं कर सकता। अगर वह सीना तान कर बारात सजाकर फौज लेकर आता तो मैं खुशी-खुशी बेटी ब्याह देता, पर उसने जो किया वो माफी के काबिल नहीं है। रानी ने पूछा-फिर आप बेटी का क्या करेंगे?
राजा....मैं अभी अपने मित्र गुजरात के गजराजा को टीका भेजता हूं। उसके पुत्र गजलोहन के साथ राजकुमारी का ब्याह करूंगा।
पर उसका तो ब्याह हो चुका है और वह राजकुमारी से उमर में भी बहुत ज्यादा हैं। रानी ने कहा
राजा....तो क्या हुआ? वर की उमर नहीं वीरता देखी जाती है। इस बनाफर कुंवर के भी दो-दो बहुएं घर में बैठी हैं। राजा ने पाती लिख, मित्रता का वास्ता देकर टीका स्वीकार करने का अनुरोध लिखा और बहुत सा धन देकर नेगियों को गुजरात भेजा।
राजा ने मित्र का टीका स्वीकार कर लिया, हालांकि समय कम था, पर अपने इकलौते जंवाई मलखान को न्यौता भिजाया।
गजमोतिन ने कहा ... स्वामी, सिंहलद्वीप का जादू कठिन है। आप मेरे भाई का ब्याह कराकर, उसे सकुशल वापस ले आना। मलखान ने कहा ...रानी मैं आपकी बात याद

रखूंगा। मलखान अपनी सेना सहित बारात में शामिल हो गया।
राजकुमारी पर सख्त पहरा लगाकर उसके जादू को कील दिया फिर भी एक रात मौका पाकर वह इंदल से मिलने गई। ..इंदल ने एक स्त्री का सहारा लेकर कायर की तरह वहां से निकलने को मना कर कहा...आप मेरे काका को रिजगिर खबर भिजा दीजिए।
राजकुमारी ने वहां से आकर, कुंवर ऊदल के नाम पाती लिखकर अपने तोता के हाथ से रिजगिर को भिजा दी।
तोता पाती लेकर उड़ा पर जादुई पहरा था। उसे पकड़ लिया और राजकुमारी सोचती रही कि उसका संदेशा जा चुका है।
उधर आल्हा के सेवक ने आकर कहा ...महाराज, अनर्थ हो गया। किसी ने राजकुमार इंदल को गायब कर दिया है। उसकी हथकड़ी बेड़ी बिना खुले ही पड़ी हैं और कुंवर का पता नहीं है। उसे कोई हरण करके ले गया। ढेबा को पत्रा में भी कुछ समझ ना आया।
ऊदल ने कहा.... इंदल अकेला ही सिंहलद्वीप तो नहीं चला गया, तो आल्हा झट बोला- नहीं वह समुद्र पार करके नहीं जा सकता। वहां सहस्त्रवर्मा के नागों का समुद्र में पहरा रहता है। वहां का जादू ऐसा है जरा सी चूक पर बकरा, भेड़ा मुर्गा बना देते हैं।
ऊदल ने कहा..दादा, हमें इंदल को खोजना होगा। उसे समझा कर घर लाकर फिर उसकी भांवर पद्मनी से करना पड़ेगी। वह अपने वचन के पालन को लेकर परेशान है। हमें उसका वचन पूरा करने में सहायता करना चाहिए। माना, सागर में सहस्त्रवर्मा के बड़े-बड़े जहरीले सांपों की चौकी थी। जिनसे बचकर सागर पार नहीं जा सकते, पर जादू की ताकत से बचकर निकला जा सकता था।
गुजरात से बारात आने के कारण इस समय उन नागों को वहां से दूर भेजा और बारात सहस्त्रवर्मा की भेजी नौका से सागर को पार कर रही है। तंबू में पहुंच कर मलखान ने रस्म के अनुसार पाती लिखी कि हम बारात ले आए हैं और एपन बारी भेज रहे हैं। अब आप बारात द्वार पर आने का न्योता भेजिए, उसके बाद नीचे अपने दस्तखत कर सिरसा की मुहर लगा दी।
महाराज पाती पढ़कर, नीचे सिरसा के मलखान के दस्तखत देखकर सनाका खा गए। जटावर्मा से बोले-पुत्र, हमारे साथ छल हुआ है। सिरसा का मलखान लोहा के साथ आया है। वह लोहा को ब्याहने नहीं, इंदल को छुड़ाने आये हैं। वह सब मिलकर हमें मूर्ख बना रहे हैं। हो सकता है आल्हा ऊदल भी हों। कुंवर अपनी सेना को तैयार करो और उन सब को बंदी बना लो।
दूसरे दिन दोनों ओर से युद्ध होने लगा। जटावर्मा और कुंवर लोहा की लड़ाई हो रही है, वीरवर्मा और मलखान भिड़े है। लोहा का तो नाम ही लोहा है। उसके उसके शरीर में तलवार का असर नहीं हो रहा। सभी शस्त्र चलाकर जटावर्मा देख चुका है। वह सोच रहा है.....बज्र की काया है बैरी की, तिल भर भी न गड़े तलवार। काया खटके है लोहा सी, खोपड़ी तांबा सी टन्नाय।।
अब जटावर्मा ने अपने पिता का दिया हुआ नाग अस्त्र का वार किया और सब ओर सांप ही सांप बिलबिलाने लगे। सारी सेना में खलबली मच गई। मलखान और लोहा भी अपनी सारी तैयारी करके आये थे। इसके अलावा लोहा तो स्वयं नागबनी का स्वामी रह चुका है। उसने अपना वार चलाकर सभी सर्पों को उनकी कुंदरू माता की कसम देकर कहा कि वह युद्ध भूमि से चले जायें। देखते ही देखते मैदान खाली हो गया। उसके बाद जटावर्मा ने अपने जादू का वार किया और सरसों फेंककर सभी सेना को बकरा

भेंढ़ा बना दिया। मलखान ने अपने गुरुदेव की दी हुई पुड़िया फूंक दी सारी सेना फिर से मानव बन गई।
तभी लोहा ने कहा... राजकुमार तुमने अपने सब वार कर लिए अब हमारी वारी है। लो ये मेरा वार। उसने सांग चला दी। उसने अपनी ढाल अड़ाकर वार बचाया पर उसकी ढाल कट गई। दूसरा वार लोहा ने तलवार किया जिसे वह सँभाल न पाया और लड़खड़ाया पर फिर लड़ने लगा। दोनों के बीच घमासान हो रहा है। कभी ये भारी कभी वह। फिर एक वार लोहा ने कस कर तेगा का किया जिसे वह झेल न सका और नीचे आ गया। लोहा उचककर उसके सीने पर चढ़ बैठा और सैनिकों ने उसे बंदी बना लिया।
उधर मलखान और वीरवर्मा का युद्ध है। जो अस्त्र-शस्त्र वह चलाता है, मलखान काट रहा है। चार पहर से दोनों का युद्ध हो रहा है। वीरवर्मा हौदा की आड़ ले के मलखान का वार बचा ले जाता है। उसकी इस पैंतरे बाजी से परेशान होकर मलखान ने अपने घोड़ा को हवा में उछाला और उसके हौदा पर दो टाप टेक कर तेगा का वार किया। उसके हथियार छूट कर गिरे। उसने मलखान को मल्ल युद्ध के लिए ललकारा। वह आपस में कुश्ती लड़ रहे हैं। बीच-बीच में वह वीरवर्मा अपने जादू के कारण दो-दो नजर आ रहा है। इस कारण मलखान उसकी छाया को पकड़कर धोखा खा जाता है, तब तक वह मलखान को दबोच लेता है। सूर्य अस्ताचल को जायगा तो जादू की ताकत बलवती हो जाती है। लोहा सोच रहा है सूर्यास्त के पहले बंदी नहीं बनाया तो फिर मुश्किल होगी। लोहा ने कहा...बड़ा लड़ैया सिरसा वाला, जिसकी जोड़ नहीं संसार। ताको दुश्मन ऐसे अड़ रहो, अब क्यों राखी देर लगाय।
मलखान को जोश आ गया और उसने शारदा मां का ध्यान कर उसे दोनो हाथों से उठाकर दस हाथ ऊपर गेंद की तरह फेंक दिया और उसके नीचे आते ही उसे दबोच कर उसकी मुश्कें बांध ली। अब दोनों राजकुमारों को लेकर तंबू में आ गए।
उधर सहस्त्रवर्मा सोच रहा है, दुश्मन तो सबल है, अब क्या किया जाये? राजा अपने आप में बहुत छटपटा रहा है। मलखान और लोहा से क्रोधित है कि उसके पुत्रों को बंदी बनाकर अपमानित किया है। वह बदले की आग में जल रहे थे, वह शस्त्र नहीं उठा सकते, न ही रणक्षेत्र में जा सकते हैं। उसने अपने कुल देवता नागराज को वचन दिया है कि वह हथियार नहीं उठायेंगे।
उन्हें याद आया कि इंदल से भी लड़कर पार पाना बहुत कठिन है। उनके दिमाग में एक युक्ति आई कि तिलस्म में बंदी बने इंदल को पता नहीं है कि बारात में मलखान भी आया है, तो क्यों न दोनों को लड़वा दिया जाये, जो बचेगा सो देखा जायेगा। उन्होंने तिलस्म के दरोगा से कहा बंदी को दरबार में हाजिर करो। दरोगा इंदल को लेकर हाजिर हो गया। अब तक इंदल को पता चल चुका था कि लोहा बारात लेकर आया है।
राजा ने कहा... देखो वत्स, हम आपसे एक सौदा करते हैं। राजकुमारी पद्मनी से ब्याह के लिए कांसों का राजा गजलोहा सेना लेकर आया हैं उसने हमारे पुत्रों को छल से बंदी बना लिया है। अब अगर तुम उससे युद्ध करके हमारे पुत्रों को छुड़ाकर विजय दिलाते हो, तो हम बेटी का ब्याह तुमसे करने को तैयार हैं,
इंदल ने कहा... महाराज क्षमा करें, आप स्वंय क्यो नहीं लड़ने जाते हो? पुत्र आपके बंदी हैं आप छुड़ाइये।
राजा....राजकुमार, हमने कभी युद्ध न करने की कसम ली है। इसीलिए हम आप जैसे वीर से अपने पुत्र और राज्य की रक्षा के लिए सहायता मांग रहे हैं। शर्त ये है कि जब

तक हमारे पुत्र कैद से न छूटें आप अपना परिचय लोहा को नहीं बतायेंगे।
इंदल.. महाराज आप शिवलिंग के ऊपर हाथ रखकर, कसम खाकर हमें विश्वास दिलाइये कि आप अपने वचन का पालन करेंगे।
राजा ने कसम लेकर वचन दिया। इंदल ने कहा महाराज मुझे एक बार राजकुमारी से मिलना है, मजबूरन अनुमति दी।
राजकुमारी से इंदल ने कहा- एक वीर की पत्नि की तरह हंसकर मुझे विदा करो। पहली बात मैं रण में जीतकर तुम्हें लेने आऊंगा। दूजी बात अगर मैं रण में वीर गति पाऊं तो मेरा मृत शरीर लेकर तुम मेरी मां के पास चली जाना। सभी शस्त्र बांधकर माता-पिता गुरु, मां शारदा का ध्यान कर चल दिया। हाथ में गुरुदेव का सोंटा है जिसकी मार अचूक है।
रण में जाकर उसने ललकारा-लोहा मेरे सामने आये। उसने राजकुमारों को बंदी कैसे बनाया?
लोहा सामने आकर बोला...अरे जोगी काहे अपना जीवन बरबाद करता है। एक तो तूने नई उमर में जोग ले लिया, दूजे जोगी बनकर युद्ध के मैदान में आ गया। जा वापस चला जा हम जोगी का वध नहीं करते हैं।
इंदल ने कहा...बक-बक मत कर, ये ले वार संभाल और सांग चला दी। लोहा ने उसका वार झेला वार जोरदार था उसका पूरा बदल झन्ना गया। उसने भी पलट वार किया। लोहा सोच रहा है कि यह कैसा जोगी है? जो हर तरह की युद्ध कला का खिलाड़ी है। ऐसा लग रहा है कि स्वंय श्रीकृष्ण लड़ रहे हैं। अंत में हारकर इंदल ने गुरुदेव का ध्यान करके सोंटा का वार गजलोहन के सिर पर कर दिया और अन्ना कर उसका सिर फूट गया, लहू के फौहारे छूट पड़े, वह हौदा में गिर पड़ा। लहू के छींटे इंदल के चेहरे पर भी पड़े और उसका मुंह रंग गया। सभी चकित रह गए कि लोहा का सिर फोड़ने वाला कौन सा महावीर है?
मलखान दौड़ा आया और ललकारा...ऐ जोगी तेरा बुरा हो जाये, वह टूट पड़ा जैसे लंका में हनुमान। सिर पर झलरिया टोप के कारण मलखान का चेहरा ढंका है, जोगी बने इंदल के चेहरे पर लहू फैला है। इसी कारण वह एक दूसरे को नहीं पहचान रहे।
उसने तेगा का वार इंदल पर किया पर वह साफ बचा गया। दोनों ही वार पर वार कर रहे हैं। इंदल मलखान पर भारी पड़ रहा है। वह कभी जमीन पर तो कभी ऊपर, कभी दायें-बायें वार कर रहा है। जो जादू मलखान चलाता है इंदल उसे काट रहा है। मलखान सोच रहा है, बावनगढ़ में मेरी तलवार ओटने वाला क्षत्रिय नहीं, यह वीर कौन है? इसे मेरे हर दांव की काट आती है। इस पर गुरु की विद्या भी असर नहीं कर रही हे। उसने क्रोध में भरकर शिरोही मारी, वह बचा ले गया और इंदल ने उलट वार करके तलवार मारी, मलखान ने अपनी ढाल पर बचाया पर उसकी ढाल से फिसलकर तलवार मलखान की हथेली काटती चली गई। मलखान सोच रहा है कि आज तक ऐसा वार किसी ने नहीं किया कि मेरी हथेली चीर सके? यह वीर कौन है?
मलखान बोला...जोगी तूने सिंहनी मां का दूध पिया है और अच्छे शूर-वीर से युद्धकला सीखी है।
इंदल ने वारकर कहा...मेरे गुरु महोबा के कुवंर ऊदल और मलखान हैं। अब चौंकने की बारी मलखान की थी कि उसने किसको रण कौशल की शिक्षा दी है? उसने पूछा तुम कौन हो? इंदल ने तलवार भांजते हुए कहा....मैं उनका भतीजा हूं।

अब मलखान चौंककर बोला...जोगी तुम झूठ बोलते हो, पर रुको, युद्ध बंद करो मैं तुम्हारी बात की सत्यता जानना चाहता हूं।
इंदल ने अपना हाथ रोककर कहा...क्यों? वह बोला-क्योंकि मलखान तो मैं ही हूं और मेरा भतीजा इंदल रिजगिर में है। यह कहकर उसने अपना टोप उतार दिया। सामने मलखान को देखकर इंदल का बचपना वापस आ गया, उसके सब्र का बांध टूट पड़ा और वह मलखान से लिपट गया। काका आप अच्छे आये, यहां मैं अकेला फंसा हूं। मलखान ने सारी बात सुनी......
अब मलखान ने लोहा को बताया कि किस तरह से पद्मनी ने इंदल से ब्याह किया और उसके साथ क्या क्या हुआ। अब आप बताइये इस परिस्थिति में क्या किया जाये? तो सब कुछ जानकर लोहा ने कहा... जीजा श्री, अच्छा हुआ हमें सब कुछ पता चल गया नहीं तो हम आपस में ही लड़ते रहते। चलो कोई बात नही हम अपनी ना सही भान्जे की बहू ले कर जायेंगे।
मलखान सोच रहा है कि अब क्या किया जाये कि इंदल को कैद से रिहाई भी मिल जाये और दोनों का ब्याह भी हो जाये। अगर इंदल यहीं पर मलखान के तंबू में रुकता है तो यह वादा खिलाफी और दगा बाजी होगी। बनाफरों को दगाबाजी पसंद नहीं है। ऐसा करके उनकी वीरता पर कलंक लगेगा। इंदल ने बताया कि राजा स्वयं युद्ध करने नहीं आयेंगे और सारी बात बता दी।
मलखान... हम इस बात का फायदा उठा सकते हैं। वह इंदल को साथ लेकर राजा के दरबार में पहुंचा। राजा दोनों को साथ देख घबरा गए कि पुत्र इनकी कैद में हैं और ये दोनों एक हो गये। राजा ने उनको आसन पर बिठाया।
मलखान.. महाराज, चौंकिये मत, यह आपका बंदी है। हम इसे आपके हवाले करने आये हैं। कुंवर इंदल कभी किसी के साथ वादा खिलाफी नहीं करेंगे। आप इसे फिर से तिलस्म में कैद करा, दीजिए हम अपने बलबूते पर इसे कैद से छुड़ाकर ले जायेंगे।
दूसरी बात...हमारा आपका कोई बैर नहीं है। हम साले की बारात लेकर आये थे। यहां हमें पता चला कुंवर इंदल से आपकी बेटी पहिले ही ब्याह कर चुकी है। इस परिस्थिति में वह महाराज गजलोहा की भानेज बहू है, अब वो उससे ब्याह नहीं कर सकते, उन्होंने मनाकर दिया है। एक ब्याही हुई स्त्री का धोखा से किसी के साथ ब्याह करना नीति और धर्म के विरूद्ध है। ऐसा करके आप भी पाप के भागीदार बनेंगे, और आपकी बेटी भी इस रिश्ते को कभी स्वीकार नहीं करेगी। अब आप ही बताइये हम क्या करें?
महाराज इस परिस्थिति से सोच में पड़ गए। मैं लड़ नहीं सकता, बेटे बंदी हैं। इंदल मलखान और लोहा तीनों एक हैं। इनसे लड़ना बहुत मुश्किल है। राजा को रानी की बात याद आई कि बेटी का ब्याह करना है, तो फिर यह खून खराबा करके बेटों की जान दांव पर ना लगाइये, बेटों को कुछ हो गया तो हम क्या करेंगे? बेटी को तो किसी न किसी के घर जाना ही होगा।
वह बोले.... ठीक है, हम कुंवर इंदल से राजकुमारी की भांवर डालने को तैयार हैं। आप बारात ले कर आ जाइये।
मलखान ने कहा...कुंवर इंदल तुम यहीं पर रहो हम बारात और सेना ले कर आते हैं।
राजा ने कहा... नहीं महाराज, आप ऐसा कहकर हमें शर्मिन्दा न कीजिये। आप कुंवर को ले जाकर कंकन पाटी करिये। दूसरे दिन बारात सजा कर सभी जाते हैं। साथ में राजा के दोनों बेटों को भी रथ में बराबरी से बिठाकर ले जाते हैं। द्वार पर सजन भेंट में

सहस्त्रवर्मा और मलखान गले मिलते हैं। तभी राजा दांव चला देता है। वह मलखान को नागफांस में कस लेता है, पर वह राजा को पकड़े रहा, जिससे राजा भी नाग फांस में बंधे हैं। वह अपना नाग फांस स्वयं ही समाप्त कर देते हैं।
इंदल ने कहा हम तीन भांवर ले चुके हैं, इस प्रकार इंदल पद्मनी के संग चौथी, पांचवी, छठी भांवर लेता है। सातवीं में उसका भाई जादू चला देता है। चारों ओर ततैया, चीलों का झुंड आ जाता है, पर इंदल के पास गुरुदेव का बटुआ था उसके प्रभाव से ये सभी मंडप से दूर रहे। यह देख मलखान बोला- कुंवर, ये बच्चों के खेल हैं जिन्हें बनाफर बचपन में खेलकर छोड़ देते हैं।
मलखान ने कहा...महाराज, कुंवर इंदल का ब्याह तो हो गया अब आप से मेरा एक निवेदन है कि ....युवराज गजलोहा के हाथ में कंकन बंधा है। और वह सारी रस्में करके यहां पर ब्याह रचाने आये थे। अब आप अपने ही परिवार की कन्या से इनकी भी भांवर डलवा दीजिये, ताकि आपकी बात भी पूरी हो जायेगी और आपकी दोस्ती भी रिश्तेदारी में बदल जायेगी।
महाराज को मलखान की बात पसंद आई और उन्होंने खुशी-खुशी अपनी भतीजी का ब्याह लोहा के साथ करने की अनुमति दे दी कुछ ही समय में उसे भी दुल्हन बना कर लाया गया और उसी मंडप में उनकी भांवर डाल दी गई।
राजा ने बहुत ही धूम धाम से दोनों बेटियों को विदा किया। सभी को बहुत सा दान दहेज दिया। सागर किनारे तक राजा स्वयं अपनी सेना सहित विदाई देने आये। सागर पार आकर सभी खुशी मनाते हुए जा रहे हैं। गुजरात आने पर लोहा ने मलखान से विदाई ली और अपने राज की ओर चल दिया। अब मलखान इंदल और बहु को लेकर रिजगिर की ओर चल दिये।
उधर ऊदल इंदल का पता लगाने गुरुदेव के यहां पर पहुंचे हैं। उन्होंने सारी बात ऊदल को बताकर कहा- मेरी शक्तियों को ले कर सिंहलद्वीप गया हुआ है। अब वह राजा की कैद में है। तुम उसके ब्याह की तैयारी करो।
इधर ऊदल सेना लेकर बढ़ते हैं, वहां से मलखान वापस आते है। एक दूसरे को अपनी आप बीती बताते हैं और खुश होते हैं।
आल्हा महाराज इंदल को डांटते हैं। इंदल ने माफी मांगकर कहा.....वह अब कभी भी अकेला कहीं नहीं जायेगा।
मलखान सिरसा को चले गए। बहु लेकर ऊदल महलों में आते हैं। सभी को खबर हो जाती है कि बहु आ रही है। चारों ओर मंगलाचार होने लगते हैं। मछला खुश होकर बहु का स्वागत करती है। सभी नेगचार होते हैं।

26-सिरसा की दूसरी लड़ाई

महोबा में माहिल का वर्चस्व बढ़ गया है। अब महोबा की राजनीति इन्हीं साधुओं के इशारे पर चल रही है। राजा परमाल तो वैसे ही हथियार नहीं उठाते थे। अब माहिल के कहने में आकर और भी पंगु बन कर रह गए हैं।
मलखान एक बहुत ही सुलझा हुआ व्यक्तित्व वाला राजा था। उसने अपने राज्य में बहुत ही अच्छी शासन प्रणाली लागू कर रखी थी। उसकी प्रजा हर ओर से सुखी थी। उसके राज्य में कोई भी चोर लुटेरा नहीं था। वह धार्मिक आयोजनों में भी शामिल होता था। उसकी न्याय प्रणाली के अन्तर्गत कोई भी कभी भी दरबार में अर्जी दे सकता था। न्याय विभाग वह स्वयं देखता था। वीरता के चर्चे समुद्र पार तक थे। ईरान इराक अफगान काबुल कंधार और मुल्तान के बहुत से व्यापारी भारत आते थे।
मलखान ने बंजर जमीन और उबड़ खाबड़ पहाड़ी हिस्से का कई मील का क्षेत्रफल, जो सिरसा की दिल्ली सीमा से लगा हुआ है। उस पर एक परकोटा खिंचवा कर बहुत ही सुन्दर किला बनवाया है। इसमें यूनानी शैली के बगीचे और महल बनवाये हैं, यूनान और ईरान के कारीगर आये हैं। किला के चर्चे हैं, राजा महाराजा देखने आ रहे हैं। माहिल को किला खटक रहा था।
दिल्ली जाकर माहिल ने कहा... महाराज, बस एक बात हमको खटक रही है। आस-पास के सभी राजा चर्चा कर रहे हैं कि मलखान ने दिल्ली की जमीन दबाकर किला बनाया है और पृथ्वीराज डर कर चुप हैं। महाराज ऐसी दरियादिली भी क्या काम की।
राजा...मलखान ने हमसे कुछ नहीं पूछा, हाँ! हमने सुना है कि उसने ऊबड़ खाबड़ जमीन पर बहुत सुन्दर किला बनवाया है।
माहिल....अरे महाराज, यह तो और भी अपमान की बात है। आपकी जमीन दबा ली और आप से पूछा तक नहीं। इसी कारण आपकी चारों ओर बदनामी हो रही है, यह तो आपका सरासर अपमान है। आप कुछ कीजिये महाराज; मलखान का सिर तो झुकाना ही पड़ेगा। उसके भाइयों ने भी आपको घोड़ा देने से मनाकर दिया और मलखान है कि आपकी जमीन पर किला बनाकर अन्य राजाओं को भोज करा रहा है और आपको न्योता भी नहीं दे रहा है। कहा जाता है कि इंसान के अहम पर चोट करो तो वह फौरन हरकत में आ जाता है। घोड़ा ना मिलने से वह बनाफरों से वैसे ही बुराई माने बैठे हैं, अब माहिल ने आकर आग लगा दी।
राजा ने कहा... हां आपकी बातों में कुछ-कुछ सत्यता नजर आ रही है।
माहिल.... महाराज आप तो उस किले को गिरवाकर अपनी जमीन वापस ले लीजिए। यही उसके अपराध की सजा है। उसके सहयोगी आल्हा ऊदल भी कनवज में हैं। महोबा के राजा चंदेल भी उनसे बहुत गुस्सा हैं। वह तो उनका नाम सुनना भी पसंद नहीं करते। गुप्तचरों ने सूचना दी है कि राजा जयचंद बहुत ही योजनाबद्ध तरीके से इस किले में आकर रुकने वाला है। उसके बाद मौका पाकर वह दिल्ली पर आक्रमण करेगा। इस कार्य में आल्हा ऊदल अगुवाई कर रहे हैं। यह किला आपके खिलाफ उनकी रण नीति का पड़ाव है। अगर समय रहते नहीं चेते तो फिर दिल्ली जयचंद की होने में देर नहीं है। मैं तो आपका भला चाहता हूं।
कहा गया है कि प्रभुता पाये काहि मद नाहीं। यही हाल पृथ्वी का भी था उसने बिना

कुछ सोचे समझे माहिल की बात का भरोसा करके अपने पुत्र पारथ से कहा कि वह अपनी सेना को सजाकर सिरसा जाकर मलखान से अपनी जमीन खाली करा ले।
पृथ्वीराज अपने हाथी भयंकर पर सवार हुआ, उसका पुत्र ताहराज, पारथराज और चंदनराज भी साथ हो लिये। भौंरानंद हाथी पर धांधू और इकदंता हाथी पर चौड़ा भी तैयार हो कर चल दिये। सेना सहित सिरसा के बाहर अपना डेरा डालकर पृथ्वी ने चौड़ा ब्राह्मण से संदेशा भेजा। उधर मलखान को गुप्तचरों ने सूचना दी कि पृथ्वीराज की सेना ने किला को घेर लिया है। यह सुनकर मलखान फौजें लेकर मैदान की ओर चला कि किले के बाहर आकर देखे कि माजरा क्या है। तभी चौड़ा ने किले के फाटक पर आकर कहा....मलखान, दिल्लपति का हुकुम है कि आपने जो किला बनाया है उसमें आपने बिना अनुमति के हमारी बहुत सी जमीन दबा ली है और अभी तक हमारी सेवा में हाजिर भी नहीं हुए हो। अब हमारा हुकुम है कि आप ये किला जल्दी से जल्दी गिरवा दें।
मलखान ने कहा... ब्रह्मण देव, ये किला हमने बहुत मेहनत से बनवाया है। जो जमीन ऊबड़ खाबड़ बेकार पड़ी थी। उस पर हमारे ही जानवर दस साल से चरते थे। तब तो कभी नहीं कहा कि वह जमीन आपकी है। जब हम साल भर से उसे समतल कराने में लगे थो तब भी नहीं कहा कि आपकी जमीन है और अब जब हमने उस पर महल तैयार करा दिया, तो वह जमीन आपकी हो गई। चलिये हमने मान भी लिया कि उसमें कुछ जमीन दिल्ली की है, तो हमारे आपके संबंध ऐसे हैं कि एक दूसरे के लिए इतना तो कर ही सकते हैं। आप चाहें तो हमसे उस जमीन के बदले किसी अन्य जगह पर उससे चौगुनी जमीन ले लें या जो भी मुआवजा हो वह ले लें। हम संबंधी हैं, हमें आपस में लड़ना नहीं चाहिए। आप कृपया उनसे हमारी ये बात कह दीजिए।
चौड़ा ने कहा... महाराज ने कहा है कि कोई सुलह नहीं होगी आप तो अपना किला गिरवाइए, अभी और इसी वक्त।
मलखान...हम दिल्ली वालों के अधीन नहीं हैं, फिर उसे गिराने वाले दिल्ली महाराज कौन होते हैं। हम ये किला नहीं गिरायेंगे।
चौड़ा बोला.. आप नहीं गिरायेंगे, तो हम गिरवा देंगे। या बारूद लगवा देंगे।
मलखान गरजा... ऐ ब्राह्मण, सावधान होकर आपनी औकात में रहकर बात कर। मेरे सब्र का इम्तहान न ले।
चौड़ा ने कहा... तेरा इम्तहान तो मेरी तलवार लेगी और उसने वार कर दिया। मलखान सावधान था वह घोड़ी पीछे हटाकर वार बचा गया। दिन भर युद्ध होता रहा। एक-एक कर दिल्ली के सिपाही गिरते गए और जो पांच हजार की सेना लेकर चौड़ा आया था, वह अकेला रह गया। मलखान ने जैसे ही चोट की चौड़ा की ढाल कट गई, हथेली में घाव हो गया। दूसरी चोट के करते ही हौदा कट गया और वह नीचे गिर गया। मलखान ने मारने को तलवार उठाई ही थी कि ख्याल आया विप्र का वध करना उचित नहीं। यही सोचकर उसने चौड़ा को बंदी बना लिया। मलखान को याद आया कि उसने ऊदल को जनाना वेश बनाकर मारा था।
वह बोला- ब्रहमणदेव को जनाना वेश धरने का बहुत शौक है, इसे जनाना वेश बनाकर डोला में बिठाकर भेज दो। सैनिकों ने उसे चुरियां, बिछियां, लंहगा लुगड़ी, माथे पर बिंदी, नथनी पहनाकर मांग भर दी। हाथ पांव और मुंह पर कपड़ा बांधके डोला में बिठाया।

डोला देख पृथ्वीराज ने सोचा-चौड़ा ने सिरसा का किला फतहकर लिया और सुंदरी का डोला भेजा है, जरूर कोई हूर होगी।
वह बोला... सुंदरी का डोला से उतरने के पहिले भेरी बजाकर स्वागत किया जाये। सैनिकों ने भेरी और तुरही बजाई, फिर पृथ्वी राज ने डोला के पास जाकर कहा..... हे सौन्दर्य की मलिका, आप अहिस्ता से बाहर आइये। यहां आप पूरी तरह सुरक्षित हैं।
कुछ देर तक कोई भी डोला से बाहर नहीं आया। तब पृथ्वी ने स्वयं पालकी का परदा हटाया और अंदर नजर पड़ते ही जड़ हो गया। जनाना वेश में हाथ पैर और मुंह बांधे चौड़ा बैठा था। ...अपनी हार और इस मजाक पर पृथ्वी आग बबूला होकर चीखा....मलखान तुमने मुझसे ठट्ठा करके अच्छा नहीं किया। द्वापर में द्रोपदी के मजाक के कारण महाभारत हुआ था। अब इस मजाक के कारण समस्त बनाफरों का नाश होगा। तुमने जिस सुंदरी का बहाना करके झूठा डोला भिजवाया है, अब मैं चौहान वंशीय पृथ्वीराज कसम खाता हूं कि अब मैं तुम्हारी बहन चंद्रावली का डोला महोबा से लाकर अपने इस अपमान का बदला लूंगा, तभी मेरे कलेजे में ठंडक पड़ेगी। आज से पूरा बनाफर वंश मेरा दुश्मन हैं। अब हम जब भी मिलेंगे, तो हमारी तलवारें बात करेंगी।"
उसने कहा पारथ अपनी सेना लेकर जाओ और उस किले को ध्वस्त कर दो। पारथ अपनी सेना ले कर सिरसा पर चढ़ आया। पारथ ने कहा ...मलखान अब तुम सम्हलो, तुम्हारा काल तुम्हारे सामने खड़ा है।
मलखान ने कहा....यह तो समय बतायेगा किसका काल आया है। आज आप में जितना बल है, सब दिखा दो। दोनों के बीच तलवारें चलने लगीं, दोनो की काया वज्र की है। इस तरह तीन दिन बीत गए हैं, कोई भी हार नहीं मान रहा है।
आज मलखान देवि मां के सामने बैठा है, पूजन करते हुए आधी रात बीत गई है, पर मां की ओर से कुछ इशारा नहीं मिल रहा है। उसने अपनी गर्दन पर तलवार रख कर कहा ... मां प्रसन्न होओ। भक्त की पुकार सुनो।
तभी उसे मां की वाणी सुनाई दी ... पुत्र किस कारण प्राण त्याग रहे हो?
चरणों में गिरकर कहा...मां तीन दिन से युद्ध हो रहा है, पारथ को पराजित नहीं कर पाये, पराजय का उपाय बताइये।
देवी की आवाज सुनाई दी...उसका शरीर वरदान के कारण दिन भर पत्थर का रहता है। कोई अस्त्र-शस्त्र असर नहीं करेगा। हां सूर्यास्त के बाद उसकी काया मानव की हो जाती है। तभी उस पर विजय पाई जा सकती है। यह कहकर देवी चली गई।
दूसरे दिन मलखान ने उससे दिन भर युद्ध किया और इस तरह से व्यूह रचना की थी कि शाम के समय वह तीव्रता से आक्रमण करे। अब शाम होने वाली है पारथ अपना घोड़ा मोड़ चल दिया। तभी मलखान ने कहा...धर्म नहीं है, यह क्षत्रिय को रण में धरे पिछारी पांव। बड़े वीर कहलाते हो और पीठ दिखाकर जा रहे हो। अभी तो मैं मोर्चा पर खड़ा हूं। यह सुनकर पारथ को ताव आ गया और वह गरजकर बोला...मैं लड़ने से नहीं डरता, ना ही पीछे हटने वालों में से हूं। अभी आपका मन लड़ने का है, तो लो उसने शिरोही का वार किया। पारथ धुन में यह भूल गया है कि देवी ने उसे सूर्यास्त के बाद लड़ने को मना किया है।
उधर मलखान वार बचा-बचाकर उसे उलझाये है और सूर्यास्त होते ही शैल चला दी। वार होते ही पारथ हौदा से गिर पड़ा और उठकर लंगड़ाते हुए मलखान पर वार किया। मलखान ने उसका वार झेल तलवार का उलट वार किया, उसका सिर कटकर दूर जा

गिरा। कटे हुए सिर से आवाज आई मलखान, तुमने मुझे धोखा से मारा, इसी तरह धोखा से तुम भी जल्द मारे जाओगे।
पृथ्वी बेटे का मरण सुनकर बहुत दुखी हुआ। रणभूमि से पारथ का शरीर मंगवाकर उसका उचित संस्कार किया और तंबू में आकर पांच पान का बीरा सोने की थाली में रखकर कहा.... है कोई वीर जो मलखान को बांधकर मेरे सामने लावे। किसी ने भी वीरा नहीं उठाया। तब पृथ्वी ने धीरन से कहा....मित्र तुम जाकर मलखान को किसी भी तरह से मेरे सामने लाओ।
धीरन ने वीरा खा लिया और हाथी पर सवार होकर पच्चीस सरदारों को लेकर चल दिये। फाटक पर पहुंच कर दरबानों से कहा... महाराज से कहो उनके मित्र धीरन देव मिलने आये हैं। दरबान ने कहा... महाराज, इस दरवाजे के बाद किले में हाथी ले जाने का हुकुम नहीं हैं। आप घोड़ा पर सवार होकर जा सकते हैं। दूसरे फाटक पर दरबानी ने कहा... महाराज यहां के बाद घोड़ा पर चढ़कर जाने का हुकुम नहीं है। अपने सभी सरदारों के साथ पैदल चले, उसके बाद मुख्य द्वार पर पहुंचकर दरबानी ने कहा महाराज, आगे हथियार ले जाने का हुकुम नहीं है, ना ही ये सरदार आपके साथ जा सकते हैं, धीरन सोच रहा है मलखान की शासन व्यवस्था का नाम सुना था आज देख लिया। वह दरबार में पहुंचा और मलखान को राम जुहार करी। मलखान ने आदर सहित उंचे आसन पर बिठाया। राजा ने चारों ओर देखकर उसके वैभव को निहारा, साक्षात् इन्द्र दरबार लग रहा था।
राजा ने कहा....महाराज, पृथ्वीराज का हुकुम है कि आप अभी उनके दरबार में हाजिर होयें। अगर आप बात मानकर साथ चलेंगे, तो सिरसा में बेधड़क राज्य करेंगे। हमने आपको लाने का वीरा चाबा है। आप नहीं चलेंगे, तो जग में मेरी हंसी होगी।
मलखान ने कहा....सुनिये महाराज, यह सिर केवल परमेश्वर के आगे झुकता है या जिसने इस संसार में जन्म दिया है। "जो क्षत्रिय होकर करे अधीनी, उसके जीवन को धिक्कार"। मैं जानता हूं कि पृथ्वीराज धोखा और छल करने में निपुण हैं। हम उनकी किसी भी बात का भरोसा नहीं कर सकते। हम तो सीधे रण भूमि में मिलेंगे।
धीरन ने कहा... वह अपने पुत्र शोक को भूलकर तुम्हE अभय दान देंगे। बस एक बार चल कर उनसे मिल लो।
मलखान ने कहा... महाराज, आप मित्र होकर गलत सलाह दे रहे हो। उनसे हमारे संबंध अच्छे थे, हम मित्र थे, फिर हमारे ऊपर सेना लेकर चढ़ाई करने वही आये थे, फिर हम क्यों मिलने जायें? सभी को एक दिन मरना है, हमें उनकी बातों में छल नजर आ रहा है। वह संबधी मानकर मिलना चाहते हैं, तो सिरसा दरबार में उनका स्वागत है, अन्यथा रणभूमि में मुलाकात होगी।
धीरन ने कहा... तुम अपने को वीर कहते हो तो फिर एक शर्त लगा लो। मैं सांग को धरती में गाडूंगा अगर तुमने एक हाथ से उसे उखाड़ लिया तो मैं चला जाऊंगा। राजा ने देवी मां का सुमरन करके सांग घुमाकर उछलकर धरती पर दे मारी, वह मूठ तक धरती में समा गई। मलखान ने सोचा राजा देवि का वरदानी है, उसने भी मां चण्डिका, मनियादेव और वीर आल्हा का स्मरण करके सांग को एक हाथ से पकड़कर खींच ली। मलखान की ताकत देखकर राजा सनाका खा गए और चुपचाप उठकर चले गए।
पृथ्वी को राजा ने सारा हाल सुनाकर कहा, वह बहुत वीर है, बिना लड़े नहीं मानेगा। दूसरे दिन मैदान में पृथ्वी ने कहा...ये किला धूल में मिला दूंगा। मैं राजानहु का वंशज,

पृथ्वीराज चौहान हूं, तुम जैसे हठी राजाओं को धूल चटा चुका हूं, लो वार सँभालो। मलखान ने वार ओटकर कहा...मैं जानता हूं, सातों बेटों को बांधकर बेटी की भांवर अपने भाई ब्रहमा से डलवाकर लाया था। इतना सुनकर पृथ्वी ने वार किया, चारों ओर बिजली सी कौंध रही है। उधर दोनों भाई अकेले सुलखान से लड़ रहे हैं। सुलखान बहुत बहादुरी से सामना कर रहा है। अपना बचाव करते हुए सुलखान ने चंदन का वार ढाल पर बचाया, पर हाथ में घाव आ गया, खून की धार बह निकली, पर वीरों को अपनी परवाह कहां? वह अकेला ही सेना पर भारी है। चंदन ने सांग चलाई, सुलखान ने वार बचाकर उलट वार चंदन पर किया। चंदन उस वार को ना झेल पाया और हौदा से गिर गया। सुलखान ने अपनी सांग फैंकी जो उसके सीने के पार हो गई और वह वहीं शांत हो गया। ताहराज ने देखा कि उसका भाई मारा गया, तो वह क्रोध में भरकर उस पर लगातार वार करने लगा, पर वह बड़ा लड़ाकू था। सारी सेना को नचा-नचाकर काट रहा है। ताहर उसका रण कौशल देख कर आश्चर्य चकित है। अचानक सुलखान ने अपने घोड़ा को छलांग लगाकर ताहर के हाथी के सिर पर टापों को टेक दिया और तलवार का ऐसा वार किया कि ताहराज अपने को ना सँभाल सका और ढाल फट गई। दूसरे वार में हौदा की रस्सी कट गई और ताहराज धरती पर आ गिरा, तभी मलखान ने घोड़ी से कूदकर छाती पर सवार हो मुश्कें बांधकर बंदी बना लिया। युद्धबंद हो गया। ताहर को लेकर दोनों भाई किले में आ गए। पृथ्वीराज ने सुना कि ताहर को बंदी बना लिया है, तो वह चिंतित हो गया।

दूसरे दिन पृथ्वी स्वयं आया। उसने कहा.. मलखान, तुमने मेंरे बेटे को बंदी बनाकर अच्छा नहीं किया। ये लो मेरा वार ओटो, उसने अपनी शिरोही चला दी। मलखान भी सतर्क था उसने अपनी ढाल अड़ाकर वार बचाया, दोनों ही एक दूसरे को बराबरी की टक्कर दे रहे थे। इसी तरह से लड़ते हुए दिन लौट गया, पर किसी ने हार नहीं मानी। दोनों ही रक्त रंजित हो चुके थे। मलखान ने अपने घोड़े को सात गज ऊंची छलांग लगाकर पृथ्वी के हाथी भयंकर के माथे पर टाप टिका दी और अपनी तलवार का ऐसा वार किया कि उसकी ढाल को कटकर फिसलता हुआ हौदा को काटता हुआ चला गया। अब तक पृथ्वी भी थक चुके थे, वह सँभाल ना पाये और हौदा पर ही लुड़क गए। उनकी तलवार छिटक कर दूर जा गिरी। मलखान ने गर्दन पर तलवार टिकाकर कहा.... महाराज, हम आपका दिल से आदर करते हैं, अपना रिश्तेदार मानते हैं। अब आप बताइये हम आपके साथ कैसा व्यवहार करें?

वह बोले.."तुम सब भांति समरथ हो ओ रणजीत बनाफर राय" हमने तुमसा अतुलित बली योद्धा नहीं देखा। तुमने साबित कर दिया कि.. तुम अजेय हो। हमें गर्व है कि तुम हमारे मित्र हो। बताइये हम आपके लिये क्या कर सकते हैं?

मलखान...महाराज, इस मित्रता को यादगार बनाने के लिए आप ताहर की दोनों बेटियों का ब्याह हमारे दोनों बेटे कुंवर जलशूर और बहोरन से कर दें। पृथ्वीराज एक पल के लिए सकपका गये, क्योंकि मलखान घुमा फिराकर उनसे उनकी हार का हर्जाना मांग रहा था। अभी ताहर उसकी कैद में था और मलखान की तलवार भी उनकी गर्दन पर थी। वह मलखान की बात मानने को मजबूर थे। उन्होंने सोचा अभी तो बेटे को छुड़ा लूं फिर देखा जायेगा, तो वह बोले... मलखान हमने हमेशा से ही वीरों और वीरता का सम्मान किया है। हम आपकी बात से सहमत हैं। हमें ये रिश्ता मंजूर है। दोनो हाथी और घोड़ा से नीचे उतरते हैं। मलखान की सेना के दस वीर सरदार इस समय उसकी सुरक्षा

का घेरा बनाकर खड़े हैं। वह दोनों आपस में गले मिलते हैं।
मलखान ने कहा .. महाराज अभी इसी वक्त नेगी से टीका का सगुन भिजवा दीजिये। हम कुंवर ताहर को जाकर यह शुभ समाचार देते हैं और उनसे ही टीका चढ़वा लेंगे। पृथ्वीराज ने टीका में अपने गले की मोहन माला और ढाल तलवार भेजकर कहा ...युद्ध के मैदान में इससे अच्छा टीका नहीं हो सकता? साथ ही ताहर को एक पाती भी लिख दी कि यह टीका चढ़ा दो।
उधर ताहर को जाकर सारी बात मलखान ने बतायी.. और उन्हें बंधन मुक्त कर दिया। उन्हें उंचे आसन बिठाया उसके बाद पंडित और चारों नेगी को बुलाकर दोनों कुंवर को ताहर के हाथों टीका चढ़ाने की रस्म पूरी की। ताहर ने पिता की आज्ञा मानकर जलशूर और बहोरन को टीका चढ़ा दिया। उसके बाद ताहर को अपने रथ पर आदर सहित डेरा पर पहुंचा।
ताहर ने वापस आकर पूछा.. आपने ऐसा क्यों किया? मैं अपनी बेटियों का ब्याह मलखान के बेटों से नहीं करूंगा। उसने मेरे दो-दो भाइयों को मारा है, मैं उससे बदला लेकर ही रहूंगा। पृथ्वी के दिल में भी मलखान से हारने का कांटा खटक रहा है, वह बोला....अभी टीका ही तो चढ़ा है, ब्याह नहीं करना, तो जब द्वारे पर आयें निपट लेना। अभी बहुत समय है। अभी तो हम रण के मैदान में ही हैं। कल फिर सेना लेकर मलखान को ललकार देना। हम यहां से हार का कलंक ले कर नहीं जायेंगे।
इसी समय पृथ्वीराज को गुप्तचर से समाचार मिला कि गौरी की सेना कश्मीर की घाटियों को पार करके दिल्ली की ओर बड़ी चली आ रही है। यह सुनकर उसने दिल्ली वापस जाना मुनासिब समझा और मजबूरी में अपनी सेना लेकर दिल्ली चला गया।

27-सुलखान वध

पृथ्वीराज दिल्ली जाकर नई सेना के गठन में व्यस्त हो गए। उनकी बहुत सी सेना सिरसा में मारी गई थी। उसके बाद उनका युद्ध मुहम्मद गौरी से हुआ और वह हारकर चला गया। गौरी हमेशा गर्मी-सर्दी का मौसम आते ही आक्रमण करता था और बरसात के लगते ही कूच कर जाता था। अब असाढ़ का महीना लगा है। आसमान में काले-काले बादल आने लगे हैं। बनजारे अपने-अपने घरों को लौटने लगे हैं। साधू संन्यासी चौमासा की तैयारी कर रहे हैं। उधर माहिल इसी ताक में था कि कब पृथ्वी फुरसत हो। माहिल ने कहा ... महाराज, ये क्या? चारों ओर आपकी जगहंसाई हो रही है।
पृथ्वी ... कैसी? आप खुलकर बताइये। वह बोला-छोटे-छोटे सूबों के राजा भी मुंह भरकर बोली घाल रहे हैं कि पृथ्वीराज ने मलखान का किला गिराने को युद्ध किया था, पर किला तो गिरवा ना सके और हारकर पोतियों का टीका चढ़ा आये।
उधर मलखान छाती ठोककर सबसे कहता फिरता है कि उसने पृथ्वीराज को हराकर उसकी नातिनी का टीका चढ़वा लिया है।
पृथ्वी...गौरी के कारण वापस आ गए थे, हमारी और मलखान की लड़ाई अभी बाकी है। हम उसका किला गिराकर ही रहेंगे।
माहिल.. महाराज, शुभ समाचार है कि चंद्रावली महोबा आयी है। आपकी कसम पूरी करने का मौका है। पहले मलखान का किला गिराके, महोबा की राह पकड़ो, आल्हा ऊदल हैं नहीं कि किसी प्रकार की मदद मलखान को मिले, मौका अच्छा है।
पृथ्वी को उसकी बात मन भा गई उसने आपे बेटों को बुलाकर सिरसा पर चढ़ाई करने का आदेश दिया।
चंद्रकवि ने कहा... महाराज आप दो बेटा पहले ही सिरसा की भेंट चढ़ा चुके हैं, फिर सिरसा को जा रहे हैं। अभी तो हम गौरी की सेना से निपटकर बैठे हैं। अपनी फौजों को भी कुछ विश्राम का समय दीजिये। वैसे भी बारिश का मौसम आने वाला है।
पृथ्वी ने कहा ... कविराज, चंद्रावली का डोला लेने बरसात में ही जाना पड़ेगा, तो सिरसा का भी हिसाब देख लेंगे और शुभ दिन देखकर सिरसा को सेना कूच कर गई। मलखान के गुप्तचर ने सूचना दी कि दिल्ली की सेना ने सिरसा के बाहर डेरा डाला है।
मलखान ने कहा... दिल्ली वालों का कोई भरोसा नहीं है। उसने सुलखान को आदेश दिया कि वह अपनी फौजें तैयार कर ले, कभी भी रणभेरी बज सकती है। दूसरे ही दिन पृथ्वी की फौजें सिरसा की ओर बड़ी चली आ रही थीं। सामने मलखान को देखकर ताहर ने कहा...महाराज, आपने महाराज की हुकुम उदूली की है। राजी बाजी से किला गिरा दीजिये, अन्यथा हम उड़ा देंगे।
मलखान ने कहा... ए ठाकुर खबरदार हो जा! अभी तक किसी मां ने ऐसा नाहर नहीं जन्मा है, जो मलखान के घर घुसकर घर गिरा दे। हम दिल्ली पति के अधीन नहीं हैं, जो बार-बार हमारी शांति भंग करने आ जाते हैं। आप सभी की लड़ने की मंशा है, तो आओ मैदान में अपनी मां के दूध की ताकत दिखा दो। जय भवानी के नारे गूंजे, ताहर और मलखान आपस में भिड़ गए। सूरज और सुलखान का युद्ध हो रहा है। दोनों भाई अपने बैरी पर भारी हैं। सुलखान आगे बढ़कर चारों ओर से कटा मचा रहा है। कभी दायें कभी बायें, तो कभी घोड़ा को छलांग लगाकर गजब ढा रहा है। शाम होने को आई है, पर वह

उसी जोर के साथ लड़ रहा है। शरीर पर कई घाव लगे हैं, पर वह अचल है। ऐसा लग रहा था कि वह आज सबको मार कर ही मानेगा।
एक कहावत है कि दिया बुझने से पहले तेज हो जाता है। वही हाल सुलखान का था, वह किसी के भी हाथ नहीं आ रहा था। उसकी काया खून से लथ पथ थी, पर वह पीछे नहीं हट रहा था। सूरजराज ने अपनी शिरोही का वार किया जिसे उसने बड़ी बहादुरी से अपनी ढाल पर बचाया और उलट वार कर दिया। सूरजराज ने भी वार बचा तलवार का वार किया। सुलखान ने अपनी ढाल अड़ाकर उसे रोका पर उसकी ढाल टूट गई और तलवार सीधे उसके सीने के पार हो गई, वह वहीं घोड़ा पर लुड़क गया। यह देख उसका घोड़ा उसे लेकर महलों की ओर सरपट भाग गया। सुलखान का अंत देखकर मलखान को मोह आ गया एक पल के लिए उसका हाथ थम गया, ताहर ने लापरवाही का लाभ उठाकर वार कर दिया। वह क्रोध में भरकर ताहर की ओर दौड़ा। कुछ देर तो ताहर ने सामना किया, फिर घायल हो मैदान से भाग गया। मलखान जो भी सामने पड़ रहा है उसे काटे जा रहा है। वह स्वंय भी रक्त रंजित है। उसे देख कर ऐसा लग रहा है मानों कोई बसंत में होली खेल रहा है।

28-मलखान का बध

पृथ्वीराज सोच रहा है कि इस मौत की आंधी को कैसे रोका जाय? दो-दो बेटे जूझ हो गए हैं। वह अंदर से बहुत दुखी है। माहिल ने पृथ्वीराज को सांत्वना दी। तथ्यों से ज्ञात होता है कि मलखान और पृथ्वी के बीच का युद्ध 1188 के लगभग का है।
पृथ्वी ने कहा... पारथ की पत्थर की काया का भेद उसे कैसे मालूम हुआ? पता नहीं कौन सी शक्ति उसका सहयोग कर रही है?
माहिल ने कहा... महाराज उस शक्ति का पता लगाकर आपको बताता हूं। माहिल सिरसा के महलों में जाकर रोने लगा। वह तिलका से बोला जीजी सुलखान के जाने का मुझे बहुत दुख है।
तिलका..भइया, रण में मरने वाला अमर हो जाता है, मुझे गर्व है कि मैं सुलखान की मां हूं।
माहिल...अरे बहना मैं तो मलखान के लिए चिंतित हूं, उसके तन पर अस्सी घाव लगे हैं। उसके बचने की उम्मीद कम ही है।
नहीं भइया, ऐसा ना कहो, मलखान को कुछ नहीं होगा। उसके घाव ठीक हो जायेंगे।
माहिल....मैं अभी उसे देखकर आ रहा हूं, उसकी नाड़ी छूटती जा रही है। मुझसे तो उसकी हालत देखी नहीं जा रही थी।
तिलका-नहीं भइया मलखान को कुछ नहीं होगा। जब तक उसके पैर का पद्म सही सलामत है उसे कुछ नहीं होगा। वह देवि का वरदानी है, पुख्य नक्षत्र का जन्मा है, कभी हार नहीं सकता। ना चाहते हुए भी तिलका के मुंह से यह बात निकल गई।
माहिल.... बस उसी की चिंता है, मैं प्रार्थना करता हूं। वह चला गया क्योंकि उसका काम पूरा हो चुका था। दूसरे दिन उसने पृथ्वी को सारी बात बताकर कहा ...जब तक पद्म फटेगा नहीं तब तक वह नहीं मरेगा, उसकी जान उसी पद्म में है। मेरी राय मानिये तो आप ताहराज के घायल होने का समाचार फैलाकर उसके स्वस्थ होने तक दो दिन के लिये युद्ध बंदकर दीजिये और एक पचास गज लंबा चौड़ा गड्ढा खुदवाइये, उसकी गहराई में नुकीले भाले गड़वाकर, घासफूस बिछाकर ढंकवा दीजिए। फिर उसे इस पार खड़े होकर मल्ल युद्ध के लिए ललकारिये। मलखान ने सुना कि दो दिन के लिये युद्ध बंदी है तो सुलखान का कार्यक्रम करने लगा।
पृथ्वीराज को माहिल की तरकीब भा गई और उसने दो ही दिन में तैयारी करके अपनी सेना लेकर फिर सिरसा का किला घेर लिया और युद्ध का नगाड़ा बजा दिया। ..मलखान ने भी सैनिकों को कूच करने का आदेश दिया। माता तिलका ने टीका करके आशीर्वाद दिया, गजमोतिन ने आरती उतारी। उसी समय सामने से छींक हुई, माता बोली....कुंवर मत जाओ असगुन हो गया।
वह बोला... माता बैरी सिर पर खड़ा है। हमने सोचा था कि यह किस्सा खत्म हो गया, पर पृथ्वी वही राग अलापता आ गया, अब जाना तो पड़ेगा यह सब इतनी जल्दी में हो रहा कि उदल को खबर देने का समय नहीं है। सोचता हूं कि आल्हा दादा से कहकर इस झगड़े का मसला हल करा लें, तो तिलका बोली ... हां बेटा, ऊदल को खबर करा दो। हां माता, अभी चलता हूं।
दोनों ओर से सेनायें भिड़ गईं। ताहर और मलखान की लड़ाई होने लगी। दोनों ही बली

थे। तलवार और तेगा की लड़ाई हो रही है। मलखान ने रण में हाहाकार मचाया है। धरती लहू से लाल हो रही, उसमें सिर कटी लाशें मगरमच्छ की तरह दिखाई दे रही हैं। ऐसा लग रहा था कि लाल नदी में मगरमच्छ बिचर रहे हैं, जगह-जगह ढालें पड़ी हैं, देखकर लगता है मानों कछुआ हो। दिल्ली सेना व्यूह रचनानुसार पीछे हटती हुई गड्ढे तक पहुंच गई, अब पृथ्वी ने ललकार कर कहा... वीर होकर पीछे हटते हो।
मलखान ने कहा ... महाराज बनाफर कभी पीछे पांव नहीं धरते हैं।
पृथ्वी...नाहक में सेना को बीच में लाते हो, ऐसा करो कि आपस में मल्लयुद्ध कर लो, जो जीत जाये वह दूसरे की बात मानेगा।
मलखान ने कहा ... हमें मंजूर है। तब तक ताहर ने गड्ढे के उस पार से ललकार कर कहा....महाराज, उमर में हमारी आपकी बराबरी है, आइये हमसे मल्लयुद्ध करिये, हम आपको चुनौती देते हैं। उसकी ललकार सुनकर मलखान ने घोड़ी को ऐड़ लगाकर आगे बढ़ाया। घोड़ी जैसे ही कूदकर आगे गई वैसे ही वह गड्ढे में समा गई। गड्ढे में गिरते ही चारों ओर गड़े नुकीले भाले मलखान के पैरों में चुभ गए और उसका पद्म फट गया। उसका पद्म फटते ही मलखान जान गया कि अब उसका काल आ गया है।
वह बोला....अरे पृथ्वी, तूने धोखा किया रे! उसे बेहोशी आने लगी। उसने अपने गुरु और देवि का स्मरण कर कहा... मां मैं तेरी गोद में आ रहा हूं। उधर गुरुदेव को पता चला कि मलखान के साथ धोखा हो गया, उसकी मृत देह गड्ढे में है, घोड़ा भी घायल है। उन्होंने अपने वीरों को भेजकर उसकी काया को घोड़े सहित ऊपर उछाला और दौड़ा कर महलों के भीतर कर दिया।
पृथ्वीराज सेना सहित उसके पीछे आ रहा है। वह सोच रहा है कि अब वह सिरसा लुटवा लेगा। महलों में रानी गजमोतिन अपने पूजाकक्ष में थी, वह एक सती नारी थी। वह बोली, माता बनाफर कुमार के साथ धोखा हो गया, वह घोड़े पर सवार हो किले के फाटक की ओर भागी। फाटक पर पहुंचकर उसने देखा कि घोड़ी कबूतरी मलखान की मृत देह लिये चली आ रही है। उसके पीछे पृथ्वीराज सैनिकों के साथ आ रहा है। वह फाटक पर पहुंच गरजी....खबरदार धोखेबाज चौहान, किले के भीतर आने की गलती ना करना। पृथ्वी ललकार सुनकर वहीं रुक गया। रानी ने फिर कहा...तुम अपने को वीर कहते हो और छल से वार करते हो। यह मत सोचना कि बनाफर कुमार नहीं है तो किले में घुस जाओगे। ऐसी भूल ना करना। सिरसा के किले की तरफ आंख उठाकर भी ना देखना। मैं उनकी पत्नि गजमोतिन अभी इतना बल रखती हूं कि तुम सबको चार पहर के युद्ध में रण भूमि में सुला सकती हूं। तुमने एक सती के सत्य को ललकारा है। मैं तुम्हें श्राप देती हूं कि जिस छल से तुमने मेरे पति को मारा है उसी छल से तुम भी मारे जाओगे। तीन साल तीन महीना तेरह दिन में तुम्हारा सर्वनाश हो जायेगा। दिल्ली में लहू की नदिया बहेंगी और जौहर की ज्वाला दिखाई देंगी। महाराज, अगर आपने आज के बाद कभी भी सिरसा में पांव रखा तो उसी समय भस्म हो जाओगे। यह एक सती का वादा है तुमसे, इसलिए अपनी भलाई चाहते हो तो किले की ओर नजर उठाकर भी ना देखना। अब जाओ यहां से।
रानी तेज और उसका क्रोध देख कर पृथ्वीराज मन ही मन डर गये। उसका श्राप सुन कर वह चुपचाप वहां से वापस लौट गया।
उधर गजमोतिन की आखों में निश्चय की चमक थी। वह ऊपर से नीचे तक हमेशा की तरह शृंगार किये रहती थी। उसने सेनापति को बुलाकर कहा ....मेरे पुत्र कुंवर बहोरन

और कुंवर जलशूर को को बुलवा लीजिये, इस समय जलशूर की उमर तेरह साल और बहोरन की उमर ग्यारह साल की थी। वह युद्ध विद्या के अभ्यास के लिए गुरुकुल में थे। उसके बाद रानी ने सैनिकों से चंदन तुलसी की लकड़ी मंगवाकर चिता तैयार कराई, उस पर मलखान की मृतदेह रखकर मंत्रोचार कराकर पूजन कराया। चारों ओर घंटा घड़ियाल और शंख बज रहे हैं। यह सब देखकर नगरवासी आंसू बहा रहे हैं। तिलका की आंखों में भी आंसू हैं।
रानी ने कहा... ना माता ना, वीरों के जाने पर हम आंसू नहीं बहाते, यह तो एक दिन होना ही था। यह सब तो पूर्व निर्धारित था। जो हमारे बस में नहीं है, उसके लिए शोक कैसा? अब तक कुंवर जलशूर भी आ जाते हैं। रानी ने सेनापति से कह कर ब्राहमणें से वहीं पर उसका राज तिलक कराया और सभी नगर वासियों से कहा ... आज से कुंवर जलशूर आपके राजा हैं और बहोरन ये सब आपकी प्रजा हैं। इनका हर सुख दुख आपका है।
रानी ने कहा ... तुम एक वीर पिता की संतान हो, जिसने अपनी तलवार से संपूर्ण भारत को जीतकर अपना वर्चस्व मनवाया था। तुम्हें अपने काका ऊदल के साथ मिलकर अपने पिता का बदला लेना है। उसके बाद रानी ने बहोरन और जलशूर का हाथ माता तिलका के हाथ में देकर कहा ...आज से दोनों कुंवर आपको सौंपती हूं। आप ही इसकी माता हो। आप अभी मंत्री चंद्रचूर्ण और सेनापति दिलीपशाह के साथ राज्य की रक्षा करना और माता के पैर छूकर मलखान की चिता पर जाकर बैठ गई कोई कुछ समझ ही ना पाया। उसने मलखान का सिर अपनी गोद में रखा और अपने पति का स्मरण किया उसके बाद मां शारदा का स्मरण किया और सभी के देखते ही देखते उसके सिर से अपने आप अग्नि प्रज्जवलित हो गई और वह धू-धू कर सती हो गई।
उधर माता तिलका ने महलों में जाकर अपने बेटे और बहू के जाने पर पूजा पाठकर जो भी लोक की रीति थी उसका निर्वाह किया। राज के कार्यों का निरीक्षण किया और ऊदल को खबर करने को एक हरकारा भेजा।
अजयगढ़, सिरसा ताम्रलेख और अन्य तथ्यों से ज्ञात होता है कि मलखान वध सन् 1188 के लगभग की घटना है।

29-कजलियों की लड़ाई

माहिल मलखान के मरने की खबर सुनकर बहुत खुश था। जिस तरह द्वापर में शकुनि ने पूरा जीवन पांडवों को मारने की चालें चलने में लगा दिया, उसी तरह पुनर्जन्म में भी शकुनि रूपी माहिल ने पाण्डवरुपी बनाफरों को मारने में ही जीवन गुजार दिया। उसे भांजे के मरने का अफसोस न था। वह बहन को दिलासा देने सिरसा नहीं गया बल्कि दूसरा कुचक्र रचने पृथ्वी के पास गया।
माहिल पृथ्वीराज के पड़ाव पहुंचकर बोले.... महाराज, सिरसा फतह करने की बधाई हो। आपका एक बैरी तो कम हुआ।
पृथ्वीराज ने कहा...महाराज आपको भी बधाई हो, आपके बिना यह काम कभी पूरा नहीं हो सकता था।
माहिल ने कहा... महाराज, अब तो आपकी विजय श्री के द्वार खुले हैं। अब देखिये कैसे आप एक-एक कर अपनी सभी प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं। मैं आपको एक ऐसी ही खुश खबरी देने आया हूँ। आपने कसम खाई है कि आप चंद्रवलि का डोला ला कर अपने अपमान का बदला लेंगें, तो अब समय आ गया है कि आप उसका डोला लूट लें। अजयगढ़ शिलालेख के अनुसार यह सन 1188ई.के सावन मास की साल थी। राखी बांधने के बाद दूसरे दिन भुजरियां कीरत सागर में विसर्जित करने सखियों के साथ जरूर जायेगी। बस आप वहीं से उसका डोला लूट लेना। इधर मलखान मारा गया है, उधर आल्हा ऊदल कनवज बसे हैं। राजा परमाल तो मुनि के चक्कर में फंस चुके हैं। खजुहागढ़ में हमारी पूरी पकड़ है। आप जब महोबा घेरें, तो रसद की चिंता ना करें, आपको खजुहागढ़ से पूरी सहायता मिलती रहेगी। वहां भी साधु वेश में एक सैनिक टुकड़ी पड़ी है। तहखाने में भारी मात्रा में हथियार भरे हैं। महोबा के दूसरी ओर सूपा के प्राचीन मंदिर में भी साधु वेश में सैनिक हैं, जो भीतर घात करके आपकी मदद करेंगे। आप किसी भी तरह की चिंता ना करें, बस परमाले को हराकर महोबा छीनकर हमे दिला दीजिए। आपका यह उपकार कभी नहीं भूलेंगे।
पृथ्वीराज... आप चिंता ना करें, ईश्वर ने मदद की तो सब काम आपकी इच्छा के अनुसार ही होगा। राजा परमाल ने मेरे नाना अनंगपाल को हराकर, मित्र बनाकर उनका राज्य उन्हें लौटा दिया था। अब समय आ गया है कि मैं उनके इस अहसान का बदला चुका दूं। मैं उन्हें बता दूंगा कि दिग्विजय हम भी कर सकते हैं। पृथ्वीराज ने ताहराज से कहा... फौजें महोबा की ओर कुच करा दो अब हम महोबा पर चढ़ाई करेंगे। सात दिन की मंजिल करके वह सेना सहित महोबा के पास आ गया। पृथ्वी ने माहिल के बताये अनुसार सेना का विभाजन किया। कुछ सेना खजुहागढ़ रुका दी, कुछ को सूपा से लेकर बेलाताल तक और कुछ को करहरा और बेतवा के पार रुका दी, बेतवा पार इसलिए कि ना कोई कनवज जा सके, ना आ सके। इस प्रकार पृथ्वीराज ने बारह कोस की दूरी से महोबा चारों ओर से घेर लिया। ऐसे मौका पर माहिल जाकर खजुहागढ़ में रुक गया ताकि परमाल उससे पृथ्वी से मोहरा लेकर महोबा को बचाने को ना कहें। परमाल को पता चला कि पृथ्वीराज ने महोबा को घेरा है तो वह घबरा गए और सोचने लगे कि अब क्या होगा? उन्होंने महोबा के किले का फाटक बंद करा दिया ताकि अंदर प्रजा जनों की रक्षा की जा सके।

परमाल ब्रह्मा को अकेला पृथ्वी से लड़ने नहीं जाने देना चाहते हैं। उन्हें वह भविष्यवाणी हमेशा याद रहती है कि ब्रह्मा का काल पृथ्वी के घर में है। यही सोचकर तो परमाल ने ब्रह्मा का गौना अभी तक नहीं मांगा है। उससे लड़ने वाले आल्हा-ऊदल भी चले गए हैं। वह सोच रहे हैं कि पृथ्वीराज ने महोबा को क्यों घेरा है। उनसे हमारे संबंध अच्छे हैं फिर क्या बात है?
माहिल ने महोबा में दरबार में आ कर दुखी हो कर कहा....महाराज, गजब हो गया, हमसे बहुत बड़ी गलती हो गई।
परमाल ने पूछा ...क्या हुआ? कुछ तो बताइये? माहिल ने बहाना बनाकर कहा ...महाराज, आपने जिस फकीर को खजुहागढ़ और महोबा की बगिया में रहने की जगह दी थी, उसी बात से दिल्ली नरेश गुस्सा हैं। उनका कहना है कि चंदेलाराय जानते हैं कि अफगान का बादशाह कितने आक्रमण कर चुका है फिर भी आपने एक मुगल फकीर को शरण दी है। वह गौरी का गुप्तचर है और आप हमारी गुप्त सूचनायें गजनी को भिजाते हैं। बस यही आरोप लगाकर उन्होंने महोबा को घेरा है और जुर्माना मांगा है।
परमाल ने कहा...उस फकीर को तो आप ही लेकर आये थे,
माहिल... वह तो मुझसे दया की भीख मांगता राह में मिला था, सो मैंने उसे आपकी शरण में ला खड़ा किया था।
परमाल- उन्हें जुर्माना में क्या चाहिये है, तो माहिल बोला...महाराज, उनको सर्वप्रथम पारस पथरी, चंदेरी का कछारी इलाका, खजुहागढ़ के महल बैठक बनाने को, पांच उड़न बछेरा और साथ में चंद्रावली का डोला चाहिए।
यह सुनकर राजा परमाल गुस्से से उठकर खड़े हो गए और बोले... दिल्ली पति इतना नीचे गिर जायेंगे यह हम कभी सोच भी नहीं सकते थे। वो जिस घर की बेटी का डोला मांग रहे हैं, वह उनकी बेटी का ससुराल है। उस दिन वह कहां थे, जब ऊदल ने उनके द्वारे पर हाथी पछाड़ा था। आज जब महोबा सूना है, तो सेना लेकर आ गए। मैं ब्रह्मा को दिल्ली पति से लड़ने की आज्ञा नहीं दे सकता हूं। हम मजबूर हैं, हे भवानी मां अब मैं क्या करूं? माहिल वहां से उठकर रानी महल में चले गए।
कजली महोत्सव महोबा का प्राचीन और पारंपरिक त्यौहार है। बात उस समय की थी जब राजा परमाल भारत विजय के लिए जा रहे थे। उस समय रानी मल्हना ने अपनी सभी रानियों, बहन बेटियों और परिजनों सहित देवी चंिडका का नौ दिन का अनुष्ठान किया था। गुरुदेव का कहना था कि इस पर्व और अनुष्ठान के करने से राज्य पर कभी विपदा नहीं आयेगी। सैनिकों के बल में वृद्धि होगी। जब कभी यह पर्व खंडित होगा तो समझो राज्य पर विपदा आयेगी। श्रावण माह शुक्लपक्ष की आठवीं तिथि को 108 दोना में माता के जवारे बोये थे। आठ में दिन श्रावण मास की पूर्णिमा को मां की धूमधाम से पूजा की थी। हथियारों का भी पूजन किया। आखिरी नौवें दिन भाद्रपद प्रथमा को वो जवारें सभी महिलायें सिर पर रखकर वीरता के गीत गाती हुई कीरत सागर पर विसर्जन के लिए ले गई थीं। गीत...... मैया विनती सुनो तेरे द्वार खड़ी। वीरन जीतके आवै हमरी गढ़ी।
बाड़े अतुलित बल, होवे बुद्धि खरी। बाजै ढोल नगाड़ा और तुरही।
साथ में हथियार लेकर सैनिक चल रहे हैं। हथियारों में सांग, शिरोही, खांडा, तलवार, भाला, बर्छी, कटार, धनुष-बाण, आदि प्रमुख थे। इस समय तोप और बंदूक का प्रयोग नहीं था। साथ में केसरिया ध्वजा लहरा रही हैं। ढोल नगाड़ा और तुरही बज रही हैं।

अखाड़े और पहलवान भी साथ चल रहे हैं। इस प्रकार यह पर्व वीरता का सूचक था। कीरत सागर के किनारे पर जाकर सागर की पूजा करके बहन दोना सहित जवारे पानी में बहाती है। उस जवारे के दोनो को भाई अपनी तलवार की नोक से उठाता है। इस दोना को उठाने के लिए होड़ लगती थी, माना कि चार-पांच भाई होते थे, जो भाई इसे सबसे पहले उठाता था वही वीर और विजयी माना जाता था। कहा जाता था दोना उठाने वाला पूरे एक साल तक हमेशा विजयी रहेगा। कभी-कभी वेश बदलकर दुश्मन भी सेना में घुसकर दोना उठाने का प्रयास करते थे। दोना उठाने के बाद भाई उसे बहन को दे देता है। बहन उस दोने के जवारे तोड़कर थाली में रखती है, जिसे कजली कहा जाता है। उसके बाद भाई के माथे पर टीकाकर उसकी भुजाओं का पूजन करती है। रण में जाते हुए क्षत्री की बांह का पूजनकर तिलक किया जाता है। कुछ जवारे यानि कि कजली लेकर लाल धागे से भाई की बांह पर बांध कर उसके विजयी होने की कामना करती है। भुजाओं में बांधने के कारण भुजरियां भी कहा जाता है। भाई बहन को मुंह मांगा इनाम देता है। उसके बाद बहनें अपने भाई की कलाई पर राखी भी बांधती हैं। तभी से महोबा में रक्षाबंधन का त्यौहार दूसरे दिन कजली के साथ ही मनाया जाता है।
‘‘यह वीरों का पर्व है और महोबा वीरभूमि। आज भी वहां कजली महोत्सव की यह परंपरा चली आ रही है। सब कुछ उसी तरीके से होता है। आल्हा गायन प्रतियोगितायें, कुश्ती की प्रतिस्पर्धा दंगल अखाड़े लगते हैं। ‘‘
राजकुमारी चंद्रावली ने भी कजली बोई है। सभी मिलकर तैयारी कर रहे हैं। शंख घड़ियाल बज रहे हैं। उसी समय माहिल ने प्रवेश किया। रानी ने कहा, वीरन अच्छा हुआ आप आ गए, इन सभी को ले जाकर कजली विसर्जन करा लाना।
माहिल ने कहा...जीजी विसर्जन के लिए किले के बाहर कीरत सागर पर जाना होगा। वहां पर पृथ्वीराज की सेना घेरा डाले पड़ी है। चींटी भी वहां नहीं जा सकती, वहां जाने का मतलब है उससे युद्ध करना और इन बूढ़ी हड्डियों में अब इतना दम कहां है? हां दिल्लीपति ने सूचना भिजवाई है कि उनका जुर्माना भर दो, तो वह अपनी सेना लेकर वापस चले जायेंगे।
रानी ने पूछा ....काहे का जुर्माना और कितना जुर्माना चाहिए है?
माहिल...उनको पारस पथरी, चंदेरी काकछारी इलाका, खजुहागढ़ के महल, पांच उड़न बछेरा और चंद्रावली का डोला।
मल्हना ने गरज कर कहा....खबरदार, दिल्ली पति से कहना कि राजा परमाल ने हथियार ना उठाने की कसम खाई है, हमने नहीं। हमारी कलाइयों में अभी इतनी ताकत है कि उनकी बात का जवाब दे सकती हूं। मेरी बेटी की तरफ आंख उठाकर देखा तो आंखें निकाल लूंगी। मेरे महोबा की धरा पर पैर रखा तो आंते निकाल लूंगी। ‘‘मैं मल्हना रानी कसम खाती हूं कि उनकी बेटी का डोला इसी साल विदा कराकर लाऊंगी और श्राप देती हूं कि जिन आंखों से बुरी नजर उन्होंने मेरी बेटी पर डाली है, शीघ्र ही वह अपनी आंखों को खो बैठेंगे"। मेरा ये संदेश उन तक पहुंचा देना, मैं उनसे नहीं डरती हूं, इसके बाद वह अपने महल में चली गईं।
महल के अंदर पूजाघर में बैठकर उन्होंने अन्न जल का त्याग कर दो दिन तक हठ योग की साधना की और देवी मां से कहा... मां आज मेरे ऊपर विपदा पड़ी है। आपका महोत्सव नगर लुटने वाला है। अब आप उदल को किसी भी तरह से इस विपदा को टालने के लिए महोबा लेकर आयें, अन्यथा मैं अपना और अपनी बेटी का जीवन आपके

चरणों में समाप्त कर दूंगी।
उदार ऊदल सो रहा है, तभी उसे देवी मां की आवाज सुनाई दी ...वत्स, पृथ्वी ने महोबा चारों ओर से घेरा है। वहां मेरा अनुष्ठान अधूरा है अत: मेरा आदेश है कि तुम गुप्त रूप से जाकर कजली विसर्जन पूरा कराकर अपनी बहन और महोबा की रक्षा करो।
ऊदल मां की वाणी सुनकर उठकर बोला ...मां आपकी आज्ञा स्वीकार है। वह सारी बात बताकर ढेवा से पूछता है कि आपका शगुन क्या कहता है, तो ढेबा ने कहा... हां इस समय महोबा पर संकट छाया हुआ है। हम भी आपके साथ चलेंगे। ऊदल ने सोचा कि लाखन को महोबा देखना है, तो उसे भी साथ में ले लूं। वह लाखन को सारी बात बताकर साथ जाने को तैयार करता है।
लाखन ने कहा ...ऊदल शिकार पर जा रहे हैं, तो हम भी साथ जा रहे हैं। उदार ऊदल ने आल्हा से कहा कि लाखन शिकार पर जा रहे हैं, वह आज्ञा लेते हैं। ऊदल सुनवां से बोला, भाभी मां हम शिकार पर जा रहे हैं, आप आज्ञा दीजिए।
सुनवां...देवर जी, आप हमें सच बता सकते हो। हम आपका चेहरा पढ़कर समझ जाते हैं कि आप परेशान हो?
ऊदल ने सारी बात बताकर कहा ... देवी मां का आदेश है कि यात्रा गुप्त रखी जाये।
सुनवां ने कहा ... जाओ देवर जी और विजयी हो कर आओ। वह अपने घोड़ा पर सवार होकर बेतवा को पारकर हमीरपुर के जंगल में अपने घोड़े छोड़कर सुमेरपुर के शिवमंदिर में जोगी रूप में शरण लेते हैं। प्रात: होते ही वह महोबा किले के द्वार पर होते हैं।
ऊदल ने कहा...आओ लाखन पहले तुम्हें महोबा दें फिर अंदर चलेंगे। ऊदल ने देखा कि जिस सागर में कमल खिले रहते थे उस सागर में पृथ्वी की सेना के हाथी घुसे हैं। उसमें खिलने वाले कमल हाथियों ने रौंद डाले हैं। जिस बाग में हर तरह के फल लदे रहते थे और हर रंग के फूल खिले रहते थे, वहां पर सैनिकों ने पड़ाव डाला हुआ है। वहां पर सेना के घोड़े बंधे हैं। सारा बाग उजाड़ हो गया है। यह सब देखकर ऊदल की आंखें लाल हो गई और उसके हाथ गुदड़ी के भीतर छिपी तलवार पर गया।
ढेबा ने कहा ..देवी मां का आदेश है गुप्त रहना, तो अपने को सँभालों अगर सेना को शक हो गया तो तलवार बजने लगेगी। ढेबा उसे लेकर किले के फाटक पर पहुंचा। उसने चिमटा बजाकर कहा...हम जोगी भीतर जाकर कुछ करतब दिखायेंगे, फाटक खोलो।
द्वारपाल ने कहा.. महाराज रानी मां का हुकुम नहीं है। बाहर दिल्ली की सेना घेरा डाले है। भीतर प्रजा परेशान है, ऐसे में आपका करतब कौन देखेगा और कौन भिक्षा देगा?
ऊदल ने अपनी सम्मोहन वाली बांसुरी बजाई, तो द्वारपाल ने फाटक खोल दिया। वह तीनो अंदर आते हैं। ऊदल ने जल महल, आल्हा की बैठक, राजा का दरबार, ब्रहमा का महल, बाजार, चौक सभी दिखाया।
लाखन..मित्र, सचमुच महोबा बहुत सुन्दर है; ऐसा लग रहा है कि हम इंद्रपुरी में आ गए हैं। ऐसी इंद्रपुरी छोड़ तुम कहां रहे हो?
ऊदल ने कहा...चलो अब तुम्हें मंदिर दिखायें, वह तीनों देवि मां के मंदिर में जाकर पूजन करते हैं। मनिया देव की पूजा करते हैं। उसके बाद तीनों आकर नगर के चौक पर बैठकर राग रागनी गाने लगते हैं। ऊदल ने अपना सम्मोहन चलाया।
दासी ने कहा... महारानी जी, नगर में तीन जोगी आये हैं। आप कहें तो हम उनको महलों में ले आयें, हो सकता है कि वो राज पर आये संकट को दूर करने का उपाय बता

दें। जोगियों पर नजर पड़ते ही रानी ने तलवार निकाल कर कहा....अरे ढोंगियों! तुम हमें बेवकूफ समझ वेश बदलकर नगर में घुस आये, तुम्हारा रुप बता रहा है कि तुम दिल्ली के राजकुमार हो।
ऊदल ने बहाने से चरण पकड़कर कहा...नहीं रानी मां, आप हमारी धर्ममाता हैं। हम गंगाजल की सौगंध खाकर सच कह रहे हैं कि हम दिल्ली के राजकुमार नहीं है। वह गंगाजल की कसम खाते हैं। अब रानी को विश्वास हो जाता है।
योगी ने कहा... आपकी तरह रिजगिर महरानी भी धोखा खा गई थी। रिजगिर सुनकर रानी बोली.. अरे जोगी! क्या तुम सच कह रहे हो? तुमने मेरे ऊदल को देखा है? मेरा इंदल अभयंकर और आल्हा कैसे हैं? मेरी बहूरानी कैसी है? तुम मेरा संदेश किसी तरह उन तक पहुंचा दो कि पृथ्वी ने ऊदल का महोबा घेरा है, वह आकर अपने महोबा को बचा ले। जिस तालाब में ऊदल के सिवा कोई नहीं जा सकता था आज वहां सेना के हाथी घुसे हैं, अरे मेरा ऊदल कहां मिलेगा? वह रोने लगी।
पास ही खड़ी चंद्रावली ने कहा....मेरा भाई ऊदल कैसा है? उसे खबर दे दो कि उसकी बहन पवनी करने महोबा आई है उसका डोला पृथ्वीराज ने हर्जाना में मांगा है। आज आकर अपनी जीजी को बचा ले। आज महोबा अनाथ की तरह हो गया है।
जोगी..माता, इतना समय नहीं है कि हम ऊदल को खबर दे सकें, पर आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपकी पवनी करा देंगे।
चंद्रावली ने कहा.....ढपली बजाकर भिक्षा मांगना और तलवार चलाने में बहुत फरक है।
मल्हना ने कहा ...तुम ठहरे जोगी संन्यासी, तुम अस्त्र-शस्त्र चलाना क्या जानो?
जोगी ने कहा....हम गुरु गोरखनाथ के चेला हैं। हम सभी तरह के अस्त्र-शस्त्र चलाना जानते हैं। आप चिंता ना करें।
गोरखनाथ का नाम सुन मल्हना को उन पर भरोसा हो गया, वह बोली ...माता ने ही आपको हमारी मदद के लिए ही भेजा है।
ऊदल ने कहा माता आप धूम-धाम से डोला सजाकर कजली लेकर चलिये। हम कल कजली उठने के पहिले आ जायेंगे।
लाखन ने कहा.... वाह रे ऊदल, आज इतने सालों बाद भी राज की सारी प्रजा तुम्हारा नाम ले कर रोती है। तुम्हें याद करती है। तुमने राजगद्दी पर नहीं लोगों के दिलों पर राज्य किया है। दूसरे दिन ऊदल मुंह अंधेरे सूरज निकलने के पहले ही लाखन को ले कर गोखार पहाड़ की दूर तक फैली पहाड़ शृंखला पर पहुंचे। यह पहाड़ गोरखनाथ की तप स्थली है। पहाड़ के अंदर बहुत सी गहरी गुफायें हैं। गोरखनाथ इन गुफाओं के रास्ते से कजली वन चले जाते थे पर देखने वाले को लगता था कि वह इतने दिनों से गुफा में ही थे। दूसरी ओर इस पहाड़ की एक गुफा से होकर रास्ता सीधा मैहर की शारदा माता के मंदिर तक जाता है।
ऊदल ने कहा... ढेबा दादा, आप यहीं रुकना, हम लाखन के साथ जाकर मैहर शारदा माता के दर्शन करके आते हैं।
ढेबा ने कहा... कुंवर ऊदल, समय का ख्याल रखना, हमें समय पर महलों में पहुंचना है।
उधर सभी पूजन की तैयारी में लगे हैं। नगर की सूबेदारनियां, रानियां, राजकुमारियां और उनकी सखियां सभी सज धजकर तैयार हैं। मैदान में सभी अखाड़े और सैनिक भी अपने हथियार लेकर तैयार हैं। सभी बहू बेटियां रानियां मिलकर हथियारों की पूजा

कर रही हैं। चारों ओर केसरिया ध्वजा लहरा रहे थे। ढोल नगाड़ा बज रहे हैं। हजारों की संख्या में दोना में जवारे रखे हैं। बस जोगियों का इंतजार हो रहा है, पर दूर-दूर तक उनका अता पता नहीं है। मल्हना ने कहा ...किसी का भी भरोसा नहीं रहा, वो जोगी गंगाजल की कसम खाकर भी धोखा दे गए, फिर भी विसर्जन तो करना ही होगा। तभी राज पर आया संकट कटेगा।

चंद्रावली ने कहा... माता अभी तो बहुत समय है। हमें उन जोगियों का इंतजार करना चाहिए। दिल कहता है वह जरूर आयेंगे।

तभी माहिल का बेटा अभई, और रंजीत आते है। अभई ब्रह्मा के छोटे भाई त्रिलोकवर्मन का मित्र है और रंजीतवर्मन परमाल के छोटे भाई पद्युमनदेव का पुत्र और ब्रह्मा का चचेरा भाई है। आल्हा के जाने के बाद से अभई और रंजीत महोबा में रहते हैं।

अभई ने कहा... जीजी हम आपको भुजरियां विसर्जन को ले चलेंगे, हम भी तो आपके भाई हैं। तभी माहिल वहां पर आया। अभई को सेना के नेतृत्व करने का सुनकर बोला... कुंवर अभई, ये तुम क्या कह रहे हो? मैंने अपना सारा जीवन इनको बरबाद करने में लगा दिया और तुम उनकी ही सुरक्षा की जिम्मेदारी लेकर जा रहे हो। नहीं बेटा तुम वहां पर नहीं जाओगे।

अभई ने कहा...पिता जी मैं सात साल से महोबा में हूं, वहां का दाना पानी खाता हूं, तो हमारा धर्म भी यही कहता है कि हम इस राज्य की आन बान और शान की रक्षा करें। आज दिल्लीपति ने ललकारा है। हमारी बहन का डोला मांगा है। हमें वीर होने के नाते उनकी ललकार का जवाब देना चाहिये। वैसे तो हमें दोनों राजा बराबर हैं। दोनों ही रिश्तेदार हैं, पर हम अन्याय भी तो नहीं सह सकते। हम न्याय के साथ हैं। यह सुनकर माहिल वहां से चले जाते हैं।

उसी समय ब्रह्मा और त्रिलोक वहां पर आते हैं। वह दोनों बोले, हम भी आपके साथ चलेंगे। आप सब चलने की तैयारी करिये।

अभई ने कहा... दादा, हम और रंजीत सेना को साथ लेकर जाते है। बाकी सरदार भी जा रहे हैं। पचास हजार सेना को ले जाते हैं; बाकी सेना नगर में तैयार रहेगी, जब हमें जरूरत होगी तो हम संदेश भिजा देंगे, आप दोनों आ जाइयेगा।

रानी मल्हना ने कहा, कुंवर ब्रह्मा और त्रिलोक नगर में रहेंगे। सभी रानी और सखियां अपना-अपना दोना लेकर डोला में बैठीं। एक डोला में चार चार सखियां हैं। रानी मल्हना ने सभी को एक-एक जहर बुझी कटारी दी और हर डोला में बारूद से भरी हुई मटकी रखकर चकमक पत्थर देकर कहा...चारों ओर से घिर जाओ तो जान दे देना पर आन नहीं देना।

रानी ने रंजीत व अभई की भुजाओं का पूजन किया, तिलककर आज के युद्ध में जाने की आज्ञा दे कर कहा... विजयी भव।

सबसे आगे रानी मल्हना और रानियों के डोला हैं। बीचों बीच चंद्रावली का, उससे पीछे सखियों के डोला हैं। हर ओर केसरिया बाना ही नजर आ रहा है। जय-जय भवानी के हुंकार के बाद ढोल नगाड़े के बीच डोला व लश्कर किले से बाहर निकलता है।

माहिल पृथ्वी से बोला...अभई-रंजीत चंद्रावली के साथ भुजरियां सिराने आये हैं। अभई को कोई नुकसान नहीं होना चाहिए।

पृथ्वीराज ने चौड़ा से कहा...जाओ चंद्रावली का डोला ले आओ। चौड़ा अपने साथ पचास हजार की सेना लेकर चल दिया। उसने बीच राह में ही रोककर कहा... अरे उरई

के राजकुमार आप कहां जा रहे हो?
अभई... आज महोबा की पर्वी है। हम कीरत सागर पर कजली विसर्जन को जा रहे हैं। आप ये फौज लेकर कहां जा रहे हो?
चौड़ा ने कहा... दिल्ली पति का हुकुम है कि कोई भी सागर के तीर पर ना पाये और राजकुमारी का डोला लेकर उनके पास आये। आप हमें चंद्रावली का डोला दे दीजिए और वापस लौट जाइये।
अभई गरजा... ऐ ब्राह्मण, मुख से बात सँभाल कर निकाल। डोला की तरफ आंख उठाकर भी देखा तो आंखें निकाल लूंगा। जहां खड़ा है, वहीं रुक जा, पांव आगे मत बढ़ाना नहीं तो प्रलय हो जायेगी। अभई की ललकार सुन चौड़ा ब्राह्मण ने इशारा किया, सेना टूट पड़ी। अभई बड़ा ही वीर था वह चौड़ा के तीन वार बचाकर बोला..लो अब मेरा वार बचाओ। उसके वार से घबराकर चौड़ा पीछे हटने लगा। उसी समय अभई ने शिरोही का वार किया जिससे चौड़ा झेल नहीं पाया और उसकी छतरी दो टुकड़े हो गई, हाथी बेकाबू होकर भागने लगा। उसकी मारममार देखकर दिल्ली की सेना के पांव उखड़ गए।
सूरज ने आगे आकर अभई को ललकारकर कहा... राजकुमारी का डोला रख के भाग जाओ।
अभई ने कहा...डोला का नाम लोगे, तो मुंह में तलवार ठांस दूंगा। लड़ने आये हो तो सामने से वार करो।
सूरज...बड़ी अजीब बात है, एक ओर बाप न्योता देता है, डोला लूट लो, दूसरी ओर बेटा कहता है कि डोला का नाम ना लो।
अभई ... वो अपना कर्म कर रहे हैं, हम अपना धर्म निभा रहे हैं। तभी रंजीत ने सूरज को ललकारा- ऐ राजकुमार बातें ना बनाओ युद्ध करो, सूरज ने रंजीत पर किया, अब बारी रंजीत की थी। उसने कावा देकर अपनी शिरोही खींच कर सूरज पर चला दी। सूरज ने ढाल अड़ाकर वार रोका पर ढाल फट गई और सिर को फोड़ती हुई शिरोही पार हो गई। सूरज धरती पर गिर पड़ा। यह देखकर टंकराज ने रंजीत पर वार किया, रंजीत के दो वार में वह भी धरती पर गिर गये।
सूरज की वीरगति का समाचार सुनकर पृथ्वी दुखी है। उसके दो बेटा पहले गये थे अब ये तीसरा गया। पृथ्वीराज ने ताहराज से कहा-कि वह सूरज के शव को डोला में रखकर डेरा पर भिजवा दे और रंजीत से भाई की मौत का बदला ले ले।
इस समय दोपहर का सूरज सिर पर है। ताहर मैदान में आ ललकार कर बोला...किसने मेरे भाई को मारा है सामने आये।
रंजीत ने कहा... हमने मारा है, जो जैसा करेगा सो वैसा ही फल पायेगा। तुम सब अपने पिता का साथ देकर गलत कर रहे हो। पराई नारी का हरण रावण ने भी किया था, क्या हुआ था सभी जानते हैं। अभी भी समय है, अपने पिता को समझाओ।
ताहराज ने कहा...रावण के बेटों ने राक्षस कुल के होकर भी पिता का साथ नहीं छोड़ा था, फिर मैं अग्निवंशी क्षत्रिय होकर अपने पिता का साथ कैसे छोड़ सकता हूं? तुम मुझे उपदेश न दो, हां तुम जाना चाहो तो चुपचाप अपने पिता के पास चंदेरी लौट जाओ। यह कहकर ताहर ने वार कर दिया। रंजीत के वार से ताहर का हाथी पीछे हट जाता था। ताहर मन ही मन उसकी बहादुरी की तारीफ कर रहा था। महोबा की सेना भी दिल्ली की सेना को गाजर मूली की तरह काट रही थी। रंजीत और अभई तीन पहर से

अकेले लड़ रहे हैं। उनकी ढाल कमजोर हो गई है। ताहर अभी अभी आया है, पर बहादुरी में रंजीत भारी पड़ रहा है।
उधर रंजीत ने ताहर पर शिरोही का वार किया है। ताहर उसके वार से पीछे हटकर और फिर आगे बढ़कर उस पर उलट वार करता है। रंजीत ने अपनी ढाल अड़ाकर वार को रोका, पर उसकी ढाल फट गई और हाथ में घाव लगने से उसका संतुलन डगमगा गया और वह घोड़े से कूदकर तलवार चलाने लगा। तभी ताहर और चौड़ा ने युद्ध के नियम विरुद्ध उस पर पीछे से तलवार का वार किया जिससे उसका सिर धड़ से कटकर दूर जा गिरा, पर वह लाल धन्य था कि बिना सिर के उसी तरह तलवार चलाये जा रहा था। रंजीत का मरण देखकर अभई ताहर के सामने आया और तलवार लेकर उस पर टूट पड़ा, तभी ताहर के एक वार से उसका भी सिर कटकर दूर जा गिरा, उसका भी रुंड तलवार भांज रहा था। सभी सैनिक इन रुंडों को देखकर दांतों तले उंगली दबा रहे थे। अब बिना मुंड के उनका जौहर देखते बनता था। चौड़ा परेशान था कि ये रुंड गिरते क्यों नहीं हैं। तभी दूत ने आकर कहा कि माहिल का कहना है कि ये वरदानी हैं, दुश्मन की पीठ देखकर ही गिरेंगे।
चौड़ा ने ताहर से कहा... रणभूमि से वापस लौट लो, इन्हें वरदान है कि ये दुश्मन के सामने रहते हुए कभी रण से पीछे नहीं हटेंगे। ताहर और चौड़ा वहां से वापस हो जाते हैं। उनकी पीठ उन रुंडों की ओर होते ही वह दोनों वहीं गिर पड़ते हैं।
महोबा के सांड़िया ने ब्रह्मा को बताया कि किस तरह से दिल्ली की सेना ने दोनों भाइयों को घेर रखा है। दिल्ली की सेना संख्या में बहुत है। ब्रह्मा अपनी सेना के साथ मैदान की ओर कूच करता है। साथ में उसका भाई त्रिलोकी भी है। पहुंचने पर देखा कि दोनों भाइयों के सिर कटे रुंड तलवार भांज रहे हैं। वह दुखी होकर डबडबाई आखों से देख रहा है, उसके देखते ही देखते वह रुंड धरती पर गिर पड़ते है। ब्रह्मा सैनिकों से उनके शव किले में ले जाने को कहता है।
ब्रह्मा ने अपनी सेना के बीच जाकर सैनिकों से कहा.....मारो, इन रावण वंशियों को बचकर जाने नहीं देंगे। हम इन्हें बता देंगे कि महोबा का पानी आन बान और शान के लिए जीता मरता है। मारो, हर एक को सैकड़ा पूरा करना है, जय जय भवानी।
इस समय ब्रह्मानंद को देखकर ऐसा लग रहा है मानों साक्षात् महादेव आ गये हों। वह दोनों हाथों से तलवार चलाकर सेना का सफाया कर रहा। घोड़ा उचककर कभी यहां, कभी वहां होता है। आसमान का सूरज लौट रहा है जिसकी मंद्धिम धूप में वह और भी तेजस्वी लग रहा है। ब्रह्मा कब कहां से निकलता है पता नहीं चलता, चारों ओर सैनिकों के शव ही दिख रहे हैं। लहू के पनारे बह निकले हैं। त्रिलोकी भी अपने भाई से पीछे नहीं है। तभी ब्रह्मा ने त्रिलोकी को डोला की रखवाली में भेजा।
ब्रह्मा के आने की खबर सुन पृथ्वी अपने हाथी पर सवार हो धांधू और धीरन को साथ ले मैदान में आये। वह अपना हाथी मैदान से बहुत दूर खड़ा करके ब्रह्मा का रण कौशल देख रहे हैं। पास ही कवि चंद्रवरदायी भी हैं। जैसे किसान खेती काटता है, तमोली पान काटता है। उसकी तलवार की चमक को देखकर ऐसा लगता है मानों आकाश में बिजली चमक रही हो।
पृथ्वी ने देखा कि ताहर भी सामने जाने का साहस नहीं कर पा रहे हैं, तो चंद्रकवि ने कहा... महाराज, चौड़ा को भेजिये। कुंवर ब्रह्मा ब्राह्मण भक्त हैं, वह उस पर हाथ नहीं उठायेंगे। यह जान कर पृथ्वी ने चौड़ा को जाने का इशारा किया।

चौड़ा ने ब्रह्मा के सामने जाकर कहा... खबरदार हो जाओ कुमार और अपना गुर्ज चला दिया। ब्रह्मानंद का घोड़ा छलांग लगाकर उसे बचा ले गया और गुर्ज जमीन पर अर्रा कर गिर पड़ा। ब्रह्मा ने शिरोही हाथ में ली, पर उसे ध्यान आया कि यह ब्राह्मण है, अगर इस पर वार करके मारता हूं तो ब्रह्म हत्या का पाप लगेगा। यही कुछ सोच कर ब्रह्मा ने अपने गुरु का ध्यान करके उस पर सम्मोहन बाण चला दिया। बाण के लगते ही चौड़ा मुर्छित हो कर धरनी पर गिर पड़ा।
चौड़ा के गिरते ही धांधू ने मोर्चा सँभाला और ललकारा, धांधू सोचने लगा कि मुझे अनीति का साथ देना पड़ रहा है। वह सोच ही रहा था कि ब्रह्मा ने उस पर अपना वार कर दिया। उसका वार लगते ही धांधू अपने हौदा से गिर पड़ा। आज ऐसा ही लग रहा है मानो अर्जुन ही कौरवों की सेना के बीच खड़ें हैं। उसकी युद्ध विद्या आज भी कमाल की है। यह देख कर पृथ्वी के मुंह से वाह-वाह का शब्द निकल पड़ा। कहा जाता है कि जादू दुश्मन के सिर चढ़ कर बोलता है, आज वह सामने नजर आ रहा है। उसके गिरते ही सरदनि मरदनि आकर लड़ने लगे। उन्होंने जैसे ही ब्रह्मा पर चोट करी उसने ताबड़ तोड़ वार करके सरदनि मरदनि को गिरा दिया। अब ब्रह्मा की नजर ताहर पर पड़ी। वह भाला लेकर उसकी ओर बढ़ा, पर ताहर घोड़ा लेकर दूर चला गया।
चंद्रकवि ने कहा... महाराज, इससे कोई नहीं जीत पायेगा, आप उसे रोकिये अन्यथा वह किसी को भी जीवित नहीं छोड़ेगा।
अब पृथ्वी धीरनदेव से बोले.. महाराज अब आपकी बारी है। आप दोनों देवी के भक्त हैं, देखें देवी किस पर सहाय होती हैं?
धीरनदेव को देख ब्रह्मा ने सोचा... यह तो देवी मां का भक्त है फिर भी अनीति का साथ दे रहा है। तभी धीरनदेव ने पास आ कर कहा... कुंवर ब्रह्मजीत हम तुम्हें समझाने आये हैं कि व्यर्थ युद्ध ना करो और पृथ्वीराज की बात मान लो।
ब्रह्मा ने कहा....महाराज, आप देवी मां के भक्त हो फिर इस युद्ध में अनीति का साथ क्यों दे रहे हो। हमारे लिए पृथ्वीराज आदरणीय हैं, पर यह उनकी कैसी नीति है कि हमारे संग उनकी बेटी ब्याही है, पर अपनी बेटी का डोला विदा ना करके उल्टे हमारी बहन का डोला लेने आये हैं। नारी जाति की अस्मत की रक्षा करना हर राजा धर्म है। किसी भी सती के सतीत्व को हल्का नहीं समझना चाहिए। उसके श्राप से बचना चाहिये। जबकि ऐसे लोगों का पानी भी पीना अधर्म है और आप उसका साथ दे रहे हैं
धीरनदेव...हमें नीति का पाठ ना पढ़ाइये। डोला धरकर चले जाइये। पृथ्वीराज प्रतिज्ञा पूरी करके आदर सहित डोला वापस कर देंगे।
ब्रह्मा ... महाराज, आप मित्र हैं इसलिए चुप हूं आपकी जगह पर कोई और होता तो वह बोलने के काबिल ना रहता।
धीरनदेव ने तलवार खींच वार किया। ब्रह्मा ने तीनों वार बचा के कहा महाराज आपके पास जितने भी शस्त्र हैं सभी आजमा लीजिये। ब्रह्मा की बातें और विश्वास देखकर महाराज का हौसला पस्त हो गया और बोला... आप सही कह रहे हो हम एक ही शक्ति के भक्त हो कर आपस में लड़ें उचित नहीं है। यह कहकर वह अपना हाथी वापस लेकर लौट गये।
उधर ढेबा परेशान है! दोपहर ढलने लगी है। उदल और लाखन अभी तक मैहर से दर्शन कर वापस नहीं आये हैं। समय तेजी से बीतता जा रहा था, तभी उसे कुछ आहट सुनाई दी और ऊदल दिखे। ढेबा ने पूछा ..बहुत देर कर दी? ऊदल बोला, हां विलम्ब हो गया

है। रास्ते में दो-दो शेरों से सामना हो गया था। चलो चलें। तीनों बाहर आये पहाड़ी से नगर का नजारा दिख रहा है, दूर से केसरिया ध्वज लहराते दिखे साथ ही बहुत सी आवाजें भी आ रही हैं।
ऊदल ने कहा...लगता है पृथ्वी की सेना ने धावा बोल दिया है। चलो जल्दी चलो। वह तीनों तेजी से भागते हैं।
धीरनदेव के वापस आते ही पृथ्वीराज ने सेनापति से कहा... तुम सब एक चक्रव्यूह बनाकर आगे बढ़ो और चंद्रावली का डोला घेरो। चौड़ा और ताहर चंद्रावली का डोला लेने जायेंगे। हम ब्रह्मा को रोकते हैं। अब वे एक साथ तीन जगह पर आक्रमण करते हैं।
अब तक लाखन और ऊदल वहां आ चुके थे। ऊदल ने देखा कि अभई और रंजीत के घोड़ा मैदान के बाहर हैं। वह समझ गया, पर अभी समय नहीं था। ऊदल ने उस हाथ फिराया और सवार हो गया। इसी तरह से सब्जा घोड़ा पर लाखन सवार हो गया।
चौड़ा और ताहर दोनों ने देखा कि डोला की रखवाली राजकुमार त्रिलोकी कर रहे हैं। इस समय दिल्ली के सरदारों ने चारों ओर से घेर लिया है। इसीलिए मौका पाकर ताहर ने रानी मल्हना के डोला के पास जाकर कहा- ऐ कहारो, ये डोला मेरे साथ ले चलो।
रानी मल्हना यह देखकर बहुत ही विचलित होकर देवी मां का ध्यान करने लगी ..हे मां आप रक्षा करना। सभी की लाज आपके हाथ में हैं। ऊदल की नजर चौड़ा पर पड़ी तो वह लाखन से बोला ... चलो मित्र होशियार रहना, मोर्चा दगाबाजों से है।
ऊदल चौड़ा के पास आकर बोला... यह डोला कहीं नहीं जायेगा।
चौड़ा ने कहा...अरे जोगी काहे प्राण गंवाने आ गए हो? बड़े-बड़े वीरों का यहां ठिकाना नहीं पड़ रहा है, तुम्हारी का बिसात?
जोगी ... हमने महारानी को वचन दिया है कि उनकी पवनी करायेंगे। सो अब हम लौटने वाले नहीं हैं, हां इतनी बात जरूर है कि हमें आने में देर हो गई है। इतना कहकर ऊदल ने अपनी तलवार खींच ली।
चौड़ा ने कहा...अगर तुम जोगी होकर तलवार पकड़ सकते हो, तो हम दिल्ली के सेनानायक हैं। लो यह मेरा वार, और उसने ऊदल पर वार कर दिया। ऊदल ने चौड़ा पर ताबड़ तोड़ वार कर दिये। चौड़ा को संभलने का मौका ही नहीं मिल पा रहा। वह धीरे-धीरे पीछे हटने लगा। उसके पीछे हटते ही ऊदल रानी के पास आकर बोला...महारानी आप चिंता ना करें, हम आ गए हैं।
मल्हना जोगी को देख खुश होकर बोलीं...जोगीराज, चंद्रावली का डोला ताहर रोके है, उसे बचाइये। ऊदल ताहर के पास पहुंच कर बोला.... लानत ऐसी रजपूती को, जो डारें तिरियन पर हाथ। यह सुन कर ताहर ने कहा... रे जोगी तेरा काल, तुझे यहां खींच लाया है। ले यह वार झेल। ऊदल ने वार झेला और उलट वार कर दिया। दोनों के बीच तलवारें चल रही हैं। दूसरी ओर धांधू से लाखन की लड़ाई हो रही है। कुछ ही देर में दोनों ही पीछे खिसकने लगे, उनके जाते ही ऊदल ने रानी मल्हना से कहा आप निश्चिंत रहें। ऊदलने कहा- राजकुमार त्रिलोकी, आप डोला के साथ रहिए, अब हम कुंवर ब्रह्मा की सहायता को जाते हैं।
उधर ब्रह्मा पृथ्वी के हर वार को विफल कर रहा है। दो घड़ी से युद्ध हो रहा है, पर ब्रह्मा पृथ्वीराज पर भारी पड़ रहा है। अब शाम होने वाली है। पृथ्वी से चंद्रबरदायी ने कहा...महाराज, इसे जीतना नामुमकिन है। इसकी वीरता सराहनीय है। अगर युद्ध जीतना है तो इसे गिराना ही होगा। अब कुछ सोचने समझने का भी समय नहीं है बिना

विलम्ब इसे धराशायी कर दीजिए।
पृथ्वी ने कहा... ऐसे वीर को मारना उचित नहीं लग रहा है, पर अपना बचाव करना भी जरूरी है। यह कहकर उन्होने अपने हाथ में लाल कमान उठायी और उस पर बाण चढ़ा कर मंत्र पढ़ने को किया।
ब्रहमा यह देखकर सोच रहा है कि वैसे तो रिस्ते में यह मेरे पिता के समान हैं, पर अब चुप रहने का समय नहीं है। वह तो शब्ध बेधी चौहान हैं। वह हमारे प्राण हरने को तैयार हैं, तो हमें कुछ करना होगा। यही सोचकर उसने अपने कमान से शीघ्रता पूर्वक सम्मोहन बाण चला दिया। बाण लगते ही वह मूर्छित हो हौदा से गिर गए। दिल्ली की सेना में भगदड़ मच गई।
जोगी बाजू में आया, तो ब्रह्मा ने पूछा...डोला कैसे है? उदल ने कहा... कुंवरजी, सभी डोला सुरक्षित हैं आप चिंता ना कीजिये।
ब्रह्मा ने कहा .. दिल्लीपति मूर्छित हैं अब नहीं आयेंगे। चलो अब पवनी का कार्यक्रम कराया जाये। वह पलटत कर कुछ दूर तक जाते हैं, तभी पीछे से हल्ला सुन पलटकर देखते हैं। यह क्या? पृथ्वी की सेना बड़ी चली आ रही है। ताहर, चौड़ा, धांधू और लड़ाका सरदारों के साथ सामने ही हाथी भयंकर पर पृथ्वीराज बैठा चला आ रहा है। शायद उसकी मूर्छा टूट गई थी।
दोनों ओर से ललकार कर आपस में भिड़ गए। कान पड़ी आवाज सुनाई नहीं दे रही है। रुंड मुंड से मैदान पट गया है। ब्रह्मा से चौड़ा का, उदल का पृथ्वी से, ताहर का लाखन से मुहरा है। ऐसा लग रहा है कि आज निर्णायक युद्ध होकर रहेगा। जोगी बना ऊदल पृथ्वी पर छलावे की तरह दायें बांये कहीं से भी आकर वार कर जाता है। पृथ्वी को कई घाव आये हैं, शरीर लहू लुहान हो गया है। सभी हथियार विफल हो रहे हैं। कुछ ही समय में पृथ्वी की सेना के पांव उखड़ने लगे और वह पीछे हटने लगी।
कविचंद्र ने अपना हाथी पास लाकर कहा .... महाराज जान रहेगी तो महोबा फिर कभी जीत लिया जायेगा। अभी यहां से जान बचाकर जाने में ही भलाई है। मुझे तो यह जोगी कोई छलिया लग रहा है। ताहर और चौड़ा तो मैदान छोड़कर भाग गए। पृथ्वी ने भी अपना हाथी पीछे हटा लिया। अब वे सब युद्ध मैदान से बाहर थे। नियमानुसार पीछे हटने वालों पर वार नहीं करते।
अब वे सभी डोला के पास गए उदल ने कहा.... राजकुमारी जी, अब आप भुजरियां विसर्जन कर सकती हैं। सभी सखियां, रानियां और चंद्रावली अपनी कजलियां लेकर डोला से बाहर आती है। चंद्रावली सखियों सहित अपने दोना लेकर किनारे की ओर बढ़ती हैं। सभी के भाई सगुन का दोना उठाने को आगे आते हैं। ब्रहमा उदल सबसे आगे हैं। उसी समय चौड़ा रूप बदलकर सगुन का दोना उठाने आ जाता है। ऊदल उसे पहचान जाता है। जैसे ही चंद्रावली कीरत सागर में दोना बहाती है वैसे ही चौड़ा भाला फैंकता है। ऊदल उसकी चोट बचाकर अपने भाला से दोना उठा लेता है और पलटवार करके बोला... ब्रह्मण समझ के बार-बार छोड़ देते हैं, पर तुम हर बार बेशरर्मी की चादर ओढ़कर सामने आ जाते हो। उसकी यह बात सुनकर चौड़ा ऊदल को पहचान कर चला जाता है।
ऊदल दोना चंद्रावली को दे देता है। चंद्रावली सोच रही है कि पहला तिलक किसका करुं? दोना तो जोगी ने दिया है। रानी ने कहा ...बेटी सोच मत, पहला तिलक जोगी को करो और भुजरियां घुरस दो। वह तुम्हारा धर्म का भाई है उसने पवनी कराई है। बांह में

कजली बांधने को भुजरियां घुरसना कहते हैं।
ब्रह्मा ने कहा ... हां जीजी, तिलक करो वह हमारे मेहमान हैं। ऊदल ने लाखन को इशारा कर कहा..बहना यह बड़े जोगी हैं, पहले इनका तिलक करो, चंद्रावली ने तीनों की आरती उतारी, तिलक कर लाल धागे में कजली बांधकर चारों की बांह में बांधी, सभी की कलाई पर राखी बांधी, ब्रह्मा और त्रिलोकी ने उसे उपहार देने का वादा करता है।
चंद्रावली ने कहा...आज मेरा छोटा भाई ऊदल होता तो वह मेरी इच्छा पूछकर उसे पूरी करने का वचन देता। अरे ऊदल तू कहां गया, कब मिलेगा रे! वह गहरी सांस भरती है, तभी लाखन ने अपने गले की मोहन माला उतारकर राजकुमारी को दी। ऊदल ने अपना चंद्रकंगन उतारकर दिया। राजकुमारी ने गौर से कंगन देखा और बोली....माता यह चंद्रकंगन तो मेरे भाई ऊदल का है।
रानी मल्हना ने कंगन को पहचान कर कहा...अरे जोगी, ये कंगन कहां पाया है? यह तो मेरे ऊदल का है। यह तो ऊदल किसी को नहीं दे सकता है। तुम जोगी नहीं हो सच बताओ तुम ऊदल ही हो। सच बताओ जोगी तुम्हें देवी मां का वास्ता।
रानी की बात सुनकर ऊदल को हंसी आ गई और वह उनसे लिपट गया। रानी ने भी उसे कलेजे से लगा लिया। चंद्रावली भी ऊदल से लिपट कर बोली- मेरा दिल बार-बार कहता था कि ये जोगी मेरे ऊदल की उन्हारी दिखता है।
ब्रह्मा सीने से लगाकर बोला...मुझे पहले ही समझ जाना था कि ऊदल के सिवाय पृथ्वी से मोर्चा लेने वाला कौन है?
जैसे ही प्रजा को पता चला कि ऊदल पवनी कराने आये हैं वह ऊदल से मिलने टूट पड़ी, उंचे शिलाखंड पर खड़े होकर ऊदल ने सभी को हाथ हिला कर अभिवादन किया। उसके बाद रस्म के अनुसार ऊदल ने पेड़ पर झूला डाला और चंद्रावली उस पर बैठ कर ऊदल का यश गाने लगी। उदल ने कहा... जीजी, लाखन राना का यश गाओ उसने पवनी कराई है। राजकुमारी ने गाया.....
लाखनराना ऊदल भाई हमार। जाकी तलवार की तेज है धार।
महोबा की पवनी कराई लाखन राना। ब्रह्मा और ऊदल भेंटे दरबार।
ऊदल के आने की बात परमाले ने सुनी तो पालकी में सवार होकर आ गए। ऊदल ने चरण स्पर्श किया, तो राजा ने उसे सीने से लगाकर कहा.....बेटा, तुमने हमारी सुध भुला दी और गुस्सा होकर कनवज में जा बसे। यहां तुम्हारे बिना हम पर पृथ्वीराज चढ़कर आ गया। अब तुम छोड़कर मत जाना, कुंवर आल्हा को भी खबर भिजा दो और वापस बुला लो।
ऊदल ने कहा....दादा, सावन चिरैया न घर छोड़े, ना बंजारे हाट को जायें। भला बुरा हमरा ना सोचा भर भादौं में दियो निकार।।
आपने हमें तीन कसमें दी थी। वह आज भी कलेजे में गड़ी हैं। दादा ने कसम खाई है कि..... जियत महोबा हम ना जैहें। कागा मरे हाड़ लै जाये। आज विपत्ति पड़ी, तो आल्हा ऊदल की याद आ गई, इतने साल पता भी नहीं किया कि किस हाल में हैं?
मल्हनारानी रोकर बोली...ऊदल हमने अपना दूध पिलाकर तुमको पाला है। हमारा भी तुम पर हक है। यह महोबा तुम्हारी जन्म भूमि है, इसके प्रति भी तुम्हारा कुछ कर्तव्य है। तुम्हारे जाते ही पृथ्वी फिर चढ़कर आ जावेगा। उसने ब्रह्मा को आगे करके कहा....तुमने ही ब्रह्मा का टीका दिल्ली में चढ़वाया था। अब उसका गौना भी तुम्हें ही कराना है।

परमाल ने हाथ जोड़कर कहा.....बेटा अब हमें माफ कर दो और अपने भाई को अपना लो। मेरी गल्ती की सजा मेरे बेटा को न दो। मैं बूढ़ा हो गया हूं। वापस आ जाओ और महोबा में राज करो। यह तुम्हारी ही अमानत है।
ऊदल ने कहा... दादा महाराज, मैं आपकी बात समझता हूं पर आपको आल्हा दादा को मनाना होगा। ये सारी बातें उनको समझाना होंगी। उनके मानने पर ही हम महोबा आ सकते हैं अन्यथा नहीं। मैं तो उनकी छाया हूं। हम देवी मां के आदेश पर पवनी कराने आये थे, दादा नहीं जानते कि हम महोबा आये है। हमारा साथ लाखन ने दिया, ये नहीं होते तो हम यहां नहीं आ पाते।
रानी ने लाखन को आशीर्वाद देकर कहा.... रतिभान के लाल तुम धन्य हो। तुमने हमारे बिछुड़े ऊदल को हमसे मिलाया है।
राजा परमाल ने कहा....ऊदल, मैं अपने रूठे बेटा को मनाने जाउंगा। वो मेरा बड़ा बेटा है वह मेरी बात जरूर मानेगा। रानी मेरा आल्हा बेटा वापस आयेगा। मैं कल ही उसे लेने जाऊंगा, तो रानी बोलीं... हम भी साथ चलेंगे। ऊदल और लाखन चले गए।
चौड़ा ने बताया कि साधू के वेश में ऊदल ने पवनी कराई है। वह महोबा आ चुका है। यह जानकर पृथ्वी ने चंद्रकवि से कहा... अब महोबा को फतह करना नामुमकिन है। ‘‘दूसरी बात आज सातवां दिन है अभी तक महोबा में किसी को मलखान के मरने का समाचार मालूम नहीं। ‘‘ ऊदल को यह पता चल गया तो किसी को जीवित नहीं जाने देगा। अब कूच करने में ही भलाई है।
ऊदल ने कहा...लाखन, चलो अब तुमको अपने मलखान दादा से भी मिलवा दें और सिरसा का बेजोड़ किला दिखा दें। वह सारे रास्ते मलखान के गुणगान करता हुआ चला जा रहा था। लाखन को उससे मिलने की उत्कंठा बढ़ती जा रही थी।
ऊदल की बांयी आंख और बांयी भुजा फड़क रही है। वह ज्यों-ज्यों सिरसा के नजदीक पहुंच रहा है उसके दिल में अजीब सी बेचैनी हो रही है। किले के फाटक पर उसे उदासी छाई लगती है। दरबान पहचानता था उसने फाटक खोल दिया। ऊदल अंदर गया तो उसे गलियों और बाजारों में सन्नाटा पसरा दिखाई दिया। वह अपना घोड़ा दौड़ाकर दरबार में गया, पर वह सूना था।
उसने मंत्री से पूछा... क्या हुआ तुम सब चुप क्यों? दादा कहां हैं? किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया सभी ने अपना सिर नीचे कर लिया। ऊदल का दिल बैठा जा रहा है। वह दौड़ता हुआ रानी महल पहुंचा। वहां माता तिलका को देखा वह एक दिया जलाये बैठी हैं। पास ही मलखान के पुत्र कुंवर जलशूर और कुंवर बहोरन बैठे हैं। तिलका ऊदल को देखकर दहाड़ मारकर रो पड़ी उनका सब्र का बांध टूट पड़ा। जलशूर और बहोरन भी काका से लिपट कर रोने लगे, तो ऊदल बोला... काकी जी, बताओ तो क्या हुआ?
माता... बेटा, वीर मलखान हमें छोड़कर चला गया। वह रन में जूझ गया।
यह सुनकर ऊदल जोर से चीखा...नहीं.......नही.....नहीं. उसकी चीख इतनी जोर की थी कि दीवालें भी झन्ना गईं। वह वहीं पर घुटनों के बल बैठ गया और फूट-फूट कर रो पड़ा। ढेबा भी रोये जा रहा था। कुछ देर बाद ऊदल ने अपनी तलवार म्यान से निकाल कर कहा... ये सब किसने किया? मैं अभी उसका वंश नाश कर दूंगा।
तिलका ने कहा... ऊदल बैठो और धीरज धरकर हमारी बात सुनो। उसके बाद जो भी हुआ वह सब ब्योरे वार उन्होंने उसे सुनाया। पहले सुलखान का मरण फिर मलखान के साथ हुआ धोखा और उसके बाद गजमोतिन का सती होना भी बताया।

ऊदल ने दांत किटकिटा कर कहा ...मैं अभी ही पृथ्वी से तलवार भांजकर आ रहा हूं। हमें पता होता, तो हम उसका सिर वहीं पर धड़ से अलग कर देते। काश मां शारदा हमें ये बता देतीं। तिलका ने फिर कहा ... बेटा होनी को कोई नहीं टाल सकता, वह तो अटल है। अच्छा हुआ तुम आ गये। आखिर भाई की आत्मा ही तुम्हें यहां पर खींच लाई है। आज मलखान और सुलखान के दसगात्र का पूजन है। उसके परिवार का होना जरूरी था, सो तुम आ गए। अब आगे की रस्में तुम ही पूरी करो।
दूसरे दिन तिलका बोली...बेटा, वीरों की मौत पर आंसू नहीं बहाते। दरबार लगाओ कुंवर जलशूर को राजगद्दी पर बिठाओ।
ऊदल ने दिल पर पत्थर रखकर.. दरबार लगाया कुंवर जलशूर को गद्दी पर बिठाया। सारी प्रजा को बुलाकर उसे संबोधित कर कहा... कोई भी इस संसार में अमर होकर नहीं आता, काल के बुलावे पर सभी को जाना होता है। वीरों का कभी मरण नहीं होता, वह तो जग में हमेशा अमर रहते हैं। राजा मलखान जैसे शूर लाखों में एक होते हैं। आज से आपके राजा कुंवर जलशूर और बहोरन हैं। वह हर तरह से समर्थ हैं, वीरता में अपने पिता के समान हैं। यह सब आप देख ही चुके हैं। आप सभी उनका सहयोग करेंगे। मंत्री विद्याशरण जी और सेनापति मेघवरण जी आप महाराज जलशूर और बहोरन का हर तरह से साथ देंगे। हमारे भ्राता तुल्य बड़े भाई ढेबा कुछ समय तक यहीं रहेंगे। पृथ्वीराज ने जो धोखा महाराज मलखान के साथ किया है उसका जवाब हम उन्हें शीघ्र ही देंगे। यह कहकर ऊदल ने सभा समाप्त की। ढेबा को वहीं छोड़कर वह दुखी मन से कनवज आ गए।
ऊदल शिकार से वापस आ गये हैं। देवल और सुनवां को मालूम था कि वह महोबा गया था। इसलिए वह उत्सुक होकर वहां के हाल जानने को आईं और पूछा... ऊदल महोबा के हाल बता कैसे हैं? ऊदल यह सुनकर माता से लिपटकर रोने लगे।
सभी ने घबराकर पूछा क्या हुआ? वह रोये जा रहा है, उससे कुछ भी कहते नहीं बन रहा, रोना सुनकर आल्हा भी आ गए।
कुछ सम्हलकर ऊदल ने कहा ... मलखान दादा रन में जूझ गये। यह सुनकर सभी के चेहरे पर सन्नाटा छा गया।
आल्हा ने पूछा कैसे? तुझे कैसे पता चला, तुम तो शिकार पर गांजर पट्टी गये थे, वहां सिरसा की खबर कैसे मिल गई?
ऊदल ने सारी बात बतायी कि देवी मां की आज्ञा से हमने किसी को कुछ नहीं बताया था और हम महोबा गए थे। रंजीत और अभई भी वीरगति को प्राप्त हो गए हैं। अगर हमें महोबा में ही पता चल जाता कि पृथ्वी ने दादा को मारा है, तो हम उसका सिर तभी उतार लेते। यह सुनकर सभी ने दहाड़ें मार दीं, कोई किसी के आंसू नहीं पोंछ रहा है।
देवल ने कहा ... रे माहिल तेरा बुरा हो जाये। तूने अपनी ही बहन का घर उजाड़ दिया रे।
आल्हा बोले....वीरों की मौत पर आंसू नहीं बहाते। हम पृथ्वी से बदला लेंगे। उन्होंने पीठ में छुरा भोंका है। ऐसा लगता है कि अब समय बदलने वाला है। मलखान का जाना बहुत से संकेत दे रहा है। बहू का श्राप खाली नहीं जायेगा। बहुत बड़ी तबाही होगी।
ऊदल ने यह भी बताया कि महोबा में राजा परमाल किस तरह दुखी थे और उन्होंने सबसे माफी मांगी है। सबको महोबा बुलाया है। वो स्वयं आल्हा दादा को मनाने आने वाले हैं। मलखान दादा के जाने की खबर अभी महोबा में किसी को मालूम नहीं है।

30-आल्हा मनौआ

माहिल ने सुना कि राजा परमाल आल्हा को मनाकर महोबा लाने जा रहे हैं, तो वह अपने बेटे की अन्त्येष्ठि में शामिल ना होकर पृथ्वीराज की सेना के पीछे अपनी घोड़ी लेकर भागा। रास्ते में पृथ्वी की सेना दतिया से आगे सोनागिर में पड़ाव डाले मिल गई। माहिल बोला....महाराज, गजब हो गया, परमाल आल्हा ऊदल को मनाने जा रहे हैं। ऐसा हुआ तो फिर आपकी प्रतिज्ञा का क्या होगा। इसके अलावा आल्हा को मलखान का पता चला तो वह और भी खूंखार हो जायेंगे। महोबा आकर उनकी ताकत चौगुनी हो जायेगी। आप उपाय करिये कि बनाफर कुमार महोबा ना आ पायें, बस आप अभी लौटकर वापस महोबा को घेर लीजिए।

पृथ्वीराज ने कहा ...महोबा में ब्रह्मा और त्रिलोकी अकेले कैसे हैं? उदल भी तो है।

माहिल ...ऊदल तो चला गया वह आल्हा को बिना बताये, शिकार के बहाने से आया था। आल्हा ने तो कसम खाई है कि वह जीते जी महोबा नहीं आयेगा। इसी लिए यह अच्छा मौका है। महोबा में अभी सब शोक मना रहे हैं। बाजी पलट जायेगी।

कवि चंद्र बरदायी ने कहा....महाराज, आप इनकी बातें में ना आइये। ये तो हमेशा ही लगाई बुझाई करते हैं।

माहिल क्रोधित हो बोला....महाराज, आपका ये भाट मुझे एक आंख नहीं भाता, जो दुश्मन के गुण गाये उसे पास नहीं रखना चाहिए।

पृथ्वी ने कहा... कविराज, दो लोगों के बीच में नहीं बोलना चाहिए। क्या करना है क्या नहीं, यह मैं अच्छी तरह से जानता हूं। जो पिता अपने बेटे की जलती चिता को छोड़कर हमारी चिंता में भागा आया है। सोचो वह हमारा कितना शुभ चिंतक होगा।

कवि ने कहा..... महाराज, आप सिक्के का एक पहलू देख रहे हैं। मैं भी आप से यही कहना चाह रहा हूं कि ऐसे व्यक्ति का क्या भरोसा किया जाये जो अपने पुत्र की चिता को अग्नि भी न दे सका। कुछ पलों का इंतजार भी ना कर सका?

माहिल ने गरजकर कहा....अरे भाट, खमोश हो जा नहीं तो तेरा शीश काट दूंगा। ये देख महाराज ने कवि को वहां से जाने का इशारा किया और बोले... अरे उरई नरेश आप शांत हो जाइये ये कवित्त, छंद लिखने वाला कवि राजनीति क्या जाने? आपकी बात से हम सहमत हैं। चौड़ा को भेजकर हम सेना को मंगाते हैं। अभी जो सेना हमारे पास है वह बहुत थकी है और घायल है, वह युद्ध करने की स्थिति में नहीं हैं। हां उसे लेकर हम महोबा को घेर सकते हैं। ऐसा करने से राजा परमाल महोबा से बाहर नहीं निकल सकेंगे और आल्हा को मनाने ना जा सकेंगे। हम महोबा पर आक्रमण दिल्ली से सेना के आने के बाद ही करेंगे।

सेना यह आदेश सुनकर खुश नहीं हुई। वह दो दिन पहले की महोबा की मार अभी भूली नहीं थी। राजा का आदेश, तो मानना पड़ेगा सारी सेना फिर महोबा को लौट पड़ी। दो दिन सफर करके सेना ने फिर महोबा के किले के मुख्य द्वार को घेर लिया।

राजा परमाल अपने दुख को बिसरा कर आल्हा को वापस लाने की तैयारी कर रहे हैं। साथ में रानी भी जा रही हैं। सबेरा होते ही नगरची ने संदेश दिया कि महोबा के मुख्य द्वार पर दिल्ली की सेना ने डेरा डाला है। यह सुनकर सभी चौंक गए। तभी माहिल आया, तो राजा ने पूछा ...अब क्या बात हुई? वो अब क्या चाहते हैं?

माहिल...महाराज, हम अभी वहीं से आ रहे हैं। उनकी वही पुरानी बातें, कहते हैं कि वह डांड़ लिये बिना वापस वही जायेंगे।
राजा.. ये तो दिल्लीपति की जबरजस्ती है, डांड़ वो दे, जो अधीनी में रहे, हम उनके आधीन नहीं फिर किस बात का डांड़ दें?
माहिल ने कहा.... महाराज, दिल्लीपति ने कहा है कि पहले तो वो केवल डांड़ ही मांग रहे थे, पर अब उनका कहना है कि आपके पुत्र ने उनके पुत्र को मार डाला है। दूसरी बात आपने ऊदल को बुलाकर उनकी आज्ञा का उल्लंघन किया है। इसलिए अब आपको दिल्लीपति की अधीनी स्वीकार करनी पड़ेगी। महोबा अब उनके राज्य का हिस्सा होगा। डांड़ की शर्तों में एक शर्त बढ़ गई है। इसलिए अब आप मुंह में तिनका दबाकर, पीछे हाथ बांधकर उनकी अधीनी स्वीकार कर लीजिए।
राजा ने गरजकर कहा ..हम मर जायेंगे, पर अधीनी नहीं स्वीकारेंगे। माहिल वहां से उठकर रानी महल में आता है।
रानी ने कहा ... बीरन ये दिल्ली पति काहे हमारे पीछे पड़े है? अब क्या चाहते हैं। माहिल ने जो बातें राजा से कही थी, वही सारी बातें रानी को बतला कर कहा ...बहना हमारे पास उनकी बात मानने के सिवा कोई अन्य उपाय नहीं है।
मल्हना ने कहा ....बीरन तुम जाकर उनको समझाओ या कुछ उपाय करो ताकि यह विपदा टल जाये।
माहिल....बहना मैं क्या कर सकता हूँ? इस उमर में तलवार भांज नहीं सकता, जो कर सकता था, वह मैं कर चुका हूं। महोबा की रक्षा में मैं अपना एक पुत्र पहले ही खो चुका हूं। अब तो बस चुपचाप बात मानने में ही भलाई है।
मल्हना को माहिल से उम्मीद नहीं थी। वह विद्वान महिला थी। उसने कहा ...भैया आप दिल्लीपति से कहिए कि वह एक महीना की मोहलत दे दें। अभी हम अपने पुत्रों का शोक मना रहे हैं। हम भी तो अपनी अधीनी की शर्तों का मसौदा तैयार कर लें।
पृथ्वी ने कहा ....दिल्ली से सेना आने में भी समय लगेगा। इसलिए उनसे कहियेगा कि हमें उनकी प्रार्थना मंजूर हैं, पर इक्तीसवें दिन वह डांड़ लेकर मुंह में तिनका दबाकर हाजिर हो जायें। आप तो उन्हें हमारी अधीनी स्वीकार करने की सलाह देते रहिये।
माहिल. महाराज, मैं सब सँभाल लूंगा बस आपको ये देखना है कि मल्हना किसी भी बहाने से ऊदल को संदेशा न भेजने पाये।
महोबा में एक बार फिर उदासी छा जाती है। इस समय माहिल के भाई का पुत्र जागन महोबा में ही था। वह जगनेरी का राजकुमार था। उसके पिता की मृत्यु किसी बीमारी से दस साल पहले ही हो गई थी। कहने को तो वह रानी मल्हना का भतीजा था, पर ऊदल का बहुत चहेता था। इस समय उसकी उमर इक्कीस साल की है। वह रानी मल्हना को उदास देखकर बोला....बुआजी, क्या बात है? आप इस तरह से दुखी क्यों हो? उसकी बात सुनकर मल्हना ने गौर से देखा और कहा.... पुत्र जागन, तुम मेरा एक काम करो, तुम महोबा को बचा सकते हो। तुम हम सबको सिर पर आई मुसीबत से बचा सकते हो। देवी मां ने तुम्हें शायद इसीलिए ही भेजा है, तो जागन बोला....बुआ बताइये हमें क्या करना होगा? हम आपके लिए कुछ भी कर सकते हैं।
रानी ने कहा.... बेटा, तुम ऊदल के पास मेरा संदेशा लेकर चले जाओ यह कहकर मल्हना रानी ने ऊदल को पाती लिखी....... बेटा आल्हा-ऊदल, पृथ्वी ने वापस आकर महोबा को घेर लिया है। वह पारस पथरी, खजुहागढ़ की बैठक, ग्वालियर की गद्दी,

पांच उड़न बछेरा घोड़ा और चंद्रावली का डोला, इन शर्तों के साथ राजा से मुंह में तिनका दाब कर अधीनी करने को कह रहा है।
तुम बिन विपदा हम पर पड़ गई, अब तुम हम पर होउ सहाय।। देखत पाती के आओ तुम, राखो लाज चंदेले क्यार।।
हमने तीस दिन की मोहलत मांगी है। इक्तीसवें दिन पृथ्वी नगर में घुस आयेगा। सुना है उसने चंद्रावली का डोला दिल्ली ले जाने की कसम खाई है। अगर वह डोला ले गया, तो हम भी मार कटारी मर जायेंगे। हम सबका जीवन तुम्हारे हाथ है। बेटा आल्हा, क्या संतान अपने माता पिता से रूठकर उनको मरने को अकेला छोड़ देती है? नहीं मेरा बेटा ऐसा नहीं है। बेटा अपने भाई ब्रह्मा की दाहिनी बांह तुम ही हो। सो तुम जल्दी से आकर अपनी जन्म भूमि और दूध पिलाने वाली मां की इज्जत को बचा लो। जिस माता का ऊदल जैसा बेटा हो उस मां की ओर कोई आंख उठाकर भी कैसे देख सकता है? बेटा तुम्हें मेरे दूध की कसम है। पाती पढ़कर वापस आ जाओ। बेटा अपने दादा महाराज को माफ कर दो। वह तुमसे माफी मांगकर तुमको वापस महोबा लाने आ रहे थे, पर अब हम सब नजर कैद हैं। किले के फाटक से बाहर नहीं जा सकते हैं। बेटा, अपने साथ सभी रानियों को भी लेते आना। अगर आप नहीं आये तो समझो इस माता का खून तुम्हरे सिर पर होगा। इस तरह पाती लिखकर कहा- जागन, तुम ब्रहमा का घोड़ा ले जाओ। यह बात किसी को भी ना बताना, बस बहाना करके यहां से निकल जाओ। यह पाती ऊदल के हाथ में देना।
जागन पाती लेकर हरनागर पर सवार हो गुपचुप तरीके से चल दिया। उधर माहिल तो फाटक पर आंखें लगाये था, उसे शक हुआ कि जागन अपने घर जा रहा होता तो वह अपने घोड़ा पर जाता, वह ब्रह्मा के घोड़ा पर जा रहा है यानी कि जल्दी में है।
माहिल ने पृथ्वीराज से कहा ..जागन मल्हना का संदेश लेकर उड़न बछेरा हरनागर पर सवार होकर कनवज को जा रहा है।
पृथ्वी ने चौड़ा और धांधू से कहा....बेतवा नदी के सारे घाटों को घेर लो किसी भी तरह से जागन कनवज ना जा पाये उसे बंदी बनाकर उसका घोड़ा मेरी नजर करो। चौड़ा और धांधू घाट पर पहुंचे हैं उसी समय जागन वहां पर पंहुचा, धांधू ने कहा ये घोड़ा हमें देकर वापस महोबा लौट जाओ। जागन घोड़ा ले पीछे हटा और जोर से ऐड़ लगाकर घोड़ा हांक दिया। इशारा समझकर घोड़ा दौड़ा और धांधू के पास से गुजरकर एक लंबी छलांग लगाकर नदी बेतवा के पार हो गया। पास से गुजरते वक्त जागन ने धांधू की कलगी खींच ली, चौड़ा सोच रहा है कि जरा सा छोरा हमें धता बताकर चला गया और ये उड़न बछेरा भी कमाल के हैं।
जागन परहुल पहुंचे। एक बाग में विश्राम करने के लिए जीन बिछाकर लेट गए। संयोगवश आंख लग गई, उसी समय माली आया और घोड़ा ले जाकर बोला ...महाराज एक मुसाफिर बाग में आया है। उसके पास ये विलक्षण घोड़ा था, तो मैं ले आया।
महाराज ने कहा... सचमुच ये विलक्षण घोड़ा है। इसे हमारे अस्तबल में बांध दो। जगन उठे, घोड़ा को ना देखकर सोचा कौन ले गया, कहां ले गया पता करता हूं। वह घोड़ा की टापों के पीछे-पीछे चल दिया और परहुल के राजमहल तक पहुंच गया। यह लाखन के मामा पंवार वंशीय गंगाधर का राज्य था। जागन ने गंगाधर को प्रणामकर कहा....महाराज हम चंदेल कुमार ब्रह्मा के भाई और जगनेरी के युवराज हैं। हमारा नाम कुंवर जागनवीर हैं। हमारा घोड़ा किसी ने चुरा लिया है,

राजा...जागन जैसे भाई चंदेले के वैसे ही हमारे भी हो। मेरे अस्तबल में बहुत से घोड़ा हैं, तुम जो भी चाहो ले जाओ।
जागन ने कहा... महाराज आप हमें हमारा घोड़ा लौटा दीजिए। अब राजा ने तेवर दिखा के कहा... अरे नादान बालक, बिना पूछे बगिया में घुसने का अपराध किया है। दंडस्वरूप हमने तुम्हारा घोड़ा ले लिया है, अब यहां से चुपचाप चला जा।
जागन ने कहा.... हमें दूसरा घोड़ा नहीं हमारा घोड़ा ही चाहिये।
राजा .... यह हमसे मुंह जोरी करता है इसे बंधक बना लो। रानी को पता चला, तो उसने दासी की सहायता से आधी रात को उसका घोड़ा देकर जाने को कहा।
जागन ने कहा... हमारा सवा लाख का रत्नजड़ा कोड़ा था, वह भी दे दो। उसके बिना हमारे ब्रह्मा दादा हमें मार ही डालेंगे।
दासी ने कहा ... कोड़ा तो महाराज के पास है। वह तुमको नहीं मिल सकता है। अभी आप यहां से जल्दी चले जाओ।
जागन ...अपने राजा से कहना हम अपना कोड़ा वापस लेने आयेंगे और इस गल्ती के बदले परहुल के बाजार लूटेंगे।
उधर जागन रिजगिर पहुंचे, दरबान ने कहा... महाराज एक कुंवर आये हैं। अपना नाम जागन वीर बताते हैं।
आल्हा ने कहा... जागन वीर आया है और आज्ञा मांग रहा है। हमें विश्वास नहीं हो रहा है। वह तो बहुत नटखट है। वहां जागन को लगा देर हो रही है, तो उसने अपने घोड़ा को आगे बढ़ाया और अंदर घुस गया। जागन को अखाड़ा दिखा जहां आल्हा के दोनों पुत्र इंदलराय और अभंयकर मल्ल युद्ध सीख रहे थे। वह उन दोनों से जा लिपटा। इंदल और अभयंकर बहुत खुश हुए। आल्हा, ऊदल ने जागन को छाती से लगाया और कुशल क्षेम पूछी, जागन ने पाती देकर कहा ... बुआ जी का संदेशा लेकर आया हूं।
आल्हा पाती पढ़कर बोले- इसे ले जाकर सभी से मिलवाओ, सभी को जागन ने बताया कि वह नानी की पाती लाया है।
उदल लाखन सहित सभी ने कहा... क्या बात है? पाती में क्या लिखा है?
आल्हा ने कहा... आज वक्त पड़ा तो हमारी याद आ गई। जब भर भादों में चार दिन का पोता लेकर निकाला था तब नहीं सोचा था कि पृथ्वी चढ़कर आयेगा तो क्या होगा? हमारा भाई वहां रण में जूझ गया, वो पास होते हुए भी नहीं पहुंचे। त्योहार मना रहे थे। सभी ने आल्हा को समझाया पर वह नहीं माना, तब देवल माता ने कहा ...ऊदल, तुम इंदल और लाखन को लेकर चले जाओ।
ऊदल ने कहा ... माता मैं जाने को तैयार हूं, पर जब तक दादा आज्ञा नहीं देंगे, तो मैं उनकी उपेक्षा करके नहीं जा सकता हूं।
देवल ने कहा.....बेटा महोबा हमारी जन्मभूमि-कर्मभूमि है। माना राजा ने निकाल दिया था, पर वह माफी तो मांग रहे हैं। हमने गैरों को कई बार माफ किया है, तो फिर अपनों को क्यों नहीं? आज वह एक वीर से सहायता मांग रहे हैं। क्षत्रिय होने के नाते भी कर्तव्य बनता है कि उनकी सहायता करो। आज उनकी एक गल्ती दिखाई दे रही है, पर उन्होंने जो सौ अच्छाइयां की हैं, उपकार किये हैं उन्हें भी तो याद करो। जब हम पर विपदा पड़ी थी तब उन्होंने ही साथ दिया था। बिन बाप के अपनी औलाद को हमने उनके सहारे ही पाला था, रानी मल्हना ने अपने बेटों से ज्यादा प्यार दुलार स्नेह तुमको दिया है। आज तुम्हारा स्वाभिमान इन प्रेम प्यार के रिश्तों से बड़ा हो गया। अगर तुम

नहीं जा सकते हो, तो मैं अपनी बहुओं को लेकर महोबा की रक्षा करने जाऊंगी। अभी मेरी तलवार में इतनी ताकत है कि मैं पृथ्वी से लोहा लेकर उसे महोबा से भगा सकती हूं, यह मेरी प्रतिज्ञा है।
सभी बहुओं ने कहा ... हां, हां हम तैयार हैं। सभी की बात सुनकर आल्हा सोच में पड़ गए। तल्हन ने समझाया, बेटा गुस्सा समाप्त करो और समय की मांग को देखों। आप तो स्वयं इतने समझदार हो। हमें महोबा की तैयारी करना चाहिए।
आल्हा पूजन कक्ष में ध्यान लगाकर देवी के आदेश का इंतजार करने लगे। देवी की आभा बोली.. वत्स, जो आया है उसका जाना निश्चित है। ज्ञानी लोग सुख और दुख के चक्कर में नहीं पड़ते हैं। आप अपना कर्म करो। अपनी जन्म भूमि पहुंचकर कर्तव्य पूरा करो। रिजगिर अभयंकर को सौपकर महोबा जाओ, नियति वहां तुम्हारा इंतजार कर रही है। यह कहकर देवी अन्तध्यान हो गईं।
आल्हा ने कहा - अब आप सबकी यही मर्जी है तो चलिये, पर हम चाहते हैं कि कुंवर अभयंकर को यहां की जिम्मेदारी् सौंप दी जाये। काका तल्हन यहीं रुकेंगे, इंदल डोला तैयार करने का आदेश दो, तोलाखन बोला...दादा हम भी आपके साथ चलेंगे।
उधर ऊदल और लाखन रानी महल में पहुंच कर प्रणाम करते हैं। रानी ने पूछा... दोनों कुंवर की कहां की तैयारी हो गई?
ऊदल ने कहा-हम महोबा जा रहे हैं। हम आपसे उन्हें साथ ले जाने की आज्ञा लेने आये हैं।
रानी ने कहा... बारह माताओं का इकलौता, सोलह रानी का शृंगार। आस लकड़िया इक राजा की, सो तुम रखियो बहुत सम्हार।।
लाखन कुसमारानी के अटा पर जाते हैं। रानी आसन डाल चंदन का पंखा झलने लगीं। उसने मुस्कराकर पूछा ... स्वामी क्या बात है? आज आप असमय कैसे? आप किस असमंजस में दिख रहे हो? जो भी कहने आये हैं कहिये।
लाखन बोला...प्रिये मैं तुम से दूर नहीं जाना चाहता, पर मेरा ऊदल के साथ जाना जरूरी है इसलिए अपनी स्वीकृति दे दो।
कुसमा ने उदास होकर कहा... स्वामी अभी तो हमने जी भरकर देखा भी नहीं है; मेरे हाथों की मेंहदी भी फीकी नहीं पड़ी है। और आप हमें अकेला छोड़कर रण में जाने की बात करते हो, तो लाखन बोला...वीरों की पहली सगाई तो तलवारों से होती है।
कुसमा ने कहा....स्वामी, भादों का महीना है आधी रात जब घनघोर मेह बरसेगा तब मैं प्रीत की बतियां किससे करूंगी?
लाखन ने अपनी कटार देकर कहा...अपनी सारी बातें इससे करना, तो कुसमा बोली... स्वामी ओस की बूंदों से प्यास नहीं बुझती।
लाखन....रानी हम डेढ़ पहर के तुमरे मेहमान हैं, सो मन की मीठी बतियां कर लो। काहे गिले शिकवे करके समय गंवाती हो?
रानी ने कहा....चटक चूनरी ना मैली भई, ना धोबी धर गयो पटोर। लाज ना छूटी मेरे नैनन की, कंता छोड़ चले परदेश।
कारी बदरिया झूम के बरसो, कंता आज रैन रह जायें। अब के बिछुड़े कबे मिलोगे, निशदिन बाट जोह रह जायें।
लाखन..तीन महीना बीते पर देखियो बाट हमार। कुसमा ने आरती उतार तिलककर कहा...स्वामी इक वचन देकर जाइये।

पांव पिछारूं ना धरियो तुम, ना ही कीजो हमको याद। रण के सम्मुख जो जूझ जैहो, हुइहों सती तुम्हारे साथ।
कुसमा ने कहा...सिंहम ठाकुर कुड़हर वाला, ताको खटका हमहि सिवाय। परहुल दिया बुझाये जाओ, जो अंटा से रोज चिड़ाय।।
स्वामी पड़ोस के राजा के सतखंडा पर जलने वाला दिया हमारे प्यार का साक्षी है। उसे देखकर हमें आपकी बहुत याद आयेगी। इसलिए आपसे विनती है कि आप परहुल के सतखंडा का दिया बुझवा कर जाना।
रानीमाता ने दोनों का तिलककर कहा...ऊदल हम लाखन तुम्हें सौंपते हैं। दोनों एक साथ युद्ध खेलना और मुझसे मिलाने लाना।
ऊदल-माता, हम आपको वचन देते हैं कि जहां लाखन का पसीना गिरेगा वहां मैं रक्त की धार बहा दूंगा।

31-कुड़हर और परहुल

लश्कर जय भवानी के जयकारे के साथ आगे बढ़ा, रास्ते में कुड़हर पड़ा। यह कनवज के अधीन एक बहुत ही छोटा सा सूबा था।
आल्हा ने पाती लिखकर .... कुड़हर के राजा सिंहमदेव से निवेदन किया कि वे अपने सतखंडा पर जलने वाले दिया को पांच गज नीचे कर लें ताकि वह रानी कुसमा के महल से न दिखाई न दे और दूसरी बात कनवज के अधीन राज्य होने के कारण लाखन राना की अगुवाई में कनवज की सेना की ओर से हमारे साथ अपनी सेना लेकर महोबा चलो।
पाती पढ़कर राजा सिंहम ने फौज सजाकर मैदान में आकर कहा ... कौन शूरमा हमारा दीपक नीचे कराने आया है?
लाखन ने कहा... हम ही वह शूरमा है। अगर तुम सच में शूरमा हो तो अपनी सेना को पीछे रखो, नाहक में उसका कटा ना कराओ। हमसे दो-दो हाथ कर लो, जो जीता वही बाजी ले जाये।
सिंहम ने कहा ... हम तैयार है। लाखन और सिंहम अब आमने सामने हैं। तीन चोट सिंहम ने करी, जो लाखन ने अपनी चतुराई से बचा ली। अब लाखन की बारी थी। लाखन ने पहला वार किया, तो राजा उसे बचा ले गया, पर दूसरे वार में वह सम्हल ना पाया और उसकी ढाल फट गई, वह लड़खड़ा गया। यह देखकर हाथ में तलवार ले कर लाखन अपनी हथनी से सीधे छलांग लगा कर सिंहम के घोड़े के ऊपर कूदा और दोनों ही जमीन पर आ गिरे। सिंहम ने हथियार डाल दिये और लाखन ने उसे बंदी बना लिया। उसके बाद किले के फाटक पर पहुंच तीर कमान निकालकर उस दीपक का निशाना साधा और एक ही बाण से उसे नीचे गिराकर कहा- अब यह दिया कभी नहीं जलेगा। अब सिंहम ने कहा... महाराज हम आपके साथ सेना लेकर चलने को तैयार है।
अब अगला पड़ाव परहुल था। पड़ाव डालते ही जागन कहा... दादा, मैं परहुल के बाजार लूटकर अपना वचन पूरा करना चाहता हूँ। ऊदल और लाखन ने एक साथ कहा ... कैसा वचन? जागन ने सारी बात बताकर कहा, मैं संदेशा दे कर गया था।
ऊदल ने कहा ... जागन यह लाखन के मामा का राज है। अच्छा हुआ रानी ने तुम्हारी सहायता की। अब जाने भी दो।
जागन बोला... मामा नहीं, मैं अपना प्रण तो पूरा करूंगा, तो ऊदल ने समझाया...हम तुम्हारा कोड़ा वापस मंगा देते हैं।
लाखन ने पाती लिखी .... मामा जी, सादर प्रणाम। जागनबीर महोबा के राजा परमाल के भतीजे और ऊदल के भाई ममेरे हैं। इनका रत्न जड़ित कोड़ा आपके पास है, सो आप हमें वापस भेज दीजिये। हम सब महोबा जा रहे हैं। वापस आकर मुलाकात करेंगे।
पाती पढ़कर गंगाधर ने इसे अपना अपमान समझा और कहा..कल का छोरा हमें आदेश दे रहा है, यह सब वह ऊदल करवा रहा है। लाखन का दिमाग खराब हो गया है, ऊदल के साथ रहकर वह भी बड़ों का सम्मान भूल गया है। जागन को मजा चखायेंगे।
आशा के विपरीत सेना देख सभी चौंक जाते हैं। गंगाधर ने कहा...किसकी आज्ञा ले कर यह पड़ाव डाला है।
लाखन ने हथिनी उसके बराबर लाकर कहा... मामा जी, हम ऊदल के साथ हैं इसलिए उसने आपकी सीमा में पड़ाव डाला है।

गंगाधर ने कहा ... लाखन तुम डरते होगे ऊदल से, मैं नहीं डरता उनसे कहो हमारी सीमा से बाहर निकल जायें।
लाखन... ठीक है, हम चले जायेंगे, आल्हा ऊदल को संसार जानता है। आप एक कोड़ा के लिए काहे रार बड़ाते हो?
गंगाधर ने आल्हा को लक्ष्य कर बोला.. मैं बनाफरों से नहीं डरता। हम आल्हा को चुनौती देते हैं कि हमसे कोड़ा ले के बताये।
आल्हा-हमें आपकी चुनौती मंजूर है। अब आल्हा और गंगाधर आमने सामने हैं। गंगाधर ने एक साथ सात वार आल्हा पर लगातार किये। आल्हा ने सभी वार बचाये और अपने भाला से दो बार किये तो वह बचा ले गया और तीसरा वार करते ही भाला उसकी बांह को छेदता हुआ पार हो गया। भाला बांह में धुसते ही आल्हा ने हाथ रोक दिये। वह गंगाधर को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते थे। आखिर वह लाखन का मामा था। अपनों के प्रति इतनी उदारता आल्हा के चरित्र में ही देखने को मिलती है। सैनिकों ने पहुंचकर उसे बांध लिया। उधर जागन वीर और ऊदल ने जाकर उसके बाजारों को लूट लिया।
आल्हा ने कहा ... महाराज आप जैसे ही साले राजा जयचंद के हो वैसे ही हम आपको अपना साला मानते हैं।
गंगाधर ने हंसकर कहा... हां महाराज हम आपके साले हैं। इसी कारण हमने जानकर आपसे ठिठोली करी थी। हमने आपके बारे में सुना था, पर देखना चाहते थे, सो देख लिया, इस बात पर आल्हा ने कहा...नहीं महाराज अभी कहां कुछ देखा, आप हमारे साथ महोबा चलिये। वहां हमारा संग्राम दिल्ली पति से होना है। वहीं देखियेगा। हम आपको अपने साथ चलने का न्योता देते हैं।
गंगाधर ने कहा... हमें आपका न्योता मंजूर है। हम आपके साथ चलने को तैयार हैं। दोनों गले मिलते हैं। लाखन अब खुश है।
आल्हा ने कोड़ा देकर कहा...ये अपना कोड़ा लो और इन्हें प्रणाम करो, ये आपके मामा ही हैं। जागन ने उन्हे प्रणाम किया। उसी समय लाखन को खबर मिली कि ऊदल ने कुड़हर के बाजार लुटवा लिये। यह सुनकर उसे बहुत बुरा लगा, पर वह चुप रहा।
दूसरे दिन सारा काफिला जमुना जी के पार हुआ। कालपी से दूर उन्होंने डेरा डाल दिये। भोर होते ही लाखन कालपी के बीच बाजार में पहुंचा, उसने सिपाहियों से कहकर एक घड़ी को बाजार लुटवा लिये। माहिल मामा इस समय महोबा में थे।
ऊदल को सैनिकों के द्वारा यह बात पता चली, तो ऊदल ने पूछा... लाखन तुमने कालपी के बाजार अकारण क्यों लुटवाये?
लाखन.. परहुल बाजार तुम क्यों लुटवाये? जानते थे वो मामा हैं, हमने तुम्हारे मामा के बाजार लुटवा कर उधार चुका दिया।
यह सुनकर गंगाधर ने उसकी पीठ ठोककर कहा....शाबाश बहादुर! ये है अपने मामा का सच्चा भान्जा। सभी हंसने लगे।
लश्कर नदी बेतवा के किनारे पर पहुंचा। सभी ने देखा कि दिल्ली की सारी सेना बेतवा के बयालीस घाटों को घेरे हुए है।
आल्हा...ऐसा लग रहा है कि बेतवा पार करने में समय लग सकता है। पृथ्वी ने स्वागत का पूरा इंतजाम किया है। इसीलिए जागन रात को नदी पार कर महोबा जायें, वहां की सैनिक तैयारी देखें और जरूरत पड़ने पर रात को किले का फाटक खोल सकें।
इस प्रकार रात को ही जागन वीर सबसे विदा लेकर अपने हरनागर घोड़ा पर सवार

होकर बेतवा के पार उतर गये। उनके जाने से कुछ दूर तक तो सैनिकों से उनकी हाथा पाई हुई, पर उसे अकेला देख धांधू ने कहा .. जाने दो अकेला है क्या कर लेगा।
जागन वीर ने रानी मल्हना को जाकर सारी बात बताई, यह समाचार सुनकर सब ओर खुशी की लहर दौड़ गई। सभी के अंदर एक नया उत्साह आ गया। आनन फानन में यह समाचार माहिल ने पृथ्वी के पास भेज दिया।

32-बेतवा पर पृथ्वीराज और लाखन की लड़ाई

बेतवा नदी किनारे तंबू में दरबार लगा है। सोने की थाली में बीरा रखा गया। सभी को आशा थी कि बीरा ऊदल चाबेगा, पर लाखन आगे बढ़कर बीरा चाबकर बोला...इस पर पहला हक मेरा है। ....संयोगिता हरण के समय पृथ्वीराज से लड़ते हुए मेरे पिता वीरगति को प्राप्त हुए थे। उस समय मैं युद्ध ना कर सका, पर आज मैं समर्थ हूं; उनसे आर-पार की लड़ाई कर सकता हूं। इससे मेरे पिता की आत्मा को शांति मिलेगी। मेरे जन्म के समय पंडित ने भविष्यवाणी की थी कि आपका बेटा..अकेला ही लाखों से लड़कर विजयी होगा, इसीलिए उन्होंने मेरा नाम लाखन रखा था। आज उस नाम को सार्थक करने का समय आ गया है।

ऊदल ने पास आकर कहा...मित्र हम आपको अकेला नहीं भेज सकते हैं। हमारा साथ जाना जरूरी है।

लाखन ... हम अकेले कहां हैं, हमारे साथ इतनी बड़ी फौज है, जाना क्यों जरूरी है? क्या हमरी भूरी हथिनी बूढ़ी हो गई है या हमरी भुजाओं का बल घट गया है। मित्र चिंता मत करो हम अकेले ही पृथ्वी के लिए बहुत हैं। एक बार मैं अकेले ही लड़ूंगा उसके बाद आप जो भी कहेंगे हम मानेंगे। हमें किसी भी तरह का अंदेशा होगा तो हम मदद के लिये बुलावा भेजेंगे।

आल्हा ने कहा... ठीक है, हम तुम्हारी भावनाओं का आदर करते हैं, पर यह पहली और आखिरी बार है कि तुम अकेले जा रहे हो। तुम्हारे साथ सारी कनवज की सेना और दो सौ वीर सरदार जायेंगे। मन्ना गूजर, धन्ना लुहार, लला तमोली और दस मल्लयोद्धा साथ जायेंगे, जो हर समय लाखन पर नजर रखेंगे और उसे चारों ओर से सुरक्षा कवच देते रहेंगे।

लाखन ने नदी पर जाकर एक चक्रव्यूह की रचना की जिसमें उसने अपनी सेना को चार भागों में बांट दिया। चारों को अलग-अलग दिशा में भिजाकर सभी का कार्य निश्चित किया। अब लाखन स्वयं अपनी हथिनी सहित पांच सौ हाथियों को लेकर बेतवा नदी में घुस किलोल करने लगे। हाथियों के झुंड को देखकर चौड़ा ने सोचा कि आल्हा ऊदल की सेना आ गई है। इसीलिए वह अपनी सारी सेना लेकर दौड़ा, उसी समय का लाभ उठाकर बाकी सेना बेतवा नदी पारकर गई। उसके बाद लाखन भी आ गए।

चौड़ा ने लाखन को देखकर कहा...कहां से आये हो? कौन हो और कहां जा रहे हो?

लाखन... हमारा नाम लाखन राना है। हम कनवज के युवराज और रतीभान के पुत्र हैं। ऊदल से बार-बार महोबा की तारीफ सुनी थी इसलिए अपने आप को रोक नहीं पाया और उनके साथ महोबा देखने के लिए चला आया।

चौड़ा...न राजा परमाल ने तुम्हें बुलाया, न ही राजा जयचंद ने तुमको भेजा इसलिये तुम वापस लौट जाओ।

लाखन.... हम वापस जाने नहीं आये हैं। हम महोबा देखने आये हैं और महोबा देखकर ही जायेंगे।

चौड़ा .... जैसे लड़का तुम रतिभान के हो वैसे ही मेरे भी हो। इसीलिए हम समझा रहे हैं। पृथ्वीराज ने पांच लाख से महोबा को घेरा है। बेतवा के सभी बयालीस घाट बंदकर रखे हैं। तुमने घाट पार करके उनकी आज्ञा का उल्लंघन किया है। अगर तुम घिर गए तो

पांव भी नहीं ठहरेगा उनकी सेना के सामने। इसलिए कनवज वापस चले जाओ। उसकी बातें सुनकर लाखन बोला...
इन्द्र डोल जायें इन्द्रासन से, शिव डोल जायें कैलास। लाखन डोलन के नाहीं हैं, हमरे वचन करो फरमान।।
बार-बार समझाने पर लाखन नहीं माना, तो चौड़ा अपनी भाला चलाकर बोला...कनौजी राय आपका तमाशा बहुत हो गया। अब वार सँभालो! लाखन ने भाले की चोट बचाकर दूसरे हाथ से भाला का निशाना साधा और सीधा चौड़ा के हाथी के माथे पर दे मारा। भाला हाथी के माथे में जाकर समा गया और हाथी वहीं लुढ़क गया।
लाखन...पांव पियादे अब तुम रह गये। दूसरो हाथी लेव मंगाय। हारे पर हम वार ना करहैं, मन में ना अब तुम घबराव।।
अब ताहराज लाखन से बोला... क्यों जान की बाजी लगाने पर तुले हो? अभी भी समय है वापस लौट जाओ। और वार किया। दोनों ही बढ़-चढ़कर वार करने लगे। कुछ ही देर में ताहर के पांव उखड़ने लगे। वह प्राण बचा कर पीछे हट गया।
पृथ्वी उसका रणकौशल और मोर्चाबंदी देख रहा था उसी की तर्ज पर उसे घेरकर कहा..आज तुम्हारी मौत तुम्हें खींच लाई है।
लाखन ने कहा... आप यमराज हो या उनके दूत जो मौत की धमकी दे रहे हो, तो पृथ्वी गरजा-मैं पृथ्वीराज चौहान हूं।
लाखन... अच्छा! तो आप हैं पृथ्वीराज चौहान! जो पराई स्त्रियों को चोरी से उठा ले जाते हैं। मैं आपसे ही मिलना चाहता था।
पृथ्वी ने कहा... लाखन हमारी तुमसे दुश्मनी नहीं है। तुम महोबा देखना चाहते हो हम दिखायेंगे। बस तुम आल्हा ऊदल की खोटी संगत छोड़ दो। हम मिलकर महोबा लूटेंगे और पारस पथरी के साथ महोबा भी तुमको दे देंगे। हमे तो महोबा की बर्बादी चाहिए।
लाखन....लगता है दगा आपके लहू में शामिल है। महाराज, दगा किसी का सगा नही, ना मानों तो करके देखो।
पृथ्वी...अभी तुम बनाफरों को नहीं जानते हो। कल इनकी शान में गलती हो जाये, तो ये तुम्हारा कनवज लुटवा लेंगे।
लाखन ने कहा ... जैसे आपके काका ने कच्छ के मंत्रीपुत्र का सिर भरी सभा में इस बात को लेकर काट दिया था कि उसने अपनी मूंछों पर हाथ फिराया था। पृथ्वी तुरंत बोला-.. वह मेरे काका की करनी थी।
लाखन...महाराज, रण में घूस लेना हमारा स्वभाव नहीं है। ‘‘यह आप कर सकते हैं कि घूस लेकर गौरी को बार-बार छोड़ देते हैं। ‘‘
पृथ्वीराज ने कहा... लाखन जबान सँभाल के बात कर, उस दिन कहां थे, जब मैं संयोगिता का हरण करके लाया था।
लाखन... महाराज तब मैं बालक था। यहां कुम्हड़ बतियां कोउ नाहीं हैं, जो तर्जनी देखत कुम्हलाहीं।। शस्त्र उठाकर मैदान में आकर बात करो। महाराज, सुना था आप बहादुरों की कद्र करते हो और अकेले को चारों तरफ से घेरा है।
पृथ्वी ने कहा....जंग में सब कुछ जायज है, और वार किया। लाखन उसको बचा गया। तीन बार पृथ्वी ने कीन्हें उसके बाद लाखन ने वारों की झड़ी लगा दी। वह कभी भाला लेकर कभी तलवार लेकर लड़ रहा है। उसने चारों ओर मारकाट मचा रखी है। बेतवा के तट पर लाशों के ढेर लगे हैं, लहू की धार बहकर नदी में जा रही है, कई सैनिक जान

बचाकर नदी में कूद गए। पृथ्वी और लाखन दोनों को घाव लगे हैं। दोनों ओर की सेना मारी गई, पृथ्वी के पांव उखड़ने लगे, वह हाथी पीछे ले गया।
“तथ्यों से ज्ञात होता है लाखन और पृथ्वी के बीच यह युद्ध बेतवा के तट पर हमीरपुर की सीमा में सन् 1188 के लगभग हुआ था।जिसमें पृथ्वीराज लाखन से हार गये थे। सन् 1188 में ही आल्हा ऊदल परमाल के मनाने पर महोबा वापस आये थे। “
लाखन की भूरी हथिनी भी घायल हो गई। लाखन ने कहा...एक जन्मदायिनी माता वो है दूसरी रण की माता तुम हो। पांव पीछे नहीं रखना है। लाखन ने महावत से कहा इसे नशा के गोला खिला दो। अभी मुझे पृथ्वी के पीछे जाना है। नशा के चार गोला खाते ही वह मदमस्त हो कर सेना में ताण्डव करने लगी। तभी ताहराज दो सौ हाथी दल लेकर आ धमका। अब पृथ्वी ने घायल लाखन को चारों ओर से घेर लिया। दोनों दलों की सेना समाप्त हो चुकी, पर लाखन की वीरता में कमी नहीं आई थी।
ताहर ने उसे मल्लयुद्ध को ललकारा। लाखन एक हाथ में ढाल और दूसरे हाथ में नंगी तलवार लिए मैदान में कूद पड़े। वह ढाल वाला हाथ ऊपर उठाकर ललकार रहा है। उसे देखकर द्वापर के अभिमन्यु की याद आ रही थी, आज लग रहा है कि सही में यह अभिमन्यु का अवतार है। वह क्रोध में भरकर ताहर के सामने पहुंचा, पर ताहर उसका रौद्र रूप देख घोड़ा मैदान से बाहर ले गए।
ताहर को जाते देख उसने कहा... अरे दिल्ली वालो, कायर की तरह पीठ दिखाकर क्यों भाग रहे हो? बहादुरी की बातें करते हो, तो मैदान में बहादुरी दिखाव। वह ऐसा कहता हुआ यहां वहां डोल रहा है। मन्ना गूजर और धन्ना लुहार उसकी सुरक्षा में खड़े हैं।
अब माहिल ने कहा.....महाराज, लाखन से सामने जीता नहीं जा सकता है। इसलिए उसे चारों ओर से घेर कर मार गिराइये।
तभी चंद्र कवि ने कहा ... महाराज यह उचित नहीं है। किसी वीर पर पीछे से छुपकर वार करना अन्याय है।
माहिल ने कहा ... ऐ भाट तू चुप रह। रामचंद्र जी ने भी तो बालि को पेड़ के पीछे से छुपकर मारा था।
चंद्रकवि ने कहा.. उन्होंने धर्म की रक्षा हेतु उस राक्षस का वध किया था जिसने अपने ही भाई की स्त्री को छुड़ा लिया था। लेकिन यहां बात उल्टी है। हम स्त्री को लूटने के लिए वीर का बधकर रहे हैं, जो मां और मातृभूमि के लिए लड़ रहा है।
माहिल... रे भाट, तू खाता तो दिल्ली पति का है और गुण हमेशा दुश्मन के गाता है। तू साथ रखने के लायक नहीं है।
चंद्र कवि... मेरा काम उचित सलाह देना है। मैं अपना काम ईमानदारी से करता हूं। आगे महाराज की मर्जी होती है।
महाराज ने कहा .... तुम दोनों चुप हो जाओ। वह तीर कमान हाथ में लिये कुछ सोचने लगे।
उधर ऊदल के खेमें में सभी लाखन को लेकर चिंतित हैं। इंदल नदी को निहार रहे थे कि उन्हें रक्त की धार दिखी। वह आल्हा से बोले ... दादा हमें और काका को जाने की आज्ञा दीजिये। लाखन को कुछ हो गया, तो हम राजा जयचंद को क्या मुंह दिखायेंगे?
आल्हा-ठीक है, तुम दोनों सेना लेकर पांचवे घाट से उतर जाओ। हम पीछे से अपनी सेना लेकर ग्यारहवें घाट से उतरते हैं।
ऊदल और इंदल आपनी सेना को ले कर पार उतर जाते हैं। ऊदल बोला ... लगता है

लाखन ने सेना का सफाया कर डाला घाट पर कोई नहीं है। कुछ आगे बढ़ने पर चारों ओर रुंड मुंड ही नजर आ रहे हैं। ऐसा लग रहा है मानों किसी ने लाशों को सूखने के लिए डाला है। दृश्य ऐसा कि कमजोर दिल वाला देख ही न सके। वह घोड़ा बढ़ा ये लाखन को खोज रहे हैं। मैदान में खून से लथपथ लाखन दिखा, वह दुश्मन को ललकार रहा था। तभी ऊदल की नजर पेड़ पीछे खड़े माहिल और पृथ्वी पर पड़ी। ऊदल बोला....इंदल, लाखन घायल है उसको दूर ले जाओ। मैं पृथ्वी को देखता हूं ऊदल के बेंदुला ने दोनों टापों से पृथ्वी के हाथी के सिर पर वार किया। इस आक्रमण से पृथ्वी का संतुलन बिगड़ा और वह हौदा पर लुढ़क गया, हाथ से तीर कमान छूटकर गिर गया।
ऊदल ने कहा...महाराज, आप जैसे वीर को यह शोभा नहीं देता कि एक बालक के ऊपर छुपकर वार करो, तभी पृथ्वी ने तलवार चलाई, बाकी सरदार भी ऊदल पर टूट पड़े, पर ऊदल ने कुछ ही देर में सभी के छक्के छुड़ाकर, अगला वार सीधा पृथ्वी के ऊपर किया उनकी तलवार छूट गई। पृथ्वीराज ने शर्म से आंखे नीची कर लीं, ऊदल ने फिर कहा... महाराज हारे हुए पर बनाफर कभी हाथ नहीं उठाते मैं चाहूं तो आपको यही बंदी बनाकर अपने भाई की मौत का बदला ले सकता हूं, पर आप शस्त्रहीन है इसलिए ऐसा करूंगा नहीं। मेरी भाभी मां के श्राप के कारण आपको छोड़ रहा हूं। अन्यथा आज आप ऊदल के सामने से वापस नहीं जा सकते थे। अपने जीवन की रक्षा चाहते हो, तो चुपचाप यहां से चले जाओ और फिर कभी महोबा की ओर आंख उठाकर भी ना देखना। यह कहकर ऊदल ने अपना घोड़ा उछाला और पृथ्वीराज का विजय छत्र उखाड़ लिया और वापस आ गया।
पृथ्वीराज ने देखा बनाफर महोबा आ चुके हैं। इनसे पार पाना मुश्किल है, सो चुपचाप सेना लेकर दिल्ली को लौट गए।
अब ऊदल ने लाखन को बाहों में भरकर कहा... वाह रे वीर, धन्य है तुम्हारी बहादुरी। पृथ्वीराज जैसे वीर को पीछे हटा दिया, उसका सामना करने की ताकत गिने चुने वीरों में है। रतीभान का लाल धन्य है। ऊदल ने अपने दुशाला से लहू साफ किया और धाना गूजर से कहा, यहीं जगह देखकर तंबू तान दो और लाखन के उपचार की व्यवस्था करो। दिल्ली की सेना के तंबुओं पर आल्हा की सेना ने कब्जा कर लिया था। आल्हा ने कहा...बेतवा की लड़ाई लाखन के नाम से याद करी जायेगी। ऊदल ने कहा...लाखन ने पिता का बदला पृथ्वी को भगाकर, उसे हराकर ले लिया।
उधर खबर मिल चुकी थी कि पृथ्वी मैदान छोड़कर दिल्ली वापस चला गया है। इसलिए पौ फटते ही सारी रानियां और कुछ नगर वासी स्त्रियां तैयार होकर सिर पर कलश रखकर आल्हा ऊदल के स्वागत को चल दीं। राजा परमाल रानी मल्हना कुंवर ब्रह्मा सहित डोला और पालकी लेकर सुमेरपुर की ओर चल दिये। सुबह होते ही ऊदल को ढोल सुनाई दिया, सभी चौकन्ने हो गए कि अब कौन आ गया? सैनिक ने पेड़ पर चढ़कर बताया कुछ पालकी डोला के साथ में महोबा के ध्वज भी फहरा रहे हैं।
राजा परमाल पैदल ही आगे बढ़ रहे, उनके साथ में ब्रह्मा और रानी है। आल्हा ऊदल ने आगे बढ़कर उनके चरण स्पर्श किये। राजा ने दोनों को छाती से लगा लिया। आंखों से आंसुओं की धार बह रही है। ऐसा लगा मानों किसी गरीब को खजाना मिल गया हो। उन्होंने हाथ जोड़कर कहा.... पुत्र, अपने महाराज दादा को माफ कर दो और अपने घर वापस चलो। वह घर कल भी आपका था और आगे भी आपका ही रहेगा। सूना नगर जानकर दिल्लीपति बार-बार उसे घेर लेते हैं। उन्होने ब्रह्मा को आगे कर कहा...इसे मैं

आपको सौंपता हूं। अब आप ही इसके रक्षक हो। क्या एक पिता को अपने बेटों से गुस्सा होने का अधिकार नहीं है?
आल्हा ने कहा ... दादा महाराज, आप ऐसी बातें न करें। हम सब पर आपका पूरा अधिकार है। आपने अधिकार से निकाला था सो हम चले गए थे। फिर आपने उसी अधिकार पूर्वक बुलाया तो हम वापस आ गए हैं। बहुओं ने रानी को चरण वंदन किया। चंद्रावली अपनी सभी भाभियों से मिलकर बहुत खुश हुई। रथ पर आगे राजा परमाल और आल्हा हैं। उसके बाद ऊदल और ब्रह्मा, लाखन और इंदल, उसके पीछे रानियों के रथ हैं, राहों में फूल बिछे हैं, राजकीय सम्मान के साथ महोबा में प्रवेश किया। साथ आये राजा महोबा का वैभव देख दांतों तले अंगुली दबा रहे हैं। सभी माता तिलका से मिलने सिरसा जाते हैं।

33-जागन का ब्याह

गंगापार के मेला में उड़न बिहार के राजा कांतामल की पुत्री जमुनावती सखियों के साथ आई हुई थी। वह वेश बदलकर सखियों के साथ मेला घूमने लगी। मेला में उसकी नजर जब जागन पर पड़ी तो उसे चक्कर आ गया। वह उसके दिल में समा गया। जब उसके बारे में जानकारी की, तो जमुनावती उसकी बहादुरी की बातें सुनकर उसे वरण कर बैठी। वह किसी तरह डेरा पर आई और गहरी सांसे लेकर बोली.. अगर वह वीर नहीं मिला तो मैं मार कटारी मर जाऊंगी। उसकी सखी चंपावती ने समझाया कि किसी तरह पहले एक मुलाकात कर उसे अपने दिल का हाल बताइये। राजकुमारी अपनी फोटो वाली जादू की अंगूठी करके जागन के तंबू में पहुंची और जागन को भी अर्ध बेहोशी की हालत में करके अपनी अंगूठी बदलकर कहा...राजकुमार, हम आप की वीरता से बहुत प्रभावित हैं। हमने आपका वरण कर लिया है। हम आपको वरमाला पहनाकर जा रहे हैं। आपसे विनती है और गंगा की सौगंध है कि आप अगर सच्चे क्षत्रिय हो, वीर हो, तो हमारा पता लगाकर, बारात लेकर अकेले आना, तभी हमारा मिलन होगा।

जागन सोचने लगा कि रात का सपना कितना सुहाना था। तभी उसकी नजर हाथ की अंगूठी पर पड़ी और उसमें उसी सुन्दरी का फोटो देख बेहोश हो गया। उसी को याद कर तलाशता मेला में घूम रहा, पर वह सूरत उसे कहीं नजर ना आई। उसे अपना होश नहीं है। उसके सेनापति ने उसकी यह हालत देखकर अपनी सेना को लेकर जगनेरी को कूच करा दिया।

माता उसे दुलार रही हैं, दासियां पंखा कर रही हैं, पर जागन प्यार में बेबस हो, लगातार अंगूठी को देखे जा रहा है। जो दासी पंखा कर रही थी, उसकी नजर अंगूठी पर पड़ी वह बोली...अरे ये तो उड़न बिहार की राजकुमारी का फोटो है। जागन यह सुन चौंककर बोला... कौन उड़न बिहार? कौन राजकुमारी? मुझे सब कुछ बताओ, तो दासी ने कहा... मेरी मौसी उड़नबिहार में है, वहां के राजा कांतामल की राजकुमारी का ये फोटो है। उसके राज्य में जादू का बोल बाला है। राजकुमारी स्वयं जादू की बड़ी जानकार है।

एक दिन जागन कुछ सेना और दासी के साथ अकेला ही उड़नबिहार पहुंचा। दासी से मिलकर उसने बाग में रहने का इंतजाम कर लिया। वह बागों में आकर जागन को देखकर खुश होकर बोली....मैं आपका इंतजार कर रही थी। मुझे भरोसा था कि आप जरूर आयेंगे। वह गुप्त सुरंग से महल में ले गई। उसने कहा...कुंवर आप अभी हमसे गंधर्व विवाह कर लीजिये।

जागन ..नहीं हम बारात लाकर ही ब्याह करेंगे। अगर हम चोरी से ब्याह करेंगे, तो हमारे क्षत्रिय धर्म का अपमान होगा।

जमुना ने कहा.... कुंवर आप हमारे पिता से कभी नहीं जीत सकते हो। उसे जीतने के लिए आप को उनका भेद पाना होगा। भेद मैं तभी बताऊंगी जब आप हमसे गंगा तुलसी करोगे। जागन ने गंगा उठाकर करार किया कि वह उससे ब्याह करेगा।

जमुना ने कहा- महल के ऊपर जादू का मोर नाच रहा है, जबतक वह नाचेगा मेरे पिता अजेय हैं। जिस महल पर वह नाच रहा है, वह तिलस्मी महल है। उसके अन्दर बहुत सी

जादुई शक्तियां है, जो इस राज्य और राजमहल की रक्षा करती हैं। उस मोर के मरते ही यह सारा जादू समाप्त हो जायेगा। अच्छा जादू जानने वाला ही जादू का कवच पहनकर उस मोर को मार सकता है। वह जादुई कवच हम आपको देते हैं। उस मोर को मारने का समय प्रातःकाल का है, जब उस पर सूर्य की पहली किरण पड़ें, तभी उसे मारने के लिए बांयी ओर से दायीं ओर तलवार का वार करना होगा और एक ही वार में सर काटकर उसको मारना होगा अन्यथा वह नहीं मरेगा। सबसे बड़ी बात यहां पर लाइन से एक जैसे ही तेरह महल बने हैं, तो दायें से पांचवां महल और बायें से आठवां महल है, जिस पर वह असली मोर है। बाकी सब मोर और महल माया हैं। आप उस असली महल पर निशान लगा लीजिये।
यह सारा भेद जानकर राजकुमारी से जादुई कवच लेकर, जागन वहां से चला गया। वह सेनापति से बोला... कि प्रात: होते ही अपनी सेना सजाकर मैदान में आ जाना। उसके बाद वह बाग में अपने कमरे में आकर अपनी सभी जादू शक्तियों को अपनाता है। उसने अपने गुरूदेव की दी गोली मुंह में रखी और बटुआ लिया। अपने सभी वस्त्र पहनकर सारे हथियार बांध लिये। अभी भोर की लाली फूटने वाली है। इस समय जादू का जोर कम ही रहता है, अपने घोड़ा को ले महल के चौक में पहुंचा। वहां सब एक जैसे महल थे। उसने रात को ही राजकुमारी की सहायता से मोर वाले महल पर निशान लगाया था, इसलिए पहचानने में कोई दिक्कत नहीं हुई। घोड़ा पीछे हटाया और उसे दौड़ाकर एक ऊंची छलांग लगा महल के उपर कूद गया। उसी समय सूर्य की पहली किरण ने अपना प्रकाश धरती पर बिखेरा। जागन वीर ने देखा कि वह जादुई मोर अपने पंख फैलाकर नाच रहा है। उसके पंख सुन्दर है। सूर्य की किरणें पड़ने से वह और भी चमक उठे। तभी जागन ने घोड़ा पर बैठे हुए ही जय भवानी मां कहकर उस पर बांयी ओर से तलवार का वार कर दिया। एक ही वार में मोर का सिर कटकर दूर जा गिरा। उसके बाद जागन का घोड़ा छलांग लगाकर नीचे आ गया। उसके नीचे आते ही, महल धड़ाम से भरभरा कर गिर पड़ा। चारों ओर धूल का गुब्बार छा गया। अब वह तेरह तिलस्मी महल भी नहीं दिख रहे थे। यानि कि वह सब तिलस्म का ही भ्रम था, जो अब समाप्त हो चुका था। जागन बाहर आ गया।
उधर सारे नगर में शोर मच गया। राजा कामतामल को जब यह बात पता चली, तो वह चौंक गए। किसने महल का भेद बताया है। कौन सा बैरी हम पर चढ़कर आया है? उसने अपने तीनों बेटे अमरजीत, समरजीत, और अचलजीत को बुलाकर सेना को तैयार करके मोर्चा सँभालने के लिए कहा। आनन फानन में सारी सेना तैयार हो गई। तीनों कुमार सेना की अगुवाई कर रहे थे।
अमर ने ललकारा...कौन देश का रहने वाला, क्यों मरने को फिरे अगार। उड़नबिहार किले पर आकर, तूने डाले जुलम गुजार।।
हंसकर जागन बोला....जगनेर नगर का रहने वाला, जागनबीर है नाम हमार। आल्हा ऊदल और मलखान, भाई लगें बनाफर राय।।
तुम्हरी बहन जमुनावती ने हमसे गंगा किनारे अंगूठी बदली और चुनौती देकर अकेले बारात लेकर बुलाया, ये देखो उसकी अंगूठी निशानी है। इसीलिए हम वचन के अनुसार बारात लेकर आ गए हैं अब आप भी ये रिश्ता मंजूर कर बहन को विदा कीजिए।
जागन की बातें सुनकर समरजीत ने कहा...हमारे द्वार पर आकर हमें ही आदेश देता है। आक्रमण..उन दोनों का आपस में युद्ध हो रहा है। जागन ने समरजीत का सिर धड़ से

अलग कर दिया है। अब ललकारता हुआ अचलजीत आया है। जागन ने उस पर भी वार किया उसने ढाल अड़ाकर वार रोका पर लड़खड़ा कर गिर पड़ा। जागन ने उसकी मुश्कें बांधकर कैद कर लिया। अमरजीत यह हाल देखकर लौट गया। पिता को सारा माजरा बताया, कामतामल ने कहा ...अरे मूर्ख, तू पीठ दिखाकर क्यों आ गया? मैं अभी देखता हूं कि कैसा जागन है? कामतामल अपने गुरु की मड़िया पर गया और हाथ जोड़कर सारा हाल बताया।
गुरुदेव... वत्स धैर्य रखो, हम आपके साथ चलते हैं, एक घोड़ा पर सवार होकर गुरुदेव राजा के साथ चल दिये।
कामतामल ने मैदान में जाकर जागन को ललकारा... कौन जोधा है जिसने मेरे पुत्र को मारा है? आगे आये।
जागनबीर... मैंने ही मारा है, यह सुन राजा ने वार करके कहा....लो अब यमपुर जाने की तेरी बारी है। दोनों में घमासान होने लगा। जागन की तलवार जहां घूम जाती मैदान साफ हो जाता था। तभी गुरुदेव ने जागन पर जादू चलाया और वह मूर्छित हो घोड़े से गिर गया, राजा ने बंदी बनाया। गुरुदेव ने जादू की लकड़ी से छूकर उसे बंदर बना दिया और अपनी कुटिया में ले गए।
राजकुमारी जमुनावती यह खबर सुनकर, मालिन को अपना सारा हाल सुनाकर कहा अब क्या होगा?
उसने कहा ... राजकुमारी जी, मैं अपनी बहनोती को जगनेर वापस भेजती हूं। आप हमें पाती लिखकर दे दीजिए।
दासी चंपा ने जगनेर आकर सारा हाल महारानी को सुनाया वह चिंतित हो बिलख पड़ीं। उनके जेठ माहिल से तो उन्हें किसी तरह की आशा नहीं थी, वह महोबा आकर वह अपनी ननद रानी मल्हना से लिपटकर रोकर सारा हाल सुनाया और आल्हा को सारी बातें बताकर कहा... भान्जे राजा, अब तो आपका ही आसरा है। मेरा बेटा मुझे वापस ला दो।
आल्हा.. अरे मामी, वह तो बावला था, पर आप तो समझदार थीं। खबर तो कर सकती थी, सबकी नाक कटा दी।
ऊदल ने कहा ... दादा, आप हमें आज्ञा दीजिये, छुड़ाना तो पड़ेगा ही आखिर महारानी मां का लाडला भतीजा है।
ऊदल ने चार कोस दूर अपने तंबू लगाये। उसके बाद ऊदल, इंदल और ब्रह्मा जोगी बनकर चल दिये। दरबान ने फाटक खोला। वह सभी नगर चौक पर अपना तमाशा दिखाने लगे। फिर तीनों गुरुदेव के पास जाकर मधुर रागिनी गाने लगे। ऊदल की बीन से सम्मोहित होकर बोले... इतना अच्छा सुरों का संगम हमने अभी तक नहीं सुना। तुम सब कौन हो और कहां से आये हो?
ऊदल...महाराज, हमे संगीत का ज्ञान थोड़ा बहुत है, पर जादू की विद्या में अनाड़ी हैं। आपका बहुत नाम सुन के आये हैं।
गुरुदेव ने कहा ...हमें भी आप जेसे चेला बनाकर खुशी होगी। हम आप में से किसी एक को जादू की विद्या जरूर सिखायेंगे।
ऊदल- गुरुवर, किसे सिखायेंगे? गुरू.. हम तुमको ही सिखायेंगे। तुम इन सब में कुछ ज्यादा ही विनम्र और बुद्धिमान लगते हो।
उदल ने मुस्कराकर कहा... यह तो गुरुदेव की कृपा है, वरना बंदा इस लायक कहां है।

बाकी दोनों वापस चले गए।
गुरु...वत्स तुम अपना सामान किसी कोने में रख दो। ऊदल अंदर जाकर अपनी झोली रखता है। उसने वहीं पर बंधे बंदर को देखा, तो वापस आकर बोला....गुरुदेव, अंदर बड़ा उद्दंड बंदर है; हाथ बंधे होने पर भी वह बिना बात के काटने को दौड़ता है।
गुरुदेव... अरे बेटा, खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे है। यह जगनेरी का राजा जागनबीर है, यहां के राजकुमारी से ब्याह करने आया था, फिर इस गुरु के चक्कर में पड़ गया तो क्या था, हमने इसे बन्दर बना दिया। अब रोज ही डंडों की मार खाता है।
ऊदल ने मुस्कराकर कहा.. एसे हठी का यही हाल होना चाहिए और एक डंडा जमाकर बोला गुरुदेव आपकी बात सोलह आना सही है, आप सचमुच महान हैं। गुरुदेव, जो सामने दिख रहा है, क्यों ना उसी से विद्या सीखने की शुरूआत की जाये।
गुरुदेव ने उसकी प्रशंसा से खुश होकर कहा... अच्छा हम अभी तुमको ये जादू बताते हैं। उसने अपनी झोली उठाई और उसमें से एक हरे रंग व लाल रंग की दो लकड़ी निकालकर ऊदल को दिखाकर कहा ... ये हमारे जादू के द्वारा अभिमंत्रित की हुई छड़ी हैं। ये सतावर नामक पेड़ की लकड़ी से बनती हैं। इसे दीवाली की रात में उल्लू के मुंह में दबाकर सिद्ध किया जाता है।
इनमें से लाल छड़ी अगर किसी मानव के सिर पर रखकर कहोगे... ज्वल ज्वल प्रज्जवल प्रज्जवल उं ऐं ह्लीं क्ली चा मुंडायै विच्चेबानर, बकरा, या भेड़ हो जा, तो वह उसी रूप में बदल जायेगा। यह दूसरी हरी वाली छड़ी उस बानर बनके सिर पर रख कर कहोगे भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी नमः मानव हो जा तो वह मानव के रूप में आ जायेगा। यह कहकर उन्होनें बानर के सिर पर हरी लकड़ी रख कर कहा ... भ्रां भ्रीं भ्रूं मानव हो जा। पलक छपकते ही बानर जागन के रूप में बदल गया, पर वह कुछ ना कहकर उसी तरह से हाथ बांधे बैठा रहा, वह बानर रूप में ही देख चुका था कि ऊदल आ गया है।
गुरुदेव... वत्स, लाल लकड़ी इसके सिर पे रखकर कहो..ज्वल ज्वल प्रज्जवल प्रज्जवल उं ऐं ह्लीं क्ली चा मुंडायै विच्चे बानर हो जा।
ऊदल ने वह लकड़ी लेकर कहा... ज्वल ज्वल प्रज्जवल प्रज्जवल उं ऐं ह्लीं क्ली चा मुंडायै विच्चे बानर हो जा और झट से वह लकड़ी उसी गुरु के सर पर रख दी। लकड़ी के छूते ही वह गुरुदेव बानर बन गए थे। अब जागन जल्दी से डंडा उठाकर उस बानर को मारकर बोला... मुझे डंडा मारता था। मुझे दरबार में नचाना चाहता था। चल अब मैं तुझे गली-गली नचाऊंगा। वह राजदरबार में जाकर बोले...महाराज यह अनोखा वानर है जिसका करतब आप देखकर बहुत खुश होंगे, आज्ञा दीजिए।
बानर ऊदल की मार से डरकर वह वही करता था, जो कुछ ऊदल कहता था। यह देखकर राजा ने कहा ... कहा क्या यह हमारी बात भी समझ सकता है, ऊदल ने झट से कहा ... हां महाराज यह मानव की बोली समझता है। राजा ने उसकी परीक्षा की, अब राजा ने कहा .... यह बानर मुझे दे दो हम तुमको बहुत सा खजाना देंगे। तुमको झोली फैलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
ऊदल ने कहा... महाराज आंख खोलकर निहारो हम कोई मांगने वाले नहीं है। नाही यह कोई साधारण बानर है। यह आपके ही गुरुदेव हैं जिनने जागन बीर को वानर बनाया था। अब अपने किये की सजा खुद वानर बनकर भोग रहे हैं। हम महोबा के राजा मंडलीक आल्हाअवतारी के छोटे भाई ऊदल हैं और ये उनके सुपुत्र कुंवर इंदलजीत हैं। ये राजा परमाल के राजकुमार कुंवर ब्रह्मजीत हैं और ये आपके दामाद और हमारे ममेरे

भाई कुंवर जागन वीर हैं। महाराज आपकी सुपुत्री ने ही हमें आमंत्रित कर बुलाया है। ये देखिये उसकी पाती। वह हमारे भाई को वरण कर चुकी है। सो आप सब कुछ भूलकर, भांवर डालकर विदाई कर दीजिये।

इतना सुनते ही राजा ने ललकार कर कहा...मारो-मारों इनको पकड़ो ये बचकर जाने ना पायें। इन चारों ने अपनी अपनी तलवारें खींच ली और बीच दरबार में घमासान होने लगा। राजा बन्दर की एक टांग पकड़ कर अपनी ओर खंीच रहे है और ऊदल उसके हाथ पकड़ कर उसे अपनी ओर खंीचते हैं। वह बानर चीं चीं कर चीख रहा है। जागन ने जब यह देखा कि राजा वानर को पाने के लिए सारा जोर लगा रहे हैं, तो उसने बीच में कूदकर वानर पर तलवार का वार किया और वह दो टुकड़े हो गया।

ऊदल ने कहा ...महाराज हमने आपके गुरु को यमपुरी पहुंचा दिया है। अब आपकी जो भी इच्छा हो डेरा पर खबर भिजा देना।

दूसरे दिन अचलजीत और अमरजीत सेना का नेतृत्व कर रहे हैं। एक का सामना इंदल से हो रहा है दूजे का जागन से। दोनों ने ही कुछ देर में दोनों की मुश्के बांध ली। अब राजा ने ललकारा ... कौन शूरमा है? आगे आये।

ऊदल... हम ही वह शूरमा हैं, तलवारें बजने लगी। कुछ ही देर में ऊदल ने उनको भी बंदी बना लिया। यह देख सेना भाग गई।

तीनों को लेकर ऊदल तंबू में आ गए। राजा को आसन पर बिठाया। राजा ने कहा ... हमने जैसा सुना था, वैसा ही पाया, यह तो हमारी बेटी की किस्मत है कि उसे आप जैसा वर मिला है। हम ब्याह करने को तैयार हैं। आप बारात लेकर आ जाइये।

ऊदल ने उन्हें छोड़ दिया और जागन को मौर बांध कर दूल्हा बना कर, बारात सजा कर राजा के द्वार पर आये। राजा ने उनका स्वागत किया। सातों भांवर पूरी करके राजा रानी ने अपनी बेटी को बहुत सा उपहार दे कर विदाई दी। साथ में बारह सखियों की भी विदाई की। इस प्रकार जागन का ब्याह पूरा करके, वह वहां से अपनी सेना सहित कूच करके चल दिये।

34-जलशूर और बहोरन का ब्याह

एक दिन रानी मल्हना ने स्वप्न देखा कि रानी गजमोतिन कह रही है कि मेरे पुत्रों की सगाई को बरसों बीत गए हैं। किसी को उनकी चिंता नहीं है। मेरे पति के वचन को पूरा करना आप सभी का धरम है। रानी ने अपना सपना राजा महाराज को सुनाया। उस समय माहिल भी उनके पास ही था। यह सुनकर तो उसे मुंह मांगा वरदान मिल गया वह बोला.... हां, यह बात तो सच्ची है कि पृथ्वीराज ने दोनों कुंवर को टीका चढ़ाया था और ब्याहे को आज तक नहीं बुलाया है, जहां ऊदल का पसीना गिरा वहां मलखान ने खून बहाया है। आज मलखान की आत्मा परलोक में बैठी फड़फड़ा रही होगी कि मेरे मरने पर मेरे ही बेटों की कोई खबर लेने वाला नहीं है। सारे राजा थू थू कर रहे हैं कि मलखान के मरते ही सबने भुला दिया। रानी ने ऊदल को बुलाकर सपना सुनाया।
आल्हा बोला.... ऊदल बाकी काम पीछे होंगे, अभी हम दोनों कुंवर के ब्याह को चलेंगे। पता नहीं हम ये कैसे भूल गये कि हमें मलखान का वादा पूरा करना है। आल्हा अपने साथ माता दिवला, रानी सुनवां को लेकर सिरसा को चल दिये।
ऊदल ने कहा- बड़ी मां, आप पाती लिख दीजिये कि वह साथ-साथ बेला का गौना कर दें तो हम आपकी बहू भी लेते आयेंगे। ब्रह्मा दादा साथ में जा ही रहे हैं। रानी गुरुदेव की बात याद करके घबरा गईं वह नहीं चाहती थी कि बेला इस घर में आये सो बोलीं- नहीं ऊदल, बहू के गौने का भूलकर भी नाम नहीं लेना। वह कहें भी तो कहना कि हम गौना कराने अलग से आयेंगे अभी उसका मुहूर्त नहीं है। एक बार में एक ही कार्य शुभ होता है, कोई कुछ भी कहे तुम अपनी बड़ी मां की बात याद रखना।
सिरसा पहुंचकर आल्हा ने जलशूर के नाना को न्योता देकर बुलाया और भी नातेदारों को न्योता भेज बुला भेजा। सभी अपनी अपनी सेना लेकर सिरसा आ गए थे। दोनों कुंवर को दूल्हा बनाया गया है। देवि शारदा का पूजन करके बारात चल दी।
किसी ने कहा..जा घर कन्या होंय बहुत सी, धन का अंत वहां लो जान। जा घर पूत कपूत जन्म ले, कुल का अंत वहां लो जान।।
यहां पर पृथ्वीराज के सात बेटों की सत्रह कन्यायें थीं। स्वयं पृथ्वीराज की एक पुत्री थी। उसका ब्याह ब्रह्मा से करके पृथ्वीराज ने अभी तक उसका गौना नहीं दिया था। पृथ्वी के गुप्तचर ने सूचना दी कि महोबा वालों का लश्कर दिल्ली की सीमा पर आकर रुका है। दूत भेजकर पता करने को कहा। दूत ने ऊदल के तंबू में पहुंच कर बंदगी और कहा...आप कौन हैं? क्यों आये हैं?
ऊदल बोला...अपने राजा से कह दीजो, हाथी हौदा बैठकर रण में अपनी नातिनों की सगाई मलखान के बेटों से करी थी। कैसे महाराज हैं, करार करके भूल गये। कहना हम बारात लेकर आ गये हैं। ब्याहे की तैयारी कर लें, हमें आने की सूचना भेजें।
समाचार सुनकर सभी की आवाज बंद हो गई। पृथ्वी के बेटों ने कहा...आप चिंता ना करें। हम मिलकर उनको बारात लाने का मतलब समझा देंगे। अगर हमारे दिन पूरे भी हो गये होंगे, तो हम उनकी लाश गिराकर ही मरेंगे।
ताहर बोला...भाग्य का लिखा नहीं टरता, आप हमें युद्ध की आज्ञा दीजिये। इस प्रकार पृथ्वी की आज्ञा से सूरज आपनी साथ एक लाख की सेना लेकर चढ़ आया। ब्रह्मा और सूरज की जमकर लड़ाई हुई। शाम होते तक महोबा की सेना के पांव उखड़ गए। दूसरी

रात को पृथ्वी को खबर मिली कि महोबा की सेना किले को चारों ओर से घेर रही है। उसने अपने खनिक सैनिकों से कहा कि किले की दीवार के नीचे नीचे बारूदी सुरंग बिछा दो। जब महोबा की सेना पास आ गई तो बारूदी सुरंग में आग लगा दी गई। किले की बाहरी दीवरें भरभरा कर सैनिकों के ऊपर गिर पड़ीं। बड़े बड़े पत्थर हवा में उड़-उड़ कर सैनिकों के सिर फोड़ रहे थे। इस हमले में महोबा के बहुत से सैनिक मारे गए, तो बाकी बचे सो भाग गए।

अगले दिन दोनों सेनायें फिर मैदान में थांr। ऊदल ने आज की जंग में कटा मचा दी थी। वह जहां से तलवार भांजता निकल जाता, वहां का मैदान साफ हो जाता था। युद्ध बंद होते तक दोनों ओर की बहुत क्षति हो चुकी थी।

अगले दिन इंदल ने कहा .... काका जी, आज आप विश्राम करिये, हम जाते हैं।

ऊदल...बेटा, दिल्ली वाले तुम्हारे वश के नहीं, ये कब छल करें पता नहीं चलता, मलखान का जाना सबूत है।

इंदल ने कहा...काका, आप आज्ञा दीजिये मैं इनको मजा चखाकर ही लौटूंगा। आज्ञा पाकर इंदल ने अपने पांचों हथियार बांधे, मछलीवन का जामा पहना, सिंह भवन का सैला बांधा, अस्ट धातु का कवच, कमर में छप्पन छुरी का कमरबंद, भुजाओं में भुजदंड और सिर पर झलरिया टोप पहना, दाहिने हाथ में नंगी तलवार लेकर जब वह खड़ा हुआ, तो यूं लग रहा था कि देवराज इन्द्र स्वयं आ गये। वह घोड़े का बकसुआ पकड़कर उछलकर बैठ गया। उसने अपने साथ हिरंजन, दुखभंजन, अबजा-सबजा, तुर्की, कल्याणी, तुस्की, मुस्की, तुरंगी, बदामी आदि घोड़ा तैयार कराकर साथ ले लिये, जिसे उसने अपनी लड़ाई के लिये तैयार किया था। रण का दूल्हा बनकर इंदल मैंदान में पहुंच गया। सामने सूरज भी अपनी सेना लिये खड़ा था। जय भवानी कहकर घमासान होने लगा।

खटखट खटखट तेगा बाजे, बाजे छपक छपक तलवार। कट कट शीश गिरें धरनी पर, उठ उठ रुंड करें तलवार।। चार घड़ी की लड़ाई में इंदल ने मैदान साफ कर दिया। चारों ओर रुंड मुंड ही नजर आ रहे थे, लहू की पिचकारियां छूट रही थीं।

सूरज ने कहा... बनाफर कुमार नाहक में सेना का कटा करा रहे हो, मैदान में आकर हमसे दो-दो हाथ कर लो। इंदल ने लड़ाई बंद कराई और हाथ में तलवार लेकर मैदान में कूद पड़ा। सूरज तलवार लहराता हुआ मैदान में आ गया। अब दोनों ही पैंतरा बदल बदल कर दांव खेलने लगे। इंदल ने सांग उठाकर सूरज पर वार किया। बचते बचते सूरज वार की चपेट में आ गया और धरनी पर गिर पड़ा। उसके गिरते ही इंदल ने अपना घुटना उसकी छाती पर रख दिया और उसकी मुश्कें बांधकर बंदी बना लिया।

यह खबर मिलते ही पृथ्वीराज ने कहा...चौड़ा तुम सूरज को छुड़ाकर लाओ। चौड़ा मोतीराज को साथ ले सेना लेकर चल दिया।

यह खबर ऊदल को भी मिल गई कि मैदान में चौड़ा आया है। वह छल करने में माहिर है। तभी जलशूर ने कहा ... काका हम इंदल दादा की सहायता के लिए मैदान में जाना चाहते हैं। समय की मांग को देखकर ऊदल ने उसे जाने का हुकुम दे दिया। अब मलखान का उन्हारी जलशूर जब सभी हथियार बांधकर सजकर तैयार हुआ तो उस पर नजर नहीं ठहरती थी। एक पल को तो सभी को यही लगा कि मलखान सामने खड़ा है। वह सभी की आज्ञा लेकर मैदान की ओर बढ़गया।

इंदल उसे देखकर बोला... अरे दूल्हे राजा तुम क्यों आ गए इनके लिए तो मैं अकेला ही

बहुत हूं।
जलशूर ने कहा...दादा, तुम अपने को कुछ आराम दे लो, इनको मैं देखता हूं। इंदल रण के मैदान से बाहर आ गये।
चौड़ा ने कहा... किसने सूरज को धोखे से बांधा है? जलशूर ने कहा... सुनो चैड़ियाराय, धोखा देना आपको और आपके राजा को आता है। आपने धोखा से ऊदल काका को जनाना वेश धरकर जहरीली कटार मारी थी और आपके राजा ने धोखा से मेरे पिता को मारा है। सूरज को इंदल दादा ने मल्ल युद्ध में हराकर बांधा है। आप भी अपने दिल के अरमान मेट लो।
उसके बाद कुंवर जलशूर ने कहा ... ये लो ब्रह्मण देवता हमारा वार चौड़ा ने उसका वार झेला, पर उसका पूरा हाथ झनझना गया। दूसरे वार में उसे दिन में तारे दिखाई दे गये और तीसरा वार वह झेल ना सका और अपने ही हाथी से लुढ़क गया, जलशूर भी हाथ में तलवार लिये घोड़ा से कूद पड़ा, पर चौड़ा भी कम ना था, वह अपनी गिरी हुई तलवार उठाकर फुर्ती से खड़ा हो गया। अब दोनों ही उचक उचक कर पैतरा बदलकर वार करने लगे। जलशूर के भीतर गजब की फुर्ती थी। अब वह जलशूर के सामने कमजोर पड़ने लगा था। और अगले ही वार में उसके हाथ से तलवार छूट कर जा गिरी थी। जलशूर ने उसे आगे बढ़कर जा दबोचा और सैनिकों ने उसकी मुश्कें बांध बंदी बना लिया। चौड़ा बोला.....धन्य हो मलखान कुमार, तुम्हारी वीरता सराहनीय है। आपके पिता ने मुझ ब्राह्मण को बंदी नहीं बनाया था। आप हमे छुड़ा दीजिये। हम यहां से चले जायेंगे।
जलशूर....अभी चले जाओगे, कल फिर आ जाओगे। मैं पिता जी की तरह गल्ती नहीं करूंगा तुमको बंदी बना के ले जाऊंगा।
इंदल ने जलशूर की पीठ ठोंककर कहा ... शाबाश मेरे बहादुर वीर। उधर पृथ्वीराज ने जब सुना कि चौड़ा कैद हो गया, तो वह सोच में पड़ गया। इस समय तक पृथ्वी के अधिकांश वीर मारे जा चुके थे। वह स्वयं भी गौरी द्वारा तोपें लाने के कारण परेशान था, ऊपर से ये महोबा वाले पीछा नहीं छोड़ते। उसने सभी बेटों से कहा...तुम सब जाकर, एक साथ आक्रमण करके कुंवर सूरज और चौड़ा दोनों को छुड़ा लाओ, धरा को बनाफर विहीन कर दो। मोतीराज, ताहरराज, गोविन्दराज सभी तैयार होकर चल दिये। ज्ञात हो कि पृथ्वीराज के अब तीन पुत्र ही बचे हैं। पृथ्वी की दसवीं रानी की संतान का एक पुत्र अपने नाना के यहां कर्नाटक में था। यहां से भी मैदान में आल्हा, उदल, ब्रह्मा, ढेबा थे। सभी ने पृथ्वी का एक एक बेटा चुन लिया और हराकर बंदी बना लिया। उसके बाद ऊदल महलों में घुस गया, वह नंगी तलवार लेकर घूम रहा है, आज मैं अपने भाई की मौत का हिसाब चुकाकर रहूंगा; आज पता चलेगा बनाफरों की वीरता का, तभी रानी अगमा ने सामने आ कहा.. कुंवर ऊदल हमारी बात मानों और तुम वापस जाओ हम कल आपको बारात ले के बुलावा भेजेंगे, यह हमारा वचन है। ऊदल उनकी बात मानकर चला गया।
रानी ने राजा को समझाया... महाराज नाहक में बैर बसाकर कुछ भी नहीं मिलेगा। माहिल के कहने पर वहां महोबा चंद्रावली का डोला लूटने जा पहुंचे अरे का मिला, अपने तीन-तीन बेटा खो के चले आये। आपकी उमर भी अब पहले जैसी नहीं है, यह लड़ाई की नीति त्याग दो। अति किसी भी चीज की अच्छी नहीं होती है। हमारे कितने ही वीर मारे जा चुके हैं, सेना भी हमारे पास बहुत कम हैं। आप पिछले एक साल से

लगातार युद्ध कर रहे हो। इस कारण कितनी धन-जन की हानि हो रही है। आप एकजुट होकर यवनों का सामना कीजिए, एक नया इतिहास लिखिये। आप महाराज हैं दिल्ली पति हैं। आपको बहुत सोच समझकर कार्य करना चाहिये। मलखान के साथ जो हुआ उस कलंक को हम अपनी बेटियां ब्याह कर कुछ हद तक बैर कम कर सकते हैं। इसलिए आप बिना किसी झगड़े के ये ब्याह करके एक मिसाल कायम कीजिये। बदलते समय को पहचानिये। आप स्वयं बहुत समझदार हैं।
अगले दिन पृथ्वीराज ने कहा.. मंत्रीवर, कोई उपाय बताइये कि राजकुमारों को वापस लाया जाये, तो मंत्री बोले...महाराज, नीति कहती है, दुश्मन सबल हो, तो नीति से काम लेना चाहिये। अभी हमें उनकी बात मानकर उनको धोखा में रखकर काम करना चाहिये।
मंत्री की बात पर नेगी को बुलाकर पाती लिखी कि आप सभी बारात लेकर आ जायें। हम पोतियों का ब्याह करने को तैयार हैं।
समाचार पाकर सभी सज-धज कर चल दिये। वैभव और राजसी ठाठ बाट सभी के हावभाव से झलक रहा था। ऐसा लग रहा था मानों देवताओं की बारात जा रही है। सभी ने कपड़ों के भीतर नौ नौ हथियार बांध लिये थे क्योंकि सभी जानते थे अभी युद्ध होगा।
आल्हा ने कहा...सभी अपने आंख कान खुले रखना, सतर्क रहना कभी भी कुछ भी धोखा हो सकता है या यूं कहो कि धोखा देना उनकी फितरत है। ऊदल ने पृथ्वी के बेटों और चौड़ा को बांधकर, रथ में बैठाकर चारों ओर परदा लगा के साथ लेकर चल दिये।
द्वार पर पृथ्वी ने सभी का स्वागत किया। रथ अंदर आने पर पृथ्वी ने कहा इसमें क्या है? इसे क्यों अंदर ला रहे हो?
आल्हा ने हंसकर कहा...महाराज, डरिये मत हम कोई दगा नहीं करेगें। इसमें कीमती सामान है।
पृथ्वी बोला.. इस रथ को दोनों दूल्हे अंदर लायें यही हमारा नेग हैं।
आल्हा ने कहा- महाराज, यह तो आपके दमाद हैं। अभी बालक हैं। पृथ्वी ने तुरंत कहा- दमाद हैं तभी तो मैं इनकी वीरता को अजमाना चाहता हूं। रथ में जुते घोड़ों को हटा दिया गया अब जलशूर ओर बहोरन रथ के पास पहुंचें दोनों ने सर्व प्रथम मांशारदा और मनिया देव का सुमरन किया, आपने माता-पिता का स्मरण किया और जय भवानी कहकर जोर लगाया। वह रथ देवि मां की दया से हल्का होकर आगे बढ़ने लगा। दोनों कुंवर ने रथ राजा के बताये हुए स्थान पर लाकर खड़ा कर दिया।
अब पृथ्वीराज ने कहा...हम मान गये कि आप अपने पिता की तरह वीर हैं। महाराज ने कहा..भंवर के लिये चलिए। महाराज उदास थे ऊपरी मन से बात कर रहे थे, पर अंदर से विचलित लग रहे थे, तभी आल्हा ने कहा...महाराज रथ में आपके लिये उपहार हैं। देखकर आपको प्रसन्नता होगी। पृथ्वी की नजरों में मलखान का मजाक घूम गया। जब चौड़ा को जनाना बना भेजा था। वह कुछ न कहकर खड़े देखते रहे, उदल ने आगे बड़कर रथ का द्वार खोल दिया। उसमें अपने सभी बेटों को देखकर राजा की आंखों में चमक आ गई। इस संसार में पुत्र सबसे प्यारा होता है और यह भी सच है कि जो किसी के आगे नहीं हारता वह अपने पुत्रों के द्वारा ही हारता है या बेबस होता है। पृथ्वी के सभी पुत्र उतरकर एक दूसरे के गले मिलते हैं।
आल्हा ने कहा ... महाराज हम सब एक दूसरे के संबंधी हैं। फिर आपस में इतनी कटुता

क्यों? ब्याह के नाम पर मैं इन थोड़ी रस्मों का हमेशा से विरोधी रहा हूं। अब आगे आने वाला समय इन बच्चों का हैं। हमारी अगली पीढ़ी का है। हमें अपनी विरासत में इन्हें अच्छे आदर्श देकर जाना चाहिये। आने वाला युग हमारी ही बतायी बातों का अनुकरण करेगा। इसलिए हमें एक आदर्श बना कर अपनी आने वाली पीढ़ी को सौंपना चाहिए। हमारे संस्कार और संस्कृति अभी से इन बच्चों को सँभालने की आदत होनी चाहिए तभी पंडित जी ने कहा .... भांवर का मुहूर्त हो गया है। दोनों कुंवर मंडप के नीचे आ गए। दोनों के अलग अलग मंडप हैं।

आल्हा.. महाराज पहले बड़े कुंवर जलशूर की भांवर पड़ेगी। राजकुमारी मंदाकिनी सोलह शृंगार में बहुत सुन्दर लग रही हैं। उसके साथ उसकी बुआ यानी कि पृथ्वीराज की पुत्री बेला भी है, उसकी नजरें अपने प्रियतम को तलाश रहीं हैं। बेला की आंखें जैसे ही ब्रह्मा से मिली वह उसे एकटक देखती रह गई। उसका शरीर कंपित होने लगा। ब्रह्मा भी बेला को देख रहे हैं। दोनों ही अपने अपने दिल की बात एक दूसरे को आंखों से बता रहे हैं। कुछ देर बाद होश आने पर बेला ने शरमा कर अपनी नजरें नीची कर ली और ब्रह्मा भी मुस्करा दिया। कुछ ही देर में भांवर पड़ने लगी। उसके भाइयों की कमी नहीं थी। सभी ने भांवर की रस्म की। उसके बाद दूसरे कुंवर बहोरन की भांवर पड़ गई। सब कुछ आसानी से हो रहा था, पर आल्हा को कुछ खटक रहा था। सातवीं भांवर में चौड़ा आ गया और उसने अपनी तलवार का भरपूर वार बहोरन पर कर दिया। उदल सावधान था उसने चौड़ा को धक्का दे दिया और वार बचा लिया, तभी पृथ्वीराज ने कहा.. चौड़ा अब ब्याह हो चुका है रार ना बढ़ाओ। इन्हें जाने दो।

चौड़ा ने ललकार कर कहा... महाराज डरने की बात नहीं है। सात सौ लड़ाका जवान और तीनों राजकुमारों को लाया हूं।

सभी ने मारकाट मचा दी और चार घड़ी में पांच सौ सरदार मार गिराये बाकी भाग गये। इंदल ने चौड़ा की मुश्कें बांधकर कहा.. हम बार-बार आपको विप्र जानकर छोड़ देते है, पर आप बेशरम बनकर फिर आ जाते हो। अब हम आपको महोबा ले जाकर भक्सी में डाल देंगे। ताकि तुम कभी बाहर ना आ सको। इंदल ने उसे उठाकर उसी रथ में फेंक दिया और द्वार बंद कर दिया।

आल्हा बोले- महाराज अब विदाई करा दीजिये।

पृथ्वीराज... हमारे विदाई की रीत नहीं, पहले हम बेला का गौना करेंगे, उसी के साथ दोनों भतीजियों को विदा करेंगे।

ऊदल बोला...यह नहीं होगा, हम अभी विदाकर ले जायेंगे। आपने दस बरस में भी अपनी बेटी का गौना नहीं दिया। हमें आपका भरोसा नहीं, मलखान ने अपने बल से सगाई करी थी, हमने बल से ब्याह किया और अपने बल से विदा कराकर ले जायेंगे।

पृथ्वीराज ने सोचा यह अब मानने वाले नहीं, इनकी बात मानने में ही भलाई है। इसलिए रानी से कहके विदा करा दी। घर वालों को व साथ आये राजाओं को बहुत से उपहार दिये। उसके बाद बोले ...मंडलीक अवतार, तुम सब तरह से समर्थ हो। आज के भारत में तुम से बड़ा वीर कोई नहीं, आप से कुछ मांगूं तो दे सकोगे।

आल्हा ने कहा ... महाराज देने लायक होगा तो दे दूंगा। आप कहिए क्या बात है।

पृथ्वीराज ने कहा... यह चौड़ा मेरे दरबार का ब्राह्माण है आप इसे ले जाओगे, तो मुझे खेद रहेगा कि मैं एक ब्रह्मण की रक्षा ना कर सका। इसलिए इसे आप मुक्त कर दीजिये। आज से यह कभी आपकी राह में नहीं आयेगा। आल्हा ने उसे मुक्त करा दिया।

आल्हा ऊदल सभी से विदा ले कर महोबा को चल दिये। रानी तिलका दोनों नत बहुओं को ले कर सिरसा चली गईं।

35- अंडाटापू की लड़ाई अभयंकर का ब्याह

हिन्द महासागर में एक द्वीप था। बारहवीं सदी में इसे अंडा टापू के नाम से जानते थे। यहां पर योगिनी वंश के राजा मदनमहीपालका राज्य था। यह द्वीप वर्तमान का अंडमान निकोबार द्वीप समूह था। यहां के लोग समुद्री मार्ग से उड़ीसा यानी कि कलिंग व्यापार करने के लिए आते रहते थे। यहां के राजा के पड़ौसी राजा अमरधीर सेन से मित्रता के संबंध थे। जब अमरधीरसेन की बेटी का विवाह हुआ तो लाखन और बनाफरों की वीरता के चर्चे अंडाटापू तक भी पहुंचे थे।
अंडा टापू चारों ओर समुद्र से घिरा था। हर तरफ हरियाली और सुन्दरता का राज था। चारों ओर नारियल और ताड़ के ऊंचे- ऊंचे पेड़ थे। सागर किनारे होने के कारण यहां पर रत्नों का भंडार था। राजा के पास दुर्लभ रत्न थे। यहां का राजा यूनान की सैर को गया था। वहां की राजकुमारी उससे प्रेम कर बैठी और विवाह करके उसके साथ आ गई थी। उसकी सुन्दरता को देखकर नगरवासी उसे परी रानी कहा करते थे। उस रानी से उस राजा के जो कन्या उत्पन्न हुई वह भी मां के समान बहुत सुन्दर थी। उसका नाम केली था। सभी उसे केली परी भी कहते थे। उस समय उस द्वीप के लोग कलिंग देश में व्यापार करने आते थे। वापस आकर वहां के बहुत से किस्से सुनाया करते थे। उस राजकुमारी ने कई भारतीय राजाओं की बहादुरी और साहस के किस्से सुन रखे थे। उसके अंदर उनसे मिलने, देखने की चाह बलवती होती गई। उसने निर्णय लिया कि वह अपना ब्याह किसी भारतीय राजकुमार से ही करेगी, जो वीरता में सबसे आगे हो। सभी ने उसे बहुत समझाया, पर वह नहीं मानी और अपनी हठ पर अडिग रही।
अंत में राजा ने हारकर अपने एक दूत को बहुत से रत्न लेकर अपनी राजकुमारी की तस्वीर लेकर भारत के राजाओं के पास भेजा और कहा जो भी राजा इस समय सबसे वीर हो जिसका वर्चस्व भारत में हो उसके राजकुमार से सगाई करके आना। वहां पर उसे पता चला कि इस समय आल्हा ऊदल की वीरता का डंका सारे देश में बज रहा है और उनका पुत्र अभयंकर पास ही रिजगिर में हैं। दूत ने रिजगिर जाकर उसे देखा। उसे वह हर ओर से लायक लगा। अब वह आल्हा से मिलने महोबा चला गया।
दूत ने कहा...महाराज, राजकुमारी की इच्छानुसार हमने कुंवर अभयंकर को हर तरह से लायक पाया है। अब आप ये टीका चढ़वा लीजिये। ऊदल ने आल्हा दादा से सलाह करी और टीका अभयंकर के लिए लेने का आग्रह किया।
आल्हा ने समझाकर कहा .. ऊदल सागर पार जाना आसान काम नहीं है। हमें उतनी दूर की कन्या लाने की क्या जरूरत है?
ऊदल ने कहा... वहां के राजा ने बहुत ही आशा से हमारे पास यह टीका भेजा है और एक तरह से सहायता ही मांगी है। अगर किसी ने भारत में टीका स्वीकार नहीं किया, तो हमारे देश का नाम खराब होगा। वीरों की बदनामी होगी। इस राजा की ब्याह के लिए कोई शर्तें भी नहीं हैं। हमें उसकी बात मान लेना चाहिये। अंत में ऊदल के आग्रह को आल्हा ने मानकर कुंवर अभयंकर को बुलाकर टीका चढ़वा दिया और ब्याह की तिथि नेगी को बता दी गई। इसके बाद नेगी को बहुत सा उपहार देकर विदा किया।
आल्हा ने आपस में मंत्रणा करी कि वहां पर बहुत सी फौजें तो लेकर जा नहीं सकते, पर खास लोगों को ले जाना चाहिए। आल्हा, ऊदल, ब्रह्मा इंदल, ढेबा, लाखन आदि सभी

बाराती बनकर अपने अपने घोड़ा लेकर चल दिये साथ में कुछ खास राजा और लड़ाका सरदार थे। इस प्रकार कुल पांच सौ साठ लोग ही चल दिये। कुछ रोज की मंजिल तय करके बारात सागर के किनारे पहुंच गई। वहां पर पहले से ही राजा मदन महीपाल ने पाल वाले बड़े-बड़े जहाजों का इंतजाम किया था। सभी उनमें सवार होकर समुद्र पार कर गये। सागर पार डेरा लगा दिये। राजा ने खाने पीने का इंतजाम कराया और दूल्हे को भांवर के लिए बुलाया। दूल्हे के साथ में आल्हा, ऊदल इंदल आदि सभी चल दिये। इसके अलावा माहिल मामा सहित कुछ राजा और साठ वीर लड़ाका भी चले।

द्वारे पर पहुंचकर ऊदल ने कहा ... महाराज आपकी कोई रस्म हो या शर्त हो तो बता दीजिये।

राजा ने कहा ... महाराज हम बहुत ही छोटे राजा हैं और आप बहुत बड़े महाराज हो, बहुत बड़े वीर हो। हमने आपका बहुत नाम सुना है। गल्ती माफ हो बस आपकी वीरता की छोटी सी झलक देखना चाहते हैं। ऊदल ने तुरंत कहा ..आप नि:संकोच कहिए।

राजा ने कहा...महाराज आपको इस दरियायी घोड़ा से लड़ना होगा। इसे गैंड़ा हाथी भी कहते हैं।

ऊदल ने उसे देखा वह एक दैत्याकार दरियायी घोड़ा था, जो कुछ दूर पर एक छोटे से तालाब रूपी सरोवर में था।

ऊदल ने आश्चर्य से कहा ...इससे? ऊदल का इस घोड़े से कभी पाला ही नहीं पड़ा था। न इतने पास से कभी उसे देखा था।

ऊदल ने आल्हा के चरण स्पर्श किये और मां शारदा का ध्यान करके पानी में कूद पड़ा। कुछ देर तक तो उछल-उछल कर ऊदल उसे छकाता रहा। उसके बदन में कुछ पकड़ने को था ही नहीं इसलिए ऊदल फिसल जाता था। ऊदल ने कुछ देर सोचा फिर उसे समझ में आया कि उसके बदन का सबसे नाजुक और कमजोर हिस्सा उसकी पूंछ ही है। ऊदल ने पूंछ पकड़कर उसे खंीचना शुरू किया। वह जोर से चिंघाड़कर पानी में उछल रहा था। ऐसा लग रहा था मानों पानी खौल रहा है। अब ऊदल ने उसे छोड़ दिया, तो वह डकराता हुआ ऊदल की ओर झपटा अब ऊदल उचककर उसकी पीठ पर चिपक गया और उसकी नाक पर रहने वाला इकलौता सींग पकड़ लिया। वह ऊदल की पकड़ से अपने को ना छुड़ा सका, चिंधाड़ने लगा। उसकी नाक से लहू बहने लगा। अगले ही पल ऊदल ने उसका सींग उखाड़ दिया और वह चिंघाड़ कर पानी में छटपटा कर शांत हो गया।

राजा ने कहा ... हमने आप की बहादुरी के बारे में सच ही सुना था आज आंखों से देख लिया।

राजा ने कहा ... महाराज हमारी बेटी कुंवर अभयंकर की वीरता देखना चाहती है। हमारे सिपाहियों से लड़कर आगे बढ़ना होगा।

आल्हा ने कुंवर को आज्ञा दे दी। वह अपना मौर उतार कर ढेबा को देकर तलवार लेकर आगे बढ़ा। कुछ ही देर में उसकी सेना के सौ सिपाहियों को गाजर मूली की तरह काटकर आगे बढ़ गया। तभी राजा ने एक खास तरह का बाद्य बजाया तो करीब सौ प्रशिक्षित मगरमच्छ सेना के बीच मैदान में आ गये। पचास मगरमच्छों को देख कर सभी के होश उड़ गये।

आल्हा ने कहा ... यह राजा तो सुरसा के मुंह की तरह बढ़ता ही जा रहा है। पहले तो कहा था कोई शर्त नहीं है। अभयंकर घोड़ा पर बैठकर उनसे अकेला लड़ रहा था, पर वह

सौ थे। यह देखकर आल्हा ने कहा ऊदल और लाखन तुम भी मैदान में कूद जाओ और कुंवर की सहायता करो। वे अपनी तलवार लेकर मैदान में आ गये और कुछ ही देर में मगर का सफाया कर दिया।
आल्हा ने कहा.. महाराज, आप हमारे साथ धोखा कर रहे हैं। आपको यह सब करना था, तो डेरा पर ही कहला भेजते। हम महलों में बारात ना लाकर सेना लेकर मैदान में आपसे मिलते।
राजा ने हाथ जोड़कर विनम्रता से कहा.... महाराज, आप नाराज ना हों। ना ही कुछ बुरा मानें। हमने केवल आपकी कला को जनना चाहा है। हमारे पास जो विद्या है वह हमने आपको दिखा दी है, हालांकि वह तो सूर्य के आगे दीपक दिखाने के समान है। अब आप पधारें। दूल्हे को लेके सभी महलों में गए, टीका हुआ। राजकुमारी केलि आती है, उसकी सुन्दरता और नाजुकी अप्सराओं को भी मात करने वाली थी। भांवर की रस्म होती है। वहां लड़ने का रिवाज नहीं था, इसलिये हंसी खुशी से भांवर पड़ गई।
आल्हा ने कहा ... हमें भी यही रीति रिवाज अपनाना चाहिये। भांवर के समय अकारण की वीरता दिखाने का कोई मतलब नहीं होता। जरा सी चूक जीवन भर का रोना बन सकती है। राजा ने सभी को उपहार दिये और अपनी बेटी को खुशी-खुशी विदा किया। सभी को अपने पाल वाले जहाजों से सागर के पार पहुंचाया। सभी राजा के विनम्र व्यवहार की चर्चा कर रहे थे।

36-जीतखम्भ की लड़ाई

मल्हना बच्चों के साथ बैठी है। तभी ऊदल वहां पर आते हैं। उसने भी लाड़ से कहा, बड़ी मां कितने दिन हो गए आपने हमें अपने पास मिलने को नहीं बुलाया है। इन बच्चों को पाकर आप हमें भूलती जा रही हैं।
मल्हना ने कहा ... चल हट! तू भी कैसी बातें करता हैं। मैं तुझे भूल सकती हूं क्या? हां ये भी सच है कि मूल से ब्याज ज्यादा प्यारा होता है। तू क्या जाने कि इनको देखकर हम सभी को कितना सुकून मिलता है। तभी इंदल ने पास आ कर कहा... बड़ी मां, आप ये बताइये कि इनमें से आप को कौन सा ब्याज ज्यादा प्यारा है।
मल्हना ने कहा ... मुझे सभी प्यारे हैं। हाथ की कोई भी उंगली काटो दर्द तो बराबर ही होगा, उसी प्रकार मेरे ये सभी पोते मेरे लिए प्रिय हैं। चाहे वह ऊदल का बेटा हो, त्रिलोक का, इंदल का, या ढेबा का हो। सभी ओर सभी के छोटे-छोटे बच्चे थे। ऊदल और त्रिलोक के पुत्र सात साल के थे। इंदल की रानी चित्रलेखा से एक पुत्र था और दूसरी रानी से भी एक पुत्र था। ढेबा का पुत्र नौ साल का था। उसी समय अन्य रानियां भी वहां पर आ जाती हैं। सभी का जीवन हंसी खुशी से बीत रहा है।
संत महात्माओं के रूप में माहिल के गुप्तचर अभी भी खजुराहो और कालिंजर के आस पास रह रहे थे। इस बार माहिल ऐसा दांव लाया था कि एक साथ बहुत से राजा आल्हा ऊदल के दुश्मन बन जाने वाले थे। बस उसे मौके की तलाश थी। दरबार लगा था, ऊदल भी था, तभी माहिल ने मौका देख संतो को बोलने का इशारा किया। एक संत ने कहा... महाराज, आप जैसा प्रतापी राजा ना हुआ है ना होगा। आपने अपने जीवन काल में सब कुछ कर लिया। बस एक कार्य और कर लें, तो आपका यश स्थायी हो जायेगा। समस्त संत समाज की यही इच्छा है कि आप वह कार्य कर लें। हम सब आपके साथ हैं।
राजा परमाल ने कहा ... महात्मन् आप आज्ञा कीजिये। अगर संभव होगा तो हम अवश्य करेंगे।
महात्मा ने कहा... राजन, आपके पास आल्हा ऊदल जैसे वीर हैं, आपके लिये असंभव तो कुछ भी नहीं है। उसी प्रकार आपके बेटे ब्रह्मा सहित आल्हा ऊदल ने भी बावनगढ़ के सभी राजाओं को किसी ना किसी कारण हराकर अपनी जीत दर्ज कराई है। अत: अब आप एक स्वर्ण निर्मित विजय स्तम्भ का निर्माण कराइये। उसमें सभी जीते हुए राज्यों का नाम अंकित कराइये और फिर मां चंडिका के दरबार में पराअम्बा नामक महायज्ञ का आयोजन कीजिये और उस विजय स्तम्भ की स्थापना कीजिए। इस आयोजन में सभी राजाओं को आमंत्रण भेजिये। सभी आते हैं, तो इसका मतलब है कि उन्होंने आपको चक्रवर्ती राजा मान लिया है।
महाराज ने कहा ... महात्मन, मुझे चक्रवर्ती बनने की कोई चाह नहीं है। अब मैं केवल शांति चाहता हूं। ऐसा करने पर स्वाभाविक है कि कोई ना कोई राजा आपत्ति उठायेगा और युद्ध के लिए चुनौती देगा। फिर ये ऊदल बांकुड़ा तो लड़ने को फिरता ही रहता है। नही-ंनही हम ऐसा कुछ भी नहीं करेंगे। आप ने ऐसा सोचा इसके लिए धन्यवाद, पर हम ये सब नहीं कर सकते हैं।
महात्मा बोले... महाराज आप चिंता क्यों करते हैं? अभी ऊदल की तलवार में बहुत धार है। वह अकेला ही बहुत है।

महाराज... नहीं नहीं मैं अपने बच्चों को किसी मुसीबत में नहीं डालना चाहता, यह कार्य तो सरासर मुसीबत को न्योता देना है।
ऊदल ने कहा ... दादा महाराज, क्षमा करें, मैं सोचता हूं कि आप को महात्मा जी का प्रस्ताव स्वीकार कर लेना चाहिये। आज हम इस स्थिति में हैं कि यह कार्य कर सकते हैं। ... आज बावनगढ़ में ऐसा कौन है जो हमारी तलवार का सामना करे। जहां महोबा वाले पहुंचे हैं वहीं विजयी हुए हैं। तीनों लोक में डंका बाज रहा है। हम इस विजय स्तंभ की स्थापना जरूर करेंगे।
महाराज.. पुत्र, अभिमान नहीं करना चाहिये। यह गर्व ही मानव के पतन का रास्ता दिखाता है। व्यर्थ की बहस मत करो।
ऊदल... दादा महाराज, हम अभिमान नहीं कर रहे हैं, पर यह हमारे स्वाभिमान का प्रश्न है कि हम अपने राज्य में विजयस्तंभ की स्थापना करें, यह चंदेल वंश के लिए गौरव की बात है। रही बात धर्मयज्ञ महा आयोजन की, तो आल्हा दादा कह रहे थे कि एक महासभा करके सभी को म्लेच्छों के खिलाफ एक जुट करना है; तो अच्छा है राजाओं से मिलकर यह कार्य भी पूर्ण हो जायेगा।
माहिल ने अपना मौन तोड़कर कहा... महाराज, मुझे तो ऊदल की बात सोलह आने सच लग रही है। इससे चंदेल वंश का गौरव बढ़ जायेगा। इतिहास में सदा के लिए नाम अमर हो जायेगा। हमें ऊदल की बात मान लेनी चाहिये। महात्मा ने कहा..महाराज, हम सब तैयारी कर लेंगे। महाराज कुछ ना बोले, वह जानते थे कि ऊदल को जितना मना करो, वह उतनी ही अड़ पकड़ता है।
ऊदल ने कहा... आप सब महायज्ञ की तैयारी करिये। हम मंडलीक दादा से बात करते हैं।
आल्हा ने कहा ... ऊदल, अब बहुत हो चुका हम शांति चाहते हैं। तुम बैठे बिठाये क्यों मुसीबत को न्योता देना चाहते हो? हम जानते हैं कि किसी को ऐतराज हो ना हो, पर दिल्ली नरेश जरूर सामने आयेंगे और अगर ना आये तो माहिल मामा भर कर मजबूर कर देंगे। सभी जानते हैं कि हमने बावनगढ़ को जीत लिया है। अब जीतखंभ स्थापित करने से क्या लाभ है?
ऊदल..दादा, अब तक जो चाहा वही हुआ, एक जीतखंभ की कामना क्यों रह जाये, आप आज्ञा दीजिये वह भी पूरी होगी।
आल्हा ने कहा....ऊदल, रावण ने गर्व किया था, उसे अपने परिवार सहित मरना पड़ा था। आज मुझे तुम्हारी बातों में अभिमान की हुंकार सुनाई दे रही है। पतन का पहला द्वार यही है। अभी समय है अपने को सँभालों।
ऊदल बोला...स्वाभिमान की रक्षा करना भी तो वीरों का काम है। आज भरी सभा में महात्माओं ने विजयखंभ स्थापित करने को कहा, तो हम लड़ाई के डर से इंकार कर दें। जबकि महाराज का हक बनता है कि वे महायज्ञ कर विजयस्तंभ स्थापित करें।
आल्हा ने जान लिया कि वह मानने वाला नहीं है इसलिये उन्होंने कहा ... ऊदल, सब कुछ बहुत ही समझदारी से करना। कोई भी ऐसा कार्य ना करना कि किसी भी राजा के स्वाभिमान को चोट पहुंचे। हमारे राज्य में आने वाला हर राजा हमारा अतिथि होगा। इसलिए उसके मान सम्मान बनाये रखना हमारा धर्म है। जाओ सभी राजाओं को आदर सहित आमंत्रण भेज दो।
ऊदल खुश होकर चले और दादा महाराज को आल्हा की स्वीकृति की सूचना दी, अब

माहिल ने अपना कार्य चालू किया।
उसने सभी राजाओं के कान भरकर कहा...ऊदल को बहुत गर्व हो गया है कि मेरी बराबरी का कोई राजा बावनगढ़ में नहीं है। इसीलिये वह विजय स्तंभ स्थापित कर रहा है। आप सभी राजा एक जुट होकर उसके अभिमान का मर्दन जरूर करना। इस प्रकार वह सभी राजाओं को आपस में जोड़कर ऊदल के खिलाफ संधियां करता फिर रहा है।
उधर ऊदल ने लाखन को बुलाकर सबसे पहले उससे सलाह कर उसे अपनी इच्छा बताई। लाखन ने उसकी बात का समर्थन कर कहा ... मेरी सारी सेना आपके महोबा में रहेगी। हम आपके साथ हैं। आप सभी राजाओं को न्योता भेज दीजिये।
ऊदल ने पाती में राम जुहारकर लिखा.... मित्रवर महाराज, आज राजा परमाल का यश यत्र-तत्र-सर्वत्र फैला है। हम अपनी परंपरा और इतिहास को साक्षी रखने के लिए, आने वाली पीढ़ी में इतिहास का ज्ञान बनाये रखने के लिए अब तक की विजय यात्राओं के लेख के साथ, पराअम्बा महायज्ञ के बाद विजयस्तंभ की स्थापना कर रहे हैं। इस महोत्सव में आप सभी सादर आमंत्रित हैं। इसके अलावा एक वृहद धर्मसभा का आयोजन किया है जिसमें आप सभी बदलती परिस्थिति, विदेशियों और मुगलों का आक्रमण, सीमा के राज्यों में अपने ठिकाना बनाना आदि पर विचार विमर्श और मंत्रणा होगी। अगर किसी को आपत्ति हो तो नियमानुसार वह युद्ध की चुनौती दे सकता है। उसे अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए सर्व प्रथम ऊदल से कुश्ती लड़ना होगी। उसमें जीतने के बाद दूसरी शर्त में लाखन राना से तेगा का मुकाबला करना होगा और अंतिम शर्त है कि कोई इससे भी आगे बढ़ना चाहता है, तो इंदलराय और उसकी सेना से मुकाबला करना होगा। इसके बाद ऊदल ने परमाल की मुहर लगाकर, सभी राजाओं को न्योता भेज दिया। कुछ राजा खुश हुए, तो कुछ ने अपना अपमान समझा और ऊदल से लड़ने की योजना बनाने लगे।
महोबा में यज्ञ की तैयारी जोर शोर से हो रही थी। सभी तीर्थों के साधू संतो को भी आमंत्रण भेजा गया था! ऐसा लगता था, मानो कुंभ महोत्सव हो रहा है। उदल स्वयं गुरु गोरखनाथ को साथ ले आया था। उनकी देखरेख में ही मां चंडिका के सामने ही मदन ताल के किनारे यज्ञ स्थल चुना गया। वहां पर पूरे वैदिक रीति के अनुसार यज्ञ मंडप बनाया गया। उसमें एक सौ आठ यज्ञ कुण्ड बनवाये गये हैं। चंडिका मां के मंदिर के पास ही विजयखंभ स्थापित करने का स्थान चुना गया था।
स्वर्णाविजय खंभ के अलावा पत्थर की एक शिला से निर्मित बीस गज ऊंचे, सवा दो गज मोटे दो दीप खभों का निर्माण कराया, उपरी सतह पर दीयट बना था। इनमें से एक दीप खंभ मां चंडिका जी के लिये था दूसरा मनियां देव के लिये था। खंभ उदल और लाखन की देखरेख में बन रहा था। पारस पथरी होने से सोना की कमी नहीं है। पांच सौ चालीस मन सोना गलाकर निर्माण किया जा रहा है। अस्सी कारीगर दिन रात कार्यरत हैं। बावनगढ़ की विजय का उल्लेख उसमें उकेरा गया था उपर ढाल तलवारे बनी थीं। तीन महीना में यह खंभ तैयार हुआ, जिसकी उंचाई पचास गज और मोटाई सवा दो गज थी।
आल्हा, ऊदल ब्रह्मा लाखन राजा परमाल और सभी रानियां नगर निवासी सहित पूरा नगर यज्ञ में शामिल था। चारों ओर मंत्रों की ध्वनि गूंज रही थी। सारा वातावरण बहुत ही पवित्र और शांतिमय लग रहा था। चारों ओर पहाड़ की ऊंची-ऊंची चोटियां है और

बीच में चंडिका मां का मंदिर है। चारों ओर हरियाली है। सब कुछ मिलकर बहुत ही मनोरम दृश्य प्रस्तुत हो रहा है। पशु पक्षी भी चारों ओर कलरव कर रहे थे। मंदिर से उठते घंटी के मधुर स्वर मन को बहुत ही सुकुन देते से लग रहे थे। यज्ञ वेदी से उठने वाला धुंआ और हवन की खुशबू चारों और के वातावरण को पवित्र कर रही थी। सामने ही एक ऊंचे आसन पर गुरुदेव बैठे हुए थे।
मित्र राजाओं ने भी यज्ञ में भाग लिया। सभी राजाओं के रुकने की व्यवस्था महोबा के बाहर अलग अलग दिशा में की गई थी। पश्चिम व दिल्ली से आने वाले राजाओं को कुलपहाड़, सूपा, पुरैनिया, खल्ला के पास रुकाया गया। उत्तर की तरफ या कनवज इलाहाबाद से आने वालों को हमीरपुर, सुमेंरपुर और करारा के पास रुकाया पूरब की ओर से आने वालों को कालिंजर खजुराहो, चंदला में रुकाया, दक्षिण की ओर से आने वालों को बिजावर छतरपुर, नौगांव, टीकमगढ़वा श्रीनगर क्षेत्र में रुकाया गया था।
यज्ञ का कार्य सुचारु रूप से चल रहा था। इक्कीसवें दिन यज्ञ की पूर्णाहुति भी हो गई जिसमें समस्त नगर निवासियों ने व बहुत से राजाओं ने भी भाग लिया। इस कार्य से सभी खुश थे कि यज्ञ में किसी भी प्रकार का बिघ्न नहीं आया। आज विजय ख्ांभ का पूजन और स्थापना थी। मंत्रोच्चार के द्वारा एक सौ आठ पंडित उसका पूजन करा रहे हैं।
पृथ्वीराज को राजा परमाल का यह वैभव व विजयखंभ देखकर मन ही मन जलन हो रही थी। वह इस उत्सव में आना ही नहीं चाहता था, अधिकतर राजा नहीं जानते कि पृथ्वी की दुश्मनी है, इसीलिए वह मन मार कर चला आया था, पर अब वह अपने को बहुत ही अपमानित महसूस कर रहा था। वैसे भी पृथ्वीराज का स्वभाव ईर्ष्यालु है। अग्नि में घी डालने का काम माहिल कर रहा था। कुछ राजाओं ने कहा-महाराज आप दिल्ली पति हैं। यह आयोजन तो आपको कराना चाहिए था। आपसे बड़ा राजा तो इस संसार में दूसरा नहीं हैं। आप शब्दवेधी चौहान हो महाराज नहु के वंशज हो, आपके सामने कोई चक्रवर्ती कैसे बन सकता है? हम तो यहां आपका साथ देने को आये हैं, एक राजा के अहम को उकसाने के लिए इतना ही काफी था। वह बेचैनी से करवट बदलने लगा।
अब पृथ्वीराज ने अपनी नीति का उपयोग करते हुए निर्णय लिया कि पहले सभी राजाओं को ऊदल से लड़वा दिया जाये। उसके बाद जब सिपाही मारे जायेंगे तब हम आक्रमण करेंगे। इस प्रकार पृथ्वी ने जो राजा लड़ना चाहते थे उनको एक जुट करके, ऊदल को खबर भिजा दी। अभी विजय खंभ का पूजन चल ही रहा था कि एक सैनिक ने प्रवेश कर निवेदन किया ... कि हमारे महाराज ऊदल से लड़ना चाहते हैं, अगर उदल हमसे जीत जाये तभी विजय खंभी की स्थापना करें। इसलिए कल मैदान में आ जाये।
ऊदल ने चुनौती स्वीकार कर ली और दूसरे दिन वह सेना का सेनापति बनकर मैदान में पहुंच गया। सामने ही सेना खड़ी थी। ऊदल को देखते ही वह सब उस पर टूट पड़े। ऊदल ने भी बड़ी वीरता से उनका सामना किया। लाखन और इंदल मैदान के बाहर ऊदल की सुरक्षा में खड़े थे। ऊदल और उसकी सेना ने चार घड़ी में सभी के छक्के छुड़ा दिये थे।
दूसरे दिन पृथ्वीराज भी अपनी सेना लेकर आ गये। उनके साथ चौड़ा ताहराज, अरिमर्दन और मोतीराज तीनों बेटे थे।
पृथ्वीराज ने कहा.... ऊदल तुमने अपने मन में यह कैसे जान लिया कि तुमसे बड़ा कोई लड़ैया नहीं है?
ऊदल...महाराज, आप गलत समझ रहे हैं। आप तो हमारे संबंधी हैं हमसे बड़े हैं, हम

आपसे अलग थोड़े ही हैं। आप सभी के सहयोग से ही तो हम यह सब कर सकें हैं, तभी पृथ्वी ने तलवार लहराकर कहा... ऊदल, अब ये मन को समझाने वाली बातें ना करो। तुमने हमसे पूछकर तो यह सब कुछ किया नहीं है। अगर अपना मानते तो हमसे सलाह मशवरा करने जरूर आते।
ऊदल ... महाराज हमने पहला न्योता आपको ही भेजा था; चलिये मान लिया तब नहीं कह पाये तो अब कहिये क्या इच्छा है?
पृथ्वी...अब तो एक ही चारा है, हमसे दो दो हाथ करके खंभ स्थापना करो, अगर हार गये तो हम खम्भ दिल्ली ले जायेंगे।
ऊदल ने कहा... ठीक है महाराज, आप भी अपने मन के अरमान निकाल लीजिये। यह सुनकर पृथ्वी ने अपना वार कर दिया। अब दोनों के बीच युद्ध हो रहा है। उधर इंदल और ताहर। अरिमर्दन और लाखन का सामना हो रहा है।
अरिमर्दन ने लाखन से कहा ... अरे तू तो कल का छोरा है, मुझसे क्या लड़ेगा।
लाखन ने कहा .. राजकुमार, वीरों की उम्र नहीं उनकी तलवार की धार देखी जाती है।
अरिमर्दन ने वारकर कहा ... तो ये लो मेरा वार सँभालो। लाखन ने उसका वार अपनी ढाल पर झेला और उलटवार कर दिया। जिसे वह सँभाल न सका और तलवार उसकी गर्दन को बींधती हुई चली गई। अरिमर्दन वहीं पर ढेर हो गया। यह देख कर उसका भाई मोतीराज आगे आया और लाखन को ललकार कर कहा... अरे बैरी, तू मेरा वार सँभाल। लाखन का उससे घमासान होने लगा। दोनों ही एक दूसरे पर वार पर वार कर रहे हैं। कोई किसी से कम नहीं लग रहा है। अचानक ही लाखन ने जोर का भाला उसकी हथिनी के सिर पर दे मारा। वह उसके मस्तिष्क पर अंदर तक धंस गया और वह वहीं पर गिर पड़ा। उसके गिरते ही लाखन हथिनी से कूद पड़ा और मोतीराज ने भी अपनी तलवार सँभाल ली। अब दोनों के बीच घमासान होने लगा। इसी बीच लाखन का तेगा चला और मोतीराज चूक गया, उसकी गर्दन एक ओर लुढ़क गई। आज के युद्ध में पृथ्वी के दो बेटे लाखन के हाथों मारे गये। सारे दिन के युद्ध के बाद पृथ्वीराज के हौसले पस्त हो गये। अब शाम होने को थी। युद्ध बंदी की तुरही बज गई।
लाखन ने कहा ... आज मैं बहुत खुश हूं; आंशिक ही सही पर संयोगिता हरण का सूद तो पृथ्वीराज से वसूल लिया। उसके दो दो बेटों को मार कर मैंने अपने पिता की आत्मा को शांति दी है। आज उन्हें अपने बेटे पर गर्व हो रहा होगा।
पृथ्वीराज बेटों के मरण से दुखी थे। पर युद्ध तो युद्ध है, दोनों पक्षों का नुकसान होता है। दूसरे दिन वह युद्ध पर नहीं गये। ताहर, चौड़ा और धीरा को भेजा। तीसरे दिन पृथ्वीराज स्वयं आल्हा-ऊदल के सामने थे।
ऊदल.. महाराज, हमने आपका सदैव आदर किया है। आप बैर न बसा के हमें आशीर्वाद देकर इस कार्य को सम्पन्न कीजिए।
पृथ्वी कुछ सोच में पड़ गये। वह देख चुके थे कि उनकी आधी सेना का खात्मा हो चुका था। उसी समय सैनिक ने आकर उनको खबर दी कि मुहम्मद गौरी अपनी सेना लेकर दिल्ली की ओर बढ़ा चला आ रहा है। खबर पा कर वह चिंतित हो गये।
गौरी की खबर आल्हा को भी मिल चुकी थी। उन्होंने कहा....महाराज, आपसे निवेदन है कि हम एक ही देश के लोग आपस में लड़ झगड़कर एक होते रहते हैं। अब सवाल यहां पर बाहरी ताकतों का है, तो हमें मिलजुल कर उनसे मुकाबला करना चाहिये।
पृथ्वी ने कहा ... नहीं महाराज, उससे निपटने के लिये, तो मेरी सेना पर्याप्त है, पर

हमारी चिंता यह है कि पिछले दो बार से वह तोप और बंदूकें लेकर आ रहा है। यह हथियार हमारे सैनिकों के लिये नए हैं। बंदूक की गोली तो ऐसी है कि वह तीर से ज्यादा तेज है। उसके आगे हमारे तीरंदाज बेकार साबित हो रहे हैं। दूसरी बात उनके पास आग उगलने वाली बड़ी बड़ी तोपें हैं, जिनकी मार और दहाड़ से हमारे हाथी वापस पलट पड़ते हैं और बेकाबू होकर अपनी ही सेना को रौंद डालते हैं। इस कारण वो संख्या में कम होकर भी हम पर एक ना एक दिन भारी पड़ेंगे। ऐसे में जोश कब तक काम करेगा।
आल्हा ने कहा... महाराज, हम सभी जानते हैं कि आप सभी प्रकार से उससे लड़ने में समर्थ हो, फिर भी अगर आप हमें अनुमति दें, तो हम सब आपके साथ चलकर उसका मुकाबला करें और उसका किस्सा हमेशा के लिये समाप्त कर दें, ताकि कोई भी विदेशी दुबारा आंख उठाने की हिम्मत ना कर सके। ऐसा कहकर हम आप पर कोई उपकार नहीं कर रहे बल्कि हमें अपने देश की रक्षा करने का सौभाग्य मिल रहा है। यह हमारा धर्म है। महाराज, अब बहुत हो चुका, सुल्तान आपकी उदारता का गलत इस्तेमाल कर रहा है। एक बार, दो बार नहीं, अब तक बहुत बार आप उसे माफ कर चुके हैं। ज्यादा माफी देना अच्छी बात नहीं।
पृथ्वीराज ने आल्हा के अपनेपन को अपना अपमान समझा और कहा...आपके मशवरे के लिए धन्यवाद, पर अग्नि वंशियों में इतनी ताकत है कि वह अपने राज्य की रक्षा कर सकते हैं। आपकी सहायता लेने की नौबत कभी नहीं आयेगी। यह कहकर वह अपना हाथी आगे बढ़ाकर अपने खेमा में चले गये और अपनी सेना सहित दिल्ली लौट गये।
“यह बात ध्यान देने की है कि भारत में तोप और बंदूकों का चलन बारहवीं शताब्दी के अंत में गजनवी के चौदहवें आक्रमण में हुआ था। सबसे पहले मुहम्मद गौरी ये हथियार लेकर आया था और पृथ्वीराज के खिलाफ इनका इस्तेमाल किया था। इसके पहले भारत में लड़ाई पारंपरिक हथियारों से ही होती रही है। भारतीय सेना में इनका चलन तेरहवीं सदी में छुट पुट शुरू हुआ था। “
आल्हा ऊदल भी अपनी सेना सहित वापस आ कर खम्भ की स्थापना में लग गये। सबसे पहले मां चंडिका के मंदिर के सामने एक ही शिलाखंड से निर्मित दस गज का दीप स्तम्भ स्थापित कराया गया। उसे इस तरह से गाड़ा गया था कि वह नौ फुट जमीन के नीचे था और इक्कीस फुट जमीन के ऊपर था। जमीन पर खड़े होकर आल्हा ने दीप रखकर उसका शुभारंभ किया।
उसके बाद मां चंडिका जी के बायीं ओर बीस गज गहरा गड्ढा खोदकर हाथियों की सहायता से वह पचास गज का स्वर्णखंभ उतारकर स्थापित किया गया। इस प्रकार वह विजय स्तंभ बीस गज जमीन के नीचे था और तीस गज जमीन के ऊपर था। इसमें अब तक की विजयों का पूरा वर्णन था। राजा परमाल ने पूजन किया और देश के इतिहास में अपना नाम अमरकर लिया।
उसके बाद सभी ने मनिया देव मंदिर के सामने एक ही शिला खंड से निर्मित दीप स्तंभ को स्थापित किया। दीपस्तंभ पर आल्हा ऊदल स्वयं अपने हाथों से खड़े होकर दीपक रख देते थे जबकि इस दीपखंड की ऊंचाई जमीन से इक्कीस फुट ऊपर थी। उनके सिवा इस पर कोई भी दीपक नहीं रख पाता था। आज भी पत्थर से बने ये दोनों दीपस्तंभ आपनी गौरव गाथा समेटे हुए मनिया देव और मां चंडिका के मंदिर के सामने खड़े हैं। इनकी खासियत है कि हाथ की तर्जनी अंगुली से जोर लगाने पर वह कंपित होते हैं। आभास होता है कि वह हिल रहा है, पर दोनों हाथों का जोर लगाने पर वह अचल हैं।

उन्हें आज भी कोई नहीं हिला सका।
अब यहां पर पाठकों के जानने वाली बात यह है कि सोलहवीं शताब्दी में औरंगजेब ने जब महोबा, कलिंजर और खजुराहो पर आक्रमण किया था, तो उसने बहुत सी लूट पाट की थी और उसने मां चंडिका के ऊपर भी घन बरसाये थे, पर वह उनका कुछ भी ना बिगाड़ सका था। उनकी मूर्ति वैसी ही मुस्कराती रही थी। इस दीपस्तंभ पर भी उसने बहुत जोर आजमाया पर वह उसे हिला भी ना सका। मां का यह चमत्कार देख कर वह खीज उठा था और महोबा की सभी मूर्तियां तोड़ने का आदेश कर दिया था। ‘‘
अब औरंगजेब को वह स्वर्ण निर्मित विजय स्तम्भ खटक रहा था क्योंकि वह स्वर्ण का था। औरंगजेब ने दो सौ सैनिकों से वहां खुदाई कराई और उस स्वर्ण स्तम्भ को उखाड़ने को कहा था। कहा जाता है कि ज्यों ज्यों उसके सैनिक वहां पर खुदाई करते थे, त्यों-त्यों वह स्तम्भ नीचे को धंसता चला जा रहा था। वहां पर एक माह तक खुदाई चलती रही और वहां खोदते-खोदते एक बड़ा तालाब बन गया था, पर उस स्तंभ का खिसकना नहीं रुक रहा था। सेना दसगज तक खोद चुकी थी। पर उस स्तंभ को ऊपर लाने में सफल ना हो सकी और एक दिन खुदाई करते वक्त वह स्तम्भ अचानक ही एक जोर की आवाज के साथ जमीन में समा गया और उस जगह से पानी के फौव्वारे फूट पड़े। देखते ही देखते वह खोदा गया गड्ढा तालाब बन कर पानी से भर गया। औरंगजेब के कई सैनिक उसमें डूब कर मर गये थे। मां चंडिका का यह चमत्कार देख कर औरंगजेब वहां से चला गया। ‘‘
इस तालाब में गुलाबी रंग के कमल खिला करते थे, जिससे माता जी का शृंगार हुआ करता था। यह तालाब आज भी मां चंडिका जी के मंदिर के सामने बांयीं ओर मौजूद है। समय की मार सहकर उसकी गहरायी कम होती गई, पर वह आज भी मौजूद है। इस तालाब में अभी सन् 2002 तक गुलाबी कमल खिलते रहे हैं। यह हम सभी ने देखा है। उसके बाद 2005 में उस तालाब को नया रूप देकर उसमें फव्वारा, बगीचा बनाया है। बहुत कुछ बदल गया है, पर महोबा में आज भी चंदेल विरासत की बहुत सी स्मृतियां फैली हैं। ‘‘ खखरामठ, शिवतांडव औरंगजेब ने खंडित किया था। खखरामठ, आल्हा-बैठक, आल्हा-गिल्ली, गोखार पहाड़ में गोरखनाथ की गुफायें, मनिया देव का मंदिर, मां चंडिका मंदिर, छोटी चंडिका मंदिर, मदनताल पर बने चंदेलमहल, दसपुरवा में आल्हा ऊदल महल, विजयसागर, मदनसागर, कल्याणसागर, कीरतसागर। कीरतसागर पर आज भी कजली विसर्जन का विश्वस्तर का मेला लगता है। बेलाताल, टोलाताल का मन मोहक दृश्य आज भी अपनी ओर खींचता है। कठेश्वर-महादेव, बलखंडेश्वर-महादेव, पठेश्वर-महादेव, कोटेश्वर-महादेव ये चारों कोनों पर आज भी स्थित हैं। परमाल के दूसरे पुत्र त्रिलोकबर्मन ने शिवजी के आदेश पर महोबा के चारों कोने पर स्थापित किया था। उसी ने तांडवनृत्य मुद्रा में शिव की एक मूर्ति गोखार पहाड़ पर बनवाई थी।

37-बेला के गौना की पहली लड़ाई

एक दिन दरबार में माहिल ने कहा.. महाराज, सभी राजा बोली घाल रहे हैं कि जीतखंभ गाड़कर विजय का ढिंढोरा पीटने वाले आल्हा ऊदल अपने भाई ब्रह्मा की ब्याही हुई पत्नि की विदाई पृथ्वी के महलों से नहीं करा सके और विजेता बने फिरते हैं।
आल्हा को माहिल की बात सच लगी। वह बोला ... दादा महाराज, अब समय आ गया हे कि हम ब्रह्मा का गौना करायें। दिल्ली नरेश तो अपनी ओर से चुप्पी साधे बैठे हैं। वह अपनी ओर से पहल नहीं करेंगे। आज नही तो कल गौना तो कराना ही होगा।
परमाले...पुत्र, हम गुरुदेव की वाणी को याद करके चुप रह जाते हैं, मुझे भी उसकी चिंता है। वह दूसरे ब्याह को राजी नहीं होता और पहली का गौना उसका बाप नहीं देता। मैं चाहता हूं कि गौना हो जाये, पर राजी खुशी से हो, लड़ाई नहीं चाहता हूं।
आल्हा.. हम ऐसा ही प्रयास करेंगे, जरूरत पड़ी तो हम सब ब्रह्मा के लिए अपनी जान लड़ा देंगे, पर उसे आंच नहीं आने देंगे। जब हम उसकी पोतियों की विदा करा कर ला सकते हैं, तो फिर बेटी की क्यों नहीं? उसका तो पहला हक बनता है।
कहावत है कि होनी अटल होती है सो, राजा ने कहा ... ठीक है, पृथ्वीराज को गौना का सुतकरा भिजवा दो।
ब्रहमा के गौने में ऊदल ने लाखन को भी बुलवा लिया। नियत समय पर पृथ्वीराज को गौना का सुतकरा भिजवा दिया गया।
एक दिन रस्म के मुताबिक राजा ने सोने का कलशा मंगा कर उस पर पांच पान का बीरा रख कर कहा ... ब्रह्मा के गौना की अगुवाई कौन करेगा, सो बीरा चाबे। ऊदल ने बढ़कर बीरा उठा लिया। यह देखकर माहिल का शैतानी दिमाग काम कर गया।
माहिल एक पाती देकर बोला.... महाराज, दिल्ली से दूत आया था। पृथ्वीराज ने पाती भेजी है कि हम बेला का गौना करने को तैयार हैं, पर ब्रह्मा को माहिलराय साथ लेकर आ जायें और गौना ले जायें। आल्हा ऊदल को नहीं लाना। बनाफरों से हमारे रिश्ते बिगड़ चुके है, आल्हा ऊदल आयेंगे, तो बात बिगड़ जायेगी। वह बोला-महाराज आप ही बताइये, जब बिना लड़ें काम निकल रहा, तो जबरदस्ती लड़ने की क्या जरूरत है? हम कुंवर ब्रह्मा को साथ लेकर चले जाते हैं और गौना लेकर वापस आ जायेंगे।
परमाल पर अभी भी माहिल का जादू असर करता था। वह उसके आगे बेबस से होकर उसकी बात मान जाते थे, दूसरी बात ये कि विनाश काले विपरीत बुद्धि। वह बोले- मुझे माहिल की बातों में कोई बुराई नजर नहीं आती है, अगर बिना लड़े बात बनती है तो अच्छा है। माहिल ब्रह्मा को लेकर गौना कराने चले जायें। आल्हा ऊदल नहीं जायेंगे।
ब्रह्मा ने कुछ कहने को मुंह खोला ही था कि राजा परमाल ने कहा... पुत्र ब्रह्मा, तुम कुछ भी नहीं बोलोगे यह हमारा आदेश है। चुपचाप अपने मामाजी के साथ चले जाओ। अब ब्रह्मा कुछ भी ना कह सका; यह देख आल्हा ने कहा - महाराज हमें ब्रह्मा को अकेला नहीं भेजना चाहिए, न ही माहिल मामा का भरोसा करना चाहिए। दिल्ली नरेश भी भरोसा के लायक नहीं हैं। वह कई कई बार ब्रह्मा पर वार कर चुके हैं।
परमाल ने कहा- पुत्र, हर समय एक ही वाणी नहीं बोलनी चाहिए; उस समय बात कुछ और थी, अब बात उनकी बेटी के गौने की है। पृथ्वीराज भी अब युद्ध से अघा गए हैं, आखिर कब तक लड़ते मरते रहेंगे। इसीलिए शांतिदूत भेजकर हमें बुलाया है।

आल्हा- महाराज मैं आपके आदेश का उल्लंघन नहीं करना चाहता, पर एक विनती है कि एक लाख सेना अवश्य भेज दीजिये।
परमाल ने कहा- ठीक है पुत्र, हम सेना उसके साथ भेज देंगे। यह सुनकर आल्हा ऊदल उठकर अपने दसपुरवा चले गए।
ब्रह्मा ने अपने साथ एक लाख सेना लेकर दिल्ली को कूच किया। तीन कोस की दूरी पर सारी सेना ने तंबू लगा लिये।
माहिल ने पृथ्वी से कहा.. महाराज ब्रह्मा गौना कराने आये हैं। हम उनको अकेला ही ले आये हैं। किस तरह उसने ऊदल को मना किया और वह गुस्सा हो कर दसपुरवा चला गया यह भी बताया। अब आपकी जो मर्जी हो सो करो।
पृथ्वीराज ने कहा ... माहिलराय आप ब्रह्मा से कह दीजो कि.. गौना करिहें हम पाछैं को, पहले करिहें युद्ध अघाय।।
माहिल ने आकर ब्रह्मा को सारी बात बताई, तो ब्रह्मा ने बोला...मामा तुम तो कहते थे कि पृथ्वीराज बिना युद्ध के गौना देने को राजी हैं। अब क्या हुआ? अब लड़ाई की बातें काहे करने लगे? अगर उनको लड़ना है तो हम उदल को बुला लें।
माहिल ने कहा ... बेटा पहले भी जो कहा था वह भी सच था और अब वो जो कह रहे हैं वह भी सच है। हो सकता है वह तुम्हें परख रहे हों कि तुम बिना उदल के लड़ सकते हो या नहीं। अगर लड़ने की मंशा ना हो तो लौट चलो।
ब्रह्मा ने कहा ..मामा वीर आगे बढ़कर पांव पिछारी को नहीं रखते हैं। संदेशा भेजो, हम पृथ्वी से लड़ने को तैयार हैं।
ज्ञात हो कि पृथ्वी का सबसे बड़ा बेटा ताहर और सबसे छोटा गोविन्दरा ही बचा है, दूसरे दिन ताहराज अपनी फौजें लेकर चल दिये। दोनों सेनायें मैदान में थी। तथ्यानुसार ब्रहमजीत और पृथ्वीराज का युद्ध सन् 1190 को अगहन मास में हुआ था।
ताहर ने कहा ... कठिन लड़ाई है दिल्ली की, नाहक काहे प्राण गंवाव।।
ब्रह्मा ने कहा ... विदा कराने हम आये हैं अब प्राण रहें कि जाये।। ..ताहर ने अपनी सांग का वार कर दिया। कुछ ही देर में ब्रहमा ने ताबड़ तोड़ वार करके ताहर को पीछे हटा दिया। ब्रह्मा के सामने जो भी पड़ता वह बिना मौत मरता। महोबा की सेना भी अपना जौहर दिखा रही थी। चार घड़ी की लड़ाई में दिल्ली की सेना के छक्के छूट गये। वह पीछे हटने लगी। सरदार टोडरमल और वीरामल आगे आये। ब्रह्मा के पहले ही वार में वह जमीन पर गिर गये और फिर उठ ना सके।
अब ताहर और ब्रह्मा एक दूसरे पर भारी पड़ रहे हैं। ताहर का वार बचाकर ब्रह्मानंद ने जैसे ही अपना गुर्ज चलाया तो ताहर मैदान छोड़कर भाग गया, चौड़ा आगे आया तो ब्रह्मा ने अपना गुर्ज फेंका, वह सीधा जाकर हाथी को लगा और हाथी मैदान से भाग गया। अब धांधू सामने आये। उसे देख कर ब्रह्मा ने कहा...आप तो मेरे भ्राता लागते हो फिर क्यों लड़ने आये हो।
धांधू ने कहा...हम किसी के कुछ नहीं लगते। जो तुम्हारे भाई लगते थे, तुम्हारे लिये अपना खून बहाने को तैयार थे, उन्हें तुम छोड़कर आये हो और जनम के दुश्मन माहिल मामा को साथ लिये फिरते हो। क्या यही तुम्हारी दूर दर्शिता है? हमने जिसका नमक खाया है उसकी ही नमक हलाली करेंगे। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हर युग में अपने ही मां जाये भाइयों से लड़ते आ रहे हैं। पता नहीं ये श्राप कब खत्म होगा? यह कहकर उसने अपनी तलवार का वार किया। कुछ देर दोनों में लड़ाई होती रही। फिर ब्रह्मा के

वार से घायल होकर उसका घोड़ा भाग गया। पृथ्वी की सेना भाग खड़ी हुई, शाम होते ही युद्ध बंदी हो गई।
दूसरे दिन ताहर ने कहा-हमारे पास सेना कम है, सभी वीर सरदार मारे जा चुके हैं। हम इनसे मोर्चा नहीं ले सकते हैं।
पृथ्वीराज ... इन महुबियों ने मेरा वंश नाश कर दिया। मेरे पांच-पांच बेटा मार डाले हैं। इनको मारने का कौन उपाय है?
महिल.. महाराज अभी तो आल्हा ऊदल नहीं आये हैं, मल्हना सौगंध देकर कभी भी भेज सकती है। वह आ गये तो समझो अब क्या होगा? अब ब्रह्मा से निपटने का एक ही उपाय है। सभी ने एक साथ पूछा... क्या उपाय है?
माहिल ने कहा... महाराज, जहां ताकत से काम ना चले वहां पर युक्ति से काम लेना चाहिए। प्रेम और जंग में सब जायज है। ताहर जनाना वेश में डोला में बैठकर जायें और जब ब्रह्मा घोड़ा से उतरकर डोला के पास आयें उसी समय जंजीरों से बांधकर तिलस्म में डलवा दो। हमेशा के लिए मुक्ति हो जायेगी और ब्रह्मा के बदले में परमाल आपकी अधीनी स्वीकार कर लेंगे।
ताहर ने कहा ... हम जनाना वेश नहीं धरेंगे, तो चौड़ा ने तुरंत कहा ... हम तैयार हैं। इस प्रकार चौड़ा लंहगा लुगड़ी ओढ़ चूड़ी छल्ला पहन जनाना वेश धरके घूंघट काढ़कर डोला में बैठ गया। ताहर डोला के साथ घोड़ा पर सवार होकर चल दिये।
एक हरकारा ब्रह्मा के डेरा पर जाकर बोला... ताहर कुंवर डोला लेकर आ रहे हैं। यह सुनकर ब्रह्मा बहुत खुशी हुए और बाहर आ गये। डोला के साथ सफेद ध्वजा फहराते हुए सैनिक के साथ ताहर को आते देखकर वह भी कुछ कदम आगे बढ़गये।
ताहराज... महाराज ने डोला पहुंचाकर तुम्हारी बात रख दी, अब तुम भी अपना डेरा समेटकर यहां से कूच कर जाओ।
ब्रह्मा अब तक डोला के पास आ गया, वह ताहर से बातकर रहा था, उसी समय चौड़ा ने पालकी से कूदकर निहत्थे ब्रह्मा के सीने में बांयीं ओर जहर बुझी कटार मारी। अचानक हुए हमले से वह लड़खड़ा गया। उसी समय ताहर ने एक तीर मारा जो ब्रह्मा के माथे पर जा घुसा वह जमीन पर गिर पड़ा। ताहर ने सांग का वार किया जो उसके दाहिनी ओर से पसली में समा गया।
उसी समय धांधू बीच में आकर बोला... अरे दगाबाजो! तुमने एक वीर को विश्वास देकर धोखा से मारा है, धोखे बाजों की ऐसी राजपूती पर लानत है। धिक्कार है तुम्हारी मां को जिन्होंने ऐसे गीदड़ों को जन्म दिया है। अरे अभी तो तुम सबको उसने दौड़ा-दौड़ा कर मारा था। तब ये बहादुरी कहां गई थी? अरे ताहर, बेला तो तुम्हारी अपनी बहन है, तुमने अपनी ही बहन के सुहाग को उजाड़ दिया। अरे तुम तो उस दगाबाज माहिल से भी दो कदम आगे निकले। तुमने महोबा का दिया बुझा दिया रे। अब आल्हा ऊदल चढ़ कर आयेंगे और तुम सबको बीन-बीन कर मारेंगे। यह सुनकर ताहर और चौड़ा वहां से चले गए।
ब्रह्मा के घायल होने की खबर कवि जगनिक ने सुनी। वह दौड़कर आया। धांधू और सैनिकों की मदद से ब्रह्मा को उठाकर तंबू में ले गया। वहां जाकर उसका उपचार कराया। बीच में जब ब्रह्मा की मूर्छा जागी, तो उसने आल्हा ऊदल को खबर भिजाने को कहा। जगनिक ने यह खबर पहले ही महोबा भिजा दी। धांधू ने यह खबर रानी अगमा को महलों में पहुंचा दी। रानी अगमा रोने लगी। अभी तो मेरी बेटी का गौना भी नहीं

हुआ था। अरे तू भाई है कि कसाई? तूने तो उसका सुहाग ही उजाड़ दिया।
महलों में बेला को यह खबर मिली तो वह क्रोध में बिफरकर बोली.. किसने मेरे पति को मारा है? मैं उसे जीवित नहीं छोड़ूंगी। मैं अपने पति की मौत का बदला लूंगी; अरे निर्दयी तुझे दया नहीं आई, अभी तो मैंने अपने कंता को जी भरकर देखा भी नही, उनसे दो बातें भी नहीं की, तूने तो मेरा जोड़ा ही बिछोड़ दिया रे। हाय! विधाता तूने ये क्या किया। वह विलाप करने लगी।
महोबा और दसपुरवा में जब यह खबर सुनी तो सब ओर हाहाकार मच गया। लाखन और ऊदल भी सिर पीट रहे हैं।
आल्हा ने कहा.. मेरी बात सुनो, विधाता ने जो लिखा है वह अमिट है। हमने बहुत कोशिश की साथ जाने की, पर उनको उस दगाबाज माहिल का विश्वास था हमारा नहीं, जबकि हर मुश्किल में हमने साथ दिया था। सच है कि विनाश काले विपरीत बुद्धि। हम उससे धोखे का बदला जरूर लेंगे। हमे यहां विलंब ना करके दिल्ली कूच करना चाहिये। चलो बड़ी मां से आज्ञा ले लें।
मल्हना रानी ने कहा... हमारी मति मारी गई थी जो हम सब माहिल की बातों में आ गए और अपना कुंवर गंवा बैठे। बेटा अब जाकर आपने भाई की देह उठा लाओ। आल्हा ऊदल आपने साथ अपनी सेना लेकर चल दिये।

38-बेला के गौने की दूसरी लड़ाई

यह सच है कि विपत्ति सभी के ऊपर आती है और अपने पराये की पहचान कराती है। विपत्ति शिव पर पड़ी थी, तो भस्मासुर जैसा तुच्छ प्राणी पीछे पड़ गया। जब विपदा श्रीराम पर पड़ी, तो रावण सीता को हर ले गया, ऐसे ही विपदा चंदेलों पर पड़ी और उनका महाबली पुत्र धोखे से मारा गया, आल्हा ऊदल और लाखन, ब्रह्मा के तंबू में पहुंचे। यह जानकर खुश हुये कि ब्रह्मा बेहोश है, बीच में होश में आता है। सभी बार बार ब्रह्मा को धीरज बंधा रहे हैं। हम सब आ गये हैं, भैया तू अकेला नहीं है। हम पृथ्वी को खदेड़कर मारेंगे, बस तू जल्दी से ठीक हो जा। हम बेला को गौना भी करा कर ले जायेंगे। बेला ने कोप करके ऊदल को पाती लिखी कि तुमने हमारा गौना कराने का वादा किया था और हमारे पति को अकेला भेज दिया। क्या तुम पृथ्वीराज से डर गये हो। आल्हा दादा आप हमारा गौना कराकर ले जाओ और हमें अपने पति के दर्शन कराओ। मंडप के नीचे दी हुई अपनी कसम पूरी करो। आप सभी ने मेरा गौना नहीं कराया, तो मैं श्राप दे दूंगी।
ऊदल ने ब्रह्मा से कहा- दादा, बेला भाभी की भी पाती आई है, वह आपसे मिलना चाहती हैं। हम सब गौना कराकर लाते हैं।
आल्हा ने कहा- अपनी पहचान लेकर वहां जाना ठीक नहीं, वेश बदल कर जाना चाहिये। सभी ने अपने शरीर पर काला रंग पोतकर काले कपड़े पहनके इंदल, लाखन, आल्हा ऊदल चल दिये। इनका आना गुप्त रखा गया। वह चारों दिल्ली दरबार में जाकर सेनापति से मिलकर सम्मोहन डालकर बोले हम गांजर के रहवासी हैं। मुसीबत के मारे हैं, आपकी सेना में काम चाहते हैं। उसी समय राजा ने आदेश दिया था कि बेला के उपर नजर रखी जाये; वह महलों से बाहर ना जाने पाये। चौड़ा ने सोचा बेला की निगरानी के लिये ये नए सैनिक ठीक रहेंगे। उसने कहा ठीक है, तुम इस महल की चौकसी करो और किसी को भी अंदर नहीं जाने देना। अगर किसी मर्द को अंदर जाते देखो तो बेखटके उसकी मुश्कें बांध लेना।
उनको बेला का पहरेदार बना के रख दिया। अब वह बेला को अपनी हकीकत कैसे बतायें। इसलिये वह आपस में पंसासार खेलने लगे और ऊदल ने कहा.. जो बेला रानी सत्त की बनी हों तो हमारे पौ बारह हो जायें। बांदी ने बेला को यह बात बताई। बेला ने उस सिपाही को बुलाकर पूछा... तुम कौन हो और हमारा नाम लेकर पांसे क्यों चल रहे हो?
ऊदल ने कहा.. हम ऊदल, आपकी पाती पाकर आये हैं, झट से बेला ने परदा करके कहा ... हम आपको पहचान नहीं पा रहे हैं। एक बात और जब हमारे ब्याहे में ऊदल आये थे तब तो गोरे थे अब काले कैसे हो गये?
ऊदल ने कहा ...यह रूप हमने आपसे मिलने के लिए रखा है, आप हमारी भाभी मां हो। हमसे अपनी बात कह सकती हो।
बेला ने परदा हटाकर कहा ...देवर जी, बताओ मेरे पिया के क्या हाल हैं? वह कैसे हैं?
ऊदल ने कहा ... बांयी ओर से चौड़ा ने कटार मारी है, ताहर ने दाहिने से सांग को घाव दियो है। एक तीर माथे पर लगा है। ये तीन घाव दादा को लगे हैं। वह मूर्छित होकर पलंग पर पड़े हैं। उन्हें देखकर सभी का कलेजा मुंह को आता है।

बेला...देवरजी, तुम तो रण के दूल्हा हो, तुम्हारे बिना कोई युद्ध पूरा नहीं होता; फिर तुमने अपने भाई को अकेला क्यों भेजा?
ऊदल.. भाभी मां, हमने तो बीरा चाबा था, पर माहिल के कहने से महाराज दादा ने हमें साथ आने से मना कर दिया था।
बेला ने कहा.. मैं सात जन्मों से शाप भोग रही हूं। हर जन्म में मेरा पति से बिछोह हो जाता है। इस सातवें जन्म में तो मैं उनसे दो बात भी न कर सकी। ऊदल, मैं तुम पर कैसे भरोसा कर लूं कि तुम मेरा डोला अपने दादा के पास तक ले जाओगे। मेरे पिता ने मुझे नजर कैद किया है। उनसे लड़कर तुम जीत नहीं पाओगे। इससे अच्छा है वापस लौट जाओ।
ऊदल ... माता ये व्यंग के वाण न मारो। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हम आपको साथ ले कर जायेंगे।
बेला... देवरजी, हम चोरी से नहीं, हम सीना जोरी से जायेंगे। ताकि हमारे पिता को पता चले कि बेला का गौना हुआ है।
ऊदल... हम भी चोरी से लेकर नहीं जायेंगे, आपकी आज्ञा लेने आये हैं। आप राजी होतो हम अपने तरीके से ले चलेंगे।
बेला... तुम पृथ्वीराज के दरबार में जाकर ऐलान करो कि हम ऊदल डोला लेने और चारों नेगियों को नेग देने आये हैं।
ऊदल.... ऐसा ही होगा आप चलने की तैयारी करो। ऊदल-लाखन घोड़ा पर सवार होकर पृथ्वीराज के दरबार में गए।
ऊदल ने भरे दरबार में तलवार हाथ में लें के कहा... महाराज, हम ऊदल ये लाखन राना है। बेला भाभी का गौना लेने आये हैं, दरबार के नेगियों को नेग देने आये हैं। ऊदल ने मोहरों का तोड़ा, सामने रख दिया, अब आप भी हमें नेग दे दीजिये।
पृथ्वीराज उसका मुंह देखने लगे, तो माहिल बोला.... महाराज, ऊदल का शीश काट लो, ऐसा मौका फिर नहीं मिलेगा।
ऊदल... मामा, तुम्हें माफ करने का आल्हा दादा ने वचन न दिया होता तो सबसे पहिले तुम्हारा ही शीश काटता। मेरी क्रोधाग्नि में घी मत डालो वरना मैं वचन भूल जाऊंगा। सारे परिवारों का वंश नाश कराने में लगे हो, नरक में भी जगह नहीं पाओगे।
पृथ्वीराज ने कहा... ऊदल घोड़ा से उतर कर नीचे आओ। तभी तो हम तुम्हें गौना का नेग देंगे।
ऊदल...महाराज, आप मेरे दो दो भाइयों के साथ विश्वासघात कर चुके हैं। अब हम आपका भरोसा नहीं कर सकते।
पृथ्वीराज ने अपने कानों से सवालाख के कुंडल उतारकर एक चौकी पर रखा दिये और चारों ओर सैनिक लगाकर कहा .. तुम घोड़ा पर बैठे बैठे एक ही वार में यह कुंडल उठा लो, यही गौना का नेग है, जाकर परमाल को दे देना।
ऊदल ने अपना घोड़ा बीस कदम पीछे लिया और चंडिका जी का ध्यान धर घोड़ा दौड़ाकर, झुककर भाले की नोंक से वह कुंडल उठाकर छलांग लगाकर बाहर निकल गया। उसे रोकने को खड़े वीर सरदार कुछ भी न कर सके। अब तक बेलारानी ने सोलह शृंगार करके अगमा रानी से विदाई ले ली, अगमा ने उसे गले लगाकर कहा..जा बेटी, अपने पति के प्राण बचा ले।
उसी समय ताहर की पत्नि ने कहा... ननद रानी, दुश्मन का साथ देकर, अपने भाई को

धोखा नहीं देना चाहिये।
बेला ने कहा ... भौजी, हमारी बात ध्यान से सुनो, ताहर भइया ने मेरे पति को धोखा से मारा है। धोखा उसने दिया है हमने नहीं। अब हम अपने पति से मिलने जा रहे हैं। आप यह भी सुन लो कि अगर हमारे पति नहीं बचे तो हम तो सती होंगे ही, पर दिल्ली में भी सभी के सुहाग उजड़ जायेंगे, जौहर की ज्वाला जल उठेगी। मैं बेला रानी आपको श्राप देती हूं कि अगर मेरा सुहाग उजड़ा तो मुझसे पहले आपका सुहाग उजड़ जायेगा। उसी समय ऊदल ने रथ महल के द्वार पर खड़ा किया।
बेला ने पूछा ... गौना का नेग ले आये? तो ऊदल ने कुंडल दिखाकर कहा ... हां, ये कुंडल नेंग में मिले हैं, यह देख बेला उसमें बैठकर चल दी। रथ हवा की तेजी से बढ़ा जा रहा था। रास्ते में मंदिर देखकर बेला ने वहां रुककर देवि मां के दर्शन किये फिर वहां की मालिन से बोली... जाकर ताहर भैया से कहो कि लाखन राना और ऊदल तुम्हारी बहिन का डोला ले जा रहे हैं।
मालिन ने जाकर ताहर को खबर दे दी, ताहर अपनी सेना लेकर भागे और कुछ दूर जाकर डोला रोक लिया।
ताहर ने कहा ... ये चोरी-चोरी डोला ले कर कहां जा रहे हो, तो लाखन बोला...चोरी से नहीं बल्कि मर्जी से ले जा रहे हैं।
ताहर... फिर हमारी मर्जी भी पूरी करे जाओ और उसने अपना वार कर दिया। लाखन ने उसकी घोड़ी दलगंजन के सिर पर खींच कर तेगा मारा जिससे वह मैदान के बाहर भाग गई, ताहर की सेना भी जहां की तहां रुक गई। तब तक पीछे से चौड़ा अपनी सेना लेकर आ गया और बोला... डोला रख दो यह आगे नहीं जायेगा।
लाखन बोला...यार ब्राह्मन, तुम काहे हमारे पीछे पड़े हो? हम हर बार तुम्हें हराते हैं तुम हर बार आ जाते हो। ऐसा करो एक बार डटकर लड़ लो और जो जीत जाये वो डोला ले जाये। अब चैड़ा और लाखन में लड़ाई होने लगी। चौड़ा के एक वार से लाखन को कुछ चोट भी आ गई थी, पर वह मोर्चा पर डटा था। लाखन ने क्रोध में भरकर भाला खींचकर चौड़ा के हाथी को मारा, तो वह सीघा उसके मस्तक में जाकर समा गया। हाथी चिंघाड़कर वहीं ढेर हो गया। चौड़ा हौदा से गिर गया। लाखन ने उसके गले पर तलवार रखकर कहा.. ब्राह्मन हो इस कारण छोड़ रहा हूं अगर तुम्हारे अंदर कुछ गैरत बाकी हो तो अब मेरे सामने ना आना।
लाखन और ऊदल डोला लेकर बहुत दूर तक निकल गये थे। वहां पीछे से इंदल भी अपनी सेना ले कर ऊदल से आ मिला था। पेड़ के पीछे से माहिल यह सब नजारा देख रहा था। उसी समय इंदल की नजर माहिल पर पड़ी, वह बोला...काका जी, माहिल नाम की इस जहर की पुड़िया को खत्म करने का आदेश दीजिये, अन्यथा यह पता नहीं किस किस को मरवाकर मानेगा।
ऊदल ने कहा ... तुम्हारी बात सच है। अब बहुत हो गया है। तुम इसे जान से नहीं मारना क्योंकि हम वचन बद्ध हैं, इसे कैद कराकर भक्सी में डाल दो और किसी को ना बताना कि वह कैद में है, आज्ञा लेकर इंदल वहां से चला गया।

39-इंदल और माहिल की लड़ाई

ऊदल का हुकुम पाकर इंदल ने खास दस सैनिक लिये और माहिल के पीछे चल दिया। इंदल को अपनी ओर आता देख माहिल कुछ शंकित हो गया और छुपने के लिए विपरीत दिशा की ओर चल पड़ा। एक कहावत है कि जब गीदड़ की मौत आती है तब वह गांव की ओर भागता है। यही हाल माहिल का हुआ। इंदल उसका पीछा कर रहा है। वह कभी किसी पेड के पीछे छुप जाता है, तो कभी किसी गड्ढे में अपनी घोड़ी को उतार देता है। इंदल को लगातार पीछे देखकर उसने घोड़ी सरपट उरई की ओर दौड़ाई। माहिल सोच रहा है कि अब मेरे दिन पूरे हो गये, ये सुनवां का लाड़ला अब मेरा पीछा नहीं छोड़ेंगा। इंदल भी उसका पीछा किये जा रहा है, काफी भाग दौड़ के बाद इंदल ने माहिल को पकड़कर कहा ... अरे उरई के महाराज कहां भागे जा रहे हो?
माहिल... अरे इंदल बेटा, तुम कहां जा रहे हो? हमसे कुछ काम था क्या?
इंदल...हां आपसे बहुत काम है, अरे, आपने अपनी बहनों का सुहाग उजड़वाकर, उनके बच्चों को अनाथ करके कौन सा नाम पाया, अपने ही भान्जों को मरवाकर कौन सा जगजीता, आपकी उमर रामभजन करने की है, पर नहीं आप तो हमेशा लगाई बुझाई करने में ही लगे रहते हो; बस आपने बहुत चुगली खाली, हम आपका काम तमाम करने आये हैं। ना रहेगा बांस ना बजेगी बांसुरी।
माहिल... तुम मुझे नहीं मार सकते, तुम्हारे पिता और दादा ने मुझे अभयदान दिया था कि वह मेरी सौ चुगली माफ करेंगे।
इंदल...वचन उन्होंने दिया था, हमने नहीं। इतना सुन माहिल ने तलवार से इंदल पर वार कर दिया। इंदल ने अपनी तलवार पर उसका वार झेला। इंदल के वार से उसकी तलवार छिटककर दूर जा गिरी। उसी समय सैनिकों से उसके हाथ पैर बंधवा कर बोरे में भर कर कैदकर लिया। अब माहिल बेबस होकर बार बार मांफी मांग रहा है। अरे बेटा, हम तो आपकी दादा की उमर के हैं, कुछ गलती हो गई हो तो हमें माफ कर दो। अब आगे ऐसी गल्ती कभी नहीं होगी।
इंदल ने कहा... माफ कर दें, ताकि तुम फिर किसी ना किसी की गोद उजाड़ सकों, किसी की मांग उजाड़ सको। किसी बहन का भाई उससे छीन सको। नहीं अब तुम्हें माफी नहीं मिलेगी। सैनिकों इनका मुंह काला कर दो इनकी दाड़ी मूंछ काट दो ताकि कोई इनको पहचान ही न सके और मुंह भी बांध दो। उसके बाद सैनिकों को वापस भेजकर स्वयं ही माहिल को बोरा में बांधकर ले जाकर भुतहा भक्सी में डाल दिया, किसी को भी इस बात का पता नहीं चला कि भक्सी में कोई है, वहां कोई व्यवस्था नहीं थी।
इंदल ने सोचा वह अपने आप मर जायेगा, किसी को मारना नहीं पड़ेंगा और सभी का दिया हुआ वचन भी निभ जायेगा। इस प्रकार माहिल के अंतिम दिन उसकी करनी के अनुसार भुतहा तिलस्म में बिना अन्न जल के तड़प-तड़त कर कटे; अंत समय उसके पास कोई अपना नहीं था। किसी को उसके मरने का पता ना चला और ना ही कोई उसके मरने पर दो आंसू बहा सका।

40-ताहर और बेला की लड़ाई

अब ऊदल डोला ले आये और बेला को आदर सहित ब्रह्मा के तंबू में छोड़कर ऊदल के अलावा सभी बाहर आ जाते हैं। बेला मूर्छित ब्रह्मा से लिपटकर रोते हुए बोली...स्वामी आपको कुछ नहीं होगा, हम आपको कुछ नहीं होने देंगे, वह ब्रह्मा का सिर गोद में रख सहला कर कह रही है... हे प्राणनाथ, आंख खोलिये। आपकी दासी आपकी सेवा में आ गई है। आप उसे एक बार तो देखिये। हमसे बात कीजिये। आप ठीक हो जायेंगे। बेला बार बार विलाप कर रही है। मेरे भाई और पिता ही हमारे बैरी हो गये। मैं तो जी भरकर आपको देख भी नहीं पाई हूं। आपसे दो बात भी नहीं कर पाई हूं। हाय विधाता तू इतना निर्दयी नहीं हो सकता, तुझे मेरे पति को ठीक करना ही होगा। इसी तरह समय बीत रहा है, पर ब्रह्मा की मूर्छा नहीं टूट रही है।
आल्हा ने बताया कि वैद्य जी उपचार कर रहे हैं, पर उनका कहना है मूर्छा टूटने में तीन दिन का समय लग जायेगा। अभी उसे किसी तरह से परेशान नहीं किया जाये, तो बेला ने आल्हा से कहा... हे मंडलीक अवतार आप हमारे बड़े हैं, आप ही हमें चंदेल कुमार से ब्याह कर लाये हैं। अब हमारी हर इच्छा को पूरा करना आपका धर्म है।
आल्हा ने कहा ... बहूरानी जो भी कहना है साफ-साफ कहो?
बेला ने कहा...महाराज, आपने मंडप के नीचे वचन दिया था कि आप हमें महोबा ले जाकर रानी मल्हना से मुंह दिखाई करायेंगे। दूसरी बात मेरे पति ने वादा किया था कि वह मुझे महोबा ले जाकर अपने रंगमहल की चित्रसारी दिखायेंगे। तीसरी बात हमने मां चंडिकाजी को कलयुग में महोबा आकर ये अग्निकुंडल चढ़ाने का वादा किया था। इन्हें हम कब से सँभाले फिर रहे हैं।
महाराज, जो होना है वह तो होकर रहेगा, अब समय आ गया है कि हम सब अपने अपने वचनों को पूरा कर लें अन्यथा हमें एक जन्म और लेकर आना पड़ेगा। आप तो धर्मज्ञ हैं, अपना वचन पूरा कीजिये और अपने भाई का भी। हम महोबा जाना चाहते हैं। वहां अपने पति का महल देखना चाहते हैं। उस सूनी सेज पर पांव रखना चाहते हैं, जो हमारे पति ने हमारे लिए दस साल से सजा रखी है। उनका वचन था कि उस पर बेलारानी ही पांव रखेगी, तो हम उनका वह वचन पूरा करना चाहते हैं। इसके अलावा हम मां चंडिका को ये अग्निकुंडल अर्पित कर अपना सुहाग वापस मांगेगे। वह हमारी पुकार सुनकर कुंवर को जीवन दान देंगी।
आल्हा ऊदल और लाखन ने आपस में विचार किया और फिर तय हुआ कि आल्हा बेला के साथ जायेंगे। एक रथ तैयार कराकर बेला को उसमें बैठने को कहा। बेला ने सोचा द्वार चार में वह अपने पति के बिना कैसे निहारन करायेगी। यही सोचकर वह अपने पति ब्रह्मा की तलवार लेकर उस रथ में बैठ गई। महोबा में खबर भिजा दी कि बेला की मुंह दिखाई की तैयारी करी जाये।
बेला का डोला द्वार पर पहुंचा तो रानी सुनवां ने उसे नीचे उतारा और उसे द्वार पर खड़ा किया। मंगलाचार के साथ रानी मल्हना ने ब्रह्मा की तलवार के साथ बेला की मुंह दिखाई की। उसे अपने गले का हार उतारकर दिया और सदा सुहागन रहने का आशीर्वाद दिया। बेला ने माता के चरण स्पर्श कर उन्हें कंगन की जोड़ी भेंट की। बाकी रानियों ने भी उसकी मुंह दिखाई की।

रानी मल्हना ने पूछा ... बहू मेरा बेटा कैसा है, तो बेला ने उनके आंसू पोंछकर कहा...ना महारानी जी, वीरों की माता की आंखों में आंसू शोभा नहीं देते, आपका बेटा बहुत बहादुर है। उन्हें तो मेरे पिता और भाई ने धोखा से मारा है। वह अभी मूर्छित हैं।
बेला ने चंद्रावली से कहा... जीजी अपने बीरन की रंगशाला हमें दिखाओ, तो चंद्रावली उसे ब्रह्मा के सतखंडा पर स्थित रंगमहल में ले गई। बेला वहां की सुन्दरता को देख कर मोहित हो गई, चारों ओर मोरपंख की छौनी छाई है, रत्नों की झालरें लटक रही हैं, रेशम के सुन्दर परदे हैं। एक खिड़की से हिलोरें लेता कीरत सागर दिख रहा। दूसरी खिड़की से मदन ताल दिख रहा। उसमें बहुत ही सुन्दर कमल खिले हुए हैं। तीसरी खिड़की से दूर तक फैला बाग दिखाई दे रहा है। वहां से आती मंद-मंद पवन बहुत ही भली लग रही है। चौथी खिड़की से उसे महोबा नगरी का नजारा दिख रहा है। उंचे-उंचे परकोटे, नुकीले कंगूरे, रंग बिरंगे दरवाजे और महराब दार द्वार व अटारियां हैं। लहराते हुए गलियारे और चौक भी दिख रहे हैं। उसे ऐसा लग रहा है मानो वह इंद्रपुरी के दर्शन कर रही है। चंद्रावली ने बताया वह दूर देख रही हो... वह फुलबगिया है, वह बरइयन का पुरवा है जहां पर पान की खेती होती है। वह मदन ताल है, जिसमें हमेशा कमल खिले रहते हैं। वह कीरत सागर है, जहां पर भुजरियां विसर्जन होती हैं। वह राजदरबार है, वह सभी भाइयों का अखाड़ा है। वह गोरखगिरी पहाड़ है। वह दशपुरवा है, जहां ऊदल और आल्हा रहते हैं। वह चंडिका माता का मंदिर है। उसके पास मनिया देवता का मंदिर है। यह सब देख वह सोच रही है कैसे मेरे पिता ही मेरे बैरी हो गए। मैं अपने प्रियतम के साथ इस स्वर्ग में पहले क्यों ना आई? फिर वह नीचे आकर बोली... महारानी, मैं देवी पूजन करने जाऊंगी। रानी मां के साथ देवी पूजन को गई, उसने अपने हाथों से मां को वह अग्नि कुण्डल पहनाये, लाल चूनर चढ़ाई और अपने पतिकी लंबी उमर की प्रार्थना की। देवी मां का आशीर्वाद लेकर, मनिया देवता की पूजाकी और महलों में वापस आकर कहा- माता, मुझे आज्ञा दीजिए मैं पति की सेवा में जाकर अपने पत्निधर्म को निभा सकूं। सभी ने उसे आंसू भरी आंखों से बिदा किया।
तंबू में आकर बेलारानी ने अपने पति को अपने साथ लाया हुआ जल पिलाया और मां का प्रसाद भी खिलाया। कुछ ही देर में ब्रह्मा की मूर्छा टूट गई। उसने अपने सामने बेला को देखा तो पहचान ही नहीं पाया और पूछ बैठा आप कौन हैं?
बेला ने हाथ जोड़कर कहा... स्वामी मैं पृथ्वीराज की पुत्री और आपकी धर्मपत्नि बेला हूं।
ब्रह्मा ने कहा... दगाबाज बाप की बेटी हो, तुम्हारे पिता और भाई ने मुझे धोखा से मारा है। अब यहां पर क्यों आई हो?
बेला ने कहा... स्वामी मेरे पिता की इस गल्ती की सबसे बड़ी सजा तो मैं स्वायं ही भुगत रही हूँ। उनके इस कार्य में मेरी तो कोई सहमति नहीं थी। यह आप भी जानते हैं। अब मैं आपकी सेवा में आ गई हूँ। मुझे अपना लीजिये।
ब्रह्मा ने कहा ... हो सकता है आप भी मेरे साथ छल करके अपने पिता का अधूरा कार्य पूरा करने आई हो।
बेला रानी ने कहा ... स्वामी, ऐसा कह कर मेरे पत्निधर्म का अपमान ना कीजिए। आप चाहें तो मेरी परीक्षा ले सकते हैं।
ब्रह्मा आंख बंद करके सोच रहा है कि मैंने प्रण लिया था कि मैं ताहर का शीश काटूंगा, पर वह छल करके मेरे से आगे हो गया। लगता है मेरे जाने का समय आ गया है। मुझे

याद आ रहा है कि गुरुदेव ने कहा था कि ऊदल और ब्रह्मा को ताहर से दूर ही रखना। हो सकता है कि ऊदल को ताहर से खतरा हो और अब ताहर उदल के साथ कुछ दगा करे। इसलिए अगर किसी तरह ताहर का बध हो जाये तो फिर महोबा का संकट हमेशा को टल जायेगा। इसके अलावा मुझे वा मलखान दादा को मारने का बदला भी पूरा हो जायेगा। मैं ऊपर जाकर दादा से कह सकूंगा कि मैने आपके साथ हुए छल का बदला ले लिया। दूसरी बात ताहर ने धोखा देकर मुझे और मेरे भाई को मारा है। पृथ्वीराज को भी इस बात का अहसास होना चाहिये कि धोखा क्या होता है? यही मन ही मन निश्चय करके ब्रह्मा ने आंख खोल दी। बेला ने उसे पानी पिलाकर बोली .. स्वामी आप जल्दी ही ठीक हो जायेंगे, तो ब्रह्मा बोला... रानी, बिना दवा के मरीज कैसे ठीक हो सकता है?
बेला ने कहा ... स्वामी मुझे बताइये आपको किस चीज की जरूरत है? आप किस दवा से ठीक होंगे, मैं उसे लाऊंगी।
ब्रह्मा ... नहीं रानी नहीं, ये आपके वश की बात नहीं हैं।
बेला ने कहा ... महाराज आप कहकर तो देखिये, जहां भी मिलेगी मैं उसे लेकर आउंगी।
ब्रह्मा.. अभी आप में इतनी शक्ति और पतिभक्ति नहीं है कि ब्रह्मा की औषधि ला सकें। यह कार्य तो ऊदल ही कर सकता है।
बेला ने कहा ... स्वामी अगर आप बतायेंगे नहीं तो मैं कैसे लाऊंगी? मैं आपको वचन देती हूं कि आपकी जीवनदायनी संजीवनी आपको लाकर दूंगी। आप उसका नाम बताइए?
ब्रह्मा... रानी कार्य कठिन है एक बार फिर सोच लीजिये। पत्निधर्म की बात करना सरल है, पर निभाना बहुत कठिन है।
बेला...मैं पृथ्वीराज चौहान की पुत्री और चंदेल राजवंश की कुल बधू बेलारानी प्रण लेकर आपको परीक्षा देने को तैयार हूं।
ब्रह्मा ने कहा...रानी, मैंने रणभूमि में प्रण किया था कि आज मैं ताहर का सिर काटकर रहूंगा, पर ताहर ने धोखा से मुझे घायल कर दिया है। अब मेरा मन बार बार मुझे धिक्कार रहा है, मेरी तलवार मुझे चिढ़ाती सी लगती है, इसी कारण मेरा घाव ठीक नहीं हो रहा है। दूसरी बात, अगर मैं मर गया तो प्रण अधूरा रह जायेगा और फिर मुझे फिर अगला जन्म लेकर आना पड़ेगा।
बेला ने ब्रह्मा का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा.. नहीं नहीं स्वामी, आप अगले जन्म की बात नहीं करिये, हम सारे अभिशाप, सारे प्रण इसी जन्म में समाप्त करके ही जायेंगे ताकि कोई भी अभिशाप अगले जन्म के लिये बाकी ना रहे। मैं बार बार की इस यात्रा से थक चुकी हूं, आप याद करिये हर जन्म में हमारा मिलन अधूरा ही रहा। अब मैं आपको पूर्ण रूप से पाना चाहती हूं।
ब्रह्मा ने कहा... मुझे सब याद है, तभी तो दस साल से तुम्हारा इंतजार कर रहा था। अब ताहर को मार कर तुम अपने पिछले जन्मों की कसम को पूरा कर इस अभिशाप से मुक्त हो जाओ।
बेला ने कहा ... आप आपना कवच, तलवार, घोड़ा और अपनी पोशाक मुझे दे दीजिये। मैं आपके दर्द की दवा लेकर आती हूं। बेला ब्रह्मा की पोशाक पहनकर मर्दाना वेश में खड़ी है। उसने बारह छुरियां कमर में बाधीं, सीने में कवच पहना, पैर में तुर्रादार जूते पहने और हाथ में ढाल तलवार लेकर खड़ी हो गई। उसके चेहरे पर तेज और आत्म विश्वास छलक रहा है। उसने सिर पर झलरिया टोप लगाकर ब्रह्मा के चरण छूकर

कहा...स्वामी, मैं आपका रूप रखकर आपकी प्रतिछाया बन कर जा रही हूं। आप अपनी तरफ से एक पाती ताहर भैया के नाम लिख दीजिये। ब्रह्मा ने ऊदल को पाती लिखने का इशारा किया।
ऊदल ने पाती लिखी... दिल्ली नरेश, आपकी पुत्री ने आकर अपनी पतिव्रत धर्म की शक्ति से मुझे जीवित कर दिया है। इसी से समझ सकते हो कि मेरा और उसका रिश्ता क्या है। हम दोनों को कोई भी अलग नहीं कर सकता। अब हम आपसे अब तक के किये अपराध और छल का हिसाब लेने आ रहे हैं। आप आकर हमें रण में मिलें। वहीं पर हमारा आपका हिसाब होगा।
ब्रह्मा... रानी, तुम अपने साथ ऊदल को ले जाओ। इसके अलावा मेरी पचास हजार सेना खड़ी है उसे भी ले जाओ।
बेला... स्वामी मैं अकेली ही दिल्ली की सेना के लिए बहुत हूं, मुझे अपना रण कौशल दिखाने का मौका कभी नहीं मिला, आज आपने मेरी पुरानी साध पूरी कर दी। आपकी सेना मेरे साथ जायेगी उसके अलावा कोई नहीं।
बेला ने आल्हा के चरण छूकर आज्ञा ली। अब बेला ब्रहमा के घोड़ा हरनागर के पास पहुंच रकाब पकड़कर उस पर सवार हो गई। सारी सेना ब्रह्मा को आया जान चौंक गई और खुशी से जय जय भवानी के नारे लगा कर चल पड़ी। उधर दिल्ली दरबार में सैनिक ने पाती दी। पाती पढ़कर सभी चौंक गये कि ब्रह्मा तो अभी जीवित है। वह युद्ध के लिये बुला रहा है।
पृथ्वीराज ने ताहर और चौड़ा को अपनी सेना लेकर जाने का हुकुम दिया। ताहर अपनी सेना लेकर मैदान में आ गया। सामने ब्रह्मा के घोड़ा को देख कर बोला .. काहे अपनी जान गंवाने आ गये हो? बेला रानी का जस मानों कि तुमको जीवन दे दिया।
ब्रह्मा बनी बेला ने कहा ... तुम्हारी बहन ने ही भेजा हे कि गौना का नेग लेकर आओ।
ताहर ने कहा ... कुंवर ब्रह्मा अगर यह बात है, तो तुम हमारे साथ महलों में चलो हम तुमको वहीं पर नेग देंगे।
ब्रह्मा ने कहा ... तुम दगाबाज हो, राजपूतों के नाम पर कलंक हो।
ताहर ने तलवार खींचकर कहा... चंदेल कुमार जबान सँभाल कर बात करो, तो बेला ने कहा, सच्ची बात कड़वी लगी।
ताहर ने कहा ... तो लो अब मेरा वार सँभालों और उस पर तेगा चला दिया। इशारा पाकर दोनों सेनायें आपस में भिड़ गईं।
बेला ने अपनी ढाल पर वार रोका और अपनी तलवार का वार कर दिया। बेलारानी बड़ी ही कुशलता से युद्ध कर रही थी। उसका युद्ध कौशल देखते ही बनता था। उसके अन्दर की फुर्ती को देखकर ऐसा लग रहा था कि मानों स्वयं दुर्गा मां ही मैदान में उतर आईं हैं। ताहर की घोडी दलगंजन उसके वार से चार कदम पीछे को हट जाती थी। दो पहर की लड़ाई में ताहर कमजोर पड़ने लगा था। यह देखकर चौड़ा उसकी सहायता के लिये आ गया था। ताहर ने अपनी तलवार का वार बेला पर किया जो उसकी आस्तीन को काटता हुआ निकल गया और उसके ब्याहे का चूड़ा-चूड़ी वहां से दिखने लगी।
चौड़ा ने यह देख लिया वह ताहर से बोला... राजकुमार वार ना करना यह आपकी बहिन है। ताहर यह सुनकर चौंक गया, पर बेला की तलवार का उठा वार नहीं रुका और सीधा ताहराज की गर्दन पर पड़ा और उसका सिर कटकर जमीन पर गिर पड़ा। बेला ने ताहर का सिर भाला की नोंक से उठाकर कहा ...चौड़ा भइया, हमने अपने पति

के साथ हुए छल का बदला छल से ले लिया।
ताहर के मरते ही सारी सेना भाग गई। चौड़ा कुछ भी न कह सुन सका, वह तो केवल देखता ही रहा और बेला चली गई। चौड़ा ने ताहराज का पार्थिव शरीर पालकी में रखकर महलों की तरफ कूच किया। दरबार में चौड़ा ने बेला के द्वारा ताहर के मरने का सारा हाल पृथ्वीराज को सुनाया तो सभी चकित रह गये। पृथ्वीराज को बहुत ही गहरा आघात लगा। वह अंदर तक टूट गये और बैठे रह गये। महलों में खबर मिलते ही हाहाकार मच गया। ताहराज की रानी ने कहा ... अरी बेला, तू तो खून की प्यासी निकली रे, तूने सारे वंश का नाश करा दिया। तूने अपनी ही भाभी का सुहाग उजाड़ दिया। अरी बेला ... तेरा श्राप सही हो गया रे। इसी दिन को तुम पैदा हुई थीं। दोनों कुलों के दीपक बुझा गये रे, इसी तरह से सभी विलाप कर रही हैं।
तथ्यों के मुताबिक पृथ्वी के बड़े पुत्र ताहराज और बहन बेला का युद्ध 1190 के अगहन माह के अंत में हुआ था।

41-चंदन बगिया और चंदन खंभ

ब्रह्मा के खेमें में माहौल बहुत ही दुख भरा है। बैद्य जी दवा दे रहे थे। सभी उसे घेर कर बैठे हैं। उसी समय बेला थाली में ताहर का कटा सिर लेकर आती है। ब्रह्मा के सामने ताहर का सिर रखकर बेला ने कहा .. स्वामी मैं आपके घाव का मरहम लेकर आ गई हूं। आप आंखे खोलिये। मैं आपके बचन को पूरा करके आई हूं। ब्रह्मा ने आवाज सुनकर आखें खोली.. उसने ताहर के शीश को निहारा, चेहरे पर सुकून के भाव नजर आये और आंख बंदकर ली, बेला ने कहा... स्वामी कुछ तो बोलिये।

ब्रह्मा ने आंख खोलकर बेला को निहारा फिर बोला... रानी, तुमने मेरे बैरी को मारकर मेरा जाना आसान कर दिया है। अब मैं अपनी अंतिम यात्रा पर आराम से जा सकूंगा। बेलारानी मेरी बात ध्यान से सुनो.. राजपाट का सुख भोगना चाहो तो महोबा में जाकर राज सँभालो, अगर पीहर जाना चाहों तो दिल्ली चली जाना, अगर हमारे साथ अनंत यात्रा पर चलना चाहो तो अपने सतीत्व के बल से सती हो जाना। हमारा यह दुर्भाग्य ही रहा है कि हम इस धरती पर आकर कभी भी पूर्ण रूप से एक दूसरे के ना हो सके। हमारा श्राप हमेशा हमारे बीच में रुकावट बनकर आ जाता था, पर अब यह हमारा सातवां और आखिरी जन्म है। अब हम इस श्राप से मुक्त हो जायेंगे। प्रिये मैं तुम्हारा इंतजार करूंगा। इतना कहकर ब्रह्मा ने आंख बंदकर ली।

बेला ने कहा ... स्वामी आप तो कहते थे कि हम ठीक हो जायेंगे। फिर आप हमें अकेला छोड़कर कैसे जा सकते हो। आप ऐसी बातें क्यों करते हो? उसने उसे हिलाया पर उसका सिर एक ओर लुढ़क गया। वह लिपट कर बिलख पड़ी, रोकर बोली .. स्वामी आपके जीवन की खातिर तो हम अपने भाई का शीश काट कर लाये थे। हाय विधाता यह कैसी माया तूने रची रे।

आल्हा ने पास आकर कहा... बहूरानी, वीरों के जाने पर आंसू नहीं बहाते आत्मा तो अमर है। उससे पुनः मिलन होगा। आप तो समझदार हो। अपने को संहालों। यह रण भूमि है। हमें ब्रह्मा का पार्थिव शरीर महोबा ले चलना चाहिये।

बेला ने अपने आंसू पोंछ लिये और कुछ देर तक शांत बैठी रही उसके बाद ऊदल से बोली... देवर ऊदल हम अपने पति के साथ सती होंगे। उसके लिये तुम दिल्ली के चंदनबाग से चंदन की लकड़ी कटाकर लाओ। वह घायल शेरनी सी गुर्रा रही है।

ऊदल... भाभी मां, महोबा में चंदन की कमी नहीं है, जितना कहोगी उतना मिलेगा, फिर दिल्ली के चंदन बाग से ही क्यों?

बेला ने कहा ... नहीं हमें तो दिल्ली की चंदन बगिया का चंदन ही चाहिये। इस समय वह स्वयं कालरात्रि नजर आ रही है।

आल्हा ने समझाया इस समय तुम्हारे पिता जी भी शोकग्रस्त हैं। उन्हें समय परेशान करना उचित नहीं है, पर ना मानी और बोली ...आप सभी ने मेरे पति को अकेला भेजकर मरवा डाला, अब आप सभी की बहादुरी कहां गई? ऊदल की तलवार की धार कहां गई? अब मरने से क्यों डरते हो? मेरी इच्छा पूरी करो अन्यथा मैं श्राप दे दूंगी। एक सती का श्राप कभी विफल नहीं होता।

आल्हा ने सब कुछ समझ कर और विधि का विधान मानकर कहा ... ऊदल जा कर चंदन कटा लाओ।

ऊदल ने लाखन से कहा... चलो मित्र अब चंदन कटाने चलना ही पड़ेगा। वह अपने साथ कुछ सेना और रसद के खाली छकड़े लेकर चल दिये, इन छकड़ों में घोड़े जुते थे। दिल्ली के दक्षिण छोर पर स्थित चंदन बगिया में पहुंच सैनिकों ने झटपट चंदन के पेड़ काटकर छकड़ों में भर लिये। सेना के आते ही माली ने जाकर पृथ्वीराज को खबर दी कि ऊदल ने आकर चंदन के पेड़ काट लिये हैं। अब तक पृथ्वी के भी सभी वीर सरदार और पुत्र मारे जा चुके थे। पृथ्वी का एक पुत्र गोविन्दराज जो कर्नाटक में था वही बचा था। इस समय वह ताहर की मृत्यु का शोक मना रहे थे। पृथ्वीराज ने यह समाचार सुनकर चौड़ा और धांधू को बुलाकर कहा.... तुम दोनों जाकर ऊदल से मोहरा लो और उसका सिर काट कर मेरी नजर करो।
चौड़ा ने जाकर ऊदल को ललकार कर कहा ... किसकी मर्जी से तुमने चंदन कटवाये?
ऊदल ने कहा ... बेलारानी का हुकुम था कि हमारी चंदन बगिया का चंदन आने पर ही वह सती होंगी, सो हम उनकी आज्ञा पाकर यह चंदन ले जा रहे हैं। अन्यथा ऐसे दुख के वक्त पर हम यहां आकर आप सभी को परेशान न करते।
चौड़ा ने कहा ... ऊदल छकड़ा यहीं छोड़ कर वापस लौट जाओ। यह चंदन आगे नहीं जायेगा। महाराज का यही हुकुम है।
ऊदल...हम चंदन लेकर जायेंगे चाहे कुछ भी हो जाये यह मेरी भाभी मां का हुकुम है। उनका हुकुम मनना हमारा धर्म है।
तब चौड़ा ने ऊदल पर वार करके कहा ... तो लों वार करना हमारा भी धर्म है। ऊदल ने भी अपनी तलवार का वार कर दिया उधर धांधू की लड़ाई लाखन से हो रही थी। दो घड़ी तक तलवारें बजती रहीं और लाशें गिरती रहीं। कभी ऊदल के सैनिक छकड़ा अपनी तरफ हांकते, तो कभी चौड़ा के सैनिक अपनी तरफ कुछ ही देर में चौड़ा और धांधू अपनी जान बचाकर भाग गये।
ऊदल चंदन लेकर जमुना के इस पार आये और बेलारानी से कहा... भाभी मां, हम आपकी आज्ञानुसार चंदन ले आये हैं।
बेला चंदन देखकर बोली...ये तो गीला है, गीले चंदन में कैसे आग लगेगी। जाओ सूखा चंदन लेकर आओ।
ऊदल ने हाथ जोड़कर कहा ... हे धर्म की माता, आप मेरी बात मानिये और महोबा चलिये वहां पर बहुत सा सूखा चंदन है।
बेला ने कहा... देवर जी, हम तब तक इंतजार नहीं कर सकते, हमने सुना है तुम भारी से भारी खम्बे को उखाड़ने में सक्षम हो। मेरे पिता की बारहदरी में सूखे चंदन के बारह खंबा लगे हैं तुम उनमें से एक खंबा उखाड़ लाओ, यह हमारा हुकुम है।
यह सुन ऊदल तड़फकर बोला... हे भाभी मां, आप ऐसा क्यों कहती हो? क्या आपको हमारे प्राण भारी हैं, तो ऐसे ही ले लो। गलत कार्य करने को काहे कहती हो। यह उचित नहीं हैं। हम वहां नहीं जायेंगे।
बेलारानी.. देवर जी, हमें कुछ गलत नजर आ रहा है, मौत को देखकर भी ना डरने वाले ऊदल बांकुड़ा को आज अपने मरने की चिंता है, मेरे पति के मरने का दुख नहीं है। तुम सुनवां भाभी की बात कभी नहीं टालते फिर हमारी बात से इंकार क्यों?
ऊदल...सुनवां भाभी को हमारी चिंता होती है। वह हमें लड़ने से रोकती हैं, अकारण किसी से भिड़ने को नहीं भेजतीं।
बेलारानी ने कहा .. देवर जी, हमें आपकी नजर में खोट दिख रहा है, तुम ऐसा तो नहीं

सोच रहे कि पारस पथरी और महोबा दोनों ही अनाथ हो गये हैं। उसे तुम अब आसानी से हथिया सकते हो। उस पर बैठकर निष्कंटक राजव् ाâर सकते हो।
ऊदल बोला... ना भाभी मां, ऐसा आरोप ना लगाओ। इतना बड़ा ताना मार कर, हमारी आत्मा को लहूलुहान ना करो।
बेला... देवर जी, हम आपको आदेश देते हैं कि आप बारहदरी से खंबा लाओ, अन्यथा अपने हथियार जमुना में बहा दो और कभी हथियार ना उठाने की कसम लो, चंदेल महाराज की तरह, मैं स्वयं जाकर अपने पिता से दो-दो हाथ करके खंभा लाऊंगी।
आल्हा ने कहा...ऐसी हठ कैकयी ने ठानी, तो राम को वन जाना पड़ा, दूसरी हठ सीता ने स्वर्ण मृग लाने की ठानी थी तो उनका ही हरण हुआ था। आज अगहन मास की पूर्णिमा तिथि है, बहुत अच्छा मुहूर्त है। आपको सती होना है तो बिना कुछ विचार किये आज ही अपनी योगाग्नि में समाहित हो जाइये। अन्यथा कल से पूस का महीना लगने वाला है और साथ ही पंचक लग रही हैं। एक तो पूस माह ऊपर से पंचक मुहूर्त में सती होना बहुत से विघ्नों को आमंत्रण देगा। इसलिये आप हठ त्याग दीजिये।
अन्यथा, हे बेला रानी, हम सबका आपसे निवेदन है कि आप सती होने का विचार त्याग दें। महोबा में पारस पथरी है, आपके राज्य की रक्षा में कुंवर त्रिलोक सहित हम सब हाजिर हैं। आप राजमाता बनकर राज्य को सँभाल सकती हैं।
बेला ने कहा ... हमें बातों में भरमाने की कोशिश ना करो। हमारे पास कुल पांच दिन का समय है, इस पांच दिन के भीतर पंचक में ही हमें सती होना है। ऊदल ने समझ लिया कि अब बिना जाये कोई चारा नहीं, वह लाखन से बोला... लगता है अब काल की घड़ी आ पहुंची है। ये बेलारानी सबको मरवाकर सबके साथ सती होयगी। चलो अब चंदन खंभ लायेंगे या वहीं जूझ जायेंगे। जो भी सेना बची है उसे साथ ले लो।
इंदल ने ऊदल से कहा हम भी साथ चलेंगे, पर ऊदल ने कहा तुम यहीं रहकर तंबू की सुरक्षा देखो। हम ख्ांभा लेकर ही आयेंगे। ऊदल ने धनुआं तेली, लला तमोली, मन्ना गूजर, गांजर वाले दोनों राजाओं सहित बची सेना को साथ ले चल दिये।
इस समय दिल्ली में भी ताहराज के मरण से गम के बादल छाये हुए थे, बारहदारी सूनी पड़ी थी। ऊदल ने अपनी सेना को तीन भागों में बांटा और किसको कब कहां पर क्या करना है, यह रण नीति बना ली उसके बाद दिल्ली के पूर्वी छोर से ऊदल बारहदरी में घुस गए, उदल ने खंभा उखाड़ लिया, उसी समय बीर भुगन्ता और रमैया कुछ सैनिकों के साथ आ गए। बीर भुगन्ता ने कहा ... कुंवर उदयराय, तुमने काहे खंभा उखाड़ कर रार बढ़ाई है।
ऊदल ने कहा... हम अकारण रार नहीं बढ़ाना चाहते ना ही ऐसे समय महाराज को परेशान करना चाहते हैं, उनकी ही बेटी ने हठ पकड़ रखी है कि वह अपनी बारादरी के खंभों की चिता पर बैठकर सती होयेंगी। उनके आदेश पर हम ये खंभा लेने आये हैं।
बीर भुगन्ता ने कहा... कुछ भी हो, महाराज का हुकुम है कि ये खंभा जाने ना पायें और उसने वार कर दिया। बस अब तो दोनों ओर से तलवारें बजने लगीं। लाखन, ऊदल अपना जौहर दिखा रहे थे, उधर रमैया अपनी तलवार से कमाल दिखा रहा था। उसी समय अंगद राजा ने छकड़ा रोककर खंभा उतरा लिये तब लाखन ने परशु पहलवान को उसे रोकने को कहा। परशु ने जाकर अंगद पर वार किया तो तीसरे वार में अंगद राजा चूक खा गये और तलवार उनके पार निकल गई। उसके बाद परशु ने खंभा छकड़ा पर रखे और आगे बढ़े, तभी वीर भुगन्ता आया और उसने निशाना साधकर परशु पहलवान

पर भाला फेंक दिया। भाला परशु के सीने में गड़ गया और वह वहीं पर गिर गये। यह देख ऊदल आ गया और भुगन्ता से भिड़ गया ऊदल ने खेंचकर शिरोही मारी और भुगन्ता के सीने के पार हो गई। अब धनुंआ तेली आगे बढ़ा और छकड़ा हांका, तो रमैया ने रास्ता रोक लिया ऊदल ने अपनी तलवार से उसका सिर उड़ा दिया और छकड़ा बाहर आ गया।
उदार लाखन का चौड़ा से मुकाबला हो रहा है, तभी धनुआं तेली छकड़ा ले जा रहा है, धांधू की ललकार सुन उससे लड़ने लगा। कुछ देर की लड़ाई में धांधू ने धनुंआ को मारकर छकडे पर कब्जा कर वापस ले जाने लगा। धनुआं को गिरता देख लला तमोली आगे आया और कुछ देर की लड़ाई में धांधू के द्वारा वह भी मारा गया। यह देखकर ऊदल धांधू के सामने आया, दोनों में घमासान हुआ और धांधू घायल होकर मैदान से चला गया। देवीराजा छकड़ा ले जा रहे हैं। ऊदल ने उन्हें ललकारा और उनपर टूट पड़ा। कभी आगे से कभी पीछे से कभी ऊपर, तो कभी नीचे से कहर बरसा रहा है। जो भी उसके सामने पड़ जाता वह काल के गाल में समा जाता था। उसे देख कर लग रहा था कि स्वयं यमराज सभी का संहार करने रण में आ गये हैं। ऊदल के अगले वार से देवीराजा भी मारे गये। दोनों ओर के बहुत से वीरों का सफाया हो गया। ऊदल और लाखन चंदन खम्भ लेकर अपने खेमा में आये।

42-बेलारानी का सती होना

महोबा में सुनवां रानी को भी आसार अच्छे नहीं लग रहे थे, उनको बार बार देवी मां खप्पर लिये हुए स्वप्न दे रहीं थी। उनको भी अहसास हो रहा था कि बहुत कुछ घटने वाला है। आल्हा को भी बेलारानी स्वप्न में खप्पर लिये दिखती थीं।
आल्हा ने बेला से महोबा चलने को कहा। बेला कुछ ना कह कर चुप्पी साधे बैठी रही। उसी समय ऊदल भी आ गये।
ऊदल हाथ जोड़कर बोला... भाभी, आपकी आज्ञानुसार चंदनखंभ ले आये, अब आप कहें तो हमसब महोबा कूच करें?
बेला ने कहा...देवर, जो तुम मानों धरम की मात, तो सुनो हमारी बात। ऐसी जगह पर चिता बनाओं जहां पर चार राज्यों की सीमा मिलती हों। ऊदल तुरंत बोला...भाभी मां, ऐसी तो कोई जगह हमारी नजर में नहीं है।
बेला बोली-देवर जी, कनवज, सिरसा, दिल्ली और राजस्थान का पथरीगढ़ ये चारों राज्यों की सीमा का मिलान एक ही जगह पर है। तुम इन चारों की सीमा को दबाकर चिता बनाओ। अब महोबा और कनवज तो मित्र राज्य थे, पर किसी दूसरे राज्य की सीमा पर बिना अनुमति के सती का चौरा नहीं बना सकते हैं।
ऊदल ने कहा ... भाभी मां, हम महोबा वाले सती की चिता किसी अन्य राजा की सीमा में कैसे बना सकते हैं? उसके बाद सती का चबूतरा भी बनेगा मंदिर भी बनेगा। अतः कोई भी राजा इसका विरोध करेगा और स्वयं पृथ्वीराज महाराज भी इस बात को नहीं मानेंगे। वह कहेंगे कि हम जानबूझ कर उनसे लड़ने के बहाने खोजते हैं। बस अब बहुत विध्वंस हो चुका है। अब आप अपने क्रोध को शांत करके अपनी सीमा में चैरा बनाने की आज्ञा दीजिये।
बेला ने कहा ... ऊदल विध्वंस अभी कहां हुआ है? असली विध्वंस तो अभी बाकी है। कोई नहीं बचेगा, कोई नहीं..., काली मां खप्पर भरेंगी, जोगनी नृत्य करेंगी, रणचंडी अट्हास करेगी, रक्त की नदियां बहेंगी जिसमें बेलारानी अपनी चूनर को धानी करेगी। जौहर की ज्वाला सारे देश में उठेगी, तभी मेरी आत्मा शांत होगी। ऊदल कुछ ना बोलकर उसके लाल हुए चेहरे को देखता रहा।
बेला ने फिर कहा... उदल तुम सभी भ्राता अभी इस जन्म में पिछले सारे श्रापों से मुक्त हो जाआगे, तुम सभी के अभी पिछले कर्म क्षय होना बाकी हैं। मेरी बात ना मान कर फिर से श्राप सिर पर मत लादो, अन्यथा फिर-फिर जन्म मृत्यु के चक्कर में फंसे रहोगे। जनम जनम तक हजारों जनम तक। सभी को बेला के रूप में रण चंडी ही नजर आ रही थी। चारों ओर अपशगुन हो रहे थे। चारों ओर लाशों के लोथड़े फैले हुए थे। ऐसा लगता था कि यहां एक और महाभारत का युद्ध हो चुका है।
ऊदल... ठीक है मैं आपकी आज्ञानुसार उस जगह पर चिता तैयार करता हूं। मित्र लाखन, यह लड़ने का सिल सिला समाप्त ही नहीं हो रहा है। अब तो इन सबसे विरक्ति सी होने लगी है। अब तो मन शांति चाहता है। अब मैं लड़ना नहीं चाहता। ‘‘
यहां ध्यान देने वाली बात हे कि द्वापर में श्रीकृष्ण ने पांडवों से कहा था... कलयुग में जब तुम युद्ध से अघा जाओगे, मन में लड़ाई के नाम से विरक्ति होने लगे, तब समझना कि सभी का श्राप पूरा हो गया और सभी के जाने का समय आ गया है।

वे सेना सहित उसकी बताई जगह पर जाकर चारों सीमा दबाकर चिता तैयार करते हैं, उधर पृथ्वीराज को जैसे ही पता चला कि दिल्ली की सीमा पर बेला की चिता सजाई गई है वह भी अपने सामंतो, सरदारों सहित वहां पर आ गए।
बेला रानी ने सोलह शृंगार किया। उसके तेज को देखकर ऐसा लग रहा है मानो पार्वती जी स्वयं धरा पर आ गई हों। एक हाथ मे जलता हुआ दीपक, दूसरे हाथ में नारियल लेकर चल दी। साथ में ढोल बज रहे हैं। ब्रहमा के पार्थिव शरीर को भी तैयार कराकर चंदन की चिता पर लिटाया गया, उसके सिर पर केसरिया साफा बंधा है, चेहरा तेज से चमक रहा है। हाथ में तलवार सहित बारह हथियार हैं। बेला परिक्रमा कर चिता पर चढ़कर बैठ गईं। पति का सिर गोद में रखकर निहरने लगी। चारों ओर जयकार हो रही। पृथ्वीराज की सेना अपनी सीमा में खड़ी थी और महोबा, कनवज की बची खुची सेना अपनी सीमा में खड़ी थी। सभी अपनी-अपनी जगह शांत थे। पृथ्वीराज के चेहरे पर भी दुख मिश्रित शांति के भाव दिखाई दे रहे थे। वह शांत भाव से अपने हाथी पर सवार होकर बेला के सती होने का इंतजार करने लगे। आल्हा ऊदल भी शांति का माहौल देख मां शारदा को स्मरण कर रहे थे।
अब बेलारानी को अपनी योगशक्ति से अग्नि प्रज्जवलित करना थी। यानी कि सती होने वाली स्त्री अपने सत्त के बल से अपने सिर से योगरूपी अग्नि प्रकट करती थी। या फिर उसके मृत पति के सिर से अग्नि प्रकट होकर सारी चिता में फैल जाती थी। बाहर से कोई व्यक्ति चिता को अग्नि नहीं लगाता था। सभी को बेला की इसी योगाग्नि के प्रकट करने का इंतजार था, पर शायद बेलारानी को यह शांति अच्छी नहीं लग रही थी।
बेला ने कहा... ऊदल, अभी काल का खप्पर नहीं भरा, हम चाहते हैं कि तुम दिल्ली की सीमा में खड़े होकर चिता में अग्नि दो।
ऊदल चकित हो बोला..माता, आप ये क्या अधर्म कर रही हैं? हम जानते हैं आप पतिव्रता हैं, सती हैं, सतीत्व की ताकत से अग्नि प्रकट कर सकती हैं, फिर ये सब क्यों? आप जानती हैं ऐसा करने से आपके सती होने के पहले ही तलवारें चलने लगेंगी।
बेला ने कहा ... ऊदल, यही तो हम चाहते हैं, तलवारों की झनकार और इसी मारकाट के बीच सती होना चाहते हैं। यही हमारी आखिरी इच्छा है। तुम से जो कहा जा रहा है वह करो। किसी तरह की बहस या प्रतिकार मत करो।
ऊदल ने हाथ जोड़कर कहा... आप ये कैसा आदेश दे रहीं हैं? मैं तो सबसे छोटा हूं मैं ये कैसे कर सकता हूं? ऐसा करना मेरा हक भी नहीं बनता है। अगर ये करना ही है, तो आप किसी अन्य से कहिये जो यहां पर बड़े बुजुर्ग हैं।
बेला ने हाथ में जल लेकर सख्त लहजे में कहा ... ऊदल मेरी बात मानो या फिर मेरा श्राप स्वीकार करो।
ऊदल ने कोई और उपाय ना जानकर बात मानने की सहमति में सिर हिलाकर हामी भरी और वहां से चल दिया।
अब बेलारानी होठों पर मुस्कान लेकर शांत चित्त होकर हाथ जोड़कर बैठ गई। आल्हा यह सब देख सुनकर सोच रहे है कि अब बहुत बड़ा अनर्थ होने वाला है। बेला के रूप में उन्हें सभी की मौत नजर आ रही है। बेला है कि एक पर एक चुनौती दिये जा रही है। उसकी शर्तें समाप्त होने का नाम ना लेकर सुरसा के मुंह की तरह फैलती चली जा रही हैं। उसके निर्विकार चेहरे को देख कर लग रहा है कि उसे किसी की कोई चिंता नहीं है। फिर वह सोच रहे हैं कि होनी तो अटल है वह हो कर रहेगी।

उधर ऊदल ने एक चंदन की लकड़ी को घी में डुबाकर अग्नि में जलाया और दिल्ली की सीमा की ओर बढ़ा। तभी बहुत देर से ऊदल का यह कार्य देख रहे पृथ्वीराज ने ललकार कहा... ऊदल रुक जाओ। ऊदल अपनी जगह रुक गया। तब तक पृथ्वीराज अपना हाथी लेकर उसके पास आ गये और बोले .... बेला बेटी, हम सब जानते हैं कि तुम अपने सतीत्व की अग्नि से किसी को भी भस्म कर सकती हो। फिर ये सब क्या है? बेला ने कुछ ना कहा वह अपनी आंख बंद कर चुपचाप बैठी रही।
पृथ्वीराज ने फिर कहा ....ऊदल तुम यह क्या अनर्थ करने जा रहे हो? तुम बेला की चिता में अग्नि कैसे दे सकते हो? इस बात की आज्ञा तो हमारा धर्म भी नहीं देगा। तुम उसके कोख जाये बेटे भी नहीं हो, तुम उसके वंशज नहीं हो। फिर किस अधिकार से ये करने जा रहे हो? यह कार्य तो कोई चंदेल वंशीय ही कर सकता है।
ऊदल ने कहा ... महाराज, हम भी यह नहीं करना चाहते, पर स्वयं भाभी मां ने ही हमें इस कार्य की अनुमति दी है।
पृथ्वीराज ने कहा ... नहीं यह नहीं हो सकता। तुम मेरी आंखों के सामने ही यह अनैतिक कार्य नहीं कर सकते हो, जिस राज्य में यह अनर्थ होगा वह राज्य भस्म हो जायेगा। तुम हमारी सीमा में एक कदम भी नहीं रखना अन्यथा अनर्थ हो जायेगा।
ऊदल ने कहा ... महाराज हम मजबूर हैं। हमने उनको वचन दिया है। हमारे एक तरफ कुंआ है एक तरफ खाई इसलिये आप हमें अपना कार्य करने दीजिये। यह कह कर उसने अपना कदम दिल्ली की सीमा की ओर बढ़ाया तभी पृथ्वीराज गरजा.. पकड़ लो, यह हमारी सीमा में घुसने ना पाये। यह कहते ही गजब हो गया दोनों ओर तलवारें चलने लगी। चौड़ा आगे बढ़कर ऊदल से लड़ने लगा। ऊदल ने भी अपनी तलवार खींच ली। रुंड मुंड कट-कट कर गिरने लगे। कुछ ही देर में वहां पर लाश ही लाश नजर आने लगी। लाशों से निकलते खून के फव्वारे देख कर ऐसा लग रहा है, मानो अभी अभी यहां पर होली खेली गई है।
ऊदल बेंदुला पर सवार किसी छलावे की तरह मारकाट कर रहा... बहादुरो, आज अपनी मातृभूमि की इज्जत का सवाल है, महोबा का पानी कैसा है दुश्मन को बता दो। हम अपनी आनबान और शान के लिये जीना मरना जानते हैं, हम मर मिटेंगे, पर पांव पीछे नहीं रखेंगे। सामने से लड़ते मरोगे, तो युगों युगों तक नाम अमर रहेगा। भागकर कायर की मौत मरोगे, तो कुल कलंकित होगा।
उदल की बातों से सेना में नया उत्साह दौड़ गया। ढेबा का सामना चौड़ा से है, दोनों ही ब्राह्मण एक दूसरे पर वार कर रहे हैं और ढेबा से चूक होते ही चौड़ा की तलवार उसके सीने के पार निकल गई। ढेबा ने जय भवानी कहकर प्राण त्याग दिये। ढेबा के गिरते ही जागनबीर आगे आया और उसने चौड़ा से मोर्चा सँभाला। इसी बीच चौड़ा के बार से जागन वीर भाला खाकर गिर गय़ा। पृथ्वीराज ने अपने दो दो दुश्मन का सफाया देख कहा... शाबाश, चौड़ियाराज, आज तुमने हमारे कलेजे को ठण्ढक दिला दी।
इसी समय भूरा नामक मल्ल योद्धा आया, तल्हन ने उसे ललकारा और दोनों आपस में भिड़ गए कुछ ही देर में तल्हन ने भूरा को पछाड़ दिया। उसी समय चामुंडाराय आगे आया। उसने तल्हन को ललकारा तल्हन ने उससे भी दो-दो हाथ किये, चामुंडाराय ने एक झटके से किनारे पर रखी तलवार उठायी और धोखा से तल्हन की गर्दन पर वार कर दिया, वह हमेशा को शांत हो गये।
अब चामुन्डाराय अपने हाथी पर लहराता हुआ बेला की चिता के समीप पहुंचा, वहां

आल्हादेव उसकी रक्षा में खड़े थे, वह विजय के नशे में चूर होकर ललकार कर बोला... अरे दसपुरवा के महाराज, यहां क्यों खड़े हो आओ दो दो हाथ करो।
आल्हा ने कहा...अगर आपकी यही इच्छा है तो लीजिये और तेगा का वार कर दिया। अब दोनों ने अपनी तलवारें फंसा रखी हैं, वे चलती हैं तो खन्खन् की होती हैं। पास ही बेला की चिता है, इसी बीच आल्हा ने अपने भाला का वार किया और चामुंडाराय का सिर कटकर दूर जा गिरा। इस प्रकार चामुंडाराय का अंत हो गया।
धांधू लाखन से बोला.. अब हमारी तुम्हारी बराबरी है, दोनों वार पर वार करने लगे। धांधू के भाला की मार से लाखन की हथिनी कुछ कदम पीछे हट गई। अब धांधू ने भरपूर वार तलवार का किया, लाखन ने अपनी ढाल अड़ा दी। धांधू की तलवार छिटककर दूर जा गिरी। लाखन ने अपना गुर्ज चलाया वह जाकर धांधू की खोपड़ी में समा गया और धांधू धरती पर गिरकर मर गया।
धांधू का अंत और दोनों का हौसला देखकर पृथ्वी लाखन के सामने आकर समझाकर बोले...लाखन हमारी बात मानो...
बारह रानी का इकलौता, सोलह रानी का सिंगार। आस लकड़िया जयचंद की, काहे प्राण गंवाओ आय।।
लाखनराना ने कहा... महाराज अपनी चिंता करो, रावण, दुर्योधन, अभिमन्यु, अर्जुन औरमलखान जैसे बीर जब अमर नहीं रहे, तो लाखनराना कहां से अमर होंगें, क्षत्रियों का यह धर्म नहीं है कि पीछे पांव धरें, बीर हैं तो बीरों की मौत मरेंगे। हम सब अपने-अपने हिस्से का श्राप भोगने आये हैं, सो भोग रहे हैं। ''एक राज की बात आपको और बता दें महाराज! जब तक लाखन राना जीवित है तब तक बेलारानी सती नहीं हो सकती हैं। '' द्वापर में द्रोपदी मां ने कहा था काश मैं अपने लाल की वीरता अपनी आंखों से देख पाती। तक भगवान श्री कृष्ण ने कहा था .. कलयुग में आपकी यह इच्छा पूरी होगी। तुम उसकी वीरता के साथ साथ उसका मरण भी देखोगी। इसके अलावा मेरी भी लड़ने की इच्छा अधूरी रह गई थी। इन सब संकेतो से पता चल रहा है कि हम सभी का अंत अब निकट है। बस कौन कैसे मरेगा यह अज्ञात है!
बस महाराज, एक बात है जो भी करना सामने से करना दगा मत करना। इस बात पर पृथ्वी ने कहा .. मुझे दगाबाज कहता है तो ये ले सामने से मेरा वार सँभाल। लाखन ने अपनी ढाल पर उसका वार झेला और उलट वार कर दिया। दोनों के बीचयुद्ध होने लगा। लाखन ने पृथ्वी के छत्र और ध्वजा काट गिराये हैं। उसकी भूरी हथिनी ने टक्कर मारकर पृथ्वी के भयंकर हाथी को चार कदम तक पीछे हटा दिया, पृथ्वीराज भी उसकी वीरता की मनही मन सराहना कर रहे हैं। लाखन राना आज चारों ओर तबाही मचा रहा है। वह दायें बांयें सब ओर मार कर रहा है। बेलारानी लाखन को युद्ध करते हुए ऐसे देख रहीं हैं, जैसे कि एक मां बड़े ही ममत्व से अपने बच्चे को खेलते हुए देखती है। उनके चेहरे पर सुकुन और खुशी के मिले जुले आसार हैं।
एक कहावत है कि दिया बुझने से पहले जोर से भभकता है। वही हाल लाखन का है। वह जानता है कि उसे वरदान है कि उसके हाथ में जब तक हथियार रहेगा उसे कोई भी नहीं मार सकेगा। जब वह निहत्था होगा तभी उसकी मौत होगी। इसीलिये वह चाहता है कि मैं पृथ्वी नाम के इस कांटे को अपने मित्र ऊदल की जिन्दगी से हमेशा को निकाल दूं ताकि वह असानी से बाद में राज्य कर सके। इसीलिए वह किसी छलावे की तरह ही सब पर मौत बन कर टूटा है। पृथ्वीराज ने सोचा जब तक यह लाखन जीवित है बेला

सती नहीं होगी, ना ही हम यह युद्ध जीत पायेंगे। यही सोचकर उन्होंने अपना वरदानी तीर कमान निकाला और सामने से लाखन पर तीर चलाया, जो जाकर उसके हाथ में लगा और उसकी तलवार छिटक कर दूर जा गिरी। तभी पृथ्वी ने सामने से एक साथ पांच तीर चला दिये, लाखन ने उन्हें रोकने के लिए अपनी ढाल अड़ा दी, वह ढाल फाड़कर उसकी छाती में समा गए। उसके बाद भी पृथ्वी ने तीर चलाये और वह सब लाखन की छाती में समाते चले गए, पर वह वैसे ही बिना डगमगाये अपनी हथिनी पर बैठा रहा। यह देख पृथ्वीराज ने मन ही मन उसकी वीरता को प्रणाम किया। उसी समय चौड़ा ब्राह्मण आकर बोला... महाराज, लाखन जब तक अपने मारने वाले की पीठ नहीं देखेगा, तब तक नहीं मरेगा। अब आप रण से बाहर चलिये।
पृथ्वीराज ने अपने हाथी को रण से बाहर ले चलने को कहा, उनके मुड़ते ही लाखन अपने हाथी पर लुढ़क गये। उनके हाथ से ढाल छूटकर जमीन पर आ गिरी। वह ढाल चौड़ा ने उठा ली। दूसरी ओर ऊदल और इंदल मोहरा सँभाले हैं। ऊदल को लाखन के मरने की खबर नहीं है। वह बाज की तरह छपटकर सैनिकों को मार रहा है, रण भूमि लहू से लाल हो रही है। चारों ओर रूंड मुंड ही नजर आ रहे, दोनों ओर की बहुत सी सेना जूझ गई है। ऊदल ने पृथ्वी के खंजन, कुंडल, मुगदल, बीरा, भुगन्ता, अनंता ज्वाला, लंगड़ा, मुंडाकाबुली सहित सभी बचे खुचे वीरों का संहार कर डाला था। अब गिने चुने वीर ही बाकी रह गये हैं।
राजा पृथ्वी अभी ऊदल से भिड़ना नहीं चाहते थे इसीलिए रणक्षेत्र से बाहर चले गए। यह तो पृथ्वीराज का पराक्रम ही था कि सुबह से शाम तक इस उम्र में बराबर युद्ध करता था। उसका शरीर बहुत बलिप्ट था वह मल्लयुद्ध का बड़ा खिलाड़ी था। उसके सामने अच्छे से अच्छा वीर भी आने से घबराता था। जो व्यक्ति आल्हा उदल जैसे वरदानी, जिसमें सौ सौ कुंजर के बल हो उनसे लड़ता था। वह साधारण नहीं था। वह भी वरदानी ही था। बस कमी इतनी थी कि पृथ्वीराज अपने अहंकार में जीता था। अपनी बात के आगे वह कभी किसी की नहीं सुनता था। उसकी हार का सबसे बड़ा कारण यही था।
ऊदल जहां युद्ध कर रहा था वहां आकर चौड़ा ने लाखन की ढाल दिखाकर कहा...
लाये थाती जो कनवज से, सो तुमने रण में दई गंवाय। लाश पड़ी लाखन राना की, सो तुम जाय लेउ उठाय।।
किसी ने छुरी कटारी लूटी, किसी ने लूटी बैजनी पाग, किसी ने लूटी मोहनमाला, किसी ने रत्न जड़ा कड़ा। हम उसकी ढाल उठा लाये हैं, तुम इसे पहचान लो। ऊदल ने ढाल पहचान घोड़ा बढ़ाया जहां लाखन युद्ध कर रहे थे। पीछे कवच देने सैनिक भागे।
ऊदल ने वहां पहुंचकर लाखन को जमीन पर पड़े देखा तो झट घोड़ा से कूदकर मित्र को गोद में लेकर बोला... हाय विधाता यह क्या किया, मेरे मित्र को क्यों ले लिया। हम आखिरी बार मिल भी ना पाये। हे मित्र अब कहां मिलोगे? वचन में बंधकर हमारे साथ आये और वचन की खातिर अपने प्राण गंवाये। अब हम राजा जयचंद को क्या जवाब देंगे। उनसे हमने कहा था पहले मरहें उदयचंदराय। मेरा वचन झूठा हो गया है, अब हमारे जीने को धिक्कार है। अब मैं किसी को मुंह नहीं दिखा सकता। अरे बेला रानी! तुम ये कैसी सती हो रही हो। तुमने तो महोबा, कनवज, दिल्ली तीनों घर के दीपक बुझा दिये। अनगिनत महावीर मरवा दिये, क्या इसी दिन के लिए तुमने अवतार लिया था। नहीं मुझे जीने का हक नहीं, अपना वचन तोड़कर मैं कैसे जीवित रह सकता हूं। मैं अभी

अपने प्राण त्याग दूंगा। तभी देवी मां की आभा बोली... वत्स ऊदल, कर्म के लिखे को कोई मेंट नहीं सकता है। होनी तो होकर रहेगी। उसे तुम बदल नहीं सकते। केवल कर्म करना तुम्हारे हाथ में है। उठो और अपना वीरोचित धर्म निभाओ।
देवि मां का वचन सुनकर ऊदल ने सैनिकों से लाखन की देह को अपने तंबू में पहुंचाया और अपने जीवन का मोह त्याग कर बेंदुला पर सवार होकर चल दिये। वह आसमान को देखकर बोले... मित्र मैं आ रहा हूं, मेरा इंतजार करना।
उधर पृथ्वीराज ऊदल के कोप से बचने के लिये रण भूमि से बाहर हो गये। चौड़ा ने कहा ... महाराज मेरी लाश के ऊपर से गुजर कर ही ऊदल आप तक पहुंचेगा। मैं आपकी रक्षा में अपनी जान भी गंवा दूंगा। आप यहां से जाइये। वह पेड़ के पीछे खड़े हो गये। वहां पर पहले से चंद्रबरदायी भी खड़े थे और यह निर्णायक युद्ध देख रहे थे।
ऊदल रणभूमि में पहुंचकर गरजा...पृथ्वीराज, हमने सदैव आपका आदर किया है। कभी आपको मारने का नहीं सोचा, पर आज आपको कोई नहीं बचा सकता। तभी चौड़ा हाथी पर ऊदल के सामने आया, तो ऊदल ने कहा.... अरे ब्रह्मण मेरा रास्ता छोड़।
चौड़ा ने कहा ... ऊदल, मुझे मारकर ही तुम आगे बढ़ सकते हो, पर ऐसा होगा नहीं उस बात को याद करो जब द्वापर में तुमने मेरे बेटे अश्वत्थमा के माथे की मणि निकालकर उसे जीवन भर के लिये घाव दिया था। वह अमर होकर भी सजा भुगत रहा है। तभी हमने कसम खाई थी कि भीम को मारकर अपनी छाती का डाह पूरा करुंगा। उस जन्म में नहीं, तो इस जन्म में सही। अब तुम्हारा काल आ गया है। आज तुम्हें मुझसे कोई नहीं बचा सकता है। ये लो मेरा वार सँभालो और उसने अपना तेगा चला दिया। ऊदल ने ढाल अड़ाकर उसका वार रोका। उसके बाद चौड़ा ने सांग का वार किया। ऊदल ने उसे भी रोका और अपनी तलवार का उलट वार कर दिया। दोनों आपस में उलझे पड़े हैं कोई भी किसी से कम नहीं लग रहा है। ऊदल का घोड़ा कभी उपर कभी नीचे आकर नाच रहा है। ऐसा लग रहा है कि ऊदल के मन की व्यथा को वह बेंदुला भी समझ रहा है। उदल ने चौड़ा का छत्र काट दिया है। उसके महावत को भी मार डाला है। अब उसने अपने घोड़ा को हवा में दस गज की छलांग लगा कर चौड़ा के हाथी के सिर पर टापों को रखा और तड़ातड़ वार चौड़ा पर कर दिये। चौड़ा वार पर वार बचा रहा है। वह सोच रहा है यह ऊदल बुरी बला है। तभी चौड़ा ने अपने भाला को खींचकर ऊदल की छाती पर खींच मारा। वह भाला उसकी छाती में घंसता चला गया। उसके बाद चौड़ा ने अपनी तलवार का वार किया तो ऊदल ने ढाल अड़ा दी, पर चौड़ा का वार तेज था वह तलवार ढाल फाड़ती हुई ऊदल की छाती में भाला की बगल में समां गई। भाला और तलवार छाती में घुसे होने पर भी ऊदल आपने दायें हाथ से तलवार चलाये जा रहा था। अब चौड़ा ने अगला वार उसके बेंदुला पर किया तो घोड़ा अपने बचाव में बांयी ओर उछल गया। अब चौड़ा ने ऊदल को निशाना साघकर तीर चला दिये। जो उसकी छाती में समाते चले गये। चौड़ा के तरकश में दस तीर थे उसने सभी चला दिये। ऊदल के हाथ से तलवार अभी भी नहीं छूटी थी। इसी कारण वह मर नहीं रहा था।
उसके बाद चौड़ा ऊदल को देख ही रहा था कि ऊदल का घोड़ा तेजी से उसके हाथी की ओर दौड़ा ऊदल के हाथ में तलवार अभी भी लहरा रही थी। घोड़ा को अपने उपर छलांग लगाते देख चौड़ा अपने हाथी से लुढ़क गया और नीचे गिर पड़ा और चौड़ा की पीठ ऊदल की ओर हो गई और दुश्मन की पीठ देखकर घोड़ा दौड़ता हुआ बेला की चिता के पास पहुंचा, जहां पर आल्हा उसकी सुरक्षा कर रहे थे। ऊदल अभी भी तनकर

घोड़े पर बैठा हुआ था उसकी छाती में तीर तलवार और भाला घुसा हुआ था। शरीर से लहू के फव्बारे फूट रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो वह लाल रंग से होली खेल कर आया है। ऊदल को देख सभी अचम्भित हो गये।
आल्हा के पास पहुंचकर ऊदल जय भवानी मां कहकर उनके चरणों के पास ही गिर पड़े। आल्हा ने घायल ऊदल को अपनी गोद में लिया और बोले... अरे! खून की प्यासी बेलारानी, तू सबको खा गई रे। अरे मेरे भाई तू मुझे छोड़कर जा रहा है। अब मैं भी जी के क्या करूंगा? मैं इस संसार में नहीं रहूंगा। तेरे बिना मेरे लिये ये राज पाठ घर संसार सब सूना है।
यह सब देखकर बेलारानी जोर से अट्टहास कर हंसने लगी वह हंसे जा रही हैं हा-हा-हा- आज मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो गई। आज मैं गांधारी मां के श्राप से मुक्त हो गई, आज मैने सबका मरण अपनी आंखें से देख लिया, अब मैं जा रही हूं। सभी ने देखा कि बेलारानी ने अपनी योगशक्ति से अपने सिर से अग्नि प्रज्जवलित की और धू धू कर जल उठी।
आल्हा सोच रहे हैं कि बेला ने यही सब पहले कर लिया होता तो इतना विनाश क्यों होता? तभी इंदल वहां पर आये वह भी ऊदल से लिपट गये। ऊदल ने कहा- नहीं इंदल, वीर रोते नहीं हैं, मैं जा रहा हूं अब आपको आल्हा दादा का खयाल रखना है बस दादा अब मुझे जाने की आज्ञा दीजिए। आल्हा ने उसकी कमर से कमरबंद खोला और ऊदल ने जय भवानी कहकर तलवार छोड़ दी, तलवार के छूटते ही वह शांत हो गए। ऊदल और लाखन के शरीर को वहीं पड़े चंदन के ढेर पर रख कर अग्नि दे दी गई। इस प्रकार एक वीरता के युग का अंत हो गया।

43-आल्हा की पृथ्वीराज से अंतिम लड़ाई

तथ्यों से ज्ञात होता है कि यह आखिरी युद्ध 1190 में हुआ था। आल्हा इस समय उदास बैठे आकाश की ओर निहार रहे हैं। सामने ही बेला-ब्रह्मा, लाखन की और ऊदल की चिताओं से धुआं उठ रहा है। उनकी अग्नि शांत हो चुकी है, उनके तंबू के आसपास गिने चुने सैनिक मौजूद हैं। वे भी इस हादसे से कुछ कहने सुनने की स्थिति में नहीं हैं। सामने ही कुछ दूरी पर दिल्ली की सीमा में पृथ्वीराज और उनके गिने चुने लोग बचे हैं। वह अपने तंबू में बैठे हैं और इस युद्ध की तबाही पर चर्चा कर रहे हैं।

इंदल ने कहा-पिता श्री, चौड़ा ने मेरे चाचा को मारा है। हम अभी जाकर बदला लेते हैं, आज चौड़ा जीवित नहीं रहेगा।

आल्हा ने कहा...नही पुत्र, तुम चौड़ा को नहीं मार सकते, वह गुरुद्रोणचार्य का अवतार है। उसने द्वापर में ही भगवान से वरदान मांगा था कि कलयुग में उसका पुनर्जन्म होने पर वह किसी भी अस्त्र-शस्त्र से नहीं मरेगा और अगर मारते वक्त शरीर के किसी भी भाग से उसका रक्त बाहर आ गया तो फिर वह नहीं मरेगा। इसलिए वह घायल होकर भी नहीं मरता है। उसे मैं ही मारुंगा बिना लहू बहाये। मैं अपने भाई की मौत का बदला उससे जरूर लूंगा। यह कहकर आल्हा अपने हाथी पश्चावद पर सवार हो कर चल दिये। आल्हा का चेहरा क्रोध से लाल हो रहा था। उनकी आंखें अंगारे उगल रही थीं। उसके क्रोध को देख कर सभी को डर लग रहा था कि अब कौन सी कयामत आने वाली है। उसके हाथी के चलने से ऐसा लग रहा था मानों धरती डोल रही है। हाथी की चिंघाड़ से दसों दिशायें गूंज रही थीं। आल्हा के मस्सल फूल और पिचक रहे थे। आल्हा को इस रूप में देखकर पृथ्वीराज और चंदबरदायी पेड़ के पीछे छिपे गए, वह बाहर आने का साहस नहीं जुटा पा रहे। आल्हा को आते देख चौड़ा ने अपने हाथी सहित भागकर दायें बांये बचना चाहा, पर आल्हा ने उसे देख ललकार कर कहा .. चौड़ा खबरदार हो जाओ। तुम्हारा काल आ गया है।

चौड़ा ने दूर से ही तुरंत ही आल्हा के ऊपर तीर चला दिये। आल्हा उन तीरों को हाथ से पकड़कर खिलौना की तरह एक ओर फेंक रहे थे। आल्हा का हाथी चौड़ा की ओर बढ़ा चला जा रहा था। कुछ पास आने पर चौड़ा ने अपना कैबर चला दिया। आल्हा ने अपना बांया हाथ अड़ाकर उसका वार बचाया। अब चैड़ा ने सांग उठाकर आल्हा पर चला दी। आल्हा ने उसे भी अपने दायें हाथ पर झेला। आज उनके ऊपर कोई भी अस्त्र-शस्त्र काम असर नहीं कर रहा है, आज से पहले किसी ने उनका यह रूप नहीं देख था। उसके बाद चैड़ा ने शिरोही का वार किया, आल्हा ने दूर से आती उस शिरोही को पकड़ कर एक ओर फेंक दिया। उसके सामने चौड़ा के हथियार बेकार साबित हो रहे थे। वह आंखों में ज्वाला लिये चौड़ा की ओर बढ़े जा रहे थे। दोनों के हाथी बराबर में आने पर चौड़ा ने अपनी तलवार का वार आल्हा पर किया तब आल्हा ने उसकी तलवार पकड़ कर एक ओर फेंक दी। अब तक चौड़ा बहुत पास आ चुका था। आल्हा ने उसका हाथ पकड़कर उसके हौदा से अपने हौदा पर खींच लिया, तो चौड़ा बा्रहमण गिड़गिड़ाकर बोला... महाराज, आप तो धर्मज्ञ है, ज्ञानी हैं, धर्म के अवतार हैं, ब्रह्मण भक्त हैं। आपके भाइयों ने अपने प्राण गंवाकर भी ब्रह्मण बध नहीं किया। आप मुझ ब्राह्मण को कैसे मार सकते हैं? उसकी बातें सुनकर आल्हा का क्रोध कुछ शांत सा हुआ। उसी समय उनकी आंखों के

सामने ऊदल का रक्तरंजित चेहरा आया और उन्होने चौड़ा को अपने सीने में भींच लिया। चौड़ा छटपटा रहा था।
चौड़ा का हाल देखकर पेड़ के पीछे छिपे पृथ्वीराज को उस समय की याद आ गई, जब समधौरा में आल्हा और पृथ्वीराज पान का पत्ता चिपका कर गले मिले थे। उन्हें आल्हा की ताकत का अंदाज उसी समय हो गया था। वह चौड़ा की सहायता करना चाहते थे। अपने सामने ब्रह्मण की हत्या होते भी नहीं देख सकते थे। दूसरी बात चौड़ा उनका बहुत बड़ा अस्त्र था। वह उसे बचाने के लिये वह अपना हाथी बढ़ाकर आगे आये। दूर से ही आल्हा का ध्यान बंटाने के लिये उसको ललकार कर कहा... आल्हा देव, सावधान हो जाओ। तुम्हारा काल आ रहा है। वह ब्रह्मण है उसकी हत्या करने से तुम्हें पाप लगेगा, पर अब तक तो चौड़ा की सांस बंद हो गई थी, उसके हाथ पांव एक ओर झूल गये। आल्हा ने उसे छोड़ दिया तो वह किसी बेजान पुतले की तरह गिर गया।
उसके जमीन पर गिरते ही पृथ्वीराज तुरंत अपना हाथी वहां से भगा ले गये और मैदान के बाहर पेड़ की ओट में हो गये। वहां से छुपकर उन्होंने आल्हा पर अपने शब्दभेदी बाण को चलाया। वह बाण आकर आल्हा की भुजा में लगा और उससे रक्त की जगह दूध की धार बह निकली। आल्हा को पृथ्वीराज की इस ओछी हरकत पर क्रोध आ गया और ऊदल की याद आ गई।
जब पृथ्वीराज ने अपना दिव्यास्त्र चला दिया तो उन्हें भी देवी के दिव्यास्त्र की याद आई और क्रोध में भरकर उन्होंने मंत्र पढ़कर दिव्यास्त्र का आवाहन किया और एक चमकता हुआ खड्ग उनके हाथ में आ गया। जिसे उन्होंने पृथ्वीराज की ओर हवा में लहरा दिया। उसके लहराते ही खड्ग से बहुत सी बिजली की तरह चमकीली नीली किरणें निकली और दूर दूर तक फैलती चलीं गई। उसकी चमक से सभी की आंखें बंद हो गई थी। जहां तक वह किरणें गईं वहां तक पृथ्वी के बचे खुचे सभी सैनिकों व वीरों के सिर धड़ से कटकर गिर गये। पृथ्वीराज आल्हा को मंत्र पढ़ते देख तुरंत ही चंदबरदायी सहित पेड़ की ओट में छिप गये, सो उनके ऊपर किरणों का प्रकाश नहीं पड़ा और वह बच गये। वह दोनों ही भयभीत से खड़े थरथर कांपे जा रहे थे। उन्होने आल्हा का यह विकराल रूप पहली बार देखा था
उसी समय गुरुगोरख नाथ वहां पर आ गये। उन्होंने आते ही आल्हा से कहा... वत्स आल्हा, शांत हो जाओ, शांत हो जाओ। इस खड्ग को शीघ्र ही शांत करो अन्यथा इस संसार में कोई भी जीवित नहीं बचेगा, प्रलय आ जायेगी। अब इसका कोई काम नहीं है। आल्हा ने खड्ग विसर्जित कर गुरुदेव को प्रणाम किया। इंदल ने भी गुरुदेव को प्रणाम किया।
तभी गोरखनाथ को देखकर पृथ्वीराज और चंदवरदायी पेड़ की ओट से बाहर आये, पृथ्वीराज को देख आल्हा अपनी तलवार को हाथ में लेकर पृथ्वी की ओर झपटे।
गुरुदेव ने कहा ...वत्स अपना क्रोध शांत करो। अब इसकी आवश्यकता नहीं है।
आल्हा ने कहा... गुरुदेव, इन्होने भारत की वीरता को कलंकित कर दिया। सभी क्षत्रियों वीरों का नाश छल से करा दिया। इन्हें जीने का कोई अधिकार नहीं इनकी अवर्मण्यता और स्वार्थपरता के कारण आज भारत पर विनाश की ओर अग्रसर है।
गुरूदेव... पुत्र होनी को कोई नहीं टाल सकता, एक अनहोनी और श्राप, दिल्ली नरेश का इंतजार कर रहा है। इनकी गल्तियां ही इनके परिणाम की जिम्मेंदार हैं। इनकी करनी ही इनका कर्मफल तय करेगी। इसलिए इनका जीवित रहना जरूरी है।

दुखी होकर आल्हा ने कहा .. गुरुदेव सब कुछ समाप्त हो गया। मेरा भाई ऊदल चला गया और मैं कुछ भी न कर सका।
गुरुदेव..वत्स, हर इंसान का वक्त होता है जब समय समाप्त हो जायेगा तो सभी को जाना पड़ेगा। तुम जिस कार्य के लिये आये थे, वह हो गया। तुम दोनों अपनी आंखें बंदकर अपने पिछले कई जन्मों की याद करो। सब याद आ जायेगा और यह संसार तुमको व्यर्थ लगने लगेगा। यह कहकर गुरुदेव ने अपना हाथ आल्हा और इंदल के सिर पर रखा। दोनों ने आंखें बंदकर लीं।
कुछ देर में दोनों ने आंखें खोलीं अब उनके मुख पर एक अलोकिक शांति थी, उनका चित्त प्रसन्न दिख रहा था।
गुरुदेव ने कहा... वत्स अब समय आ गया है कि तुम दोनों इस संसार का त्याग कर, सारे रिश्ते नातों से स्वयं को मुक्त करके मेरे साथ चलकर अपनी अधूरी साधना को पूरी करो। क्या तुम तैयार हो? दोनों ने सहमति में सिर हिलाया। तब गुरुदेव ने दोनों का हाथ पकड़ा और उनको लेकर वहां से चले गये। कुछ आगे जाकर वह नजरों से ओझल हो गये।
पृथ्वीराज और चंद्रवरदायी मंत्रमुग्ध से उन्हें जाते हुए देखते रह गये, जब तक वह कुछ कहने सुनने की स्थिति में आये तब तक वह जा चुके थे।
आल्हा के जाते ही सब कुछ समाप्त हो गया। युद्ध के मैदान में अब कुछ भी ना बचा था। कुछ बचे हुए सैनिक और संदेश वाहक सांड़ियों ने महोबा जाकर सारा हाल रो रोकर रानियों को सुनाया। सुनकर महलों में सन्नाटा छा गया।
सुनवां रानी बहुत ही समझदार और साहसी रानी थी। उसे देवी मां की कृपा प्राप्त थी, उसने गुरुदेव से मानसिक संपर्क किया, तो उन्होंने उसे अपना कर्म करने की सलाह दी।
इतना बड़ा नरसंहार और पुत्र ब्रह्मा का मरण सुनकर राजा परमाल टूट गए थे, पर सुनवां ने रानी मल्हना के और देवल माता के साथ मंत्रणा करके त्रिलोकवर्मन जो चंदेल वंश का चिराग था, उसका राजतिलक कराकर महोबा का राजा बना दिया और विश्वस्त मंत्रियों और सैनिकों को बुलाकर महोबा की जिम्मेदारी सौंप दी। उसके बाद कुंवर इंदल के बड़े पुत्र इंद्रजीत, ऊदल के दोनों पुत्र को रिजगिर में अपने दूसरे बेटे अभयंकर के पास गुप्तरूप से भेज दिया और पाती लिख दी...
प्रिय पुत्र, सदा सुखी रहो। इस संसार में कोई भी अमर नहीं है। होनी को कोई नहीं टाल सकता है। अब इन बच्चों की जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है। ये बच्चे नहीं भविष्य की धरोहर हैं। इनका रिजगिर में होना गुप्त ही रखना। तुम्हें हर तरह से इनको शिक्षित करना है, जहां तक है मेरा अनुमान है कि अबकुछ समय तक इस क्षेत्र में शांति रहेगी। क्योंकि सभी अभिशप्त लोग इस संसार से जा चुके हैं। पृथ्वीराज के विनाश के दिन भी पास आ गये हैं। वह खटका भी हमेशा को मिट जायेगा। उसके बाद इस धरा पर म्लेच्छों का राज्य होना सुनिश्चित है, पर अपनी ओर से इस जन्मभूमि की रक्षा करने में पीछे नहीं हटना। हम जौहर की ज्वाला में अपने को अर्पण करेंगे। मां चंडिका हमेशा आप सभी के साथ हैं। हम सभी का आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। जय मां भवानी।
रानी मल्हना, माता दिवला और सुनवां ने कीरत सागर पर जाकर पारस पथरी का पूजन किया। मल्हना ने कहा... हे पारस पथरी, आपने हमारे राज्य के धन धान्य से भरा रखा, अब हम आपको जल में प्रवाहित कर रहे हैं। जब कभी चंद्रवंश में कोई प्रतापी राजा हो तब आप पुनः पधारना। उसके बाद उन्होंने चंद्र देव का पूजन कर कहा.. हे

चंद्रदेव! आप आपनी दी हुई पारस पथरी सम्हालिये और उसे जल में विसर्जित कर दिया, रानी के हाथ से छूटते ही वह पारस मणि एक चमक के साथ अदृश्य हो गई।
उसके बाद वह मनियां देवता की मड़िया पर पहुंची। वहां पर उनको ध्वजा और नारियल चढ़या और उनसे आर्त भाव से प्रार्थना की ... हे मनिया देवता आपने अपने रहने के लिये ही महोबा चुना था। चंदेल वंश के द्वारा अपनी स्थापना कराई थी। अब वही चंदेल वंश डूवने के कगार पर है। इन सभी बच्चों को आपकी छत्रछाया में छोड़ रहे हैं। आप अपने महोबा की रक्षा करना।
मनियां देव की आभा बोली... हे रानी शोक मत करो। जो हुआ वह पूर्व निर्धारित था। मैं इस महोबा नगरी सहित चंदेलवंश, बनाफर वंश और समस्त राजवंशों की रक्षा करूंगा। इस वंश का अंत कभी नहीं होगा। महोबा के आसपास चंदेल और बनाफर वंश सुखी समृद्ध और धर्म का पालन करने वाले होंगे, जो अनीति करेगा और व्याभिचार में लिप्त होगा उसका पतन हो जायेगा। हां जो हुआ व जो हो रहा है उससे मेरा मन बहुत ही विक्षिप्त है? मेरी आंखों में क्रोध की ज्वाला है। उस ज्वाला में कोई भी भस्म हो सकता है इसलिये आज से मैं अपना मुंह फेरकर ही इस मड़िया में निवास करूंगा। भक्त लोग मेरी पीठ की ही पूजा किया करेंगे। और देखते ही देखते वह पलट गये। वह सब रानियां उनको नमनकर वापस चल दीं।
उसके बाद वह मां चंडिका के मंदिर गई। उनको चुनरी और भेंटकर उनका पूजन किया और प्रार्थना की ... हे मां इस महोबा को बसाने वाली आप ही हैं। अब आप ही इसके बचे हुए वीर वंश की रक्षा करना। अब सब कुछ आपको ही करना है। हे मां हमें शक्ति देना कि हम अपना पतिव्रत धर्म निभा सकें। देवी मां की कृपा से वह चुनरी उड़कर आकर सुनवां के सिर पर ढंक गई। और वह उनका आशीर्वाद ले कर वापस महल में आ गईं।
उधर जब से ब्रह्मा घायल हुआ था, तभी से राजा परमाल ने खाना पीना छोड़ दिया था। उनका शरीर केवल कंकाल बनकर रह गया था। रानी सुनवां ने कहा - बड़ी मां आपको राजा दादा की देखभाल और राज्य के लोगों के लिए जीवित रहना होगा, आप जौहर नहीं करेंगी। माता देवल भी आपके साथ ही रहेंगी। वह गहरी सांस लेकर बोली- इतना सब कुछ देखने के बाद जीवित रहने की इच्छा नहीं है, पर अपना पत्नि धर्म निभाने के लिए मैं जीवित रहूंगी। बाकी के मुंह से कोई बोल नहीं फूटा था।
सुनवां रानी ने सबसे पहले महल का मुख्य द्वार बंद कराया फिर महल के चौक में पांच छकड़े चंदन की लकड़ियों का ढेर लगवाया है जिसे जलाकर वह जौहर यानी कि जलती हुई अग्नि में कूद जायेंगी। अब सुनवां ने इंदल की चारों रानी, ऊदल की तीनों रानी, रंजीत की रानी, और अन्य रानियों सहित सभी को बुलाकर कहा ... अब हम जौहर करेंगे। हम सब का इस संसार में काम समाप्त हो गया है। जो सुहागन है वह सोलह शृंगार कर ले, जो न करना चाहे न करे। बाकी अपनी पूजा की थाली लेकर तैयार हो कर आ जाओ।
उन सभी क्षत्राणियों को देखकर ऐसा लग रहा था कि वे आग में कूदने नहीं बल्कि कोई महोत्सव में शामिल होने जा रही हैं। सभी के चेहरे पर तेज था। एक आत्म विश्वास था। मन में प्रसन्नता थी कि वह अपना धर्म निभा रही हैं। सब कुछ समाप्त हो जाने पर भी उनका पतिव्रत धर्म व सतीत्व आज भी सुरक्षित है। उसके बाद सभी रानियों ने पास ही जौहर की जलती हुई ज्वाला का पूजन किया और हाथ में नारियल लेकर सती माता की

जय, चंडिका माता की जय कहकर वह सब उस जलती हुई अग्नि में हंस कर कूद गईं। कुछ ही देर में वहां पर सब कुछ शांत हो गया। इस प्रकार बुन्देलखंड से एक वीरता कायुग समाप्त हो गया।
परमाल का छोटा बेटा त्रिलोकवर्मन राजकाज देख रहा था, राजा परमाल अपने को सँभाल कर फिर से राज्य की सुधार व्यवस्था में लग गए थे। इसी तरह से 1202 में उनका स्वर्गवास हो गया था। यह जानकारी चरखारी ताम्रलेख और मदनपुर जैन अभिलेख 1192 से मिलती है। उसके बाद त्रिलोक वर्मन 1203 ई. से 12045 ई. तक महोबा की गद्दी पर बैठा। 1233ई. में मलिक नस्रतउद्दीन तहसी ने कालिंजर पर कब्जा कर, लूट कत्लेआम किया था ‘‘इतिहासकार हसन निजामी ने लिखा है कि- हिन्दुओं के शवों से धरती पट गई थी, करीब पचास हजार लोगों के गले में फंदा डालकर उन्हें दास बना लिया गया था।
उसके दो साल बाद ही त्रिलोक वर्मा ने अपनी शक्ति का विस्तार कर मुगलों से अपना कालिंजर वापस ले लिया और 1239 में इसने कलचुरी राजा विजयसिंह को परास्त करके अपना राज्य कौशल प्रदेश के कटनी, जबलपुर, मंडला, सतना, रींवा तक फैला लिया उसने कटनी में विष्णु एवं शिवमूर्ति की स्थापना कराई। यह बात ककरेड़ी और अजयगढशिलालेख 1239 से ज्ञात होती है।
उसके बाद उसका पुत्र बीरवर्मा-;1246ई.से1285 द्धतक रहा। 1254 में ग्वालियर के राजा हरिदेव ने महोबा पर आक्रमण किया था, जिसमें नरवर राजा की हार हुई थी। ग्वालियर राजा का साथ देने के कारण वीरवर्मा ने 1255 में ई. में नरवर के राजा गोपीगिरी और गोविन्दराय से युद्ध किया था। यह जानकारी अजयगढ़व दुदाही शिलालेख 1268व 1280ई. से मिलती है।
उसके बाद वीरवर्मा के पुत्र भोजवर्मा ने 1286 से 1289ई. तक राज्य किया। जानकारी 1288 अजयगढ़ शिलालेख।
भोजवर्मा के पुत्र हमीरवर्मा ने 1289ई से1308ई. तक राज्य किया। इस समय अलाउद्दीन खिलजी का शासन दिल्ली पर था। यह जानकारी दमोह शिलालेख और सलैया सती शिलालेख 1309 ई. से मिलती है। हमीरवर्मा ने ही हमीरपुर बसाया था।
उसके बाद हमीर का पुत्र वीर वर्मा द्वितीय 1309 से 1340 तक, उसका पुत्र परमार्दिदेव द्वितीय 1340 से 1390 ई. तक का हाल उरई अभिलेख, अजयगढ़अभिलेख, चरखारी ताम्रलेख, और नलपुरा ताम्रलेखों से मिलता है।
‘जनरल ऑफ एशियाटिक सोसायटी बंगाल भाग-1’ के पेज नंबर 42 में चंदेलवंश के सभी राजाओं का वर्णन है जिसमें अंतिम चंदेल राजा कीर्तिवर्मन है जिसका शासनकाल 1502 से 1578 तक का है। इनकी पुत्री दुर्गावती थी। उसने गोंडवाना के राजा से विवाह करके अकबर के सेनापति आसफखां से1563 ई. में युद्ध किया था। राजा कीर्तिवर्मन का युद्ध शेरशाह सूरी से 1545 में कालिंजर में हुआ था। दस युद्ध में ओरछा के राजा भारतीशाह ने अपने भाई मधुकरशाह को उनकी सहायता के लिए भेजा था। यह जानकारी ओरछा स्टेट गजेटियर में पेज नंबर 18-19 पर अंकित है। कुछ भी हो चंदेलों का इतिहास उस काल का स्वर्णयुग था। अब तक भारतीय राजनीति में बहुत से परिवर्तन हुए थे। गौरी ने 1192 में पृथ्वीराज को बंदी बना लिया, 1194 में जयचंद को मार डाला। उसने अपने विश्वासपात्र सेवक कुतुबुद्दीन को दिल्ली का सूबेदार बनाया था। इस प्रकार भारत में मुगल शासन की नींव रखी गई।

।। इतिश्री ।।